

Nagari-pracharini Granthamala Series No. 4-

THE PRITHVIRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÁÍ,

VOL I

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A

CANTOS I. TO XI.

महाकवि चंद्र बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

भाग पहिला

जिमको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णादास

शैर

स्यामसुन्दरदास वी. ए.

ने

सम्पादित किया ।

पृष्ठ-१ से ११ तक ।

PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS, DELHI

1904



सूचीपत्र ।

(१) आदि पर्व ।

(पृष्ठ १ से १८० तक)

	पृष्ठ ।
१ आदिदेव, गुरु, धात्री, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश का मंगलाचरण ॥	१
२ धर्म-स्तुति ॥	६
३ कर्म-स्तुति ॥	६
४ मुक्ति-स्तुति ॥	१०
५ पूर्व कवियों की स्तुति और उच्छिष्ट संज्ञा कथन ॥	”
६ चंद्र की स्त्री अपने पति के उच्छिष्ट संज्ञा कथन में शंका करती है ॥	१२
७ चंद्र अपनी स्त्री की शंका का समाधान करता है ॥	१३
८ चंद्र की स्त्री पुनश्च शंका करती है ॥	”
९ चंद्र अपनी स्त्री कि शंका का पुनश्च समाधान करता है ॥	१४
१० चंद्र अपनी स्त्री के आगे ईश्वर के ऐश्वर्य का वर्णन करता है ॥	”
११ चंद्र की स्त्री अपने पति से अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका पूछती है ॥	१६
१२ चंद्र अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका का कथन करता है ॥	”
१३ चंद्र अपनी लघुता वर्णन करता है ॥	१७
१४ चंद्र उतापित होकर अपने को पूर्व-कवियों का दास होना उन की उक्ति को कष्टना और अपनी को बक्रना कहता है ॥	१६
१५ चंद्र खलों का स्वभाव वर्णन करके मुजनों के निमित्त अपना काव्य रचन करना कहता है ॥	”
१६ सरस्वती की स्तुति ॥	”
१७ गणेश की स्तुति ॥	”
१८ गणपति की उत्पत्ति की कथा ॥	२०
१९ शंकर की स्तुति ॥	२१
२० कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥	२२
२१ चंद्र का काव्य समुद्र कैसा है ॥	”
२२ कोई अशुद्ध पढ़नेवाला चंद्र को काव्य-संबन्धी-दोष न दे ॥	२३
२३ इस ग्रंथ में चंद्र ने क्या क्या कथन किया है ॥	”
२४ रामो को रसिया सरस उच्चरि ॥	”
२५ रामो का तत्त्वज्ञान कैसे होगा ॥	२४
२६ जो रामो को सुगुरु से पढता है वह कुमति नहीं दरसाता ॥	”
२७ रामो किस को अच्छा और किस को बुरा प्रतीत होता है ॥	२५
२८ इस ग्रंथ के काव्य की संख्या का कथन ॥	”
२९ रामो के टुंके हुए अर्थ के विषय में कवि का कथन ॥	”
३० इस ग्रंथ के विषयों का संक्षेप कथन ॥	”
३१ राजा पराजित को तत्काल दशन और जन्मेकष की सर्पसत्र कथा ॥	२६
३२ उस तत्काल का आवृ पर अपना अर्घ्य नाम धर रहना ॥	२३
३३ गान्धर्व ऋषि के शिष्य उत्तङ्ग का उपाख्यान ॥	”
३४ वशिष्ठ ऋषि का आयु पर तप करना और उसकी नंदनी माँ का अष्टादश दिन में गिरना	३४

	पृष्ठ ।
३५ वशिष्ठ ने अपनी गी निकालने को गंगा का आह्वान किया ॥	३५
३६ मंत्राकिनी गंगा का उभरना और गी का तिरकर निकलना ॥	३७
३७ वशिष्ठ ऋषि का उस अथाह बिल पूरने को हिमालय के पास एक पुत्र मांगने जाना ॥	३८
३८ हिमालय का अपने सब पुत्रों को ऋषि का अभिप्राय कहना ॥	३९
३९ हिमालय के बड़े पुत्र का उत्तर देना कि वह भूमि निषिद्ध है ॥	४०
४० वशिष्ठ का प्रत्युत्तर दे कहना कि वह भूमि बड़ी रम्य है ॥	४१
४१ और वहां बाल्मोकि ऋषित्व को प्राप्त हुए हैं ॥	४२
४२ हिमालय के मध्यम पुत्र नद का वशिष्ठ के माय आना स्वीकार करना ॥	४३
४३ वशिष्ठ का अर्जुन नाग को कहना कि जो तू नंदगिरि को उठा ले चने तो हमारा कार्य सिद्ध हो ॥	४४
४४ अर्जुन नाग का कहना कि जो मेरे नाम से तीर्थ प्रसिद्ध हो तो मैं नंदगिरि को उठा ले चलूँ ॥	४५
४५ अर्जुन नाग का नंद गिरि को उठा लाकर बिल में रख देना ॥	४६
४६ बिल का पुर जागा और पुण्य वृष्टि सहित जैजैकार होना ॥	४७
४७ नाग का हिलना ॥	४८
४८ नाग के हिलने से वशिष्ठ चिंता कर ईश्वर आराधन करने लगे ॥	४९
४९ वशिष्ठ ऋषि ने महादेव की यह आराधन की ॥	५०
५० वशिष्ठ के वचन सुन महादेव का प्रत्यक्ष हो वर मांगने को कहना ॥	५१
५१ ईश्वर का स्वरूप देख ऋषि का मुदित होना ॥	५२
५२ वशिष्ठ ऋषि का महादेव को नमस्कार करना ॥	५३
५३ प्रमथाधिपति ने आनन्दित होकर वर मांगने को कहा ॥	५४
५४ वशिष्ठ ऋषि का नंदगिरि को अचल करने का वर मागना ॥	५५
५५ महादेव का पर्वत को अचल कर उसमें अचल नाम से विगडना ॥	५६
५६ आवू को अचल देख कर वशिष्ठ का प्रसन्न होना और अन्ना ऋषियों को वहां यज्ञ के लिये दुनाय जप तप और वास करना ॥	५७
५७ यज्ञ का अनुष्ठान सुन कर राक्षसों का एतन्न हो आना ॥	५८
५८ ऋषियों का अनलकुंड रच कर ब्रह्म कर्म प्रारंभ करना ॥	५९
५९ दैत्यों का ऋषियों के यज्ञ में विघ्न करना ॥	६०
६० ऋषियों का संतर्पित होकर वशिष्ठ के पास जाय पुकारना ॥	६१
६१ जिन पर वशिष्ठ का प्रतिहार चालुध्व और पैशार का प्रगट करना ॥	६२
६२ तब वशिष्ठ का स्वयं कुंड रच कर यज्ञार्थ घैठना और चिंतन करना ॥	६३
६३ वशिष्ठ का चाहुवानजी को उत्पन्न करना ॥	६४
६४ ऋषियों का चाहुवानजी का स्वरूप देख कर उनको चाहुवान कहना । उन को राक्षसों से युद्ध करन की शक्ति देने को आश पूरा देवी का स्मरण करना । देवी का प्रत्यक्ष होकर चाहुवानजी को राक्षसों से युद्ध करने में सहायता देना । राक्षसों का रमातल को जाना । देवी का चाहुवानजी को अपनी कुल देवी मानने का आज्ञा करना और उनका अपने वंश भर की कुल देवी मानना स्वीकार करना । देवी का उन को वर देकर पधारना । वशिष्ठ का चाहुवानजी को अर्घीवाह देकर अन्य अन्नलों का वर्णन करना और दुर्घाता को श्राप देकर पाना ॥	६५
६६ सत्रियों के हत्तीस घंघो की नाश करने ॥	६६
६७ चारों अग्निकुल सत्रियों ने वशिष्ठ का यज्ञ निर्दिष्ट किया ॥	६७
६८ जिन्होंने द्विजों की रक्षा की उसके वंश में पृथ्वीराज है ॥	६८
६९ चाहुवानजी के वंश के राजाश्री का कथा ॥	६९
७० चाहुय नदा से मागिकराजकी पहिले तब तेरह पीढी का वर्णन ॥	७०
७१ महिंसदजी से धर्माधिराजजी तक का वर्णन ॥	७१
७२ धीनलदेवजी का वर्णन ॥	७२
७३ टूंडा दानव की उच्यति और उसका अत्रभर के वन में रहना ॥	७३

	पृष्ठ ।
७४ सारंगदेवजी की रानी गौरीजी का अनल गर्भ सहित रणथंभ पधारना ॥	६०
७५ आना राजा का जन्म होना और उनका बालपन ॥	६१
७६ आना का बालपन व्यतीत होना और वीरत्व का प्राप्त होना से पूछना ॥	६२
७७ आना की माता का उसको सर तर और अप्पर विद्या का उपदेश करना ॥	" "
७८ आना का माता से पूछना कि मैं किस वंश में उत्पन्न हुआ हूँ ॥	" "
७९ गौरी माता का कहना कि यह बात न पूछो उसके कहते मुझे भय और कठगुणा होती है . .	" "
८० आना का माता से अपने वंश की कथा छुट करके पूछना ॥	६३
८१ आना की माता का उसे कथा प्रगट न करने को कहना और ठँक करके सचेप में कहना ॥ ...	" "
८२ अन्य उपलक्ष्यों के द्वारा आना का संभरी की पूर्व कथा संभारना ॥	६४
८३ आना का माता से पूछना कि नर अर्थात् वीसलदेव दानव कैसे हुआ ॥	" "
८४ आना की मा का कहना कि दानव की कथा न सुन चित भग होगा ॥	६५
८५ आना का उत्तर दे कहना कि ऐसे मुझे क्यों डराती हो ॥	" "
८६ आना की मा का कहना कि जिससे कार्य सिद्ध न हो उसका कहना व्यर्थ है ॥	" "
८७ आना का प्रत्युत्तर देना कि आगे कितने नर, ऋषि और राज दानव हुए हैं कथा सुनने से क्या होता है ॥६६	" "
८८ आना की माता का वीसलदेवजी की सविस्तर कथा कहना और वीसलदेवजी का जन्म होना ॥	" "
८९ वीसलदेवजी का पाट बैठना ॥	" "
९० वीसलदेवजी का अत समय पढ़न विजय करने को छत्र धारण करना	६६
९१ वीसलदेवजी पाट बैठकर कैसे राज करते थे ॥	७०
९२ वीसलदेवजी का अपने पुत्र सारंगदेवजी को उपदेश करके साभर भोजना कि जो अपनी धा-वैम के } पति के बिनाश से दुचित हो गए थे ॥	" "
९३ वीसलदेवजी का मगया से बहुरना एक तालाब बनाने की आज्ञा देना और दरवार करना ॥	७३
९४ वीसलदेवजी का रणवास में पधारकर विश्राम करना और उन की एक श्रिय रानी का उन को } नपुंसक करना ॥	७४
९५ वीसलदेवजी का पुरुषत्व नाश होने से दुचित हो गोकर्णेश्वर की यात्रा करने को गुजरात में जाना ॥	७५
९६ वीसलदेवजी का गोकर्णेश्वर महादेव की स्तुति करना ॥	७७
९७ वीसलदेवजी से गोकर्णेश्वर के सिद्ध का उनका नाम यामादि पूछना ॥	७९
९८ वीसलदेवजी का नाम गाम आदि बताना ॥	" "
९९ सिद्ध का गोकर्णेश्वर के तीर्थ की महिमा वर्णन करना ॥	" "
१०० वीसलदेवजी का तीस दिन निराहार उपवास कर गोदानादि करना और महादेव को श्रद्धा हो } उन्हीं उठाने भोजना ॥	८०
१०१ श्रद्धा का वीसलदेवजी को महादेव के प्रसन्न होने और मन की कामना पूरण होने का कहना ॥	" "
१०२ वीसलदेवजी का अपने को पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होना देखकर बड़ा वीसलपुर बसाय महादेव का } देवन बनने का हुकुम देना ॥	८१
१०३ वीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और स्व कथा प्रसंग पञ्चरंजी राणी से कहना ॥	८३
१०४ सब काम-लक्ष्यों को सांच होना कि शंभू ने ऐसा क्या कर दिया ॥	" "
१०५ वीसलदेवजी का कामान्ध हो अज्ञान्य कर्म करना ॥	" "
१०६ वीसलदेवजी के दुर्गचरणों से दृष्टी होकर नगर के लोगों का प्रथम न वे पाम पुकारने जाना ॥	८४
१०७ सब वा आपस में सनाह करके वीसलदेवजी को राजधर्म अज्ञ प्ररना	८५
१०८ वीसलदेवजी ने उत्तर दे कहा कि यह सब मैं जानता हूँ पर काम स्वाना के बटने से मैं लाचार हूँ } अब तुम जो बर्ताने यह कहोगा ॥	" "
१०९ हम या वीसलदेवजी का विरपाल को बुलाना और उस का श्राप ॥	" "
११० वीसलदेवजी का विरपाल को कहना कि तरवारि की पृथ्वी है तो हम नष्ट होकर } खासने का पक्ष्य बंधते हैं तुम खजाना संग से वीसल नरेश्वर पर देना ॥	८६

	पृष्ठ
१११ बीसल सरवर पर बीसलदेवजी के आधीन तथा सहायक इष्ट मित्र राजाओं का उन के द्विग्विजयार्थ अटन के लिये एकत्र होना और गुजरात चालुक्य राजा का वहाँ न आना अतएव बीसलदेवजी का उस पर घडाई करना और बालुकाराय का यह सुन कर सामना करने को आना ॥ ...	८७
११२ बालुक राय का आना सुनकर बीसलदेवजी का सेना ले चटना ॥ ...	८८
११३ बीसलदेवजी की खबर सुन बालुक राय का जलभुन जाना ॥ ...	८९
११४ बालुका राय का नित्य नेम करके लड़ने को तयार होना ॥ ...	९०
११५ बालुका राय का बीसलदेवजी के पास श्रीकंठ भट्ट को भेज संदेशा कहना ॥ ...	९०
११६ यह सुनते ही बीसलदेवजी का लड़ने को आज्ञा देना ॥ ..	९१
११७ बीसलदेवजी का चक्रव्यूह और बालुकाराय का अहिब्यूह रचना ॥ ...	९१
११८ बीसलदेवजी और बालुकाराय की फौजों का परस्पर युद्ध करना ॥ .	९१
११९ बालुक का कहना कि रात में युद्ध नहीं करना प्रात भये युद्ध करेंगे ॥ .	९२
१२० दोनों योद्धाओं का अपने २ डेरों पर आना और बालुक के मंत्रियों का एक कूठी पत्री बनाना ॥ ..	९२
१२१ बालुक के मंत्रियों का उसे एक कूठी पत्री देकर घर भेज देना ॥ ..	९२
१२२ बालुक के मंत्रियों का बीसलदेवजी के मंत्रियों से मिल संधि कर लेना ॥ ..	९३
१२३ पावासुर का बीसलदेवजी को संधि कर लेने के समाचार कहना ॥ .	९३
१२४ बीसलदेवजी का संधि स्वीकार कर वहाँ महल बनाने और नगर बसाने को कहना ॥ ..	९४
१२५ माल मँगा कर बीसलपुर बसाना और वहाँ से पीछे फिरना ॥ ..	९४
१२६ एक दूती का बीसलदेवजी को एक बहुत सुन्दर अनिकसुता की खबर देना ॥ .	९४
१२७ बीसलदेवजी का बीसलपुर में प्रविष्ट होना ॥ ...	९५
१२८ बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और वहाँ उनका हास होना ॥ ...	९५
१२९ अनिकसुता गीरो का पुष्कर में तप करना और बीसलदेवजी का उस पर मोहित होना ॥ ..	९६
१३० पुष्कर की तपस्वनी की बीसलदेवजी के प्रति श्रद्धासि ॥ ...	९६
१३१ बीसलदेवजी का पुष्कर में अनिकसुता गीरी का सतीत्व भष्ट करना और उसका उन को दानव होने का श्राप देना ॥ ...	९७
१३२ गीरी का बीसलदेवजी को भयभीत देखकर कहना कि तुम्हारा पोता तुम्हारी सुकीर्ति करे ॥ ..	९७
१३३ तपस्वनी के कांप से बीसलदेवजी का सांप के काटने से अज्ञेय होना ॥ ...	९८
१३४ जिस तपस्वनी के श्राप से बीसलदेवजी असुर हुए उस के तप का आना की मा सविस्तर वर्णन करती है ॥ ..	९८
१३५ श्राप से विमुक्त होने के विचार से बीसलदेवजी का गोकर्ण की यात्रा के लिये बीसल सरवर पर प्रस्थान करना ॥ ...	९९
१३६ तपस्वनी के श्राप से बीसलदेवजी की बुद्धि का चल विचल होना ॥ ..	९९
१३७ बीसलदेवजी को सांप का काटना और उस से उन का मरना ॥ ..	१००
१३८ बीसलदेवजी के मरण और असुर हो नर भक्षण करने की बात सुनकर सारंगदेवजी का अपनी राणी को रणार्थ भेजना और आप उनसे युद्ध करने को तयार होना ॥ .	१००
१३९ सारंगदेवजी की राणी गधरी का चिंता करना ॥ .	१०१
१४० सारंगदेवजी का सेना लेकर दंडा राजस से युद्ध करने को अजमेर पहुँचना ॥ .	१०१
१४१ सारंगदेवजी का तीन दिन कोट में रहना, वहाँ असुर का न मिलना अजमेर की भष्ट और भयानक दशा देखकर चिंता करना ॥ ...	१०२
१४२ सारंगदेवजी और उनके पिता दंडा दानव का परस्पर युद्ध होकर सारंगदेवजी का मारा जाना ॥ ..	१०३
१४३ आना की मा का उसे कहना कि मनुष्यों को दंड २ कर खाने से दंडा नाम पड़ा और उसने रम्य अजमेर को बराम कर दिया ॥ .	१०४
१४४ आना का माता से कहना कि अभी जाकर मैं उसे मार आऊँ ॥ ..	१०४
१४५ गधरी का आना को अमृतन संत कहकर शिक्षा करना ॥ ..	१०५
१४६ आना का माता से कहना कि या तो मैं मिर समर्पणा वा छत्र धारणा ॥ .	१०५
१४७ आना का माता से कहना कि मेरा ऐसी है कि जिस से सब कार्य सिद्धी होती है ॥ .	१०५
१४८ आना की माता का तो उसे शत्रु न सेवने को कहना किन्तु उस का अजमेर जाना ॥ .	१०६

	पृष्ठ ।
१४६ कूंडा दानव का अजमेर धन में बहुत दिनों तक मन्तु होकर रहना ॥	१०६
१५० अजमेर की नष्ट भष्ट दशा और आना का खड्ग लेकर प्रेत के पास जाना ॥	”
१५१ आना का अपने मन में विचार कर कहना ॥	१०७
१५२ आना का दानव को कंदरा में देखना और उसके खड्ग मारने पर दानव का गाजना ॥	१०८
१५३ इस पर दानव का आना से उसके मा बाप आदि के नाम पूछना ॥	”
१५४ कूंडा दानव का आना को सिर पर हाथ धर गल्लू पूछना ॥	”
१५५ आना का मन में चिन्ता करना कि जो कूंडा सुभे निगलेगा तो मैं उसका पेट चीर कर निकलूंगा ॥	१०९
१५६ आना का उत्तर देना कि जिस से वीसलदेवजी का मन भेन होगया ॥	”
१५७ दानव का आना से पूछना कि तू क्या राज शरत्त है ॥	११०
१५८ आना का वीसलदेवजी दानव को उत्तर दे कहना ॥	”
१५९ कूंडा दानव का प्रसन्न होकर आना को अजमेर का राज देना ॥	१११
१६० कूंडा का आना को राज देकर गंगा की ओर उड़कर जाना ॥	”
१६१ कूंडा का नेमऋषियों के उपदेश से गंगा की ओर जाते हुए दिल्ली पहुंचना ॥	”
१६२ कूंडा का हारिफ ऋषि से मिलना, और अपनी पूर्व कथा कहना और तीन सौ अस्सी वर्ष महा } तप करके ऋषि से उपदेश ग्रहण करना ॥	११२
१६३ अनंगपाल राजा का दिल्ली बसाना ॥	११४
१६४ अनंगपाल की सुता का निगमबोध कालिंदी तट पर गौरी पूजने जाना ॥	”
१६५ अनंगपाल की सुता का कूंडा को पूजना और उस का कारण पूछना ॥	”
१६६ अनंगपाल की सुता का कूंडा वर के चाहने को पूजने का कहना ॥	११५
१६७ कूंडा का राज त्रियों की सेवा से संतुष्ट होना ॥	”
१६८ कूंडा का वर देकर काशी को उड़ जाना ॥	”
१६९ कूंडा का फिर जन्म लेना और उसका वृत्तान्त चंद्र का वर्णन करना ॥	”
१७० कूंडा का वर देना और काशी में यज्ञ कर तन त्यागना ॥	”
१७१ कूंडा के दानव शरीर का मान और स्वरूप वर्णन ॥	११६
१७२ कूंडा का दिल्ली में पापायुष्य हो खाना और स्त्रियों का उसे पूजना ॥	”
१७३ कूंडा का अनंगपालकी सुता को वीर पुत्र होने का वर देना ॥	”
१७४ कूंडा का वर देकर काशी जाना, वहां दावन योनि से मुक्त हो अवतार लेना सोमेश्वर की परिग्रह } के प्रबंध के लिये क्षत्रियों का उत्पन्न होना, जिन में से वीस अजमेर में और अन्य अन्यत्र हुए } सोमेश्वर की वीर पुत्र पृथ्वीराज हुए ॥	११७
१७५ पृथ्वीराज जी के परिग्रह के सामंते के नाम और जन्म स्थानादि का वर्णन ॥	१२०
१७६ आना राजा का उजड़ी हुई अजमेर को फिर बसाकर राज करना ॥	१२१
१७७ कैसिंह जी का गट्टी पर विराज राज करना ॥	”
१७८ आनन्दमेवजी का राज करना ॥	१२२
१७९ सोमेश्वरजी का सिंहासन पर विराज राज करना ॥	”
१८० सोमेश्वर जी की शूरता का संक्षेप वर्णन ॥	”
१८१ दिल्ली के राजा अनंगपाल जी पर कमधज्ज का चढ़ना ॥	१२३
१८२ कमधज्ज की चढ़ाई सुन अनंग का कालिन्दी उतर मुकाम करना ॥	”
१८३ कमधज्ज की चढ़ाई सुन सोमेश्वर का अनंग की सहायता को दिल्ली जाना और वहां पहुंच अनंग } पालजी से एकान्त में मंत्रणा करना ॥	१२४
१८४ अनंग की बात सुन सोमेश्वर का रोस में श्राय लड़ने को तयार होना ॥	१२५
१८५ दोनों राजाओं का हरो पर जाना और पिछली रात को युद्धारंभ होना ॥	१२६
१८६ सोमेश्वर की सहायता से अनंग की विजयपालजी के साथ लड़ाई ॥	”
१८७ सोमेश्वरजी का दिल्ली में दंडा साहस करना	१२९
१८८ कमधज्ज का पराजित हो पर जाना और सोमेश्वर का अजमेर को चलाना ॥	१३२
१८९ अनंगपालजी का सोमेश्वर जी को बन्दादान करना ॥	”
१९० सोमेश्वरजी का अजमेर आना और वहां बड़ा उत्सव होना	”

	पृष्ठ ।
१६१ पृथ्वीराजजी की कथा का आरंभ करना ॥	१३३
१६२ सोमेश्वरजी का अपने तेज बल से तपना ॥	,
१६३ अलगपालजी का अपनी दो पुत्रियों में से सुन्दरी विजिपालजी को और कमला सोमेश्वर जी को प्रदान करना ॥	१३४
१६४ जिस दिन सोमेश का विवाह हुआ उस दिन क्या २ हुआ ॥	,
१६५ सोमेश्वरजी की रानी के गर्भ रहना और उस का प्रतिदिन बढ़ना ॥	१३५
१६६ सोमेश्वरजी की तृश्ररि रानी का पृथ्वीराजजी को जनना ॥	,
१६७ सोमेशजी के प्रथम पुत्र दुंढा के वर से होना स्मरण कर गंधर्वादि का प्रसन्न होना और उत्सव मानना ॥ ..	,
१६८ जिस दिन पृथ्वीराजजी का जन्म हुआ उस दिन दशान्तों में क्या २ हुआ ॥	१३६
१६९ अलगपालजी का अपनी पुत्री के पुत्र को देखना और उत्सव करना ॥	१३७
२०० पृथ्वीराजजी का जन्म होना सुनकर सोमेशजी का उत्सव करना ॥	१३८
२०१ सोमेश जी का पृथ्वीराजजी को अपने घर लाने को कहना ॥	,
२०२ सोमेशजी का पृथ्वीराजजी को अजमेर ले आना ॥	,
२०३ पृथ्वीराजजी को जन्म संघत् और उनके प्रागट्य का हेतु ॥	,
२०४ पृथ्वीराजजी के शक का संज्ञा का सूत्ररूप ऋषि का वाक्य ॥	,
२०५ सोमेश्वरजी के अपूर्व तप से पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए ॥	१३५
२०६ सोमेश्वरजी का राव (वन) को बधाई देना ॥	,
२०७ पृथ्वीराजजी के जन्मात्तर गुणों का वर्णन ॥	१३६
२०८ सोमेशजी को पृथ्वीराजजी के जन्मात्तर गुण सुनकर हर्ष और शोक होना ॥	,
२०९ विक्रम के सदृश पृथ्वीराजजी हुए कि जिन वी बुद्धि का वर्णन चंद्र करता है ॥	१३७
२१० पृथ्वीराजजी के जन्म सद्यत के ग्रहों की स्थिति ॥	,
२११ सोमेश्वरजी का दरवार में बैठ ज्योतिषियों से पृथ्वीराजजी की जन्मपत्री का फल पढ़ना और पंडितों का फल वर्णन करना ॥	,
२१२ पृथ्वीराजजी के जन्म होने पर क्या २ आश्चर्यदायक बातें हुई ॥	१३९
२१३ पृथ्वीराजजी की बाल अवस्था के चरित्रों का वर्णन ॥	,
२१४ पृथ्वीराजजी का गुरु राम से सब प्रकार की विद्या सीखना ॥	१४३
२१५ एक दिन रात्रि को चंद्र की स्त्री का रस में आकर पृथ्वीराजजी को आदि से अंत तक कीर्ति वर्णन करने के लिये छंद को कहना ॥	१४७
२१६ चंद्र का अपने घर में कथा कहना और स्त्री का उसे सुनते हुए जो स्मरण आये वह पूछते जाना ॥	१५८
२१७ चंद्र की स्त्री का उस से पढ़ना कि केन दानव, मानव, और नृप कीर्ति करने के योग्य है ॥	,
२१८ चंद्र का अपनी स्त्री को गूड उपलक्षों के द्वारा उत्तर दे कहना कि केवल हरि कीर्ति करने योग्य है क्योंकि उस की भक्ति के बिना मुक्ति नहीं है ॥	,
२१९ चंद्र की स्त्री का उसे कहना कि चित्रनेवाले को चित्र कि जिससे तू दुस्तर के पार उतरे चहुवान की कीर्ति कहने से वह क्या रजिगा ॥	१५९
२२० चंद्र का अपनी स्त्री को कहना कि मैं चहुआन का ऋण उतारता हूं ॥	,
२२१ चंद्र की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देता है तो गोविन्द को क्यों नहीं सरता ॥	१६०
२२२ चंद्र का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देख कर शकुनाया हूं केवल भक्ति विलंब करनेवाली है ॥	,
२२३ तथा चंद्र का कहना कि संसार में जो कुछ और मर्वव्यापी है वह कमलासन ही है उसी की उपमा करके मैं पृथ्वीराजजी की कीर्ति वर्णन करता हूं ॥	,
२२४ चंद्र की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख जो उसे देखता है उसे वह देखता है, नर की कीर्ति मत गा क्योंकि उस से और कोई वनपंत नहीं है ॥	१६१
२२५ चंद्र का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग २ में हरि रूप रस है ॥	,
२२६ चंद्र की स्त्री का उसे कहना कि अंग २ में हरि रूप रस वर्णन कर दिखाओ ॥	१६२
२२७ चंद्र का उत्तर दे कहना कि कान दे सुन मैं वर्णन कर दिखाता हूं ॥	,
२२८ उपसंहारणी टिप्पण ॥	१६३

(२) दशम समय ।

(पृष्ठ १८१ से २५४ तक)

	पृष्ठ
१ हरि रूप का मंगलाचरण ॥	१८१
२ दशावतार का नाम स्मरण ॥	”
३ दशावतार की स्तुति ॥	”
४ ब्रह्मोक्ति ।	१८६
५ मच्छावतार की कथा ॥	१८७
६ कच्छावतार की कथा ॥	१८६
७ बगहावतार की कथा ॥	१९३
८ नृसिंहावतार की कथा ।	१९६
९ वामनावतार की कथा ॥	२०२
१० परशुरामावतार की कथा ॥	२०५
११ रामावतार की कथा ॥	२१०
१२ कृष्णावतार की कथा ॥	२१८
१३ श्रीछावतार की कथा ॥	२५२
१४ काल्कि अवतार की कथा ॥	२५३
१५ उपसंहार का कथन ॥	२५४

(३) दिल्ली किल्ली कथा ।

(पृष्ठ २५५ से पृष्ठ २७४ तक)

१ मंगलाचरण ॥	२५५
२ संत का प्रपत्नी स्त्री को कहना कि अनंगपाल की पुत्री को पत्र उत्पन्न होने से दिल्ली की पूर्व कथा का प्रसंग प्राप्त हुआ है ॥	”
३ बालकपन में पृथ्वीराज का दिल्ली प्राप्त करने का स्वप्न देखना ॥	२५६
४ पृथ्वीराज की माता का उससे स्वप्न का वृत्तान्त पढ़ना ॥	”
५ पृथ्वीराज का माता को स्वप्न का वृत्तान्त कहना ॥	”
६ पृथ्वीराज की माता का स्वप्न वृत्तान्त सुन श्रद्धापूर्वक रूप में रजित होना ॥	२५७
७ उमका ज्योतिषियों को बुला कर स्वप्न का सत्यफल पढ़ना ॥	”
८ ज्योतिषियों का उत्तर देना कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा होगा ॥	”
९ ज्योतिषियों को विदा कर माता और पुत्र का मङ्गल गृह में जा बैठना ॥	२५८
१० अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र के आगे दिल्ली की पहिली किल्ला की पूर्व कथा का कहना और राजा कल्हन का बन्दोबाज करते सुना और स्वान के चरित्र से भूमि का वीरत्व देखना ॥	”
११ उस वीर भूमि में व्यास का दिल्ली गाहना ॥	”
१२ बहा बल्लभ का कान्ठपुर बसा कर राज करना और फिर उसके जितनीक पाटी पाँडे अनंगपाल का होना ॥	२५९
१३ इतनी कथा सुनकर पृथ्वीराज के मन में श्रवण होना ॥	”
१४ विपरीत समय का आना देख कर मङ्गल सभा का सक्रिय होना ॥	”
१५ अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र (पृथ्वीराज) को अपने पिता के लिए से दिल्ली बसाने के लिये पाषाण और दिल्ली गाहने की कथा का कहना ॥	”
१६ व्यास का कहना कि पाँच घंटों तक पाषाण का हाथ न लगाने से वह रूप के लिए पर दृष्ट हो जायगा परन्तु राजा का हृदय अनर्थ पर मानना ॥	२६०
१७ नाथ प्रभु की दिल्ली गाहना अर्थात् संपूर्णतः पूर्ण करना ॥	”

१८	सय के वरजने पर भी उस किल्ली को उखाड़ डालना ॥	पृष्ठ
१९	पापाण के उखाड़ते ही रुधिर की धार चलना और आपत्तय होना ॥	"
२०	पापाण का उखाड़ लेना सुन व्यास का दुखित हो राजा के पास आना ॥	२६१
२१	अनंगपाल का पप्रघाताय काना और व्यास का आगम कहना ॥	"
२२	व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना ॥	"
२३	अनंगपाल के पीछे जो जो दिल्ली के राजा होंगे उनके विषय में व्यास का भविष्य कथन करना ।				} २६४
	तुंगरों का नाश और चौहानों का राज्य होगा ॥	
२४	चौहानों के पीछे सुमलखान और उनके पीछे फिर हिन्दुओं का राज्य होगा ॥	"
२५	फिर मेवातपति स० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे ॥	"
२६	व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा ॥	२६५
२७	माता का दान और होम करना ॥	"
२८	मातुल का अपने मन में मोह करना ॥	२६६
२९	पृथ्वीराज का स्वप्नफल सुन आनन्द में फूले न समाना ॥	"
३०	स्वप्नफल सुन कर पृथ्वीराज की सर्वस्व वृद्धि कैसे होने लगी ॥	"
३१	पृथ्वीराज का अतः अथतार होना ॥	२६७
३२	लोहान का गौव मे से कूदना और अजानवाह नाम और जागीर पाना ॥	"
३३	दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार ॥	२६८
३४	उपसंहारयो टिप्पण ॥	२६९

(४) लोहानों का अजान बाहु समय ।

(पृष्ठ २७५ से पृष्ठ २८० तक)

१	पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को बत्तीस हाथ ऊंची गोप से कूदने की उत्तेजना ॥	२७५
२	लोहाना का कूदना ॥	"
३	लोहानों के कूदने की प्रशंसा ॥	२७६
४	पृथ्वीराज का दौड़ कर लोहाना के पास आना और उसे हिये लगाना ॥	"
५	उसे आप उठाकर अपने घर लेजाना और इलाज करना ॥	"
६	हकौमों का लोहाना को दवा के लिये लेजाना और नवें दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पास आना ॥	} "
७	पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहाना को ग्वालियर, रणथम्भौर, श्रोड़का आदि पाँच हजार गाँव देना ॥	
८	आजानुबाहु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि देना ॥	"
९	लोहाना के वीरत्व का वर्णन ॥	२७८
१०	लोहाना का पाँच हजार सेना लेकर श्रोड़का के राजा जसवन्त पर चढ़ाई करना ॥	"
११	श्रोड़का पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन ॥	२७९
१२	श्रोड़का के राजा जसवन्त का समना करने के लिये प्रस्तुत होना ॥	"
१३	चढ़ाई होना और लोहाना का जीतना ॥	"
१४	लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना ॥	२८०

(५) कन्हपट्टी समय ।

(पृष्ठ २८१ से पृष्ठ २८८ तक)

१	पृथ्वीराज के भोरा भीमंग से और होने का कारण ॥	२८१
२	पृथ्वीराज के कुंश्रघन का तपतेज वर्णन ॥	२८२
३	गुजरात के राजा भोरा भीम का तपतेज वर्णन ॥	"

	पृष्ठ
४ उसके काका और छेरे भाइयों की वीरता का वर्णन ॥	”
५ पाट बैठने पर प्रतापसी को गर्व होना ॥	२८३
६ प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भोसंग के पास होना ॥	”
७ भोरा भीम की उनसे लड़ाई ॥	”
८ उन सातों भाइयों का चलचित होना ॥	२८५
९ पृथ्वीराज का उन चलचित सातों भाइयों को जागीर और सिरपाव देना ॥ . . .	”
१० पृथ्वीराज का दरवार करके बैठना उसमें प्रतापसी का आना और उसे मूक मरोड़ने पर कन्ह का मारना ॥	”
११ भाई के मारे जाने पर अरिसिंह का क्रोध करना और कन्ह चौहान पर धार करना ॥ .. .	२८६
१२ पृथ्वीराज का महल में जाना और अरि सिंहादि की लड़ाई का होना ॥	२८७
१३ हरसिंह का युद्ध ॥	२८८
१४ नरसिंह का युद्ध ॥	”
१५ कैमास का युद्ध ॥	”
१६ माधव खवास का युद्ध ॥	२८९
१७ कन्ह का युद्ध ॥	”
१८ चालुकों के मारे जाने से दरवार में कोलाहल होना ॥ . . .	२९०
१९ सांभ हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी ॥ . . .	२९१
२० कन्ह चौहान का युद्ध जीतना ॥ . . .	”
२१ प्रतापसिंह आदि के मारे जाने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना ॥ . . .	२९४
२२ पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चौहान का घर बैठ रहना तीन दिन तक अजमेर में हरताल पढ़ना ॥	”
२३ सात दिन तक कन्ह के न आने पर पृथ्वीराज का उनके घर मनाने को जाना और कहना कि संसार में यह बुराई हुई कि घर ब्लाकर चालुकों को मार डालना ॥ .. .	२९५
२४ कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा में बैठकर मोह पर ताव रख सकता है ॥ .. .	”
२५ पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आंख में पट्टी बांधे रहा कीजिये ॥	”
२६ पृथ्वीराज का जडाऊ पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कन्ह के आंख में बांध देना ॥ .. .	”
२७ पट्टी रात दिन बंधी रहती थी ॥	२९६
२८ कन्ह चौहान की प्रशंसा ॥ . . .	२९७
२९ चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुःखी होना ॥ .. .	”
३० भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ॥ .. .	”
३१ पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार हैं जब चाहें आओ ॥ .. .	२९८
३२ भीम का चढाई के लिये तय्यार होना पर सरदारों के कहने से वर्षा ऋतु भर ठहर जाना ॥ .. .	”
३३ उपसंहार का कथन ॥	”

[६] आपेटक वीर वरदान वर्णन समय ।

(पृष्ठ २९९ से पृष्ठ ३२८ तक)

१ पृथ्वीराज के कंभरपने के तपतेज का वर्णन ॥ .. .	३०९
२ पृथ्वीराज की दिनचर्या का वर्णन ॥ .. .	३०९
३ पृथ्वीराज का आखेट के लिये निकलना ॥ .. .	३०९
४ प्रपेले व शि चंद्र का घन में भूल जाना ॥ .. .	”
५ एक आम के पेड़ के नीचे एक ऋषि ने उसकी भेंट होना ॥ .. .	”
६ ऋषि चंद्र का ऋषि के पास जाकर पढ़ना कि आप कौन हैं ॥ .. .	३०९
७ ऋषि का पढ़ना कि तुम कौन हैं इस काट्ट वन में कैसे आए ॥ .. .	”
८ चंद्र का अपना परिचय देना ॥ .. .	”
९ जती का प्रसन्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके ब्रह्म में ध्यान होना है ॥ .. .	३०३

	पृष्ठ
१८ सब के घरजने पर भी उस किल्ली को उखाड़ डालना ॥	१
१९ पाषाण के उखाड़ते ही रुधिर की धार चलना और आप्रचर्य होना ॥	१
२० पाषाण का उखाड़ लेना सुन व्यास का दुखित हो राजा के पास आना ॥	२६९
२१ अनंगपाल का पप्रघाताय कहना और व्यास का आगम कहना ॥	१
२२ व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना ॥	१
२३ अनंगपाल के पीछे जो जो दिल्ली के राजा होंगे उनके विषय में व्यास का भविष्य कथन करना । तुंगरों का नाश और चौहानों का राज्य होगा ॥	} २६४
२४ चौहानों के पीछे मुसलमान और उनके पीछे फिर हिन्दुओं का राज्य होगा ॥ ..	१
२५ फिर मेवातपति स० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे ॥	१
२६ व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा ॥	२६५
२७ माता का दान और होम करना ॥	१
२८ मातुल का अपने मन में मोह करना ॥	२६६
२९ पृथ्वीराज का स्वप्नफल सुन आनन्द में फूले न समाना ॥	१
३० स्वप्नफल सुन कर पृथ्वीराज की सर्वस्व वृद्धि कैसे होने लगी ॥	१
३१ पृथ्वीराज का अस्तित्व अवतार होना ॥	२६७
३२ लोहान का गाँव में से कृदना और अजानवाह नाम और जागीर पाना ॥	१
३३ दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार ॥	२६८
३४ उपसंहारणी टिप्पण ॥	२६९

(४) लोहानों का अजान बाहु समय ।

(पृष्ठ २७५ से पृष्ठ २८० तक)

१ पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को बत्तीस हाथ ऊँची गोप से कृदने की उत्तेजना ॥	२७५
२ लोहानों का कृदना ॥	१
३ लोहानों के कृदने की प्रशंसा ॥	२७६
४ पृथ्वीराज का दौड़ कर लोहानों के पास आना और उसे हिये लगाना ॥	१
५ उसे आप उठाकर अपने घर लेजाना और इलाज करना ॥	१
६ हकामों का लोहानों को दवा के लिये लेजाना और नवें दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पास आना ॥	} १
७ पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहानों को ग्वालियर, रणथम्भौर, श्रोड्डा आदि पाँच हजार गाँव देना ॥ २७७	२७७
८ अजानबाहु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि देना ॥	१
९ लोहानों के वारत्थ का वर्णन ॥	२७८
१० लोहानों का पाँच हजार सेना लेकर श्रोड्डा के राजा जसवन्त पर चढ़ाई करना ॥	१
११ श्रोड्डा पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन ॥	२७९
१२ श्रोड्डा के राजा जसवन्त का समना करने के लिये प्रस्तुत होना ॥	१
१३ लड़ाई होना और लोहानों का जीतना ॥	१
१४ लोहानों का गठ पर अधिकार कर लेना ॥	२८०

(५) कन्हपट्टी समय ।

(पृष्ठ २८१ से पृष्ठ २८८ तक)

१ पृथ्वीराज के भोग भोग से और होने का कारण ॥	२८१
२ पृथ्वीराज के कुंशरण का तपतेज वर्णन ॥	२८२
३ गुनगान के राजा भोग भोग का तपतेज वर्णन ॥	१

	पृष्ठ
४ उसके काका और चचेरे भाइयों की वीरता का वर्णन ॥	॥
५ पाट बैठने पर प्रतापसी को गर्व होना ॥	२८३
६ प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भोमंग के पास होना ॥ . .	॥
७ भोरा भीम की उनसे लड़ाई ॥	॥
८ उन सातों भाइयों का चलचित होना ॥ . .	२८५
९ पृथ्वीराज का उन चलचित सातों भाइयों को जागीर और सिरोपाष देना ॥ . .	॥
१० पृथ्वीराज का दरवार करके बैठना उसमें प्रतापसी का आना और उसे मूछ मरोड़ने पर कन्ह का मारना ॥	॥
११ भाई के मारे जाने पर अरिसिंह का क्रोध करना और कन्ह चौहान पर धार करना ॥ .	२८६
१२ पृथ्वीराज का महल में जाना और अरि सिंहादि की लड़ाई का होना ॥	२८७
१३ हरसिंह का युद्ध ॥	२८८
१४ नरसिंह का युद्ध ॥	॥
१५ कैमास का युद्ध ॥	॥
१६ माधव खवास का युद्ध ॥	२८९
१७ कन्ह का युद्ध ॥	॥
१८ चालुकों के मारे जाने से दरवार में कोलाहल होना ॥	२९०
१९ सांभ हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी ॥	२९१
२० कन्ह चौहान का युद्ध जीतना ॥	॥
२१ प्रतापसिंह आदि के मारे जाने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना ॥ ...	२९४
२२ पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चौहान का घर बैठ रहना तीन दिन तक अजमेर में हरताल पड़ना ॥	॥
२३ सात दिन तक कन्ह के न आने पर पृथ्वीराज का उनके घर मनाने को जाना और कहना कि संसार में यह बुराई हुई कि घर बलाकर चालुकों को मार डाना ॥ ..	२९५
२४ कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा में बैठकर मोछ पर ताव रख सकता है ॥ ..	॥
२५ पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आंख में पट्टी बांधे रहा कीजिये ॥	॥
२६ पृथ्वीराज का जडाऊ पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कन्ह को आंख में बांध देना ॥ ..	॥
२७ पट्टी रात दिन बंधी रहती थी ॥	२९६
२८ कन्ह चौहान की प्रशंसा ॥	२९७
२९ चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुःखी होना ॥ ..	॥
३० भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ॥	॥
३१ पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार हैं जब चाहें आओ ॥	२९८
३२ भीम का चढाई के लिये तय्यार होना पर सरदारों के कहने से घर्षा ऋतु भर ठहर जाना ॥ ..	॥
३३ उपसंहार का कथन ॥	॥

[६] आपेटक वीर वरदान वर्णन समय ।

(पृष्ठ २९९ से पृष्ठ ३२८ तक)

१ पृथ्वीराज के कंशरपने के तपतेज का वर्णन ॥	३०१
२ पृथ्वीराज की दिनचर्या का वर्णन ॥	३००
३ पृथ्वीराज का आपेट के लिये निकलना ॥	३०१
४ प्रकैले षडि चंद्र का दन में भूल जाना ॥	॥
५ गक शाम के पंड के नीचे गक ऋषि में उतरती भेंट होना ॥	॥
६ ऋषि चंद्र का ऋषि के पास जाकर पूछना कि आप कौन हैं ॥	३०२
७ ऋषि का पूछना कि तुम कौन हो इस बाइड दन में हमें आर ॥	॥
८ चंद्र का अपना परिचय देना ॥	॥
९ जती का प्रसन्न होकर गक मंत्र बतलाना जिससे दन में दायन होर है ॥	३०३

	पृष्ठ
१० चन्द्र का मंत्र की परीक्षा करना और वीरों का प्रगट होना ॥	”
११ वीरों के रूप आदि का वर्णन ॥	३०४
१२ चन्द्र का वीरों को देख कर प्रसन्न होना ॥	३०६
१३ चन्द्र का वीरों की पूजा करना ॥	”
१४ चन्द्र का पृथ्वीराज के लिये शत्रुगमन मंत्र ग्रहण करना ॥	”
१५ क्षेत्रपालो (वीरों) का पूछना कि हम लोगों को क्यों बुलाया है ॥	”
१६ चन्द्र का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की सहायता के लिये आप लोगों को बुलाया है ॥	३०७
१७ चन्द्र का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि की लड़ाई में रत्ना करते आए मेसे ही पृथ्वीराज की भी करना ॥	”
१८ वीरों का प्रसन्न होकर कहना कि जब गढ़ पड़े तब स्मरण करना ॥	”
१९ भेरव का एक वीर को आज्ञा देना कि सब वीरों का नाम बतला कर चन्द्र को पहिचानवा दो ॥	३०८
२० सब वीरों का नाम गुण कथन ॥	”
२१ चन्द्र का वावना वीरों को पहिचान कर प्रणाम करके विदा करना और आप पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना ॥	३११
२२ चन्द्र का उस जङ्गल का वर्णन करना जहां पृथ्वीराज आखेट खेलता है ॥	”
२३ पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा ॥	३१२
२४ कन्व घोहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से मिलना और कहना कि आज यहीं शिकार हो ॥	३१५
२५ पृथ्वीराज का शिकार से घर की ओर लौटना ॥	”
२६ गोट (भोजन) के स्थान पर ठहरना ॥	”
२७ चन्द्र सरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला सब वस्तुएं एकान्त में लेजाकर कहना ॥	”
२८ पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ॥	३१६
२९ सब सरदारों को एक एक घोड़ा बाट दिया उसी पर सब चढ़ कर चले ॥	”
३० कवि चन्द्र को एक शायी देना जो महा बनवान था ॥	”
३१ कवि चन्द्र का पृथ्वीराज की स्तुति करना ॥	३१७
३२ सब लोगों को अपने अपने घर विदा करना ॥	३१८
३३ वीरों के मिलने के समाचार से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ॥	”
३४ पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥	”
३५ दूसरे दिन सबेरे पृथ्वीराज का उठना और नित्य कृत्य करना ॥	३१९
३६ नहा कर दस गोदान दस तोला सोना और बहुत सा अन्नदान देना ॥	”
३७ महल में पृथ्वीराज का विराजना और सरदारों का आना ॥	”
३८ वीरों के वग हे ने को बात से पृथ्वीराज का पेट फूलता है पर किसी से कह नहीं सकता ॥	३२०
३९ कैमास का हाथ जोड़ कर पूछना कि आपके मुख पर कुछ उत्साह दिखाई देता है पर आप खुल कर कहते क्यों नहीं ॥	”
४० पृथ्वीराज का चन्द्र के वीरों को वग करने का समाचार कहना ॥	”
४१ सरदारों का उपहास करके कहना कि भाट, नट, चारन, ये सब आरत हैं इनकी बात सत्य नहीं माननी चाहिए ॥	३२१
४२ कैमास ने कहा कि चन्द्र को देखो ने करदान दिया है वह मरमुच कोई अवतार है ॥	”
४३ कन्व ने कहा कि चन्द्र छुट गया था यह बात सच है, इसी पर उसने यह बात प्रसन्न करने के लिये मटा है ॥	”
४४ पृथ्वीराज के मन में सन्देह हो जाना ॥	३२२
४५ इतने में चन्द्र का आकर आस'म देना ॥	”
४६ पृथ्वीराज का चन्द्र को पास बुलाकर वीरों की बात छेड़ना ॥	”
४७ पृथ्वीराज का चन्द्र की बड़ाई करके कहना कि हम लोगों की बड़ी अभिलाषा है सो आज वीरों का दर्शन करवाओ ॥	”
४८ कवि चन्द्र का मंत्र उचना और होम करना ॥	३२३
४९ वीरों का प्रगट होना ॥	”

		पृष्ठ
५०	वीरो के शब्द से सामंती का डरकर सोचना कि बिना काम इनको बुलाना ठीक नहीं हुआ ॥	..
५१	दो मत्त हाथी दरवार के बाहर बाधे थे वीरो का भयानक शब्द सुनकर चौके ॥	३२४
५२	दोनो हाथियों का तुडाकर लड़ाना और दरवार में खलभनी मचना ॥	..
५३	सरदारो का बहुत उपाय करना पर हाथियों का वज्र में न आना ॥	३२५
५४	चन्द्र का वावन वीरो से प्रार्थना करना कि आप लोग इन हाथियों को कुड़ाकर बांध बीजिये ॥	..
५५	भैरव की आज्ञा से वीरो का हाथियों को जंजीर में बाध देना ॥	..
५६	यह कौतुक देख कर सरदारो का आश्चर्य में होना और सबका दरवार में आकर बैठना ..	३२६
५७	पृथ्वीराज का सब वीरो को प्रणाम करना, चन्द्र का नाम से लेकर सब वीरो को परिचयदाना ॥	..
५८	चन्द्र का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इन को बुलाया है इससे इनको बलि देना पृथ्वीराज का व वन छोड़ा मटिरा वावन बकरे मगाकर बलि देना और भैरव आदि की पूजा करना ॥	..
५९	वीरो का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि वर मागो सो हमदें और अब हमको बिदा करो ३२७	३२७
६०	पृथ्वीराज की ओर से चन्द्र का कहना कि लड़-ई के समय हमारी सहायता कीजियेगा ॥	..
६१	भैरव का चन्द्र को बुलाकर कहना कि जब तुम्हें टेढा समय आवे तब हमको याद करना ॥	..
६२	वचन देकर वीरो का बिदा होना, सरदारो का चन्द्र की बात पर प्रतीत करना और पृथ्वीराज का चन्द्र पर अधिक प्रेम बढना ॥	३२८
६३	पृथ्वीराज का चन्द्र से कहना कि सब सरदारो को मन्त्र बतला दो चन्द्र का सबको मन्त्र बतलाना
६४	चन्द्र को बीस गांव और एक घोडा पृथ्वीराज ने दिया ॥	..

[७] नाहर राय कथा वर्णन ।

(पृष्ठ ३२९ से पृष्ठ ३६८ तक)

१	सोमेश्वर देव का शिवरात्रि व्रत जागरण करके सोने की तुला दान करना और उसे घांट देना ॥	३२९
२	शिवजी को स्तुति करना ॥	३३०
३	शिवजी की स्तुति करके सोमेश्वर देव का अपने कुमार के धिवाह के लिये नाहर राय के पास दूत भेजना ॥	३३१
४	ग्रामटामादि में निष्ण दूत का पत्र दरमाना ॥	..
५	कवि का सनीचरी दृष्टि के योग पर से भूविष्य में वीर दोष होने का कथन करना ॥	..
६	कवि का कहना कि स्त्री के कारण से वीर दोष आगे रामादि बडे घडों को हो चुका है ॥	३३२
७	कामधेनु का चरित्र ॥	..
८	प्रात समय जगते ही दूत का पत्र पढना ॥	..
९	उस पत्र में वीर रूप देवस्थान त्रिगुलाज के प्रभाव से पृथ्वीराज के बलवान होने और नाहर राय क बल प्रताप का वर्णन ॥	३३३
१०	पटन में चालुक्य भामदेव, शाक पर जित (सलख,) पंधार, मेघाह में समरसिद्ध, दिल्ली में अनहूपाल जैसे बलवानों में मण्डोवर में नाहरराय के राज्य करने का वर्णन ॥	३३४
११	पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्था में दिल्ली ननिहाल में आना, दिल्लीश अनहूपाल के आधीन राजाश्री का वर्णन ॥	..
१२	मण्डोवर के नाहर राय का दिल्लीश्वर की भेट को दिल्ली आना, पृथ्वीराज का रूप देख कर प्रसन्न होना और माना पहिरा कर कहना कि जब पृथ्वीराज सोलह वर्ष का होगा तब मैं अपना बन्दा हमसे विवाह दूंगा ॥	३३५
१३	नाहर राय का मत प-ट जाना अर्थात् बन्दा देना पाली-गार करना ॥	..
१४	नाहर राय का उत्तर निराना कि तुम्हारा कुल आदि हमारे योग्य नहीं है ॥	३३६
१५	दूत का वह पत्र नाहर पृथ्वीराज के हाथ में देना ॥	..
१६	पृथ्वीराज का क्रोध करना सोमेश्वर देव का सम्मान ॥	..
१७	सरदारो का पत्र सुन कर क्रोध करना ॥	३३७
१८	पृथ्वीराज का चट्टाई के लिये सेना सजना ॥	..

	पृष्ठ	
१६	सेना का वर्णन ॥	३३८
२०	पिना की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का लड़ाई के लिये यात्रा करना ॥	३४०
२१	नाहरराय के दूता का पृथ्वीराज की चढाई और सेनावन का समाचार नाहर राय को देना ॥	"
२२	पृथ्वीराज का प्रताप सुन कर नाहर राय का चौकचा होना ॥	३४१
२३	अपने सरदारों से नाहर राय का कहना कि अब क्या करना चाहिये पहिले चौहानों से हमसे और बात थी पर अब तो बिगड़ गई ॥	"
२४	सरदारों का कहना कि लड़ना चाहिये ॥	३४३
२५	नाहर राय का कहना कि आगे से बढकर एक बारगी उन पर चढाई करना चाहिये नहीं तो जीत न होगी ॥	"
२६	नाहर राय का सेना सजना ॥	"
२७	पृथ्वीराज की सेना की प्रशंसा ॥	३४३
२८	पृथ्वीराज का आगे से बढकर लड़ने के लिये जावनराय को आज्ञा देना ॥	"
२९	जावन राय का उत्तर दे कहना कि नाहरराय का पय बांधा सो वह रणभूमि को तिरछी छोड़ कहीं चला गया ॥	"
३०	सबेरे नाहरराय के भग जाने पर सांभ को पृथ्वीराज का पहुँचना और उसकी खोज करना ॥	३४४
३१	चानुरु के प्रधान (दीवान) के घर नाहरराय का पता मिलना और सामन्त सहित पृथ्वीराज का नदी उतरना ॥	"
३२	सुभट सहित सेना में पृथ्वीराज कैसा शोभता है ॥	३४५
३३	पृथ्वीराज के घाम पहुँचने का समाचार नाहरराय का सुनना और सेना इकट्ठी करना ॥	"
३४	घाटी पर पर्यतराय को रास्ता रोकने के लिये भेजना ॥	"
३५	पर्यतराय का घाटी रोकना ॥	"
३६	पर्यतराय कैसे घाटी रोक कर बैठा है ॥	३४६
३७	घाटी रुकने का समाचार पृथ्वीराज को मिलना ॥	"
३८	क्रोध करके पृथ्वीराज का पर्यतराय से लड़ने को कन्ध चौहान को भेजना ॥	"
३९	कन्ध का पर्वत से युद्ध और उसमें पर्यत राय का मारा जाना ॥	३४७
४०	पर्यत के मारे जाने पर नाहरराय का स्वयं टूट पड़ना ॥	३४८
४१	पृथ्वीराज का भी चढ चलना ॥	"
४२	इधर पृथ्वीराज इधर नाहर राय का सन्मुख युद्ध ॥	३४९
४३	उसमें पृथ्वीराज का नाहरराय के घोड़े का मार डालना ॥	३५०
४४	रनवीर का सन्मुख हो पृथ्वीराज से जुद्ध करना ॥	"
४५	मोहन परिहार और पवार का सन्मुख हो लड़ना ॥	"
४६	चामड का युद्ध ॥	३५१
४७	नाहर से नाहर राय का लड़ना ॥	३५२
४८	बलराय का खेत में मँडना ॥	३५३
४९	घोर युद्ध वर्णन ॥	"
५०	लोहाना आजानु बाहु के युद्ध वर्णन ॥	३५४
५१	कन्ध चौहान के युद्ध का वर्णन ॥	३५६
५२	नाहरराय का भागना और पृथ्वीराज का पीछा करना ॥	३५७
५३	पट्टन में पृथ्वीराज का राज्याभिषेक होना ॥	३५८
५४	नाहर राय का हार कर अपनी कन्या का विवाह का लग्न लिखवा कर भेजना ॥	३५९
५५	पृथ्वीराज का व्याहने को जाना ॥	३६०
५६	पृथ्वीराज का तारन की बधना करना ॥	"
५७	पृथ्वीराज का नाहर राय की कन्या से विवाह होना ॥	"
५८	नाहर राय का कहना कि आपके काम में मोम देने के सिवाय और कुछ देने के योग्य हम नहीं हैं ॥३६६	३६६
५९	नाहर राय की कन्या का गुण और रूप वर्णन ॥	"
६०	पृथ्वीराज का जीत कर स्वयं के साथ लौटना ॥	"
६१	पृथ्वीराज का शरणागत होना मरिच होना ॥	३६७

६२	एध्वीराज का विवाह कर घर पहुंचना ॥	३६७
६३	एध्वीराज की प्रशंसा ॥	"

[८] मेवाती सुगल कथा ॥

(पृष्ठ ३६९ से पृष्ठ ३८४ तक)

१	सोमेश्वर के बंढोवर जीतने और लूट को सन्दारो में खांट कर प्रथम प्रताप के साथ राज्य करने का वर्णन ॥	३६९
२	सोमेश्वर के गुणो और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन ॥	"
३	सोमेश्वर का मेवात के राजा सुगल (सुद्वल राय) के पास कर लेने के लिये दूत भेजना ॥					३७०
४	राजा सुद्वल का यह पत्र पाकर क्रोध प्रगट करके दूत को लाटा देना और सोमेश्वर का पत्रोत्तर पाकर क्रोध करना और उस पर चढाई करने की आज्ञा देना ॥	"
५	स्योतिषियो से सुहूर्त दिखाकर पुष्य नक्षत्र में चढाई के लिये निकलना ॥	३७१
६	घर की रक्षा के लिये एध्वीराज को घर पर छोडा ॥	"
७	यात्रा के समय अच्छे शगुन मिलने ॥	३७२
८	एध्वीराज को राज्य में छोडकर सोमेश्वर का मेवात पर चढाई करना और उसकी सूचना पत्र द्वारा सुद्वल राय को दे कहना कि लडो वा दड दे आधीन हो ॥	"
९	सुद्वलराय का पत्रोत्तर देकर सोमेश्वर और एध्वीराज दोनों से लडाई मांगना ॥	३७३
१०	सोमेश्वर का अपने लडके के बध के विषय में संशय करना ॥	"
११	और एध्वीराज के पास सुद्वल राय के पत्र का संदेश भेजना और उसका रोष में आकर पिता के पास रण में आ मिलना ॥	"
१२	एध्वीराज का पिता के पास पहुंच कर सब सेना को सोते हुए पाना और सोमेश का उससे न बोलना ॥	३७४
१३	उसका पिता को निद्रा में और शत्रु की सेना को देख भाल कर उत्तापित होना ॥	"
१४	और उसका शत्रु की सेना पर भपटना ॥	"
१५	एध्वीराज और सुद्वल राय का युद्ध ॥	.		.	.	"
१६	गैरे एध्वीराज के अन्य सुर सुद्वल के योद्धाओं में लडे ॥	३७५
१७	यान्ह का मेवातियो से युद्ध ॥	"
१८	कैसाम का पठान बार्जीद खा से जुद्ध ॥	.		.	.	३७६
१९	धूरभ से राम गूजर का युद्ध ॥	"
२०	इतने में एध्वीराज का रण के बीच में अचानक जा पहुंचना और घोर युद्ध का होना ॥					"
२१	सुद्वलराय की फौज का तितर बितर होना और उसका पत्रा जाना ॥	.		.	.	३७७
२२	पाथि का सोमेश्वर की सेना और घोडे हाथी की यज्ञाटि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ॥					"
२३	रण में मरे और घायल कैसे टीखते थे और कौन कौन योद्धा किस किस से घायन हुए और मारे गए ॥	३७८
२४	जयजयकार वा उपमाओं के सहित वर्णन ॥	३७९
२५	एध्वीराज की विजय ॥	३८३

(९) हुसेन कथा ॥

(पृष्ठ ३८५ से पृष्ठ ४२४ तक)

१	सभरि नरेश (एध्वीराज) और रजनी के पाट (महावृद्धिन) से कैसे घेर हुआ इसका वर्णन ॥	"
२	महावृद्धिन से भाई मीर हुसेन के गुणो और उसकी वीरता की प्रशंसा ॥	३८५
३	महावृद्धिन की पाहुर विजयो की प्रशंसा, महावृद्धिन वा उसपर प्रेम, मीर हुसेन का भी उसपर प्रेम होना और विजयो वा भी मीर को घाटना ॥	३८६

	पृष्ठ
४ ग्राह का यह समाचार सुन कर क्रोध करना ॥	३८६
५ हुसैन का ग्राह की बात न मानना और ग्राह का आज्ञा देना कि या तो मेरा राज्य छोड़ दो नहीं मारे जाओगे ॥	"
६ मीर हुसैन का देश छोड़ कर परिवार आदि के साथ नागौर की ओर आना ॥	३८७
७ मीर हुसैन का पृथ्वीराज के यहाँ आना ॥	"
८ मीर हुसैन को आठर के साथ पृथ्वीराज का बुलाना और मीर का आकर सनाम करना ॥	"
९ पृथ्वीराज का शिकार खेलना और मीर हुसैन का सुन्दरदास को पृथ्वीराज के पास भेजना ॥	३८८
१० सुन्दरदास का स्थान देख कर मीर का डेरा डालना ॥	"
११ हरन (स्त्रियो) का डेरा पीछे की ओर डालना ॥	"
१२ सुन्दरदास का पृथ्वीराज के पास जाना पृथ्वीराज का मीर का कुशल समाचार पूछना और उसका सब हाल कहना ॥	"
१३ मंत्री, कैमास चन्द, पुंडीर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज का पूछना कि क्या करें क्योंकि दोनों तरह विपत्ति है एक ग्राह का के प दूसरे शरण प्राप्त को न रखना धर्म विरुद्ध है ॥	३८९
१४ चन्द का सलाह देना कि जैसे शरणागत होने पर विष्णु भगवान ने मत्स्य रूप धर कर पृथ्वी को अपनी सींग पर रक्खा था वैसेही आप भी कीजिए ॥	"
१५ जैसे शिवजी गने में विष धारण किए हैं वैसे ही मीर को आप भी रखिए ॥	३९०
१६ सुन्दरदास से पूछना कि सब स्त्रियाँ तो सुख से हैं और ग्राह से भगडा होने की बात क्या सब है ॥	"
१७ सुन्दरदास का कहना कि दूर की सेसी एक पातुर शहाबुद्दीन के पास थी उस को लेकर हुसैन यहाँ चाहना की शरण में आया है ॥	"
१८ चन्द का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि वीरे मौरध्यज के यहाँ अर्जुन ब्राह्मण बनकर शरण में गया, भगवान ने मिह बन कर मास मागा, शरणागत द्रोपदी का चोर बढाया, वैसेही तुमने शरणागत को रखकर क्षत्रिय धर्म की रक्षा की तुम्हारे माता पिता धन्य हैं ॥	"
१९ ग्राहहुसैन का पृथ्वीराज से मिलना, पृथ्वीराज का आठर देना ॥	३९१
२० हुसैन को दक्षिण की ओर नागौर की जागर देना ॥	"
२१ पृथ्वीराज का हुसैन का घोड़े हाथी आदि देना और दोनों का परस्पर प्रेम बढना ॥	"
२२ शहाबुद्दीन का चार दूत अजमेर भेजना ॥	३९२
२३ पृथ्वीराज का हुसैन को कैथल हामी हिसार का पगना देना और शिकार में साथ रखना यह सब समाचार दूतों का शहाबुद्दीन से कहना ॥	३९२
२४ शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब्यों को पृथ्वीराज के पास भेजना कि भला चाहो तो हुसैन को निकाल दो ॥	३९३
२५ अरब्यों से कहना कि पहिले हुसैन के पास जाना जो वह पातुर को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्ह करके न माने तो पृथ्वीराज के पास जाकर हमारा पत्र देकर समझाना ॥	"
२६ तीन सौ सवार और रथ लेकर अरब्यों को रवाना करना ॥	३९४
२७ गुरु मरीने में अरब्यों का नागौर पहुचना ॥	"
२८ अरब्यों का हुसैन से मिलकर समझाना, हुसैन का न मानना ॥	"
२९ अरब्यों का पृथ्वीराज के पास जाना ॥	"
३० पृथ्वीराज का सुनतान को कुशल पूछना ॥	"
३१ अरब्यों का कहना कि हुसैन्या को निकाल देने के लिये सुनतान ने कहा है ॥	३९५
३२ शहाबुद्दीन का संदेहा सुनकर पृथ्वीराज का मुग्न लान होगया भाँहें घटे गई ॥	"
३३ कैमास ने दृष्ट कर कहा कि शरण लोको का धर्म सुनतान नहीं जानता हमसे ऐसा कहता है हुसैन पृथ्वीराज के शरणागत है तनी का धर्म उसे छोडने का नहीं है ॥	"
३४ चन्द चाहान सुरमिह गोयटराज चन्द, पुंडीर आदि का भी यही कहना और सुनतान से लडने को हम मस्तुत हैं यह कहना ॥	"
३५ अरब्यों का अपना निरादर होता देख उठ आना और गजनों को कृव करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ॥	३९६
३६ दर्भार करके शहाबुद्दीन का तातारग्या, अरब्यों मीरजमाम बमाम, तुगामाग्या, रहनमहनाग्या,	

	पृष्ठ
रुस्तमखां, हाजीखां, गाजीखां ज़म्मनखां ग़जनीखां, मुहब्बतखां, मीरखां, आदि सरदारों को बुलाकर सलाह करना ॥	३६६
३७ तातारखां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढाई करनी चाहिए ॥	३६७
३८ खुरासानखां का तातारखां से कहना कि उसके बल को भी बिचार लो, जल्दी न करो ॥ ..	”
३९ अक्रबरखा का कहना कि उसका बल अतुल है तुम लोगो ने देखा नहीं है इससे ऐसा कहते हो ॥ ..	”
४० शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ॥	”
४१ अरब खां का पृथ्वीराज के बल की प्रशंसा करना ॥	३६८
४२ तातार खा का अरब खा की बात को हसी में उड़ा देना, अरब खां का कहना कि अपनी आख से न देखने से ऐसा कहते हो ॥	”
४३ शाह का क्रोध करके तातार खां को चढाई के लिये प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ॥ ...	”
४४ शाह के जी में रात दिन चाहान की चिन्ता लगी रहना ॥ ...	३६९
४५ सेना के साथ चढाई के लिये शाह का तयार होना ॥ ..	”
४६ अशकून होना ॥	”
४७ अरब खा का कहना कि आज ठहर जाइये, शकून अच्छा नहीं है ॥ ...	४००
४८ सुलतान का कहना कि काफिर चाहान को जीतना कौन बड़ी बात है जो इतना विचार करते हो	”
४९ शाह का चाहान की ओर जाना और दूतों का यह समाचार नागौर में हुसैन को देना ॥	”
५० पृथ्वीराज का चढाई का समाचार सुन कर सरदारों को बुला कर सिंध तक शाह के पहुचने का हान कहना ॥	”
५१ लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का सब का मत होना ॥	४०१
५२ युद्ध की तयारी होना ॥	”
५३ गुरुराम ब्राह्मण का आकर आशिर्वाद देना, बहुत कुछ दान करना और वेद मंत्र से तिलक करना	”
५४ भगवान का स्मरण कर यात्रा करना ॥	४०२
५५ हुसैन का भी अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज से आ मिलना ॥	”
५६ टस कोस पर डेरा देना ॥	”
५७ दूतों का सुलतान को पृथ्वीराज के चढ़ आने का समाचार देना ॥	४०३
५८ सुलतान का चढाई के लिये धूम धाम से चलना ॥	”
५९ सुलतान की चढाई का वर्णन ॥	”
६० सारुड अचल पुर में सुलतान का डेरा डालना ॥	४०४
६१ कैमास का यह समाचार घड़ी रात रहे पृथ्वीराज को देना ॥	”
६२ पृथ्वीराज का उसी समय चढाई करने को तयार होना ॥ ...	४०५
६३ चढाई की तयारी, भगवत् स्मरण तथा दान देना ॥	”
६४ पृथ्वीराज का सवार होना ॥	४०६
६५ पृथ्वीराज का मीर हुसैन के डेरे में आना, मीर हुसैन का अपने साथियों के साथ तयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥	”
६६ पृथ्वीराज और मीर हुसैन के मिल कर चलने का वर्णन ॥	”
६७ सुलतान के चरो वा सुलतान को जाकर समाचार देना कि शत्रु की सेना एक योजन पर आ गई	४०७
६८ सुलतान की सेना की तयारी का वर्णन ॥	४०८
६९ सारुड के बाई और सड़कर सुलतान का खड़ा होना ॥	४०९
७० सुलतान की सेना देखकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की ओर देखना, हुसैन का अपने सरदारों के साथ तयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥	”
७१ मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है तो हमारा मिर भी आपने लिये तयार है देखिए कैसे लड़ाई लड़ता हूँ, पृथ्वीराज का कहना कि इसमें आश्चर्य क्या है मैं भी तुम्हें गजना का सुलतान बनाता हूँ ॥	४१०
७२ मीर हुसैन का सलाम करके बाई और सेना सजना, पृथ्वीराज का अपने सरदारों को आज्ञा देना कि तुम लोग मीर हुसैन की सहायता करो और मामन्तो का आज्ञा पालन करना ॥	”
७३ कैमास आदि मामन्तो का चार सहस्र सेना के साथ पृथ्वीराज के दक्षिण ओर सेना सजना ॥	४११
७४ पृथ्वीराज के आगे की ओर गहनदराय आदि सरदारों का पाँच सहस्र सेना के साथ खड़े होना ॥	”

	पृष्ठ	
७५	दोनों सेनाओं का सामना होना और निशान बज उठना ॥ ..	४१२
७६	हुसेन और तातार पां की सेनाओं की लड़ाई होना अंत को तातार पां की फौज का भागना ॥ ..	"
७७	खुरासान खा का आगे बढ़कर लड़ना ॥ ..	४१४
७८	खुरासान खां की फौज का भागना सुलतान की फौज के साथ मिलना और कैमास का चढ़ाई करना ॥ ..	४१५
७९	वाई और से जमान, दाहिनी और से कैमास और सामने से पृथ्वीराज का चढ़ना ॥ ..	"
८०	युद्ध का वर्णन ॥ ..	"
८१	पृथ्वीराज की सेना का बढ़ना और मगडलोक का मारा जाना ॥ ..	४१७
८२	शहाबुद्दीन की सेना का भड़कना और पृथ्वीराज की सेना का पीछा करना ॥ ..	४१८
८३	घोर युद्ध का वर्णन ॥ ..	"
८४	पृथ्वीराज के सामन्तों का शहाबुद्दीन का पीछा करना ॥ ..	४१९
८५	सुलतान का पकड़ा जाना, उसकी सेना का भागना और पृथ्वीराज की विजय ॥ ..	४२०
८६	सुयोदय से एक घड़ी पांच पल पर लड़ाई आरम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे सुलतान पकड़ा गया, बीस हजार मीर और सात हजार हाथी घोड़े मारे गए, हिन्दू तेरह सौ मरे, तीन कोस में लड़ाई हुई, सुलतान को अपने डेरे में लाए ॥ ..	"
८७	रणक्षेत्र में टूटकर पृथ्वीराज का मीर हुसेन की लाश निकलवाना ॥ ..	४२१
८८	पातुरि का जाते जी हुसेन के कब्र में गड़ जाना ॥ ..	"
८९	पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को पांच दिन आदर के साथ रख कर, तीन बेर सलाम कराके मीर हुसेन के बेटे गाज़ी को उसको सौंप कर यह प्रण करारके कि अब हिन्दुओं पर न चढ़ेगा, छोड़ना, शाह का गाज़ी को लेकर कुशल से गज़नी पहुंचना ॥ ..	"
९०	अमीरों का सुलतान के जीते जागते लौटने पर बधाई देना और कुशल पूछना ॥ ..	४२२
९१	उपसंहारणी टिप्पण ॥ ..	४२३

(१०) आपेटक चूक वर्णन ।

(पृष्ठ ४२५ से ४३८ तक)

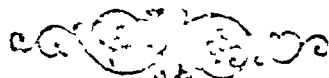
१	एक वर्ष बीत गया, परन्तु शहाबुद्दीन के हृदय में पृथ्वीराज का वैर सालता रहा ॥ ..	४२५
२	एक महीना पांच दिन गज़नी में रह कर फिर हुसेन का पृथ्वीराज के पास आप आना ॥ ..	"
३	फिर पृथ्वीराज का आखेटक माड़ना और शहाबुद्दीन का चूरु करने को आना ॥ ..	"
४	नीतिराव क्षत्रिय का शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज के आपेट का समाचार देना ॥ ..	४२६
५	आपेट का अच्छा अवसर पाकर शहाबुद्दीन का भेद लेने को दूत भेजना, दूत का समाचार देना, शाह का सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर पृथ्वीराज पर चढ़ाई करो ॥ ..	"
६	हाजी खा आपेट का तयारी करना ॥ ..	४२७
७	शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि हम बात का भेद ले कि कितनी सेना चाहान के साथ है क्योंकि बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ॥ ..	"
८	सब सरदारों का मत होना कि बिना भोग्रा दिये चाहाने को जीतना कठिन है ॥ ..	"
९	पृथ्वीराज का देलटके आनन्द से आपेट खाना ॥ ..	४२८
१०	पृथ्वीराज के आपेट का वर्णन ॥ ..	"
११	आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का पट्टवन में छिप कर पहुंचना ॥ ..	४२९
१२	सत्रों के समूह चढ़ाई करने का विचार बनना ॥ ..	"
१३	पाच सरदारों के साथ नेत्र आपेट को पृथ्वीराज का निकलना ॥ ..	४३०
१४	कवि चन्द्र का बहना कि हम शहाबुद्दीन के आने का सन्देह है और खोज करने पर चारों और देखना को पाना ॥ ..	"
१५	शाह की और ले आक्रमण प्रारम्भ होना ॥ ..	"

	पृष्ठ
१६ युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन ॥	४३१
१७ पात्र सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चारों ओर हो जाना और इन सभी का यवनों के बीच में घिर कर युद्ध करना ॥	”
१८ पृथ्वीराज का कमान सँभाल कर यवन सरदारों को गिराना ॥	४३२
१९ पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ॥	”
२० सुनतान की ७७५ सेना का कट कर आगे गिरना ॥	”
२१ चालुका का घोर युद्ध करके वीरता के साथ मारा जाना ॥	”
२२ क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना, पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा होजाना ॥	४३२
२३ सुनतान का बढ़कर लड़ना दो घड़ी युद्ध करना ॥	४३४
२४ यवन सरदारों का माराजाना, पृथ्वीराज की विजय ॥	”
२५ हारकर शहाबुद्दीन का गज़नी की ओर लौटजाना ॥	”
२६ चौहान की विजय पर चन्द्र कवि का जै जी कार करना ॥	४३५
२७ उपसंहारणी टिप्पण ॥	४३६

[११] चित्ररेषा समय ।

(पृष्ठ ४३६ से ४४५ तक)

१ चित्ररेषा की उत्पत्ति पूछना ॥	४३६
२ शहाबुद्दीन के विक्रम का वर्णन ॥	”
३ शहाबुद्दीन का अरब खां पर चढ़ाई करने की इच्छा कर सरदारों से पूछना ॥	”
४ अरब खां नश्वता नहीं है इसलिए उस पर चढ़ाई होनी चाहिये यह आज्ञा देना ॥	४४०
५ चढ़ाई की सेना को सख्या ॥	”
६ सेना की धूम का वर्णन ॥	”
७ शाह का निसुरति खां को अरबखां के पास भेजना कि चित्ररेषा को देखकर पर पर गिर तो हम क्षमा कर दें ॥	४४१
८ अरब खां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेषा को देना स्वीकार करना ॥	”
९ निसुरति खां का अरब खां को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह के वचन माने और हिंदु धर्म को न मान कर म्लेच्छ कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया ॥	} ४४२
१० शहाबुद्दीन का सेना समेत सजकर चलना ॥	”
११ चलते समय शाह का चित चित्ररेषा में मत्त गयद की भांति लगा हुआ था ॥	”
१२ सेना की शोभा का वर्णन ॥	४४३
१३ शाह की सेना की प्रवृत्ति देखकर अरब का अपना बल भंग होना कटना ॥	”
१४ अरब खां का आज्ञा मानकर चित्ररेषा को भेंट में देना ॥	४४४
१५ चित्ररेषा देण्या के रूप का वर्णन ॥	”
१६ विना युद्ध चित्ररेषा का देखकर जोरी का लौट जाना ॥	”
१७ चित्ररेषा के साथ शाह के सादर गौर प्रेम का वर्णन ॥	”
१८ चित्ररेषा के सुनतान का वध करने का वर्णन ॥	४४५
१९ चित्ररेषा की गणना हुनकर त्रिधु का अन्वित्व होना ॥	”



पृथ्वीराजरासो ।

अथ आदि पर्व लिख्यते ।

(पहिला समय)

आदिदेव, गुरु, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश का
संगलाचरण ॥

साटक-जै ॥ आदी देव प्रनम्य नम्य गुरयं, वाणीय वंदे पयं ।

सिद्धं धारन धारयं वसुमती, लक्ष्मीस चर्नाश्रयं ॥

तं गुं तिष्ठति ईस दुष्ट दहनं, सुरनाथ सिद्धिअयं ।

थिर्चर्जंगम जीव चंद्र नमयं, सर्वेश वर्द्धामयं ॥ छंद ॥ १ ॥ रूपक ॥ १ ॥

१ यह संगलाचरण जिस छंद में चंद्र कवि ने कहा है उसका नाम उसने साटक प्रयोग किया है और इस नाम से यह छंद आज कल जो छंद यथ प्रायः उपलब्ध हैं उनमें नहीं मिलता । यद्यपि उसकी परीक्षा करने से वह निःसंदेह शार्दूलविक्रीडित् नामक छंद मालूम होता है परंतु जब तक उसका लक्षण अथवा नामान्तर होने का कोई प्रमाण नहीं दिखलाया जाय तब तक पुरातत्त्ववेत्ता विद्वान् सतुष्ट नहीं हो सकते । अतएव बहुत खोज करने से गुजराती भाषा के व्याख्या में इस नाम के छंद मिले और The Revd Joseph Van S Taylor साहब अपने गुजराती भाषा के व्याकरण के पद्यबंध अथवा छंदविन्यास नामक प्रकरण के पृष्ठ २२३ में उसको साटक नाम से गुल इम अक्षरों के दो तुक का छंद होना लिखते हैं कि जिसके प्रत्येक तुक में १२+०=१८ अक्षरों होते हैं । इससे सिवाय प्राकृतभाषा के किसी छंदग्रंथ से अनुवादित होकर स. १००६ में जो एक रूपदीप पिंगल नामक छंद ग्रंथ बना है उसमें केवल ५२ छंदों के लक्षण मिले हैं । उनमें भी साटक का यह लक्षण लिखा है—

साटक छंद लक्षण ।

दर्शे ह्यंदस अंग आद संया, मादा सिद्धो सागरे ।

दुज्जी वी करिणे मलाष्टु दस वी, अज्ञो विरामाधिकं ॥ १ ॥

अंते नुर्बे नितार धार स्र बे, औरों वृष्टु मेट ना ।

तीसों मत उदीस अंग चरने, सेमो भई सटिकं ।

हम इस साटक छंद को पिंगल छंद सूत्रम् नामक ग्रन्थ में कहे शार्दूलविक्रीडित् छंद का नामान्तर होना मानते हैं और उसका लक्षण बहुत प्राचीन अमर और भरत कृत छंद ग्रंथों में अवश्य होना अनुमान करते हैं क्योंकि चंद्र कवि ने भी अपने इसी ग्रन्थ के आदि पर्व के रूपक ३७ में जो कुछ कहा है उससे स्पष्ट मालूम होता है कि उसने अपने इस महाकाव्य की रचन में पिंगल अमर और भरत के छंद ग्रंथों का आश्रय लिया है ॥

इस छंद के लक्षण का पता लगा कर अब हम इस रूपक के पाठ को शोधते हैं । उस की पहिली पंक्ति का पाठ A. S. B की छापी हुई पुस्तक की Fasciculus I जिस को Mr John Beames साहब ने शोध कर छपाया है उस में "आदि प्रनम्य नम्य गुरयं वानीय वंदे पर्यं ऐसा पाठ है और जो Mr F S Growse, C S, M A ने रासो के प्रारभ के छंदो का अनुवाद करने में पाठ लिखा है वह भी ऐसा ही है । निदान साटक के लक्षण के अनुसार इस तुक में १२+७=१९ अक्षर होने चाहिए परंतु उस में १०+७=१७ अक्षर हैं । अब यह अन्यावश्यक है कि घटते हुए दो अक्षरों का पता लगाया जाय । यह कल्पना करनी कि चंद्र कवि अथवा उसके नाम से कोई यह जाली ग्रन्थ बनानेवाला छंद ग्रंथों में भले प्रकार व्युत्पन्न न होने के कारण मूल में ही भूल गया है सर्वरीत्या अयोग्य और आश्चर्यदायक बात है । क्योंकि वर्तमान् पृथ्वीराजरासो का बिगडा हुआ काव्य भी अपने कर्ता का एक बड़ा व्युत्पन्न कवि होना स्वयम् स्पष्ट प्रकाश करता है अतएव उसका ऐसी भूलों का करना निर्मल प्रज्ञावाले विद्वानो के ध्यान में सर्वथा असंभव है ।

इस प्रथम तुक में जो दो अक्षर घटते हैं वे पंक्ति भर में किस स्थान में लेखक अथवा शोधक की भूल से लोप हो गए हैं इस बात की शोध लेने के लिये यह एक बड़ी सरत युक्ति है कि हम इस तुक के अर्थ को ध्यान में लेकर उसके वाक्यखंडो को पृथक् पृथक् कर दें कि जिस से अपूर्ण वाक्यखण्ड अपने आप हम को घटते हुए अक्षर बतला देवे जैसे कि वानीय वंदे पर्यं और नम्य गुरयं और आदि प्रनम्य ऐसा करने से हम को मालूम हो गया कि आदि प्रनम्य वाक्य खंड अपूर्ण है और उसमें कोई सज्ञावाचक शब्द घटता है । अब विचारना चाहिए कि वह सज्ञा वाचक शब्द आदि शब्द के पहिले घटता है अथवा पीछे । जो हम आदि शब्द के पहिले उभ का होना मानें तो 'आदिः पदान्ते गण सूचकः' से दोष प्राप्त होकर हमारी कल्पना अन्यथा हो जाती है अतएव मानना चाहिए कि आदि शब्द के पीछे कोई सज्ञावाचक शब्द है क्योंकि ऐसा मानने में आदि शब्द उभ शब्द के साथ मिलकर हम को कर्मधारय समास का होना स्पष्ट विदित करता है । जब कि यह निश्चय हो गया कि आदि शब्द के पीछे अर्थात् आदि और प्रनम्य के बीच में कोई सज्ञावाचक शब्द गया है तब हम को फिर सूत्र विचार में निमग्न होना चाहिए कि वह सज्ञावाचक शब्द कौन सा है कि जिसको चंद्र कवि ने प्रयोग किया था । हम निःसंदेह कल्पना करते हैं कि यहा देव शब्द या अर्थात् आदी देव ऐसा पाठ चंद्र ने प्रयोग किया था क्योंकि प्रथम तो "आदिः कारणं स च देवश्चेति कर्मधारयः" तथा जगदुपादानादि गुणवान् नारायणः" दूसरे आदिदेव शब्द हमारी मूलभाषा के प्रामाणिक एतद्देव ममलादररा तथा ईश्वर की स्तुति तथा ईश्वर के ध्यान के वाक्यों में बहुधा प्रयोग किया गया है कि हम उदाहरण के लिये केवल दो ही प्रमाण यहा दिखाने हैं जैसे— "परं ब्रह्म परं धाम । पवित्रं परमं भवान् ॥ पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुं" तथा "त्वमादिदेवः पुरुषः पुनाणम्यमस्य विश्वस्य परं निधानं" ॥ तीसरे चंद्र कवि ने स्वयम् अपने इस महाकाव्य में ही आदि देव शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों में किया है जैसा कि: "प्रनम्य प्रथम सम आदि

देव ईकार शब्द जिन करि अछेव" ॥ चौथे इस तुक में प्रथम मगण होने के कारण तीनों अक्षर दीर्घ होने चाहिए अतएव कवि ने आदी देव ऐसा पाठ कहा है आदि शब्द संस्कृत में इकारान्त है परंतु उसे कवि ने यहा मगण होने के कारण के अतिरिक्त गानविद्या संबंधी दोष दूर करने के अभिप्राय से भी ईकारान्त किया है क्योंकि चंद्र गानविद्या में भी निपुण था और साटक के गाने में तुक की पहिली चौथी मात्रा पर ताल आता है। यद्यपि हमारी कल्पना तो यह है परंतु जब हमने इस ग्रंथ का कुछ भाग कोटा राज्य के विद्वान कविराज श्री चंडीदानजी से पढ़ा था तब उन्हो ने यह बतलाया था कि आदि के पहिले ओश्म् शब्द का प्रयोग कवि चंद्र ने किया था और उसका अर्थ आदि ओश्म् प्रत्यय अर्थात् "पहिले ओकार को नमन करके" किया था। यद्यपि यह प्रयोग भी कुछ बैठ जाता है और ठीक सा मालूम होता है और जितनी पुस्तकें रासो की हमारे देखने में आई हैं उनमें प्रायः ऐसा ही पाठ मिलता है परंतु हम इसकी अपेक्षा अपनी कल्पना को अधिक बलवान और युक्त मानते हैं और आशा करते हैं कि यदि वे अब विद्यमान होते तो हमारी इस कल्पना को प्रसन्नतापूर्वक मान लेते। यदि कोई ओश्म् आदि प्रत्यय ऐसा भी पाठ माने तथापि कुछ हानि नहीं है। और जब तक कि किसी बहुत प्राचीन पुस्तक में हमारे इस मानने के विरुद्ध कोई अन्य पाठ न मिल जावे तब तक हम इस को मानना अयोग्य नहीं समझते हैं ॥

एक दूसरी पंक्ति का पाठ "सिद्धं धारण धारणं वसुमती लच्छीस चरनाश्रयं" है। इस १२+८=२० अक्षर हैं कि यहां चरनाश्रयं शब्द को हमने चर्नाश्रयं किया है क्योंकि कोई छंद गान से खाली नहीं है और साटक की ध्वनि के अनुसार उच्चारण में यहां रकार स्वर रहित हो जाता है और जैसा उच्चारण और गान में रूप हो वैसा काव्य में लिखने में भी कोई दोष नहीं है। जो कवि गान के नियमों से अपरचित हैं उनके काव्य में ऐसे स्थलों में अनेक दोष रह जाते हैं क्योंकि गान छंद के लिये एक कसौटी है और ऐसे ही मैकों को कवि का अधिकार अर्थात् Poetical Licence कहते हैं। कोई कोई विद्वान कवि के अधिकार की छूट अर्थात् Poetical Licence को दोष मानते हैं परंतु वह एक भ्रम है क्योंकि सस्वर अक्षर का छोड़ा कर देना और छोड़े को सस्वर कर देना व्याकरणदि भिन्न शास्त्रों में दोष समझना चाहिए परंतु छंद रचना और गान में तो यह दोष नहीं कहाता है देखो चंद्र के इन वचनों के भीतरी आशयों से भी हम यही अनुमान कर सकते हैं—

लहु गुर मंडित खंडियहि । पिंगल अमर भरत्य ॥ ३७ ॥ १

चरन नीम अचिर सुरग । पाटलहु गुरु विधि मंडिय ॥

सुर विकास जारी सु सुष्य । उक्ति रस गौरव नि छंडिय ॥ ४० ॥ १

तीसरी पंक्ति के पाठ तम गुन तिपृति ईस दुषु दहनं । सुरनाथ सिद्धिअश्रयं में १४+८=२२ अक्षर हैं। इनमें ऊपर कही हुई युक्तियों के सिवाय छोड़ा मा और ध्यान देने से ज्ञात हो सकता है कि उपरुक्ता ने तम गुन और सुरनाथ पाठ नहीं प्रयोग किये थे किन्तु जैसे हम ने अनुमान कर सुद्ध किये हैं तं गुं और सुरनाथ क्योंकि प्रथम तो इस साटक छंद में मगण होने के कारण तं और गुं ही होने चाहिए और दूसरे चंद्र के ऐसे प्रयोग इन काव्य में बहुत से स्थानों पर देखे गये। यह भी हमारे देखने में आयेगा कि त्दम् और अहम् के स्थान में तं और हं जैसे प्रयोग चंद्र ने किये हैं। हममें हम को कुछ भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि चंद्र के इस नीचे लिखे वाक्य से हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि उस ने अपने इस महाकाव्य की भाषा में पट भाषा और पुरान की भाषा का आशय लिया है—

श्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नवं रसं ।

षट् भाषा पुराण च । कुरानं कथितं मया ॥ १ ॥

अब शेष चौथी पंक्ति का पाठ “धिर चर जंगम जीव चंद्र नमयं सर्वेस्वरदा मयं” में १४+८=२२ अक्षर हैं। इसके स्थान में जो यह पाठ “धिरर्जंगम जीव चंद्र नमयं सर्वेस्वरदा मयं” शुद्ध क्रिया गया है उसके लिये ऊपर कही हुई युक्तियों से ही हमारा शोधन करना ठीक मालूम हो सकता है। इसमें इतना और भी आवश्यक है कि सोमार्दटी की मुद्रित की हुई पुस्तक में जो चंद्रनमयं पदच्छेद क्रिया है वह अयुक्त है और मिस्टर ऐफ. याज्ज सावत्र ने जो चंद्र और नमयं पदच्छेद किए हैं वे ठीक हैं और हम भी मिस्टर याज्ज के पदच्छेद से सम्मत हैं।

जो पाठ हमने जिस रीति से इस रूपक में शुद्ध किए हैं वे अथवा वैसे ही भी पाठ जो कहीं आगे इस ग्रंथ भर में आवेंगे तो हम उन पर सर्वत्र टिप्पण नहीं करेंगे किन्तु वहां का मूल पाठ हमारे यहां पर वर्णन किए शोधन के प्रकार के अनुरार शुद्ध रहैगा। पाठक महाशय इन ही नियमों से उन पाठों को सिद्ध कर समझ लें अर्थात् जिन नियम को एक स्थान पर टिप्पण में वर्णन कर देंगे वह अन्यत्र नहीं कहा जावेगा। किन्तु जहां कोई नवीन प्रयोग आवेगा वहां उसका वर्णन कर दिखावेगा ॥

जैसे चंद्र के प्रयोग किए हुए छंदों के नाम और उनके लक्षणों के शोध करने में पुरातत्त्ववेत्ताओं को परिश्रम पड़ता है वैसे ही उसके इस महाकाव्य के अर्थ लगाने में भी अनेक प्रकार की अडचनें उपस्थित होती हैं। यद्यपि हमारा मुख्य काम इस ग्रंथ के मुद्रित करने में केवल इतना ही है कि उसके मूलपाठ को सार्थक शोध दें परंतु यह महाकाव्य वर्तमान समय में ऐसी बिगड़ी हुई दशा में उपस्थित है कि जो उस पर इतना परिश्रम न किया जाय कि जितना हम यह करते हैं तो हमारा किया हुआ शोधन पुरातत्त्ववेत्ता विद्वानों को भली भांति संतुष्ट नहीं कर सकता। अतएव हम चंद्र के काव्य की अर्थ संबन्धी कठिनता को दिखलाने के लिये केवल इस मंगलाचरण के रूपक का अर्थ उदाहरण के लिये करते हैं कि जिससे हमारे पाठकों को मालूम हो कि मूलपाठ का शुद्ध होना अर्थ पर दृष्टि दिए बिना असंभव है। महाकवि चंद्र अपने इस महाकाव्य के आरंभ में इस मंगलाचरण के रूपक में आदिदेव, गुरु, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश को नमस्कार करता है वह कहता है कि “आदिदेव को नमन कर दो और गुरु को नमस्कार करके, वाणी के पदों को वदन, स्वर्ग, पाताल, (और) पृथ्वी के लक्ष्मीश के चरणों का आश्रय, टुटो के टहन करने को तम गुण (जिस) ईश में रहता है [उस] सुरनाथ की पादुका का सेवन [और] धिर, चर, जंगम, [और] जीव के वरदायमय सर्वेश को [मैं] चंद्र नमन करता हूँ”

हमारे किए इस अर्थ के विचार से विद्वानों को मालूम हो सकेगा कि यद्यपि इस के अनेक प्रकार के अर्थ हो सकते हैं परंतु यह अर्थ चंद्र के व्याकरण शास्त्र संबन्धी जो नियम उनके इस ग्रंथ से मालूम होते हैं उनके अनुसार सरल और कवि की उक्ति के अनुकूल है। इसमें कितनेक शब्द ऐसे ऐसे भी हैं कि जो अर्थ करने वाले को चमका और भडका देते हैं परंतु हम इस रूपक के सब शब्दों के विषय में अर्थात् जिसके विषय में जितना कहना आवश्यक है वह कहते हैं—
आदिदेव [स. पु आदिदेवः । आदौ दीव्यति स्वयं राजते] नारायण । इस शब्द के विषय में हम ने ऊपर कहा है अतएव यहां विशेष नहीं कहते किन्तु उसके प्रयोग के दो प्रमाण और भी यहां देते हैं—सहस्रात्मा मया योत्र आदिदेव उदाहृतः ॥ या. स्मृ. ॥ वासुदेवो बृहद्भानुरादि देवः पुरंदरः ॥ वि. सहस्रनाम ॥

पैलगी, पालागन, पाय और पयदल, इत्यादि । और संस्कृत में भी पय गतौ है । मिस्टर याज्ञिक साहस ने जो इस शब्द को पैर का वाचक अपने अंग्रेजी अनुवाद में माना है यह बहुत ठीक है और हम उनसे इस में सम्मत हैं ॥

सिष्टं (सं० त्रि० सृष्टः=निर्मिते । रचिते) सृजनेवाला । यह चंद्र की हिन्दी में सं० सृष्टः सृजनेवाले का नपुंसकलिंग की प्रथमा का एकवचन है । इस को शिष्ट अथवा श्रेष्ठ आदि शब्दों का अपभ्रंश मानना अयुक्त है किन्तु वह चंद्र की हिन्दी में सं० त्रि० सृष्टः का शिष्ट अर्थ है इसी तरह सं० भृष्ट, भ्रष्ट, धृष्ट, वृष्ट, के अपभ्रंश रूप हिन्दी में भिष्ट, घिष्ट, विष्ट, होते हैं ॥

धारण [सं० पु० धारण=स्वर्गलोक] स्वर्गलोक ॥ **धारयं** [सं० त्रि० धारय=धारके । नाग देशे ॥ धारयेः कुसुमोर्माणाम् । भट्टिः] पाताललोक ॥ **वसुमती** [सं० स्त्री० भूजोक । स्पष्टम्] भूलोक यहां घोड़ा सूक्ष्म विचार कर हमारे किये अर्थ की मत्पता जांचने का काम है क्योंकि सिष्टं धारण धारयं वसुमती लक्ष्मीस चर्णाश्रयं का अर्थ अनेक कवि अनेक प्रकार का करते हैं परंतु हम उन को चंद्र के अभिप्राय के अनुकूल नहीं समझते । इन शब्दों के पृथक् पृथक् अर्थ तो हम ने संस्कृत कोशों से लेकर बर्तान कर ही दिये हैं । इस के मिश्रण लक्ष्मीस शब्द जो विष्णु का वाचक है वह हम को यह अर्थ करने की स्पष्ट लक्षणा कराता है कि धारण=स्वर्गलोक । धारय=पाताललोक ॥ और वसुमती=भूलोक का शिष्ट=सृजनेवाला [जो] लक्ष्मीस=विष्णु [उस के] चर्णाश्रयं=चरणों का सेवन [करता हूँ] यही बहुत ठीक अर्थ है क्योंकि यहां तत्पुरुष समास है और लक्ष्मीस का अर्थ विष्णु शास्त्रों में नीचे लिखे प्रमाण से स्पष्ट है उस से भी हमारा किया हुआ अर्थ अच्छी तरह पुष्ट होता है—

यस्मात् विश्वमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः ।

तस्मात् देवोच्यते विष्णुर्विशधातोः प्रवेशनात् ॥

अथातीपिं विष्णुर्भुवनानि विष्णुर्वनानि विष्णुर्गिरयो दिशश्च ।

नद्यः समुद्राश्च स एव सर्वो यदस्ति यन्नास्ति च विप्रवर्षेति ॥

अनादि निधनं विष्णु । सर्वलोक महेश्वरं ।

लोकाध्यक्षं स्तुवं नित्यं । सर्वं दुःखाति गो भवेत् ॥ ६ ॥

लोकनाथं महद्भूतं । सर्वभूतभवोद्भव ॥ १० ॥

लोकाध्यक्षः सुरध्यक्षो । धर्माध्यक्षः कृतः कृतः ॥ ३१ ॥

लक्ष्मीवान् समितिं जयः ॥ ५६ ॥ श्रीमाल्लोक चयाश्रयः ॥ ८२ ॥

चिलोकात्मा चिलोकेशः । केशवः केशिहा हरिः ॥ ८६ ॥

लोकस्वामी चिलोक धृत् ॥ ८० ॥ लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ ११२ ॥

चीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा । भुंक्ते विश्व भुगव्ययः ॥ १४४ ॥

वासनाद्वासुदेवस्य । वासितं भुवन चयं ॥ १५३ ॥

चर्णाश्रयं (सं० चरण + आश्रय =) चरणों का सेवन ॥ यह अनुस्वार सहित शब्द भी चंद्र की हिन्दी का संस्कृत-सम नपुंसकलिंग है ॥

तं । गुं [सं० न० तमः और पु० गुणः] तम । गुण । चंद्र की हिन्दी के नपुंसकलिंग ॥ प्राकृत-भाषा सम का प्रयोग ॥

तिष्ठति (सं० तिष्ठति) रहता है । चंद्र की हिन्दी के संस्कृत-समभेद का रूप है ॥

ईश (स० पु० ईशः = महादेव) सदाशिव ॥

दुष्ट (सं० न० दुष्टं = अधमो बंचके) दुष्ट ॥ दुष्ट दहनं = दुष्टों के दहन करने के लिये अथवा दुष्टों के दहनार्थ ॥

दहनं (सं० पु० दहनः = दाहे । भस्मी करणे ।) दहन के लिये चंद्र की हिन्दी का नपुं० है ॥

सुनाथ (स० पु० सुर+नाथ = हरे) महादेव की ॥

सिद्धि (सं० स्त्री० = सिद्धिः = पादुकायाम्) पादुका का ॥

श्रयं (स० पु० श्रयः = श्रयणे । श्राये ॥ श्रिज् = सेवायाम्) सेवन ॥ सिद्धि श्रयं = पादुका का सेवन ॥

थिर (स० पु० स्थिरः = स्थिर पदार्थः) स्थिर वस्तु जैसे: - पर्वत और पृथ्वी आदि ॥

चर (सं० पु० चरः = चले) चर वस्तु अथवा पदार्थ जैसे वस्तु और जलादि ॥

जंगम (सं० त्रि० जंगमः = पशुपत्नी) कीट पतंगादि ॥

जीव (सं० पु० जीवः = प्राणिनि) मनुष्यादि ॥ ध्यान में लेने की बात है कि पंडितों ने सब पदार्थों को स्यावर और जंगम नामक दो भेदों में ही विशेष करके विभक्त किया है । परन्तु चंद्र ने सब पदार्थों के चार भेद माने हैं । प्रथम स्थिर, जो सदैव स्थिर रहते हैं, जैसे पर्वतादि, दूसरे चर, जो सदैव स्थिर नहीं रहते, जैसे स्यानादि, तीसरे जंगम जो जीव दूध नहीं पीते, जैसे कीट पतंगादि, और चौथे जीव, जो दूध पीते हैं, जैसे मनुष्यादि । हम ने किसी किसी कवि को इन चारों शब्दों के प्रयोग करने के कारण चंद्र कवि को दोष देते हुए सुना है परन्तु यह उनकी भूल है, क्योंकि उन्होंने कवि के सूक्ष्म आशय को ध्यान देकर नहीं समझा है ॥

अर्द्ध वरदई = इस महाकाव्य का अर्थ-कर्त्ता कि जो हिन्दुओं के अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहान का लंगोटिया मित्र और उनके दरवार का कविराज था । वह भट्ट जाति जो आज कल राय करके कहलाती है उसके जगत नामक गोत्र का था और उसके पुर्ण पंजाब देश के लाहौर नगर के रहने वाले थे और उनकी यज्ञमानी अजमेर के चौहानों की थी । उसकी जैसी शूरवीरता इस महाकाव्य से विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि वह पंजाब देश की अत्यावधि प्रसिद्ध वीर भूमि, के तत्त्वों से उत्पन्न हुआ था और राजपुताने के हृदयस्थली अजमेर नगर में बड़ा हुआ था । वह पट-भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य छंद शास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, मंत्रशास्त्र, पुराण, नाटक, और गान आदिक विद्याओं में अद्भुत व्युत्पन्न पंडित था । उसके पिता का नाम वेणु और विद्या-गुरु का नाम गुणप्रसाद था । उसकी दो स्त्रियों के नाम कभला अर्थात् देवा और गौरी अर्थात् राजेरा और एक लड़की का नाम राजकौंड और उस लड़की के नाम सुर १ सुन्दर २ सुजान ३ जल्ह ४ बल्ह ५ बलेन्द्र ६ केहरि ७ वीरचंद्र ८ अक्षय अर्थात् योगराज ९ और गुनराज १० थे । इस महाकाव्य के विषयों को जैसे तो अपने समय समय पर बना कर कट कर रखा या परन्तु उन को अथाकार में उस में १०० ॥ दिन में रखा था और अब को उसने रामो की पुस्तक अपने नईके लह को दी थी । इस रामो के अतिरिक्त उस के रचे और भी कई एक ग्रंथ सुनने में आते हैं परन्तु उन में सब से बड़ा एक प्रही है और अन्य सब ग्रंथ अत्यन्त कुल नहीं मिलते हैं । उसका सारस्वर जीवनचरित और बराबरी जहा तक हम रे जानने में आतादि से आर्द्ध वरद ईश इन इन ग्रंथ के समान होने पर आप पर प्रसिद्ध रहे ।

धम्म-स्तुति ॥

बधुआ ॥ प्रथम सुमंगल मूल अतविय । स्मृति सत्य जल सिंचिय ।
 सुतरु एक धर अम्म उभ्यौ ॥
 क्षिपट साष रम्मिय त्रिपुर । वरन पत्त मुख पत्त सुभ्यौ ॥
 कुसम रंग भारह सुफल । उक्ति अखंब अमीर ॥
 रस दरसन पारस रमिय । आस असन कवि कोर ॥
 छं० ॥ २ ॥ छं० ॥ २ ॥

नमर्थ = नमस्कार अथवा नमन करता है अथवा करता हू ॥

सर्वेश = (सं० सर्वेशः = ब्रह्मा) ब्रह्मा ॥

वर्दामयं = वरद - स्वरूप ॥

२ इस रूपक के छंद का बधुआ नाम चंद्र कवि ने तो अपने समय का प्रसिद्ध ही लिखा है परन्तु वह सांप्रत काल में पुरातत्त्ववेत्ता और कविराजाओं को भी पूरा परिचय देनेवाला एक छंद है । हमने इस छंद के लक्षण के लिये अपने अग्रजो भरतखंड के कवियों के अतिरिक्त राजपूताने के कवियों से भी पूछा और सब ने आज कल के उपलब्ध छंद-ग्रंथों में भी उसे ढूँढा परन्तु जो कवि पत्तपात रहित और सज्जन हैं उन्होंने ने तो स्पष्ट कह दिया कि इस नाम का कोई छंद हमारे जानने में नहीं आया है किन्तु चंद्रकृत इसी महाकाव्य में इस छंद का नाम देखने में आता है परन्तु जो कवि ऐसे है कि अपनी हठ-उक्ति के आगे और कुछ ध्यान में ही नहीं लाते उनमें से किसी ने आर्या का एक भेद और किसी ने कहा कि इसमें लेखक और शोधक कवि के दोष से काव्य छंद में अथवा उगाहा में दोहा मिल गया है परन्तु किसी का भी कहना पुरातत्त्ववेत्ताओं को सतोष देने वाला नहीं हो सकता है । इस छंद के विषय में हमारा कहना यह है कि जो आज अमर और भरतकृत छंद-ग्रंथ उपलब्ध होते कि जिन का आश्रय चंद्र ने लिया है तो उस के शोध में कुछ कठिनता नहीं पड़ती-हम इस छंद को रूपदीप पिंगल में वर्णन किये हुए रिदुक का नामान्तर होना निःसंदेह मान कर उस का शोधन करते हैं । देखो रूपदीप पिंगल में रिदुक छंद में ही रिदुक का यह लक्षण कहा है-

रिदुक नाम छंद लक्षण ।

कीजे कला प्रथम तिथ मान, दश एको दूसरे, तीजे गिन दश पांचरिये ॥

फिर चौथे दस एक । परख्यन में पांच मे करिये ॥

रोडा सत सठ मत है । कीनो बेश बखान ॥

तामे फिर दोहा मिले । रिदु छंद पहिचान ॥

इससे मालूम होगा कि यह बधुआ छंद कैसा एक विचित्र छंद है कि जिसकी पहिली तुल में दो यति होने के कारण १५ + ११ + १५ = ४१ मात्रा होती है और दूसरी में एक यति होने से १५ + १५ = ३० मात्रा और मात्र मिलकर ३० । इन दो तुलों के पीछे एक दोहा होता है । जो इसमें दोहा न लगाये तो जटा तक ३० मात्रा होती है वही तक का रोडा नामक छंद होता है ।

कर्म-स्तुति ॥

कवित्त ॥ प्रथम मंगल प्रमान । निगम संपजय वेद धुर ॥

त्रिगुन साख चिहुं चक्र । वरन लगो सु पत्त कर ॥

त्वचा धम्म उद्धरिय । सत्त फूल्यौ चावहिसि ॥

क्रम्म सुफल उदयत्त । अम्रत सुम्रत मध्य वसि ॥

डुल्लै न वाय न्नप नीति ध्रति । स्वाद् अमृत जीवन करिय ॥

कलि जाय न लगै कलंक इहि । सत्ति मत्ति आठति धरिय ॥

ॐ ॥ ३ ॥ ॐ ॥ ३ ॥

इस छंद की प्रथम तुक कियति के प्रथम टुकड़े में वीथ पाठ अशुद्ध है उस के स्थान में हम नें विय किया है । और दूसरी यति के दूसरे टुकड़े में सिंचियइ के स्थान में सिंचिय और धम्म के स्थान में धम्म और यत्त के स्थान में पत्त, भारहै को भारह, और परस को पारस शुद्ध किया है और ये शोधन ऐसे साधारण हैं कि जिनके लिये कोई तर्क लिखने की आवश्यकता नहीं है ॥

३ इस रूपक में यथकर्ता वृत्त के रूपकालंकार से धर्म की स्तुति करता है ॥

कवि ने इस रूपक के छंद को कवित्त संज्ञा दी है । सांप्रत काल में यह छप्यय, छप्यै पटपद, पटपदी आदिक नामों से प्रसिद्ध है परंतु सत्रहवीं शताब्दी के पहिले यह कवित्त नाम से ही प्रसिद्ध था । रूपदीप पिगलबाले ने भी जो नीचे लिखा छप्यय का लक्षण कहा है उसमें उसने भी यह कहा है कि—“सुन गरुड पंख पिंगल कहै छप्यै छंद कवित्त यह इससे सिद्ध होता है कि इस यथ के बनने के समय तक छप्यै का नामान्तर कवित्त करके प्रसिद्ध था ॥

छप्यै

लहु दीरघ नहि नेम । मत चौवीस करीजे ॥

ऐसे ही तुक सार । धार तुक चार भरीजे ॥

नाम रसावल होय । और वस्तु कभि जानहु ॥

उल्लाहा की विरत । फेर तिथि तेरह आनहु ॥

द्वै तुक वनावो अत की । यत यत मे अट वीस गहु ॥

सुन गरुडपंख पिंगल कहै । छप्यै छंद कवित्त यह ॥

इस के अतिरिक्त मह्य कवि हत रघुनाथ रूपक में भी उसने छप्यै छंदों को कवित्त कर के ही लिया है ॥

इस के पाठ को शोधन करने में ध्यान में लेने जैसी बात है कि प्रथम गौर मंगल शब्दों के बीच में जो बहुत सी पुस्तकों में किय शब्द है वह अधिक होने से अशुद्ध है क्योंकि उस पाठ में कुल ११ मात्रा होनी चाहिये बेटलेवाली पुस्तक में संपजय शब्द है और एगिआटिक मोना-इंटी की छापी हुई पुस्तक में जो संपूजय किया गया है—इसमें प्रती सम्मति यह है कि पाठ में तो संपजय ही रखना चाहिये परंतु अर्थ करने में संपूजय समझना चाहिये—क्योंकि संपूजय

मुक्ति-स्तुति ।

कवित्त ॥ भुगति भूमि किय क्यार । वेद सिंचिय जल पूरन ॥
 वीथ सुवय लय मध्य । ग्यांन अंकू रस जूरन ॥
 चिगुन साख संग्रहिय । नाम बहु पत्त रत्त क्विति ॥
 सुक्रम सुमन फुल्लयौ । भुगति पक्की द्रव संगति ॥
 दुज सुमन डसिय बुध पक्क रस । वट विलास गुन पिस्तारिय ॥
 तरु दूक्क साख चयलोक मच्चि । अजय विजय गुन विस्तारिय ॥
 छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

पूर्व कवियों की स्तुति और उच्छिष्ट संज्ञा कथन ॥

भुजंगप्रयात ॥

प्रथमं भुजंगी सुधारी ग्रहंनं । जिनें नाम एकं अनेकं कहंनं ॥

पाठ रखने से छंद टूटता है । गुजराती भाषा में ऐसे शब्द बहुत आते हैं जैसे मुकुन्दराम का मकुन्दराम, तुलसी का तलशी, और शिव का शव । ऐसे मुख दोष के कारण से निगड़े हुए शब्दों के रूपों के लिये एक यह श्लोक भी प्रसिद्ध है—

गुर्जरो मुखदोषेण । शिवोपि शवतां गतः ॥

तुलसी तलशी जाता । मुकुन्दोपि मकुन्दतां ॥

इसके अतिरिक्त चंद्र की हिन्दी में ऐसे प्रयोग बहुत से आवेंगे जैसे “विन्दलालाट प्रसेद कियो” यहां प्रस्वेद का प्रसंद हुआ है । चिहुं के स्थान में चिहुँ किया है क्योंकि यहाँ अर्ध अनुस्वार प्राप्त है । लगो के स्थान में लगगो, उदयत के स्थान में उदयत्त । लगौ के स्थान में लगै और सति मति के स्थान में सत्ति मत्ति सुधारे हैं क्योंकि ऐसे पाठ सुधारने में छंद के टूटने का दोष हम को स्वयन् सवेत करता है ॥

४ इस रूपक में भी चंद्र कवि रूपकालंकार से कर्म की स्तुति करता है ॥

इसके पाठ में एशियाटिक से सार्डटी आदि की पुस्तकों में जो अंकूर और सजूरन पाठ हैं वे एक वालक भी जान सकता है कि बडेही अशुद्ध है किन्तु दृष्टि देने से हमारे किये पद-च्छेद से सार्थक पाठ हो जाते हैं अर्थात् अंकू रस जूरन । हम ने रत्त के स्थान में रत्त, क्विति के स्थान में क्वित पाठ किये हैं । हमारे डसिय पाठ के स्थान में कानरा कालेज और वेदले आदि की पुस्तकों में भसिय पाठ है परंतु वह अशुद्ध है । माजूम होता है कि उन के लेखकों ने ड को ऐसा फ समझ कर अशुद्ध पाठ लिख दिया है और गर्थ पर दृष्टि देकर प्रति नहीं की है ॥

५ स्मरण में रखना चाहिये कि इस रूपक में कवि रूपकालंकार से मुक्ति की स्तुति करता है अर्थात् चंद्र ने दूसरे तीसरे और इस चौथे रूपकों में क्रम से धर्मेश्वर, कर्मेश्वर, और मुक्तिेश्वर नामक ईश्वरों के मंगलाचरण किये हैं ॥

इस भुजंगप्रयात नामक छंद का लक्षण चंद्र कवि के माने हुए छंद यथो में से पिगतमुनि

दुती लुभ्यं देवं जीवनेसं । जिनै विश्व राख्यौ बली मंच सेसं ॥
 चवं वेद वंभं चरी किति भाखी । जिनैं भ्रम साभ्रम संसार साखी ॥
 तृती भारती व्यास भारत्य भाख्यौ । जिनैं उत पारथ्य सरथ्य साख्यौ ॥
 चवं सुखदेवं परीखत्त पायं । जिनैं उड्यौ श्रव्य कुर्वंस रायं ॥
 नरं रूप पंचम श्रीचर्ष सारं । नक्षैराय कठं दिने पड चारं ॥
 छटं कालिदासं सुभाषा सुवडं । जिनैं वागवानी सुवानी सुवहं ॥
 क्रियो कालिका मुख वासं सुसुडं । जिनैं सेत वंध्योति भोज प्रबंधं ॥
 सतं उंडमानी उलाही कवित्तं । जिनैं बुद्धि तारंग गंगा सरित्तं ॥
 जयदेव अठं कवी कविरायं । जिनैं केवल किति गोविंद गायं ॥
 गुरं सब्ब कब्बी लहू चंद कब्बी । जिनैं दरसियं देवि सा अंग हब्बी ॥
 कवी किति किति उकती सुदिखी । तिनैं की उचिष्टी कवी चंद भखी ॥

छं० ॥ १० ॥ छं० ॥ ५ ॥

यह लिखते हैं कि "भुजं प्रयातं यः ॥३८॥ अर्थात् जिस के पाठ में चार यकार (यगण) हों वह भुजगव्यास नामक छंद कहाता है ॥

इस पाचवे रूपक के जो पाठक एशियाटिक सोसाइटी की और अन्य पुस्तकों में बहुत अशुद्ध हैं वे ये है:- प्रथम। ग्रहनं। कहनं। लब्भयं। भारथ। उतपारथ। सारथ। सुखदेवं। परी-
 पत। उड्यौ श्रथ। कुरुवंस पड। कालिदास। सुव्य। सुसुड। वंध्यौ। तिभोजन। बु-
 द्धितारंग। गंगासरित्तं जयदेव। अठं। केवल। दरसियाउकति। तिन। कवि। गो-
 ष्यी। इनमे से प्रत्येक को सिद्ध करने के लिये जो हम सतर्क विवेचना करें तो बहुत स्थान चाहिये
 परंतु मैं आशा करता हूँ कि पुरात्ववेत्ता इनको हमारे शुद्ध पाठो ने मिलाकर और जो कुछ चंद कवि
 की हिन्दी के नियम हम ने सत्तेप में पहिले प्रकाश किये है उनमे विचार कर सिद्ध कर लेंगे ।

इस रूपक में चंद कवि अपने से पहिले हुए मुख्य मुख्य कवियों की स्तुति करके अंत की देा तुना
 में उनको अपने गुरु मान कर और चाप निर्भिमानी होकर अपने काव्य को उनके कहे काव्य की
 उच्छिष्टी होने की सजा देता है । जैसे कि इस महाकाव्य के किनी किर्वा रूपक में चंद के समय के
 पीछे वरते हुए वृत्त लिखे प्राप्त होते हैं और उन पर ने इस यय की शपथिताता में सदेह क्रिया
 जाता है वैसेही यह रूपक बना इस यय की प्रामाणिकता के सिद्ध करनेवाला एक प्रमाण रूप
 नहीं है और अन्य कवि जैसे श्रीहर्ष और जयदेवदि के समय के निरवय और निर्णय करने में
 पुरात्ववेत्ता ने का सहायक और उपकारी नहीं हो सकता है ।

चंद्र की स्त्री अपने पति के उच्छिष्ट सजा कथन में शंका करती है ॥

दूहा ॥ उच्छिष्ट चंद्र कंदर्प वयन । सुनत सु जंपिय नारि ॥
तनु पविच पावन कविय । उकति अनूठ उधारि ॥
कं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ कहै कंति सम कंत । तंत पावन बड़ कब्बिय ॥
तंत मंन उच्चार । देवि दरसिय मझि दब्बिय ॥

जाते हैं उसका वाचक है परन्तु इस शब्द का हम पता लगाकर बताते हैं कि यह बंभं चंद्र का हिन्दी का भूतकालिक क्रियावाचक शब्द है और संस्कृत भाषा में यङ्गुगन्तप्रक्रिया के प्रयोगों में जो बंभणीत बभंति प्रयोग प्रसिद्ध होता है उससे बना है और उसका यहा फिर २ वा वार २ पढ़ा वा भणा का अर्थ है । क्योंकि “चवं घेद् बंभं हरी किति भाखी” इस तुक का अर्थ यह है कि जिस “जीवितेस ने चारो वेदो को बार २ पढ़ा वा भणा और हरी की कीर्ति को भाखा” जो मनुष्य संस्कृत भाषा में अच्छा व्युत्पन्न और पक्षपात और हठ जैसे दोषों से विमुक्त और सत्य का दृढ अवलंबन करनेवाला है वह हम आशा करते हैं कि ऐसे प्रयोगों को देख कर कदापि यह नहीं कहैगा कि इस महाकाव्य का यंयंक्तो चंद्र संस्कृत भाषा में अव्युत्पन्न था ॥

इस रूपक में चंद्र कवि आठ कवियों को अपने गुरु मान कर उन की स्तुति और उनकी काव्य रचन-शक्ति का वर्णन करता है वह सब से पहिले भुजंगी नाम से परमेश्वर को कवि यहण करता है क्योंकि वेदादिक में उस का कवि नाम कहा है यथा -

“होता वा देव्या कवी०” यजुः “प्रथम वरजं भेषजं कविम्०” यजुः
“कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभू ०” ईशोपनिषत्
“कविः क्रान्तदर्शी सर्वडक् नान्यतोऽस्ति द्रष्टा” इशुतेः ॥ शा० भा०
“कवि पुराणमनुशासितारम्०” गीता ॥

दूसरे जीवितेश से प्राणनाथ अर्थात् ब्रह्मा कि जो आदि कवि कहता है जैसे भागवत में कहा है कि “तेने ब्रह्महृदा य आदि कविये सुह्यानि यत् सूरय” ॥

घाकी सब कवियों के विषय में कुछ विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सर्व साधारण लोग व्यासादि के नाम से भले प्रकार विज्ञ हैं ॥

६-८-कवि चंद्र ने जो पहिले रूपक में अपने काव्य को अपने से पहिले हुए कवियों के काव्य का उच्छिष्ट होना कहा है उसे सुन कर उसकी स्त्री उच्छिष्ट सजा में आश्चर्य के साथ शंका और अपने पति के गुणों का वर्णन करती है अर्थात् इन रूपकों में कवि चंद्र ने अपनी स्त्री के प्रणोत्तर के प्रसंग से अपने काव्य की उच्छिष्ट सजा के हेतु और अपने गुण प्रकाश किये हैं । इन में सम, कंति और कंत शब्दों के प्रयोग विद्वानो की दृष्टि में रहने योग्य हैं । सम (स० अ० सम्=संगे, -संबन्धे, समुच्चये,) का अथवा प्रति, और सम ब्रह्मरूप में सम शब्द तुल्य के अर्थ में कवि ने प्रयोग किया है, कंति (सं० स्त्री कम्=ति) पत्नी अथवा स्त्री, और कंत (सं० पु० कम् + त) पुरुष अथवा

तंत वीर उग्रंत । रंग राजन सुख दाइय ॥
 बाल केल प्रत्यंग । सुरनि उद्धरि कविताइय ॥
 अवलंब उक्ति उच्चार करि । जिहित मोहि कोविद रचै ॥
 सम ब्रह्मरूप या सब्द कहुँ । क्यों उचिष्ट कवियन कहै ॥

कं० ॥ १२ ॥ छ० ॥ ७ ॥

चंद्र अपनी स्त्री की शंका का समाधान करता है ॥

कवित्त ॥ सम बनिता बर बंदि । चंद्र जंपिय केमल कल ॥

सबद ब्रह्म इह सत्ति । अपर पावन कहि निर्मल ॥

जिहित सबद नहिं रूप । रेख आकार ब्रह्म नहिं ॥

अकल अगाध अपार । पार पावन चयपुर महिं ।

तिहिं सबद ब्रह्म रचना करौं । गुरु प्रसाद सरसं प्रसन ॥

जद्यपि सु उक्ति बूकौं जुगति । तौ कमल वदनि कवितह छँसन ॥

कं० ॥ १३ ॥ छ० ॥ ८ ॥

चंद्र की स्त्री पुनश्च शंका करती है ॥

कवित्त ॥ तुम बानी बरवंद । नाग देखंत विमल मति ॥

कंद भंग गन रचित । कंठ कौमार काव्य छत ॥

पति, यह तीनों चंद्र की हिन्दी के संस्कृत-सम प्रयोग हैं। और तंत और मंत शब्दों के प्रयोग भी दृष्टि देने जैसे हैं तंत पावन में तंत = तत्व और तंत मंत में तंत = तंत्र और मंत = मंत्र के पावन कवि ने प्रयोग किये हैं ॥

अन्य पुस्तकों में यह अशुद्ध पाठ है:- सु, जंपिय, कवि, सुख, दाइय, कविताइय, को, विद, समग्र रूप, कहु कविय और न ॥

८ चंद्र इस रूपक में अपनी स्त्री को उसकी शंका का उत्तर देकर समाधान करता है। शब्दब्रह्म (स० शब्दात्मक ब्रह्म) शब्द का प्रयोग चंद्र के व्याकरण और वेदान्त विद्या के ज्ञान का आशय है। गुरुप्रसाद शब्द यहाँ श्लेषार्थ में कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि व्याप्तियों के अनुसार चंद्र के विद्या-गुरु का नाम गुरुप्रसाद था। यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरु प्रसाद नामक प्रभाव देश का रहनेवाला एक बड़ा पंडित हुआ है। कवित्त चंद्र की हिन्दी का निज प्रयोग है और उस का अर्थ कवि ने अर्थात् काव्य रचनेवाले कवि का है। किन्तु किसी पुस्तक में जो बरबंदि, अमल, चयपुर, महि, तिहि, और प्रसन्न पाठ है वे अशुद्ध हैं ॥

९ जिन पुस्तकों में ये पाठ हैं-अर्थात् सुना, और समनहहि, वह अशुद्ध है इसमें दूसरी तुक का दूसरा पाठ 'कंठ कौमार काव्य छत' विद्वानों के ध्यान देने योग्य है। इसका अर्थ यह

बुधि तरंग सम गंग । उक्ति उच्चार अमिय कल ॥
 सुरन सुनत विद्वसंत । संत जनु वस्त्र करन बल ॥
 अवतार भूप प्रिथिराज पहु । राज सुख तिन सम लच्छि ॥
 वीराधि वीर सामंत सब । तिन सु गल्ह अच्छी कच्छि ॥
 छं० ॥ १४ ॥ छं० ॥ ९ ॥

चंद्र अपनी स्त्री की शंका का पुनश्च समाधान करता है ॥

कवित्त ॥ गज गवनी प्रति चंद्र । छंठ कौमल उचारिय ॥
 मनचरनी रस बेलि । सुरन सागर रस धारिय ॥
 बंक नयन बय बाल । प्रान वल्लभ सुखदाइय ॥
 अगुन निगुन गुरु अचनि । गवरि पूजा फल पाइय ॥
 भए आदि अंत कविता जिते । तिन अनंत गति मति कछिय ॥
 अनेक ग्रंथ तिन बरनवत । यौं उचिष्ट मति मै लछिय ॥
 छं० ॥ १५ ॥ छं० ॥ १० ॥

चंद्र अपनी स्त्री के आगे ईश्वर के ऐश्वर्य का वर्णन करता है ॥

॥ पद्दरी ॥

प्रनम्म प्रथम मम आदिदेव । उंकार सब्द जिन करि अछेव ॥
 निरकार मय्य साकार कीन । मनसा बिलास सह फल फलीन ॥ १६ ॥
 चयगुनह तेज चयपुर निवास । सुर सुरग भूमि नर नाग भास ॥
 फुनि ब्रह्मरूप ब्रह्मा उचारि । कथि चतुरवेद प्रभु तत्त सारि ॥ १७ ॥

है कि चंद्र की स्त्री अपने पति से कहती है कि तुम ऊठ कौमार काव्य कृत हो अर्थात् तुम को कौमार काव्य कंत है । क्या यह भी चंद्र के सस्त्रत भाषा में व्युत्पन्न होने का एक अच्छा प्रमाण नहीं है ?

१० अन्य पुस्तकों में ये पाठ अशुद्ध हैं वेनी, सुखदाइय, जिते, वरन, वत और में । इस रूपक में गवरि शब्द श्लेषार्थ में कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियों में चंद्र की स्त्री का नाम गौरी करके प्रसिद्ध है ॥

११ इस रूपक के छंद का नाम पद्दरी है और उसका लक्षण यह है—

दस करो प्रथम फिर पठ मिलाय । गिन दोउभ मता पाय पाय ॥

इस जगन अंत में धरत मोय । भनि शेष पद्दरी छंद होय ॥ रूप दी० ॥

इस रूपक में चंद्र अपनी स्त्री को ईश्वर का ऐश्वर्य वर्णन कर बताता है और पहिली तुक में प्रनम्म पाठ नहीं पहचान करनी चाहिये किन्तु प्रनम्म पाठ ठीक है अर्थात् चंद्र अपनी स्त्री को

बरनधौ आदि करता अलेख । गुन रचित गुननि नह रूप रेख ॥
 जिह रचे सुरग भू सत पताल । जम ब्रह्म इन्द्र रिषि लोकगल ॥ १८ ॥
 पवन अग्नि जल धर अकास । करिना समुह तिथि गिर निवास ॥
 असि लकख चार रच जीव जंत । वरनंत ते नही लहो अंत ॥ १९ ॥
 अठार बन्न बेली सु कीन । नाना प्रकार सब गुन अधीन ॥
 करि सकै न कोइ अग्याहि अंग । धरि हुकुम सीस दुख सहै अंग ॥ २० ॥
 दिनमान देव रवि रजनि भोर । उगैइ वने प्रभु हुकुम जोर ॥
 ससि सदा राति अग्या अधीन । उगै अकास होय कला चीन ॥ २१ ॥
 डिगपाल दावि रहै सबरि भूमि । चमकै न कार रहै चांपि चूमि ॥
 परिमान पवन करि गवन गाह । घटि बठि अंग अंडै उकाह ॥ २२ ॥
 इन्द्र सुगं अघ अग्या अकास । वरना सु वरख रकखे इलास ॥
 धर रहि अचल होय प्रभु प्रताप । हलि चलि न निमख सकै सतार ॥ २३ ॥
 उठंत लहरि लग्गी अकास । तठ समुठ सत्त नहिं खोज तास ॥
 परिमान अप्य खेपै न कोइ । करै सोइ क्रम प्रभु हुकुम जोइ ॥ २४ ॥
 अग्यान अटि को सकै ताहि । भूत न भविष्य को व्रत माधि ॥
 बरनधौ वेद ब्रह्मा अछेह । जल थलह पुरि रह्यौ देह देह ॥ २५ ॥
 पुनि कहै त्यास दसअठ पुरान । अवतार रचित नाना विधान ॥
 बरनधौ विमल मति देव देव । सब रहै सोधि नह लह्यौ भेव ॥ २६ ॥
 पुनि जानकीक रामावतार । अत कोटि ग्रंथ कथि तत्त मार ॥
 विध्वंसि सीध कज देव दाह । प्राप्ति रीइ कापि दहित वाह ॥ २७ ॥
 पुनी पंच का ल कवितान कीन । अग्यान नरन उर दीप दीन ॥
 कित्तीक वात जो मति प्रकास । करि लहो अघ्य तो होइ चान ॥

इं० ॥ २८ ॥ इ० ॥ २९ ॥

करता है कि तु प्रथम ऐसे रात्रि देव को प्रदमन कर कि जिनमे हेमा र क्रिया है । हमारा यह कहना
 अर्थ पर हास्य देने से बहुत टीका प्रतीत हो सकता है । अन्य पुस्तकों में जो ये मिनते हे ये
 अशुभ से जैसे-प्रजम्प, मन, प्रत्याह, चार, सत पाताल, पवनह, अह, असि, चार, कोइ, मवर,
 भोर, अटो, सतप, नहि, प्रतमा, हि, इहे, न, हलह्यौ, मीपक, जदेय, प्राप्ति जोर अघ्य ॥

इस रूपक के लक्ष्य ही रहतीं तुम के रहिते राट में जो हमारे मयगि राट के स्थान में
 मथिपटिक सोलाहो जो लोके हुई हुकूम में समर राट है और इस को अन्तर जाम योज

चंद्र की स्त्री अपने पति से अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका पूछती है ॥

दूषा ॥ सुनत काय कवि चंद्र कै । चित आनन्दी नारि ॥

तुम बानी बानी प्रसन । हसन हुवंत विारि ॥

छं० ॥ २९ ॥ छ० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ कहै कंति मतिवंत । तंत रसना रस सागर ॥

तुम गुन अवन सुहंत । जानि चमकंत कलाधर ॥

तुम देवी वरदान । दान दीजै मुहि कविय ॥

अष्टादसह पुरान । नाम परिमानह सविय ॥

तुम कथन कथन आनन्द मुहि । अग पच्छ भव सुद्धरै ॥

अग्यान तिमर नठुय सुनत । अध्व कमल द्विय उद्धरै ॥

छं० ॥ ३० ॥ छ० ॥ १३ ॥

चंद्र अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका का कथन करता है ॥

पद्मरी ॥ ब्रह्मन्वदेव सम वासुदेव । अष्टदस पुरान तिन कहि सुभेव ॥

तिन कहेां नाम परिमान ब्रन्न । जिन सुनत सुद्ध भव होत तन्न ॥ ३१ ॥

ब्रह्मह पुरान दस सहस जुटि । जिहि पढ़त सुनत तन तप्य छुटि ॥

पचास पंच हज्जार गनि । पद्मह पुरान तिन कह्यौ ब्रनि ॥ ३२ ॥

तेतीस सहस सैं चारि जानि । विष्णू पुरान विष्णू समानि ॥

साहब ने जो अरबी ^س सत्र शब्द होना अनुमान किया है वह अयुक्त है क्योंकि अरबी ^س सत्र शब्द का अर्थ यहां सर्वरीत्या अघटित है किन्तु मानना चाहिये कि चंद्र ने हिन्दी सवरि शब्द का छंद्र टूटने के कारण सवरी प्रयोग किया है और रासो की किसी २ पुस्तक में ऐसा पाठ भी मिलता है । जो इस शब्द को रकार और बकार के उलट पुलट लिखे जाने से बरस शब्द होना भी हम माने तथापि यह कुछ असंगत नहीं है ॥

१२ इस में प्रसन्न शब्द का पाठ किसी २ पुस्तक में मिलता है परंतु यहां छद्र टूटने के कारण कवि ने प्रसन करके प्रयोग किया है ॥

१३ इस कवित्त के भिन्न २ पुस्तकों में जो पाठ मिलते हैं वे अयुक्त हैं जैसे—कहे, वरदानि, पछू, नठु, य, अध्वक, और मल ॥

१४ इस रूपक के अशुद्ध पाठान्तर अन्य पुस्तकों में ये हैं—अष्टादस, कहै, सभेव, ब्रनिहो, तन्ननि, तप्य, पंचास, पंचह, चारि, तिष्णु, अठार, भागवत, तहा, तेईस, दुख, संपूर, अग्नि, पठि दग्यार, अछ, पछ, कूरभ, मछ, भक्ति, डरान, सहस, और नस ॥

इस रूपक के ४१ वें छंद्र की एक तुक भाषा के कवि घटती बताकर चंद्र पर दोषारोपण करते हैं परंतु यह उनकी भूल है क्योंकि चंद्र ने इस छद्र को एक ही तुक में कहा है

चौबीस सहस्र कहि शिव पुरान । तिहि पढ़त सुनत सम अमिय पान ॥ ३३ ॥
 अठारह सहस्र भागवत भेव । करि पार परिकखत सुक्कदेव ॥
 नारद पुरान कहि पाव लाख । तहं मुक्ति मोद आनन्द भाख ॥ ३४ ॥
 मारकंड नाम तेइस हजार । पौरान पवित्र सो दुःख जार ॥
 पंद्रह हजार संख्या सूपर । अग्नी पूरान पढि पाप दूर ॥ ३५ ॥
 चवद्वै हजार सैं पांच पड्डि । भवपित पुरान सो पाप जड्डि ॥
 ब्रह्मवैवत सहस्र अठार । केवल गिनान कथि भक्ति सार ॥ ३६ ॥
 रुद्रह हजार लिंगह पुरान । आनन्द अर्थ आगम गुरान ॥
 चौबीस सहस्र बाराह भक्ति । पौरव पुरान तिन अमित सक्ति ॥ ३७ ॥
 हजार इक्वासी कहि विवेक । स्कंदह पुरान भव भक्ति एक ॥
 ग्यारह सहस्र वायन सु अच्छ । पौरान सुनत सुधि अग पच्छ ॥ ३८ ॥
 सत्रह हजार कूरम पुरान । भाग विनोद प्राक्रम पुरान ॥
 विद्या हजार मित मच्छ देव । विधि संख उदरे सेव भेव ॥ ३९ ॥
 उनईस सहस्र गरुडह पुरान । श्रोतान वक्त भक्ती उरान ॥
 ब्रह्मांड पुरान बारह सहस्र । करि व्यास भक्ति प्रभु कंसनस ॥ ४० ॥
 पंद्रह हजार अरु चार लाख । सम ब्रह्मदात कहि चंद भाख ॥
 छं० ॥ ४१ ॥ ६० ॥ १४ ॥

चंद अपनी लघुता वर्णन करता है ॥

दूहा ॥ फूलि किति बहुआन की । जुगनि जुग निवास ॥

अप्य मति सरसैं सबल । मती करौ कवि दान ॥

छं० ॥ ४२ ॥ ६० ॥ ११ ॥

और श्लोकार्थ कहने शेर लिपिने की रीति संस्कृत भाषा के ज्ञानियों में प्रचलित है। चंद की यह संस्कृत-काव्य-सम शैली इस महाकाव्य में बहुत स्थानों पर देखने में आयेगी अतएव हम को इस पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये। ऐसे उदाहरण पुरानों में बहुत मिलेंगे परंतु जिन के पठने में भाषा काव्य भी आशा होगा वे जानते होंगे कि भाषा के संयत्न ने पहिले सर्व के दूमां श्लोक के साथ तीव्र किया अर्द्ध-श्लोक कहा है -

“ ह्रिया इतात्मा किमयं दिवाद्रो । विधुम रेधिः किमयं हुतात्मनः ॥

मया निरधीनमनुर्वासाथे । प्रतिदुर्गुर्ध्वं चरत दधिर्मुञ्ज । २ ॥

एतत्पद्योपाम विस्मरि सर्वतः । किनेवदित्य हुत मंसिच कनेः ॥

१५ इसमें अनुदु शब्दान्तर ये हैं - अप्य शेर मति ॥

गाहा ॥ पय सक्करी सुभत्तौ । एकत्तौ कनय राय भोयंसी ॥

कर कंसी गुज्जरीय । रब्बरियं नैव जीवन्ति ॥

कं० ॥ ४३ ॥ रु० ॥ १६ ॥

सत्त खनै आवासं । महिलानं मह सद नूपरया ॥

सतफल बज्जुन पयसा । पब्बरियं नैव चालन्ति ॥

कं० ॥ ४४ ॥ रु० ॥ १७ ॥

रब्बरियं रस मंदं । क्यं पुज्जति साध अमियेन ॥

उकति जुकत्तिय ग्रंथं । नथि कत्थ कवि कत्थिय तेन ॥

कं० ॥ ४५ ॥ रु० ॥ १८ ॥

याते वसंत मासे । कोकिल भंकार अंब बन करयं ॥

वर बब्बूर विरष्यं । कपोतयं नैव कलयन्ति ॥

कं० ॥ ४६ ॥ रु० ॥ १९ ॥

सहसं किरन सुभाउ । उगि आदित्य गमय अंध रं ॥

अथ्यं उमा न सारो । भोडलयं नैव भलकन्ति ॥

कं० ॥ ४७ ॥ रु० ॥ २० ॥

कज्जल महि कस्तूरी । रानी रेहंत नयन अंगारं ॥

कां मसि घसि कुंभारी । किं नयने नैव अंजन्ति ॥

कं० ॥ ४८ ॥ रु० ॥ २१ ॥

ईस सीस असमानं । सुर सुरी सलिल तिष्ठ नित्यानं ॥

पुनि गलती पूजारा । गडुवा नैव ढालन्ति ॥

कं० ॥ ४९ ॥ रु० ॥ २२ ॥

१६-२२ गाहा छंद का लक्षण यह है -

गाहा पहिले वारह । दूजे अठारहै कला राजे ॥

तीजे वारह धारहु । पंद्रह चौये तहां छजे ॥

इन गाहा छंदों में अशुभ पाठान्तर ये हैं - सनफल, क्यूपने, बं, रवि, रण्यं, नगय, सुरीस लिल, और फुनि ॥

बाईसवाँ गाहा के ॥ 'ईस सीस असमानं' में जो असमानं शब्द है उस को जो मिस्टर जान श्रीमस साहब फारसी असमान (असमान) होना अनुमान करते हैं उससे हम विलकुल असम्मत हैं । हम इस को स० असमानं, त्रि० (नास्ति समानो यस्य ।) अतुल्य, विजातीय, सजातीयभिन्न, का यावक समझते हैं अर्थात् ईस=परमेश्वर का सांस=शिट; असमानं=अतुल्य है ।

चंद उतापित होकर अपने को पूर्व-कवियों का दास होना,
उनकी उक्ति को कहना और अपनी को बकना कहता है ॥

दूहा ॥ कहां लगी लघुता बरनवों । कविन दास कवि चंद ॥

उन कहि ते जो उब्बरी । सो बकहीं करि बंद ॥

कं० ॥ ५० ॥ छ० ॥ २३ ॥

चंद खलों का स्वभाव वर्णन करके सुजनों के निमित्त
अपना काव्य रचन करना कहता है ॥

दूहा ॥ सरस काव्य रचना रचैं । खल जन सुनि न बसंत ॥

जैसै सिंधुर देखि मग । स्वान सुभाव भुसंत ॥

कं० ॥ ५१ ॥ छ० ॥ २४ ॥

तौ पनि सुजन निमित्त गुन । रचिये तन मन फूल ॥

जूका भय जिय जानिकैं । क्यौं डासियै दुकूल ॥

कं० ॥ ५२ ॥ छ० ॥ २५ ॥

सरस्वती की स्तुति ॥

॥ साटक ॥ मुक्ताहार विहार सार सुबुधा, अर्वा बुधा गोपिनी ॥

सेतं चौर सरीर नीर गहिरा, गौरी गिरा जोगिनी ॥

बीना पानि सुवानि जानि दधिजा, हंसा रसा आसिनी ॥

खंबोजा चिहुरार भार जघना, विघ्ना घना नासिनी ॥

कं० ॥ ५३ ॥ छ० ॥ २६ ॥

गणेश की स्तुति ॥

कंचंजा नद गंध राग हवयं, अलिभूराकादिमा ॥

गुंजा हार अथार सार गुंजा, भंभता पधा भासिता ॥

अग्रजा श्रुति कुंडलं करि कर, स्तुहीर उदारयं ॥

सायं पातु गनेस सेस सफलं, पृथ्वाज काव्यं कृतं ॥

कं० ॥ ५४ ॥ छ० ॥ २७ ॥

२३-२५ इनमें जो किसी र पुस्तक में तेजो पाठ है वह असुद्ध है । कवि चंद ने अपने लघुता वर्णन करते र अत को उतापित होकर जो ये दो दोहे (२०-२२) र (२३-२५) कहे हैं वे इस महाकाव्य के पाठको और संतुष्ट करनेवालों के ध्यान में रहने योग्य हैं ।

२६-२७ इन हृदयों में यह असुद्ध पाठान्तर है—गोपिनी, गिराजोगिनी, सुबाना, दधि, जादं

गणपति की उत्पत्ति कथा ॥

विराज ॥ रतं रत्त भारी । कहना विचारी ॥

लियौ मात नक्खं । बियो संख लक्खं ॥ ५५ ॥

मिले एक दीहं । रमै काम सीहं ॥

इकं रिष्य आयौ । दिद्यौ काम चायौ ॥ ५६ ॥

खिज्जा रिष्य भारी । दिद्यौ काम डारी ॥

भयौ पुत्र तब्बं । धजा कोर सब्बं ॥ ५७ ॥

सिरो मानधारी । गनेसं विचारी ॥

खिजे तब्ब ईसं । भयौ रोम वीसं ॥ ५८ ॥

अबल्ला इकल्ली । वियौ पुष भिल्ली ॥

डके डोर नहं । चन्या पुत्र वहं ॥ ५९ ॥

खिजी मात भारी । सरायं विचारी ॥

करी जाकु ईसं । धस्यौ पुत्र सीसं ॥ ६० ॥

सवै कज्ज अगौ । तुही नाम लगौ ॥

कलानंद रूपं । गनेसं समूपं ॥ ६१ ॥

इकं दन्त दन्ती । विराजंत कंती ।

सुभै दंत ऐसै । कविंदं प्रसंसै ॥ ६२ ॥

मनो भूमि धारी । बराहं उपारी ॥

इसी नठु तेजं । कला सोम केजं ॥ ६३ ॥

नमो देव कहं । प्रजा ईस महं ॥

भखै भूत प्रेतं । तिजारी न हेंतं ॥ ६४ ॥

सरसा, लंबी, जा, विघना, छत्र, मदं, जा, अग्ने, जा, करः, स्तु, दीर, पृथिराज, काव्य और ऋते । इन में एक पृथीराज शब्द के स्थान में जो हमने पृथाज पाठ रक्खा है वह एक रासो की पुस्तक में है और चंद्र का ऐसा प्रयोग देखकर राजपूताने और वृज की यामीण भाषासो से परिचित विद्वानो को कुछ आश्चर्य न होगा क्योंकि उन्होने ऐसे ही गजराज के स्थान में गज्राज बोलते और खेलते लोगो को देखा और सुना होगा । यह चंद्र की हिन्दी के देशी प्रसिद्ध नामक भेद का उदाहरण है ॥

२८ अन्य पुस्तकों में पाठान्तर ये हैं - कहना, सात, नष्य, दिये, रिषि, अबल्लाड, कल्ली, पुष्य, डोर, धौं, तुहि, दट्ट, दैहै, देह, भगतं, लछी, लच्छी, अयं, नय, समती, पती, धरे, त्रिलोक और ईसा । इस रूपक के छंद का नाम चंद्र ने विराज कहा है परंतु उस का नामान्तर सखा नारा और उस का लक्षण यह है -

इकं दीह एकं । दुती दीह मेकं ॥
 भगत्तं सुचकी । दियो लच्छि वकी ॥ ६५ ॥
 इकं चोख अशयं । करै नाक नशयं ॥
 सुभक्ती सुमक्ती । जलं माहि पत्ती ॥ ६६ ॥
 धरै आक सीसं । त्रिलोकेस ईसं ॥
 चयं वेद जक्की । प्रियं चंद भक्की ॥ ६७ ॥ ६० ॥ २८ ॥

शंकर की स्तुति ॥

दूहा ॥ नमस्कार संकर कियौ । सरसैं बुधि कवि चंद ॥
 सति लंपट लंगट नवा । अबुधि मंत्र सिसु इंद ॥
 ६० ॥ ६८ ॥ ६० ॥ २९ ॥

साधन भोग संयोग रजि । मंडन आव अखूट ॥
 नमो उमा उर आभरन । जय बंधन जट जूट ॥
 ६० ॥ ६९ ॥ ६० ॥ ३० ॥

विराज ॥ जटा जूट वंदं । निलाटंत चंदं ॥
 विराजंत कंदं । भुजंगी गल्लिंदं ॥ ७० ॥
 शिरो मान इंदं । गिरीजा अनंदं ॥
 सिरै सिंधि नहं । रनै वीर महं ॥ ७१ ॥
 करा चर्म सहं । करं काल खहं ॥
 उनै गंग हहं । चखी अगिग दहं ॥ ७२ ॥
 प्रलै जानि जहं । जयो जोग सहं ॥
 घटा जानि भहं । जरै काम तहं ॥ ७३ ॥
 हरै चाहि बहं । रचै मोह कहं ॥
 बचै दूरि दहं । नटे भेख रहं ॥ ७४ ॥
 नमो ईस इंदं । वदै भट चंदं ॥ ६० ॥ ७५ ॥ ६० ॥ ३१ ॥

छहै बर्य वारो । यगत्रै दुधारो ।

रवो शव चरी । करो संखनारी । श्रीधर कवि कृत विगत ।

३० पाठान्तर-सरसे । सली । सयोग ॥

३१ पाठान्तर-गिरीजा । रनै । शीर । यतुं । नंगहहं । हहं । मट्टु । इस रूप का छंद ७५
 चंद की संस्कृत काव्य-सम-श्लोकार्थुं लेकी का दूसरा उदाहरण है । देना टिप्पणी १४ को ।

दूच ॥ करिये भक्ति कवि चंद्र हर । हरि जंपिय इह भाइ ॥
ईस स्याम जू जू कचै । नरक परंतइ जाइ ॥

कं० ॥ ७६ ॥ सू० ॥ ३२ ॥

श्लोक ॥ परात्परतरं यांति । नारायण परायणं ॥
न ते तच्च गमिष्यंति । ये दुष्यंति महेश्वरं ॥

कं० ॥ ७७ ॥ सू० ॥ ३३ ॥

साटक ॥ गंगाया भृगुलत्त वसन्न मसनं, लक्ष्मी उमा देवरं ॥
संखं भूत कपाल माल अस्ति, वैजंति माला चरी ॥
चर्म मध्य विभूति भूतिक युगं, विभूति माया क्रमं ॥
पापं विहरति मुक्ति अप्पन वियं, वीर्यं वरं देवयं ॥

कं० ॥ ७८ ॥ सू० ॥ ३४ ॥

कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाथा ॥ आसा महीव कब्बी । नव नव कित्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥
सागर सरिस तरंगी । वेदथ्ययं उक्तियं चलयं ॥

कं० ॥ ७९ ॥ सू० ॥ ३५ ॥

चंद्र का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा ॥ काव्य समुद्र कवि चंद्र छत । मुगति समप्पन ग्यान ॥
राजनीति वेदथ्य सुफल । पार उतारन यान ॥

कं० ८० ॥ सू० ॥ ३६ ॥

कंद प्रबंध कवित्त जति । साटक गाइ दुदथ्य ॥

लहु गुर मंडित खंडिय चि । पिंगल अमर भरथ्य ॥

कं० ॥ ८१ ॥ सू० ॥ ३७ ॥

३२ पाठान्तर-करिये ।

३३ पाठान्तर-यांति । जे यह श्लोक चंद्र के शुक संस्कृत काव्य रचन का प्रथम उदाहरण है ॥

३४ पाठान्तर-भृगुलत्त । वसनमसनं । लक्ष्मी । कपालमाल । चर्मभूतिकियुगं । मायाक्रमं ।
मुक्तिं । वरदेवयं ॥

३५ पाठान्तर-कित्ती ॥

३६ पाठान्तर-ग्यान । यान ।

३७ पाठान्तर-भरथ्य ।

कोई अशुद्ध पढ़नेवाला चंद्र को काव्य-संबन्धी दोष न दे ॥

कवित्त ॥ अति ठंकौ न उघार । सलिल जिमि सिधिय सिवालह ॥

वरन वरन सोभंत । चार चतुरंग विसालह ॥

विमल अमल वानी विसाल । बयन वानी वर व्रंनन ॥

उक्तिन बयन विनोद । मोद ओतन मन चर्नन ॥

युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन कंद कुशौ न कह ॥

घटि बट्टि मति कोई पढइ । तौ चंद्र दोस दिज्जो न वइ ॥

कं० ॥ ८२ ॥ छ० ॥ ३८ ॥

इस ग्रंथ में चंद्र ने क्या क्या कथन किया है ॥

श्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नवं रसं ॥

षट् भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ कं० ॥ ८३ ॥ छ० ॥ ३९ ॥

रासो को रसिया सरस उच्चारिं ॥

कवित्त ॥ चरन नीम अच्छिर सुरंग । पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥

सुर विकास जारी सु मुष्य । उक्ति रस गौरव नि कंडिय ॥

जुगति क्लेश विस्तरिय । सीढियन घाट सु बहिय ॥

महि मंडन मेधान । याहि मंडन जस सहिय ॥

३८-पाठान्तर-पिधिय । विशाल । विचार । पढई । दिज्जो । दिज्जे ।

३९-कवि का यह संस्कृत श्लोक हमारे पाठकों के सदा ध्यान में रखने योग्य है । इस के सूक्ष्म विचार से हम जान सकते हैं कि षट्भाषा और कुरान की भाषा के जो जो शब्द इस महाकाव्य में प्रयोग हुए हम देखते हैं वह कवि ने जानकर प्रयोग किये हैं और कुरान की भाषा शब्दों के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नहीं है क्योंकि मुसलमानों का प्रयोग अल-खुद में शहाबुद्दीन गोरी के बहुत ही पहिले हो गया था । इस के अतिरिक्त हम को यह भी निश्चय मानना चाहिये कि चंद्र संस्कृत भाषा में निपुण था और षट्भाषा और कुरान की भाषा से भी अपरिचित नहीं था और जो जो शब्द इस महाकाव्य में संस्कृत भाषा में लिखे हमारे दृष्टि आते हैं वे उस की संस्कृत-काव्य-रचन शक्ति के उदाहरण रूप हैं । यह श्लोक चंद्र के माने हुए पिगल ददसुवम् के अनुसार लौकिक अनुपुष-व्यात्-अनुपुष-पद-दंड है । इस रूपक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तकों में दृष्टि नहीं आते किन्तु देवत विद्याल के स्थान में विसाल और पुराण के स्थान में पुरान पाठ है ।

४० पाठान्तर-अच्छिर । सुरंग । पुराण । मुष्य । गौरव । सिढियन । मेधान । याहि । विशाल । विश्वधर्म रस । उच्चारिय ।

दूच ॥ करिये भक्ति कवि चंद्र चर । चरि जंपिय इह भाद्र ॥

ईस स्याम जू जू कचै । नरक परंतइ जाइ ॥

कं० ॥ ७६ ॥ ह० ॥ ३२ ॥

श्लोक ॥ परात्परतरं यांति । नारायण परायणं ॥

न ते तच्च गमिष्यंते । ये दुष्यंति महेश्वरं ॥

कं० ॥ ७७ ॥ ह० ॥ ३३ ॥

साटक ॥ गंगाया भ्रगुलत्त वसन्न मसनं, लक्ष्मी उमा देवरं ॥

सखं भूत कपाल माल अस्ति, वैजंति माला चरी ॥

चर्म मध्य विभूति भूतिक युगं, विभूति माया क्रमं ॥

पापं विहरति मुक्ति अप्यन वियं, वीर्यं वरं देवर्यं ॥

कं० ॥ ७८ ॥ ह० ॥ ३४ ॥

कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाथा ॥ आसा महीव कब्बी । नव नव कृत्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥

सागर सरिस तरंगी । बोद्धय्यं उक्तियं चल्यं ॥

कं० ॥ ७९ ॥ ह० ॥ ३५ ॥

चंद्र का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा ॥ काव्य समुद्र कवि चंद्र कृत । मुगति समप्यन ग्यान ॥

राजनीति बोद्धिय सुफल । पार उतारन यान ॥

कं० ८० ॥ ह० ॥ ३६ ॥

कंद प्रबंध कवित्त जति । साटक गाइ दुद्धय्य ॥

लहु गुर मंडित खंडिय चि । पिंगल अमर भरथ्य ॥

कं० ॥ ८१ ॥ ह० ॥ ३७ ॥

३२ पाठान्तर-करिये ।

३३ पाठान्तर-यांति । जे यह श्लोक चंद्र के शुद्ध संस्कृत काव्य रचन का प्रथम उदाहरण है ॥

३४ पाठान्तर-भ्रगुलत्त । वसनमसनं । लक्ष्मी । कपालमाल । चर्मभूतिकियुगं । मायाक्रमं । मुक्तिं । वरं देवर्यं ॥

३५ पाठान्तर-कृत्ती ॥

३६ पाठान्तर-ग्यान । यान ।

३७ पाठान्तर-भरथ्य ।

कोई अशुद्ध पढ़नेवाला चंद्र को काव्य-संबन्धी दोष न दे ॥

कवित्त ॥ अति ठंको न उधार । सलिल जिमि सिष्पि सिवाल्लह ॥

वरन वरन सोभंत । चार चनुरंग विसाल्लह ॥

विमल अमल वानी विसाल । वयन वानी वर व्रंनन ॥

उक्तिन वयन विनोद । मोद आतन मन चर्नेन ॥

युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन कंद कुञ्चौ न कह ॥

घटि बड्ढि मति कोई पठइ । तौ चंद्र दोस दिज्जो न वह ॥

कं० ॥ ८२ ॥ छ० ॥ ३८ ॥

इस ग्रंथ में चंद्र ने क्या क्या कथन किया है ॥

श्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नवं रसं ॥

षट् भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ कं० ॥ ८३ ॥ छ० ॥ ३९ ॥

रासो को रसिया सरस उच्चारिं ॥

कवित्त ॥ चरन नीम अच्चिर सुरंग । पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥

सुर विकास जारी सु मुष्य । उक्ति रस गौरव नि कंडिय ॥

जुगति कोच विस्तरिय । सीठियन घाट सु यहिय ॥

महि मंडन मेधान । याहि मंडन जस सहिय ॥

३८-पाठान्तर-पिष्पि । विशाल । विचार । पठई । दिज्जो । दिज्जौ ।

३९-कवि का यह संस्कृत श्लोक हमारे पाठकों के सदा ध्यान में रखने योग्य है । इस के सूक्ष्म विचार से हम जान सकते हैं कि षट्भाषा और कुरान की भाषा के जो जो शब्द इस महाकाव्य में प्रयोग हुए हम देखते हैं वह कवि ने जानकर प्रयोग किये हैं और कुरान की भाषा शब्दों के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नहीं है क्योंकि मुसलमानों का प्रवेश भारत-खंड में शहाबुद्दीन गोरी के बहुत ही पहिले हो गया था । इस के अतिरिक्त हम को यह भी निश्चय मानना चाहिये कि चंद्र संस्कृत भाषा में लिखे या और षट्भाषा और कुरान की भाषा से भी अपरिचित नहीं था और जो जो शब्द इस महाकाव्य में संस्कृत भाषा में लिखे हमारे कृष्टि आते हैं वे उस की संस्कृत-ज्ञान-रत्न शक्ति के उदाहरण रूप हैं । यह श्लोक चंद्र के माने हुए पिगल वदसुत्रम् के अनुसार लौकिक अनुपुप-र्यात् अग्रतर पद दृष्ट है । इस रूपक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तकों में दृष्टि नहीं आते किन्तु केवल विद्यात के प्यान में विद्यात और पुराण के स्थान में पुरान घाट है ।

४० पाठान्तर-अच्चिर । सुरा । वनुष्य । मुष्य । गौरव । सिठियन । मेधान । याहि । विचार । विश्वधर्म धर्म । उच्चरिय ।

दूह ॥ करिये भक्ति कवि चंद्र चर । चरि जंपिय इह भाइ ॥

ईस स्याम जू जू कहै । नरक परंतइ जाइ ॥

कं० ॥ ७६ ॥ ६० ॥ ३२ ॥

श्लोक ॥ परात्परतरं यांति । नारायण परायणं ॥

न ते तच्च गमिष्यंते । ये दुष्यंति महेश्वरं ॥

कं० ॥ ७७ ॥ ६० ॥ ३३ ॥

साटक ॥ गंगाया भ्रगुलत्त वसन्न मसनं, लक्ष्मी उमा दोवरं ॥

संखं भूत कपाल माल अस्ति, वैजंति माला चरी ॥

चर्म मध्य विभूति भूतिक युगं, विभूति माया क्रमं ॥

पापं विहरति मुक्ति अप्पन वियं, वीर्यं वरं देवर्यं ॥

कं० ॥ ७८ ॥ ६० ॥ ३४ ॥

कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाथा ॥ आसा महीव कब्बी । नव नव किन्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥

सागर सरिस तरंगी । बोद्धय्यं उक्तियं चलयं ॥

कं० ॥ ७९ ॥ ६० ॥ ३५ ॥

चंद्र का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा ॥ काव्य समुद्र कवि चंद्र कृत । मुगति समप्पन ग्यान ॥

राजनीति बोद्धिय सुफल । पार उतारन यान ॥

कं० ८० ॥ ६० ॥ ३६ ॥

कंद प्रबंध कवित्त जति । साटक गाइ दुद्धय ॥

लहु गुर मंडित खंडिय चि । पिंगल अमर भरथ्य ॥

कं० ८१ ॥ ६० ॥ ३७ ॥

३२ पाठान्तर-करिये ।

३३ पाठान्तर-यांति । जे यह श्लोक चंद्र के गुरु संस्कृत काव्य रचन का प्रथम उदाहरण है ॥

३४ पाठान्तर-भ्रगुलत्त । वसनमसनं । लक्ष्मी । कपालमाल । चर्मभूतिकियुगं । मायाक्रमं । मुक्तिं । वरं देवर्यं ॥

३५ पाठान्तर-किन्ती ॥

३६ पाठान्तर-ग्यान । यान ।

३७ पाठान्तर-भरथ्य ।

कोई अशुद्ध पढ़नेवाला चंद्र को काव्य-संबन्धी दोष न दे ॥

कवित्त ॥ अति टंक्यौ न उघार । सलिल जिमि सिध्नि सिवाल्लह ॥

वरन वरन सोभंत । चार चतुरंग विसाल्लह ॥

विमल अमल वानी विसाल । वयन वानी वर ब्रंनन ॥

उक्तिन वयन विनोद । मोद श्रोतन मन चर्नन ॥

युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन कंद कुक्यौ न कह ॥

घटि बट्टि मति कोई पठइ । तौ चंद्र दोस दिज्जो न वह ॥

कं० ॥ ८२ ॥ छ० ॥ ३८ ॥

इस ग्रंथ में चंद्र ने क्या क्या कथन किया है ॥

श्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नवं रसं ॥

षट् भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ कं० ॥ ८३ ॥ छ० ॥ ३९ ॥

रासो को रसिया सरस उच्चारें ॥

कवित्त ॥ चरन नीम अछिर सुरंग । पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥

सुर विकास जारी सु मुष्य । उक्ति रस गौरव नि कंडिय ॥

जुगति कौह विस्तरिय । सीठियन घाट सु बहिय ॥

महि मंडन मेधान । याहि मंडन जस सहिय ॥

३८-पाठान्तर-पिष्य । विशाल । विचार । पठई । दिज्जो । दिज्जै ।

३९-कवि का यह संस्कृत श्लोक हमारे पाठकों के सदा ध्यान में रखने योग्य है । इस के सूक्ष्म विचार से हम जान सकते हैं कि षट्भाषा और कुरान की भाषा के जो जो शब्द इस महाकाव्य में प्रयोग हुए हम देखते हैं वह कवि ने जानकर प्रयोग किये हैं और कुरान की भाषा शब्दों के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नहीं है क्योंकि मुसलमानों का प्रवेश भरत-खंड में शहाबुद्दीन गौरी के बहुत ही पहिले हो गया था । इस के अतिरिक्त हम को यह भी निश्चय मानना चाहिये कि चंद्र संस्कृत भाषा में निपुण था और षट्भाषा और कुरान की भाषा से भी अपरिचित नहीं था और जो जो छंद इस महाकाव्य में संस्कृत भाषा में लिखे हमारे दृष्टि आते हैं वे उस की संस्कृत-काव्य-रचन शक्ति के उदाहरण रूप हैं । यह श्लोक चंद्र के माने हुए पिंगल छंदसूत्रम् के अनुसार लौकिक अनुष्टुप अर्थात् अष्टाक्षर पद छंद है । इस रूपक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तकों में दृष्टि नहीं आते किन्तु केवल विशाल के स्थान में विसाल और पुराण के स्थान में पुरान पाठ हैं ॥

४० पाठान्तर-अछिर । सुरंग । समुष्य । मुष्य । गौरव । सिठियन । मेधान । याहि । चित्ररंग । विश्वकर्म कर्म । उच्चारिय ।

घन तर्क उतर्क वितर्क जति । चित्र रंग करि अनुसरिय ॥
विश्वकर्म कवि निर्मद्वय । रसियं सरस उच्चरिय ॥

॥ कं० ॥ ८४ ॥ ह० ॥ ४० ॥

रासो का तत्त्वज्ञान कैसे होगा ॥

अरिल्ल ॥ तर्क वितर्क उतर्क सु जत्तिय । राज सभा सुभ भासन भत्तिय ॥
कवि आदर सादर बुध चादौ । पठि करि गुन रासो निर्वादौ ॥

॥ कं० ॥ ८५ ॥ ह० ॥ ४१ ॥

धर्म अधर्म न बुद्धि विचारौ । नयन नारि निय नेह निहारौ ॥
कौक कला कल केलि प्रकासौ । अरथ करौ गुन रासो भाहौ ॥

॥ कं० ॥ ८६ ॥ ह० ॥ ४२ ॥

पासासर जो पुत्त विद्दासह ॥ सतवंती ग्रभं गुर भासह ॥
प्रब्व अठार सवा लष लष्यै । तौ भारथ गुर तत्त विसष्यै ॥

॥ कं० ॥ ८७ ॥ ह० ॥ ४३ ॥

जो रासो को सुगुरु से पढ़ता है वह कुमति नहीं दरसाता ॥

कवित्त ॥ रासो बर बुद्धि सिद्धि । सुद्धि सो सब्ब प्रमानिय ॥
राजनीति पाइयै । ग्यान पाइयै सु जानिय ॥
उकति जुगति पाइयै । अरथ घटि वठि उन मानिय ॥
या समान गुन आप । देव नर नाग बखानिय ॥

भविद्धत भूत ब्रतह गुनित । गुन त्रिकाल सरसद्वय ॥

जो षठय तत्त रासो सुगुर । कुमति मति नहिं दरसद्वय ॥

॥ कं० ॥ ८८ ॥ ह० ॥ ४४ ॥

४१-४३-इस रूपक के छंद का नाम कवि ने अरिल्ल प्रयोग किया है कि जिस का लक्षण यह है-

अरिल्ल ॥ लघु दीर्घ को नेम न कीजै । ऐसे ही तुक चार भरीजै ॥

षोडश कला कली विच धारै । छंद अरिल्ला शेष उच्चारै ॥

पाठान्तर -सुजत्तिय । मत्तिय । पठि शब्द के पहिले तौ शब्द का पाठ पुस्तकान्तर में विशेष है । पठि । नारिनिय । कौक । कला-कल । अरथ शब्द के पहिले तौ शब्द किसी किसी पुस्तक में विशेष है । ग्रभं । लष्य । लष्यै । नारथ ॥

४४ पाठान्तर -राज । नीति । पाई । उक्ति । पाइयै । पाइयै । उन मानिय । ब्रतह । सरसद्वय शब्द के पहिले किसी किसी पुस्तक में मध्य शब्द का विशेष पाठ है । सरसद्वय । दरसद्वय ॥

रासो किस को अच्छा और किस को बुरा प्रतीत होता है ॥

दूहा ॥ कुमति मति दरसत तिहिं । विधि विना न अब्बान ॥

तिहिं रासौ जु पवित्र गुन । सरसौ ब्रह्म रसान ॥

कं० ॥ ८९ ॥ ह० ॥ ४५ ॥

इस ग्रंथ के काव्य की संख्या का कथन ॥

दूहा ॥ सत सहस नष सिष सरस । सकल आदि मुनि दिष्य ॥

घट बढ मत कोऊ पढौ । मोहि दूसन न वसिष्य ॥ कं० ॥ ९० ॥ ह० ॥ ४६ ॥

रासो के ढँके हुए अर्थ के विषय में कवि का कथन ॥

गाहा ॥ अरथं ढंकिन सहसा । उघारै वनस्थि एकलया ॥

मभक्तं मभक्त प्रमानं । चतुर स्त्री चारयं जेमं ॥ कं० ॥ ९१ ॥ ह० ॥ ४७ ॥

इस ग्रंथ के विषय का संक्षेप कथन ॥

कवित्त ॥ दानव कुल क्वीय । नाम ढूढा रष्यस वर ॥

तिहिं सु जोत प्रथिराज । सूर सामंत अस्ति भर ॥

जीह जोति कवि चंद । रूप संजोगि भोगि भ्रम ॥

इक्क दीह उपन्न । इक्क दीहै समाय क्रम ॥

जय कथ्य होइ निर्मये । जोग भोग राजन लहिय ॥

वज्रंग बाहु अरि दल मलन । तासु कित्ति चंदह कहिय ॥

कं० ॥ ९२ ॥ ह० ॥ ४८ ॥

अरिह्व ॥ प्रथम राज चहुवांन पिथ्य वर । राजधान रंजे जंगल धर ॥

मुप सू भट्ट सूर सामंत दर । जिहि बंध्यो सुरतांन ग्रान भर ॥

कं० ॥ ९३ ॥ ह० ॥ ४९ ॥

४५ पाठान्तर-दसन । तिहि । तिहि । रसानं ॥

४६ पाठान्तर-कोऊ ॥ इस में "सत सहस" से कवि एक लाख की ग्रंथ संख्या बताता है और यह भी कहता है कि घट बढ पढ करके मुझे दोष मत देना । कोई कोई कवि तो यहां सत शब्द से सात का अर्थ अनुमान करते हैं वह हमारी सम्मति में अयुक्त प्रतीत होता है ॥

४७ पाठान्तर-टकिन । वस्थि । मभक्त । मभक्त ।

४८-५० पाठान्तर-रष्यस । तिहि । जिह । संजोगी । भोगी । उपने । जोगराज । नाल-हिय । वज्रदूवाहु । अरि दल मलन । मुती । चंद ॥ ४७ ॥ सूर ॥ ४८ ॥ मित्त । बंध्यो । कित्ति । अष्यो । तिथि ॥ ४९ ॥

अरिस्त ॥ हं कवि चंद्र मित्त सेवह पर । अरु सुदित समंत सूर वर ॥
बंधों कित्त प्रसार सार सह । अप्पों वरनि भंति थिति थह ॥
कं० ॥ ८४ ॥ कू० ॥ ५० ॥

राजा परीक्षित की तक्षक दंशन और जन्मेजय की सर्पसत्र कथा ॥

हनुफाल ॥ इति हनूफालय कंद । कल वरनि वरनि सुकंद ॥
नहि नाल पिंगल जोर । दुज हुंतो दुजनिय भोर ॥ ८५ ॥
संसार बंधन दोय । इक पळ्यौ विद्य समोय ।
तन देइ अछर एक । नहिं पिंग पिंगल मेक ॥ ८६ ॥
किहि काल मरन सुविष्य । लहि नाग रूप सु अप्य ॥
हरि ह्यौ वाहन आइ । तिहिं कछ्यौ पिंगल चाइ ॥ ८७ ॥
दौ विद्य रूप सु अइ । सो गयौ कल करि सइ ॥
सो तच्छ बीर प्रमान । जुग जुगनि निश्चल ध्यान ॥ ८८ ॥
इक हुतो सिंगिय रिष्य । तप करै बाल विसिष्य ॥
नृप गयौ बर आखेट । दिषि अप्य मृतक बेट ॥ ८९ ॥
बाराह रूप प्रमान । लग्यौ सु ब्रह्म धियान ॥
दह बार बूभ्यौ राज । दुज दिथ न उत्तर काज ॥ ९० ॥
लिखि चित्त चित्र सूपत । यों भयो रिष अवधूत ॥
भयो ताम तामस राज । लियौ गोन मंच विराज ॥ ९१ ॥
कामान कोनक संधि । नृपराज दुज गलबंधि ।
फिरि गयो ग्रह प्रमान । आयौ सु बालक थान ॥ ९२ ॥

५० दृष्टि में रखने की बात है, जैसे महाभारतादि महापुराणों में समय ग्रंथ के आशय का सार एक अथवा दो अथवा तीन अथवा चार श्लोकों में वर्णन किया गया है वैसे ही चंद्र ने भी अपने इस महाकाव्य का सार इन (४८ से ५० तक) तान रूपकों में वर्णन किया है ॥

५१ पाठान्तर—हनूफाल । हनूफाल । विद्यस । मोय । न । न । अछर । ह्यौ । तिहिं । वायि । दे । तछ । जुगनि । हुंतो । रिष्य । बालवि । सिष्य । बुभ्यौ । दिथज । चित्र । चित्रस । कोनक । नवि । तुल्लि । तिहिं । अति लोल दिष्य रिषि लोइ । लोई । समोई ॥

हमारे पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये कि चंद्र कवि ने इस कथा को महाभारत के आदि पर्व के अध्याय ४९ से ५८ तक और भागवत के पहिले स्कंध के अध्याय १८ और १९ और दूसरे स्कंध के पहिले १ अध्याय से उद्धृत और संक्षिप्त करके वर्णन किया है । यदि कोई इस कथा

खिजि कछौ नैन भरीव । तम ताम रूप सरीव ॥
 पै जुन बालक बुद्धि । गलि गर्भ क्यों न वितुल्लि ॥ १०३ ॥
 तिहि तजिय तात हमान । धरि कोप अंग निधान ॥
 करि क्रोध अखि सुरत्त । हविजानि लगिगय लत्त ॥ १०४ ॥
 जिहि जियत गुचह अप्य । को तात लभय दप्य ॥
 रिस करौं जोव प्रमान । जरै तीन लोक अमान ॥ १०५ ॥
 रिस तेज कंपत बाल । दिष्यौ सु तात विसाल ॥
 वह लगि ब्रह्म धियान । भयौ कोटि तामस नाम ॥ १०६ ॥
 अति ना रत्न दिखि रिखि लोड । दिख्या सु तात समोड ॥
 कं० ॥ १०७ ॥ ह० ॥ ५१ ॥

कवित्त ॥ जोरि हृष्य थुति मंत्र । फिल्लौ पर दच्छि लगि पय ॥
 सहिर नयन आरत्त । कंठ लग्यौ सु मुक्कि भय ॥
 भूत द्वार वीभार । गाजि अये सुत मर्ग ॥
 भर भर भर उच्चार । रोस दावानल लग्ग ॥
 जिहि हृद्यौ अप्य मो तात गर । गनिव सत्त दिन में प्रमति ॥
 जो हत्यो अप्य तत्तक सुव्रत । कै काया अब्रत सुगति ॥
 कं० ॥ १०८ ॥ ह० ॥ ५२ ॥

साटक ॥ धंन्यो धंन्य सु बाल तापन तपं । बालं बलं विव्हलं ॥
 सोयं पुत्र कि सोस दोस चिविधं । बानीय गद् गद् गलं ॥
 एनं भूप विसाल भूमि भरतं । धर्मं धरा राजनं ॥
 तं तेजं नवि चार व्याघ्र विघनं । नैवापि संतापयं ॥
 कं० ॥ १०९ ॥ ह० ॥ ५३ ॥

और चंद्र के काव्य को उक्त भारत औ भागवत से मिलाकर सूक्ष्म विचार कर देखे तो यह निः-
 सदेह यह अनुमान कर सकता है कि चंद्र संस्कृत भाषा अच्छी जानता था और यह बड़े बड़े ग्रंथ
 भी उसके पढ़े हुए थे क्योंकि चंद्र के कोई कोई छंद उक्त ग्रंथों के श्लोकों के ठीक अनुवाद प्रतीत
 होते हैं । इस हनुफाल छंद के चारों पाद बारह बारह मात्रा के होते हैं ॥

५२ पाठान्तर—फिल्लौ । लग्यौ । विभार । गाजि । आइय । आइय । हत्यो । प्रमति । प्रमित्त
 कैकाया । सुपति ॥

५३ पाठान्तर—धंन्यो धन्य । तनं । बाल । भरनं । तेजनं । विचार । विघन ॥

दत्वा आप मिदं श्रुतं गुरु वरं । मृत्यं च राजा नयं ॥
 सत्यं सप्त दिनानि पानि पवरं । नैवं चलते पयं ॥
 त्वं आपं चय लोक जालति वरं । भुल्ले वरं पुत्रयं ॥
 एकं दीह सुतप्य प्रापति पदं । त्रैलोक्यं चासयं ॥

कं० ॥ ११० ॥ ह० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ सब रिखि में मो पुत्र तू । वय दिक्खौ परमान ॥
 मानहु उस्वर में उदै । बढति कला वर भान ॥

कं० ॥ १११ ॥ ह० ॥ ५५ ॥

कवित्त ॥ पुत्र कंडि रिखिराज । जाइ न्नप थान सु वत्ता ॥
 पंथ कुलच संग्रह्यौ । रिषि आपान विरत्ता ॥
 अति सु दीन सिर नीच । जंच नहिं भाउ उचाइय ॥
 दिष्टि दिष्ट राजन चरित । मंगन नृव आइय ॥
 एकंग एक जोगिन्द्र वर । धातु न बंधे च्छय पर ॥
 करि काज रिषि आयौ घरहि । उरह धरद्वर लग्ग डर ॥

कं० ॥ ११२ ॥ ह० ॥ ५६ ॥

शाहा ॥ जो जंघ्यो रिष पुत्तं । प्रलयं होइ सत्तियं कालं ॥
 जं भावइ तं भ्रंमं । सो किज्जै राजनं बलयं ॥

कं० ॥ ११३ ॥ ह० ॥ ५७ ॥

चोटक ॥ नृप कंडि प्रजंक प्रजंक पना । मुहु मुंदिह भानक मोद कला ॥
 नृप दीम च्छल्यौ बहु चित्त चितं । सुचल्या जनु पोन्नय पीप पतं ॥

॥ कं० ॥ ११४ ॥

पतमं गुर जानि चरन्न लग्यौ । बहुस्यां रिषिराज सु प्राण दग्घ्यौ ॥

कं० ॥ ११५ ॥ ह० ॥ ५८ ॥

५४ पाठान्तर—मृतं च । मृत्यं च । पानिपवरं । पय । आप ह्वलति । त्रैलोक्यं ॥

५५ पाठान्तर—मै । मे । तू । परसान । संवत् १६४७ की पुस्तक में हमारा लिखा पाठ है और इतर पुस्तकों में “मानहु इदी वर उदै” है ॥

५६ पाठान्तर—जाय । संपत्तौ । आपन । जंच । नह । नहि । दिष्टि । नृप । आर्दय । जोगिन्द्र । हथ । किहि । घरह । उर । घर । अद्वर । लगि ॥

५७ पाठान्तर—भ्यो । भंघ्यो । पुत्तं । भावै । भाव । इतं । जो । कीज्जै ॥

५८ पाठान्तर—त्रिप । नृप । फला । इला । मुहुमंदिह । भान । कपोद । नृप । बहुचित । जनु । पोन्नय । बहुस्यां । किसी पुस्तक में सु शब्द नहीं है ॥

गाहा ॥ मनो रिषि हृथ्यं प्रानं । वल्लीकं जीवनं गुरयं ॥

जो फल लग्यौ पच्छ । तौ कालं रिप सो वरयं ॥

कं० ॥ ११६ ॥ ६० ॥ ५९ ॥

दूहा ॥ इय चिंतय रिषि राज गुर । पुच्छिय अन रिष राज ॥

क्यों उधार होइ आप वर । कहौ लपा करि आज ॥

कंद ॥ ११७ ॥ ६० ॥ ६० ॥

कवित्त ॥ मद भंडी इक पुरुष । निसा भद्व अध रती ॥

वरगना अंगने । उख्यौ अहि परत धरती ॥

सुरापान आमिष्य । गद्यौ करहुं तब कुट्टिय ॥

उच्चारत हा राम । जाय वैकुंठ सु ठट्टिय ॥

परताप नाम सद गति भइय । कीर कहत परिषत्त सम ॥

भागवत्त सुनहि जो इक्क चित । तौ सराप कुट्टिय अक्रम ॥

कंद ॥ ११८ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

ज दिन आप तुहि भयो । त दिन परिशोक्त घर छधर ॥

पसू पंषि जल कंडि मुनिवर समाधि उर ॥

कंडि चक्र हरि रषि । कृष तूं मान परिष्यत ॥

पंडव वंस प्रतष्य । तषत ध्रम धारी दिष्यत ॥

अचरिज्ज कहा तुम उद्धरन । होइ प्रसन सुकदेव कहि ॥

दिन सत्त अवधि अंतर बहुत । हरि सु उद्धरै किनक महि ॥

कं० ॥ ११९ ॥ ६० ॥ ६२ ॥

धरनि रूप करि धेन । धम्म वकरा संग लीये ॥

भारषंड महि चरत । देषि कलियुग कुपि हीये ॥

चरन तीन भजंत । प्रजा सब आय पुकारिय ॥

चठि करि ते नृपराज । वय्य परि ताहि वकारिय ॥

५९ पाठान्तर - प्रान । वलीकं । लगौ । पछू । पछं । तो ॥ इस के छंद का नाम सं० १६४७ की पुस्तक में गाया है ॥

६० पाठान्तर - चितन । रिषिराज । पुच्छिय । होय । आप ॥

६१-६३-ये तीन रूपक सं० १७७० और सं० १६४७ की पुस्तक के अतिरिक्त उससे पीछे की जितनी पुस्तक अब तक हमारे देखने में आई हैं उन सब में है परन्तु जय तक उन से भी पहिले की पुस्तकें न प्राप्त हों तब तक इन रूपकों को हम निश्चय रूप से तैपक नहीं कह सकते इनके

किञ्चि कीर अंग लग्गौ परस । तिञ्चि कारन इच्च उपज्जिय ॥

आषेट जाय पन्नग मृतक । सिंगी, गर घतिय, पिञ्जिय ॥

कं० ॥ १२० ॥ ख० ॥ ६३ ॥

चोटक ॥ इति चोटक कंद सुमंत गुरं । दिन सात पळ्यौ हरि गंग कुरं ॥

त्रितकाल विकालच चित्त धरं । कित पत्त किमा पिवु लाइ भरं ॥

कं० ॥ १२१ ॥

नृपराज परीकृत तत्त गुरं । धरि ध्यान कच्चौ बदलीप धरं ॥

इन काल सु तप्पय देव नरं । नृप ग्यान सुन्यौ वपु व्यास वरं ॥

कं० ॥ १२२ ॥ ख० ॥ ६४ ॥

साटक ॥ या विद्या बदलीत राजन गुरं । आपो रिषं तारयं ॥

शून्यं राज सु इन्द्र धारन धरं । विद्या अमारा पुरं ॥

अम्भोयं सुधनं तु मातुल इयं । मोहं हरित्तारयं ॥

सो ध्यानं रिषिराज राजन वरं । पापापचारं परं ॥

कं० ॥ १२३ ॥ ख० ॥ ६५ ॥

चौपाई ॥ अति किसलय सुस कोमल अंग । जानु कि मुक्किय देखिय अंग ॥

किष्ण दीपायन दीपन व्यास । कोपिन एकिन मंडल चास ॥

कं० ॥ १२४ ॥ ख० ॥ ६६ ॥

दूषा ॥ किसनदीप दीपायनच । कही रिषी सब वत्त ॥

जु ककु सराप सु उद्वयो । परनराज गुरु गत्त ॥

कं० ॥ १२५ ॥ ख० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ तितै आय वर ब्रह्म । अप्प रिषि रिषि सु पुकारं ।

कै तच्छक नृप हतहु । न तरु तच्छक मर धारं ॥

पाठान्तर ये हैं—अधरत्ती । धारंगन । अंग । ने । काहुं । भगवत्त । जोइ क्वचित् ॥ ६१ ॥ जदि ।
म । तदि । न । परिसेक । घर । रपि । परीपत्त । प्रतप्य । प्रतपि । प्रसच्च । धम । संग । लियै ।
हियै । वप्य । परिताहि । घतिय ॥ ६३ ॥

६४ पाठान्तर—तोटकंद । किलं । पिवुलाइ । त्रितकाल । तत्त । नृन ॥

६५ पाठान्तर—गुरु । अम्भोयं । सुधन । मातुल । तारयं । ध्यान । राजं ॥

६६ पाठान्तर—सु । सकोमल । देहीय । अयंग । किष्वा । दीपायन । चन्द्रायना ॥

६७ पाठान्तर—रपी । वत्त । जु । उधयौ । आगत्त ।

६८ पाठान्तर—तच्छक । हतहुं । तजक । भई । भइय । मान । तो । निधान । धरि । चित्त । ध्यान ।

उभय चित्त चिंतयौ । भद्रय श्री नाग सु मानं ॥
 नृप न हतों तौ मरन । अहित नृप रिष्य निधानं ॥
 दुअ भंति चित्त चिंता सुचित । धरिय ध्यान चित जान जिय ॥
 सत विष्य आइ लिय बोर बर । आय च्छय्य राजन सु दिय ॥
 कं ॥ १२६ ॥ ६० ॥ ६८ ॥

कवित्त ॥ दिय च्छय्यं मधि कीट । सुफल लेइ राजन धारिय ॥
 कल लंछन लागंत । निकरि कीटं कित कारिय ॥
 क्लिनक मधि बाठंत । भए फुनि पंचनि नारिय ॥
 नृपय हुकम मुष दियौ । कतौ सो काम करारिय ॥
 फिरि आय राय दिष्टह बचिय । क्रम मद्धि उसनह फनिय ॥
 जं जाह जीह कलि हंस छत । भद्रय देह ब्रन अष्यनिय ॥
 कं ॥ १२७ ॥ ६० ॥ ६९ ॥

तब जनमेजय पुत्त । दिहा दच्छिन जन मुक्किय ॥
 तहां धन अंतर वैद । दरक च्छि लैन सु तक्किय ॥
 करिय घेद चलि अष्य । सहस चेला संग धारिय ॥
 आस्तीक जु धुर नाग । तब सु तक्कक विचारिय ॥
 छल तक्क रूप लकुटी भद्रय । अछिय गुरु पुठे उसिय ॥
 भष काज सिष्य सिष्यां दइय । विप्र रूप तक्कक हंसिय ॥
 कं ॥ १२८ ॥ ६० ॥ ७० ॥

दूहा ॥ आस्तीक जु गूर वैर कजि । पठि विद्या अह नाग ॥
 जनमेजय नृप सों मिलिय । मंड्या अष्यन जाग ॥
 कं ॥ १२९ ॥ ६० ॥ ७१ ॥

६९ पाठान्तर-भरा । किसी किसी पुस्तक में सो शब्द का पाठ नहीं है । आई राइ । दिष्ट । भईय । भईये ॥

७० पाठान्तर-दच्छिन । जनमु । किय । धन । अंतरवेद । सुत । किय । तिद्धक । छलन । कि । भईय । पुठे । सिष्य । सिष्या । दरह । तक्क ।

७१ पाठान्तर-तिहित । बरस । यत । धिष्य । सचारव । रष्यि । जाननु । घात । नृहरिय । मछ । होम । मंत । तक्क । पतौ । कनी । मंत्र ॥

कवित्त ॥ ति हित वैर सिहु वरन । सपत विप वोन सु चारव ।
 नृप जनमेजय नाम । भयौ तामस उत गारव ॥
 तात वैर सिसु दषिषि । जियन सोइ लोइ विचारै ॥
 जानिहु वातन हरिय । मच्छ बंध्यो जनु जारै ॥
 होमंत सक्ति तच्छक सु नग । इन्द्र सरन पत्तौ तवै ॥
 सुनि कन्न राज तामस भयौ । करहु मंत साधन सवै ॥
 कं० ॥ १३० ॥ ह० ॥ ७२ ॥

भुजंगी ॥ करी अस्तुती यं स्वहा इंद्र जोगं । तहा इंद्र आयौ सुरं नाग भोगं ॥
 इतं देव सादेव सारन्न आयौ । तिनं काटि दीयंत सो पाप पायै ॥
 कं० ॥ १३१ ॥ ह० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ अभय दान आतुरह । अन उग्राह पान दत ॥
 सरन रषि भय नरन । कट्टि मुक हित कंडि सत ॥
 तय लगि काग कराल । खान मसन ज वासै ॥
 रुधिर चरम अरु असति । वस्त वस्तन ज नासै ॥
 जो इय जोइ जग उच्चरै । जननि जाय अभ्रह गरै ॥
 तिन काज राज प्रारथिये । जियत तक्क तन उच्चरै ॥
 कं० ॥ १३२ ॥ ह० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ नृप चिंता बहु लगिग मन । ज्यौं जुय वाय चिकाल ॥
 यौं नृप राजत राज कुल । पुनर जनम दुष ज्वाल ॥
 कं० ॥ १३३ ॥ ह० ॥ ७५ ॥

७२ पाठान्तर--करि । अस्तुति । स्वाहा । सारन । तिन । सह ॥ इस रूपक के छंद का नाम हम ने शोध करके भुजंगी रक्खा है और सं० १६४७ की तथा सं० १७७० की पुस्तकों में भी यही नाम लिखा है किन्तु इतर पुस्तकों में चंद्रायना नाम लिखा है वह अशुद्ध है ॥

७३ पाठान्तर--आतुरहै । अन । कटि । मु । कहित । तुय । उ । उं । जोइयै । सभह । कारन । प्रार्थिय । उच्चरै ॥

७५ पाठान्तर--त्रिन । पुनरजनम ॥

वर्तमान आबू पर्वत के उद्धार की कथा ॥

उस तत्त्वक का आबू पर अपना अर्बुद नाम धर रहना ॥

कवित्त ॥ स तत्त्व आबू प्रमान । मंडीयौ सू अचल कर ॥

गरन गरु ते बिडुरि । सुडरु रघ्यौ जु मंत धुर ॥

अचल ईस प्रति ताम । अचल आवित्त अचल धर ॥

देव देव प्रारथिय । इन्द्र मुक्किय कंडिय धर ॥

अरबुद नाम धर जुत्तिया । दूर तपित थहरादया ॥

कालपान पुहय अरु वस्तु गुरु । क्हांच गुरु गुर क्हांदया ॥

ॐ ॥ १३३ ॥ ॐ ॥ ७६ ॥

गालव ऋषि के शिष्य उत्तङ्ग का उपाख्यान ॥

दूहा ॥ सो आबू उद्धार विधि । कहां कथा*परबंध ॥

ज्यौं अनादिआ रिष्य मुष । सुनी सु गुर समबंध ॥

ॐ ॥ १३४ ॥ ॐ ॥ ७७ ॥

गुरु गाडव उत्तंग सिष । बहु विद्या पढ़ि जाम ॥

पय लग्गौ गुर राज कै । कचौ दक्कना काम ॥

ॐ ॥ १३५ ॥ ॐ ॥ ७८ ॥

वाधा ॥ गालव रिषि निष्य उत्तंग । दिव्य विद्या बुध क्रम क्रम अंग ॥

गुर दष्यिन कज्जै गुर जच्चै । गुर पतनी तव मंगि विरचै ॥ १३६ ॥

कुंडल जच्चि विचिया कानं । अप्यौ जासु दष्यिना दानं ॥

दिवस अठमो ब्रत अपंडै । चरचों दान विप्र श्रुत मडै ॥ १३७ ॥

७६ पाठान्तर-सो । तत्त्वक । आ । चित । वर । मुक्कय । कंडीय । जुत्तिय । तपित । क्हांदया ॥
स=वह का वाचक और तत्त्व=सर्प=तत्त्वक का वाचक जैसे ॐ ५१ की ८ तुक में तच्छ प्रयोग हुआ है ।

७७ पाठान्तर-रिष्य ॥

७८ पाठान्तर-उतंग । जास । कै । दक्कना ॥

* हमारे पाठको को ध्यान में रखना चाहिये कि चंद्र अर्बुद के उद्धार की कथा अर्बुद खण्ड अर्थात् आबू माहात्म्य नामक संहृत यथो से सग्रह करके वर्णन करता है । जिन पाठको के पढ़ने में अथवा सुनने में ये यथ आए हैं वे जान सकते हैं कि कवि ने थोड़े में बहुत ही शायल लिया है और उत्तङ्ग का उपाख्यान महाभारत के आदि पर्व के पौषपर्वाध्याय नामक द्वितीय अध्याय में से भी कवि ने संग्रहीत किया है ॥

७९ पाठान्तर-उत्तंग । दक्षिन । गुरपतनी । मंगि । दक्षिना । अपंडै । मंडे । करे । सपनौ । विप । प्रससे । ससप्यै । तप्यक । वीव । रपै । अचल । इपै । इपे । ठडौ । ताम विराम ।

चल्थौ रिषि चमंके ताम । गुर गुरनी कीं करै प्रनाम ॥
 चिंतत इष्ट चल्थौ वर राहं । संपत्तौ यीं सद नृप ठाहं ॥ १३८ ॥
 जच्च कुंडल पिचिय पासं । सोइ समप्यै विधि वर तासं ॥
 विप्र प्रसंसै समपे कुंडल । कच्चि उर तच्छक बीच नीच पल ॥ १३९ ॥
 लै कुंडल चल्थौ हरषे मन । आप्यौ राज विप्र अन्यो अन ॥
 क्रम्यौ विप्र राच चंचल चर । कलि तच्छक लीने कुंडल वर ॥ १४० ॥
 क्रम्यौ विप्र पुठि अति चंचल । धरि अच्चि रूप सु गयौ रसातल ॥
 विल इष्यै ठठ्ठौ रिषि तामं । दुमत चित्त भय विद्वत विरामं ॥ १४१ ॥
 अस्तुति इन्द्र करन लग्गौ रिषि । नंष्यौ वासव धिनक वज्र सिषि ॥
 ब्रित अम्रित दीयौ आबंडल । धर रिषि तक्कि पान विल मंडल ॥ १४२ ॥
 पैठो विप्र नागपुर ठामं । धोम प्रगट्टै मंच विरामं ॥
 इष्यौ पुरुष एक षट आरं । फेरे चक्र तास फिरि तारं ॥ १४३ ॥
 इष्यौ बाह बाह सत बारं । उंच तेज आजेज अपारं ॥
 यीं नर नारि अषै वर नामं । वे अच ह्यथ वेई सम कामं ॥ १४४ ॥
 चिसत सठि तां तंति ठायं । अइ सेत्त स्यामं अध तायं ।
 अच्चि धुत्तेन उपाइ स्वाहं । फुंकत पुंक्क सुधुम्म सराहं ॥ १४५ ॥
 पुंक्त पुंक्क धार धुस चल्ली । लग्गौ नाग अंग सह थल्ली ॥
 प्रगटे असू पलक उध धत्ति । अप्यो कुंडल नाग मान हनि ॥ १४६ ॥
 ग्रिह कुंडल अप्ये गुर वामं । गुर विद्या अप्यी अभिरामं ॥
 दुज शर वज्र पैठ जेहा धर । विल अभित तिह थान मंडि थिर ॥
 कं० ॥ १४७ ॥ हू० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ विल अथाह तिहि थान भय । वहुत संवकर वित्त ॥
 पृथुल कराल कराल भौ । जिम जिम काल वित्त ॥
 कं० १४८ ॥ हू० ॥ ८० ॥

धर्ज । आम्रत । दियो । रिक्कि । पैठो । बेठो । धोमं । ठाम । विराम । फेरे । बाह । जो ।
 तामं । वे । ह्यथ । वे । ईस । मकाम । वेइम । सठि । ता । तंति । ठायं । उपाय । स्याम ।
 धुत्तेन । फुंकत । सुधुम । धुम । लगे । यली । अशू । कुंड । अप्यौ । हित्ति । मनि । यही ।
 राम । पैठि । आभेत । अभित ।

८० पाठान्तर-धित । प्रथुल । प्रथार । धिधित ॥

वशिष्ट ऋषि का आबू पर तप करना और उन की नंदनी गौ का अथाव बिल में गिरना ॥

पद्दरी ॥ किहि समय ताम वाचिष्ट रिषि ॥ धर अटन करत सम आइ सिष्य ॥
 सिवपुरि सु सोभ तारन ब्रन । सुभ थान इष्य आमोद मन्न ॥ १४९ ॥
 बर इष्य ठाम विश्राम ताम । अनेक रिष्य किय तह विश्राम ॥
 तिहिं समय चरंतिय होम धेन । सामीप समंपी बिलह तेन ॥ १५० ॥
 अध इष्य इष्य भ्रंमेव गाव । मुक्केव परिय मक्ति बिल अथाव ॥
 हुआ होम काल आवी न धेन । चिंतै सु रिष्य कारन केन ॥ १५१ ॥
 बल जंप्प लह्यौ गो पात थान । तहां गयो रिष्य सिष्यह समान ॥
 उत्कंठ बिलह ठठ्यौ सु रिष्य । नंदिनिय नाम कहि सदिति सिष्य ॥ १५२ ॥
 क्रन्दन गाव संपत्त वच । हंभार कियौ सुर उच्च तच्च ॥
 सुन्ने वचन सावच्छ भ्रम । चिंतै सु रिष्य निक्कास क्रम ॥
 ॐ ॥ १५३ ॥ ६० ॥ ८१ ॥

वशिष्ट ने अपनी गाय निकालने को गंगा का आह्वान किया ॥

दूहा ॥ चिंत अनेकह विधि विवर । बिल नंदिनी निकास ॥
 मंच रूप गंगा तवन । लगो करन रिष तास ॥

ॐ ॥ १५४ ॥ ६० ॥ ८२ ॥

भुजंगी ॥ नमो देवि गंगे जयो मात गंगे । द्रवै रूपका मंडलं ब्रह्म संगे ॥
 चयं पथ्य चयं गुनं ते निवासं । वरं वंद वंदारका सेव जासं ॥ १५५ ॥
 हिमं सैल भेदे सु भेदे धरायं । सजै ह्य कायं सुरायं नरायं ॥
 मधू क्केदनं पाय प्रावेस कारी । सतं मुष्य सामुष्य सामुद्र धारी ॥ १५६ ॥
 हली सेत भल्ली जलद्धी समुहं । अत्रै सेष धीरं सु मानौ समुहं ॥
 धराचल्लि भागीरथी विश्व भागं । मिटै अघघ ओघं तनं दुष्य दागं ॥ १५७ ॥

८१ पाठान्तर-वासिष्ट । सिव । पुरिस । सपन्न । इषि । भ्रमेव । सपतीय । मुक्केव । परित ।
 हबिल । आत्रीत । व्रीन । आत्रीन । चित्तै । गोपात । सिष्यहि । उत्कंठ । ठठ्यौ । सदति । क्रन्नेन ।
 प्रन्नेन । क्रनेष । संभार । हंभार । दंभार । ऊंच बचन । सावच्छ । भ्रम । चिंतै । रिष्य निक्कास ।
 क्रम ॥

८२ पाठान्तर-अनेक । ह । निकासी लगौ ॥

सुभं उच्च अंदोल बीच विराजं । मनो स्तुग आरोह सोगन साजं ॥
 नरं नीच नीरं तटं श्रोन प्रम्मं । तवै श्रग देवं गुनं अच्च अम्मं ॥ ११८ ॥
 परै मभक्त कल्लेवरं धंषि कुट्टी । भपी कावलं गिद्धि गोमाय लुट्टी ॥
 तटं श्रोन भक्तै थलं वारि च्छै । पिनं मभिक्ष अंदोल बीचं वदुत्तै ॥ ११९ ॥
 तिनं आतमं देह आरूप धारै । वरं उर्वसी चामरं वंक्त नारै ॥
 धरै ध्यान भावं तिनं दुक्ख दद्वै । मितै मज्जनं अय्य साजंम सब्वै ॥ १२० ॥
 भलकंत गंगा तनं तेज सोहै । मनै दाहनं दाह दाहन्न जो है ॥
 सुयं गंग गंगे सु गंगा प्रकारं । हरै नाम गंगा जमं किं करारं ॥ १२१ ॥
 त्रिपथी त्रिगामी विराजंत गंगा । महा स्वाग लोकं नरं नारि अंगा ॥
 रहदं घरी ज्यौं फिरै तीन लोकं । महा दिव्य धुन्नी तवं निगम लोकं ॥ १२२ ॥
 कलाली गुह्वीरं गुफा फारि नागं । प्रगडीय मातंगि मानुष्य भागं ॥
 रही नष्य अष्यी सुयं ताप भंजै । महा वहराजं दिवं दुर्ग रंजै ॥ १२३ ॥
 भयं भीषमं मात बहु पाप षंडै । जमं ज्वाल ज्वालं तमं तेज चंडै ॥
 रहं रोह रंगी हरं सीस गंगे । महा मोहनी मात दुग्गा उतंगे ॥ १२४ ॥
 वरं काल काला जलं स्वेत रूपं । तहां उष्यनी मात अभंग नूपं ॥
 भई गाम सहं सु चामुह सेतं । उष्यौ नाम गंगा उतंगा विहेतं ॥ १२५ ॥
 हरद्वार द्वारं कला तूं प्रगडी । करो मुक्ति मगं महा पाप मटी ॥
 तिनं नाम लोनै क्रियं तोय पीजै । क्रियं संभ्रनं देव संज्यान कीजै ॥ १२६ ॥
 कियै गाहि तें पंथ उगाहि साजं । तूंही तापिनी तेज तूं तेज राजं ॥
 तूंही मध्य वारानसी सोल दैनी । कली काल दुष्यं कटन्नं क्रपैनी ॥

ॐ ॥ १२७ ॥ हू ॥ ८३ ॥

दूहा ॥ जब लगि रज तन मात की । रहै अंग सो लाइ ॥

तव लगि काल न संपजै । क्रम पाप सब जाइ ॥

ॐ ॥ १२८ ॥ हू ॥ ८४ ॥

८३ पाठान्तर-देव । द्रवे । रूपका । पृथ । गुनंत्रै । निकास । वद । वदारका । मुप ।
 सामुप । जलधी । समद्वं । सामुनौ । धरा । चल्ली । नीर नीचं । सग । कलेवरं । मधि । वीचिष ।
 मंजने हल्लै । अप सा । जम । दाहनं । जोहै । त्रिपंथी । नाग । घटा ताम । मंगा ।
 महादिव्य । नयं । निगम । महावद्वराजं । पदिव दुर्ग । भीषम । जाल । महामोहनी । अनूपं ।
 धर्यौ । समरनं संभ्यान । मोह । मोह । दुपत्र ॥

८४ पाठान्तर-सोलाइ ।

गाथा ॥ क्रमं अघं सब भंजै । दिव्यं करै देह सा रूपं ॥
सुरगं करै सु गामी । अङ्गं नाम रसन उचारं ॥

कं० ॥ १६९ ॥ ह० ॥ ८५ ॥

मंदाकिनी गंगा का उभरना और गौ का तिरकर निकलना ॥

दूहा ॥ सुनि गंगा सुवयन रिष । उभरी आय प्रमान ॥
ताहि तिरंतह नंदिनी । आई तट बिल थान ॥

कं० ॥ १७० ॥ ह० ॥ ८६ ॥

रिष्य सिष्य धाये सु सब । सब । धर कड्डी तँह गाव ॥
सो कडुवि मंदाकिनी । गइ पयाल फिरि ठाव ॥

कं० ॥ १७१ ॥ ह० ॥ ८७ ॥

बिल अथाह दिष्यौ सु रिष । चित चिंता परपत्त ॥
को निकलै या माधिगत । गात भयानक पत्त ॥

कं० ॥ १७२ ॥ ह० ॥ ८८ ॥

**वशिष्ठ ऋषि का उस अथाह बिल बूरने को हिमालय
के पास एक पुत्र मांगने जाना ॥**

विअष्वरी ॥ चिंते रिष्य देखि बिल दुक्कित । उर लग्गी अति चिंत मभिकु दित ॥
पूळवि रिष्य सिष्य कत कामं । लहै न कोइ बुद्धि बल तामं ॥१७३॥
चिंतै ध्यान अष्य रिषि राजं । याहि सपूरन को धिर काजं ॥
चिंतत रिष्य ध्यान उर भासं । है सत पुत्र हेम गिरि जासं ॥१७४॥
एक पुत्र जाचें तिन पासं । बिल पूरै पूरै उर आसं ॥
क्रम्यौ राज रिषी दिसि उत्तर । देषी मन आनँद दिव्य धर ॥१७५॥
गौ रिषि राज पास गिर राजं । इष्य अगग पति आसन साजं ॥
मैना सहित आय पग लग्गे । अरघ पाद करि अचवन लग्गे ॥

कं० ॥ १७६ ॥ ह० ८९ ॥

८५ पाठान्तर-क्रम । सारूपं । सुगामी ॥

८६ पाठान्तर-सुनयन । तिरंत ॥ ८६ ॥ धाए । कडी । तहां । कडवि । गरं ।
ठांष ॥ ८७ ॥ परयत । मधि । पत्त ॥ ८८ ॥

८९ पाठान्तर-चिते इकत । कोई । सपूरन । नास । हेमगिरि । पुत्र एक । पू । पूरं ।
रिषि । उत्तर । मान । रिषिराज । गिरि राजं । इष्ये । मैना । पय । लागे ॥

दूहा ॥ सुनि सुवचन गिरि राज कौ । कहि रिषि कारन घात ॥

पुच एक जच्चं तुमहि । गरित सपूरन गात ॥

कं० ॥ १७७ ॥ ह० ॥ ९० ॥

हिमालय का अपने सब पुत्रों को ऋषि का अभिप्राय कहना ॥

कवित्त ॥ तब सुचिंत गिर ईस । पुच सहे निज स्वब्बं ॥

कहि कारन घिति घात । अप्य रष्यौ कुल अब्बं ॥

इह सुरिष्यि सुन ब्रह्म । नाम वाचिष्ट महा मति ॥

धर्म पार तप पार । पार अत कर्म परम गति ॥

जच्चे सु सोइ तुम एक कहुं । चिंतिय चा कारज्ज रिषि ॥

संब सो वास विल उद्धरौ । पद पामौ परमुच्च अषि ॥

कं० ॥ १७८ ॥ ह० ॥ ९१ ॥

हिमालय के बड़े पुत्र का उत्तर देना

कि वह भूमि निषेदु है ॥

कवित्त ॥ तब अप्यहि अग्र पुत्त । सुनहु गिरि राज चिंत चित्त ॥

पिता वाच रिष काज । कोइ क्खंडहि सुकम्म हित ॥

उह सु भूमि निषेद । थान जानहु तुम सब्बं ॥

धर्म क्रम अह देव । सेव जाजन नहि अब्बं ॥

कुच्छित्त देस कारन विक्रम । तहँ सु केम किज्जै गमन ॥

अप्यियै प्रान मंगौ जो रिषि । पै दुष्ट थान थप्यहिं न तन ॥

कं० ॥ १७९ ॥ ह० ॥ ९२ ॥

वशिष्ट का प्रत्युत्तर दे कहना कि वह भूमि बड़ी रम्य है ॥

कवित्त ॥ तब जंपे सुत ब्रह्म । सुनौ गिरि राज पुच सम ॥

इहि सु भौमि विल थान । रम्य मंडहि सु तप्य चम ॥

९० पाठान्तर-गिरिराज । संपूरन ॥

९१ पाठान्तर-ईसं । रष्यो । महामति । परमगति । कहुं । संब । संबसौ । परमुच ॥

९२ पाठान्तर-गिरिराज । सुकम्म । हव्य । अब्ब । तहा । कहहां । पै ॥

९३ पाठान्तर-जंपे । सुअ । गिरिराज । तिय । गंधर्व । मूर्तिमान । सज्जे । तिसर ।

धात्र । महि ॥

सबै देव इच्छि वास । तिष्ठथ सञ्जै रिषि सव्वं ॥
 विप्र ब्रह्म वर वल्लि । सु गुन गंध्रव सव कव्वं ॥
 किन्नरह क्रम सुत धर्म धर । मुरति मान सज्जैति सिर ॥
 हरि ब्रह्म ईस संवास सह । जो आप्रम हि इक्क गिर ॥
 कं० ॥ १८० ॥ सू० ॥ ९३ ॥

और वहां आगे बाल्मीकि ऋषित्व को प्राप्त हुए हैं ॥

पहरि ॥ रमनीक ठाम वाचिष्ट राज । तहां बसहि देव देवह विराज ॥
 इच्छि थान पुव्व क्रत युग प्रमान । रिषि कियो तप्य ज्जर्जित विधान ॥१८१॥
 बाल्मीक वीर इक वधिक रूप । अति पाप क्रम आघात कूप ॥
 भंजै सु मग्ग तिन भ्रम्म थान । पाथै सु हरिय दरसन विधान ॥१८२॥
 वित संघ चक्र गद पदम बाहु । तन स्याम सुभित पीतह प्रवाहु ॥
 दिष्ण्यौ सु लकी तन रूप भील । कीनी नह तन तिन निमष ढील ॥१८३॥
 आयै सु दिठ्ठ गोविन्द वीर । जानी न पुव्व भ्रम्मह सरीर ॥
 क्विति दिष्पि दिठ्ठ कामह कहूर । बिंठ्यौ सु पाप मथ्यां सन्नर ॥ १८४ ॥
 तव आय रिष्प उपदेस दीन । किच्छि काज इहां यह क्रम कीन ॥
 भग्नी रु वंध तिय मात पुत्त । बंठहि कि पाप पापह सजुत्त ॥ १८५ ॥
 तिच्छि जाइ कच्चौ वर भील मान । बंठ्यौ न पाप किन अंग थान ॥
 लग्यौ चरन्न कर धनुष तोरि । आघात घात बानी सजोरि ॥ १८६ ॥
 व्याघात नाम सां वधिक थान । अम अम्यौ इक्क वृक्कह निधान ॥ *
 कं० ॥१८७॥ सू० ॥ ९४ ॥

गाथा ॥ थों कच्चियं रिषि राजं । तुम कोइ दिवस अमन करि अथं ॥
 फुनि हम दरसन प्रायं । सथं गुर मंत्र दे कानं ॥
 कं० ॥ १८८ ॥ सू० ॥ ९५ ॥

९४ पाठान्तर-जु । धर्म । दर्शन । लछि । धीर । धर्मह । धरमह । बिंठ्यौ । मयांस ।
 भूर । रिषि । इच्छा । रक्षा । क्रम । त्रिय । पुत । संजुत । चरन । तोरी । धम्यो । इक्क । वृद्ध ।
 * यह पंक्ति कर्नेल टाड साहय वाली पुस्तक में नहीं है ॥
 ९५ पाठान्तर-कोई । प्रम । ससथ्य । मरा । मरा । गच्चिय । भवै । अत्र । अत्रयो ॥

मरां मरां यच्च कच्चियं । गच्चियं भगताय अंगयं नेहं ॥

भिद्दे तु चक्रम मंटी । दही निय अब यो देहं ॥

कं० ॥ १८८ ॥ ह० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ बांबी फिर अंगव वली । अंग उदैही जान ॥

भीन सबद मुष निक्कसे । धीर धीर कै राम ॥

कं० ॥ १८० ॥ ह० ॥ ८७ ॥

तव धरि मधि कळ्यौ सु रिषि । दिष्पि प्रवल तप पार ॥

वालमीक रिषि सो भयौ । सुनि गिरि सुअन विचार ॥

कं० ॥ १८१ ॥ ह० ॥ ८८ ॥

**हिमालय के मध्यम पुत्र नंद का वशिष्ठ के साथ
आजा स्वीकार करना ॥**

कवित्त ॥ सुनि सु वचन गिरि सुअन । सर्व विधि राम वाच रहि ॥

मध्य पुत्र गिरि नंद । सोय उच्च्यौ वाव सहि ॥

हैं सु पंग विन पाय । क्रंभि सक्को न राह दुर ॥

जाय परौ विन घान । करौ उडार वाव धुर ॥

पित वाव राम सज्यौ सु बन । वाव सु हरिचंद अब्य वहि ॥

सोइ वाच तात कत कज्ज रिषि । कोइ सचुक्कहि मुष्प महि ॥

कं० ॥ १८२ ॥ ह० ॥ ८९ ॥

**वशिष्ठ का अबूर्द्ध नाग को कहना कि जो तू नन्द गिरि को
उठा ले चले तो हमारा कार्य सिद्ध हो ॥**

पहरी ॥ अर्बुदा अबल अर्बुदति नाम । कित काम पयह घोरौ सु काम ॥

धर नंद नंद नंदन प्रमान । उचार सार लै जाहु थान ॥ १८३ ॥

८६ पाठान्तर-वाकी । निकसे । कै ॥

८७ पाठान्तर-दिषि । रिप ॥

८८ पाठान्तर-गिरिं । सोइ । हैं । उच्च्यौ । पाइ । क्रमि । क्रमि । सको । सज्यौ
सक्के । परौ । करौ । कोइ । चुक्कहि । मुख ॥ इस छंदा की पांचवों तुक के वाच और सज्यौ
शब्दों के बीच में राम शब्द किसी किसी पुस्तक में लेखक ने लिखना छोड़ दिया है । तथा इस
तुक के दूसरे पाद का पाठ हमारे पाठ के सिवाय किसी किसी पुस्तक में "पिता वाच वि
अधु वाच" करने भी है ॥

१०० पाठान्तर-इस की पहिली तुक के पहिले पाद का पाठ हमने सं० १६३७ की

हंधी सु गाय वन व्याघ्र क्रोध । आयौ सु राज राजन समोध ॥
 कुरु लाय करिय करुना सु धेन । कंडाय राज राजन बलेन ॥ १९४ ॥
 तन धरिग कस्यौ जज्जर सरीर । दिष्यौ न सिंघ तहां निमष तीर ॥
 सु प्रसन्न गाय धेनक सु रिषि । कीनों जु अंग द्रपक विसिष्य ॥ १९५ ॥
 थन थान दिष्यि अर्बुदा राज । रिष कहै जोग हौ चलन साज ॥
 कं० ॥ १९६ ॥ ह० ॥ १०० ॥

**अर्बुद नाग का कहना कि जो मेरे नाम से तीर्थ प्रसिद्ध
 हो तौ मैं नंद गिरि को उठा ले चलूं ॥**

कवित्त ॥ तव तवि अर्बुद नाग । मित्र गिर नंद हित हिय ॥
 हौं उद्धरि लै जाउँ । तिथ्य मो नाम नाम दिय ॥
 तव नंदी उच्च्यौ । होहि तो नाम तिथ्य हित ॥
 सु रिषि कज्ज सुद्धरहि । सु रिन उद्धरहि वाच पित ॥
 थपी सुवत्त अर्बुद उरग । सु रिनि सीस नंषे सु मन ॥
 पय परसि मात पित वंध ब्रग । सुअ सुहेम कीनो गमन ॥
 कं० ॥ १९७ ॥ ह० ॥ १०१ ॥

अर्बुद नाग का नंदगिरि को उठा लाकर बिल में रख देना ॥

कवित्त ॥ तव निय अर्बुद नाग । कंध उच्च्यौ नंदि नग ॥
 मग अग गिरि राज । रिषि संच्यौ सथ्य अग ॥
 साध सिद्ध सुर सुरह । सुमन नंषे उच्चरि सह ॥
 रिषि अग गिरि पच्छ । आय संपत्त तथ्य षह ॥

पुस्तक से रक्खा है । सोसाईटी की छापी हुई तथा अन्य पुस्तकों में “अर्बुदा सचल अर्बुदूत नाम” करके पाठ है । क्रत । पोरौ । गाव । विन । कुहना । कर्यौ । सीह । तिहां । कितौ । द्रपक । द्रप्यक । जो । गहू ॥

१०१ पाठान्तर-हित । तिथ । उच्चर्यौ । हौं । हितो । सुरसि । सुदु । रहि । उदु । रहि । षत । अर्बुद । धय । इस रूपक की दूसरी तुक का दूसरा पाद और तीसरी तुक जो वेदने वाली पुस्तक सोसाईटी में है उस में लेखक की भूल से नहीं है अन्य सब में हमारा लिखा पाठ है ॥

१०२ पाठान्तर-उदुर्यौ । नन्दिग । अगा । गिरिराज । रिषि । संचर्यौ । अग । सिध ।

प्रविस कियो गारत्त गिरि । जय जय वचन सरीर हुअ ॥

भौ मगन सुतन सब्यै सु गिरि । उवख्यौ नाक सुनाग धुअ ॥

कं० ॥ १८८ ॥ ६० ॥ १०२ ॥

बिल का पुर जाना और पुष्प वृष्टि सहित जैजैकार होना ॥

दूहा ॥ उवख्यौ नाक सु नाग धुअ । दिव अस्तुति परमान ॥

पुष्प वृष्टि दृष्ट्यां करिय । जय जय बंध्यौ तान ॥

कं० ॥ १८९ ॥ ६० ॥ १०३ ॥

नग का हिलना ॥

दूहा ॥ गात सकल गिरि जात को । सब बूझ्यौ सम नाग ॥

उबरि नास सैलह तहां । सो चलही विन लाग ॥

कं० ॥ २०० ॥ ६० ॥ १०४ ॥

नग के हिलने से वशिष्ठ चिंता कर ईश आराधन करने लगे ॥

दूहा ॥ नास सुहल हल्यौ सुनग । उर अति चिंता जगग ॥

अति आतुर वाचिष्ट रिषि । ईस आराधन लगग ॥

कं० ॥ २०१ ॥ ६० ॥ १०५ ॥

वाचिष्ट ऋषि ने महादेव का यह आराधन किया ॥

साटक ॥ ईसंजा गिरिजानने वगरयं । उच्छंग मातंगिनी ॥

चर्मजा वडुजामवं जलजं । बुंदं तयं उज्जलं ॥

रख्यं जारति कर्ने कामति मलं । दलयंति तीयं पुरं ॥

त्रिपुरारिं तन तुंग तारन गुरं । जैजै चरं ईसयं ॥

कं० ॥ २०२ ॥ ६० ॥ १०६ ॥

उबरि । आगे । पछ । संपन । तय ॥ इस की अंत की तुक का पाठ किसी किसी पुस्तक में "भू मग सुतन सबै सुगिरि । उवर्यौ नाक सु नाक धुअ" है ॥

१०३ पाठान्तर—उवर्यौ नाक । हयां ॥

१०४ पाठान्तर—यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है और जब तक कि वह इस से भी प्राचीन पुस्तक में नहीं मिले तब तक उस को लेखक नहीं कह सके । सोह । लही । बुझौ ॥

१०५ पाठान्तर—नाग । वाशिष्ट । आराधन । लग ॥

१०६ पाठान्तर—उच्छंग । चलजं । जलदं । रिषं । करन । दलयंति ॥

भुजंगी ॥ नमो आदि नाथं स्वयंभू सनाथं । नहीं मात तातं न को मंगि वातं ॥
जटा जूठयं सेपरं चंद्र भालं । उरं चार उदारयं रुंड मालं ॥ २०३ ॥
अनीलं असन्नं उपञ्चीत राजं । कलं काल कूटं करं सूत्र साजं ॥
वरं अंगं औधूतं विभूत ओपं । प्रलै कोटि उग्रं सि कालं अनोपं ॥ २०४ ॥
करी चर्म कंधं हरी परिधानं । वृषं वाहनं वास कैलास थानं ॥
उमा अंग वामं सु काल पुरष्पं । सिरं गंग नेत्रं चयं पंच मुखं ॥ २०५ ॥
नमः संभवायं सरव्वाय पायं । नमो रुद्रयायं वरदाय सायं ॥
पसूपत्तए नित्तए मुग्गयाए । कपर्दी महादेव भीमं भवाए ॥ २०६ ॥
मषघ्नाय ईसानए चंबकाए । नमो धम्मए धातए अड्डकाए ॥
कुमारो गुरव्वे नमो नील ग्रीवे । नमो व्याधए बाधए दिच्छ जीवे ॥ २०७ ॥
नमो लोहिते नील सिष्णंडए तं । नमो शूलिने चक्षुषे दिव्यए तं ॥
वसूरेतवे स्रव्वदेवस्तुतेवं । नमो पिंग जाटिल्लए देव देवं ॥ २०८ ॥
नमो तप्प मानाय ब्रष्पं धुजाए । नमो ब्रह्मचारी चयंब्रह्मकाए ॥
सिवं चातमे चातगे श्वर्गचाए । नमो विश्वमावित्तए विश्वराए ॥ २०९ ॥
नमस्ते नमस्ते नमो सीतताए । नमो सर्ववक्त्रायने संकराए ॥
नमो ब्रह्मवक्त्राय भूतं पिताए । नमो वाचपे विश्वपे भूतपाए ॥ २१० ॥
नमो सीससाहस्त्रए नीतएसं । सहस्त्रं भुजा नैन साहस्त्र तेसं ॥
नमो पादसाहस्त्र आसंखकर्णे । नमो वह्नि हीरन्य हीरन्यवर्णे ॥ २११ ॥
नमो भक्ति आकंपनं संभु देवं । थिरं रिद्धि दाना मनं वच्च सेवं ॥
प्रसन्नो भवो ईस तच्चै न कच्चै । तनं ताप विन्नासए चित्त तच्चै ॥
६० ॥ २१२ ॥ ६० ॥ १०७ ॥

१०७ पाठान्तर-स्वभू । समर्थं । नहीं । मंगी । चंद्रभालं । उर । रुंडमालं । असन्नं । उपञ्चीत । कलंकालकूटं । विभूत । सिकालं । अलोपं । करि । वधं । वृषवाहनं । वासं । थानं । दामं । कुरष्प । गंगा । नेत्रं । उद्रपायं । सरवाय । वरदाय । पसू । पत्त । ए । नित । ए । मुग्ग । जाए । कपर्दी । कर्पट्टी । मषघ्नाय । इसं । नए । धम्म । ए । धात । ए । गुर्व्वे । नल । व्याध । ए । बाध । ए । टिच्छ । सिष्णंड । एतं । दिव्य । एतं । वसूदेवते के स्रवदेव । स्तुतेवं । ग्रंथं । जाये । चयंब्रह्म । काए । श्वर्श । चाये । विश्वमा । वित्तए । नमस । ते नमस । ते । सीत । ताए । साहस्र । एनीत । एस । सहस्र । नैन । सहस्र । आसंप । कर्णे । हिरन्य । सभा विनास । ए । चित्त ॥ सं० १६४७ की पुस्तक में इस छंद की ८ वीं तुक में का नित्तए शब्द नहीं है ॥

वशिष्ट के वचन सुन महादेव का प्रत्यक्ष हो वर मांगने की कहना ॥

चौपाई ॥ सुनि मुनि वचन ओद मन ईसं । आय परौ रह्यौ उद्वरि सीसं ॥
बर ! बर ! बानि जानि मन मंगहु । जंपहि ईस आस जिहि जगहु ॥
ॐ ॥ २१३ ॥ ॐ ॥ १०८ ॥

मंगहु मुनि सज्जन गुन गुन वर । चलै किति जिती जिहि धुर धर ॥
ता किति मुकतीह सेां लिज्जै । ब्रह्मासन आसन डोलिज्ज ॥
ॐ ॥ २१४ ॥ ॐ ॥ १०९ ॥

ईस का स्वरूप देख ऋषि का मुदित होना ॥

चौपाई ॥ देवि स्वरूप ईस मन उमदि । जै भै जीह धन्य बानी वदि ॥
गौर कपूर तेज तन उद्वित । रिषि रोमंचित तव मन मुदित ॥
ॐ ॥ २१५ ॥ ॐ ॥ ११० ॥

मुदित मन उद्वित तन भारी । हरि वैकुण्ठ ईस मनचारी ॥
अबुद गिरि धरि ध्यान सु ईसं । करै काल तिहि काल जगीसं ॥
ॐ ॥ २१६ ॥ ॐ ॥ १११ ॥

वशिष्ट ऋषि का महादेव को नमस्कार करना ॥

साटक ॥ चैनैनं त्रिजटेव सीस त्रितयं । चैरूप चीसूलयं ॥
चदेवं त्रिदिशा त्रिभू त्रिगुनयं । त्रीसंधि वेदत्रयं ॥
चैरग्निं त्रयलच्छि काल त्रितयं । ग्रामं त्रयं चैवयं ॥
गंगा चै त्रिपुरारि भासित तनुं । सेयं नमः संभवे ॥

ॐ ॥ २१७ ॥ ॐ ॥ ११२ ॥

१०८-१०९ पाठान्तर-मंगहुं । जगहुं ॥ चलै और किति शब्दों के बीच में "ई" शब्द पाठ सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है और इधर के समय की लिखित पुस्तकों में है । धुर धुर । कीती । मुक्तीह ॥

११०-१११ पाठान्तर-उमदि । गौरक । पूर ॥

११२ पाठान्तर-त्रिजटेवसीस । त्रयलक्षिकाल । त्रितयंयाम ॥

प्रमथाधिपति ने आनन्दित होकर वर मांगने को कहा ॥

दूहा ॥ आनंदौ प्रथमाधिपति । वर ! वर ! बंदौ बानि ॥

रिषि मंगहु उतकंठ मन । सोइ समप्यौ आनि ॥

कं० ॥ २१८ ॥ ह० ॥ ११३ ॥

वशिष्ट ऋषि का नंदगिरि को अचल करने का वर मांगना ॥

दूहा ॥ फिरि रिषि जंष्यो संभु सेां । जो तुट्यौ मुक्त भास ॥

नग चलंतौ अचल करि । फुनि सज्जौ सिर बास ॥

कं० ॥ २१९ ॥ ह० ॥ ११४ ॥

सो आवू गिरि राज गुरु । सुर गिर सम सैलास ॥

त्रिपथ ताम मुनि देव का । बसि रु कियो कैलास ॥

कं० ॥ २२० ॥ ह० ॥ ११५ ॥

महादेव का पर्वत को अचल कर उस में अचल
नाम से विराजना ॥

कवित्त ॥ तव सु ईस मन मुदित । पानि चंष्यौ गिर गौरव ॥

अचल अचल कहि अचल । भयौ अचलेस गत तव ॥

सुथिर भयौ नग नंदि । अप्य सिर वास सु सज्ज्यौ ॥

उभय आय तिहि थान । सगन प्रमथाधिप रज्ज्यौ ॥

गिरि नंद नाम हेमच सुतन । अबुद नाग सु मित्र मन ॥

तिहि नाम त्रिविध भय तिश्य हर । पारस अप्पन अर्थ तन ॥

कं० ॥ २२१ ॥ ह० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ अचल नाम कहि अचल । अचल विद्या अभ्यासिय ॥

अबुद गिरि थिर घस्यौ । विद्यौ वानारस वासिय ॥

उदित नाम इक वरष । मुक्ति लम्भेति जगत गुर ॥

इदत नाम इक दीह । करु उपवास सोइ नर ॥

११३-११५ पाठान्तर-प्रथमाधिपति । बानी । समप्यौ ॥ ११३ ॥ मो । तुट्यौ । भग यास ॥ ११४ ॥
गुर । सं० १६४७ की में "मुदगिर सम सैलास" और सं० १७७० की में "सुर गिर सम सैलास" और
सं० १८५९ में "मेर समल सैलास" पाठ है ॥ त्रिपथा । ताव । सुनि बसि । रुकियौ ॥ ११५ ॥

११६ पाठान्तर-अव । प्रथमाधिपं । रज्ज्यौ । नम । तिथ । अथि ॥

वाना रभति वारानसिय । आवू अर्बुद उद्धरिय ॥
जट विकट जाल विम्भूति रंग । सुरग मुक्ति ढिग ढिग फिरिय ॥
६० ॥ २२२ ॥ ६० ॥ ११७ ॥

आबू को अचल देख कर वशिष्ट का प्रसन्न होना और अन्य ऋषियों को वहां यज्ञ के लिये बुलाय जय तप और वास करना ॥

पद्मरी ॥ अग अचल दिष्यि वाशिष्ट रिष्य । मन मुदित भयौ सम आय सिष्य ॥
हर वासदेव सब गुन समान । आवरन रिद्धि चित चित यान ॥२२३॥
आभासि सिष्य गौतमह तथ्य । अचस्यौ वास अनि रिष्य सथ्य ॥
आभासि रिष्य अनेक तान । संवोधि वेलि प्रथु प्रियुक्त नाम ॥२२४॥
देवलह असित अंबावि सूत्र । सौमित्र सय्य माली विभूव ॥
मह महन सनक जैनेय पैल । दालभ्य वक्क सुमंत अल ॥ २२५ ॥
दीपाय किल्ल थूलंसि राय । तैतरिय जअवक्री सुताय ॥
जैमनिय ध्रुव वैसंपायन । हर्षनह लोम असुहोत्र जान ॥ २२६ ॥
मंडय अरति कौसिकक दाम । उष्णीष चिवन पर्णाद वाम ॥
घटजात सुबल मोजायनेय । बलवाक परासर वायवेय ॥२२७॥
सचिवाक जात क्रन क्रन माल । सनिवाक क्रिताश्रम सुच्चि पाल ॥
सिषि वांसु पर्वत पारिजात । अगस्ति मारकंडे सुभाति ॥२२८॥
पाविच पानि सर्वन्य रभ्य । किरनाषकेत अगु अेष सभ्य ॥
जंघाव भालकी कोप वेग । गालम हरीय ब्रह्म अगेग ॥२२९॥
कौडिन बंध माजी सनक्क । सानंद सनातन कल वक्क ॥
सांडिल करंक वाराह पंग । कौमार अश्व हय घोष मंग ॥२३०॥
वेनीय जघन जघ नासकेत । कन्ह कलाप वक्रीव सेत ॥
अष्टाहवक उदालकेय । च्यवनह कपिल मातंग जेय ॥ २३१ ॥

११७ पाठान्तर-धर्यौ । वीयो । लभ्यौ । तिजगत । वानार । भंति । वानारसीय । उद्धुरीय । मुति ॥
११८ पाठान्तर-दिषि । वाशिष्ट । सिप । आर्यौ । प्रियुक्त । अंकवा । विसूत्र । सय्य । ध्रुव । हरय ।
नह । मंडप । कौसिक । उष्णीक । पनदिवाम । घट । जात । बाल । वाक । बालजाक । वाय । वेय ।
सचि वाक । क्रन । क्रनमाल । सनि । वाक । क्रिताश्री । सिषि । वांस । पर्वत । भाल । की । गाल ।
महि । रिय । कौडिन । सांडिल । वेनी । जय । घन । घना । सकेत । कन्ह । वसेत अष्टाह ।

माधव्व गरग अनेक रिष्य । आण सु अन्य तहां समह सिष्य ॥
 आह्वान मंच बल तप्प सय्य । सब देव रिष्य आण सु तय्य ॥ २३२ ॥
 कालिंद्र गंग सरसति आय । अनुसरिय बद्ध सब सोय ताय ॥
 ऊपधी सुब्ब मनि सुब्ब धात । वर वृष्य लता फल पुहप पात ॥ २३३ ॥
 जाजन्य जजन अधियन अध्याय । लग्गोसु करन रुचि रिष्य आय ॥
 आह्वान बान उचान जाप । लग्गो सु करन रुचि इष्ट ताप ॥ २३४ ॥
 जप होम मंच धारना ध्यान । आरंभ रिष्य लग्गो सु ग्यान ॥
 आराधि सकति आभासि ताम । खंचासु कीन गिर उंच धाम ॥ २३५ ॥
 आदरस रिष्य संवासु कीन । आश्रमम् अस्सु क्रम काज चिन्ह ॥
 जगनह जाप अध्याप होम । आराध उंच आयासु धोम ॥ २३६ ॥
 प्रीनंत देव सुब्बासु आय । सब मिले वंद वंदार काय ॥
 वीसेप मंच जंचं गुरेन । बंधे जु मंच कर आप देन ॥ २३७ ॥
 करि भल्लन देव देवल लहीव । विस्माह अमृत पावै सु पीव ॥
 अति धम्म क्रम्म इष्ये अनंद । आण सु निसाचर कलन मंद ॥ २३८ ॥
 भररंत रिष्य मंगिय कहुर । तिन समत भूमि षह नग्ग नूर ॥
 चित अचित पंच आभासि देह । रस दुग्ध सही पुढा अक्केह ॥ २३९ ॥
 के भयै वाय के ध्यान देव । जल दूध कंद मूलह सु केव ॥
 ॐ ॥ २४० ॥ ६० ११८ ॥

गाहा ॥ कंदं फलानि फलयं । कटुंतं मुनिय काल वेकालं ॥

एकोपि धार धरयं । संतोषं सर्व निधानं ॥

ॐ ॥ २४१ ॥ ६० ॥ ११९ ॥

संतोषं विना न लभ्यै । कल्पंतं राजनं सुखं ॥

जो संतोषं देहं । तौ सुषं इय मूल काम लया ॥

ॐ ॥ २४२ ॥ ६० ॥ १२० ॥

षक्र । उट्टाल । केय । च्यव । नह । मातंग । लेय । तहां । तथा । सय । देवरिष्य । कलिद्र । सरसति । ऊपधी । हव । अधनय । अध्याय । लग्गो । आय । लग्गो । धारनाध्यान आदर । सरिय । क्रम । अध्याय । सु । वास । लिले । विसेप । जंचं । अग्रत । इष्ये । भयै । कंध । सक्रेय ॥

११९-१२० पाठान्तर-कटुंतं । कालवेकालं । ए कोपि । संतोषं । सख्य । तिहाण ॥ ११९ ॥ संतोषन । विण । लभइ । कल पंतं । संतोषं । तौ ॥ १२० ॥

यज्ञ का अनुष्ठान सुन कर राक्षसों का एकत्र हो आना ॥

दूहा ॥ जंत्रकेत दानव दुसह । अरु रष्यस धुमकेत ।

अप्य सथ्य लीने सकल । आण दुष्टह हेत ॥

कं० ॥ २४३ ॥ ह० ॥ १२१ ॥

ऋषियों का अनलकुंड रचन कर ब्रह्म कर्म प्रारंभ करना ॥

कवित्त ॥ आवू करि रिषि जग्य । मंत्र कारन सु मंत्र जपु ॥

पंड ह्यथ्य नर उंड । अष्ट अंगुल ऊर्द्ध वपु ॥

ह्यथ्य तीन अरु अड्ड । मंडि चवकून समा सम ॥

स्वप्य समति सम कियौ । फनति वचयौ देव क्रम ॥

अग्निनेव थान अग्निनेव धर । वाय कुंड दष्यिन दिसा ॥

नैरत निवर्त धज मंडि कै । ब्रह्म क्रम्म लग्गे रिसा ॥

कं० ॥ २४४ ॥ ह० ॥ १२२ ॥

दैत्यों का ऋषियों के यज्ञ में विघ्न करना ॥

कवित्त ॥ पंच पर्व्व जग्योपवीत । पंच पव्वां अधिकारिय ॥

देवो मुनि दुजराज । वैश्य शूद्रह चितकारिय ॥

चर विडाल पशु स्लेक । क्रंम चंडाल घंड करि ॥

दूह प्रमान दस विधि * सुक्रम । जगग मंडे सुमंडि हरि ॥

दानव सु दुष्ट दुष्टंसु क्रम । दुष्ट ऋच वरिषा करै ॥

पसु मंस रुधिर नषे सु जल । क्रंम विप्र संमुह डरै ॥

कं० ॥ २४५ ॥ ह० ॥ १२३ ॥

चौ बेदी चौ विप्र । गीत गायत्र मंत्र जप ॥

ता मंड्यो घन विघन । करै आरिष्ट असुर कुप ॥

१२१ पाठान्तर-यंत्रकेत । राषेस । धुमकेत । अप । सथ । अहेत ॥

१२२ पाठान्तर-आवू । रिष्यि । तप । हथ । वर । उरट्टु । वप । अर्द्ध । संमति । स्वप । कीयो । बंचयो । अग्निनेव । आगे । नेत्र थान । अग्नि । नेव । वाइ । कुंड । दपिन । किसा रसा ॥

१२३ पाठान्तर-जग्योपवीत । जुग्योपवीत । सं १६४७ और १७७० की पुस्तकों में यह पाठ है "दूह विधि प्रमान दस विधि सुक्रम" । जंग । जग । सुमंडि । सुदुष्ट । दुष्ट । सुक्रम । वसु । मंसु । सुजल । क्रम । समुह ॥ * विधि विशेष है ॥

१२४ पाठान्तर-गाइत्र । मंडय । मंडे । पर्यंत हलावे । मोहिनी । रूप कबहिक धरै । नदृष्टिं । कथक । वै । "वै हयिन तालि न धरै" भी सं. १६४७ की में पाठ है । हय्यं ।

कवक भूमि हल्लवै । कवक पर्वत हल्लवै ॥
 अग्नि वृष्टि कव करै । कवक बुल्लै बुल्लवै ॥
 मोहनी रूप कवहुक करै । कवक सिंघ नदह करै ॥
 तुषणीक रहै गावै कवहु । बे हथ्यो तालह धरै ॥

कं० ॥ २४६ ॥ ह० ॥ १२४ ॥

ऋषियों का संतापित होकर वशिष्ठ के पास जाय पुकारना ॥

दूहा ॥ दिष्वि रिष्य मंडी सु रिध । जग्गिन होमह जाप ॥
 ताहि विगारन मन मुदित । लगे सकल संताप ॥

कं० ॥ २४७ ॥ ह० ॥ १२५ ॥

पद्धरी ॥ रज वृष्टि उपल त्रिन नंघि थान । चासना बीर पधु लगि भयान ॥
 रिष गये सब्ब वाचिष्ट पास । रष्यसन कछौ मंड्यौ विनास ॥ २४८ ॥
 रिष राज दुष्ट बध चिंत आय । कंड्यौ जजन्न बल मंच भाय ॥

कं० ॥ २४८ ॥ ह० ॥ १२६ ॥

**जिस पर वशिष्ठ का प्रतिहार चालुक्य और पँवार को
 प्रगट करना ।**

कवित्त ॥ तव सु रिष्य वाचिष्ट । कुंड रोचन रचि रचि तामह ॥
 धरिय ध्यान जजि होम । मध्य वेदी सुर सामह ॥
 तव प्रगथ्यौ प्रतिहार । राज तिन ठैर सुधारिय ॥
 फुनि प्रगथ्यौ चालुक । ब्रह्मचारी व्रत धारिय ॥
 पांवार प्रगथ्या बीर वर । कछौ रिष्य परमार धन ॥
 चय पुरष जुद्ध कीनौ अतुल । मह रष्यस पुहुंत तन ॥

कं० ॥ २५० ॥ ह० ॥ १२७ ॥

१२५ पाठान्तर-दिष्वि दिष्वि । दिषि दिषि । दिषि । दिषि । लगे । संताप । मंताप ॥

१२६ पाठान्तर-लगिन । यान । सब । सर्व । राष्यसन । राषिसन । बध । चिति ।
 जजन । बलं ॥

१२७ पाठान्तर-रिषि । वासिष्ट । रावेता । तहिं । ध्यान । मध्यवेदी । सरसा । महि ।
 प्रिगथ्यौ । परिहार । राह । चालुक । सं. १६४७ में "ब्रह्म दिन चाल सुमारिय", सं. १८५६ की में
 "ब्रह्म तिन चाल सुमारिय" पाठ हैं । रष्य । रष । पंमार । घनु । धनु । रषस । तनु ॥

तथापि राक्षसों का उपद्रव शमन न होना ॥

मलया ॥ कारयं जग्य बंभान निमानयं । रच्चियं कुंड पंडं धिरं थानयं ॥

आसनं दिव्य देवान आह्वानयं । आसुरं कीन उच्चिष्ट जथानयं ॥

कं० ॥ २५१ ॥ छ० ॥ १२८ ॥

तब वाशिष्ठ का स्वयं कुंड रचन कर यज्ञार्थ बैठना और चिंतवन करना ॥

दूहा ॥ जब वाशिष्ठ जग्य कजि । सजि कुंडह सुभ थान ॥

तब आसुर अन संक से । क्रिय उच्चिष्ट उतान ॥

कं० ॥ २५२ ॥ छ० ॥ १२९ ॥

कवित्त ॥ तब चिंतिय वाशिष्ठ । एह आसुर अविचारिय ॥

जग्य जीह उच्चिष्ट । करै कातर क्रत हारिय ॥

सुरन अस संग्रहे । हवै नह हव्य हुआवह ॥

सो उपाव संचियै । जो * थाहि संवरै असुर सह ॥

निर्म्यौ सु सूर संग्राम भर । अरि अलंघ पंडन सु षल ॥

सम धरहि जग्य कारन सकल । विमल सिष्ट सोभै सयल ॥

कं० ॥ २५३ ॥ छ० ॥ १३० ॥

अरिह ॥ अघट घाट रिषि इषि निसाचर । पंरिसि चार धरि ध्यान ग्यान वर ॥

चिंतिय ब्रह्म करम किहि कामह । भयौ रूप रिषि ब्रह्म सुतामह ॥

कं० ॥ २५४ ॥ छ० ॥ १३१ ॥

१२८ इस रूपक के छंद का नाम जो चंद्र ने मलया प्रयोग किया है वह सावणी नामक चार रगण का छंद है ॥

पाठान्तर-बंधाननि । मानयं । रच्चियं । आह्वानयं । उच्चिष्ट ।

१२९ पाठान्तर-वाशिष्ठ । सुथानं । अनं ।

१३० पाठान्तर-चितिय । जिष्ट । जिह । करै । हवै न हव्यहु आवह । संग्राम । पंडं । समं । सोभै ॥ (जो *) विशेष है ॥

१३१ पाठान्तर-ईषि । निसाचरं । वरं । ब्रह्मकरम ॥ सं० १७७० की पुस्तक में "ग्यान" शब्द नहीं है ॥

वशिष्ट का चाहुवानजी को उत्पन्न करना ॥

कवित्त ॥ अनल कुंड किय अनल । सज्जि उपगार सार सुर ॥

कमलासन आसनह । मंडि जग्योपवीत जुरि ॥

चतुरानन स्तुति सह । मंत्र उच्चार सार किय ॥

सु करि कमंडल बारि । जुजित आव्हान थान दिथ ॥

जा जनि पानि श्रव अहुति जजि । भजि सु दुष्ट आव्हान करि ॥

उपज्यौ अनल चहुवान तव । चव सु बाहु असि बाह धरि ॥

ॐ ॥ २५५ ॥ ६० ॥ १३२ ॥

दूहा ॥ भुज प्रचंड चव चार मुष । रत्त व्रन्न तन तुंग ॥

अनल कुंड उपज्यौ अनल । आहुवान चतुरंग ॥

ॐ ॥ २५६ ॥ ६० ॥ १३३ ॥

ऋषियों का चाहुवानजी का स्वरूप देख कर उन को

चाहुवान कहना । उन को राक्षसों से युद्ध करने की शक्ति देने
को आशापूरा देवी का स्मरण करना । देवी का प्रत्यक्ष होकर
चाहुवान जी को राक्षसों से युद्ध करने में सहायता देना । राक्षसों

का रसातल को जाना । देवी का चाहुवान जी को अपनी कुल
देवी मानने की आज्ञा करना और उन का अपने वंश भर की
कुल देवी मानना स्वीकार करना । देवी का उन को वर देकर

पधारना । वशिष्ट का चाहुवान जी का आशीर्वाद देकर अन्य
अनलों का वर्णन करना और दुर्वासा को शाप देकर पठाना ॥

बाधा ॥ उपज्यौ अनल अनूपम रूपं । नहि आकृति अवर नर रूपं ॥

व्रंन अभूत सु उन्नत जिष्टं । वृंदन भर कि वद्ध मनु पिष्टं ॥ ॐ ॥ २५७ ॥

१३२ पाठान्तर-अनलकुड सज्जि । मंडि । जग्योपवित । आहुवान । जाजाने । आव्हान ।
उपज्यौ । चहुवान ॥ पुरातत्त्ववेत्ताओं के स्मरण में रहै कि प्रायः यह कहा जाता है कि अग्निमुनीं
की कब उत्पत्ति आवू पर हुई उसका कोई पौराणिक प्रमाण भी नहीं मिलता । अतएव हम एक
यह प्रमाण विदित करते हैं कि कालिंदिका प्रकाश नामक ग्रंथ में पुराणेभ्यः यह श्लोक लिखा है-

श्लोक ॥ दूषयिष्यन्ति यवना, सहस्राब्दे गते कलौ ।

तदा रत्वां करिष्यति, याचिकाः तच्चिर्यभाः ॥

१३३ पाठान्तर-रत । व्रन । वन्न ।

स्याम रोम कपोल विसालं । उन्नित कंध कृतिय दूसालं ॥
 लाल माल सोभै उर सोभं । मथु प्राकृष्ट दिच्छ कर दौभं ॥ कं० ॥ २५८ ॥
 नयन प्रथुज भ्रुकुटी सु कहरं । मुख आकृति बाल हर नूरं ॥
 कवच चो न उर चान सरीसं । दल आकृति भयानक दीसं ॥ कं० ॥ २५९ ॥
 तोन पूरि सर बद्धि सु कासं । धरिय पांन सरवी रवि रासं ॥
 षेटक षगग उनंगी धारं । चाहिवान दिष्यो रिप सारं ॥ कं० ॥ २६० ॥
 चाहि आइ रिषि आइ समंगे । चहुआन कहि सद सुरंगे ॥
 सरुरी सकति रिषि गिर वासी । दिय साहाय युद्ध कजि तासी ॥ कं० ॥ २६१ ॥
 आइ सकति सिंघ आरोही । दादस भुजा सु आयुद्ध सोही ॥
 षेटक षगग बरदह पासं । घंटा बान कती सिर आसं ॥ कं० ॥ २६२ ॥
 षप्पर सकति शूल मद पाचं । देषे रूप क्रम क्रम काचं ॥
 आसा पूरि कहे रिषि राजं । चाहवान मंडी कत काजं ॥ कं० ॥ २६३ ॥
 चाली सकति सहार अनखं । बखे सूर सवै कसि बखं ॥
 सब आए कठि रषस ठानं । मंडौ जुद्ध सवै असमानं ॥ कं० ॥ २६४ ॥

१३४ इस रूपक के छंद २५७ के पाठ में बड़ा गड़बड़ है । एशियाटिक सोसाइटी बंगाल की छापी हुई पुस्तक में “उपज्यौ अनल अनूपम रूप । नहि आकृति अवरन रूपं ॥ वन अभूत सु उन्नत जिष्टं । वंदन भर कि बहुम नुपिष्टं” ॥ और स० १७७० की पुस्तक में “उपज्यौ अनल अनूपम स्तपं । महि आकृति अवरम रूपं । वंत अभूत असु उत्तमा जिष्टं । वंदन भरकि बहु मन मिष्ट” और संवत् १७४७ की में “उपज्यौ अनल अनूपम रूपं । नहि आकृति अवरम स्तूपं । वत अभूत असु उन्नत जिष्टं । वंदन भरा के बहु मन पिष्ट” ॥ किन्तु हमारा पाठ कर्नैल टाड साहब के गुरु वारहट कृष्णसिंहजी ने जिस सं० १८५९ की पुस्तक से रासो पढ़ा था उसके अनुसार है ॥ इस में “दूपं” शब्द हमारे पाठकों को अर्थ करते समय परिश्रम देगा क्योंकि जिस संस्कृत शब्द “दूप” का यह अपभ्रंश हिन्दी है वह संस्कृत के अच्छे विद्वानों के पढ़ने में भी उस का बहुधा प्रयोग न होने के कारण बहुत ही कम आया होगा और वह वाचस्पत्यवृहदभिधान और शब्दार्थचिन्तामणि जैसे बड़े कोशों में भी नहीं मिलेगा परन्तु प्रोफेसर विलसन साहब के कोश में मिलेगा । वे इसको त्रिलिंग में strong अर्थात् बलवान अथवा पुष्ट का वाचक लिखते हैं ॥

पाठान्तर—उन्नित । उन्नित । उन्नत । दुसालं । प्राकृष्ट । दिच्छ । आकृति । बालहर । आकृति । सरि वीर विरासं । उनंगी । चाहि । बान । गिरवासी । बरदह । कर्ता । क्रम । मंडौ । सहार । ठानं । आवटि । धुमकेत । सकतिय सहतिय । अध । पास । तास । तद्ध । प्रसनिय । यष्ये । नाम । ताम । संवत् १६४७ और संवत् १७७० की में “धास्यो कर सिर लै चहुवान” पाठ है । धर्यो । चाहवान । ब्रधुह । वंस । मान । चहुवान । असमान । गई । हे है । चहुवानं । उपज्जि ।

बाहै आवधि सकती सारं । धड आवट्टि पडै धर भारं ॥
 सड्डे धुमरकेत सकतीयं । जंजकेत चहुआन सु * हतीयं ॥ कं० ॥ २६५ ॥
 अड्ड सु रष्यस दानव सड्डे ॥ गए रसातल नट्टे अड्डे ॥
 देवी आड्ड अनल्लह पासं । जंपी तथ्य प्रसन्नी तासं ॥ कं० ॥ २६६ ॥
 आसापूर कहै मो नामं । पुज्जै पुत्र पौत्र परिनामं ॥
 कुलह गोत्र भुक्त थप्यै नामं । अप्पों रिद्धि अचल्लह तामं ॥ कं० ॥ २६७ ॥
 धाल्यौ सिर लै कर चहुवानं । ब्रड्डहु बंस अंस जस मानं ॥
 जीती अप्य देवी चहुवानं । दिय वर दान गई असमानं ॥ कं० ॥ २६८ ॥
 गड्ड असमान कियौ सद भारी । धुं ! धुं ! कार जै ! जया सारी ॥
 है ! है ! करि हं ! हं ! चहुवानं । अनल कुंड उपजे परिमानं ॥ कं० ॥ २६९ ॥
 चौ मुष्यौ चौ वेद प्रकारं । औसो मुष देष्यौ अधिकारं ॥
 वेदं स्याम अथर्वन रूपं । रिगु जिजु वेद देव गुन नूपं ॥ कं० ॥ २७० ॥
 चित चमकार चिहूं दिसि लग्गिय । पढत ताहि ब्रह्मंड सु जग्गिय ॥
 बानी धुनि मुनि हरषि वसीसं । वर बचिष्ट तहां दई असीसं ॥ कं० ॥ २७१ ॥
 तोहि बंस होड्ड कुंडल धारी । जनु कि अर्क राका विस्तारी ॥
 थुति करि सेव देव तिहि पानं । जै जै तप्य जिते चहुवानं कं० ॥ २७२ ॥
 परिहरि वीर वीर नर केकं । तिहि चालुक्क भयौ गुन मेकं ॥
 परहरि वर पावार ति वारं । क्रोध रूप जाजुल्य निधारं ॥ कं० ॥ २७३ ॥
 जाजुल्लति परिहार न दिष्यो । षिजि करि विप्र पौरि सह रष्यौ ॥
 तिन कारन वाचिष्ट रिषीसं । अबुद नाम गिरि नंद जगीसं ॥ कं० ॥ २७४ ॥
 ता ऊपर दुरवासा आए । दै सराप वाचिष्ट पठार ॥
 अव वे दानव दुष्ट सु दावै । तो रष्या चव कुली सु रावै ॥ कं० ॥ २७५ ॥
 बंस क्तीस गनीजै भारी । चार कुली कुल तिन अधिकारी ॥
 सब सु जात जोनी मग दिष्यिय ए ब्रह्मा अविसेप विसिष्यिय ॥

॥ कं० ॥ २७६ ॥ हू० ॥ १३४ ॥

चिहू । पठ्य । हरषिष । सीसं । वशिष्ट । रासा । तप । नरकेकं । तिवारं । पारहारन । तहं ।
 उपर । रष्य । क्तीस । गति । जै । जेती । (सु *) विशेष है ॥

क्षत्रियों के छत्तीस बंशों की नामावली ॥

कवित्त ॥ रवि ससि जादव वंश । ककुस्थ परमार सदावर ॥

चाहुवान चालुक । छंद सिलार आभीयर ॥

दोय मत्त मकवान । गरुअ गोहिल गोहिल पुत ॥

चापोत्कट परिहार । राव राठौर रोस जुत ॥

देवरा टांक सैधव अनिग । योतिक प्रतिहार दधिपट् ॥

कारटपाल कोटपाल हुल । हरितट गोर कलाप मट ॥

कं० ॥ २७७ ॥ ह० ॥ १३५ ॥

दूहा ॥ धन्यपालक निकुंभ वर । राजपाल कविनीस ॥

काल कुरकै आदि दै । वरने वंस क्तीस ॥

कं० ॥ २७८ ॥ ह० ॥ १३६ ॥

चारों अग्निकुल क्षत्रियों ने वशिष्ठ का यज्ञ निर्विघ्न किया ॥

कवित्त ॥ पठन मंत्र रिष जाप । चार षित्री उप्पाए ॥

कुचिल दीन परिहार । पौरि रहु सत भाए ॥

१३५-३६ पाठान्तर-यादव । परमार-र । तांवर । चालुक । छिंद । छंदक । आभीवर ।
गुरुअ गोह । गही भुत । राठौर । सिंधव । अनग । अनंग । योतिक । प्रतिहा । दधीपट । करेटपाल ।
हुन । हरीतट । गोरक । भाड । जट ॥ १३५ ॥ ध्यानपालक । ध्यान पालकनि । कुंभ । कविनीस ।
द्वै । छत्तीस ॥

कवि चंद्र के समय में जो छत्तीस कुल क्षत्रियों के प्रसिद्ध थे उनके नाम उसने वर्णन किये
हैं अर्थात् रवि-सूर्यवंशी १ ससि=चंद्रवंशी २ जादव=यदुवंशी ३ ककुस्थ=कछवाहे ४ परमार ५
सदावर=तांवर ६ चौहान ७ चालुक=सोलंकी ८ छंद=रादेल ९ सिलार १० आभीयर ११ दोयमत्त=
दाहिमा १२ मकवान १३ गोहिल १४ गहिलोत १५ चापोत्कट=चावडा १६ परिहार=पठियार १७
राठौर १८ देवडा १९ टांक २० सैधव=सिधव २१ अनिग=अनग २२ योतिक २३ प्रतिहार २४
दधिपट २५ कारटपाल=काठी २६ कोटपाल २७ हुल=हुन, हुण २८ हरितट=हाडा २९ गोर=
गोड ३० कलाप=कमाड, जेठपा ३१ मट=जट ३२ ध्यानपालक वा धान्यपालक ३३ निकुंभ ३४
राजपाल ३५ कलकुरकै=कालकर ३६ । इन के विषय में कवि दलपत रामजी अपने जाति निबंध
नामक ग्रंथ में लिखते हैं कि रत्नकोश नामक संस्कृत ग्रंथ की टीका में लिखा है कि क्षत्रिय कुल
का आदि पुरुष मनु उसके वंश में से थे छत्तीस हुए हैं ॥

सं० १६४७ और सं० १७७० की पुस्तकों में इन रूपकों के स्थान में रूपक १३७ और उस के
स्थान में इन को लिखा है अर्थात् उलट पुलट हैं । हम ने उनका क्रम इस लिये ग्रहण नहीं किया
है कि रूपक १३४ के छंद २७६ की पहिली तुक का अर्थ उसके पीछे इन रूपकों का ही होना
प्रकाश करता है ॥

चतुर बीर चहुवान । चार मुष्यौ चौवाहं ॥
 अष्ट अत्र आरिष्ट । देव चारिष्ट सु साहं ॥
 पंमार वाह धन धन करह । कछ्यौ रिष्य परमार धन ॥
 चालुक्य वाह चालुक्य दुज । कुसित कुसन मंडित तन ॥
 कं० ॥ २७९ ॥ हू० ॥ १३७ ॥

अनल कुंड आभंग । उपजि चौहान अनिल थल ॥
 सुकर संठि करि वार । धनुष संग्रह्यौ बान बल ॥
 तिन रष्यिस परिवार । धार सुष धरनि नि घट्टिय ॥
 षल जुषित्त संमुहे । तिनह सिर सरअन तुट्टिय ॥
 बंभान जग्य निर विघन किय । पुहप वृष्टि सुर सीस रजि ॥
 रष्य सु धरनि षग भुज्ज वर । रिष्ट निवारिय इष्ट भजि ॥
 कं० ॥ २८० ॥ हू० ॥ १३८ ॥

जिन्होंने द्विजेों की रत्ना की उनके वंश में पृथ्वीराज हैं ॥

दूहा ॥ तिन रत्ना कीनी सु दुज । तिहि सु वंस प्रथिराज ॥
 सो सिरषत पर वादनह । किय रासो जुविराज ॥
 कं० ॥ २८१ ॥ हू० ॥ १३९ ॥

चाहूवानजी के वंश के राजाओं की कथा ॥

—३३३३३३३३—

चाहूवानजी से माणिकराजजी पहिले तक तेरह पीढ़ी का वर्णन ॥
 पढ़री ॥ ब्रह्मान जग्य उतपन्न मूर । चहुवान अनल अरि मलन सूर ॥
 उत्तंग अंग प्रचंड वाह । पशुमीस इंद्र अरि गिलन राह ॥ कं० ॥ २८२ ॥
 प्रतिपाल धरनि अंगह सु भ्रम । अत मान कीन उत्तंग क्रम ॥
 रत्तो सु जोग भव भोग रास । पुर अमर नाग नर किति जास ॥ कं० ॥ २८३ ॥

१३७-१३८ पाठान्तर-जाय कुलिल । चहुवान । मुष्यौ । सुसाहं । वाह । रिषि । पंमार ।
 मंडि । ततन ॥ १३७ ॥ कुंद । चौहान । रष्यि । सपरिवार । मुप । निघट्टिय । जुषित । निरविघन ।
 भुज्जवर ॥ १३८ ॥

१३९ पाठास्तर-रष्या । तिहिं । पृथ्वीराज । पृथिराज । प्रवादनह ॥

१४० पाठान्तर-ब्रह्मान । उत्पन्न । चहुवान । मल । मसूर । उत्तंग । पशुमीसु । इंद्र
 अरिगिलन । धरनी । अंग । अतमान । उत्तंग । रत्तो । सुजोग । भास । किति । तामू । अन । सु ।
 धन । माहंत । संका । विडार । मानिक । राजत । सु । अन । माह । भूत । भयंकर । रत ।

ता सुअन सूर सामंतदेव । अरिमंत मत्त मत्ता जु रेव ॥
 महदेव सुअन मोहंत तास । सु प्रसन्न ईस सेवंत जास ॥ कं० ॥ २८४ ॥
 वर अजयसिंह सिंध सु राम । नर वीरसिंह संग्राम ताम ॥
 सुअ बिंदसूर उदारहार । आसोक श्रीय संकाविडार ॥ कं० ॥ २८५ ॥
 सुअ बैरसिंह वैरी विहंड । शुभ वीरसिंह अरि वीर डंड ॥
 अरिमंत सकल कलि कलनचूर । मानिक राव चहुआन सूर ॥ कं० ॥ २८६ ॥
 महिसिंहजी से धर्मधिराजजी तक का वर्णन ॥

राजत्त * सुअन ता सहस मथ्य । महसिंह सिंध संग्राम पथ्य * ॥

सुअ चंद्रगुप्त सम चंद्ररूप । प्रतापसिंह आरेन दूप ॥ कं० ॥ २८७ ॥

नूप । तत । पूर । बालन । प्रथम । जग । दुप । पहु । मंह । रत । कोडी । कियो । चल्थो । प्रमान ।
 मान । थान । चल्थो । मुकजो । मुक्यो । निगम । मुक्यो । जित । किति । चौसठि । चित । पायो ।
 जंम । बिष । जंम । कदम । कदम । दानेवसल । थान । स । आनि । उगत । उगत । उतग ।
 पुकस्था । जरन जाहुजाहु । जाह जाह । इन्द । सं० १७७० और १६४७ में "नैर पुर सद्र डरि हक
 बजि । मानि । जज्जरी । जज्जरीय । पांनि । लगे । डके । सुहूप । मृग । सर्प । अय । अय । सद । पुज ॥

* * पक्षपात रहित वृद्ध और विद्वान कवि कहते हैं कि यहां अर्थात् छंद २८२ और २८७ के बीच में कितनेक छंद लोप हो गये है किन्तु चंद कवि ने तौ मूल पुरुष श्री चाहुवानजी से लेकर पृथ्वीराजजी तक पीठावली वर्णन की थी जिनको सब ऐतिहासिक ग्रंथ और सर्वसाधारण मनुष्य हिन्दुओं का अतिम बादशाह होना प्रकाश करते और मानते हैं । और क्वचित् चंद्र का नाम विध्वंस करनेवाले यह कहते हैं कि ग्रंथकर्ता ने अपने अज्ञात होने के कारण खंड विखंड वंशावली वर्णन की है । इन दोनों सम्मतियों में से हम पहिली से सम्मत हैं क्योंकि प्रथम तौ चंद कवि अपने वंश परंपरा से इस राजकुल का मुख्य कवि और ख्यात वर्णन करनेवाला था और यह कदापि संभव नहीं है कि आज तौ हम चौहान वंश की शुद्ध अथवा अशुद्ध पीठावली जान सकें और हम से सात सौ वर्ष पहिले जो उक्त राजकुल का निज कवि हुआ वह न जानता हो और न वर्णन करे । दूसरे चाहुवान वंश की पीठावली जो श्रीमान श्री बूंदी राव राजाजी महोदय ने निश्चय कराया है और जो एक चाहुवान वंश मात्र की पीठावली हम भी सन् १८७३ से सिद्ध कर रहे है और वह बूंदीवाली से विशेषांश में मिलती हुई है । उन दोनों के अनुसार श्री चाहुवानजी से पृथ्वीराजजी एक सौ सत्तरवीं १७७ पीठी में हुए सिद्ध होते हैं । अब यहां सूक्ष्म बुद्धि से विचार कर देखने की बात है कि छंद २८२ से २८६ तक में जो तेरह १३ नाम क्रम से कवि ने कहे है वे उक्त दोनों वंशावलियों से बराबर मिलते हैं और "राजत्त सुअन ता सहस मथ्य" का अर्थ इन प्रथम माणिक्यराजजी के विषय में घट नहीं सकता क्योंकि इतना वंश यहां तक बढ नहीं सकता । इस के सिवाय जो पाठक चाहुवान वंश की इस परम प्रसिद्ध कथा को जानते होंगे कि तीसरी पीठी में महादेवजी (जिनका उपनाम परभंजनजी भी है) के हाथ से अनजाने प्रमति ऋषि की एक गाय मर गई थी कि जिस पर ऋषि ने शाप दिया था कि "तुमारा वंश नाश हो" तदनन्तर ऋषि को

सुत मोह सिंध बर मोह रूप । भूतह भयंक रन रत्त भूप ।
 सुत सेनराइ वह सेन वंत । संप्रति राइ सुभ तत्त मंत ॥ कं० ॥ २८८ ॥
 सुअ नागहस्त सम नाग राज । अस्थूल नंद अनंद राज ॥
 गिर लोहधीर सुत धम्मसार । सुअ वीरसिंध संकाबिडार ॥ कं० ॥ २८९ ॥
 सुअ बिवुधसिंध सम जोगसूर । जस चंद्राय बर अजस दूर ॥
 सुत किस्नराज जस किल चिंत । हरहरहराइ नर बुद्धिमंत ॥ कं० ॥ २९० ॥
बालन्न राइ बलि अंग तास । सुअ प्रथव राइ पहुमी प्रवास ॥
 तिन अनुज अंग राजत अनेय । कलि अलप आउ कित्ती अकेय ॥ कं० ॥ २९१ ॥
धर्माधिराज रति जोग भोग । षट षुंठ षित्ति षगह सु भोग ॥

मनाने पर उन्होंने अपराध तमा कर के कहा कि कितनीक पीढ़ियों तक तौ तुम्हारे वंश में एक एक ही पुत्र होता रहैगा फिर वंश बढ़ैगा । इस से भी इस तुक का अर्थ माणिकराजजी में नहीं घट सकता ।

तथा उक्त दोनों पीढावलियों को इस रूपक के साथ मिलाने से यह भी ज्ञात होता है कि छंद २८७ से अर्थात् उस में कहे महिसिंहजी एक सौ अड़तालीसवों पीढ़ी में हुए और उन से फिर सब नाम बराबर क्रम से एक सौ सत्तरवें पृथ्वीराजजी तक मिलते हैं । क्या अब जो चौदहवों पीढ़ी से एक सौ सैंतालीसवों पीढ़ी तक के बीच के नाम वह भी क्रम से चंद कवि बिलकुल ही नहीं जानता था अथवा क्या वह उनको निगल कर परलोक में जा बैठा है ? जो कि हमारी वृत्ति सदैव प्रत्येक विषय के अनुकूल अनुमान करने और उस के साधर्म्य को मान्य करने की है इसलिये प्रतिकूल अनुमान ही क्यों करें और वैधर्म्य की ओर क्यों दृष्टि डालें । क्योंकि जो आज विद्वान लोग अन्य बड़े बड़े प्रसिद्ध ग्रंथों के विषय में ऐसे ही प्रतिकूल ही अनुमान करने लग जावें और वैधर्म्य का ही आश्रय कर लें तौ बड़ा अनर्थ हो जाय । अब हम चौदहवों पीढ़ी से एक सौ सैंतालीसवों पीढ़ी तक के नाम अपने तथा बूंदी राज्य के शोध किए हुए हमारे पाठकों के जानने के लिये यहां लिखते हैं । पुष्करजी (विजयपालजी) १४ असमंजसजी १५ प्रेमपूरजी १६ भानुराजजी १७ मानसिंहजी १८ हनुमानजी (धर्मपाल) १९ चित्रसेनजी २० शंभूजी २१ महासेनजी (चट्टीशजी) २२ सुरथजी २३ रुद्रदत्तजी (कर्णपालजी) २४ हेमरथजी (रोमपालजी) २५ चित्रांगदजी २६ चंद्रसेनजी (चित्ररथजी) २७ वाल्मीकजी (वस्तराजजी) २८ धृष्टद्युम्नजी (वसुधजी) २९ उत्तमजी ३० सुनीकजी ३१ सुबाहुजी (मोहनजी) ३२ सुरथजी ३३ भरथजी (मद-सेनजी) ३४ सत्यकीजी (सात्यकजी और सत्विकजी) ३५ शत्रुजित्जी (केसरीदेवजी) ३६ विक्रमजी ३७ सहदेवजी (इन को जीतकर कुशवंशी राजा ने दिल्ली ले ली) ३८ वारदेवजी (भीमसे-नजी) ३९ वसुदेवजी ४० वासुदेवजी ४१ रणधीरजी ४२ शत्रुघ्नजी ४३ सुमेरुजी (शालिवाहनजी) ४४ हतधर्माजी ४५ सुवर्माजी ४६ दिव्यवर्माजी ४७ यौवनाश्वजी ४८ हरियश्वजी ४९ अत्रैपालजी (अजमेर बसानेवाले) ५० भटदलनजी ५१ अनंगराजजी ५२ भीमजी ५३ गोगाजी ५४ शुभकरथजी ५५ उदयकरणजी ५६ जशकरणजी ५७ हरीकरणजी ५८ कीर्तीशजी ५९ बालकृष्णजी ६० हरिकृष्णजी

वीसल देव जी का वर्णन ॥

जग दुष्प वीसल नरिंद । बहु पापरत्त द्रव्यान अंध ॥ कं० ॥ २८२ ॥
 क्रत अक्रित काम कित्तव सु कीन । जिन असुर घोर पनि द्रव्य लीन ॥
 संसार थागि फुनि द्रव्य काज । उपजाइ मत्ति अजमेर राज ॥ कं० ॥ २८३ ॥
 कौडी सु मोल गज कियौ एक । लीयो न किनव फिरि सहर नेक ॥
 कामंध अंध सुभ्यौ न काल । चक अचक जोरि गिरि इक्क माल ॥ कं० ॥ २८४ ॥
 चल्यौ न राजनीतव प्रमान । आनीत बंधि न्नप थान थान ॥
 सुभ्यौ न भ्रम चाल्यौ प्रमान । मुकजौ निगम करि अगममान ॥ कं० ॥ २८५ ॥
 अबलोव कोव कंडिय सु कित्ति । मुक्कयौ भ्रम आभ्रम जित्ति ॥
 दरबार अतिथ दीसै न कोइ । अप्प सुह कित्ति संभरै लोइ ॥ कं० ॥ २८६ ॥
 चौसठ्ठि बरस बर राज कीन । पायौ न पुत्र फल सुष्प हीन ॥
 बल अबल चित्त चिंत्यौ सुकाल । पायौ न सुक्रत ककु करन साल ॥ कं० ॥ २८७ ॥
 गति अंत सुमति सो होइ बीर । पावै सु जन्म जजर सरीर ॥
 द्रवि गयौ सुमन वीसल नरिंद । उप्पनौ बीर कित्ति वीष्प कंद ॥ कं० ॥ २८८ ॥
 धन मदन सदन भरि सुब्ब जन्म । तिह परत उठि क्रत्या कदम ॥

६१ रामकृष्णजी ६२ बलदेवजी ६३ हरदेवजी ६४ भीमजी ६५ सहदेवजी ६६ रामदेवजी ६७ वसुदेवजी
 ६८ श्यामदेवजी ६९ हरिदासजी ७० महीधरजी ७१ वामदेवजी ७२ श्रीधरजी ७३ गंगाधरजी ७४
 महादेवजी ७५ शारंगधरजी ७६ मानसिंहजी ७७ चक्रधरजी ७८ शत्रुजितजी ७९ हलधरजी ८०
 महाधनुजी ८१ देवदत्तजी ८२ दामोदरजी ८३ काशीनाथजी ८४ लीलाधरजी ८५ धरणी धरजी ८६
 रामेशजी ८७ भगवतदासजी ८८ कृष्णदासजी ८९ शिवदासजी ९० हरिपूर्णजी ९१ देवीदासजी ९२
 कर्मचंद्रजी ९३ रामदासजी ९४ महानन्दजी ९५ विष्णुदासजी ९६ महारामजी ९७ रेवादासजी ९८
 अमरसिंहजी ९९ गंगादासजी १०० मानसिंहजी १०१ विश्वंभरजी १०२ मथुरादासजी १०३ द्वारिका-
 दासजी १०४ माधवजी १०५ सुदासजी १०६ वीरभद्रजी १०७ गोपालजी १०८ गोविन्ददासजी १०९
 माणिक्यराजजी दूसरे (इन के दो पुत्र बड़े हनुमानजी और छोटे सुग्रीवजी जिन में से पाटवी
 हनुमानजी सांभर का राज्य अपनी प्रसन्नता से सुग्रीवजी को देकर आप पटना जीत वहां के राजा
 हुए कि जिन के वंश में इकतीस ३१ प्रकार के पूर्विये चौहान हुए) ११० सुग्रीवजी (सांभर के
 राजा हुए) १११ अंगदजी ११२ केसरीजी ११३ जयंतजी ११४ जगदीशजी ११५ जयरामजी ११६
 विजयरामजी ११७ कृष्णजी ११८ नीतयुद्धजी ११९ गोवर्द्धनजी १२० मोहनजी १२१ गिरिधरजी १२२
 उदयरामजी (उदयमजी) १२३ भारथजी १२४ अर्जुनजी १२५ शत्रुजीतजी १२६ सोमदत्तजी १२७
 दुःखतजी १२८ भीमजी १२९ लक्ष्मणजी १३० परशुरामजी १३१ रघुरामजी (मारोठ के राजा से
 सात दिन लड़कर सांभर छोड़ बुरहानपुर अपने सुसरे के यहां भाग गए और वहाँ मरे) १३२
 अमरसिंहजी १३३ माणिक्यराजजी तीसरे (सांभर इन्होंने ने पीछे विजय कर लिया १३४ महुकर्मजी

हुंटा दानव की उत्पत्ति और उसका अजमेर के बन में रहना ॥

क्रत्या कदम्भ उर असुर रज्जि । धर हुंठ नाम दानव उपज्जि ॥कं॥२८९॥
जगि जोग नयर जुगनीय थान । पुज्जै सु आय उगगति विधान ॥
रथ च्यार चक्र उत्तंग बाह । असि असिय दृश्य मुष अग दाह ॥कं॥३००॥
संभरिय धरा धरनीय ठाह । पुक्कस्थौ नरनि रे जाहु जाह ॥
सिर कोपि रीस धुनि दसन बज्जि । उभरे षग जुनु इन्द्र गज्जि ॥कं॥३०१॥
प्राहार पाय धुकि धरनि धुज्जि । पुर नयरुद्र उर चक्कि बज्जि ॥
कंपी सु भूमि नव पंड मान । जज्जरिय नाव ज्यौं बाय पान ॥कं॥३०२॥
लगौ न पलक द्रग देव चच्छि । उकै उकार द्रगपाल गच्छि ॥
दिष्यौ सहप दानव उत्तंग । वैराट रूप हरि धस्यौ अंग ॥कं॥३०३॥
पंषीह म्रग नर स्रुष भाजि । आघात सह दानव सु गाजि ॥
चित्त चिंत चिंत जुगिगनि प्रधान । पुज्जै सु आनिउगगति विधान ॥कं॥३०४॥
चहुआन रूप दानव प्रमान । भज्या सु पुच आवू सथान ॥
कं॥३०॥ ६०॥ १४०॥

(दामोदरजी) १३५ रामचंद्रजी १३६ संयामसिंहजी १३७ शिवदत्तजी (श्यामदत्तजी) १३८ भोगाद-
त्तजी १३९ शिवदत्तजी १४० रुद्रदत्तजी १४१ ईश्वरजी १४२ उमादत्तजी १४३ चतुर्जी १४४ सोमेश्वरजी
पहिले (इन के दो लड़के भरथजी १ और उरथजी २ उन में से भरथजी पाटवी के वंश में पृथ्व-
राजजी हुवे और उरथजी के वंश में खूंदी और कोटा आदि के हाड़ा चौहान हुए हैं) १४५
भरथजी १४६ युद्धेष्टजी ॥

इसके छन्द २२८ की पहिली तुक के पहिले पाद "सुत मोहसिंह वर मोह रूप ।" में
कवि का गूढ आशय यह समझना आवश्यक है कि वह उसमें तीन नाम वर्णन करता है मोह-
सिंह (सिंहदेवजी) सिंहवर और मोहनरूप कि जिसके सिंघ शब्द को अर्थ करने के समय मोह
शब्द के साथ और वर के साथ दोबार लगाने से पृथक दो नाम सिद्ध हो जाते हैं अतएव हमने
सिंघ शब्द के नीचे दो लकीर करी है । और इसी तरह छन्द २२९ की पहिली तुक के दूसरे
पाद में "प्रथम" शब्द से पृथ्वीराज नाम का निःसन्देह बहण पट भाषा में व्यत्यय विद्वान कर
सकते । तदनन्तर वीसलदेवजी के जो वृत्त चंद्र ने जैसे के तैसे उत्तापित होकर लिखे हैं उनको
मनन करने से विद्वान पाठक सहज ही में यह अनुमान कर सकते हैं कि यद्यपि चंद्र उनके कुल
का वंश परंपरा से राज-कवि था पर वह निःसन्देह बड़ा ही स्पष्ट-वक्ता और पठपात रहित
पुरुष था क्योंकि आज इस उचीसवीं शताब्दी में भी जब कि स्वतंत्रता और सभ्यता का सूर्य
पूर्व प्रकाशित हो रहा है तब भी कोई राज-कवि ऐसा स्पष्ट-वक्ता और पठपात रहित अपने
बलमान की दुर्गतियों को उसके भावी संतानों के शिष्यार्थ निहार होकर प्रकाश करनेवाला
भायः किसी की दृष्टि न आया होगा । इस के साथ भाषाओं के शोध करनेवाले विद्वानों को चंद्र

दूहा ॥ सो दानव अजमेर बन । रहि तह दिन घन अंत ॥

सून्य दिसान न जीव कै । थिर थावर द्रिगमंत ॥

कं० ॥ ३०६ ॥ ६० ॥ १ २ ॥

मुरिख ॥ संभरि सोर नरिंदह संभरि । पंथ प्रजा पसरै रन जंगर ॥

रम्य अरम्य करी सु धरन्निय । रहे मठ कोट अफोट करन्निय ॥

कं० ॥ ३०७ ॥ ६० ॥ १४२ ॥

सारंगदेवजी की राणी गौरीजी का अनलगर्भ सहित रणथंभ
पधारना ॥

दूहा ॥ गौरां चलि रनथंभ गिरि । सारंग सचौ राइ ॥

प्रजा पुलंदी मद्धिम धरि । ग्रभ अनल गौराइ ॥

कं० ॥ ३०८ ॥ ६० ॥ १४३ ॥

अनल ग्रभ धरि गौरि सिसु । गय रनथंभ दिसान ॥

राजद्व रावत पती । मातुल पष चहुवान ॥

॥ कं० ॥ ३०९ ॥ ६० ॥ १४४ ॥

का यह वाक्यखंड “ हक अहक ” में ध्यान देकर समझने योग्य है कि “ हक ” अथवा “ हकू ” जो हिन्दी भाषा में प्रयोग होता है वह अरबी अथवा फारसी नहीं है किन्तु संस्कृत स्वक शब्द से है और “ अहक ” शब्द स्वतः इस बात की स्पष्ट साक्षी देता है । इसी रूपक के छन्द ९९९ से टुंठा राक्षस की उत्पत्ति चंद्र कवि वर्णन करता है ॥

१४१ पाठान्तर-रहितह । रहतह । दिसानन । जीवक्यै । द्रिग । मंत ॥

१४२ पाठान्तर-पसरी । अवन्निय । रहै ॥

१४३-१४४ पाठान्तर-सारंग । यभ । गौरास । शुभ । रिनथंभ । राजदव । पति ॥

इन रूपकों के पढ़ने के पहिले हमारे पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि बीसलदेवजी ने अपने लड़के सारंग देव जी को अपने हाथ से मार डाला था कि जिस के पीछे वे आप भी सांप के काटने से मर गये और अजमेर अर्थात् संभर का राज्य विना राजा के रह गया और अजमेर के बन में टुंठा नामक दानव रहने लगा किन्तु बीसलदेवजी के लड़के सारंगदेवजी की रानी गौरी के गर्भ था । रानी जो राज्य की यह दशा देखकर अपने पिता रणथंभ के राजा के यहां चली गई और वहां सारंगदेवजी के अनल अर्थात् आना राजा उत्पन्न हुए । यह सब कथा आगे के रूपकों में जब आना राजा अपनी माता से अपने पिता का नाम और सब वृत्तान्त पूछेंगे तब कवि माता और पुत्र के संवाद में बीसलदेवजी की कथा सविस्तर वर्णन करेगा । इन रूपकों में अभी गौरी रानीजी का सगर्भा रणथंभ जाना ही कवि ने वर्णन किया है ॥

आना राजा का जन्म होना और उन का बालपन ॥

भुजंगी ॥ धरै गौर जन्मम आनल राजं । बसे देव गामं दुनी क्व लजं ॥
 नवं वृत्त नित्तं नवं वृत्त सिष्यै । नरं तार तारं नवं श्रुत्त भिष्यै ॥ कं० ॥ ३१० ॥
 चरं संभरी बात पुच्छंत मित्तं । धरै ध्यान दिष्यै अजम्मेर चित्तं ॥
 कला सुख सिष्यिं महा मल्लवीरं । गिनै मगग आमं पढै मंच धीरं ॥ कं० ॥ ३११ ॥
 दिनं सीह अञ्जीह आषेट षिल्लै । ननं नेह निद्रा सुरं सिद्ध मिष्यै ॥
 करं पाइकं विद्ध साइक नष्यै । भरं भै अभैनं सुयं सब्ब रष्यै ॥ कं० ॥ ३१२ ॥
 वधै काम कामं अलीहो न भष्यै । सुभै राजसं तामसं सत्त चष्यै ॥
 रमे जम्म सेना ग्रहै जम्म भारी । सुई संभरी बात दिष्यै करारी ॥ कं० ॥ ३१३ ॥
 कहै काल कालं अकालंति बंधै । इतं जोर मा वित्त सों चित संधै ॥
 दुअं वाह परचंड दुर्गं सरूपं । इसो दिष्यै राज आना अनूपं ॥

कं० ॥ ३१४ ॥ ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ अति बल बंड प्रचंड । हिंड आषेटक षिल्लै ॥
 हिरन रोज धाराह । बंधि वागुर वर मिष्यै ॥
 वन परवत्त भिरना । निवान राइ* राजन संग हिंडै ॥
 राग रंग भाषा* कवित्त । दिव्य वानी चित मंडै ॥
 ह्य हथिय देय संकै न मन । मगग मगग घूनी वहै ॥
 चहुआन वंस अवतंस इम । रंग अनेक आना रहै ॥

कं० ॥ ३१५ ॥ ॥ १४६ ॥

१४५ पाठान्तर-आनल । वृत्त । नित्तं । वृत्त । भूत । आन । पुच्छंत । सेतं । चित्तं । सुख ।
 सिष्यिं । सिष्य । महामल्ल । गिनी मंगि आमं । आमं । अञ्जीह । सिद्ध । पायकं । साइकं । नष्यै ।
 भरभे । अभैन सोई सब्ब रष्यै । भरं भेय भैनं सोई सब्ब रष्यै । भर भेअ भैनं सोयं सत्र रष्यै ।
 वधे । अली । होन । सत्तं । चष्यै । जम । यहै । जम । सोई । साई । सोइ । संभरि । तिवंधै ।
 जो । रमावित्त । सों । दुर्गा । दिष्यै । अनूप ॥

इस रूपक से कवि ने आना राजा के जन्मादि की कथा बर्णन करनी प्रारभ की है ॥

१४६ पाठान्तर-राइ । संग । हिंडै । कवित्त । संघै । रंग । राइ * भाषा * विषय हैं ॥

**आना का बालापन व्यतीत होना और वीरत्व का प्राप्त हो
माता से पूछना ॥**

दूहा ॥ तन मंडी मच्चि अप्पनी । कंडी बालक बुद्धि ॥

रोस रम्यौ अरि अंग में । तव पुक्कि मानच सुद्धि ॥

कं० ॥ ३१६ ॥ ह० ॥ १४७ ॥

**आना की माता का उसके सर तर और अष्वर
विद्या का उपदेश करना ॥**

गाहा ॥ सर तर अष्वर विद्या । सा विद्या अन्य सारसी नथ्यी ॥

सो आना अन भंगं । मंचनं प्रिय ये सध्वि ॥

कं० ॥ ३१७ ॥ ह० ॥ १४८ ॥

जा सिसु वीरं पतनी । वीरं होइ वीर भज्जायं ॥

नवं तीन वत्त तरंगं । सा मालं वीरया पुत्तं ॥

कं० ॥ ३१८ ॥ ह० ॥ १४९ ॥

आना का माता से पूछना कि मैं किस वंश में उत्पन्न हुआ हूँ ॥

दूहा ॥ वीर पुत्त मातुल सुमति । गवरि सपन्नो जाइ ॥

को किच्चि वंसच्चि ऊपज्यौ । तूं मुक्क जंपच्चि माइ ॥

कं० ॥ ३१९ ॥ ह० ॥ १५० ॥

**गौरी माता का कहना कि यह बात न पूछो उसके
कहते मुझे भय और कुरुणा होती है ॥**

दूहा ॥ गौरि मात कहै पुत्र सैं । पुत्त न पुव्वक्कहु बत्त ॥

जिच्चि भय जल लोचन भरच्चि । वर पूछन पर तत्त ॥

कं० ॥ ३२० ॥ ह० ॥ १५१ ॥

१४७ पाठान्तर-मत । मही । बुधि । पुक्किय ।

१४८-१४९ पाठान्तर-अरकर । मंचनं । अनभग । साखे ॥ १४९ ॥ वीर । भजाइं ॥ नवती
नवत तरंगं । नव तीन वत्त तरंगं । नवती नव तत रंगं ॥ यह तीन प्रकार के पदच्छेद कोई कोई
कवि करते हैं ॥

१५० पाठान्तर-पुत्ति । संपन्नौ । जाई । जाइं । किच्चिं । ऊपनौ । माइ । भाइ ॥

१५१ पाठान्तर-गौरी । सौ । पुत्त । पुक्कहु । जिन । भरच्चिं । पूछत । परतत ।

आना का माता से अपने वंश की कथा हठ करके पूछना ॥

पङ्करी ॥ उच्चल्यौ मात सेां पुत्र सच्चि । जानों न वंस मो पिता वच्चि ॥
 मो तात नाम बंदी न लेहि । नन करों आइ कबहू न गेह ॥कं॥३२१॥
 अप्पौं न अंब अंजुलिय तात । उप्पनौ वेद हूं किन सु गात ॥
 के नाम लेय मातुलह वंस । पित बैर लेउं वर बीर हंस ॥कं॥३२२॥
 कंडों कि प्रान मुक्कूं व देह । संसार भार अप्पौं कि केह ॥
 आना नरिंद यह काहिय वात । सुनि अरण अप्प धर परिय मात ॥
 कं० ॥ ३२३ ॥ ह० ॥ १५२ ॥

आना की माता का उसे कथा प्रगट न करने को कहना और ढँक करके संक्षेप में कहना ॥

दूहा ॥ पुत्र प्रगट न कीजिये । मो तिय इय अदेह ॥
 आदि हुते दानव प्रबल । धर धुंमी असुरेह ॥
 कं० ॥ ३२४ ॥ ह० ॥ १५३ ॥

भिरन कहत दानव सरिस । मानव मनुषी देह ॥
 मो गंधारि निहारि मुष । पुत्र विलासनि गेह ॥
 कं० ॥ ३२५ ॥ ह० ॥ १५४ ॥

अरिल्ल ॥ इह मातुल बंस प्रधानह मान । भये दम पुत्र सु मानिक थान ॥
 विचारि क्यौ तहां संभरि ग्राम । वल्यौ अजमेर सुमंत विश्राम ॥
 कं० ॥ ३२६ ॥ ह० ॥ १५५ ॥

१५२ पाठान्तर-उचर्यौ । उचस्यौ । रुच्च । जानौ । मुक्क । वच्च । लेहि । कस्यौ । सु ।
 वेदहु । किनसु । कै । लेइ । लैऊ । लेऊ । छडों । कै प्रानं । मुक्कौ । अ अहेह । आनां । इह ।
 रम । कहीय । अप्प । बरिय ॥

१५३-१५५ पाठान्तर-पुत्र । पुत्त । प्रगट । कीजीइ । जिये । अदेस । हुंते । असुरेस ॥ १५३ ॥
 विलासन । विलास । न ॥१५४॥ प्रधानह । मानं । मानिक । थानं । ग्राम । सुमंत । विश्राम ॥१५५॥

अन्य उपलक्ष्यो के द्वारा आना का संभरि की पूर्व कथा संभारना ॥

कवित्त ॥ धर मुक्किलि राय । मात लभ्यौ न कित्त रिस ॥

धर मुक्किय सुअ पंड । सुष्य मुक्यौ सु दुष्य बसि

धर मुक्किय श्रीराम । सिया षोड्य वल गोड्य ॥

धर मुक्की नल राय ॥ सिरहि कालंकित ज्योड्य ॥

धर मुक्कि वीर हर चंद्र नृप । नीच घरह घट जल भख्यौ ॥

ढंकन सु इला नृप जानियै । नृप ढंकन इलचर कख्यौ ॥

कं ॥ ३२७ ॥ ह० ॥ १५६ ॥

नृप ढंकन इल होइ । इलह ढंकन सु राज भर ॥

षह ढंकन वर देव । देव ढंकन वर अंबर ॥

अपजस ढंकन कित्त । कित्त ढंकन जस धारिय ॥

औगुन ढंकन विद्य । सुगुन विद्या उचारिय ॥

ढंकनह काल वर भ्रंमको । भ्रंम काल ढंकन करिय ॥

मावत्ति गुरू ढंकै जु सिसु । सिसु ढंकन पित उचारिय ॥

कं० ॥ ३२८ ॥ ह० ॥ १५७ ॥

अरिह ॥ इहि विधि आनल बत्त उचारिय । पुब्ब कथा संभरि संभारिय ॥

किहि विधि राषस ढुंढ उपना । सारंगदे कैसे जुद्ध किना ॥

कं० ॥ ३२९ ॥ ह० ॥ १५८ ॥

आना का माता से पूछना कि नर अर्थात् वीसलदेव
दानव कैसे हुआ ॥

दूहा ॥ एक बत्त तुम सम कहैं । मात कथा समभाइ ॥

नर किहि विधि दानव भयौ । इह अचिरज सो आइ ॥

कं० ॥ ३३० ॥ ह० ॥ १५९ ॥

१५६-१५७ पाठान्तर-वल । राइ । लिन्यौ । रिस । मुक्कीप श्री । सुप । दुप । मुक्कीय ।
सा । षोड्य । गोड्य । मुक्किय । सिगं । सिरह । कालंक । तज्यौ । जोड्य । मुकि । घरहिं ।
भयौ । इल । भूमि । इल वर । कयौ । अप । जस । कित्त । कित्त । धारीय । औगन । सुगुन ।
उचारीय । कों । मा । वित्त ॥ १५७ ॥ घत । उचारीय । किहिं । अपत्तौ । कीनौ ॥

१५८-१५९ पाठान्तर-घत । सों । समभाय । अचरिज ॥ १५९ ॥ जौ । सौ । हूं । जानियौ ।
नख निहचै नि संदेह ॥

दूहा ॥ जो मोसों सांच न कहौ । तौ हौं कंडों देह ॥

इह अप्पनि जिय जांनि जहु । नव निहचे निज ओह ॥

कं० ॥ ३३१ ॥ ह० ॥ १६० ॥

गाहा ॥ कथि मा कांनन कथयं । जो मो ऊपर पुत्र हितायं ॥

जीवन वृथा परंनी । आना नह आंन उपायं ॥

कं० ॥ ३३२ ॥ ह० ॥ १६१ ॥

आना की मा का कहना कि दानव की कथा
न सुन चित्त भंग होगा ॥

दूहा ॥ पुत्र नि सुनि दानव कथा । अवन सुनत होइ भंग ॥

इह अरिष्ट अंग उप्पजै । पित परिपिता प्रसंग ॥

कं० ॥ ३३३ ॥ ह० ॥ १६२ ॥

आना का उत्तर दे कहना कि ऐसे मुझे क्यों डराती है ॥

मुरिल ॥ औसी कहि मो कहुं डरपावहु । मेरै ककु इह दाय न आवहु ॥

रामाइन भारत की बात । मो हौं सबै सुनत हौं माता ॥

कं० ॥ ३३४ ॥ ह० ॥ १६३ ॥

आना की मा का कहना कि जिस से कार्य सिद्धि न हो
उसका कहना व्यर्थ है ॥

कवित्त ॥ जिहि पुर गवन न होइ । ताहि कोइ पंथ न बुझै ॥

जिहां दिष्ट नह भिदै । तहां कैसें करि सुझै ॥

जो अवन न नह सुनी । सु* कहौ कैसें परि कहियै ॥

जाके देह न होइ । ताहि कैसें कै गहियै ॥

इह कथा असम अदभूत अति । छठ निग्रह सुत जिन करै ॥

सुनत ही अवन दुष उप्पजै । सिद्ध न कोइ कारिज सरै ॥

कं० ॥ ३३५ ॥ ह० ॥ १६४ ॥

१६१ पाठान्तर-१६४० में ॥ कथि कथावत कथियं । जो उपर पुत्र हितायं ॥

१६२ पाठान्तर-पुत्रहि । होय । अंग । उप्पज्यौ । उपज्यौ ॥

१६३ पाठान्तर-कूं । क्यू । पावहि । मेरै । कहुई । आवहि । बात । हूं । हूं । हों ।

हो मातं ॥

१६४ पाठान्तर-गवन । तासु । को । बुझै । जहा । कैसें । सुझै । अवनहु । नहु । न ।

कहु । कहीर । कैसें । गहियै । उपजै । काय ॥ सु* विशेष है ॥

आना का प्रत्युत्तर देना कि आगे कितने नर, ऋषि और
राइ दानव हुए हैं कथा सुनने से क्या होता है ॥

कवित्त ॥ मात सुनहु मुझ बात । कथा सुनते कदा लगौ ॥
केते नर रिष राइ । भए सुर दानव अगौ ॥
तिन की कथा प्रसंग । सुनहि सब को समुभावहि ॥
तिन को जुझ विरुद्ध । लोक वेदन में गावहि ॥
इह जानि मात अवननि सुनौं । कहतैं ककु लगौ नहै ॥
जेजे निमांन विधि निम्मण । तेते निहचै निव्वहै ॥

कं० ॥ ३३६ ॥ ह० ॥ १६५ ॥

आना की माता का बीसलदेवजी की सविस्तार कथा कहना ॥

बीसलदेवजी का जन्म होना ॥

मुरिल ॥ पुत सुनहु इह बत पुरानी । कहतैं होइ गद गद बानी ॥
अनल कुंड आवू रिषि कीनौ । राज उपाइ राज सिर दीनौ ॥

कं० ॥ ३३७ ॥ ह० ॥ १६६ ॥

दूहा ॥ ताके कुल तैं उप्पनौ । महाराज अंभाधि ॥
ताके बीसल देव नृप । सबै राज आराधि ॥

कं० ॥ ३३८ ॥ ह० ॥ १६७ ॥

बीसलदेवजी का पाट बैठना ॥

कवित्त ॥ आठ सैं रु इक ईस । बैठि बीसल सु पाट ब्रष ॥
सुकवार प्रतिपदा । मास वैसाष सेत पष ॥

१६५ पाठान्तर-बात । सुनते । सुनि । कोइ । वेदनि । जानि । कहते । कहे । तैं । जे
जै । ब्रमान । ब्रमण । त्रिमण । निरवहै ॥

१६६ पाठान्तर-वत । पुरानी । गहेतैं । कहे । ते । बांनी । रिष ॥ १६६ तैं । । उपनौ ।
धम्माधि । ताकै । ब्रप ॥

१६७ पाठान्तर-वसल । पाठ । वर । प्रतिपादा । प्रतिपट्टी । सारै । उचारे । उव्वरै ।
अंगवर । ध्रम । नरै ॥

१६८ हमारे पाठकों को भले प्रकार ज्ञात है कि कुछ दिनों से कोई कोई विद्वान इस ग्रन्थ
को आदि से अंत पर्यंत जाली बना हुआ अनुमान करते हैं और जिसतनी तर्क वे अपने अनुमान
को सिद्ध करने को लाते हैं उनमें सब से बड़ी तर्क कि जिस पर दूसरी तर्कों का भी सर्वरीत्या

आये बंस कृतीश्व । विप्र वंदी जन सारे ॥

द्विधौ क्वच सिर तिलक । वेद मंचह उचारे ॥

आधार है वह यह है कि इस ग्रन्थ में लिखे हुए संवत् संप्रत शोध हुए और मुसलमानी तवा-
रीखों में लिखे हुए संवत्तो से नहीं मिलते । अतएव इस संवत् विषयिक भगड़े का प्रारम्भ इस
रूपक १६८ और छन्द ३३९ से सम्भन्ना चाहिये क्योंकि रासो के जितने छन्दो में संवत् मित्ती
कहे गए हैं उनमें से प्रथम छन्द यही है । इससे हम को विदित होता है कि संवत् ८२१
वैशाख शुदी १ शुक्रवार को बीसलदेवजी राज-गद्दी पर विराजे किन्तु इसी आदि पर्व में इस
रूपक से थोड़े से ही और आगे बढ़कर हम को बीसलदेवजी के पट्टन विजय करने के संवत्
सूचन करनेवाले नीचे लिखे रूपक मिलेंगे—

(संवत् १८५९ की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव सत अद्दु । बरस तीस छह अग ॥

पुर पट्टन वीसल नृपति । राजत सयलह जग ॥

कवित्त ॥ संवत् नव सत अद्दु । बरस दस * तीय सत अग ॥

पुर प्रविष्ट वीसल नरिंद । राज्यं सयल जग ॥

(संवत् १७७० की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव सत अध । बरस तीस छह अगि ॥

पुर पट्टन वीसल नृपति । राजत सयलह जगि ॥

कवित्त ॥ सर संवत् नव सत । बरस दस * पंच सत अग ॥

पुर प्रविष्ट वीसल । नृपति राजंत समल जग ॥

(गुजरात देश की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव शत अधिक । वर्ष तीस छह अग ॥

पुर प्रतिष्ट विशल नृपति । राजत सकले जग ॥

जितनी पुस्तकें हम इस टिप्पण के लिखते समय देख सके उन सब में ऊपर नित्य पाठ
पाए अर्थात् किसी में हमारी स० १८५९ का पाठ मिलता है तो किसी में संवत् १७७० वाली का ।
शोक की बात है कि हमारी १६३१ तथा १६३२ वाली पुस्तक में तो यह पर्व ही नहीं है और संवत्
१६४० वाली में यह पृष्ठ नहीं है कि जिनमें इन छन्दो का होना सम्भव है । यह तो जानने में
ही है कि पिछले रूपक १४० में चंद्र कह आया है कि “नौसट्टि बरस वर राज कीन” चौसठ

* हिन्दी भाषा के ऐसे काव्यों में चंद्र जैसे महाकवियों की गूढ़ बातों को खोलने की कुत्रिया में से
हम एक का यहा प्रकाश करते हैं कि दश दस और दश दस दसों का अर्थ जहा वे कुछ संख्या प्रकाश करने का
प्रयोग हुए हो वहां सूक्ष्मता रखते हैं अर्थात् दश अथवा दस = १० का शब्द और दश अथवा दस = गुण्य
अर्थात् केवल दहाई का वाचक होता है और जहां लेखक दोष से इन दसों के निखने में गड़बड़ हो जाता है वहां
संख्या में भी गड़बड़ पड़ जाती है कि इस के उदाहरण इस कटाकाव्य में यहां से लेकर अनेक स्थानों में आते हैं ।

आनंद अगदर इन्द्र सम । अंम नंद जस उदरै ॥
अजमेर नयर अरि जेर करि । विमल राज बीसल करै ॥

कं० ॥ ३३९ ॥ क० ॥ १५८ ॥

बरस बीसलदेवजी ने राज्य किया । अब विद्वानों के विचार देखने जैसी बात है कि इस रूपक के संवत् को इसी प्रकार के दूसरे रूपकों में कहे संवत् से मिलाने से एक सौ वर्ष का फरक पड़ता है और जो ९१ वर्ष का एकसा अन्तर रासो में लिखे सब संवत् को सप्रत शोध से मिलाने और जो पखाने हमने पृथ्वीराजजी के शोध किये है उनसे पड़ता है वह इस से सिवाय है । जगत का एक यह सर्व साधारण नियम है और उसका भार सब पत्रपात रहित विद्वानों पर है कि प्रत्येक समय के विद्यमान बड़े बड़े विद्वान सब परम पद-प्राप्त ग्रन्थकर्त्ताओं के ऊपर जो कोई व्यर्थ आक्षेप करे उसको खण्डन कर के छिन्न भिन्न कर दें क्योंकि यदि यह भार विद्वानों पर स्वतः सिद्ध न रहा होता तो सब कीट क्लिष्ट सब अमूल्य ग्रन्थों को काट कर खाजाय और बड़े बड़े कवियों के नामों पर पोता फेर दें । अतएव ऐसी जिम्मेदारी को शुद्ध अन्तःकरण से समझने वाला कोई विद्वान क्या यह कहैगा कि भिन्न भिन्न पुस्तकों में यह भिन्न भिन्न अशुद्ध पाठ चन्द्र कवि जैसा महाकवि बीसलदेवजी की तरह दानव होकर लिख गया है? क्या इन भूलों का अपराधी चन्द्र है? नहीं-नहीं-कभी नहीं । हम क्या एक छोटा सा बालक भी कह सकता है कि यह सब भूलें अयोग्य लेखक और कवियों ने जान कर अथवा अनजाने की हैं । अब हमारी सम्मति इस विषय में चन्द्र की शैली और ख्यातिओं की पुस्तकों में लिखे सं० ९३१ को देखते हुए ऐसी है कि यहां ऐसा पाठ था कि "नौ सैं अरु इकतीस" और इस हमारे अनुमान की पट्टन विजय करने के संवत् वाले रूपक पुष्टि करते है । देखो :-

बीसलदेवजी का पाठ बैठना	९३१ वर्ष
उनका राज्य करना जोड़े	६४ वर्ष
रासो के संवत् और विक्रम में जो सर्वत्र एकसा अन्तर है वह जोड़े-	९१ वर्ष				
	विक्रमी संवत् १०८३				

रासो के रूपकों के जो मूल पाठ अशुद्ध हैं उनको अभी हम जैसे लिखित पुस्तकों में हैं वैसे ही रक्खेंगे क्योंकि जब तक सब विद्वान एक मत न हो जाय तब तक उनको हम पुरातत्त्व विद्या के नियमों के अनुसार बदल नहीं सकते हैं । इस के अतिरिक्त हम पुरातत्त्व वेत्ताओं को चेत कराते हैं कि फीरोज़शाह की लाठ पर की प्रशस्तियों को अब एक बार प्रथम बीसलदेवजी के और पृथ्वीराजजी के चरित्रों को भले प्रकार ग्रन्थान्तरो में पढ़कर उन आशयों के सहारे से फिर विचारें तो उन को मालूम हो सकेगा कि पहिली प्रशस्ती जिसमें का नीचे लिखा अनुवाद है उस को बीसलदेवजी की नहीं समझना चाहिये किन्तु पृथ्वीराजजी की समझना उचित है और केवल यही विशेष समझना होगा कि बीसलदेवजी के उपलक्ष का सम्बन्ध उस में इतना ही है कि जिस मिती को वह प्रशस्ती निर्माण हुई है वह मिती बीसलदेवजी के पाठ बैठने की है अर्थात् वैशाख शुदी १ और पृथ्वीराजजी को बीसलदेवजी का अवतार होना लोग मानते है अतएव इन प्रशस्तियों के लिखनेवाले ने अपने इस गूठ भाव को प्रकाश करने में उन दोनों का सादृश्य दिखाया

बीसलदेवजी का अंत समय पट्टन विजय करने का छत्र धारण करना ॥

दूहा ॥ वर पट्टन अहन अमित । समित वेद फुनि राज ॥

समय अंत बीसल सिरह । धस्यौ क्वच सम साज ॥

कं० ॥ ३४० ॥ छ० ॥ १६८ ॥

पद्धरी ॥ सिर धारि क्वच बीसल नरिंद । आसनह सिंघ वर वरन इंद ॥

भूदेव मंडि वेदी विमाल । रस पंच मेधि मेलै ति काल ॥ कं० ॥ ३४१ ॥

वर बढी ज्वाल खंडन विभाग । जमि रहे जमल पुट पलति लाग ॥

मष समुष दिष्य परसपर बैन । तिनपुटह बीच तन धूम अैन ॥ कं० ३४२ ॥

जानीत वेद मुख रहै मौन । सुभ समय असुभ उच्चार कौन ॥

संपूर वेद किन्ने भिषेक । दुज दइय बंदि आसिष असेष ॥ कं० ॥ ३४३ ॥

विधि अैन राज दिय सु लप माल । जै जया सबद बीसल भुआल ॥

कं० ॥ ३४४ ॥ छ० ॥ १९० ॥

है कि जिस से निर्याय करने में यह भगड़ा पड जाता है कि अमुक प्रशस्ती पृथ्वीराजजी की है अथवा बीसलदेव जी की । हमारे पास इन प्रशस्तियों संबन्धी सब संज्ञ प्रस्तुत नहीं हैं और न इतना अवकाश है नहीं तौ हम ही परिश्रम करके कुछ विशेष सारांश प्रकाश करते । इस के अतिरिक्त जो सं० १२३० जैसी प्रशस्तियों को बीसलदेवजी की मानें तौ फिर पृथ्वीराजजी को तेरहवें शतक में मानना पड़ेगा कि उस दशा में भी पृथ्वीराजजी चितोड की और आवू की प्रशस्तियों के अनुसार रावल समरसीजी के समकालीन होंगे और मुसलमानी तवारिखो के सन भूठे ठहर कर संप्रस्त प्रसूत हुई तर्क के अनुसार मुसलमानी तारीख जाली सिद्ध होगी ॥

O.M

In the year 1250, on the first day of the bright half of the month Vaisakh (a monument) of the Fortunate—Visal—Deva—son—of—the—Fortunate—Amilla—Deva—King—of—Sacumbhari,

Popular Ed of the Asiatic Researches, page 315

पाठान्तर—पाठ । वर । वर । प्रतिपादा । प्रतीपदी । कृत्तीस । सारै । दीयौ । उच्चारै । नैर ।

१६९ पाठान्तर—पुनि । समै । सरह । धर्यौ । जास ॥

१९० पाठान्तर—मंडि । छत्रधारि । धंवरन । इद्र । मधि । मेलै । मने । मेलिय । घटिय । घटी । टिषि । बेन । पुट । हबी । सतन । अैन । रहे । मले मोन । शुभ । अशुभ । कौन । कानि । मध । बंधि । एन । शद्र । मूवाल ॥

बीसलदेवजी पाट बैठकर कैसे राज करते थे ॥

दूहा ॥ लस्य पाट बीसल नृपति । विकल इच्छ घन मार ॥

षंडन चिय दंडन करै । विन अपराध अतार ॥

कं० ॥ ३४५ ॥ ह० ॥ १७१ ॥

कवित्त ॥ इसौ वीर बीसल । नरिंद अजमेर नैर पर ॥

रचि रचना पुर दिव्य । मनो विमक्रम कीय कर ॥

अधम धंम उप्परै । क्रम दुक्ति मन इच्छै ॥

हक्क द्रव्य संग्रहै । विना हक लोभन वंछै ॥

चव बरन सरन चहुआन कै । वंस कृति स सेवंत ही ॥

बीसल नरिंद धंमाधिधरि । देव कला देवत ही ॥

कं० ॥ ३४६ ॥ ह० ॥ १७२ ॥

बीसलदेवजी का अपने पुत्र सारंगदेवजी को उपदेश करके
सांभर भोजना कि जो अपनी धा-बैन के पति के
विनाश से दुचित हो गए थे ॥

कवित्त ॥ पट रागिनि परिहार । यभ सारंग उपनौ ॥

पुत्र होत भद्र मृत्य । बाल बानिक कौं दिनौ ॥

१७१ यह रूपक संवत् १७७० और १६४७ की पुस्तकों में तो नहीं है किन्तु सं० १८५६ तथा सोसाईटी की छापी हुई पुस्तकों में है जब कि इन से भी बहुत पुरानी पुस्तकों में यह न मिले तब तक उसको लेपक संज्ञा हम नहीं दे सकते यहां यह भी समझ लेने योग्य बात है कि १६६ रूपक से १७० रूपक तक बीसलदेवजी की पाठन की चटाई के लिये छत्र धारण करने का वर्णन है । प्राचीन समय में जब कि राजा किसी पर चटाई करते थे छत्र धारण विधि का वैदिक कर्म करके प्रस्थान करते थे । पाठको का यह बीसलदेवजी की कथा बहुत सावधानता से पठनी चाहिये क्योंकि इस के बीच बीच में उन के लड़के सारंगदेवजी आदि के भी वृत्त आते जाते हैं परन्तु उन सब को कवि ने बीसलदेवजी के वृत्तों में मिलाकर वर्णन किया है ॥

पाठान्तर-इच्छ ।

१७२ पाठान्तर-बीसल । नैर । मनो । विश्वक्रम । विसक्रम । विसकर्म । करि । अधम । धम । ऊपरै । क्रम । दुक्ति । मन । इच्छै । विना । हक्क । लोभ । न । चहौच । चहुआन । कृतीन । धमाधिधार । देव । ताही ॥

१७३ पाठान्तर-पाट । रानि । यभ । उप्पनौ । भय । मृत्ति । को । दीनो । वनिक । दिनी । सम । पै । इक्क । लगे । कौपौ । वीना । हुवे । गये । विनस्सयौ ।

ता वानिक नंदिनिय । नाम गौरी सारंग सन * ॥
 इक्क थान पय पान । इक्क सिज्या इक्क आसन ॥
 नव बरस लगिग कन्या रची । व्याह राज बीसल कियौ ॥
 बीबाह हुअे बर बन गयो । तहां सिंघ बर विनसयौ ॥

कं० ॥ ३४७ ॥ हू० ॥ १७३ ॥

दूहा ॥ सिंघ विनास्यौ वनिक सुत । कन्या किया अंदोह ॥

वृत्त धस्यौ ब्रह्मचर्य कौ । तप पहुकर तजि मोह ॥

कं० ॥ ३४८ ॥ हू० ॥ १७४ ॥

पद्दरी ॥ अति दुचित भयौ सारंग देव । नित प्रति करै अरहंत सेव ॥

बुध भ्रम्म लियौ बंधे न तेग † । सुनि अवन राज मन भौ उदेग ॥ कं० ॥ ३४९ ॥

बुल्लाइ कुंअर सुनमान कीन । किहि काज तुम इह भ्रम्म लीन ॥

तुम कंडि सरम हम कहौ वत्त । बांनिक पुत्र हन ते दुचित ॥ कं० ॥ ३५० ॥

इह नष्ट रयांन सुनियै न कान । पुरषातन भज्जै किति हान ॥

तुम राज वंस राजनह संग । मृगया सर षेलौ वन दुरंग ॥ कं० ॥ ३५१ ॥

परमोध तजो बोधक पुरान । रामाइन सुन भारथ निदान ॥

अभिमान दान रिन सरन भ्रम्म । चास्यौ प्रकार सुनि राज क्रम्म ॥ कं० ॥ ३५२ ॥

परमोध मानि राजन कुमार । तत काल मंगि बंधे हथ्यर ॥

भय प्रसन राज कीनौ पसाव । संभरि रजधानी करहु जाव ॥ कं० ॥ ३५३ ॥

गजराज पाट है वर उनंग । सिंघासन दीनो जटित नंग ॥

तुम जाहु कुंअर संभरिय थान । किरपाल करिय कायथ प्रधान ॥ कं० ॥ ३५४ ॥

प्रोहित मुकंद ‡ सारंग चुहान । साचैर धनी नरसिंघ भान ॥

पंधार लार बहवल बलोच । दिव्य बहुत हसम कीयौ न सोचा ॥ कं० ॥ ३५५ ॥

* यह पाठ हम ने सं० १६४७ तथा १७७० की पुस्तकों से रक्खा है इधर की सब पुस्तकों में सम पाठ है । सनोतिपणुदाने तथा त्रि० अखण्डिते ॥ अथवा सं० सून वा सूनु का अपभ्रंश है । १७४ पाठान्तर-कन्या । कीयौ । वृत्त धयौ । पहुकर ॥

† हिं० तेग from Sk (तैग्य (तिम to assail, to seek, to injure, to attempt, to kill) or तिम = sharp as a weapon) इसी तरह हिं० तेज is not from the A Tez or P Tez, but from the Sk तेज m Sharpness, pungency, sharpness of a weapon, brilliancy, spirit

‡ यह नागर जाति का ब्राह्मण था ॥

१७५ पाठान्तर-प्रति । धम । कीयौ । बंधे । खवन । भय । बुलाय । कुहर । तुम । धम । धर्म । वृत्त । वानिक । ते । दुचित । रयांन । सुनिये । सुनीयै । कान । भज्जै । किति ।

अनेक जाति उमराव सथ्य । है गै नर बाहन सुतर चथ्य ॥
 तिहि बार धाय बानिक बुलाय । जिन जाहु कुंअर की सथ्य काय ॥ कं० ॥ ३५६ ॥
 तुम कियौ पुत्र सौं मेक मुंड । पिभित्ति वैन कछ्यौ कछा देहुँ दंड ॥
 अजमेर मेल्हि संभरि दिसान । जो जाहु तब्ब पंडौ परान ॥ कं० ॥ ३५७ ॥
 इतनी कथ्य नृप चलयौ सथ्य । रथ च्यार भरे तिन वार अथ्य ॥
 जोजनह एक कीनौ मिलान । अनेक भष्य तहां घान पान ॥ कं० ॥ ३५८ ॥
 भय प्रात प्रसन पग लगिग पुत्त । चलि सीप मंगि संभरि पहुत्त ॥
 सुर जाय पहुचिय संभ राय । मन वच्च सुद्ध करि क्रम नाय ॥ कं० ३५९ ॥
 दस महिष भंजि तहां बलि सु दीन । जज होम धोम सुर प्रसन कीन ॥
 कीनौ प्रवेस सुर महिम मैलि । तोरन कलस बंधि राज पैलि ॥
 कं० ॥ ३६० ॥ ह० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ किय प्रवेश सारंग । देव संभरिय थान थिर ॥
 आयेह वैस्य पित्रिय । अनेक पग लगिग नम्मि नर ॥
 तब कायथ किरपाल । सबन कैां आग्या दीनो ॥
 सस्त्र वस्त्र दत चित्त । देय दिक्षासा कीनी ॥
 जहवनि गैरि आइय जबहि । पाइ लगी परमार कै ॥
 नव सगुन भए सगुनी कछ्यौ । कुंअर होइ कुमार कै ॥
 कं० ॥ ३६१ ॥ ह० ॥ १७६ ॥

दूहा ॥ देवराज रावन सुता । देवतनि जहौंन ॥
 गौरि नाम सारंग वर । मनरति धरति जौंन ॥
 कं० ॥ ३६२ ॥ ह० ॥ १७७ ॥

पोलो । सुनहु । रिण । धम । चायो क्रम । कुंआर । वंधे । हथ्यार । हुव । प्रसन्न । रजधान
 संभरिय करह जव । है । कुमर । थान । करीय । प्रधान । सारंग । चुहांन । चैहान । धनीय ।
 भान । द्विये । हसम । कियौ । वानिक । बुलाई । सय सों । मूठ । वन । कछ्यो । दिसन ।
 खरान । कथ । सथ । मथ्य । सथि । जोजन । धरक । लगि । पहुँत । वच । नाइ । भंजि । बाली ।
 प्रसन्न । तोरन कलस बंधेति पैल ॥

१७६ पाठान्तर-थान । आय । आइ । पित्रि । को । आग्या । ससन्न । शस्त्र । चित्त ।
 दिक्षासा । किनी । जहवनि । पाय । कुंअर । कुमार ॥

१७७ पाठान्तर देवतनि । जदौन । मनौ । रनि । मनोरति ॥

बीसलदेवजी का मृगया से बहुरना, एक तालाब बनाने की आज्ञा देना और दरबार करना ॥

दूहा ॥ तब बाहुरि बीसल नृपति । मृगया खेलत बन्न ॥

देषि थान सर* उद्धरन । मतौ उपायौ मन्न ॥ कं० ॥ ३६३ ॥ हू० ॥ १७८ ॥

पद्मरी ॥ तब देखि नरिन्द अनूप ठाम । निर्भर गिरिन्द बन अभिराम ॥

बुलाय लिय मंची प्रधान । सर * रसौ इहां पहुंचकर समान ॥ कं० ॥ ३६४ ॥

फुरमाय † काम अप आय गेह । आनंद अंग उपज्यौ अकेह ॥

बैठो सिंघान्न धम्म नंद । बीसल नरिन्द नर लोक इंद ॥ कं० ॥ ३६५ ॥

सिर कच पास दुय चमर ढार । अति रूप जानि अस्वनि कुमार ॥

आइय सु कुलि कंतोस नाम । पावासर तोवर गौर राम ॥ कं० ॥ ३६६ ॥

हजूर लए राजन बुलाइ । तंबोलि दियो सनमुख चाइ ॥

पठि बंदि कंद बोले विरह । मुसकाय सीस नायौ नरिन्द ॥ कं० ॥ ३६७ ॥

सब सभा पूरि जैसे नकित्त । चहुआन बीच जनु चंद रत्त ॥

सनमान करे सब दरइ सीष । फिरि बंदी जन दोनी असोष ॥ कं० ॥ ३६८ ॥

निसि गई पंच पल एक जाम । राजन महल ‡ प्रावेस ताम ॥

करपूर अगर मृगमद सु वास । सांधे किरकिर उत्तम आवास ॥

कं० ॥ ३६९ ॥ हू० ॥ १७९ ॥

* यह बीसल का तालाब अब तरु अजमेर के पास विद्यमान है । उस के किनारे पर जहागीर पादशाह ने एक महल बनाया था कि जिस में उसने इंग्लिस्तान के पादशाह जेम्स पहिले के एल्ची से मुलाकात की थी । इस टिप्पण को हमने इस तालाब के किनारे पर खड़े होकर लिखा है । यदि कोई पुरातत्ववेत्ता इस तडाग की वर्तमान दशा अपनी आख से देखे तो उस को बड़ा शोक और आश्चर्य होगा कि अंग्रेज सरकार के राज्य समय में ऐसे प्राचीन स्थलों का जीर्णोद्धार राज-कोश के द्रव्य से होता है परंतु रेलवाले अपनी रेल इस पर दौड़ा दौड़ा उस को छिन्न भिन्न करे डालते हैं कि पांच सात वर्ष पीछे वह समूजनष्ट हो जायगा । हमारी सम्मति में यह विषय पुरातत्ववेत्ता विद्वानों और समस्त भारत प्रजा को सरकार हिन्द की सेवा में मिमोरियल करने योग्य है कि जिससे यह ऐतिहासिक सिन्ध यथास्थित बना रहे ।

† यह भी हिन्दी शब्द है संस्कृत स्फुरितम् अथवा स्फूर्तिः=स्फुरणे, मनसः कल्पनायाम् से ॥

‡ यह भी हिन्दी है संस्कृत महल्ल=अंत पर inner apartments, palace और महल्लिक=अंतःपुर रत्नक से ॥ ५७८ पाठान्तर-नृपति । वन । य न । मतौ । मन ॥

५७९ पाठान्तर-नरिन्द । निर्भर । नभ्रान । गिरिन्द । अभिराम । बुलाय । लये । रसौ । ममान । बैठो । सुसिंघान्न । धम्म । नरिन्द । सर्माप । दाय । जानि । अस्वनि । आइय । कुनी । दंतोस । ताम । पावा-सिर । तूवर । बुलाय । बुलाहि । दीयो । सनमुख । चाइ । चाय । छद । बंदि । विरह । नाय्यौ । जैसे । पहुंचान । सनमान । दरइय । जाम । राजन । घाम । करपूर । सांधे । किरकिर । उत्तम ॥

बीसलदेवजी का रणवास में पधारकर विश्राम करना और
उन की एक अप्रिय रानी का उनको नपुंसक करना ॥

कवित्त ॥ सुरंग धाम अभिराम । तहाँ विश्राम राज किय ॥

राग रंग नाटक । विनोद सुष महल बोल लिय ॥

पट रागिनि पांवार । रूप रंभा गुन जुब्बन ॥

प्रमुदा प्रान समान । नर्हीं विसरत इक्क किन ॥

रति भोग सुरति तिन सैं सदा । कवहु आन न दिच्छु चिय ॥

षिभि सैंति सकल एकत्र भय । पुरुषातन तिन बंध किय ॥

कं ॥ ३९० ॥ छ० ॥ १८० ॥

पद्धरी ॥ तब सकल भइय एकत्र नारि । पुरुषातन तिन बंध्यौ विचार ॥

प्रचार सहर दूतिका च्यार । लै षवरि सहर पहुची मभार ॥ ३७१ ॥

प्रसताव भाव तिन कहि उचार । जोगिनिय बोल आदीतवार ॥

पहराइ वेस बदलाय भेस । इम कियो राजदारह प्रवेस ॥ ३७२ ॥

लै अथ्य दई दरवान छथ्य । इम किय प्रवेस सहचरिय सुथ्य ॥

जोगिनिय गई रागिनी भडि । सब बोलि कह्यौ छै सिद्ध सिद्ध ॥ ३७३ ॥

आदेस कियो सब पाइ लगिग । आसन्न जोरि कर उभ्र अग ॥

किहि काज आज हूं बोलि लीन । किहि नार तुमहि इह सीष दीन ॥ ३७४ ॥

सब सैंति कह्यौ दुष सुनहु तुम्ह । राजन्न तनय हम सैं न क्रम ॥

को जानि मात विंभनी पीर । सैंति कौसान सानै सरौर ॥ ३७५ ॥

तुम कह्यौ कहूं जीव तै बद्ध । तुम कह्यौ करौं नारी विरुद्ध ॥

तुम कह्यौ करौं काम तै भंग । ज्यौं नारि अंग त्यों पुरुष अंग ॥ ३७६ ॥

सब चित्त बसी इह सैंति बात । अब ही इह कारज करो मात ॥

मंगाय अगिनि तब कियो होम । पर स्नान मांस प्रति वान घोम ॥ ३७७ ॥

उच्चस्यौ मंत्र आराधि इष्ट । तत काल भयौ काम तै नष्ट ॥

दस दिसा लगिग इह करो विद्धि । गत भौ पुरुषातन रहि न सिद्धि ॥ ३७८ ॥

दै द्रव्य कह्यौ माता सिधाव । इह सहर कंडि अनि सहर जाव ॥

१८० पाठान्तर-सुरंग । मुय ताम । विश्राम । मुय । पंवार । जुब्बन । प्रान । समान । इक ।
स्यं । नि । दरस । सैंकि । भई ॥

वीसलदेवजी का पुरुषत्व नाश होने से दुचित्त हो गोकर्णेश्वर की यात्रा करने को गुजरात में जाना ॥

अति दुचित्त राज भय काम नास । ब्रह्मचर्य नेम लियौ चतुरमास ॥३७८॥
 कातक्क करत पहुकार सनात । गोकर्ण * महात्म सुनत कान ॥
 बुल्लाय जैतसिय गोमवाल । तुम भूमि पास नागरहचाल ॥३८०॥

* इन गोकर्णेश्वर महादेवों की उत्पत्ति—कथा स्कंध पुराणान्तरगत जो नागर ब्राह्मणों का एक परमपूज्य संस्कृत भाषा में २४००० हजार श्लोक की संख्या का नागरखंड नामक ग्रंथ है उस के २६ वे अध्याय में लिखी है । यह संपूर्ण ग्रंथ मेरे पुस्तकालय में है ॥

आज जो बडनगर और वीसन नगर नामक नगर गुजरात में प्रसिद्ध हैं उन का प्राचीन नाम चमत्कारपुर था, उस की सीमा का प्रमाण उक्त ग्रंथ के १६ वें अध्याय में नीचे लिखे प्रमाण लिखा है अर्थात् इन गोकर्णेश्वरों को उस की दक्षिणोत्तर सीमा पर होना प्रकथ्य किया है—

चतुष्य जचुः ॥ चमत्कारोपुरोत्पत्तिः श्रुतात्वतो महामते ।
 तत्त्वेषस्य प्रमाणं यत्तदस्माकं प्रकीर्तय ॥ १ ॥
 यानि तत्र च पुण्यानि तीर्थान्याय तनानि च ।
 सहितानि प्रभावेन तानि सर्वाणि कीर्तय ॥ २ ॥
 सूत उवाच ॥ पंचकोश प्रमाणेन तेषं ब्राह्मण संतमा ।
 आशामश्यास तश्चैव चमत्कारपुरोद्भवं ॥ ३ ॥
 प्राच्यां सस्यां गयाशीर्षे पश्चमेन हरेः पदं ।
 दक्षिणोत्तरयोश्चैव गोकर्णेश्वर संज्ञिकं ॥ ४ ॥
 हाटकेश्वर संज्ञं तू पूर्वमसी द्विजोत्तमाः ।
 तत्त्वेषं प्रथितं लोके सर्वपातकनाशनं ॥ ५ ॥
 यतः प्रभृति विप्रेभ्यो दत्तं तेन महात्मना ।
 चमत्कारेण तत्स्थानं नाम्ना ख्यातिं ततो गतं ॥

† नागरह=ऊक नागरखंड जिसके भले प्रकार पढ़ने में आया होगा वह कह सकता है कि अनर्त देश में हाटकेश्वर क्षेत्र है उस में जो आज बडनगर नाम से प्रख्यात है वह नगर यही है । इस के सतयुग में आनन्दपुर, जेता में चमत्कारपुर, द्वापर में मानपुर अर्थात् मनीपुर, और कलि में नगर अर्थात् बडनगर नाम प्रसिद्ध हुए हैं । इस के अतिरिक्त यह भी ध्यान में रखने योग्य बात है कि नागर ब्राह्मणों में से जो आज वीसननगर नामक नागर ब्राह्मण प्रसिद्ध है वे बडनगरों में से इन्हीं वीसलदेवजी के समय में उन के दान लेने से पृथक हुए हैं और वीसननगर नामक जो नगर आज गुजरात में प्रसिद्ध है वह इस समय का इन ही वीसलदेवजी का प्रदान किया हुआ है । नागरखंड से यह भी ज्ञात होगा कि वीसलदेवजी के समय में तिन नागर ब्राह्मणों का दान दिया गया है उन में से कुछ उस समय पृथक में भी रहते थे और वेही लोग वीसनदेवजी को पुनश्च पुंमत्त्व प्राप्त करने को गोकर्णेश्वर की यात्रा त्रिष का

तुम देस कहीजै गोउकन्न । परवत्त सरोवर नदी रन्न ।
 महाराज उहां महादेव थान । वानास नदी कौमारि कान ॥ ३८१ ॥
 गिरधर उतंग इक तीन कोस । निभरना भरत मन आव जोस ॥
 केतोक दूर अजमेर हूंत । दिन दोय मंभू नीके पहुंत ॥ ३८२ ॥
 चढ़ि चल्थौ राज गोक्व दिसान । मै मंत गुरिय घूमत निसान ।
 आवाजि पहुंचिय दस दिसान । अरि अमै वन्न तजि थान थान ॥

कं० ॥ ३८३ ॥ ह० ॥ १८१ ॥

दूषा ॥ अरि उद्यान अमि थान तजि । बजि पर पंड उवाज * ॥

तच्छितपुर † गोक्न दिसि । पहुंच्यौ बीसल राज ॥

कं० ॥ ३८४ ॥ ह० ॥ १८२ ॥

कवित्त ॥ गिरि उतंग सल्लिता । विहंग उद्यान थान हर ॥

सघन कान पंषी । असंघि रहि लता भूमि तर ॥

वर्णन यहां कवि ने किया है ले गए थे और अजमेर के वाहुवान राज्य के पुरोहित भी यही नागर ब्राह्मण थे कि उन में से एक पुरोहित मुकुन्द का नाम १०५ रूपक में आ चुका है । नागरों की पुरोहिताई छुटने पर अन्य ब्राह्मण चौहानों के पुरोहित हुए हैं ॥

* यह संस्कृत अ+वाज तथा आ+वाज अथवा अवाद तथा आवाद से है ॥

† जो हाल में गुजरात प्रान्त में वडनगर कहलाता है उसी का नाम है । नागरखंड के पठने से उस के कितनेक अन्य नाम भी ज्ञात होंगे जैसे वट्टपुर वट्टनगर आदि । उक्त यथ में यह भी पठने में आवेगा कि इस स्थान में एक समय सर्पा का बड़ा उपद्रव हुआ था और वह महा-देवजी के त्रिजात ब्राह्मण को "नगरम् नगरम्" मंत्र प्रदान करने से दूर हुआ कि इसी से वह नगर कहाया । इस नगर के रहनेवाले नागर ब्राह्मण अब तक प्रसिद्ध हैं । यह कथा नागरखंड के ११३ वें अध्याय में सविस्तर लिखी है ॥

पाठान्तर—भई । बंधन । प्रचार । सहस । प्रस्तार उचार । जोगनीय । अथि । चहुवान । कीय । सहचरा । सथ । जोगिनी । आदिस । कीयौ । आभन । उभ कर जोगि आग किंह । हम । ताम । काम । जानै । वाभनी । कौ । साल । साले । कडों । करौ ते । सौ । करो अगनि । उवस्यौ । आराध । तें । लगि । विदु । रहित । कातिग । करंन । सानाना । सुनहु कान । पासल । पास कल । कहीजै । गोक्न । परवत । महाराज । वनास । कौमारिकान निभरना । मभू । नीकै । मै घुम्मन । दिसान । थान ॥

१८२ पाठान्तर—उद्यान । थान । तच्छितपुर । गोक्न । पहुंच्यौ ॥

१८३ पाठान्तर—उद्यान । उद्यान । काह । असख्य । भूमि । वरन । पुहुप्य । पीक । वकोर चकोर । सारस । दिपि । अनूप । ठाम । आराम । फरसत ॥ इस रूपक को पहिली दो तुके की पहिली यतियो मे दस दस मात्रा है और दूसरी में चौदह चौदह कि यह कोई ऐसा दोष नहीं कि जिस के लिये हम यथ-कर्ता को दोष दे । ऐसे उदाहरण अन्य बड़े २ कवियों के काव्यों में

वरन वरन्न पल्लव । पहुप द्रुम वेलि केलि फल ॥
 कीर पिक्क चक्कोर । कीर कोकिल कैतूइल ॥
 वाराह सिंघ मृग जूथ जहां । दिष्पिराज अचरिज भयौ ॥
 अन्नूप ठाम आराम अति । सिव परसत सब सुष भयौ ॥
 कं० ॥ ३८५ ॥ ६० ॥ १८३ ॥

कवित्त ॥ परवत में कंदरा । तहां किन्नर सु विराजै ॥
 वारि बूंद सिर भरै । पास सिंघ जूथ समाजै ॥
 आनि अचानिक राज । पाइ लगो करि प्रन्न पति ॥
 ॐ नमो सिव सकल । नमो अकलेस अकल मति ॥
 फल पहुप द्रव्य पंचा अमृत । धूप दीप अग्गें धरिय ॥
 अज्ञान दान चहुवान करि । तब अस्तुति सेवा करिय ॥
 कं० ॥ ३८६ ॥ ६० ॥ १८४ ॥

बीसलदेवजी का गोकर्णेश्वर महादेव की स्तुति करना ॥

भुजंगी ॥ नमो वाय भूनाय थानं भयानं । जटा मांछि गंगा झलककै प्रमानं ॥
 चयं नेच ज्वाला जलं चंद्र भालं । विषं कंठ माना रुनै रुंड मालं ॥३८७॥
 महा आदि मुद्रा नषं सिंगि नादं । सिधं देव देवं कथं साथ साधं ॥
 धरा धूरि धूसं विभूतं घसते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ ३८८ ॥
 वर्म आकादितं अंम नासं । रहै वीर भैरों गनं आस पासं ॥
 भासनं पुष्टि नंदी प्रचंडो । चवं वेद आमोद चौमठि चंडी ॥ ३८९ ॥

जैसे ध्यान हैं अतएव इस को कवियों की एक शैली मानना चाहिये । ऐसे स्थलों में प्रायः

१८६ पाठ में बहुत वाद विवाद कर सिर फोड़ा करते हैं अतएव हम एक और भी मृदम

१८७ हैं कि चंद्र और सूर जैसे आर्द्र-कवि गान विद्या में पारंगत होने के कारण जहां

१८८ में अनेक स्वर स्वरित हो गये हों वहां की एक दो मात्रा को दूसरी यति में मिला

१८९ जिस में स्वर न बिगड़े देखो यहां उतंग के तं और सलिता के ता पर स्वर

१९० पाठान्तर-प्रवत्त । किन्नर । बुद्धि । नपै । सिंघ । पाय । प्रनति । उं । द्रवि । पंटे ।

१९१ हैं रसी ।

१९२ पाठान्तर-झलकै । घंटे । सधं । दुरि । द्रुम । भैलं । आमा । पासं । पदंमासनं ।

१९३ रत वर । चौसठि । डक । डौलं । तडकै । मेरे । धूजै । धनुंऊं । धरे । शाम । मूलपार्था ।

बजै उक्क उँह उमंकं तउक्कै । धकै मेह धुज्जै हके गेन चक्कै ॥
 धनूकं पिनाकं धरै वाम हस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ ३९० ॥
 सिधं साध आराधयं शूलपात्री । सिवा ध्रंम साधेति के साध जानी ॥
 नरं क्रिनरं गंधवं नग जघ्यं । सुर आसुरं अच्छरी हूर रघ्यं ॥ ३९१ ॥
 सनक्काटिकं सप्त रिषान कालं । प्रथीवायुगेनाय तेजंस लालं ॥
 नमो भान चंद्रं नवं ग्रह समस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
 मिटै संकटं वाट घाटं विघटं । रटै नाम तो कोटि काटै कसटं ॥
 परं वेचरं भूचरं जंच मंचं । जपै व्याधि आसाधि भाजै अनंतं ॥ ३९३ ॥
 महादी पुरुषं महीमा मुरागी । नवं कौन तो सौं निपातिक परागी ॥
 गिरा गौरि अर्धंग कैनास वस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
 कैं ॥ ३९४ ॥ हू ॥ ३९५ ॥

साधेति । ज्यंनी । यंधवं । जखं । अरुदी । दिखं । सनकाटिकं । सप्त रिषी । सप्त रिषी । प्रथी-
 वायुगेनाय तेजं । भान । मिटै । नाम । तो । महा आदि । पुरिषं । पुरुषं । तवों । कोटि
 निपातिग । अरधंग । कयल्लास ॥

हमारे जो पाठक ऐसे हैं कि जिनको न तो कभी यह शंका हुई न अब है शंका
 होगी कि हिन्दी भाषा का यह अति प्राचीन महाकाव्य आदि से अंत परियत जाली
 को उचित है कि यूरोप देश निवासी मिस्टर यौस, डाक्टर हौर्नली, मिस्टर बीम्स और
 निवासी डाक्टर राजेन्द्रलालजी मित्र जैसे महाशयों को अनेक धन्यवाद दे कि उन
 अनेक लेखों के कारण से यह महाकाव्य सर्वसाधारण लोगों के जानने में आ
 समय और व्यतीत होने पर कोई मनुष्य जैसी कि तर्क वितर्कों से अब दोष देया
 रूपक में “नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते” का पाठ देख करके कदाचित यह अ
 इस वाे स्वाभी श्रीदयानन्द सरस्वतीजी के सिद्धान्तानुयायी किसी कवि ने भ्रष्ट
 क्योंकि नमस्ते शब्द का प्रचार या तो वैदिक समय में था अथवा इन दिनों
 में है और आदि के चार रूपको से वंद के धर्म सबन्धी विचार वैदिक समय के
 है । यद्यपि आज यह महाकाव्य इतना-प्रसिद्ध हो गया है परंतु भावी दोष देनेवाले
 कुछ बाधक नहीं हो सकता क्योंकि जो कुछ प्रमाण इस समय की प्रसिद्धि के उसको
 मिलेंगे उन सब को वह निःशंक होकर वर्तमान समय के दोष देनेवालों की भांति जाली
 है जैसे कि इस समय में सब राजपूताने के राज्यों के प्राचीन सखत इस रासे के ९९ वर्ष
 सखत के अनुमार मिलते हैं और उन सब को इसी रासा ने अशुद्ध कर दिया यह कह
 तरह वह भी कह सकता है कि इस समय में जाल ही जाल फैल गया था क्योंकि
 चंद्र स्वयम् साची नहीं दे सकता वैसे हम लोग भी उस समय में न होंगे । सारांश यह
 एक नखा सौ दुःख हरता है और थोड़ी हठ के आगे किसी की कुछ नहीं बटती ॥

बीसलदेवजी से गोकर्णेश्वर के सिद्ध का उनका नाम ग्रामादि पूछना ॥

दूहा ॥ इति अस्तुति राजन मुषह । पठि पुज्जिव पग बंदि ॥

देपि सिद्ध चकित भयौ । भाजन बुद्धि नरिंदि ॥

कं० ॥ ३८५ ॥ ६० ॥ १८६ ॥ *

कहतमिद्ध किहि पुरहुं तैं । कौन गोत्र किहि नाम ॥

इहि तीरथ आये हुतें । कै अगैं कोइ काम ॥

कं० ॥ ३८६ ॥ ६० ॥ १८७ ॥

बीसलदेवजी का अपना नाम ग्राम आदि बताना ॥

दूहा ॥ पुर अजमेर सु वास हम । गोत्र गयाति चहुआम ॥

बीसल दे सो नाम सिध । अथौ करन सनान ॥

कं० ॥ ३८७ ॥ ६० ॥ १८८ ॥

सिद्ध का गोकर्णेश्वर के तीर्थ की महिमा वर्णन करना ॥

रेख ॥ सिद्ध कहत सुन राजन वक्तिय । जो तू तजि अथौ निज धक्तिय ॥

इह गोपेसुर थान अपूरव । नित प्रति निसा उतरै सौ रंभ ॥

कं० ॥ ३८८ ॥ ६० ॥ १८९ ॥

इन थानक चारन वर पाण । तिनके नाम कहि रु समभाण ॥

भसुमाकर रावन मधु कीटक । तिन उपास जिराहर घट टक ॥

कं० ॥ ३८९ ॥ ६० ॥ १९० ॥

इहै तिथ की महिमा गाण । धेनु दुग्धतैं आनि ह्वा ॥

जैसै ध्याण तैसै पाण । इतनी कह सिध ऊठि सिधाण ॥कं० ॥४००॥ ६० ॥१९१॥

१८६ पाठान्तर—भौ ॥

* यह रूपक स० १६४७ और १७७० की लिखी पुस्तकों में नहीं है जो इन से भी पुरानों को में यह न मिले तो इस को तेषक मानना चाहिये । किन्तु अभी तो हम इस को तेषक प्रदान नहीं कर सकते ॥

१८७ पाठान्तर परहुं । तैं । अथौ । नाम । आगे । काम ॥

१८८ पाठान्तर—नाम । सनान ॥ बीसल दे शब्द में जो दे है यह देव शब्द का सत्पित्त है इसी तरह समरसी में सी मिघ धा सिह का सत्पित्त है ॥

१८९ से १९१ पाठान्तर—वक्तिय । इह । धरतीष । इहा । पामेपट । थान । प्रति । थानक । न इर । च्यार नर । नाम । उपास । टक ॥ ए हैं । धेनु । तैं । आनि । जैसै । तैसै ॥

बीसलदेवजी का तीन दिन निराहार उपवास कर गोदानादि
करना और महादेव का अपहरा को उन्हें उठाने भेजना ॥

दूषा ॥ राजन मन चकित भयौ । सुनि थानक की विधि ॥

जो तो अभि अंतर * वसत । कच्चि ते तौ सिध सिद्धि ॥

कं० ॥ ४०१ ॥ सू० ॥ १८२ ॥

अरिस्त ॥ सहसं गौ मंगाइ स्वच्छिय । देइ द्रव्य लै अच्छी अच्छिय ॥

सहस घट शिव ऊपर कीनौ । तीन उपास नेम तब लीनौ ॥

कं० ॥ ४०२ ॥ सू० ॥ १८३ ॥

तीन दिवस रहै राव निराहर । जल फल तज्यौ पवन को आहर ॥

एक निसा इक अपकर आई । सब अपकरा नृत्ति करि गाई ॥

कं० ॥ ४०३ ॥ सू० ॥ १८४ ॥

बहुत बेर पीकैं बोल्यौ हर । अपकर जाइ उठेउ वचै नर ॥

सो अपकर नर देषन आई । देषति नृपति वसि नींदा माची ॥

कं० ॥ ४०४ ॥ सू० ॥ १८५ ॥

अपहरा का बीसलदेवजी को महादेव के प्रसन्न होने और
मन की कामना पूरण होने का कहना ॥

दूषा ॥ तुम कौं शिव सु प्रसन्न भय । कछौ सोहनि वर कोचि ॥

जाहु थान हरि थान तजि । तूठे सभर तोचि ॥

कं० ॥ ४०५ ॥ सू० ॥ १८६ ॥

तेरे मन की कामना । ऊपर शिव को पाइ

इतनी कच्चि करि सोहनी । दीयौ सु नृपति उठाइ ॥

कं० ॥ ४०६ ॥ सू० ॥ १८७ ॥

* चंद्र की भाषा का व्याकरण तो हम कुछ समय में बनाकर प्रकाश करेंगे परन्तु एक सूत्र उस का यह स्मरण में रखना चाहिये कि उस में घट-भाषा-वत् संधि विकल्प करके होती है । होने के उदाहरण बहुत आवेंगे परन्तु न होने के उदाहरण यह अभि+अंतर और पंचा+अमृत है ॥

१८२ पाठान्तर-विधि । जि । तौक । तो । सिद्धु । सिध ॥

१८३ से १८५ पाठान्तर-सहस । गऊ । मंगाय । स्वच्छिय । देय । ले । अच्छीय । घट । शिव । तिन । द्यौस । रहै । निशा । एक । आईय । अपकर । नृतत । गाईय । पीछे । बोलै । उठाउ । वहे । आइय । देषि नृपति वसि नींद अमाइय ॥

१८६-८७ पाठान्तर-को । सौ । शिव । हुष । थान । संभू । को । पाय । दीयौ । नृपति । उठाव

बीसलदेवजी का अपने को पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होना देखकर
वहां बीसलपुर बसाय महादेव का देवालय बनने का हुकम देना ॥

कवित्त ॥ पहुर रात पाङ्गिनी । राज आण डेरा मधि ॥

बढिय काम कानना । भई पुरिषातन की सिधि ॥

प्रातकाल करि न्हाण । धेन विप्रज कौं दीनी ॥

पंचा अमृत धूप । दीप सिव सेवा कीनी ॥

तिहि बार हुकम * देवल करन । पुर + बसाइ बीसल + धरुच ॥

* यह हिन्दी शब्द हुकम अथवा हुक्कम संस्कृत शब्द सूक्तम् से बना है ॥

+ चाहुवान वंश की ख्यातिओं में बीसलदेवजी का उपनाम पुष्पक होना लिखा है और जो आज कल गुजरात में विशल नगर अथवा विसन नगर करके प्रख्यात है वही यह बीसल-पुर बीसलदेवजी का बसाया हुआ है और उसी दिन से बडनगरे नागरो में के कुछ नागरो की विसननगरा नामक संज्ञा पडी है । हमारे इस अनुमान की कविराज श्रीदलपतरामजी सी० आई० ई० अपने ज्ञातिनिबन्ध नामक ग्रंथ में नीचे लिखे प्रमाण से पुष्टि करते हैं—

जे रीते औदिव्यप्रकाश तथा श्रीमाली महात्म्य स्कंध पुराण मा छे, तेमज नागर ब्राह्मणोंनी उत्पत्ति नो यय "नागरखंड" नामे घणो मोटो छे, ते पण स्कन्ध पुराण मा छे । ते नागरो नी उत्पत्ति गुजरात मा बडनगर गाम मा यई । पण ते क्यारे यई, तेनो सवत काई ओ पुस्तक मा लख्यो नयी तेनूं कारण अज जाणवूं के संवत लखवा थी तथा बनाघना (नूं नाम लववा थी यय जूनो केहेवाय नही । पण नागर ब्राह्मणो नो प्रवराध्याय नामे यय मा जोयो छे तेमा लखे छे के,

श्लोक ॥ श्रीमदानंदपुर महास्थानीय पचदशशतगोचराणां ।

संवत् २८३ पूर्वतिष्ठमान गोचराणां समानप्रवरस्य निबंधः ॥

अर्थ ॥ शोभायमान अथवा आनंदपुर, मोटास्यानवाला पदरसे गोत्रोमायी संवत् २८३ थी पेहेला रहेला गोत्रोना अकज सरखा नामीवानो निबंध लखूं छू ॥

ओ उपर थी आशरे मालम पडे छे के ओ वखत मा नागरो नी नात बधाई छे । अने त्यार पछी तेमा थी विसलनगरा नी नात जुदी पडी तैरु कारण केहे छे के विसलदेव राजाये विसल नगर बसावने त्या जगन कीघो हतो । त्यारे बडनगर थी केटताअक नागरो त्या जोयो गया हता । त्यारे राजाओ तेरो ने दक्षणा चापवा माई । त्यारे ओ नागर ब्राह्मणोये कहूं ते अने केई नी दक्षणा लेता नथी । त्यारे राज के कर्णुं ते तमने बनता पीडा आनी घूं । अने कर्णुं के पानना बीडा मा गाम ना नाम लयी ने ओ नागर ब्राह्मणो ने आष्या । त्यारेते ब्राह्मणो ये पानना घाया लीघा । तेमा जायू त्यारे गामना नाम लया हता । तेयो पटी तो ये गाम निवा रघुव कीघा । ओ बात बडनगरना नागरोये जायी त्यारे तेरो ओ कर्णुं के अये राजा तू राम तीय बाने अये

मंगारु हस्ति अरुवार * हुइ । फिस्ती राज घर आतुरह ॥
दं० ॥ ४०७ ॥ हू- ॥ १९८ ॥

आपणी नातणी बाहर छे । ते दिवस थी विसलनगरानी नात जुदी थई । कोई केहे छे के तेज राजाछे तेज बखतमां साठोद ग म नू नाम पान मा लखी ने जेने आपूं हतूं ने साठोदरा नागर थया । चित्रोड लखी ने जेने आपूं ते चित्रोडा नागर थया । तेमज प्रश्नोरा तथा कृष्णोरा पण थया । ६ प्रकार ना नागरो नां नाम । बडनगरा नागर १ विसल नगरा नागर २ साठोदरा नागर ३ चित्रोडा नागर ४ प्रश्नोरा नागर ५ कृष्णोरा नागर ६ ॥ हवे विचार करो के विमलदेने विसल नगर सं० ९३६ थी साल मां घसाधूं अे प्रथिराजरासा मा चंद्र कविये लखेलू छे ॥ देहा ॥ सो सवत नव शत अधिक । वर्ष तीस छह अग ॥ पुर प्रतिष्ठ वीसल नृपति । राजत सकले जग ॥ १ ॥ त्यार पछी विसलनगरानी नात बंधाई छे । तेथी साफ जणाय छे के परमेश्वरे काई नातो बाधी नथी । फकत माणसोअे जुदा जुदा बाडा बाध्या छे । त्यारे ते बंधाया थी हालमा जे हरकतो थती होय ते बंध करवा चहाय तो करी शके खरा । विसल नगराअो राजानूं दान लेवा थी जे बटल्या होय तो हाल मा बडनगराअो मुसलमाननी सेवा करे छे तेअो अेनायो पण बटल्या कहेतेवाय । वास्ते अेवो जुठो बेहेम कोड़ी देवो जाइये । अने जरूर समझवूं के तेअो अेक बीजा थी काइ बटलाशे नहीं । इत्यादि ॥ ज्ञाति निबन्ध पृष्ठ ४३ से ४५ तक ॥

नागरखंडना अध्याय २३ पछे तेमा १०८ मा अध्याय थी ४ या अध्याय मां लखे छे के आनर्त देशना राजाअे चमत्कारनामे शेहेर वसावी ते ७२ गोत्र ना ब्राह्मणो ने आपवा मांड्यां, तेमा ८ गोत्रनाअे लीधा नही ने ६४ गोत्रनाअे लीधा । पछी त्या काई कारण थी नागनी उत्पत्ति घणी थई तेअोअे घणां माणसोने करडी खाधां तेथी केटला ब्राह्मणो नाशी हुट्या । पछी अेक अपमान करेले ब्राह्मणे (त्रिजातके) मन्त्र नो उपाय कयो तथा अे सऊ ब्राह्मणो अे मलीने लाकडी पथरा वगेरे थी हजारो नागने मारी नाख्या त्यारे अे शेहेरनू नाम नगर (भेर विनानुं) ठसूं ने ते ब्राह्मणो नागर कहेवाया । पछी १५८ मा अध्याय मा लखे छे के अेक पुष्यक नामने पुहपे पर स्त्रीने सग घणा वर्ष कस्यो, ते पछी पस्तावो करीने तेनूं प्रायश्चित करवा बडनगर मा आधो त्यारे सऊ नागरो अे कसूं के अे पाप मटवानो उपाय नथी । त्यारे अेक चंडशर्मा नामने नागरे काई प्रायश्चित करावूं, तेथी नागरोअे चंडशर्माने नात बाहर भुक्यो तेथी ब्राह्म नगरानी नात जुदी बन्धाई ॥

पृथ्वीराजरासा मां लखूं छेके वीसलनगर वसावनार वीसलदेव राजाअे पुष्कर क्षेत्रमा परस्त्रीने सङ्ग कर्या हतो, तेथी ते स्त्रीअे आप दीघो हतो जे तूं असुर थईश । पछी अे पाप मटवानो उपाय वीसलदेव शोधतो हतो । मा टे पुष्यक नामने पुहपे नगर खण्ड मा लख्यो छे ते वीसलदेव सम्भवे छे । ने वाह्य नगरा जे लख्या छे ते वीसलनगरा, साठोदरा वगेरे सम्भवे छे इत्यादि ० ज्ञात निबन्ध पृष्ठ ७५-७६ ॥

* यह हिन्दी शब्द संस्कृत अश्वघर अथवा अश्व + अर अथवा अश्व + आर से बना है अरबी अथवा फारसी से अनुमान करना व्यर्थ है ॥

१९८ पाठान्तर-पहुर । कामन । हुई । न्हान । विप्र । कों । घसाय । वीसल पुरह । मगाय । होइ ॥

बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और सब कथा प्रसंग पवार जी राणी से कहना ॥

दूहा ॥ दो दिन के मग एक दिन । आण बीसल गेह ॥

किय प्रवेश नृप सहर * में । सुचित भये अह मेह ॥

कं० ॥ ४०८ ॥ छ० ॥ १८८ ॥

जंघ धाम विमराम किय । रंग साल चतुरंग ॥

प्रौढा मचल पवार सेां । कचिय सु कथा प्रसंग ॥

कं० ॥ ४०९ ॥ छ० ॥ २०० ॥

सब काम-लुब्धाओं को सोच होना कि शंभू ने ऐसा क्या वर दिया ?

दौगई ॥ काम लुब्ध बोनी सब कामनि । चार जाम गई जागत जामिन ॥

सब नारिन कौं सोव उपनौ । औसौ कचा संभु धर दिनौ ॥

कं० ॥ ४१० ॥ छ० ॥ २०१ ॥

बीसलदेवजी का कामान्ध हो अकर्तव्य कर्म करना ॥

कवित्त ॥ राति दिवस एकसी । काव कामना सु बड्डिय ॥

प्रौढ मुग्ध वय वृद्ध । स्वै यर हरि चिय गड्डिय ॥

पर घरनी जै बोनि । घरी नह विलै लगवै ॥

जो विलंब करि रहै । ताहि हनिवे कौं आवै ॥

भै भीत काम बिसराम विन । नाम सुनत औदिक परै ॥

अजमेर नैर बीसल नृपति । प्रमुग्ध देषत प्रजरै ॥

कं० ॥ ४११ ॥ छ० ॥ २०२ ॥

* हिन्दी सहर अथवा सहरि शब्द अरबी अथवा फारसी से नहीं है किन्तु संस्कृत स+हलि से ॥ SK स+हलि=Agriculture, furrows Hence a place where agriculturists reside. Dwelling & habitation, & The Hindi हर is also from the SK हल A plough, the earth In the same manner नगर a town is from नग a tree, a mountain & लृ off

१८८-२०० पाठान्तर-कै । कै । सेव ॥ धाम । महिलए । धारि । कै ।

२०१ पाठान्तर-काम । याम गय । जाम । को उपनौ । औसौ । शंभु । दीनौ ।

२०२ पाठान्तर-काम । कामना । बाठय तस । सवे । हरन नारी तस । कौं । विलंब ।

तारि के पहिले तो विशेष है । भय । काम । बिसराम । नहि । नाम उन्दकि परै । नृपति । प्रजरै ॥

दूहा ॥ पहन धनकनि देह दुष । अह कटन अह हय्य ॥
धरै धन्न निज वेस मधि । इहै वानि समरथ्य ॥

ॐ० ॥ ४२२ ॥ ६० ॥ २०३ ॥

कवित्त ॥ जिते जाइ इह मान । काम कामना सु बढिय ॥
अवर ताहि उपरह । वयन अरप पर चढिय ॥
तिन दिष्यत बर बस्त । मंगि अप्पन मुष अप्पच्चि ॥
अवन्ता सँग उल्हास । काहु की कानि न रप्यच्चि ॥
दुज पति वैस सूद्रह वरन । तजै न किह तक्कत नयन ॥
बीसल नरिंद इह भय अकलि । लहै न कहुं निस दिन चयन ॥

ॐ० ॥ ४२३ ॥ ६० ॥ २०४ ॥

**बीसलदेवजी के दुराचरणों से दुःखी होकर नगर के लोगों
का प्रधान के पास पुकारने जाना ॥**

दूहा ॥ दीरघ जन मिल नदर के । गए द्वार परधान ॥
बढि अचैन नर नारि सब । नहीं रहै रजधान ॥

ॐ० ॥ ४२४ ॥ ६० ॥ २०५ ॥

२०३ पाठान्तर-धनकन । मुष । गिह । कटन । हय । निसि । वानि । समरथ ।

२०४ पाठान्तर-मान । काम । कामना । बढिय । उपरह । चढिय । दिष्यत । मुष्य । सग
काऊ कांणि । रपहि । त्रीय । बईस । किहि । इहै । लहै । निसि ॥

हमारे पाठकों में से जो ऐसे हैं कि वे Political officers रहे हैं अथवा जिन्होंने बीसल देवजी की जैसी अनीतियों के वृत्त गोप्य Political Reports में पढ़े हैं अथवा जो Mysteries of the Native Courts के ज्ञाता हैं अथवा जिन्होंने वाजिदअली शाह की सायबी का पूरा ज्ञान उपार्जन किया है, वे चन्द्र के लिखे बीसलदेवजी के वृत्तान्त पर नविश्वास नहीं करेंगे और न उसे अत्यन्तभाव का समझेंगे किन्तु कवि के स्पष्ट-वक्तृत्व की प्रशंसा करेंगे । इतिहास लिखनेवाले का यह मुख्य काम है कि वह घाल चलन के विषय में स्पष्ट वृत्त लिखे कि जिस से उस की भाषी रतान शिक्ता ग्रहण करें । हमारे इस देश में हम लोग इस बात को फांसी लगने जैसा अपराध समझते हैं और रात्रि दिन ऐसी ही अनीतियों में लगे रहते हैं अतएव पुरुषार्थ का बड़ा टोटा हमारे यहा आ गया है । । ।

२०५ पाठान्तर-मिलि । कै । परधान । बढि । अचैन । नहीं । रहसि । रजधान । रिसान ॥

सब का आपस में सलाह करके बीसलदेवजी का राजधर्म अरज करना ॥

कवित्त ॥ तिन मति तिहिं पुर होइ । लोइ मति समथ समंडव ॥
बहुत भूमि भूमियां । चढवि तिन धर पुर घंडव ॥
इह सु भ्रम्म राजेन्द्र । दुष्ट कंकट सिर बढै ॥
अनड अनड संचरै । धरा रष्यन धर अढै ॥
इह कखौ मंत तिन मंचियन । अरु सब सहर सु पंच जन ॥
इह कथिय बत्त त्रिप सम तिनह । दवरि विशेषक भूमि यन ॥
छं० ॥ ४१५ ॥ छ० ॥ २०६

बीसलदेवजी ने उत्तर दे कहा कि यह सब मैं जानता हूं पर
काम ज्वाला के बढ़ने से मैं लाचार हूं अब तुम जो
कहागे वह करूंगा ॥

कवित्त ॥ दुज्जर काय सु कहत । राज मन मांहि समझौं ॥
काम ज्वाल सो बढिय । तुम हि तिन कै दुष दभौं ॥
हैं इह जानौं सबै । पै मुहि मन वसि न होई ॥
सदा पहर जिम काह । रहै कूई की कूई ॥
तुम कहौ सु हैं करि हैं अवसि । बोलि लेहि किरपाल हैं ॥
जहँ जहां दिसा तुम संचरौ । तहँ तहँ आजं चढि हैं ॥
छं० ॥ ४१६ ॥ छ० ॥ २०७ ॥

इस पर बीसलदेवजी का किरपाल को बुलाना और उसका आना ॥

दूहा ॥ दै फुरमान * प्रधान तव । बुल्लाये किरपाल ॥

२०६ पाठान्तर-मत्तिह । समथ्य । सडव । भूमियां । घंम । कहे । अनड अनड । रयन ।
कथिय । तिनहि । विशेषक । भूमियन ॥

२०७ पाठान्तर-दुजर केत । समझौ । काम । बडीय । कै । दभौ । हैं । जानौ । सबै ।
पै । मोहि । कांह । हैं । कू । तहां तहां । चढि । हू ॥

* यह हिन्दी शब्द सस्यत स्फुर-मान से है जैसे कि स्फुरिमान्, स्फुरतप्रता और स्फुरि-
मत् इत्यादि । इस फुरमान अथवा फुरमाना आदि शब्दा का प्रचार राजस्थान अथवा बड़े प्रति-
ष्ठित लोगो की मडली में आज भी बहुत है । वास्तव में यह उस कहने अथवा भाग के अर्थ में

संभरि सैं आद्यौ सहर । न्हियै अनूप रसान् ॥

कं० ॥ ४१७ ॥ कू ॥ २०८ ॥

बीसलदेवजी का किरपाल को कहना कि तरवारि की पृथ्वी
है सो हम नव खंड की षड्ग खोसने को षड्ग बांधते हैं
तुम खजाना संग ले बीसल सरवर पर डेरा करौ ॥

कवित्त ॥ आय नवै किरपाल । पाइ राजन कै लगौ ॥

मुह अगँ दुअ षाग । धरै नग जरिन उनगौ ॥

बंधिय तेग विचार । सु गुन राजन इह कथिय

जिम जिम विद्या दान । निमह निम षगकी प्रथिय ॥

इहै सगुन हम कैं भयौ । षग षोतैं नव षंड धर ॥

ब्रह्मांड मंड सब बसि करौ । मंडौ मेर सुमेर धर ॥

कं० ॥ ४१८ ॥ कू० ॥ २०९ ॥

दूहा ॥ सुनि किरपाल सो मुष वचन । कठि षजीन संग लेहु ॥

बीसल सरवर ऊपरैं । ध्रुव दिसि डेरा देहु ॥

कं० ॥ ४१९ ॥ कू० ॥ २१० ॥

प्रयोग होता है कि जो किसी के द्वारा कहा जाय अथवा आज्ञा किया जाय । जैसे हमारे रज-
वाहों में जहां अभी प्राचीन देशी रीति प्रचलित है वहां जिससे राजा स्वयम् नहीं बोलते । तब
राजा जी तो किसी अन्य पुरुष को कहते जाने हैं और वह पुरुष उस इष्ट मनुष्य को कहता जाता
है । तथा किसी अपने से छोटे अथवा आधीन को कागद पत्र के द्वारा कहा अथवा आज्ञा किया
जाय उसको फुरमान वा फुरमाना कहते हैं

२०८ पाठान्तर फुरमान । प्रधान । बिल्लाये । बुलाए । सौ । अनूप ॥

२०९ पाठान्तर-पाय । आगे । दुय । धरे । उनगो । सगुन । कथिय । दानं । तेम षग
की इह पृथ्वीय । इह सगुन अयैं हमको भए । सो ब्रह्म मंड मंड । ब्रह्म मंड मंड । कयो । दंडौ ॥

* हिन्दी में खजाना और उस से बने शब्द आते हैं उस का वाचक यह प्राचीन हिन्दी
शब्द सब के ध्यान में रहने योग्य है । यह संस्कृत खज्जूर रौप्य silver का अपभ्रंश है । इन
शब्दों का अरबी और फारसी के अभ्रंश अनुमान करना व्यर्थ है । देखो, सं० खज शब्द भी युद्ध
और स्वार्थ के अर्थों में प्रयोग होता है । और वह भी इतने प्राचीन समय से कि ऋग्वेद ८ । १
७ में “ अल्पि युष्म खजकृत पुरन्दर० ” कहा है ॥

पाठान्तर-किपाल । संग । उपरैं । उपरैं । दू । दिशि ॥

बीसल सरवर पर बीसलदेवजी के आधीन तथा सहायक
इष्ट मित्र राजाओं का उनके दिग्विजयार्थ अटन के लिये
एकत्र होना और गुजरात के चालुक्य राजा का वहाँ न आना
अतएव बीसलदेवजी का उस पर चढ़ाई करना और वालुका
राय का यह सुनकर सामना करने का आना ॥

पद्दरी ॥ भरि चले सुतर*रथ एक राह । बीसल तडाग दिय वारि गाह ॥
फुरमान दए लिषि दस दिमान । सब आय मिले अजमेर थान ॥ कं० ॥ ४२० ॥
परिहार महनसी मिल्यौ आय । मंडोहर के नर लगे पाय ॥
गच्छिजात मिले सब सभा मैर । पावासर तांवर राम गौर ॥ कं० ॥ ४२१ ॥
मेवात धनी आए महेश । मोहिछ दुनांपुर दिए पेश ॥
बल्लोच मिले सब पाइ बंधि । बांभन्या नृपति तजि गए संधि ॥ कं० ॥ ४२२ ॥
भटनेर राय की आइ भेट । मुलतांन नाल बंध थटा थेट ॥
फुरमान गए जैसलहमेर । भेय्या सब भाटी भये जेर * ॥ कं० ॥ ४२३ ॥
जादैं रू वधेला मल्हवास । मेरी बड गूजर आइ पास ॥
अंतरहबेध कूरंभ आइ । सब मेर जेर होय लगे पाइ ॥ कं० ॥ ४२४ ॥
आए सपाइ चढि जैतसीह । तच्छितपुर के नर संग लोह ॥
आये सु चढि उदया पवार । निरवान डोड चढि चले नार ॥ कं० ॥ ४२५ ॥
चंदेल दाहिमा चरन लगिग । वसि किये भूमिया धूनि घग ॥
चालुक्य कोइ आयौ न पाइ । रहै मुकरि जेर * तरवार * साहि ॥ कं० ॥ ४२६ ॥
सुनि बोड जैतसी गोलवास । घर वार नगर को रष्यपान ॥
सौं पौं सुनुमहि अजमेर थान । वालुक्य कितक पावै न जान ॥ कं० ॥ ४२७ ॥
दर * कूच कूच * चढि चलयौ वीर । गिरि मग होइ सर सुक्कि नीर ॥

* इस रूपक में के कई एक शब्द भाषा के शोधक विद्वानों के ध्यान में लेने योग्य हैं जैसे—
सुतर (SK सु+तर or तरि तर), जेर (SK जूर) or जूरी to reduced, to injure, to hurt, to
dicty, to grow old, to wound or kill) जेर (SK जुड to mind, to join, as in make a joint) तारवार
(SK तरवारि) दर (SK दृ to divide, cut or break, to preserve, &c., and also अप्) कूच or कूच
(SK कुञ्च to go, to go to or towards.)

इस के अतिरिक्त यह भी पाठको को ज्ञान हो कि इस प्रसंग में कहीं चालुक्य और कहीं
चालुक्य पाठ है सो जहा जैसा पुस्तक में मिला वैसा रखा गया है किन्तु जिनकी पुस्तक जिनियों

सोभनि सोलं ती पच्छिनि चोट । सैं लोट किये धर पारि कोट ॥ कं० ॥ ४२८ ॥
 चारौर भंजि गढ रौर पार । अरि माजि मण गिर बन मभार ॥
 आव् नडि भेद्यो अ उलेस । तत्काल नियो गिरिनारि देस ॥ कं० ॥ ४२९ ॥
 वागरि सोरठ रूपना सुइ । दंड मानि मिले नइ मिले जुइ ॥
 गुजरात देस भित्तर हजार । बालुका राइ चालुक भुभार ॥ कं० ॥ ४३० ॥
 सुनि बत्त चढ्यो अहंकार बंध । गिव सकति पूजि धरि कुन्त कंध ॥
 असवार लार हजार तीस । मद् भरत नाग पं वास वीस ॥ कं० ॥ ४३१ ॥
 जोजनच एक पर करि मिलान । आवाज सुनिय तव चाहवान ॥
 कं० ॥ ४३२ ॥ कृ० ॥ २११ ॥

बालुकराव का आना सुनकर बीसलदेवजी का सेना ले चढ़ना ॥
 दूहा ॥ सुनि आवाज बीसल नृपति । आयौ बालुक राव ॥
 राज मंगि है वर चढ्यौ । दियौ निसान निघाष ॥
 कं० ॥ ४३३ ॥ कृ० ॥ २१२ ॥

पड्वरी ॥ दल चढ्यौ साजि बीसल सु राज । बट्टिय सु जांनि अरि पुर आवाज ॥
 सित्तर हजार सेना सु बाज । भिंगरि सलूर पावस निगाज ॥ कं० ॥ ४३४ ॥

की लिखी हुई हैं उनमें च और व में बहुत ही कम फरक देखने में आया है कि जिस से मैं अनुमान करता हूँ कि लेखकों ने धोका खाकर चालुक का बालुक पाठ न लिख दिया हो ॥

* हिं० निशान अथवा निसान (S K नि+शाण । e नि before and शाण coarse cloth sack cloth, Canvas. A small tent or screen used especially as a retiring room for actors and tumblers, &) Hence a standard, an ensign, flag, banner & colours, &c इस निशान शब्द का प्राचीन देशी राज्यों में अभी तक प्रचार है और troop और Company के अर्थ में भी प्रयोग होता है जैसे अमुक राजा ने अपने अमुक सरदार पर दो निशान चडा दिये । अमुक अमुक निशानों में भगड़ा वा लडाई हो गई । मैं अमुक निशान का हूँ और वह अमुक का ॥

२१ पाठान्तर-दीय । फुरमान । दिसान । यान । आई । गहिलोत । पावासर । तूअर । मोहिल । वलोच । बंभन्या । सिध । आय । बंध । फुरमान । जेसलहमेर । जदो । मल्हनवास । आय । अंतरहवध । आय । पाय । सपाय । जैतसिह । तद्धितपु । साथ । सय । सय्या । लीय । घठि । पवार । निरवान । भूमिया । मुसकरि । रपवाल । सोपोस । यान । कहाक । कितहु । जान । कूच कुच । मंगि । सोभति । सोकति । सोलकि । सैं । जालौर । पारि । मभारि । लीयौ । रूपन । डड । सतरि । राय । कुंत । पचास । जोजन । मिलान । चाहवान ॥

२१२ पाठान्तर-आवाज । मग । हैवर । चढ्यौ । दीयो । निसान । न । घाव ॥

२१३ पाठान्तर जान । सतरि । बाजी । भिंगर । कि गाज । ठलकति । कुंत । जुत । जुंतु । सिप । पघर । बंधि । भूमिया । मंडि । स० १६४७ और १७७० में "करि आगम गम्य दल अट्टल रक" है । जव । जजलौ । जजलौ पदक । मुकाम । मुक्ताम । गाम ।

ढलकंत ढाल भलकंत कंत । विकसंत सूर सकसंत जंत ॥
 हल हलत सिंधु वर चल अनू । भल मलत सिष्य पष्यर सनूप ॥ कं० ॥ ४३५ ॥
 वर विजय बद्धि चालुक्य देश । बहु मिलत भूमियां लेय पेस ॥*
 अरि गहन गाढ तिन धरनि पंड । इहि रीत राज बसु विजय मंड ॥ कं० ४३६ ॥
 कारि अग्न मह गल सहस इष्य । वर माघ मास उज्वलौ पष्य ॥
 दस कोस जाय मुक्काम † कीन । बिच गाम नगर पुर लूट लीन ॥
 कं० ॥ ४३७ ॥ ह० ॥ २१३ ॥

बीसलदेवजी की खबर सुन बालुका राव का जलभुन जाना ॥
 दूहा ॥ सुनिय षवरि ‡ बालुक तवै । तमकि सु जयौ ताम ॥
 मानों प्राजारिय अग्नि । नर निरधूम बिराम ॥
 कं० ॥ ४३८ ॥ ह० ॥ २१४ ॥

बालुका राव का नित्य नेम करके लड़ने को तयार होना ॥
 पड़री ॥ बालुका राव चालुक्य वीर । मंगाव नीर मंज्यौ सरौर ॥
 हरि चरन अंब अंजुली कीन । परि कंठ विष्य धारिय कुलीन ॥ कं० ॥ ४३९ ॥
 जुध आज करौं कहि कहा कानि । जो जाउँ भज्जि तौ गोव गानि ॥
 इतनी भूमि पिची न कोह । अडुौ न फिख्यौ मिलि लेय लोह ॥ कं० ॥ ४४० ॥
 पषरैत तुरिय पषरैत गज्ज । नर कस्से वगतर सिलह सज्जि ॥
 असवर भये तव षवरि दीय । बालुका राव अयौ अवीह ॥ कं० ॥ ४४१ ॥

* हि० पेस (SK प्रैय m A servant, a slave n Service, servitude Hence a tribute or present such as is only presented to conquerors, princes, great men and superiors)

हि० पेश अथवा पेस+कशी अथवा कसी (SK प्रैय and कृष्य = to draw, to draw out of, to attract, to raise, to draw up, &c)

† हि० मुक्काम or मुक्काम (SK मुक्त+काम=परिश्रम labour) Hence a halt, a stop n a march, &c Some think it from the SK मकुट mfu going lazily, slowly, &c or SK मक or मकि or मुक्क to go, to move, &c, & अग्रनि a road or SK मुक्त+काम to =

‡ हि० षवरि or खबर SK ह्या to relate, to relate to, to say, to tell, to relate, to relate known &c

२१४ पाठान्तर-षवरि । लनि । ताम । स० १८५८ की में 'अने प्राजारिय अग्नि यन' ० बिराम ॥

बालुका राव का बीसलदेवजी के पास श्रीकंठ भट्ट को भेज संदेशा कहला ॥

श्रीकंठ भट्ट चहुवान पास । तुम जाय कहौ इहि विधि प्रकास ॥
 श्रीकंठ भट्ट गय अरि सु थान । बीसलदे भेज्यौ चाहुवान ॥ कं० ॥ ४४२ ॥
 आसीस दई उभारि हथ्य । बालुका राव की कची कथ्य ॥
 जितनै नृपति सौं मुदै काम । तितनै रयति सौं कौंन काम ॥ कं० ॥ ४४३ ॥
 तुम बुरी करी करि रयति बंदि । औसी न करै हिंदू नरिंद ॥
 अब कंठि रयति फिरि जाहु धाम । अजयेर सहर संडौ विश्राम ॥ कं० ॥ ४४४ ॥
 हौं ब्रह्म राय जुध करन जोग । जुध भाजि जाउ तौ परै सेग ॥
 हम मरन दिवस है मंगलीक । सो पास जिते नृप सुद्ध लीक ॥ कं० ॥ ४४५ ॥
 हम तुम नही कबहू विरुद्ध । इह जानि जाहु फिरि तजौ जुद्ध ॥
 हम तुम काम इहि घेत आज । को रहै घेत को जाइ भाजि ॥ कं० ॥ ४४६ ॥

यह सुनते ही बीसलदेवजी का लड़ने को आज्ञा देना ॥

इतनी जु सुनत ही चाहुवान । तिहि वार हुकम करि द्यौ निसान ॥
 पषरेत किये है वर मतंग । संनाह पहरि सब नरनि अंग ॥ कं० ॥ ४४७ ॥
 दोउ फौज निजर दिठाब मिछि । उपहै सिंधु जनु लहरि जछि ॥
 कं० ॥ ४४८ ॥ रू० ॥ २१५ ॥

बीसलदेवजी का चक्रव्यूह और बालुकराय का अहिव्यूह रचना ॥

दूहा ॥ चक्रव्यूह चहुवान किय । अहि मन बालुक राव ।

कै भेदै कै मधि रहै । दई करय निरवाह ॥

कं० ॥ ४४९ ॥ रू० ॥ २१६ ॥

२१५ पाठान्तर-राव । बालुक । मंगाय । मभ्यौ । अजुलि । धारीय । जुद्ध । करों ।
 काल्हि । काल । जौ । जाउं । जाऊं । भजि । गोतमालि । काय । अडो । फिर । पषरै । पषरैत ।
 गज । कसे । सजि । भए । जाहुं । कहो । थान । स. १७७० में "भेज्यौ बीसलदे चाहुवान" ।
 दान । दइ । उभारि । हथ । राय । कथ । जितनै । सो । काम । तितनै । सौं । कौंन । काम ।
 बुरीय । करी । करै । हिंदू । धाम । विश्राम । हौं । ब्रह्म वस । भाजि । जाऊं । पासि । शुद्ध ।
 तुम । तुम । नही । विरुद्ध । तुम । काम । जाय । चाहुवान । निसान । हैवर । हैं वार । दोऊ ।
 २१६ पाठान्तर-चाहुवान । बालुका । राय । दइ ।

बीसलदेवजी और बालुकराय की फौजों का परस्पर युद्ध करना ॥
 भुजंगी ॥ मिले प्रात कालं दुअं दिष्ट फौजं । मनों देषिअै जानि सामुद्र मैजं ॥
 गजं आय भूमै भले सात्र रोटं । षई षंड सुंडं करे अप्य चोटं ॥ ४५० ॥
 भई तीरकारी कुटे नाल वानं । परी खोर की धुंध सुभक्तौ न भानं ॥
 भले सूर बीरं धरै कंत कंडं । उपारै तुरी दो दिसा फौज मद्धं ॥ ४५१ ॥
 निसंकं तुरी थप्यि पषरेत नष्यै । मनों बुद सिंधं परै कौन दिष्यै ॥
 भए एकमेकं परे भार भारे । तनं तेग तुहे वचै फूल धारै ॥ ४५२ ॥
 भई फौज चालुकक की पच्छ पायं । तवै बालुका राइ कीनी सहायं ॥
 जपै भाय भायं करै मार मारं । तरै दोय जोधा कटै सार सारं ॥ ४५३ ॥
 उपट्टै घटें गावरं तुंड तुट्टै । वचै संग कुही फिरी अंग फुट्टै ॥
 चपे चक्रव्यूहं नटपं अप्य चल्लै । फिरै मुष्य परिहार गच्छिलौत मिल्लै ॥ ४५४ ॥
 चल्थौ भज्जि गच्छिलौत तूवर दिसानं । फटे चक्रव्यूहं भए एक थानं ॥
 तिनं बार स्यावासि पावासु रानं । सनं मुष्य धाए मनों सिंघ जानं ॥ ४५५ ॥
 परी भूमि लोथं मिले दृश्य बथ्यं । करै जोर जोधा अकथ्यं सु कथ्यं ॥
 तिनं बार पंधार पेल्ले वलोचं । जुरे आय संमुष्य कीथौ न खोचं ॥ ४५६ ॥
 भभक्तं भक्तं हस्ति बोलै भसुंडं । परे षंड षंडं रनं रुंड मुंडं ॥
 बने लाल वागै शिल्ले लोह मिल्लै । दुहू और जोधा मनों फाग पिछै ॥ ४५७ ॥
 गजं श्रोन चल्लै रजं आस पासं । मनों माधुरी मास फूले पलासं ॥
 मिली दिष्ट बालुकक वीसलकरिंदं । मनौ सूर ईषे भये चंद्र मंडं ॥ ४५८ ॥
 तुरी चट्टि चालुकक हस्ती चुहानं । भयौ राज सौं जुड भागी भयानं ॥
 उनें वाजि नय्यौ वृजे गज्ज पेल्लौ । दिष्ट दंत पायं दुअं लोह मिल्यौ ॥ ४५९ ॥
 फिस्थौ गज्जराजं उनें वाजि फेस्थौ । दुअं वीर वावा भई पेत हेस्थौ ॥
 ४६० ॥ ४६० ॥ ४६० ॥ २१५ ॥

२१७ पाठान्तर-दुय । टिट । देषियै । अैन । जानि । भूमै । रोट । रोट्ट । सर्व । सौट ।
 सौट्टं । पुंधु । सुक्तै । भान । शूर । धरे । कंधं । उपारै । मंध । यप्परे । कथ नये । नय्ये । परे ।
 कौन । भइ । पछ पाई । पछ । राय । सहाई । जपे । भाई भाई । जोडा । रट्टे । घट । तुंय ।
 करी । चपे । अप्य । चलं । फिरै । मुदव । मिलं । भज्जि । तावर । फटे । मुष्य । पुहवि । पहास ।
 दृष्य बथं । करे । अकथं । कथ । पेल्लौ । सनदुप । भभक्तन हस्ती सु धेने मुड । रुड । मुडं ।
 मिले । दुहुं । मनो । पिले । चल्ले । रचे । मनो । बालुक । मनो । इषे । रुव । दट । चट्टि । बालुक ।
 करी । बाहुवानं । चौहानं । सौ । नय्यौ । गज्ज । दय । दुव । गज्जराज । दुष्ट । भयं ।

चालुक का कहना कि रात में युद्ध नहीं करना प्रात
हुए युद्ध करेंगे ॥

दूहा ॥ राज सुनौ चालुक कहै । है थप्परि इह कंध ॥
राति परी जुध नहि करै । प्रात करै फिर जुद्ध ॥

कं० ॥ ४६१ ॥ छ० ॥ २१८ ॥

दोनों योद्धाओं का अपने अपने डेरों पर आना और चालुक
के मंत्रियों का एक भूठी पत्री बनाना ॥

अरिस्त ॥ अपने अपने डेरा आए । सब घायल के घाय बंधाए ॥
मिले सकल चालुक के मंत्रिय । भूठी एक बनाई पत्रिय ॥

कं० ॥ ४६२ ॥ छ० ॥ २१९ ॥

चालुक के मंत्रियों का उसे एक भूठी पत्री देकर घर भेज देना ॥

अरिस्त ॥ सो कर जाइ राज कै दिनिय । तुम घर जाहु कहा बक थनिय ॥
डोली करि चालुक चलाए । सब मंत्री मिलइ कै आए ॥

कं० ॥ ४६३ ॥ छ० ॥ २२० ॥

चालुक के मंत्रियों का बीसलदेवजी के मंत्रियों से मिल
संधि कर लेना ॥

अरिस्त ॥ सब मंत्री परधान थान पर । बोलि लए पावासर तोअर ॥ *

हम सु तुम्हारै । इनप आए । कपट निपट करि राव चलाए ॥

कं० ॥ ४६४ ॥ छ० ॥ २२१ ॥

इह सु बोल गज तोल चलावै । राज कहै सो माल मंगावै ॥

कं० ॥ ४६५ ॥ छ० ॥ २२२ ॥

२१८ पाठान्तर-करै । करै । भये । करै ॥

२१९-२२ पाठान्तर-अपने २ । घाउं । बंधाए । मंत्री । पत्री ॥ २१९ ॥ जाय । दीनीय ।
थनिय । चालुक । करी । को । कू । आये ॥ २२० ॥ परधान । थान । तुम्हारै । पायन ॥ २२१ ॥
इहां । सोल । चलावै । मंगावै । तहं ॥ २२२ ॥

* यह तुक सं० १६४७ और १७७० की पुस्तकों में नहीं है ॥

पावासुर का बीसलदेवजी को संधिकर लेने के समाचार कहना ॥

अरिख ॥ राजन पास गए पावासुर । तहाँ बोलि किरपाल लण नर ॥

चालुक के मंची आये मिल । मंगो मान धरै प्रभु पग तल ॥

छं० ॥ ४६६ ॥ छ० ॥ २२३

बीसलदेवजी का संधि स्वीकार कर वहाँ महल बनाने और
नगर बसाने को कहना ॥

अरिख ॥ फिर राजन कही तुम जानौ । सेरो इहाँ महल हु थानौ ॥

एक मास में नगर बसायौ । इतनी कहि अरु पाइन आयौ ॥

बं० ॥ ४६७ ॥ छ० ॥ २२४ ॥

माल मंगाकर बीसलपुर बसाना और वहाँ से पीछे फिरना ॥

दूहा ॥ पावासुर तांअर कहे । भरें कोरि कौ भाग ॥

जब हो माल मंगाइ करि । नगर बसावन लाग ॥

छं० ॥ ४६८ ॥ छ० ॥ २२५ ॥

जीति घेत चहुआन नृप । चालुक धाय अघाय ॥

फिरि बाहुरि बीसल चल्थौ । बीसल नगर बसाय ॥

छं० ॥ ४६९ ॥ छ० ॥ २२६ ॥

सो संवत नव सुत्त अध । बरस तीस छह अगग ॥

पुर पहन बीसल नृपति । राजत सयलह जग ॥*

छं० ॥ ४७० ॥ छ० ॥ २२७ ॥

२२३-२२४ पाठान्तर - कैं । कै । पाइन । ताले ॥ २२३ ॥ राजन । राजंन । जानौ । इत ।
मेलिहू । हो । मैं । बसायौ । बसाउ । पायना आयौ ॥ २२४ ॥

२२५-२२७ पाठान्तर - कहै । भरें । भरै । मंगाय । बसाउन ॥ २२५ ॥ जानौ । चहुआन ।
चहुवान । वप । घाय । फिर ॥ २२६ ॥ सत । अध । अगि । जगि ॥ २२७ ॥

* इस रूपक में कहे संवत् के विषय में हमारी टिप्पण १६८ पङ्क्ति और विचार करो । इस पद्य
के रूपक १६८ में बीसलदेवजी के पाठ बैठने का संवत् ८२५ कहा है परंतु व्याप्तियों में स० ८३१
भी मिलता है । उन के राज्य करने के वर्ष ६४ कवि ने बताया है अतएव यह रूपक पाठ
बैठने के रूपक १६८ में आठ सँ के स्थान में नौ सँ प्रयोजन से आ पाठ होना स्वयम् सिद्ध होता
है क्योंकि जो ऐसा न माने तो । १५८ वर्ष का राज्य समय होना । व्याप्ति में लिये बीसलदेवजी
के पाठ बैठने के संवत् के अनुसार जो लेवा लगाकर हमने टिप्पण १६८ में संवत् १०८२ सिद्ध
किया है वही जर्नेल टोड साहब भी नीचे लिये प्रमाण से अनुमान करते हैं:-

एक दूती का बीसलदेवजी को एक बहुत सुन्दर बन्निकसुता
की खबर देना ॥

दूहा ॥ बन्निक सुता कोमारिका । एक अनूप नरिंद ॥

कामलता दूती कहै । मनो सरद को चंद ॥

कं० ॥ ४७१ ॥ सू० ॥ २२८ ॥

बीसलदेवजी का बीसलपुर में प्रविष्ट होना ॥

कवित्त ॥ संवत् नव सत्त अद्द । वरष दस तीथ सत्त अग ॥

पुर प्रविष्ट बीसल नरिंद । राजंत सयल जग ॥

तिहि पहन दूक बन्निक । मंडि अह राज विवाहति ॥

रन्निव देव नृप सबद । दिष्पि निय देव इवाहति ॥

जै जै सबद बंदिन चवहि । माग्ध पुत्र पवित्र मति ॥

अन धन प्रवाह बहु पुचवि परि । वरष्यौ जेम पुरंद गति ।

कं० ॥ ४७२ ॥ सू० ॥ २२९ ॥

"Mahmood's final retreat from India by Sindh to avoid the armies collected "by Byramdeo and the prince of Ajmere," to oppose him, was in A. H. 417, A. D. 1026, or S. 1032, nearly the same date as that assigned by Chund, S. 1086," Vol II, page 119

इस के सिवाय पाठको को यह भी विचार करना होगा कि इस समय गुजरात देश के पट्टन का चालुक राजा कौन सा था कि जिससे बीसलदेवजी का युद्ध हुआ । अतएव हम जैन यथ प्रबंध चिन्तामणि और कुमारपाल चरित्र आदिक के अनुसंधान शोध हुए संवत् मूलराजजी सालकी से लेकर करण तक के नीचे लिखते हैं:-

१ मूलराज	=	संवत् ९९८ से	५५	वर्ष	राज किया?
२ चामुंडराय	=	„ १०५३ से	१३	वर्ष	„ „
३ वल्लभराज	=	„ १०६६ से	११॥	मांस	६ दिन राज किया
४ दुर्लभराज	=	„ १०६६ से	११॥	वर्ष	राज किया
५ भीम	=	„ १०७८ से	५०	वर्ष	„ „
६ करण	=	„ ११२८ से	३२	वर्ष	„ „

२२८ पाठान्तर-कोमारिका । कहै । मनहुत ॥

२२९ पाठान्तर-सं० १७७० की पुस्तक में "सर संवत् नव सत्त । वरष दस पंच सत्त अग" पाठ है । बीसल । नृपति । राज्यत । तिन । पट्टन । यह । दिष्पि । तीथ । इवाहि । पुन । पहु । पुहमि । पद । पुरिंद ॥

इस रूपक के संवत् के विषय में टिप्पण १६८ और २२५-२८ और बीसल नगर अथवा बीसलपुर के विषय में टिप्पण १८० और १८२ अक्लोकन करो ॥

बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और वहां उन का
हास होना ॥

दूहा ॥ इच्छ विधि मंड्यौ राज वरि । जग्य बनिक अजमेर ॥

बरष त्रयोदस मद्धि वय । भयौ चासु सब नैर ॥

कं० ॥ ४७३ ॥ छ० ॥ २३० ॥

बनिकसुना गौरी का पुष्कर में तप करना और बीसलदेवजी
का उस पर मोहित होना ॥

पङ्करी ॥ आषाढ मास उज्जास पष्य । दिन तीय सोम वंदन सहृष्य ॥

मटिवाय गज्जि नीसांनगेन । अति उंचि मंडि न्निप अवधि अंन ॥ कं० ॥ ४७४ ॥

किलकंत उपल अकाल अभ्र । विथुस्यौ मद्धि जल पद्हुमि गभ्र ॥

विलसंत राज तिय देव साय । निकसै वार कहु एक भाय ॥ कं० ॥ ४७५ ॥

चिहुं कोद घूमि घन पुब्ब पूर । दिन पांच अनि दरसाइ सूर ॥

रस वार सोम वीरंम दिन्न । ते वंस सेव जन वंद किन्न ॥ कं० ॥ ४७६ ॥

सो षंड मास लगि रत स मान । घर हरे धुंम जल महिर आन ॥

कं० ॥ ४७७ ॥ छ० ॥ २३१ ॥

साटक ॥ स्यामंग रवरंग अंग रवनी । अनी सु रंगेसवे ॥

साहंसं सक पाइ राइ मुगता । जुगता सरित्तरण ॥

नीलं वास वनूर वंध विघना । हरि हारु धारा तनं ॥

भूमिं संकि स्वधीन पुन्य तनयं । देवा रक्षस्यं मनं ॥

कं० ॥ ४७८ ॥ छ० ॥ २३२ ॥

कवित्त ॥ धरतिय हरि उर वास । वानु धर उर तिय धारिय ॥

दिग कज्जल लगि धार । धार कज्जल दिग धारिय ॥

२३० पाठान्तर-परि । मधि ॥

२३१ पाठान्तर-उज्जास । पष्य । सहृष्य । मटिवाय । गज्ज । नीसांन । गंत । उच्य ।
वैन । उपिल । अभ्र । विथुस्यौ । मधि । पुहमि । गभ्र । निकसै । चिहु । घुमि । पुय । पव । दरसाइ ।
धिरम । दिन । ते । वंध । किन्न । स नान । अभ्र ॥

२३२ पाठान्तर-स्यामंगं । अवनी । पाय । जुगता । सरित्तरण । विघिना । हार । भूमि ॥

२३३ पाठान्तर-धरतिय उर । धारि । मधि । हिय । रमिय । नृवर । सा । पुहुय । पद्हुय ।
रक्षि ॥

रच्यौ चार द्विय मद्धि । मद्धि द्विय चार सु रंमिय ॥
 नूपुर पय सो अरवत । अरवत नूपुर पय अंगिय ॥
 अविसय न पुहप धन बन रसिय । रसय वनी घन पुष्प सम ॥
 भू इंद रक्षसि रसि वरि रमिय । वीसल रस भू इंद रम ॥

कं० ॥ ४७८ ॥ ह० ॥ २३३ ॥

पुष्कर की तपस्वनी की वीसलदेवजी के प्रति अरदासि ॥

दूहा ॥ हौं राजन मंगों यहै । इह मेरी अरदासि ॥

पुहकर की कहै तपसनी । रूप रंग की रासि ॥

कं० ॥ ४८० ॥ ह० ॥ २३४ ॥

अरिल्ल ॥ पित्र सनेह सपूत सवानिय । देवनि भूमिन सब्व समानिय ॥

सो रति मान थटे घन उंबर । असय मद्धि निज उज्जल अंबर ॥

कं० ॥ ४८१ ॥ ह० ॥ २३५ ॥

दूहा ॥ उज्जल पष दसमी दिवस । अरु दशरथ के नंद ॥

नयर बंध अर कंध दस । रचिके किए निकंद ॥

कं० ॥ ४८२ ॥ ह० ॥ २३६ ॥

दीप गाल दीपै सुरग । ग्रह ग्रह महल अवास ॥

हरिपुर हर मानत मनह चितवत चिंतत वास ॥

कं० ॥ ४८३ ॥ ह० ॥ २३७ ॥

वीसलदेवजी का पुष्कर में बनिकसुता गौरी का सतीत्व भ्रष्ट
 करना और उसका उनको दावन होने का शाप देना ॥

कवित्त ॥ एकादसमी दिवस । देव नर नाग सब्व मिल ॥

सुर सकव तजि वास । आनि पुहकर प्रसाद पिल ॥

तहां बनिक नंदिनी । पुत्रि गवरी तप मंझौ ॥

दिषि ता ह वीसल नारंद । बरि मार प्रचंझौ ॥

२३४-३७ पाठान्तर-हो । इहै । अरदास । दै । तपसनी ॥ २३४ ॥ मुरिल्ल । सवानिय ।
 सवानीय । सवानीय । सब । समानिय । मान । मधि । उजल ॥ २३५ ॥ नैर । बध । अरि ।
 निकव ॥ २३६ ॥ सुरग । चिंतवत्त ॥ २३७ ॥

२३८ पाठान्तर-एकादशमी । दाव । मिलि । पास । आनि । पिलि । देपि । द्वादशी ।
 असू । सद । तितहिं । दिपिति । तहु । मन । । कहु ॥

द्वादसी दिवस दिन अस्त करि । असद सह कीनी नृपति ॥

जित तितह दिष्यि तिहि मन दुचित । न चिय राज कहु किन विपति ॥

कं० ॥ ४८४ ॥ ह० ॥ २३८ ॥

री ॥ वर विमल लोक्र पुचकर प्रकास । सुर नर सु नाग रिषि मुनि अवास ॥

धर धरम करम सुभ परम पाइ । जय सुर चवंत गुन अगम गाइ ॥ कं० ॥ ४८५ ॥

तिथि अगनवार दिन कर प्रकास । गय द्वार तपनि करि कपट पास ॥

तन रचित नीर उर ध्यान देव । नृप मानि रहस करि वर अषेव ॥ कं० ॥ ४८६ ॥

बढि विकल भाल तम धूम नैन । गहि कुस सकुथ्य दइ दुसिष बैन ॥

धर हरति अंग जल धार भार । हथ पटक गंग जट समुष पार ॥ कं० ॥ ४८७ ॥

धरि ध्यान ध्यान तिन अगनि ईस । षंडे सु जगिग तंफे जगीस ॥

रवि पदम पाय सासन सहूठ । उर धरे देव तिन देव गूठ ॥ कं० ॥ ४८८ ॥

जुग पानि नाभि ताली लगाय । रमि द्रिष्टि द्रिष्टि गिरि बंभ राय ॥

तिर पुटिय भाल शिल कमलम्वर । इह भांति ताव तप तपनि जूर ॥ कं० ॥ ४८९ ॥

तप चवल मुक्कि किय विरथ काम । कर मंभि राज मुभ आप ताम ॥

कं० ॥ ४९० ॥ ह० ॥ २३९ ॥

दूहा ॥ पुत्री बनिक सराप दिय । भर पुचकार नर लोइ ॥

असुर होइ बीसल नृपति । नरपलचारी सोइ ॥

कं० ॥ ४९१ ॥ ह० ॥ २४० ॥

गौरी का बीसलदेवजी को भयभीत देखकर कहना कि

तुम्हारा पोता तुम्हारी सुकीर्ति करेगा ॥

दूहा ॥ दिष्यि राज भय भीत तन । तन मग धूजत तथ्य ॥

सो उद्धारन पय गहन । कथ कुसुमन वर कथ्य ॥

कं० ॥ ४९२ ॥ ह० ॥ २४१ ॥

२३९ पाठान्तर-वर । प्रकाश । रिष । करक्रम । पाय । गाय । अना । दिन कर । ध्यान ।
बाल । नैन । कुस । सकुथ्य । दय । बैन । बैन । हरत । पिट्टि । ध्या । ध्यान । जगि । तडे ।
रमे । सहूठ । पानि । नाभा । द्रिष्टि द्रिष्टि । राइ । तरपटीय शाल शिलक्रमन मून । नाति ।
प प्रबल मुनि कियथ विरथ वंभ । सराय । ताम ॥

२४०-४५ पाठान्तर-शणिक । वरति । नर भयन करे सोय ॥ २४० ॥ दिषि । तय । कथ ।

कुसुम । दर । कथ ॥ २४५ ॥

दूहा ॥ तो सुअ सुत्त उदार मति । गति तिन देव प्रकास ॥
धर मंडन डंडन भरन । सो तुम करहु सुवास ॥

कं० ॥ ४८३ ॥ ह० ॥ २४२ ॥

तपस्वनी के कोप से बीसलदेवजी का सांप के काटने से
अलोप होना ॥

कवित्त ॥ सपत दिवस अनुसिष्य । सुष्य मधि दिग्ग प्रजारिय ॥
असि विष वर्द्धन अंग । अगनि गन दनुज उदारिय ॥
सहस अद्भ तन बद्ध । भ्रार मुष चार विकारनि ।
सर्व असन करि असम । सैन किन चैन निकारनि ॥
आहुट्ट दीह साहुट्ट मधि । पलप पदम विन कदम विन ॥
गुर गवरि ग्यान गन गन्ह करि । रम्य राज्य आरन्ध किन ॥

कं० ॥ ४८४ ॥ ह० ॥ २४३ ॥

दूहा ॥ भय दिवाह आहुट्ट दुति । तपसरनी को कोप ॥
जल बेली विहु बाग त्रिष । ते जिन भये अलोप ॥

कं० ॥ ४८५ ॥ ह० ॥ २४४ ॥

जिस तपस्वनी के शाप से बीसलदेवजी असुर हुए उसके
तप का आना की मा सविस्तर वर्णन करती है ॥

दूहा ॥ सुनह पुत्र तिन तपनि तप । भिन्न भिन्न परिमान ॥
जिहि दुसिष्य नृप असुर हुअ । रच्या सवर वरमान ॥

कं० ॥ ४८६ ॥ ह० ॥ २४५ ॥

बजिक पुत्र मन इम धरिय । मो पति ताप अपार ॥
जो तप्यह मंडौं प्रवल । तौ कुहौं संसार ॥

कं० ॥ ४८७ ॥ ह० ॥ २४६ ॥

२४२ पाठान्तर—सुत सुत । उदार । मंड ॥

२४३ पाठान्तर—अनुसिष्य । सुष्य । दिग्ग । उद भच्चिय । वार । विकारनि । सैन । चैन ।
आहुट्ट । साहुट्ट । ग्यान । गन्ह । आरंन ॥

२४४-४६ पाठान्तर—भये । भए । आहुट्ट । को कोप । विहुं । वृष । भए ॥ २४४ ॥
भिन्न । भिन । परिमान । जिहि । दुसिष्य । नृप । भय । वरमान ॥ २४५ ॥ धरीय । मो तन पाप
अपार । मो पित ताप अपार । जो तप मंडौं निय प्रवल ॥ २४६ ॥

कवित्त ॥ धन अप्पिय सब ब्रह्म । उअर तिय ध्यान सु धारिय ॥
 चिंतवि पुहकर तिथ्य । रिक्तु ग्रीषम मति चारिय ॥
 पंच अगनि वर सीस । मेघ धारा धर मंडिय ॥
 वरषा काल प्रचंड । सीत जल मद्धि सु बुडिय ॥
 कंडिय सु वास संसार सुष । जोति निरंजन उर सचिय ॥
 इम कंक नालि मंडिय गगन । पीथै वाम दक्खिन मुचिय ॥

कं० ॥ ४९८ ॥ ६० ॥ २४७ ॥

पद्दरी ॥ पद्दु समय तिथ्य वर सजर किन्न । उर नयर धारि तिन भुवन चिन्न ॥
 रूप चार देव पद भेटि ठौर । मन धर्यौ ध्यान सब तिथ्य मौर ॥ कं० ॥ ४९९ ॥
 बढि बाह मास तिन पान कीन । सिर अड्ड उड्ड दिग वरन दीन ॥
 सच्चि वेद अर्ध हवि पंचमंडि । दहि दर्प्य दर्प मन मयन पंडि ॥ कं० ॥ ५०० ॥
 विहसित्त नगर नन प्रसध साध । सिर द्रवत उदक विष प्रातमाघ ॥
 चव वरष अभ्र घर धार भूमि । गिरि गुरनि गिरनि गन लूम भूमि ॥ कं० ॥ ५०१ ॥
 परि मुहु उहु उपलंत विन्द । गहराय वाय दस दिसनि इन्द ॥
 धर हरत अंग जल धार धार । हर थटिय गंग जट मुकट पार ॥ कं० ॥ ५०२ ॥
 धरि ध्यान ग्यान तिन अग्र ईस । पंड्यौ सु जगय मंड जगीस ॥
 उर धरे देव तिन अंग गूढ । रचि पदम पाय सासन सहूढ ॥ कं० ॥ ५०३ ॥
 जुग पानि नाभि ताली वनाय । रमि दिष्ट सिष्ट गिरवान राय ॥
 तरपटी साल सिख कमल नूर । इहि भंति भाव तप तपनि जूर ॥

कं० ॥ ५०४ ॥ ६० ॥ २४८ ॥

२४७ पाठान्तर-ब्रह्म । ताय । ध्यान । तिथ । रिक्तु । चारीय । सीस । मइय । शीत ।
 मधि । बुडय । साव । ज्योति । वंक । वाम । दपिन ॥

२४८ पाठान्तर-तिथ । किन्न । धार । चिन्ह । ध्यान । तिय । पान । कीन । मंडि ।
 दर्प्य दर्प्य । मन । विहसित । विहसीत । नगन । माध । अभ्य । अभ । धर । भूम । लूयि ।
 भूमि । मुहु । विन्द । महराय । वाव । दह । दिसा । इद । भार । समुष । ध्यान । ग्यान ।
 सहूढ । पानि । शिष्ट । गिरवरन । राइ । मूल । इहि ॥

इम रूपक के अंत की पांच तुको को कवि पिछले रूपक २३९ में भी कह आया है । यह
 चंद्र की सत्यत-काव्य-सम शैली का एक उदाहरण है और ऐसे उदाहरण इम महाकाव्य में
 अनेक आवेंगे । कवियों की ऐसी निज शैलियों को देखकर भाषा के लुप्त और अपरिष्कृत कवि कट
 पद जैसे हिन्दी भाषा के वास्तविक कविराज को दोष देने लग जाते हैं परन्तु संस्कृत भाषा के

कवित्त ॥ देव चरित रमि धाइ । इक्क कर हीय मद्धि धरि ॥
 सु रचि तिथ्य अडसठि । मान पडुकर प्रकास करि ॥
 दिग अंबर उर धारि । तारि तारी तप तारनि ॥
 मन सुर भाग समान । लाइ राख्यै परि पारनि ॥
 वर तर्प चंद्र अन दर्प करि । तामस द्विग विकराल मन ॥
 सम गवरि अंग अंग सिष उसिष । नृपति समंतन असुर वन ॥
 कं० ॥ ५०५ ॥ छ० ॥ २४९ ॥

**शाप से विमुक्त होने के विचार से बीसलदेवजी का गोकर्ण
 की यात्रा के लिये बीसल सरवर पर प्रस्थान करना ॥**

दूहा ॥ तजि नरिदं अजमेर पुर । चित गोवन हर थान ॥
 बीसल सरवर ऊपर । बीसल दिय प्रस्थान ॥
 कं० ॥ ५०६ ॥ छ० ॥ २५० ॥

तपस्विनी के शाप से बीसलदेवजी की बुद्धि का चल विचल होना ॥

दूहा ॥ काम कुमत्तौ उप्पनै । दीय तपसनी स्राप ॥
 बीसल दे बुधि चल विचल । प्रगटि पुब्ब कौ पाप ॥
 कं० ॥ ५०७ ॥ छ० ॥ २५१ ॥

महाकाव्यादि के पठित विद्वानों को चंद्र कवि पर तौ नहीं किन्तु इन दोष देनेवालों की कुशाय बुद्धि पर बड़ा आश्चर्य होगा क्योंकि संस्कृत काव्यो तथा अन्य बड़े बड़े यथो में प्रायः ऐसे उदाहरण मिलते हैं । देखो भाष के चतुर्थ सर्ग के २१ वें श्लोक में सहरितालसमाननवांशुकः । दो वार प्रयोग हुआ है और रघुवश के दूसरे सर्ग के श्लोक ३१ की अत की पंक्ति त्रिचार्पितारम्भइयावतस्ये ॥ कुमारसंभव के तीसरे सर्ग के ४२ वें श्लोक में भी महाकवि कालिदासजी ने ऐसाही प्रयोग किया है ॥ तथा रघुवश के सातवें सर्ग के ६ श्लोक से लेकर ग्यारहवें ११ तक के सब श्लोक जैसे के तैसे कुमारसंभव के सातवें सर्ग के सत्तावनवे श्लोक से बासठवें तक महाकवि कालिदासजी ने प्रयोग किये हैं ॥

२४९ पाठान्तर—द्वार । इक । रहिय । रहीय । मधि । तिय । अडसठि । मान । उधारि । समान । रपे । पारन तर्पे । तप्ये । अंग - ग ॥

२५०-२५१ पाठान्तर—तजिं । नरिंद । चिंत । गऊवन । थान । उपरे । प्रस्थान ॥ २५० ॥ काम । कुमतौ । ऊपनौ । दिय । तपसिनी । सराप । कौ ॥ २५१ ॥

ब्रीसलदेवजी को सांप का काटना और उससे उनका मरना ॥

दूहा ॥ वार रवी तिथि सप्तमी । चलि रथ सुार मतंग ॥

तिहि बेरां आयौ कहै । डेरा माहि पनंग ॥

कं० ॥ ५०८ ॥ ह० ॥ २५२ ॥

कवित्त ॥ देषि राज करि क्रोध । बात को दंड धरिय कर ॥

बेधि पनग फन जिक्कि । पय्यौ धर तरफत बेसिर ॥

कुट तिहि बेर मतंग । घेल देखन कौं धायौ ॥

एक मौजरी मद्धि । पनग फन आनि लकायौ ॥

फिरि राय आय हेंवर चळ्यौ । पहरत मौजे पग डस्यौ ॥

भविनव्य बात आघात गति । इतनी कहि राजन चस्यौ ॥

कं० ॥ ५०९ ॥ ह० ॥ २५३ ॥

दूहा ॥ ओषद मंच अनंत जप । कितने करे उपाय ॥

ज्यौं ज्यौं तन लहरत चढत । त्यौं त्यौं दुचितौ राय ॥

कं० ॥ ५१० ॥ ह० ॥ २५४ ॥

कवित्त ॥ राज मरन उपपनो । सब्ब जन सोच उपमनौ ॥

पट रागिनि पावार । निकसि तव ही सत किनौ ॥

तिन मुष इम उचल्यौ । होइ जदवनि सपुतय ॥

मो असीस इह फुरो । तुम्म भोगवहु धरतिय ॥

जिन रथी मद्धि ऊठे असुर । धपै ज्वाल तिन मुष विषय ॥

नर भयय जहां लसकर* सहर । मित्रै मनिय ते ते भयय ॥

कं० ॥ ५११ ॥ ह० ॥ २५५ ॥

२५२ पाठान्तर-तिथि । सप्तमी । तिथि । कहौ । डेरां । मांहि । माहि । पनग ॥

२५३ पाठान्तर-बांन । वंड । नाग । छिःः । बेसिर । कुट्यौ । सं० ५०८० और ५३४० में

“मिलि राजन मौजरीय” । को । आयौ । मधि । पनग । आनि । आय राय ॥

२५४ पाठान्तर-उपद । उपाइ । ज्यौं ज्यौं । लहरी त्यौं त्यौं । दुचितौ ॥

२५५ पाठान्तर-उपनौ । उपनौ । उपनौ । निकसी । कानो । इह । उदस्यौ । सपुतय ।

रपुतह । फुरो । भोगवो । धरतय । इन । मधि उठै । भयै । सहर । मित्रै । मनुय । भयै ॥

* हि० लसकर (SK लश To possess, to relate, to do anything as a duty, etc.)

• हि० लस To play or sport, to wish and कर (to do or to have, etc.)

How can I get more of this?

बीसलदेवजी के मरण और असुर हो जर भक्षण करने की
बात सुनकर सारंगदेवजी का अपनी रानी को राणथंभ
भोजना और आप उन से युद्ध करने को तयार होना ॥

दूहा ॥ सुनिष वा । तो तान तव । हैं पउई रि थं । ॥

मंच वहि तिन तेग वल । जुद्ध जुरन आरंभ ॥

कं० ॥ ५१२ ॥ ह० ॥ २५६ ॥

सारंगदेवजी की रानी गवरी का चिंता करना ॥

दूहा ॥ उन गहि मो गति इक्क होइ । कै अवगति भिन्न ॥

चास मिटै दुष को सचै । इचय चित्त मो विंन ॥

कं० ॥ ५१३ ॥ ह० ॥ २५७ ॥

सारंगदेवजी का सेना लेकर हुंठा राक्षस से युद्ध करने को
अजमेर पहुंचना ॥

दूहा ॥ एक सहस भरि सथ्य करि । सबल सुकर दिय फेरि ॥

दै निसान चहुवान चढि । पहुँचिय गढ अजमेर ॥

कं० ॥ ५१४ ॥ ह० ॥ २५८ ॥

सारंगदेवजी का तीन दिन कोट में रहना, वहां असुर का न
मिलना और अजमेर की भ्रष्ट और भयानक
दशा देखकर चिंता करना ॥

कवित्त ॥ अति उद्यान सब थान । भये गढ धाम भयानक ॥

दिष्ट देखि सारंग । दैव चिंते तव वागिक ॥

ताकै कुल उपनीय । तपनि चम कौ कुल षोयौ ॥

तान पुकारे नीर । भरे नैनच घन रोयौ ॥

दिन तीन रहत हुअ कोट मधि । असुर नयन दिष्ट्यौ नदिय ॥

तव सुचित भए सारंग दे । पुरी बसाओं इह कहिय ॥

कं० ॥ ५१५ ॥ ह० ॥ २५९ ॥

५६-५८ पाठान्तर-घत । हो । मो । रन । वंदि । वर । जुध ॥ २५६ ॥ इन । इक ।
हुष । कं । अवगति । चित ॥ २५७ ॥ भर । सथ । निसान । चहुआन । चहुवान । पहुचिय ॥ २५८ ॥
२५९ पाठान्तर-उद्यान । थान । धाम । वागिक । वाकै । नैनन । रहैत । बसावौ ।
बसावौ । कहीय ॥

सारंगदेवजी और उनके पिता हुंढा दानव का परस्पर युद्ध होकर सारंगदेवजी का मारा जाना ॥

कवित्त ॥ एका दसमी दिवस । प्रात दानव पुर आयौ ॥

सकल सेन लै सस्त्र । उठि लरिबे कौं धायौ ॥

वे बाहैं तरवारि । इचै मुष पकरि सु कह ॥

ज्यां बेली द्रुम सघन । देषि मरकट फल चुट्टै ॥

किय पिता पुत्त जुध सम असम । गिर सौ जनु सारंग गियौ ॥

मन जानि असुर नर घुसि रहै । सब हुंढा हुंढत फियौ ॥

कं० ॥ ५१६ ॥ क० ॥ २६० ॥

२६० पाठान्तर-दशमी । सेन । शस्त्र । उठि । को । बाहे । ज्या । चुट्टै । किय पिता जुध
सम अरु असम । सो । सारंग ॥

पाठक महाशयो ! चंद्र की वर्णन की हुई बीसलदेवजी की यह दानव कथा आपको
अद्भुत मालूम होगी और इस में कुछ संदेह भी नहीं है कि मनुष्य मरकर फिर दानव नहीं हो
सकता और न ऐसे चरित्र कर सकता है कि जैसे चंद्र ने वर्णन किए हैं । देखो अद्भुत वही पदार्थ
है कि जो स्वयम् तो अद्भुत हो और दूमरों को अद्भुत ही प्रतीत हो परंतु जो आप किंवित् सूत्र
विचार करें तो आप को ज्ञात होगा कि चंद्र ने जो कुछ कहा है वह सत्य है अर्थात् जो आप
को अद्भुत मालूम होकर असत्य निश्चय होता है वह वास्तविक सत्य ही है । जब तक मैं जो
कुछ अंत में आप को कहना चाहता हूँ वह नहीं कहूंगा तब तक मेरा यहाँ तक का कहना भी
आप को अद्भुत ही प्रतीत होगा और वह वास्तव में है भी ऐसा ही क्योंकि जब तक कोई ताला
कि जिस का खुलना विचार करने से भी कठिन दीखता हो और वह ऐसी सरलता से पुल न
जाय कि जैसे कि 'एक तिनके की ओट पहाड़' तो वह निःसंदेह अद्भुत ही प्रतीत होगा और,
अब आप चंद्र की इस कठिनता के ताले को इस कुंजी से खोलकर अद्भुत वस्तु को देखिये, कि
जो कुछ वृत्त चंद्र ने बीसलदेवजी की दानव कथा में लिखे है, वे सब उनके जीवन समय में
बर्ते थे अर्थात् वे वाजीकरण की औपधियों के खाने, कुकर्मा के करने और साप के काटने से
बहुत ही पागल हो गये थे और उन्होंने इस पागलपने में अपने इकलौते पुत्र सारंगदेवजी तक
को अपने हाथ से मार डाला था और राज्य को नष्ट भूट कर दिया था । इस वृत्तान्त को चंद्र
ने अपनी काव्य शास्त्र सवन्धी विदुत्ता दिखाने के लिये अद्भुत रम में लिखा है । अब आप इस
प्रसंग को ध्यान देकर पढ़के समझ लेंगे कि महाकाव्य चंद्र ने ठीक अद्भुत रम दिया दिया है ।
यह आप के ध्यान में होगा कि पथकर्ता ने पृष्ठ २३ छंद २३ रूपक ३२ में कि जो चंद्र की अनेक
कठिनताओं के खोलने की कुंजियों के गुच्छे में से एक बड़ा भारी गुच्छा है उस में कवि ने इस
महाकाव्य को 'नवं रसं' से नव रसों में लिखा कहा है कि अब यह हमारा काम है कि इस
हिन्दी भाषा के महाभारत में से नवो रसों के प्रसंग खोज कर निकालें । नया जो हम इस कथा

आना की मा का उसे कहना कि मनुष्यों को ढूँढ ढूँढ कर खाने से
ढूँढा नाम पड़ा और उसने रम्य अजमेर को बेराम कर दिया ॥

दूहा ॥ ढूँढि ढूँढि पाये नरनि । तानै ढूँढा नाम ॥

देवपुरी अजमेर पुर । रम्य करी बेराम * ॥

कं० ॥ ५१७ ॥ छ० ॥ २६१ ॥

आना का माता से कहना कि अभी जाकर मैं उसे मार आजं ॥

दूहा ॥ मात सुनौ तपमनि वचन । अरु दिय अरिस पवारि ॥

अबहि जाय अजमेर गढ । अरि कौं आजं मारि ॥

कं० ॥ ५१८ ॥ छ० ॥ २६२ ॥

गवरी का आना को अमंतन मंत कहकर शिक्षा करना ॥

दूहा ॥ गवरि अमंतन मंत कहि । रषसि तोहि कुमार ॥

अरि रषस भर नग में । प्रजा राज संघार ॥

कं० ॥ ५१९ ॥ छ० ॥ २६३ ॥

कवित्त ॥ गवरि मात सिष्यवै । पुत्त आनल इहि सिष्यिय ॥

मानव सौं मानवह । भिरंत दानव न पिष्यिय ॥

बहुत काल बहि गए । भरे जंगल धर पूरन ॥

मृग मयंद षंडियहि । कंडि पंषिय पति सूरन ॥

जं जीव चनजि मातुल घरह । भंजन घट भंगन करहि ॥

उर धरनि और रषस कहत । आनिन रषस उर भरहि ॥

कं० ॥ ५२० ॥ छ० ॥ २६४ ॥

ऐसी अन्य कथाओं को जो आगे आवेंगी अद्भुत रस में लिखी हुई न मानें तो फिर आप विचार करें कि अद्भुत रस क्या होता है और उसका लेख कैसा होता है । मेरी सम्मति में तो चंद्र ने जहाँ जहाँ जो जो रस लिखा है वह ऐसा ही उत्तम लिखा है कि यदि हम उसको न भी मानें तथापि हमको लाचार होकर उसे वही सजा देनी पड़ती है जैसे कि यहाँ हम अद्भुत रस में लिखी हुई यह दानव कथा न भी मानें तथापि हम को यही कहना पड़ेगा कि यह अद्भुत बात है कि मनुष्य मरकर दानव नहीं होता न ऐसे चरित्र कर सकता है ॥

* विराम से बेराम बना मालूम होता है ॥

२६१-६३ पाठान्तर-ढूँढ । पाए । तानै । नाम । बे राम ॥ २६१ ॥ दीय । असीस । अर्व । जाई । कू । कौं । आजं ॥ २६२ ॥ मत । करि । रपसि । अहिर रकस भर नगंम ॥ २६३ ॥

२६४ पाठान्तर-सिष्यवै । पुत्र । सिषिय । सौं । मानव । दानव । नह । पिषिय । मृग । पंषि । पंषि जीवनहु तजि मातुल घरह । रषस । गहंत । आनिन । रषस । करहि ॥

दूहा ॥ उच्चरि मात समंत इह । जीवन मरन न सिद्ध ॥

दुहुं विधि धर बासन करौ । आराधन कि विरुद्ध ॥

कं० ॥ ५२१ ॥ ६० ॥ २६५ ॥

पुत अमंत जु सिष्यौ । सिष्यौ उरह दहंत ॥

हुंढौ नर हुंढै भषन । तू सेवनह कर्हंत ॥

कं० ॥ ५२२ ॥ ६० ॥ २६६ ॥

आना का माता से कहना कि या तो मैं सिर समर्पूंगा या
कुत्र धारूंगा ॥

दूहा ॥ तव आनल ऐसी कच्चिय । मुहि सुभिक्षय यह वत्त ॥

कै सिर उनहि समप्पि हैं । कै सिर धरिहैं क्त ॥*

कं० ॥ ५२३ ॥ ६० ॥ २६७ ॥

आना का माता से कहना कि सेवा ऐसी है कि जिस से सब
कार्यसिद्धी होती है ॥

कवित्त ॥ सेव देव रंजियै । सेव रष्यस बसि सब्बह ॥

सेव सिंघ पत्तियै । सेव विष जरै न जल्लह ॥

सेव वैर भंजियै । सेव रच्च पति पाहन ॥

सेव दहै नह दहन । सेव बहु द्रव्य उपावन ॥

जिहिं सेव देव रष्यस धरहि । जियन मान तन जाइ नन ॥

आमूढ हुंढ धावत भषन । नहि सु देव नहि दानवन ॥

कं० ॥ ५२४ ॥ ६० ॥ २६८ ॥

२६५-६६ उच्चरि । सु मत्र । सिद्धि । दुहुं । वर । करौ । करौ ॥ २६५ ॥ पुत । सिषियो ।
सिष्यौ । भवन ॥ २६६ ॥

* यह रूपक सं० १६४७ और १७७० की पुस्तकों में नहीं है और जब तक वह किर्मा या
प्राचीन लिखित पुस्तक में न मिले तब तक हम उसे प्रसवतापूर्वक छेदक सजा नहीं प्रदान कर सकते ॥

२६७ पाठान्तर-सुभिय । वत । कं । उतहि । हो ॥

२६८ पाठान्तर-रजाँजै । न सेव सिंघ पत्तियै । जजह । भंजियै । रवे । सेवह नह दहन ।
द्रिष्य । जिहि । नह । सो नह ॥

आना की माता का तो उसे शत्रु न सेवने को कहना किन्तु
उसका अजमेर जाना ॥

दूहा ॥ मात वरज्जत रत्त हुअ । सत्रु न सेव न सेव ॥

आइ अनल अजमेर बन । असुर निरष्पन भेव ॥

ॐ ॥ ५२५ ॥ ४० ॥ २६९ ॥

ढूंढा दानव का अजमेर बन में बहुतदिनों तक मन्तु होकर रहना ॥

मो दानव अजमेर बन । रक्षौ दीह घन अंत ॥

सुन्न दिसानन जीव को । थिर थावर जग मंत * ॥

ॐ ॥ ५२६ ॥ ४० ॥ २७० ॥

अजमेर की नष्ट भ्रष्ट दशा और आना का खड्ग लेकर प्रेत
के पास जाना ॥

चोटक ॥ तहें सिंघ न अग न पंषि वनं । दिसि सून भई उर जीव घनं ॥

नह मातह मंत अमंत क्रियं । पिय की धरनी रहतंत लियं ॥ ॐ ॥ ५२७ ॥

तहें ठाम भयानक सोच तयं । तहें ठाम कना कल सोधि वयं ॥

तिहें ठाम भरं नर नारि ननं । तिहें ठाम न पंथिय पंथ कनं ॥ ॐ ॥ ५२८ ॥

तिहें ठाम गजं वर बाजि ननं । तिहें ठाम न सिद्धय साथ कनं ॥

तिहें ठाम नदारिद्र द्रव्य गनं । हिय मात न तात न मोह मनं ॥ ॐ ॥ ५२९ ॥

लय षाग रमक्किय प्रेत दिसं । वर बीर सु मंडिय चित्त रसं ॥

अविलंघ करो सकरं विपनं । रिप थान सपंत सु भै न मनं ॥ ॐ ॥ ५३० ॥

नर दिष्प अचंभ क्रियौ सु हियं । कहि आज विधं भल भष्प दियं ॥

कुध प्यास ह निंदय राज ननं । सु गयौ वर दानव ताप तनं ॥

ॐ ॥ ५३१ ॥ ४० ॥ २७१ ॥

२६९ ७० पाठान्तर-वरजत । रत । आय । अनल । निरपनु ॥ २६९ ॥ सून । सुचा
रधिर ॥ २७० ॥

* हि० मन=म० मन्तु=राजा से बना है । यहां यह मंत्र का अपभ्रंश नहीं है ॥

२७१ पाठान्तर-तहा । तहें । मृग । उर । वनं । मसु । पीयकी । तत । तत्ति । लीय ।
तहां । तिहा । ठाम । भयानक । तहां । ठाम । तिहां । ठाम । तिहा । ठाम । नमं । तिहा
हक सु पिय ह पिय जन । तिहा । ठाम । तिहा । ठाम । तिहां । ठाम । द्रव । लै । लग । ह ।
मुक्किय । अघिलंघ । थान । सपंत । सपत्त । दिधि । कीयौ । कोई । कोई आज भलो इह अप
दिय । बुध । न निद्रय । दानव ॥

आना का अपने मन में विचार कर कहना ॥

श्लोक ॥ मनसाधार्यं पुंसा स्यात् । विधिश्चिन्तति नान्यथा ॥

ब्रह्माज्ञा लंघनेनापि । स्वयंपूरकमाधवः ॥ कं० ॥ ५३२ ॥ छ० ॥ २७२ ॥

कवित्त ॥ सो पूरक माधव्व । जगत जानन अधिकारिय ॥

थावर जंगम दैन । कठिन चिंता न विचारिय ॥

सरव भूत है जाम । मध्य हरि दैन भूगत्तिय ॥

किं कारन नर क्षुरे । देइ मन वंकिन बत्तिय ॥

सा पूरस चित्त धरकै नही । धरक चित्त कायर करहि ॥

तिहि काज देषि दानव बलिय । बल बलिष्ट पुन उच्चरहि ।

कं० ॥ ५३३ ॥ छ० ॥ २७३ ॥

२७२ पाठान्तर-स्यात् । विधिचित्ति । ब्रह्माज्ञा । माधव ॥

हमारे पाठकों को ज्ञात होगा कि इस यथ को क्लिष्टिम घना हुआ कहनेवालों ने ऐसा अत्यन्ताभाव का वचन भी कहा है कि इस महाकाव्य के बनानेवाले को अनुस्वार और विसर्ग तक का भी ज्ञान न था । परंतु हमने इसी यथ में और इसी आदि पर्व में इस रूपक के पहिले आए हुए संस्कृत भाषा के श्लोक आप की दृष्टि के आगे धरे हैं कि आप न्याय कर सकें और ऐसे श्लोक आगे इस यथ में बहुत आवेगें क्योंकि हमने इस महाकाव्य को कई आवृत्ति करके पढ़ा है । वैसेही इस श्लोक को भी आप पढ़कर देखें कि पढ़ने में तो यह कैसा सरल है और अभिप्राय में कैसा विद्वानों के विचारने योग्य है । साधारण संस्कृत जाननेवाले से यह श्लोक लगना कठिन है अतएव हम उसका अन्वय नीचे संस्कृत भाषा में भी लिखते हैं-

अन्वयः ॥ पुंसा मनसा आधार्यं यत् स्यात् तत् स्वयंपूरक=माधवः, विधिः ब्रह्माज्ञालंघने नापि चिन्तति अन्यथा न चिन्तति ॥

अर्थ । पुरुष करके मन से धार के जो काम हो सकता है उसको स्वयं पूरा करनेवाला परमेश्वर (विधि) दैव विधान वा कर्म ब्रह्मा की आज्ञा को उल्लंघन करके भी सोचना है अन्यथा अर्थात् उससे उलटा नहीं सोचना ॥

सारांश यह है कि उद्योग के अनुसार ही फल दैव भी देता है चाहे प्रायः उसमें उलटी भी हो । इससे केवल उद्योग की प्रधानता कही है ॥

हे पाठको । क्या आप के अपतपात से विभूषित हृदय में वह श्रेय कुछ भी सब मकरा है कि इस महाकाव्य का यथकर्ता चाहे कोई भी हो ऐसा निर्वाध या निःशिकं अनुस्वार और विसर्ग तक का बोध न था ?

२७३ पाठान्तर-सो । माधव । जानन । अधिकारीय । दैन । दैन । विचारिय । सरव । जाम । दन । दैन । भूगत्तिय । दैव । नहीं । तिहि । दानव । उच्चरहि ।

आना का दानव को कंदरा में देखना और उसके खड्ग मारने
पर दानव का गाजना ॥

पहरी ॥ दिष्यौ सु वीर कंदला गेह । सैं पच ह्य्य ता ह्य्य देह ॥
असि असी ह्य्य भारहि भनंक । मन सहस पाइ तो उर वनंक ॥ कं० ॥ ५३६ ॥
अगोष्ट उच्च जठिय भनंक । उठतै सु रोमनि सनंक ॥
बुल्यौ सु वैन निय सत्त मान । देषंत चष्य बालक विनान ॥ कं० ॥ ५३६ ॥
अति सुषम वचन मधु मधुर कंत । दिष्यौ सु अंस राजन सुभंत ॥
जंभाइ वीर दसनं लहक्क । उद्यौ सु रोम रोमह पदक्क ॥ कं० ॥ ५३६ ॥
उर चंपि षग सिर नाइ राज । गहराय इन्द्र दानव सु गाज ॥
कं० ॥ ५३७ ॥ ह० ॥ २७४ ॥

इस पर दानव का आना से उसके मा बाप आदि के नाम पूछना ॥

कवित्त ॥ भेद वचन तन षेद । सुतन पंडुर चठि आइय ॥
उष्ट धरद्वर कंपि । सुतन प्राक्रम जंभाइय ॥
धरन सु थिर मन लीन । जीव धर धर धर कांनिय ॥
कौन भाव कवि चंद । बलिय सात्वक रस भांनिय ॥
पुच्छन सु बाल बुल्यौ बलिय । करि सु चिंत अतिंत चित ॥
को मात तात कचि नाम को । को साँई साधक सु मति ॥
कं० ॥ ५३८ ॥ ह० ॥ २७५ ॥ *

हुंढ दानव का आना के सिर पर हाथ धर गल्ल पूछना ॥

दूहा ॥ खरग हथेली वाम पर । हुंढै मेलि अनल्ल ॥
करुना करि सिर ह्य्य धरि । पूकि विवर सब गल्ल ॥
कं० ॥ ५३९ ॥ ह० ॥ २७६ ॥ *

२७४ पाठान्तर—कंदरा । येह । हय । हय । हय । पाय । टोडर । उठिय । रोमह ।
बैन । सत । मानि । चपु । विनांन । सुषम । वाचन । करंति । राज राजन । जंभाय । हसन ।
लहक । नाइ । गहरा इन्द्र द्रा दानव कि माज ॥

२७५ पाठान्तर—द्वर द्वर । कंप । प्राकंप । प्राक्रम । धरा धर । कांनीय । कौन । भाइ ।
भांनीय । पुच्छन । बुल्यौ । चित । अत्यत । चिंत । कुमति ॥

* इस के आगे के अर्थात् रूपक २७६ से २७८ तक सं० १६४७ और १६७० की लिखित

गाथा ॥ असुर हथेली चंद्रं । विसतारं कही यह थवा ईसं ॥
मुक्ता फल परिमानं । ता मध्ये सोहीयं आना ॥

कं ॥ ५४० ॥ छ० ॥ २७७ ॥ *

आना का मन में चिंता करना कि जो हूँडा सुभे निगलेगा
तो मैं उसका पेट चीरकर निकलूंगा ॥

दूहा ॥ आनें चिंतिय राम । जो मुच्चि हूँडा निगलिहै ॥
इंद्र व्रतासुर जेम । निकसौं उदर विदारि षग ॥

कं० ॥ ५४१ ॥ छ० ॥ २७८ ॥ *

आना का उत्तर देना कि जिससे बीसलदेवजी का मन मैन होगया ॥

दूहा ॥ गवरि मात उर उड्ख्यौ । पित बीसल मन मैन ॥
इत आवन मन तरस्यौ । सूअ तन देषन नैन ॥

कं० ॥ ५४२ ॥ छ० ॥ २७९ ॥

साटक ॥ किं दारिद्र सु दुष्ट कुष्ट तनयं । किं भूमि सचू चरं ॥
किं वनिता च वियोग दैव विपदा । निर्वासिनां किं नरं ॥
किं जन मानस रुष्ट जुष्ट जुग्ता । किं आपितं सङ्गरं ॥
किं माता म्रित रंग भंग सरसां । आलिङ्गता सुंदरी ॥

कं० ॥ ५४३ ॥ छ० ॥ २८० ॥

पुस्तकों में नहीं हैं किन्तु इधर की लिखी पुस्तकों में मिलते हैं। जब तक इन से भी पुरानी पुस्तकों में ये रूपक न मिलें तब तक उनको हम लेपक कहना योग्य नहीं समझते हैं ॥

२७६ पाठान्तरा-करग । कर । गह । येली । मेह्लि । अनल्ल । हय ॥

२७८ पाठान्तर-हुँडा । निकसो । विहारी ॥

† यह आज कल सौरठा छंद कहलाता है किन्तु प्राचीन समय में हिन्दी भाषा के ऋषि इसको दोहा भी कहते थे क्योंकि दोहे के जितने भेद भाषा के छंद यथो में लिये हैं उन में सौरठा भी है अतएव चंद्र का यह दूहा संज्ञा देना कुछ आश्चर्यदायक नहीं है ॥

२७९ पाठान्तर-वल । मैन । आवनम । तुम । नैन ॥

२८० पाठान्तर-सचू । दैवविपदा । निर्वासित । मानस । जुग्ता । जगता । समग्र

सरसा । आलिङ्गता ॥

यह भी ध्यान में रहने योग्य बात है कि पुरानी हिन्दी भाषा की लिखित पुस्तकों में मुन केर रूप जैव शब्द म्रित और ऋषि लिये देवने में आते हैं ।

साटक ॥ नो दारिद्र न कुष्ट दुष्टन तनं । सत्रू धरा नो हरं ॥
 नो वनिता च वियोग दैव विपदा । निर्वासितो नो नरं ॥
 नो सन्मानस रुष्ट जुष्ट जगता । नो आपिता सत् गुरं ॥
 मातुर्नाम्रित रंग भंग सरसा । ना लिंगिता संदरी ॥

कं० ॥ ५४४ ॥ ह० ॥ २८१ ॥

दूषा ॥ ना दारिद्र न कुष्ट तन । ना मुगधा रस भेव ॥

नानुरत्त संसार सुष । तो पग रत्तो सेव ॥ कं० ॥ ५४५ ॥ ह० ॥ २८२ ॥

साटक ॥ नैवां दुष्य न सुष्य साहस रने । नैवांन कालं छतं ॥

नैवां मात पिता न चैव धनयं । नैवांन किती रतं ॥

नैवांनं हित्त मित्त साजन रसं । नैवांन किं रुष्टयं ॥

त्वं देवं तुअ सेव देव मरनं । तोयं जयं राजयं ॥

कं० ॥ ५४६ ॥ ह० ॥ २८३ ॥

दूहा ॥ तव लगि कुष्ट दरिद्र तन । तव लगि लघु मुहि गात ॥

जब लगि हौं आयौ नहीं । तो पाइन सेवात ॥

कं० ॥ ५४७ ॥ ह० ॥ २८४ ॥

दानव का आना से पूछना कि तू क्यों राज अरत्त है ॥

दूहा ॥ आलिंगन दै हथ्य धरि । अरु पुच्छिय इह बत्त ॥

जा जीवन रत्तौ जगत । तू क्यों राज अरत्त ॥

कं० ॥ ५४८ ॥ ह० ॥ २८५ ॥

आना का बीसलदेवजी दानव को उत्तर दे कहना ॥

दूषा ॥ जिय न रत्त नह एन दुष । भूमि न घर मुक्त देव ॥

तिन उचाट निउँ कै मरौं । तुम पय रत्तौ सेव ॥

कं० ॥ ५४९ ॥ ह० ॥ २८६ ॥

२८१ पाठान्तर-नां । धरा न । ना । विनता । नां । ना । ता । सन्मानस । आपितो ।
 गुरं । मातुर्नाम्रित ॥

२८२ पाठान्तर-न । न मुगद्ध । नानुरत्त । नरत्तु । तूअ पग रत्तो सेव ॥

२८३ पाठान्तर-दुष । सुष । रस । पितं । मित्त । सजन । तुं । तुय ॥

२८४-२८५ पाठान्तर-नब । हूं । नहीं । तो ॥ २८४ ॥ दे । हथ । पुच्छिय । रत्तौ । सो तू
 क्रम अरत्ति ॥ २८५ ॥

२८६ पाठान्तर-रत । तहि । भूमिन । तिहिं । जीऊं । जिउं । कि । मरो । ये । रत्तौ ॥

दृष्टा ॥ राजा ज दिन बुनाइ है । मुह सुभक्तै इह मत्त ॥
कै सिर तुम हि समर्पि है । कै सिर धरि है कत्त ॥

कं० ॥ ५५० ॥ छ० ॥ २८७ ॥

इह धरनी मुक्त पित प्रपित । आदि अनादि सु देव ॥
सो मंगन तुम पाय है । आयौ आतुर सेव ॥

कं० ॥ ५५१ ॥ छ० ॥ २८८ ॥

दूढा दानव का प्रसन्न होकर आना को अजमेर का राज देना ॥

घोटक ॥ सु प्रसन्नह देवित ईत तनं । नर रूप धरन्न क्रियौ सु मनं ॥

तुअ पुचह पौच बधू उरनं । जन मानस राज करों धरनं ॥ कं० ॥ ५५२ ॥

असि हथ्य लियै असमान गयौ । पग टोडर कंदन ही जु ठयौ ।

तब पुज्जन कौं रविवार कछ्यौ । चहुआन सु आनल राज दयौ ॥

कं० ॥ ५५३ ॥ छ० ॥ २८९ ॥

दूढा का आना को राज देकर गंगा की ओर उड़कर जाना ॥

दूष्टा ॥ दयौ राज आनल गढ । उडि दुंढा षह मग ॥

दिसि गंगा तब गमन किय । उअर त्रिषा अति लग ॥

कं० ॥ ५५४ ॥ छ० ॥ २९० ॥

दूढा का नेमऋषि के उपदेश से गंगा की ओर जाते हुए
दिल्ली पहुंचना ॥

पइरी ॥ नव द्वार सन्नि नप पवन जोर । आयौ सु नेम रिष तथ्य ठौर ॥

दिसि रिष्य लगि निसचर सु पाय । कहि रिष्य कवन तो काय ॥ कं० ॥ ५५५ ॥

बीसलह राज कथि पुब्ब कथ्य । जरौं ताप उधरौ केन नथ्य ॥

तुअ पिचि कैअन इह ठांउ धारि । काती सु जाइ जै तिथ्य धार ॥ कं० ५५६ ॥

ते पाप कीन आनन्त मर्म । तिहि ठौर रुब्ब कुट्टै सु कर्म ॥

सुनि अवन उड्यौ राषिम अक्रास । आयौ सु पंथ क्रमि दिली वास ॥ कं० ५५७ ॥

२८७-८८ पाठान्तर-जा । दिन । मुहि । सूक्तै । मसि । कै । हो । के । ह । हो । ह ।

२८८ ॥ प्रमित । हो ॥ २८८ ॥

२८९ पाठान्तर-प्रसन्नह । धरनं । कीयौ । मानस । करे । हथ । असमान । सु । पुज्जन ।

३० । चहुआन । चहुवान । आनल ॥

२९० पाठान्तर-दीपा । आनलहु । कीय ॥

सुर थान निगम बोधह सुरंग । जल जमन आइ राषिस स्त्रमंग ॥
कालिन्द्र दह सु अति गहर वारि । पावन परम सीतल सु चारि ॥

कं० ॥ ५५२ ॥ ह० ॥ २८१ ॥

ढूंढा का हारिफ ऋषि से मिलना, अपनी पूर्व कथा
कहना और तीन सौ अस्सी वर्ष महातप करके
ऋषि से उपदेश ग्रहण करना ॥

कवित्त ॥ सीतल वारि सु चंग । तहां गय चलि निसाचर ॥
लगि पिपास स्त्रम अंग । वारि पिन्नौ अंदोलि वर ॥
भौ सीतल सब अंग । करै अति वारि विचारह ॥
रिष चारिफ गुह बगै । सोर सुनि आय निचारह ॥
दिषि प्रबल रिषि पूछ्यौ प्रसन । कवन रूप क्रीलै सु जल ॥
निसि मद्धि अइ राषिस वचहि । पाइ परस पुब्बह सकल ॥

कं० ॥ ५५८ ॥ ह० ॥ २८२ ॥

दूहा ॥ ढिंग जुगिनिपुर सरित तट । अचवन उदक सु आय ॥
तहं इक तापस तप तपत । बीली ब्रह्म लगाय ॥

कं० ॥ ५६० ॥ ह० ॥ २८३ ॥

कवित्त ॥ ताली पुल्लय ब्रह्म । दिषि इक असुर अदभुत ॥
दिघ्घ देह चष सीस । मुष्य करुना जस जपत ॥
तिन रिषि पूछिय ताहि । कवन कारन इत अंगम ॥
कवन थान तुम नाम । कवन दिसि करिव सु जंगम ॥

२८१ पाठान्तर-नेम । तथ । ठार । रिष । लागि । पाइ । रिषि । वीसलह कथ कथि
राल कथ । जोरों । उदुरौ । नथ । तुव । कोन । दहि । ठाउ । जाउं । ल्यौ । तिथ । आनत ।
आनत । अधम्म । तिहि । ठोरि । सब । ति । क्रम्म । उड्यो । दिलि । सुर सुर । थान । आय ।
राषिश्रमंग कालिन्द्र । पावन । परम । सू सारि ॥

२८२ पाठान्तर-तिहां । चलि । सु निसाचर । श्रम । पीनो । अंदोलि । भय । सब्ब ।
देह । वरें । रिषि । पुच्छ्यौ । क्रीलौ । महु । चवहि । पाय परसि गध अप्य सकल ॥

२८३ पाठान्तर-तहां । आइ । लगाई । लगाइ ॥

२८४ पाठान्तर-पोलिय । ब्रह्म । दिषि । अदभुत । दिघ्घ । चषु । रस जपत । पुच्छिय ।
थान । नाम । करीय । नाम । नृपति । आप । लभीय दइत । तजन । क्रत ॥

मो नाम दुंढ बीसल न्नपति । साप देह लभिय दयत ॥

कुहन सु तेह गंगा दरस । मजन देह जन मंत वृत ॥

कं० ॥ ५६१ ॥ ६० ॥ २८४ ॥

दूहा ॥ मजन देह जन मंत कृत । सजन अजैपुर राज ॥

निय तन असि वर षंडि चैां ॥ मधि गंगा रिषराज ॥

कं० ॥ ५६२ ॥ ६० ॥ २८५ ॥

तन सु पाप तापह तपन । किम उधार मो होइ ॥

तुम रिषिराज वचिष्ट वर । यौ उपदेसह मोइ ॥

कं० ॥ ५६३ ॥ ६० ॥ २८६ ॥

तब मुनि वर हसि यैां कश्चिय । बिन तप लक्षिय न राज ॥

अन धन सुत दारा मुदित । लक्षौ सबै सुष साज ॥

कं० ॥ ५६४ ॥ ६० ॥ २८७ ॥

तब सु तहंां उपदेस लिय । लगि धारन हरि ध्यान ॥

तपत तप्य नित रिषि गुहा । अंग उष्यज्यौ ग्यान ॥

कं० ॥ ५६५ ॥ ६० ॥ २८८ ॥

रिष सु उद्वि तीरथ गयौ । दरी सु दानव कंडि ॥

जौ लौं आजं तिष्य करि । तौ लौं तू तप मंडि ॥

कं० ॥ ५६६ ॥ ६० ॥ २८९ ॥

गाथा ॥ तपत निसारर तप्यं । बीते बरष तीन सै असीयं ॥

भय वाधा विण अंगं । लगौ राम धारना ध्यानं ॥

कं० ॥ ५६७ ॥ ६० ॥ २९० ॥

दूहा ॥ दुंढा रिषि उपदेस लिय । तिहि डिग दरिय उधोर ॥

बरष तीन सत असिअ लगि । महा प्रवह तप घोर ॥

कं० ॥ ५६८ ॥ ६० ॥ २९१ ॥

२८५-२८९ पाठान्तर-कृत । हो । हो ॥ २८५ ॥ सोह । सोइ ॥ २८६ ॥ यो । तहो । मने ॥ २८७ ॥ उहा ध्यान । तप तप्ये । अंग अंग उपज्यो ग्यान । अंग उपज्यो ग्यान । २८८ ॥ अडि । दानव । लो । अकं । तिष्य तू ॥ २८९ ॥

३००-पाठान्तर-सनिवर । तापं । से । मो । शटक सब इन । तयो । ध्यान ॥

३०१ पाठान्तर-तिहिं । गदराय । बरष तीन सै असीय तपि । बस बपन ॥

अनंगपाल राजा का दिल्ली बसाना ॥

दूहा ॥ पंडव बंस अनंग नृप । पति चथिनापुर ठाम ॥

एक समै जमुना तटह । वसिय राज तहं गाम ॥

कं० ॥ ५६८ ॥ छ० ॥ ३०२ ॥

अनंग पाल तूंअर तहां । दिल्ली बसाई आनि ॥

राज प्रजा नर नारि सब । बसे सकल मन मानि ॥

कं० ॥ ५७० ॥ छ० ॥ ३०३ ॥

अनंगपाल की सुता का निगमबोध कालिंद्री तट पर गौरी पूजने जाना ॥

कवित्त ॥ अनंग पाल तूंअर । नरिंद धरमाधि राइ गुर ॥

सुता तास अति सुभग । बरष अठह ररूप वर ॥

सषी सु आनि समांनि । सील गुन वर अठह तर ॥

साधन भावन मास । गविरि नित करै पुज्ज उर ॥

निगम-बोध कालिदि तट । गई सकल पूजन गवरि ॥

तिहि काल मेघ ब्रष्यह प्रबल । * भई लगि भीजन कुंअरि ॥

कं० ॥ ५७१ ॥ छ० ॥ ३०४ ॥

अनंगपाल की सुता का दूँडा को पूजना और उसका कारण पूछना ॥

कवित्त ॥ अनंगपाल नृप सुता । संग पुत्री ति पंच सित ॥

प्रोहित पुत्री एक । पुत्रि सा चंडि सेव चित ॥

सब मिलि जमना तौर । गई अज्ञान सवारिय ॥

दिषि देवल अत पिंड । तेह दूँडा तप धारिय ॥

३०२-३ पाठान्तर-ठाम । यमुना । तहां । गाम । तोअर । दिल्ली । आनि । प्रज । बसे सकल तहां आनि । मानि ॥

* भई लगि भीजन=यह प्राचीन हिन्दी का धागरीति अर्थात् मुहावरा है ॥

३०४ पाठान्तर-तूबर । राय । अठह । सषी आनि समांग । आनि । समांनि । सील । अठहतर । साधन । स पुज्ज वर । निगमोध । कालिदि । गई । वरस । लगि । भीजन । कुवरि ॥

३०५ पाठान्तर-अनंगपाल पुत्री सु एक । सय सायिणी पंचव सत । पंच सत । ता मड । मंडि । जमुना । वपु खान । मृत । तिहि । डुडा । धारीय । पूजा । करीय । इय । दैत । पूज्यौ । तिनहि ॥

सब मिलि सु ताहि पुज्जा करिय । बरष पंच दुअ मास दिन ॥

दिन अवधि दइत पूछिय तिनच । को तुम कारन काम किन ॥

कं० ॥ ५७२ ॥ छ० ॥ ३०५ ॥

अनंगपाल की सुता का हूँडा को बर चाहने को पूजने का कहना ॥

गाथा ॥ इह सुनि अनंग नरिंदं । पुत्री सित पंच अवर दुज राजं ॥

बर चाहत तुम पासं । ए वर बीर वास इक ठामं ॥

कं० ॥ ५७३ ॥ छ० ॥ ३०६ ॥

हूँडा का राज-त्रियों की सेवा से संतुष्ट होना ॥

दूहा ॥ दिल्ली ढिग गहरिय गुफा । हूँडा तहां बयट्ट ॥

अठोत्तर सौ राज त्रिय । सेवा करत सु तुठ ॥ कं० ॥ ५७४ ॥ छ० ॥ ३०७ ॥

हूँडा का बर देकर काशी को उड़ जाना ॥

पहरी ॥ दिय बाच बाल दानव सु राज । सज्ज्यौ सु अप्प बर बचन साज ॥

उडि चलयौ अप्प कासी समग । आयौ सु गंग तट कज्ज जग ॥ ५७५ ॥

सन अठु षंड करि अंग अब्बि । होमे सु अप्प बर मडि हब्वि ॥

मंयौ सु ईस पहि बर पसाय । सन अड्ड पुत्र अवतरन काय ॥ ५७६ ॥

सन रह्यौ जोति मय देव थान । मिलि ताहि अक्करिय करत गान ॥

कं० ॥ ५७७ ॥ छ० ॥ ३०८ ॥

हूँडा का फिर जन्म लेना और उसका वृत्तान्त चंद्र का वर्णन करना ॥

दूहा ॥ इम आतम उड्डार करि । उनम निथे भुअ आइ ॥

सो वृत्त कवि चंद्र कहि । बरन्यौ कवित बनाव ॥ कं० ॥ ५७८ ॥ छ० ॥ ३०९ ॥

हूँडा का बर देना और काशी में यज्ञकर तन त्यागना ॥

दूहा ॥ तब हूँडा बर दान दिय । सुति सन अठु प्रसन्न ॥

कासी जाय रु जश्य क्रिय । सित षंड किय तन्न ॥ कं० ॥ ५७९ ॥ छ० ॥ ३१० ॥

३०६ पाठान्तर-अंगग । पुत्री सय । काम वास ॥

३०७ पाठान्तर-दिल्ली । गुफा । हूँडा । बयड । अठोत्तर । सौ । तुठ ।

३०८ पाठान्तर-दीय । दानवह । स । अर । पवन । चन्दो मग । मगग । कज्ज जग ।

षट् कवि । स । मधि । हब्वि । मज्ज । म । यसाई । पसाइ । अठु । अट । अनवार । काइ ।

ज्योति । थान । इहरीय । थान ॥

३०९-५० पाठान्तर-उधार लीया । भुअ । आइ । वृत्तान्त । चंद्रके । बरन्यो मकन

बनाव ॥ ३०९ ॥ वृडे । बरदान । अट । श्रीय । सन । श्रीय । ३१० ॥

ढूंढा के दानव शरीर का मान और स्वरूप बर्णन ॥

कवित्त ॥ अंगह मान प्रमान । पंच सैं हथ्य उने कह ॥
 रुह उंचै उममान । विनय लक्किनह विवेकह ॥
 हथ्य घडग विकराल । मुष्य ज्वालंघन सहह ॥
 आमल दिन्ना राज । गयौ राधिस तन महह ॥
 जोगिनिय गुफा बोधह निगम । तप आदर किन्ना सु तम ॥
 साधंत पवन तप उग्र करि । इम रष्यौ उहार मन ॥

न० ॥ ५८० ॥ छ० ॥ ३११ ॥

ढूंढा का दिल्ली में पाषाणरूप हो जाना और स्त्रियों का उसे पूजना ॥

कवित्त ॥ असी बरस सत तीन । गुफा किन्ना तप भारिय ॥
 बैस वंस विचित्र भ्रम । भरै जमुना जल नारिय ॥
 सारंग बज्ज्यौ वाउ । घटा बंधे जल बुट्टौ ॥
 दौरी सब गुह मभक्त । रूप पाषान सु दिट्टौ ॥
 मिलि नारि सबन अचरिज्ज करि । जल धोए उज्जल कस्यौ ॥
 साधंड धूप दीपह चरिच । सित मन सिद्धौ आचस्यौ ॥

छ० ॥ ५८१ ॥ छ० ॥ ३०२ ॥

ढूंढा का अनंगपाल की सुता को वीर पुत्र होने का घर देना ॥

कवित्त ॥ दिय बीसल बरदान । कुष्य उपजै माहा भर ॥
 बीरा रस उत्तान । जुह मंडै न कोइ नर ॥
 बीर जोति अवतार । भह जिह्वा तन भारिय ॥
 नयन जोति संजोगि । पत्ति कुल पिता संघारिय ॥

३११ पाठान्तर-कहि अंग । मान । प्रमान । हथ । उन । लकनह । हथ । मुष । आमल ।
 दीनौ । जो गिनिय । कीनौ । पवच । रष्यौ ॥

३१२ पाठान्तर-अशी । बरस । शत । कीनौ । भारीय । पची अधम । वित्रीय अधम ।
 विचिय अधम । भरै । जमुना । भारीय । नारीय । सारंग । बज्यौ । बज्या । वाय । बंधे । बुट्टौ ।
 दौरी । मक्त । सुद्विट्टौ । दीट्टौ । अरिज । धोय । उज्जल । तन मनि सुधि आवय्यौ । तन मन
 सुधि आवय्यौ ॥

३१३ पाठान्तर-दीय । बीसल । बरदानि । कुष । कुष्य । उपजे । माहा । रस । उत्तान ।

दिष्ये सु नयन पुष्ट करि प्रसिध । कियौ पाप इन धूष करि ॥
उप्यजै नारि अति रूप तिन । तेन लिख जायै सु धर ॥

कं ॥ ५८२ ॥ छ० ॥ ३१३ ॥

ढूंढा का वर देकर काशी जाना, वहां दानव योनि से मुक्त हो
अवतार लेना-सोमेसर की परिग्रह के प्रबंध के लिये क्षत्रियों
का उत्पन्न होना-जिन में से बीस अजमेर में और अन्य
अन्यत्र हुए-सोमेस के वीर पुत्र पृथ्वीराज हुए ॥

कवित्त ॥ वर दिनौ ढूंढा नरिन्द । जाय कासी तट रुडौ ॥

अस्त लियौ अवतार । भट रसना रस पिडौ ॥

सोमेसर परिग्रह । प्रबंध सित उपने षिचि नर ॥

हुए बीस अजमेर । विए उपने अपर धर ॥

सोमेस वीर सुत पिथ्य हुअ । ठौर ठौर ऊपजि वलिय ॥

विधि विधि विनान अवलोक गति । अवर सूर आए मिलिय ॥

कं ॥ ५८३ ॥ छ० ॥ ३१४ ॥

पृथ्वीराज जी के परिग्रह के सामंतों के नाम और जन्म
स्थानादि का वर्णन ॥

कवित्त ॥ हुअ निभक्तर कनवज्ज । जैत सलषं अब्बूगठ ॥

मंडोवर परिहार । करषि कंगुर हाडुलि दिठ ॥

बलि भद्र सु नागौर । चंद्र उप्यजि लाचौर ॥

दिल्लिय अत्ता ताइ । बिया धर सामत सौर ॥

ज्योति । जीट्टा । भारीय । पति । संघारिय । संधारीय । देवे । प्रसिद्ध । कीयो । दूष । उप्यजो
नारी । उप्यजो । तेन लिन जाइ सुधिर । तेन लित जासे सुधर ॥ *

३१४ पाठान्तर-दीनौ । दीपौ । सिधौ । सिधौ । अस्ति । लीयो । रचना । ल । सोमे
सर । परिग्रह । सित । शत । उप्यने । षिच । हुए । भये । वीर । वारा । ऊपने । अवर । दिष
वर्षि । विनान । आय मिलीय ॥

* पाठको को यह उपक से फिर सावधान होकर पढ़ना चाहिये क्योंकि कवि यह उपक से दूसरे पाठको के
वर्णन की कथा की भूमिका सांप्रदित्त वृत्त वर्णन करता है ॥

राम ते राव जन्तौर धर । गोइंठ गठु धामनि असै ॥

दाहिम बयाने उप्पनौ । प्रियिराज परिघह बसै ॥

कं० ॥ ५८४ ॥ सू० ॥ ३१५ ॥

३१५ पाठान्तर निभर । त्रिभर । कनवज । जेन सलप अगुगठ । हाहुन्लि । उपजि । अता ताय । समंता रामदे शोइद । गठ । दाहिम । बयाने । प्रियीराज । परिगह ॥

इस रूपक से कवि ने पृथ्वीराजजी के सामंती के नाम और उनकी उत्पत्ति के स्थानादि का वर्णन करना प्रारंभ किया है । यह विषय पुरातत्ववेत्ताओं के ऐतिहासिक शोधों में बहुत उपयोगी होने जैसा है—किन्तु इस ग्रंथ के अक्रिय होने में भी एक प्रमाण रूप हो सकता है—और यह भी भले प्रकार ध्यान में रखने जैसी बात है कि यहां चंद्र अपनी उत्पत्ति लाहौर की अर्थात् “चंद्र उप्पजि लाहौरह” कहता है । इस महाकाव्य में बहुत से पंजाबी भाषा के शब्द मिलने से पुरातत्ववेत्ता विद्वान चंद्र की जन्मभूमि के विषय में पंजाब देश का अनुमान किया करते थे और पंजाबी अति वृद्ध यहस्य भी अपने देश के महाकविचंद्र का नाम वंशपरंपरा से आज तक सुनते चले आते हैं परंतु अब हमको इस बात का निश्चय हो गया और पंजाब देश हिन्दी भाषा के काव्यों की अनुक्रमशिका में पहिली सख्या पर जा स्थापित हुआ क्योंकि अब तक इस महाकाव्य से प्राचीन कोई अन्य काव्य नहीं उपलब्ध हुआ है । कोई कोई विद्वान जो यह कहते हैं कि चंद्रकवि का होना केवल इसी महाकाव्य से विदित होता है । उनको अजमेर नगर के कैसरगंज में चांद बावड़ी अपने नेत्रों से देखनी चाहिये और चंद्र के पुरुषाओं का बनाया हुआ भाटाबाव भी उसी नगर में तारागढ़ के जाते हुए दृष्टिगोचर करना उचित है कि जो अजमेर के भाटा के कबजे से निकलकर बहुत समय तक टोंक के नवाब साहब के अधिकार में रहे हैं । फिर उन्होंने एक मोची को चांद बावड़ी दे दी थी कि अब म्यूनीसीपैल कमैटी ने उस की चारों ओर की दीवार बना दी है और इस बावड़ी के चारों ओर एक बगीचा भी था जिसका हांसल कुछ थोड़े दिनों तक म्यूनीसीपैलीटी में जमा होता रहा है और अब वह बगीचा कटकर वहा बस्ती बसा दी गई है । चांद बावड़ी में नीचे उतरने दहिने हाथ की दीवार में प्रशस्ति का स्थान बना है कि जिसके पाषाण लेख को एक ८३ वर्ष का मुसलमान फकीर कर्नैल टाड साहब का लेजाना कहता है । इस के महावरदान द्वार के दोनों ओर एक एक पत्थर के फूल खुदे हुए है कि जिसको अंग्रेजी में lotus अर्थात् कमल की जाति का फूल कहते है । यह फूल शिल्पशास्त्र के सिद्धान्तों में विज्ञ विद्वानों को बावड़ी की अति प्राचीनता सूचन करनेवाला दृष्टि आवेगा । चंद्र के विषय में कुछ और भी प्रमाण हमारी रचित पृथ्वीराज रासे की प्रथम संस्कार में पाठक देख लें । इस महाकाव्य में प्रायः फारसी शब्द भी प्रयोग हुए है उन के विषय में हमने अन्यत्र कई एक प्रमाण प्रकाशित किये हैं परंतु यह भी विशेष करके हमारे पाठकों के ध्यान में रखने जैसी बात है कि चंद्र जिस समय लाहौर में उत्पन्न हुआ था उसके १०० सौ वर्ष पहिले से वहा महमूदी सन्तान का राज्य था । फिर क्या कोई यह अनुमान कर सकता है कि उस समय की हिन्दी में एक भी फारसी भाषा का शब्द नहीं मिल सकता था ? इन रूपकों में जिन जिन सामंती के नाम आये हैं उनका पूरा पूरा वर्णन हम ग्रंथ के पूरे छत्र जाने पर लिखेंगे क्योंकि अभी हमारा काम केवल मूल पाठ शोधकर प्रकाशित करने का है ॥

पद्दरी ॥ उतपत्ति वास सामंत चंद्र । पाधरी कंद ब्रनै सु बंद ॥
 दस तीन हुए दिखी प्रमान । हरिसिंघ बसै गठुह बयान ॥ कं० ५८५ ॥
 जैसलहमेर अचलेस भान । पञ्जन बसै चीतोर थान ॥
 कलि कुंड हुओ जंधार भीम । चहुआन आन रष्यैत सीम ॥ ५८६ ॥
 बड भान केरि लग्गो सु पाइ । चहुवान सु वर सामंत राइ ॥
 समियांन गठु नरसिंघ राइ । पित मात केरि आप सु भाइ ॥ कं० ॥ ५८७ ॥
 देवरा धीर रिनधीर सथ्य । पक्खिवान देस प्रिथिराज तथ्य ॥
 जंधार भीम गठ जून वास । किन्नी सु जुद्ध भीमंग आस ॥ कं० ॥ ५८८ ॥
 लग्गो सु लोह लिन्नी दिलेस । सारंग राइ कोरी नरेस ॥
 वारडह राइ सहसौ करन । अशिर बसै गठ आसमन ॥ कं० ॥ ५८९ ॥
 जुध करै जित्त कन्हाति राइ । चहुआन सूर उप्पारि घाइ ॥
 सेवक कीन अप्यै सु जोर । तेजसु डोड वासी जुनोर ॥ कं० ॥ ५९० ॥
 कैमास सद्धि बलवंत बीर । लग्गो सु साइ चहुआन धीर ॥
 तारन सूर भटनेर वास । प्रिथिराज पाइ कीनी सु आस ॥ कं० ॥ ५९१ ॥
 भौंहा चंदेल गजनीय सेव । लग्गो सु घाव भूभंत तेव ॥
 उप्पारि लियौ सामंत राव । कीनी सु सेव अप्यह सु भाव ॥ कं० ॥ ५९२ ॥
 अरसी चंदेल मास्यौ सकज्ज । भौं हा चंदेल दीनो सरज्ज ॥
 पानीय पंथ उत्तन देस । दीनो सु फेरि दिखि नरेस ॥ कं० ॥ ५९३ ॥
 कनवज्ज राइ भूभंत ताम । रष्यौ सु अप्य कलि जुग नाम ॥
 चालुकक पाट भौरा भुअंग । रष्यै सु कचरा पिथ्य रंग ॥ कं० ॥ ५९४ ॥

३१६ पाठान्तर—उतपत्ति । उत्तपत्ति । वाश । वरनैति । चंद्र वरनैति । बंध । दश । दूए ।
 प्रमान । गठह । बयान । जेसलह । जेसल्लह । भान । पांजुन । पञ्जन । वसे । यान । कृड । हुंवे ।
 हुओ । चहुआन । चहुवान । आन । रपैति । आनर रपैति । धान्ट । लगा । सू । पाय । चहुवा न
 राई राय । समीयान । गठ । राय । छारि । भाय । निरधीर । रनधीर । पक्खिवान । देस । प्रियांराज ।
 पृथीराज । तथ । जून । वाश । कीनो । सू लिन्नी । दिलेथ । राय । नरेथ । राय । सह । भौ ।
 करन । आसमन । करे । जित्त । कन्हातराय । चहुवान । उपार । उप्पार । सेवक । क्कान । अप्ये ।
 ते बल । जुनोर । सह । लगा । पाय । चहुवान । चहुवान । तरन । वाय । प्रियांराज । पाय ।
 सू । भौहा । भौहा । गनीय । दूरी राज्य के पुस्तकालय की पुस्तक लिखी २० १८३३ में लजा-तेव के
 स्थान में "इस समय अप्यह सु भेव" करके पाठ है । और छंद ३६१ दिखीं तुक उस में है ही
 वही । लभा । भूभंत । उपारि । लियौ । किन्नी । चंदेल । सकज्ज । भौं हा । भौं हा । वरन ।
 पूरक । सुरज्ज । पानीय । उत्तन । उत्तन । दे । सू । नरेथ । कनवज्ज राइ भूभंत ताम ।

जावलो जल्ह दषिनी देस । प्रिथिराज राइ किन्नौ प्रवेस ॥
 सतनंज नगर दीनौ उतन्न । पूरन्न माल प्रिथिराज तन्न ॥ कं ॥ ५८५ ॥
 सूरति वास बहुआन राइ । कञ्चौ सु आत रष्यौ सु दाइ ॥
 बडगुज्जरहराम अली नरेस । दिन प्रति पांन भंजै सुदेस ॥ कं ॥ ५८६ ॥
 मुकले दूत प्रिथिराज तय्य । सेवा सु पाइ उप्पर जु ह्य्य ॥
 प्रिथिराज ताहि दो देस दिह । माहुत पांन अली प्रसिह ॥ कं ॥ ५८७ ॥
 करि वास तब्ब गुज्जर निसंक । मार्यौ पांन आलील वंक ॥
 हड्डा हमीर नैन वारिह । लगौ सु पाइ दस देस दिह ॥ कं ॥ ५८८ ॥
 घेता पंगार है आत राइ । पर्यौ दु काल देसं सु भाइ ॥
 दिल्लीय देस गुठ्ठा सु मंडि । रष्यै सु वास भट सुभट भुंड ॥ कं ॥ ५८९ ॥
 परमार कनक जैचंद वास । किन्नौ सु पूंन इक पाचि दास ॥
 लिय पाच अछौ प्रिथिराज देस । लग्यौ सु पाइ आयौ नरेस ॥ कं ॥ ६०० ॥
 सांपुलौ सहसमल मात पष्य । तप करत अनंगह गयौ रष्य ॥
 लग्यौ सु पाइ प्रिथीराज आइ । दीनौ सु देस पट्टय साइ ॥ कं ॥ ६०१ ॥
 अवतार लिये दिल्ली नरेस । तब हुए सत्त सामंत भेस ॥
 कं ॥ ६०२ ॥ कं ॥ ६१६ ॥

कवित्त । डूँठा नाम * दानव उतंग । दियो फल अंब विसाल ॥
 बंदि लोन नृप राज । आय फिर गेह सु चाल ॥
 सत्त भाग कृष अग । बंदि दिय अत्त समानं ॥
 तिनह सूर सामंत । कित्ति रष्यन चहुवानं ॥

भुग । फगं । नाम । चालूक । रष्यं । पिथ । रष्यै सुकचरापिथ रंग । जावल्ले जल्ल दिबिनीय ।
 देश । दषनीय । प्रिथीराज । राय । कीनौ । दीनौ । उतंन । पूरन माल । प्रथीराज । तन ।
 सूरति । वात । बडगुज्जर रांय । अली । नरेश । सुदेश । मुकले । पृथीराज । तब । पाय । सु ।
 प्रिथीराज । देश । दिध । अली । प्रसीदु । तद । गुजर । मारीयौ । हाडा । हामा । हमीर ।
 नैन । लगौ । पाय । घेतल पंगर । परियौ । देसां । भय । दिलिय । दलीय । देश । गुठ्ठा । भट्ट ।
 जैद । पात्रदास यहौ । प्रथीराज । देश । आयै । मानि । पयि । करित । रिषि । प्रथीराज ।
 आय । कीनौ । पट्टव । लीयौ । दिल्ली । सत्त ॥

३५० पाठान्तर—कुंठुं (नाम * विशेष है) उतंग । विसालं । गेहे । सु चालं । कृष । भूत ।
 समानं । चहुवान । अति प्रथम । अमिय प्रकाल । सगह । ईक । सवत । सवत । सवत ॥

रजमेल चंद्र फल अमिय प्रथु । सबर साहि मौपन सु गहु ॥

इकदस समंत पंचह समै * । भए थान पंचम सु पहु ॥

कं० ॥ ६०३ ॥ छ० ३१७ ॥

आना राजा का उजड़ी हुई अजमेर को फिर बसाकर राज करना ॥

दूहा ॥ अनल आनि मातह मिल्यौ । कहि सब वत्त सुनाइ ॥

लोग महाजन संग लै । भूमि बसाई जाइ ॥ कं० ॥ ६०४ ॥ छ० ॥ ३१८ ॥

पड़री ॥ आना नरिंद अजमेर वास । संभरीय कीन सौब्रन्न रास ॥

नियनाम कछ्हा आना नरिंद । अरि धरनि वीर मंड्यौ सु दंद ॥ कं० ॥ ६०५ ॥

ग्रामान ग्राम तोरन उतंग । वन बट्टि कट्टि निधि निधि पुरंग ॥

पसु पंपि सद श्रुत मंडलेस । जल न्हान दान ब्रह्मान सु देस ॥ कं० ॥ ६०६ ॥

हारम्य रम्य फिरि मंडि लोइ । दालिद्र दीन दीसै न कोइ ॥

सौघट्टि † सत्त वरपं प्रमान । आना नरिंद तपि चाहुवान ॥ कं० ॥ ६०७ ॥

जैसिंह जी का गद्दी पर विराज राज करना ॥

षग धम्म देस दिथ पुच हथ्य । जैसिंधदेव तपि राज तथ्य ॥

किति छत्र सीस जैसिंधदेव । निधि लई वीर बीसन घनेव ॥ कं० ॥ ६०८ ॥

बिंटु लीय वीर आना नरिंद । बीसन तडाग मधि द्रव्य कंद ॥

पाथौ न वीर तिन द्रव्य छेइ । कंचनह कान मंडाय गेइ ॥ कं० ॥ ६०९ ॥

सब द्रव्य दीन तिन विप्र हस्त । भंडार धरिय धन धम्म वस्त ॥

श्रुति सुनहि श्रवन जंपत पुरान । साधरम करम चलि चाहुवान ॥ कं० ॥ ६१० ॥

कलि नीति गरुअ गहि मुक्कि । कुल रीति वित्त रंचक न चुक्कि ॥

सो वरस अठु तप राज कीन । आनंद सेव सिर छत्र दीन ॥ कं० ॥ ६११ ॥

* यह पाठ हमने सं० १८५९ की पुस्तक का रक्वा है किन्तु सं० १८६९, सं० १८८० और सं० १८८५ की में 'इक दस संवत पंचह समै' है कि इनमें से त्रिवे विद्वान डॉ० न समझें उसे ग्रहण करें ॥

।

३१८ पाठान्तर-अनिल । अनलि । सुनाय । लोग । बसाईय । बसाइय । जाय ।

३१९ पाठान्तर-आना । नरिंद । नरद । संभरीय । सौब्रन्न । रासि । नाम । आना । मधो । तोरन । बट्टि । कट्टि । पुरंग । पय । सदस्तुत । मंड्यैस । न्हान । दान । हारम्य । मः । कोइ । लोय । दारिद्र । दीन दीन । दीने । कोई । सौ घडा । वन । प्रमान । नरिंद । चहुवान । धम । हथ्य । तथ । हस्त । जैसिंह । निधि । वीर हल । घनेव । चहुवाय । विठनाय ।

आनन्दमेवजी का राज करना ॥

तहां तप्यि तेज आनन्द मेव । बराह रूप दिष्यौ सु देव
धरनी विचार आयास साद । मंड्यौ सु राज पद्भुकर प्रसाद ॥ कं० ॥ ६१२ ॥
सो * वरष राज तप अंत कीन । सिर क्वच सोम पुत्रह सु दीन ॥

सोमेश्वरजी का सिंहासन पर विराज राज करना ॥

सोमेश सूर गुज्जर नरेश । मानवी राज सब घग्ग घेस ॥ कं० ॥ ६१३ ॥
माहू बजाइ भटीन थान । घल भोमि लई बल चाहवान ॥
दिल्लेश व्याह तोंवर घरेस । तिह ग्रभ भयौ पीथल नरेश ॥ कं० ॥ ६१४ ॥
आनन्द राज नंदन सु सोम । मोरिया दलनि तिन क्रियौ होम ॥
निय पुर सु नयर सुर लगि धोम । आनन्द केलि अजमेर भोम ॥
कं० ॥ ६१५ ॥ कृ० ॥ ३१६ ॥

सोमेश्वर जी की शूरता का संक्षेप वर्णन ॥

कवित्त ॥ जिहि सोमेश्वर सूर । सूर जित्त पुरसानी ॥
जिहि सोमेश्वर सूर । चढिवि गुज्जर धर भानी ॥
जिहि सोमेश्वर सूर । लियौ नाहर परिहारिय ॥
बल उपम कवि चंद । चंद राहा जिम मारिय ॥

नरिद । छैह । देह । काम । गैह । गेह । दिन । भंडारि । श्रवन सुनहि । लपत । पुरांन । वाहु-
वांन । गरुव । गरुव मुकि । जलि । रीत । चित । रचक । चुकि सौ । अठ । तिहां । तपि । रूप्य ।
दैष्यौ । सट्ट । प्रसद । सौ । सोम । सोमेश । शूर । गुजर । पग । घेस । मांरु । वजाय । भट्टी ।
थान । लइ । बल । चाहुंवान । दिल्लेश । दिल्लेश । तुंवर । घरेश । गर्भ । यभ । पित्यज । पीथ्यल ।
नरेश । मोरीयां । दल । दलह । कीयौ । नैर । लगि । कल ॥

* चौघट्टि सत्त=इस के विरुद्ध कोई दूसरा पाठ हमारे पास की पुस्तकों में नहीं मिलता
किन्तु कोई कोई वृद्ध कवि चौसट्टि सत्त करके मूल में पाठ होना कहते हैं और उससे ६४+७=७१
वर्ष की संख्या निकालते हैं और कोई १०० वर्ष और चार घड़ी और कोई ७ वर्ष और चार घड़ी
का वाचक पाठ कहते हैं किन्तु ऐसे सब स्थल पत्रपात रहित विद्वानों के सूक्ष्म विचार करने योग्य हैं

* इस सो शब्द का पाठ किसी किसी पुस्तक में सौ भी है कि जिससे वर्ष की संख्या के
समझने में बड़ी गड़बड़ हो जाती है । यह स्थल भी विद्वानों की बुद्धि को श्रम देने जैसा है ।
यदि कोई शुद्ध अतःकरण से पूर्वापर का लेखा लगा देखेगा तो वह चंद कवि की सवत संबन्धी
कठिनता को जान कर बहुत प्रसन्न होगा ॥

३२० पाठान्तर-जिहि । सोमेश्वर । जिने । पुरसानी । चडै । चडे । भानी । भान्ती । लीयो ।
परिहारी । परिहारीय । बलि । उपम । राहा । सारी । मारीय । बैरन । दोरि । राजार । बर ।
पां । मड । गुजर । गुजर । गज्यौ ॥

वर बीर धीर धारह धनी । संभरि बैरिन भंजयौ ॥
 इक दौरि गौर राजौर वह । पां बड गुज्जर गंजयौ ॥

कं० ॥ ६१६ ॥ क० ॥ ३२० ॥

दिल्ली के राजा अनंगपाल जी पर कमधज्ज का चढ़ना ॥

कवित्त ॥ दिल्लीवै अनंग । राज राजंग अभंग ॥
 ता उप्पर कमधज्ज । सेन सज्जी चतुरंग ॥
 अग आतस आभूत ॥ पुट्टि बंधे गज पत्तं ॥
 ना पुट्टै विजपाल * । सुभर सज्जै रन मत्तं ॥
 धजनेज सोज नीसान ठल । मनु वसंत रंज्जिय विपन ॥
 करि कूच कूच उप्पर धरा । बेध अंतर सपन ॥

कं० ॥ ६१७ ॥ क० ॥ ३२१ ॥

कमधज्ज की चढ़ाई सुन अनंग का कालिंद्री उत्तर मुकाम करना ॥

कवित्त ॥ सुनी वत्त अनंग । अंग लग्गो रस वीरह ॥
 अकुटि वक्र रत द्रिगग । चित्त जुध रत्त सरीरह ॥
 बोलि श्रित्त अप्पान । कधिय सू वान मत गुन ॥
 चढत राइ दिल्लेस । करिय नीसान वीर धुन ॥
 गज बाजि रथ्य पइ भर गहर । सजिय सेन सनमुष चनिय ॥
 उत्तरि कलिद्रि मुक्काम किय । दस दिसान वत्ती सनिय ॥

कं० ॥ ६१८ ॥ क० ॥ ३२२ ॥

* स्मरण में रखने की बात है कि सप्रत शोधो के अनुनाद नी जवान के राजा विजयपाल जी, दिल्ली के राजा अनंगपालजी और अजमेर के राजा सोमेश्वर जी परस्पर सम्बन्धीन थे ।

३२१ पाठान्तर-उल्लो । दिल्लीवै । राजंग । अभंगम । कमधज्ज । सज्जा । चतुरंगम । अग । अथ । पुट्टि । पुट्टि । बंधे । पत्तं । मत्तं । पुट्टे । पुट्टि । विजयपाल । सज्जे । मत्तं । नीसान । ठल । मनु । वसंत । रंज्जिय । विपन । कुच । उप्परि । धरा । बेध । अंतर । सपन ।

३२२ पाठान्तर-सुनिय । सुनिय । वत्त । लौ । लगे । दस । मुक्काम । दस । दिसान । वत्ती । सनिय । सनिय । उत्तरि । कलिद्रि । मुक्काम । दस । दिसान । वत्ती । सनिय ।

कमधज्ज की चढ़ाई सुन सोमेश का अनंग की सहायता को
दिल्ली जाना और वहां पहुँच अनंगपालजी से एकान्त में
मंत्रणा करना ॥

पद्दरी ॥ संभरिय बत्त संभरि नरेस । आभासि भित्त अप्पां असेस ॥
कमधज्ज राज तोवर नरिंद । मत्तौ सु दुनै आवइ दंड ॥ कं० ॥ ६१९ ॥
अप्यन सहाय सज्जां सूर । बैठन्न येस नह अस्स सूर ॥
करिकैं सु जीति आवें अपान । कै सजैं वातु कैलास यान ॥ कं० ॥ ६२० ॥
मन्नेव सूर भर मंत वाम । घुम्परे नह नीसान ताम ॥
चढि चल्या सेन सजि चाहवान । उप्पटे जानि सत सिंधु पाज ॥ कं० ॥ ६२१ ॥
अगो सु सोम दिखी सहाय । अगोव विष्प हर कंठ लाय ॥
अगोव मनी लभी फुनिंद । अगोव सरद निसि उगिग चंद ॥ कं० ॥ ६२२ ॥
अगो सु चक्र जिनी गुविंद । अगो सु वज्र कर चकी इंद ॥
बिहु बाह सूर सज्जे समंत । बेनै विरह बंधे अनंत ॥ कं० ॥ ६२३ ॥ *

* यह छंद सं० १६४७ । १७७० और १८४५ की पुस्तकों में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है ॥

इस छंद की अंत की तुक में 'बेनै विरह बंधे अनंत' है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेन ने अनेक विरह बंधे अर्थात् कहे । यह वेन कवि इस महाकाव्य के रचनेवाले चंद्र का पिता था और वह सोमेश्वरजी के इस समय साथ था । अब तक चंद्र से पहिले का कोई काव्य किसी भी कवि का किसी के जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद्र छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध की है उस के पीछे मेवाड़ राज के महाराणा जी श्री उदयसिंहजी के महाराज कुमार श्रीसगतसिंहजी के पंडित विष्णुदासजी ने अकबर बादशाह के भाट गंगजी से अजमेर में पटोलावाय के मुकाम पर चंद्र के बाप कवि राव वेन का नीचे लिखा छप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करते हैं । छप्पय में वेन ने पृथ्वीराजजी के पता सोमेश्वरीजी को आसीस दी थी—

छप्पय ॥ अटल ठाट महि पाट । अटल तारागठ यानं ॥
अटल नय अजमेर । अटल हिंदव अस्थानं ॥
अटल तेज परताप । अटल लंका गठ डंडिव ॥
अटल आप चहुवान । अटल भूमी जस मंडिव ॥
संभरी भूप सोमेश नृप । अटल छष औपै सु सर ॥
कवि राव वेन आसीस दें । अटल जुगां रजेस कर ॥ १ ॥

अमंग सुदति पंतिय विहर । पलकंत अंदु मद भरत भूर ॥
 धजनेज चमर बंबर बिनान । मन हू कि पव्व पल्लव किसान ॥ कं० ॥ ६२४ ॥
 धमकंत धरनि अहि सिर निचाय । हल हलिय द्रिग उद्रिग थाय ॥
 धुर धुरि पुरि जुटिन भमिति । दिसि व दिसि राज पसरंत किति ॥ कं० ॥ ६२५ ॥
 रघु परहि सोम पर चाड कज्जि । मन हू कि दुल्लह वर व्याह रज्जि ॥
 संपत्त जाय दिहिय पुरेस । आनंग राज मिह्व असेस ॥ कं० ॥ ६२६ ॥
 अह वत्त कुमल पूहिय असेत । रस चास पेम बहु सु चेत ॥
 विधि विधि भोज भोजंत राय । रुचि सु चित घट रस भाइ ॥ कं० ॥ ६२७ ॥
 आहार पान घन सार पूर । बैठे सु आइ एकंत सूर ॥
 सब कहिग विधि कमधज दिसान । सुद्धरै वत्त सो करहु पान ॥
 कं० ॥ ६२८ ॥ कं० ॥ ३२३ ॥

अमंग की बात सुन सोमेश का रोस में आय लड़ने को तयार होन ॥

कवित्त ॥ सुनिय वत्त जपि सोम । रोस उभार भार असि ॥

रसन दसन दव्वंत । रत्त द्रिग जुच्छ चथ्य कसि ॥

इसी के साथ उसी पुस्तक में चंद्र के नागापारणा का कथा पुरा यह नीचे लिखा दोहा भी लिखा है-

दोहा ॥ ले कूंजा नृप पीयुला, सांमत चमूं समंद ॥

वेन नंदन कनवज गमन, दद करन कइ दद ॥

३२३ पाठान्तर-सभरीय । नरेचा । अभासि चित आयां । अया । अयोग । कमधज । राध । तूवर । जरिद । दुन्दे । आत्रदु । दुंद । सज्जा । वैवव । येह । धम । केकरे । जीत आना । नारिद । आनिग । अपान । थान । के सजे थान कैलास इंद । मनेव । मनेव मन भर मुट ठाम । घुमरेट्ट नीसान ताम । मनेव । घुमरे । चाहुवान । उपटे । जानि । निधु । पानि । पानि । आगे आगे । अये । अगेव । अगेव । अगेव । विप । लाइ । अगेव । अगेव । अगेव । मनि । मनि । लभी । फुनिद । अगेव । अगेव । रत अगे । अगे । वेन । थाने । अगे मदन । पभार । पदुर । भरन । धनान । मत हू । पव । कसान । सर । जलो । दुा । अट्टग । दुग । आट्टग । पुर पुरि रिपुरि जुटिन भमिति । पुरि पुरि पुरि जुटिन भमिति । वि । पनरात । पइइ । पइइ । कज । मान हू । मानहु । रज । सपन । दिनिपपुरेज । राय । मिजे । पइइ । नमान । पुंइय । अगेन । रस हाथ । वडे । विधि विधि । चित । रत्त । पान । आय । सज्ज । विप । कमधुज । दिसान । सुद्धरहि । वत्त । हू । पान ॥

इस पाठान्तर- वत्त । वत्त । वत्त । रोस । उभार । नारि । दुनिवत्त । सुद्ध । दय । विधा । विधा । अयो । अयो । अवि । नारीय । दाहुवान । बहुवान । करे । दता । मानहु ।

इह कमंध आमंध । राज सम जंग विचारिय ॥
 सजौ सेन अप्पनी । भिरौ भंजौ अरि भारिय ॥
 चहुआन राय आनन्द सुअ । अति उमाह भारय मनह ॥
 अह मग लुगि भंषौ दलह । वात चक्र मानहु तिनह ॥

कं० ॥ २९ ॥ छ० ॥ ३२४ ॥

दोनों राजाओं का डेरों पर जाना और पिछली रात को
 युद्धारंभ होना ॥

दूहा ॥ इह परिट्टि * राजन उठे । गय अप्पाने टाव ॥

निसा जाम रहि पाकली । भयौ निसान निघाव ॥

कं० ॥ ३३० ॥ छ० ॥ ३२५ ॥

सोमेस की सहायता से अनंग की विजयपालजी के साथ लड़ाई ॥
 भुजंगी ॥ रही जाम एकं निसा पच्छि यानं । वजे नह नीसान बीसान जानं ॥

चढ्यौ राज आनंग सोमं समेतं । बढे हास रासं चितं प्रीति हेतं ॥ कं० ॥ ३३१ ॥

सुभै सेत कचं धजा नेज माही । मनो बहलं मभक्त रंज्यै सु राही ॥

सजे पष्यरं बाज दंती सनेनं । सनाहंत धीतं चितं जुद्ध जेनं ॥ कं० ॥ ३३२ ॥

इतै आनि दूतं कही वत्त साजं । सजे सेन आयौ विजैपाल राजं ॥

स्रपं व्यूह आकार सज्जे सभारं । दठं फन्न पुंक्कं रचे अत्त सारं ॥ कं० ॥ ३३३ ॥

सुने वत्त आनंग चित्तं विचारी । कही सोम सीवी बँधौ बंध भारी ॥

सजो सेन अप्पान व्यूहं गहरं । गिलै स्रप्यतामं हुवै जितिसूरं ॥ कं० ॥ ३३४ ॥

* हिं० परिट्टि (सं० स्त्री० परीष्टि = Inquiry, research, &c.) से है ॥

३२५ पाठान्तर-परिट्टि । परठि । अप्पानै । टाह । जाम । पकली । निसान । नघाय ॥

३२६ पाठान्तर-जाम । इक्क । इक्कं । पच्छियनं । वजै । नीसान । वरजानं । चढे । सोमे ।
 सोम । समेतं । चढे । हाश । रास । राशं । चित । सुभे । छेत्र । नेन । माही । मनो । बहलं ।
 घदल्ल । मभक्त । रचे । रच्ये । पष्यरं । सनेनं । सनाहंति । धितं । चित्तं । जुद्ध । जेनं । इत्ते । इतं ।
 आनि । आय । सफे । आयो । विजिपाल । विजैपाल । अपं । सप । सजे । सु भारं । दठं । फन्न ।
 फन्न । पुक्कं । भृत्ति । धित । सुनै श्रवन वैनं वतं विचारी । सिरक । सिपं । बधो । सजो । स्रपान ।
 कहरं । गिले । श्रप । जिति । चंचु । राय । तिन । राजं । पिछ । चौरंग । तय तुहु । जय ।
 उधीर । पिछ । धरा धार उधार धीरं सु नेवं । पंड पंड । पंड पंड । लज । सेजे । सजे । पुछ ।
 पथ्य । कूरभ । जिने । जित्तीया । जितिया । अनेक । अय । नंगं । तिन । अग । आतस । भारे ।
 दुयं । गेन । उडै । कंषे । बढे । भंडा । दिपानं । वजै । अचट्ट । आनंद । अनद । गजे । निसानं ।

सज्यौ चंच ग्रीवा सु सोमैस रायं । तिनं संभरी लाज राजं सहायं ॥
 दिना दाहिनी पक्ष्य चौरंग वीरं । कुलं चाहुवानं जयं युद्ध भीरं ॥ ६३५ ॥
 वियं पक्ष्य वीरंम वीरंग देवं । धरा धार उद्वार धारं सु नेवं ॥
 पगं पंड चानंग राजंग पालं । पंड पंडं भुजं लज्ज भालं ॥ ६३६ ॥
 सजे पुच्छ्क कोरंभ जैसिंघ नामं । जिनें जित्तिया जुद्ध अन्नेक ठामं ॥
 सजे अग पंती मदं सोष नगं । तिनं अग आतस्स भारं उतंगं ॥ ६३७ ॥
 दुवे सेन मिस्त्री उडी रेन पूरं । कँपे कायरं सूर बट्टे सनूरं ॥
 धजा नेज ठालं पताषी दिसानं । बजे सिंधु आनह गज्जे निसानं ॥
 छं ॥ ६३८ ॥ छं ॥ ३२६ ॥

कवित्त ॥ वज्जि गहर नीसान । अगि अग वान विकुटिय ॥
 * दरिया दधि किय मथन । † भोम फटिय षह तुटिय ॥
 करषि मुट्टि कम्मान । तानि क्रन वान वनं किय ॥
 मनहुं चिल्ह दिसि, सदल । ‡ भोरं वासं नमनं किय ॥
 रुधि मग मिच षह मुदयो । सुभर सोम मत्तौ गहन ॥
 सर सार सार उप्पर सिलह । मनु मेघ बुद्ध मही महन ॥
 छं ॥ ६३९ ॥ छं ॥ ३२७ ॥

विराज ॥ चुरंगी सु वीरं । जुटे जुद्ध भीरं ॥
 कुटे सोप वानं । मुटे आसमानं ॥ छं ॥ ३४० ॥
 परे वष्य धायं । करै कूह कायं ।
 उभारंत सेलं । हुवं सेल भेलं ॥ छं ॥ ३४१ ॥
 तनं इन्द्र कालं । रुधिजा प्रनालं ॥
 वचै धार षगं । निनारंध रगं ॥ छं ॥ ३४२ ॥

३२७ पाठान्तर-नीसान । अगि अगिवान विकुटीय । * क्रि । दीया । काय । मथन ।
 † क्रि । फट्टीय । तुट्टीय । मुख । क्रमान । कम्मान । क्रन । क्रिन । वान । वनकिय । मनह । निनि ।
 ‡ क्रि । भोर । भौर । भौर । वास । नमन । मग । मुदयो । मुनर नोन । मनो मेघ बुद्ध महन । महि ॥

३२८ पाठान्तर-चौरंगीश । जुटे । जुटे । भोरं । हुटे । हुटे । वान । मुटे । वष्य । याय ।
 करै । कूह । हुष । सेल । तिन । इद्र । रुधिजा । रुधिजा । वचै । वष्य । वष्य । रग । वटे ।
 तुटे । इन । नरो । नरो । विहारी । परै । परै । यान । दल दोट वारी । दोट । दय । यो ।
 ३४० । लु । लोप मत । वटे । वष्य मष्य । वटे । नन । नोरणा । वसिद । वसिद । वष्य । वष्य ।
 मन । वष्य । वष्य । वष्य । वरिह । वरिह । वित । परै । वडि । वित । वष्य । वष्य । वष्य ।
 मने । वष्य । वष्य ।

तुटे दंत जारी । करै गै विचारी ॥

परे भूमि थानं । कलं कूट जानं ॥ कं० ॥ ६४३ ॥

चयं घंड घंडं । धरं रुड मुंडं ॥

लुथं लुथ्य मत्तं । कटं वन भत्तं ॥ कं० ॥ ६४४ ॥

चुरंभी सु तत्तं । वरं सिंघ उत्तं ॥

मिल्यौ बथ्य आनं । दुअं मल्ल जानं ॥ कं० ॥ ६४५ ॥

भिल्लै जंम दहुं । गलं लगिग बहुं ॥

वरं सिंघ घेतं । परे बंध नेतं ॥ कं० ॥ ६४६ ॥

भयं पंच भीरं । कटे पास वीरं ॥

भगे दहु वानं । जिते चाहुवान ॥ कं० ॥ ६४७ ॥ ह० ॥ ३२८ ॥

गाथा ॥ भगो दल नर सिंघं । जंगं जिताइं राइ चौरंगी ॥

बाई दिसि वर वीरं । लगे जुद्धाइं षग मग्गायं ॥

कं० ॥ ६४८ ॥ ह० ॥ ३२९ ॥

रसावला ॥ * षग साहिं नगा । सेन सेनं अगा ॥

सार धारं मगा । कूह कूहं वगा ॥ कं० ॥ ६४९ ॥

धाय्यों ठंनकी । आहिरं घंनकी ॥

कंठ गीरं मता । बारुनी पी मता ॥ कं० ॥ ६५० ॥

वीर लुथ्यं लुथं । मल्ल बथ्यं वथं ॥

तुहि तंतं अती । गरजनीयं दंती । कं० ॥ ६५१ ॥

नालि ज्यो कठुती । सूर यो विठुती ॥

उडि लोहं लुहं । मल्ल जोहं जुहं ॥ कं० ॥ ६५२ ॥ ह० ॥ ३३० ॥

३२९ पाठान्तर-भगो । वरसिंघं । वरसिह । जंग । जिताइ । राय । चउरंगी । वाइ । दीसि । लगे । मगइ । मगाइ ॥

* इस छंद का नामान्तर विमोह अर्थात् विमोहा भी है और यह दो दो रगण का होता है ॥

३३० पाठान्तर-षगं । सग । साहि । साहं । नगा । सजै सैन अगा । सजे सेन अगा । सारं धार । कूह कूह वगा । कूहं कूह वगा । विघायं ठनकी । अहीरन धनकी । अहिरं धनकी । कंठगी रमता । कंठगी रमता । बारुणी पिमता । बारुणि पिमता । परी लुथ लुथं । परी लुथा लुथ्य । मिलै वथ वथ्य । वथं । तुटीतंन अती । तुटी तंति अंती । गरजंत दंती । नालि ज्यौ कठती । सूरप्यो वठती । सूर ज्यौ वठती । उडे लोह लोहं । उडे लोह लोहं । मिले जोह जोहं । मिले जोह जोह ॥

इस रूपक के पाठान्तरों को विचारने से पाठकों को ज्ञात होगा कि वे कैसे कैसे अद्भुत और विद्वानों को भी भुला देनेवाले हैं ॥

कवित्त ॥ वठन बीर बीरम्म । बीर कमधज सौं जुय्यौ ॥
 ता उप्पर गजराज । आइ मद मोष उपय्यो ॥
 इहिन संग उभारि । विरचि बाही गज मथ्यह ॥
 जाइ ठनंकिय घंट । कंठ सोभा सुभि तथ्यह ॥
 गहि संग सूर लीनी ह्वकि । जै जै सुर आकास कहि ॥
 रुधि धार कुट्टि संमुह चली । मनों भेर सरसति बहि* ॥

छं० ॥ ६५३ ॥ छ० ॥ ३३१ ॥

भंजि मूष्य गजराज । अप्प सेना उर धारिय + ॥
 ता मध्ये सै तीन । फिरग संमुष है डारिय + ॥
 ता मध्ये वाघेल । राइ रिपु सख मचा भर ॥
 घरी एक रन रंग । नुट्टि धर धार गही धर ॥
 जित्तौ सु जंग धारह धनिय । विभक्क वीर + वित्तौ जहां ॥
 भजि और अत्त कंडे रिनह । गे राज विजपाल तहां ॥

छं० ॥ ६५४ ॥ छ० ॥ ३३२ ॥

दूहा ॥ वीर देव सम वीर लरि । भगिग सेन कमधज्ज ॥
 ता पच्छें सोसेस पर । उड्डिसार वज रज्ज ॥ छं० ॥ ६५५ ॥ छ० ॥ ३३३ ॥

* ये तुकें वूंदी राज के पुस्तकालय की पुस्तक न० १८४५ की में नहीं हैं ॥

३३१ पाठान्तर-वीरम । कमधज्ज । सो । सु । उपर । गजराज । आय । इहत । उभारि ।
 वाहि । मथ्यह । जाय । कति । तपह । सगि । समुह । समुह हेहा रिय । वनिय । मनहु ।
 सति । विहि ॥

| पाठको ' हम बीसलदेवजी की दानव कथा को उद्धृत रूप में कवि का निघन्टा दिव्य ॥
 २८० में यह आये उसी तरह इस दिल्ली के राजा नन्दपर जे को चार नवोत्र के राजा कमध...
 विजपालजी की लडाई का बर्णन बीरम्म वीर वीर रनेो में कविने निघा है कि हम बात को
 वह हम को पुक्ति से सुवना आने "विभक्क वीर वित्तौ जहां" शक्य से करना है । यह महा
 काव्य कवि ने तब रता में लिखा है अतएव जहा हम का.र को सदेव न को करे वहा आर दिव्या
 कर रस को समक लजिरण ॥

कवित्त ॥ परी भीर सोमेस । सोम वंसी सहाय भय ॥
 मार मार उचरंत । सेन चतुरंग हयगय ॥
 गजदंता विकुरंत । बीर भेरी भननंकत ॥
 टोप टूक विकुरंत । पाग भागत रदनं कत ॥
 रस रास बीर कभधज्ज भय । समुह बीर निहाइया ॥
 संभरी राव संभारि क्ल । लगौ लोह उचाइया ॥

कं० ॥ ६५६ ॥ ह० ॥ २३४ ॥

पद्धरी ॥ उचाय लोह लगि व्योम थान । मानों कि हरिय वल्ल क्लन वान ॥
 जुटै सु अरिन दल मभक्त जाइ । मानों कि सिंध गज जूय पाइ ॥ कं० ६५७ ॥
 इन बिद्ध सोम मिल लोह पूर । आवइ रीठ मत्ती कहर ॥
 कन नंकि वान बजि गोम धंका । कायर पुलंत सूरानिसंक ॥ कं० ६५८ ॥
 हल मिलग सेन वै बाह बीर । वरसें अनंग प्रजंत धीर ॥
 माचंत कूह बजि लोह सार । जुटंत सूर रिन करि पचार ॥ कं० ६५९ ॥
 राजंत राग सिंधू * कराल । बाजंत वज्ज जनु जेघ काल ॥
 हलकंत घाव वाहंत धीर । किलकंत नद नारद बीर ॥ कं० ६६० ॥
 उहकंत डक्क डाइन डरान । गहकंत गिद्धि सिद्धिनिय थान ॥
 नावंत देव महकंत फूल । लहकंत दुपथ मन मथ्य हूलि ॥ कं० ६६१ ॥
 उररीय सेन सजि अनगपाल । भर हरी भीर कभधज विसाल ॥
 सत पैड जाइ फिर लगि गाय । आतार रीठ मत्तौ उराय ॥ कं० ६६२ ॥

३३४ पाठान्तर-परी । सोमेस । वंसी । हय गय । गजदंता भननंकतः । टोप ।
 विकुरंत । पाग । भागत । रननंकित । रननंकत । रस सुर । वीर । समुह वीर । निहाइया । निहा-
 ईया । संभरी । लगौ । लगों । उचाईया उचारिया ॥

* संगीत शास्त्रवेत्ता और अन्य सब को स्मरण में रखने की बात है कि संगीत के प्राचार्य
 भरत जो सिंधू राग को वीर रस में मानते हैं उसका प्रचार इस समय तक पाया जाता है अर्थात्
 लडाई में सिन्धु राग गाया और बजाया जाता था और बूह रच के लडना भी पृथ्वीराजजी के
 समय तक प्रचलित रहा है ॥

३३५ पाठान्तर-उचाय । लोह । व्योम । योम । थान । माने । मनो । हरि । हरी वलि बलन वान ।
 हरीय । वान । जुटै । जुटो । जुटो । मभ । जाय । मानौ । मानौ । जुय । पाय । इनि । विध ।
 विधि । सोम । मिलि । लोह । पुर । रीट्ट । मत्ती । वान । शूरा । हलि । मिलिग । वै वाह ।
 धरौ । यजंत । मावंत । जुटंत । सिद्धु । मैव । घातय । घायु । वहंत । नद । नारद । डक ।

तिन मुष्प सोम मिल चाहुवान । मांनों कि रिष्पि दरिया ग्रसान ॥
 तिन सीस बज्जि धारा निहाय । घरियार बज्जि मनुँ वज्ज घाय ॥ कं० ॥ ६६३ ॥
 परि सोम सूर अरि बधिय जंग । चौसट्टि घाय बेध्या सु अंग ॥
 तिन अग्ग परिग पहु मान वीर । छिन भिन्न होय धारा सरीर ॥ कं० ॥ ६६४ ॥
 सत पंच परिग है गै कहर । सैं पंच दून परि पित्त सूर ॥
 सहसं च पंच कमधज्ज सेन । जीतौ अनंद सुत वीर सेन ॥ कं० ॥ ६६५ ॥
 भाजंत सेन बर विजैराज । है गै वीर रिन क्कोरि लाज ॥
 षलकंत श्रान धर चलिग षल । वैाि ग्ग देव हर रुंड माल ॥ कं० ॥ ६६६ ॥
 पल चरन चार बर रंभ कीन । जै जया सह बंहीन हीन ॥ ६६७ ॥ कृ० ॥ ३३५ ॥

सोमेश्वरजी का दिल्ली में बड़ा साहस करना ॥

कवित्त ॥ दिल्ली वै सोमेस । कियौ साहस चहुवानं ॥
 सो कमधज्ज नरिंद । वीर विजपान भगानं ।
 अजरां परि अजमेर । मान वंधव परि चहुं ॥
 अस्त वस्त अरु चर्म । टंक लभ्यै नन चहुं ।
 रघुवंस वीर दिष्टौ निजरि । पहु पंथिनिय रुडाइयां * ॥
 अप भंस अण कर काहि वै । पील्हां हंकि उडाइयां * ॥

कं० ॥ ६६८ ॥ कृ० ॥ ३३६ ।

कमधज्ज का पराजित हो घर जाना और सोमेश का अजमेर
को चलना ॥

दूहा ॥ जित्ति भित्ति भारथ्य भौ । गौ फिरि ग्रह कमधज्ज ॥

उपारे अजमेर पहुं । डोला पंच सुरज्ज ॥ कं० ॥ ६६६ ॥ ह० ॥ ३३७ ॥

अनंगपाल जी का सोमेश्वर जी को कन्यादान करना ॥

कवित्त ॥ अनग तूंअर नरिंद । भस्म मंडो उळंग वर ॥

सुभ सोमेश नरिंद । ग्रहन पानिंग मंडि कर ॥

हेम हय गय भार । दासि दीनी जु पंच सय ॥

सत हस्ती है सचम । अथ्य अप्पौ सु देस लय ॥

हिंसार को पचर विहर । मुत्ती मान सुरंग घन ॥

चल्यौ नरिंद अजमेर दिसि । बलि नरिंद इक बंध मन ॥

कं० ॥ ६७० ॥ ह० ॥ ३३८ ॥

सोमेश्वरजी का अजमेर आना और वहां बड़ा उत्सव होना ॥

कवित्त ॥ अंगारिय गजराज । आय ग्रिह जीतिव जानय

पहिरावन परिवार । जानि रिति माधव मानिय ॥

बाल वृद्ध जुब्बनह । मुष ग्गावत अति मंगल ॥

रुचि रुचि विविध बचन । परस्पर जानि सुष्प गल ॥

तरु अंब गौष तारुन चिविध । सपिय गौष उभिय सरस ॥

प्रतिबिंब मुष्प राका दरस । मुह गावत चहुआन जस ॥

कं० ॥ ६७१ ॥ ह० ॥ ३३९ ॥

३३७ पाठान्तर-जित्ति । भित्ति । भारथ । भय । गय । ग्रिह । कम धज । डोला सुरज ॥

३३८ पाठान्तर-अनंगपाल । तुंवर । शुभ । सोमेश । पानिंग । मंडि । हेम हय गय ।
ज । सित । हथी । हय । हय । सुं । देवसलय । कौट । पचर । पचर विहार । मुत्ति । मुत्तिय ।
दिसि । बल ॥

३३९ पाठान्तर-अंगारीय । ग्रिह । यह । जीतिव । परिवार । जानि । मानिय । बुद्धि ।
जुंवनह । मुष गावत । मुष्पि गावत । विविधि चचच । जानि । सु पिंगल । तारुनि ।
त्रिविधि । सपीय । गौषि । उभीय । प्रति विव मुष्क राका दरसन । प्रतिव्यव । मुष चहुंषान ।
चहुषान । चहुआन ॥

पृथ्वीराजजी की कथा का आरंभ करना ॥

पद्दरी ॥ अब कहैं कथ्य चहुआन राइ । जिम लई भूमि षल षग धाई ॥
 जिम अनग राज दिल्ली दान । बपनेत बलिय कुल चाहुवान ॥ कं० ॥ ६७२ ॥
 जिम अगम द्रुग गठ लए कूटि । जिहि कित्ति कित्ति जिति संसार लूटि ॥
 जिम मेक्खु सेन षग धार षंडि । कै बार साहि जिन बंधि कंडि ॥ कं० ॥ ६७३ ॥
 जिम कमध सेन धरु धरिय कीन । विध्वंसि जग संयोगि लीन ॥
 अब्बुआ राव रष्यौ बलेस । चालुक्क भजि पदन नरेस ॥ कं० ॥ ६७४ ॥
 परिहार सिघ जिम जेर कीन । बरनौ विवाहि रस बसि अधीन ॥
 देवगिरद्रुग है पुरनि गाहि । बालुका जीति है जग्य धाहि ॥ कं० ॥ ६७५ ॥
 रिनयंभ द्रुग जदव नरेस । कान्या विवाहि तिन रष्यि देस ॥
 भंजे मै वास बहु भील कंक । भर नीर येह तिन कट्टि बंक ॥ कं० ॥ ६७६ ॥
 अनमी मसद तिन नाम वारि । जुगवंत जीव मूरष गवार ॥
 अवतार अप्य करतार होइ । हूओ न और हू है न कोइ ॥ कं० ॥ ६७७ ॥
 अजमेर द्रुग नप सोम राइ । अदभूत तेज अरि धरन लाइ ॥
 दिल्लीय अंग तेअर नरिंद । अनसंक कंकपहुमीस इंद ॥ कं० ॥ ६७८ ॥
 तिह सुत नाहि ग्रह पुत्ति दोय । क्रिय व्याह कमध चहुआन मोई ॥
 कं० ॥ ६७९ ॥ कं० ॥ ३४० ॥

सोमेश्वरजी का तेज बल से तपना ॥

कवित्त ॥ तपै तेज चहुआन । सूर सोमेश्वरुअप्य बल ॥

तिन सु तेज तरवारि । मुक्खु अरु सुक्खु मुष्य जन ॥

सुभट भाट संग थान । चित्र चारन चतुरंगम ॥
 जहँ तहँ लक्क निवास । सु वसि विलसंत सुरंगम ॥
 सुनिषै न पर श्रवन चक्र भय । सुजल सकल जंपै जगत ॥
 मानिकक राइ कुल उद्वरन । सोम पलनि जहँ तह पगत ॥

छं० ॥ ६०० ॥ छ० ॥ ३४१ ॥

अनंगपालजी का अपनी दो पुत्रियों में से सुन्दरी विजैपालजी
 को और कमला सोमेश्वर जी को प्रदान करना ॥

दूहा ॥ अनंग पाल पुत्री उभय । इक दीनी विजपाल ॥
 इक दीनी सोमेश कैा । बीज ववन कलि काल ॥

छं० ॥ ६०१ ॥ छ० ॥ ३४२ ॥

एक नाम सुर सुंदरी । अनि वर कमला नाम ॥
 दरसन सुर नर दुलही । मनो सु कलिका काम ॥

छं० ॥ ६०२ ॥ छ० ॥ ३४३ ॥

जिन दिन सोमेश का विवाह हुआ उस दिन क्या क्या हुआ ॥
 कवित्त ॥ ज दिन व्याहि सोमेश । त दिन अजरन मन उदित ॥
 त दिन बीर बेताल । काल कलहागम कुदित ॥
 त दिन अरवि उमहीय । पुत्र इहि भार उतारै ॥
 कच तेज कित कज्जि । देव दानव पुंतारै ॥

३४१ पाठान्तर-तपे । चहुआन । चहुआन । मुछ । मुछ । अछ । मुप । सुभट थाट संग
 भाट चित्त चारन चतुरंगम । जहा तहां । जिहां तिहा । जह । तह । लछि । वशि । सुनीषै ।
 जंपे । मानिक । कुल । पलन । जिहा । जह । तह ॥

३४२-३ पाठान्तर-अनंगपाल । दिनी । विजैपाल । विजैचंद्र । सोमेश । त्रिप वपुन । चाल ।
 दंद ॥ ३३२ ॥ नाम । शूर सुंदरी । सुंदरी । वीज कहेजा वइ नाम । वै । अनि वर मलया नाम ।
 दुल । मनो । सु काम ॥ ३४३ ॥

* चंद्र कवि का यह वाक्य "बीज ववन कलि काल", हमारे पाठको के ध्यान देकर
 सम्झने योग्य है कि यद्यपि चंद्र सोमेश्वर जी के घर का कविराज था परन्तु वह कैसा यथार्थ
 वक्ता था । क्या आज भी कोई कवि अथवा कविराज ऐसा स्पष्ट कह अथवा लिख सकता है ?

ता दिन सु सार सज्या समह । अम अंतर कायर कपे ॥

मानिकक राइ अनगेस घर । पानि ग्रहन ज दिन थपे ॥

कं० ॥ ६८३ ॥ रू० ॥ ३४४ ॥

सोमेश्वरजी की रानी के गर्भ रहना और उसका प्रतिदिन बढ़ना ॥

कवित्त ॥ कितिक दिवस अंतरह । रहिय आधान रानि उर ॥

दिन दिन कला वढंत । मेघ ज्यों बढत भइ धुर ॥

चंद्र कला सित पष्य । जेम बाढंत दिन दिन ॥

सुगधा जोवन चढत । मिलत भरतार पिनिधि ॥

उदित अधान सुभ गावनह । जेम जलधि पुनिम बढहि ॥

हुलसंत हीय जे प्रीय त्रिय । जिम सु जोति जनिता चढहि ॥

कं० ॥ ६८४ ॥ रू० ॥ ३४५ ॥

सोमेश्वरजी की लुँअरि रानी का पृथ्वीराजजी को जनना ॥

दूहा ॥ सोमेश्वर तांअर घरनि । अनगपाल पुत्रीय ॥

तिन सु पिश्य गर्भ धरिय । दानव कुल क्वचीय ॥

कं० ॥ ६८५ ॥ रू० ॥ ३४६ ॥

सोमेश्वरजी के प्रथम पुत्र का हुंठा के वर से होना स्मरण कर

गंधर्वादि का प्रसन्न होना और उत्सव मानना ॥

कवित्त ॥ प्रथम पुत्र सोमेश । गंधपुर हुंठा गड्डिय ॥

भई सुद्धि गंधवन । पुहप मंगल दुज पड्डिय ॥

अइ रैनि अनु जानि । लिदौ बालुक सिर सिद्धिय ॥

गयन वयन घन सह । युद्ध जीवन जय दिड्डिय ॥

३४४ पाठान्तर-व्याह । सौमेश । ता । अमरत । अमरत । उदित । काम । कनकापम
मुदित । उमहिय । उमहिय । नाथ मोहि भार उतारै । तत्र । द्विति । द्विति दिव्य वातव्य पु
तारै । धौ । दीन कहु दवि पुतारै । कभीय । कभीय । मानिक । राय । अनगेन । ज दिन ।
थपिय । थपीय । थपै ॥

३४५ पाठान्तर-कितिक । आधान । रानि । ज्यो दिव बढत भइ धुर । ज्यो । ज्यो मेघ
भइ धुर । पष्य । पष्य । जेम । यौवन । दिन दिन । पिनि धन । यदित अरान मुनयन
जेम । पुनिम । पुनिम । हुलसंत । जे । प्रीय । ज्योति

३४६ पाठान्तर-सोमेश्वर । तुअर । अन्न दिव्य । दिव्य । दिव्य ॥

स्मित सुभट सूर कृह सथ्य चलि । चंद्र भट्ट कीरति करन ॥
संजोगि जोति तप राषि सन । वरष तीस हसह बरन ॥

कं० ॥ ६८६ ॥ सू० ॥ ३४७ ॥

कवित्त ॥ बन तापस तप तपिय । आप बीसल सिर धारिय ॥
बरष असी तीन सै । गुहा ढिल्ली ढिग तारिय ॥ †
सिन अंजर रजनीय । पुरनि गंधव पग धारिय ॥ †

* * * * *

अवतार निथौ प्रिथिराज पशु । ता दिन दान अनंत दिय ॥
कनवज्ज देस गज्जन पटन । किलकिलंत कालंकनिय ॥

कं० ॥ ६८७ ॥ सू० ॥ ३४८ ॥

जिस दिन पृथ्वीराजजी का जन्म हुआ उस दिन देशान्तरे
में क्या क्या हुआ ॥

कवित्त ॥ ज दिन जनम प्रिथिराज । परिग वत्तह कनवज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन गज्जन पुर भज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन पटन वै सडिय ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन मन कालन षडिय ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज भौ । त दिन भार धर उत्तरिय ॥
वतरीय अंस अंसन ब्रह्म । रची जुगे जुग वत्तरिय ॥

कं० ॥ ६८८ ॥ सू० ॥ ३४९ ॥

३४७ पाठान्तर-सोमैस । गयपुर । कुंठां धारीय । भइ सुद्वि गंधवन । गंधवन । पठिय ।
रेन । रेनि । जानि । लयो । लीयो । वालिक । वालक । सुर । सद्विय । गैन वैन । घसद । गन ।
वैन घन सद । सुदु जीजीन जय दिद्वीय । सतं । सुर । जौति । सन ॥

† ये दोनो तुक स० १८४५ की पुस्तक में नहीं हैं ॥

* यह तुक हमारे पास की किसी भी पुस्तक में नहीं है ॥

३४८ पाठान्तर-वलि । सिल । धारीय । रंजनिय । गंधव । धारीय । लीयो । प्रिथीराज ।
दांन । कनवज्ज । दैस । गज्जन । पटन । पटन । किलकिलं । कालक नीय ॥

३४९ पाठान्तर-दिनि । जनमि । प्रिथीराज । परिग वत्तह कनवज्जह । जनमी । गंजन पुर
भंजन । गज्जन पुर भजह । जा । ता । वे । सड्वीय । जनमी । ता । जनिमि । भय । जद्विन
जनम प्रिथिराज भुय । भुय । ता । उत्तरिय । अवतरिय । अवतरीय । जुगे । जुग । वतरीय ॥

अनंगपालजी का अपनी पुत्री के पुत्र को देखना और उत्सव करना ॥

कवित्त ॥ अनंग पुहवै नरेस । व्यास जग जो १ बुलाइय ॥
 लगन लिडि अनुजा सुत । नाम चिहु चकक चलाइय ॥
 पुष्क पानि धरि धूप । पिथ्य पाइन दो अंसह ॥
 कलि अवतार कुलाह । अंरुपति पारन कंसह ॥
 बहु जुड रुड कलि जुग बर । अित्त सित्त दैनन भिरन ॥
 कवि चंद दिली थह कारने । इह अपुब्ब अवतार लिन ॥
 कं० ॥ ६८८ ॥ रु० ॥ ३५० ॥

पुत्री पुत्र उकाह । दान मानह घन दिडिय ॥
 धाम २ * गावत धमारि । मनहु अहि वन मनि निडिय ॥
 कनवज जैचंद मान । भयै संभरि वचनी सुत ॥
 तिन पवंत दुज पठिय । थार जग चीर थपिय थुत ॥
 पहिराइ परीघह दान दुज । श्रिय समाप सच्चन विभरि ॥
 दस दिवस रष्य अप्पन अवर । अति उकाह आनंद करि ॥
 कं० ॥ ६८० ॥ रु० ॥ ३५२ ॥

+ इस को कोई नई बात नहीं समझना चाहिये किन्तु बहुत पुरानी रीति है कि काव्य में जहाँ शब्द दो बार प्रयोग होता है और दो बार उस का पृथक् २ प्रयोग करने से छंद टूटता हो तब उस को एक बार लिख कर उसके आगे २ का अंक कर देने है और उस में अभिप्राय यह रहता है कि उसको गद्य में करने के समय अथवा उसका अर्थ करने समय उस शब्द को दो बार प्रयोग कर लेना कि उसके गौरव का नाश न हो जाय । ऐसे प्रयोग प्राचीन कवियों के काव्यों में आते हैं परंतु अब लोगों ने उनके स्याता में नये पाठ धर दिये हैं और इस सूत्र कारण पर ध्यान नहीं दिया है । किन्तु गद्य में तब अब तक यह रीति भले प्रकार प्रचलित है ॥

३५०-५१ पाटान्तर अनंगपाल । पुहवी । यौति । बुलाईय । निट्ट । दिट्ट । सु । मनि । नाम चिहु चक चलाइय चलाईय । पुष्क पानि । पिथ । यापन । दो । अंसह । कुलाह । अ । नि । बहु । जुड । जुगा । जुग । भ्यत । अित्त सित । दैनन । भिरिय । अरन इह अरुव अवतार नाय । अपुब्ब ॥ ३५० ॥ दान । मान दिडिय । धाम धाम । धमारि । मनहु अहि वन मनि निडिय । कनवजह । कनवज्जह । जैचंद । जैचंद । पतिता अहिनी सुवनी सुत । तिन । पवंत । दुजे । उदा । परीघ । पुति । श्रुति । पहिराइ । परिगाह । परिगह । दान । दं । अ । अवर । अवर । मयन । मयन । दिस । रिय । अप्पन ॥

पृथ्वीराजजी का जन्म होना सुन कर सोमसजी का उत्सव करना ॥

दूहा ॥ सुनि सोमस वधाइ दिय । है गै चीर गुराव ॥
अति उक्काच अनंद भरि । नृप सुप चठिय आव ॥

कं० ॥ ६८१ ॥ छ० ॥ ३५२ ॥

सोमसजी का पृथ्वीराजजी को अपने घर लाने का कहना ॥

दूहा । तब बुलाय सोमस वर । लौहानौ अरु चंद्र ॥
जै आवहुँ अजमेर धर । पचैतै घरच सु इंद्र ॥

कं० ॥ ६८२ ॥ छ० ॥ ३५३ ॥

सोमसजी का पृथ्वीराजजी को अजमेर ले आना ॥

दूहा ॥ करि आनौ * उक्काच किय । चलिय राज अजमेर ॥
सचस बाजि है सुभर वर । सत्त सषी मनि मेर ॥

कं० ॥ ६८३ ॥ छ० ॥ ३५४ ॥

पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् और उनके प्रागत्य का हेतु ॥

दूहा ॥ एकादस सै पंच दह । विक्रम साक अनंद ॥
तिहि रिपु जय पुर हरन कौं । भय प्रिथिराज नरिंद ॥

कं० ॥ ६८४ ॥ छ० ॥ ३५५ ॥

पृथ्वीराजजी के शाक की संज्ञा का सूत्ररूप कवि का वाक्य ॥

दूहा ॥ एकादस सै पंच दह † । विक्रम जिम ध्रमसुत्त ॥
चतिय साक प्रिथिराज कौ । लिखौ विप्र गुन गुप्त ॥

कं० ॥ ६८५ ॥ छ० ॥ ३५६ ॥

३५३ पाठान्तर-दीय । हे । गे । वीर । भर । मुंष । चठिय । आव ॥

३५३ पाठान्तर-चलाय । सोमस । लौहानौ । पुर गजब अति आसनह । महन तथ कवि चंद्र पुर गज्जन अति हरि आसनह । पुहन तथ कवि चंद्र । आवहु । घर ।

* स्त्री को उसका पति अथवा पति के सगे सबन्धी आदि उसके पिता के घर से अपने घर लाते हैं वह आना अथवा आनो कहलाता है ॥

३५४ पाठान्तर-उक्काह । कीय । चलीय । हे । वर सत्त । मति । मेर ॥

३५५ पाठान्तर-एकादस । से । सें । शाक । तिह रिपु पुर जय हरन कौं । हुंअ । हुय । भे । पृथ्वीराज ॥ बूंदीवाली सं० १८४५ की पुस्तक में इसके स्थान में ३५६ रूपक है और उस के स्थान में यह है ॥

† इसकी पहिली आधा तुक का पाठ हमारे पास की सब पुस्तकों में "एकदस समयै सु कृत" करके है किन्तु जो हमने रक्खा है वह बूंदी राज की पुस्तक से उद्धृत किया है ।

३५६-पाठान्तर-एकादस । समस्रै । समयै । धंम । सुत । त्रीययि । त्रीयति । शाक । पृथ्वीराज । प्रिथीराज । कौं ॥

इन रूपक ३५५ और ३५६ पर हम यह टिप्पण अत्यन्त आनन्द के साथ लिखकर हिन्दी भाषा के महा कवि चंद्र बरदाई की संवत् संबन्धी कठिनता के इस शोध को पुरातत्व वेत्ताओं की सेवा में भले प्रकार विचार करने को उपस्थित करते हैं । यद्यपि हमारे ज्योतिष शास्त्रादि के अच्छे अच्छे विद्वान् इष्ट मित्रों में से कितनेक महाशय कि जिनको यह शोध विदित हो गया है हमको First discovery प्रथम शोध करने का मान देने हैं किन्तु हम उनकी परम प्रीति और न्याय बुद्धि के साथ गुण याहकता के लिये अत्यन्त आभारी होकर यह कहते हैं कि जब अन्य पुरातत्ववेत्ता विद्वान् भी हमारे इस शोध को उसके गुण दोषों का अन्वेषण करके स्वीकार करेंगे तब हम अपने को सर्वरीत्या कृत कृत्य समझेंगे ।

अब आप चंद्र की संवत् संबन्धी कठिनता को इस प्रकार से समझने का प्रयत्न करें कि प्रथम तो रूपक ३५५ को बहुत ध्यान देकर पढ़ें । तदनन्तर उसका अन्वय करके यह अर्थ करें कि [एकादस से पंचदह] ग्यारह से पंद्रह [अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक] अनन्द विक्रम का साक अथवा विक्रम का अनन्द साक [तिहि] कि जिसमें [रिपुजय] शत्रुओं को विजय करने [पुरहरन] और नगर अथवा देश देशान्तरों को हरन करने [का] को [प्रियराज नरिद्र] पृथ्वीराज नामक नरेंद्र [भय] उत्पन्न हुए ॥

तदनन्तर इसके प्रत्येक शब्द और वाक्यखंड पर सूक्ष्म दृष्टि देकर अन्वेषण करें कि उसमें चंद्र की (Archaic style) प्राचीन गूठ भाषा होने के कारण संवत् संबन्धी कठिनता कहा और क्या घुसी हुई है । कवि के प्रतिकूल नहीं किन्तु अनुकूल विचार करने पर आपकी न्याय-बुद्धि भट पाज कर पकड़ लावेगी कि विक्रम साक अनन्द वाक्यखंड में—और उसमें भी अनन्द शब्द में हम लोगो को इतने वर्षों से गड़बड़ा कर भ्रमा रखनेवाली चंद्र की लाघवता भरी हुई है । इतनी बड़ हाथ में आ जाने पर अनन्द शब्द के अर्थ की गहराई को ध्यान में लेकर पत्रपात रहित विचार से निरख्य लीजिये कि यहां चंद्र ने उसका क्या अर्थ माना है । निदान आपको समझ पड़ेगा कि अनन्द शब्द का अर्थ यहां चंद्र ने केवल नव-सख्या-रहित का रक्खा है अर्थात् न-रहित और नन्द=नव ९ । अब विक्रम साक अनन्द को क्रम से अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक करके उसका अर्थ करो कि नव-रहित विक्रम का शक अथवा विक्रम का नव-रहित शक अर्थात् १००-९-९० । ९१ अर्थात् विक्रम का वह शक कि जो उसके राज्य के वर्ष ९० । ९१ से प्रारंभ हुआ है । यहाँ घोड़ी सी और उत्प्रेता करके यह भी समझ लीजिये कि हमारे देश के ज्योतिषी लोग जो संक्रुदा वर्षों से यह कहते चले आते हैं और आज भी बृह् लोप कहते हैं कि विक्रम के दो सवन ये कि जिनमें से एक तो अब तक प्रचलित है और दूसरा कुछ समय तक प्रचलित रहकर अब प्रचलित होगया है । और हमने भी जो कुछ इस के विषय की विशेष दंतकथा कोटा राज्य के विद्वान् कविराज श्री चहीदानजी से सुनी थी वह इस महाकाव्य की सरता में वैसा ही तैसा लिख दी है अतएव विदित हो कि विक्रम के दो सवत् है । एक तो सनन्द जो आज तक प्रचलित है और दूसरा सनन्द जो इस महाकाव्य में प्रयोग में आया है । इनके साथ इनका यद्वा का यद्वा और भी अन्वेषण कर लीजिये कि हमारे शोध के अनुसार जो ९० । ९१ का सनन्द उक्त दोनो सवत्तो का प्रत्यक्ष हुआ है उसके अनुसार इस महाकाव्य के सं-सू-निर्दिने के नहीं । राटको को विशेष क्रम न पड़े अतएव हम स्वयम् नीचे के नाटक में कुछ संवत्तो को सिद्ध कर दिखाने हैं -

पृथ्वीराजरासो के अनन्द संवत्‌ों का कोष्टक ।

पृथ्वीराजजी का	रासो में लिखे अनन्द संवत्‌ में	सनन्द और अनन्द संवत्‌ों का अंतर जोड़ा	यह सनन्द संवत्‌ हुआ उस में	पृथ्वीराजजी की शेष वय जोड़ा	परीक्षा के लिये अंतिम लडाई का सिद्ध संवत्‌
जन्म	१११५	९० । ९१	१२०५ । ६	४३	१२४८ । ९
दिल्ली गोदजाना	११२२ *	९० । ९१	१२१२ । ३	३६	१२४८ । ९
कैमास जुहु	११४०	९० । ९१	१२३० । १	१८	१२४८ । ९
कन्नौज जाना	११५१	९० । ९१	१२४१ । २	७	१२४८ । ९
अंतिम लडाई	११५८	९० । ९१	१२४८ । ९	०	१२४८ । ९

जो कुछ हमने यहा तक कहा है उससे और सब बातें तो हमारे पाठकों के मन में बैठ गई होगी किन्तु ३५५ रूपक में जो अनन्द शब्द प्रयोग हुआ है उसमें किसी किसी को कुछ संदेह रहेगा, अतएव हम फिर उसके विषय में कुछ अधिक कहते हैं। देखो संशय करना कोई बुरी बात नहीं है किन्तु वह सिद्धान्त का मूल है। हमारे गौतम ऋषि ने अपने न्याय-दर्शन में प्रमाण और प्रमेय के पीछे संशय को एक पदार्थ माना है और उसके दूर करने के लिये ही मानो सब न्यायशास्त्र रचा गया है। यदि अनन्द का नव-सख्या-रहित का अर्थ किसी को सम्प्रति में ठीक नहीं जंचता हो तो उससे इस स्थल में बहुत अच्छी तरह घटता हुआ कोई दूसरा अर्थ बतलाना चाहिये। परंतु बात तब है कि वह सर्वतंत्र सिद्धान्त (universally true) से उसी तरह सिद्ध हो सकता हो कि जैसे हमने यहा अपना विचार सिद्ध कर दिखाया है। सब लोग जानते हैं कि हमारे इस शोध के पहिले तक युवा और मध्य वय के कोई कोई कवि लोग इस अनन्द संज्ञा वाचक शब्द का गुण अर्थ शुभ (auspicious) का करते रहे हैं और चारण जाति के महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी ने भी अपने इस महाकाव्य के खंडन-ग्रंथ में यही अर्थ माना है। परंतु विद्वानों के विचारने और न्याय करने का स्थल है कि इस दोहे में अनन्द पाठ नहीं है और न चंद्र के लक्षण के अनुसार वह बन सकता है किन्तु स्पष्ट अनन्द पाठ है। यदि तहा संज्ञा वाचक अनन्द पाठ भी होता तो भी उसका गुण वाचक शुभका अर्थ नहीं हो सकता था परंतु संस्कृत भाषा का थोडासा ज्ञान रखनेवाला भी यह जान सकता है अथवा जिनके पास संस्कृत भाषा के कोशों की पुस्तकें हैं वे उनके बल से भी जान सकते हैं कि वाचस्पत्यवृहत् संस्कृत-अभिधान के पृष्ठ १४९ और शब्दार्थचिंतामणि के पृष्ठ ६९ में स्पष्ट अनन्द के यह अर्थ लिखे हैं कि “त्रि० न नन्दयति नन्द, आनन्दयितृभिचे, अनानन्दे अमुखे” इत्यादि। देखो जब अनन्द शब्द का सत्य अर्थ दुःख का है तो फिर क्या सुख और शुभ का अर्थ करना अयोग्य नहीं है। यदि कवि लोग जैसे अलंकार और नायका भेद की सूक्ष्मता जान लेने के लिये परिश्रम करते हैं वैसे ही जो सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते तो भट जान लेते कि यहा कवि गूढार्थ में संवत् का भेद बता रहा

* यह संवत् हमने पृथ्वीराजजी के जो पखाने हमको मिले हैं उनकी छाप में लिखा हुआ है उनसे यहण किया है किन्तु रासो की अब तक प्राप्त हुई पुस्तकों में तो किसी में ११३८ और किसी में ११२८ लिखा मिलता है।

है और सुख अथवा दुःख और शुभ अथवा अशुभ के स्थूल अर्थों को प्रयोग में नहीं लेता है। व्याकरण शास्त्र की रीत से भी आनन्द और अनन्द शब्दों की प्रयोग सिद्धी में अन्तर है। अब हमारे अर्थ की पुष्टि में विचार कीजिये—

१ प्रथम तो विचार करने के पहिले ऐसे ऐसे दुरायहों से अपने अपने हृदय को अपवित्र नहीं कर रचना चाहिये कि चन्द्र ऐसा मूर्ख था कि उसे अनुस्वार और विसर्ग तक का ज्ञान न था और न वह सस्कृतादि किसी भाषा में व्युत्पन्न पांडित था और जितनी भूलें इस महाकाव्य में मिलती हैं वह सब उसने ही की हैं ॥

२ दूसरे देखो कि कवि यहां विक्रम के शक्र की सख्या के विशेषण में अनन्द शब्द का प्रयोग करता है और तहां सख्या वाचक अर्थ का ही प्रसंग है। और इस बात की भी कुछ अत्यावश्यकता नहीं है कि हम यहां अनन्द को आनन्द का अपभ्रंश आदि समझकर शुभ का ही अर्थ करें क्योंकि कवि इस के साथ ही रूपक ३५६ में स्पष्ट “तृतीय साक पृथिराज कौ लिख्यौ” कहता है। और सज्ञा वाचक आनन्द का अपभ्रंश रूप अनन्द कि जो तथापि सज्ञा वाचक ही होगा, उसका गुण वाचक अर्थ शुभ (auspicious) कदापि नहीं बन सकता ॥

३ तीसरे इस स्थूल के प्रसंग से अनन्द शब्द को अ + नन्द से बना मानना चाहिये। और अ का यहां रहित अर्थ करने के लिये इस श्लोक को प्रमाण में लेना चाहिये:—तत्सादृश्यमभावश्च, तदन्यत्वं तदल्पता। अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थः षट् प्रकीर्त्तिताः” ॥ और नन्द के नथ सख्या वाचक अर्थ के ग्रहण करने को वैसे ही समझें तो ऋषि शब्द ७ सात के वाचक की भांति “नव नन्दा भविष्यन्ति-चाणक्यो घान् हनिष्यति” स्क. पु. । तथा श्रीधर स्वामी कृष्ण भागवत की टीका में तेषां सपुत्राणां नवसंख्यत्वेन तत्तुल्य संख्या” के अर्थ स्पष्ट ही हैं अतएव अधिक प्रमाण नहीं लिखते हैं ॥

४ चौथे चन्द्र का अनन्द शब्द प्रयोग करने से उस का यह आन्तरीय अभिप्राय होना ज्ञात होता है कि विक्रम का जो प्रचलित संवत् है उसकी मूल संख्या में संज्ञर राजा नन्द का कुछ समय मिला हुआ है अर्थात् वह संवत् जिस गणित के अनुसार है वह उक्त नन्द के समय सहित थी और चन्द्र ने जिस प्रकार से काल निरूपण किया है वह नन्द के समय रहित है अर्थात् चन्द्र का लिखा विक्रमी संवत् शुद्ध विक्रमी है। इसी लिये हमने इन दोनों संवत्तों को अनन्द और सनन्द नामों से इस टिप्पण भर में ग्रहण किया है। यदि कोई मनुष्य यह हठ करे कि हमका चन्द्र का अनन्द संवत् केवल प्रत्यक्ष प्रमाणों से ही सिद्ध कर दिया तो क्या वह हमारा उसको उत्तर देना अन्यथा होगा कि जिन प्रमाण रूप प्रचलित विक्रमी संवत् का अपेक्षा में तुम चन्द्र के लिखे अनन्द संवत् रूपी प्रमेय को सिद्ध करना चाहते हो तो प्रथम तुम अपने प्रमाण को वैसे ही प्रत्यक्ष प्रमाणों से निर्दोषी सिद्ध कर दिवाओ तो फिर हम उसका प्रमाण रूप मानकर चन्द्र के अनन्द संवत् रूपी प्रमेय को सिद्ध कर उसकी अग्रगुणा समझ लें क्योंकि यह दावा तुम्हारा है कि चन्द्र का लिखा संवत् अशुद्ध है। अतएव वादों के करने का काम हम ही काके प्रचलित विक्रमी संवत् की सत्यता की परीक्षा करते हैं। परीक्षा करने के लिये यह सब सिद्ध हुई बात स्मरण कर लेनी चाहिये कि आज तक सर विन्दिम जैस, विन्दिम सेन्सेल डेविस, कौत्सुक, वैठर्ला, हाल, लैसन, डाक्टर माऊ ट्राव्सी, दुर्गा सिद्धी, अतारनी, डाक्टर हटर और डाक्टर कर्ण आदि ने जो जो शोध बड़े बड़े परिसर में विक्रमी संवत् का शोध समय निरवध करने के लिये कई एक प्रकारों से कर्त्तव्य किया है उनमें से किसी भी शोधकर्ता आदि ने सन्ध्यादि का भी विषय बरके दिये हैं अपने विचार इस प्रकार से सिद्ध

कर लेने के कि वर्तमान विक्रमी में से १३५ वर्ष घटाने से शालिवाहन का शक और ५६ वा ५७ घटाने से ईसवी सन् और इसी प्रकार सचन्य सवत् भी और इसी हिसाब से ईसा मसीह के ५६ वा ५७ वर्ष पहिले कोई विक्रम नाम का राजा हुआ या कि जिसका यह संवत् प्रचलित है, न तो कोई और फल निकला है और न कोई वैसा प्रामाणिक प्रत्यक्ष प्रमाण किसी को मिला है और न कोई आज दे सकता है कि जैसा विचार स्वर्गवासी चंद्र कवि के लिये सवतो को सिद्ध करने के लिये बड़ी धूम धाम से हम चाहते हैं । क्या यह न्याय है कि विक्रम के प्रचलित सवत् को सिद्ध करने के समय तो हम गोलमाल कर जायें और चंद्र के संवत् को सिद्ध करने के लिये दूसरे से प्रत्यक्ष प्रमाण मांगें ? फिर विचार कीजिए कि मस्कृत भाषा के कोषादि में जो यह- **तत्र शककारकस्य विक्रमादित्यस्य हननात् शालिवाहनस्य शकतृत्वम्** लिखा प्राप्त होता है और आर्देन अकवरी के यथकर्ता ने भी यही आशय ग्रहण किया है । इस से विक्रमादित्यजी का मरण तो १३५ में होना निश्चित ही है तथा १३५ वर्ष तक राज्य करना भी स्वतः सिद्ध है । अब रहा यह कि विक्रम के सवत् का प्रारंभ उनके जन्म से अथवा गद्दी पर बैठने के दिन से अथवा गद्दी पर बैठने पीछे किसी बड़े कार्य के करने के दिन से हुआ है यदि ज्योतिर्विदाभरण को कदाचित् सत्य होने की अपेक्षा अमत्य ही मानें और उसे किस भी समय में बना क्यों न ग्रहण करें तथापि उसके अतिरिक्त कोई अन्य प्रमाण दृष्टि में नहीं आता कि जिसके इस- **“निहन्ति यो भूतलमडले शकात् । संपंचकोट्यब्जदलप्रमान् क्लौ ॥ १ राजपुत्रः शककारको भवेत् । नृपाधिराज्ये ह्युतशाककर्तृ हा ॥”** वाक्य के अनुसार पचपन को शकों को अथवा किसी शक-कर्ता को मारने से विक्रमी सवत् का प्रारंभ होना ही अधिक संभवित प्रतीत होता है । तदन्तर यह अनुमान करना भी अनुचित नहीं है कि विक्रम ने कुछ अपने बालरूपन में तो ऐसा बड़ा साका किया ही न होगा किन्तु उम समय उसकी उम से कम २५ वर्ष की वय तो भी होगी कि जिससे १३५ + २५ = १६० एक सौ साठ वर्ष की सत्र वय सिद्ध होती है । निदान उसको हम पृथ्वीराजजी और समरसीजी के ८२ वर्ष तक न जी सकने के अनुमान की अपेक्षा से बहुत ही असंभव समझ सकते हैं । सारांश यही है कि चंद्र ने विक्रम की १६० वर्ष की वय की असंभाव्यता से जो अपने लिखे सवतो को अनन्द संवत् संज्ञा दी है वह अन्यथा नहीं है और प्रचलित विक्रमी सवत् कि जिसको हम **सनन्द** कहते हैं उसमें अवश्यमेव कुछ नन्द का समय मिला हुआ है और वह चंद्र के संवत् को दीप देने जैसा स्वयम् निर्दोषी प्रमाण रूप नहीं है । जब कि प्रचलित विक्रमी संवत् अपने को भले प्रकार सिद्ध कर प्रमाण नहीं दे सकता तो वह जिस प्रकार से आज माना जाता है उसी प्रकार पृथ्वीराजरासो के संवत् ९० । ९१ वर्ष के अन्तर के माने जाने में भी कुछ हानि दृष्टि नहीं आती । हमको एक बड़ा शोक इस बात का है कि यदि विद्वानों ने रूपक ३५५ और ३५६ को एक दूसरे की सगति लगाकर विचारा होता और रूपक ३५६ को बिलकुल ही न छोड़ दिया होता तो रासो के सवतो के विषय में संदेह ही नहीं हुआ होता क्योंकि वे दोनों रूपक मानों खड़े हुए पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि हमारे आशय ये हैं ॥

५ पांचवें चंद्र के नवें नन्द के समय को नहीं ग्रहण करने का एक यह भी प्रबल कारण सब के ध्यान में आ सकने जैसा है; कि महानन्द को नौ पुत्र थे, आठ तो विवाहिता रानियों से और एक चंद्रगुप्त नामक मुरा नाम की नाइन उपस्त्री से । हमारी इस बात को भी स्मरण में रखना चाहिये कि मुरा नाम की नाइन से उत्पन्न होने के कारण चंद्रगुप्त और उस के वंशज मौर्य कहलाये हैं । अन्य देश देशान्तर के मनुष्यों की अपेक्षा हमारे स्वदेशीय बन्धुओं के

समीप कुलीन और अकुलीनों में परस्पर डाह वैर का होना कोई आश्चर्यदायक बात नहीं है क्योंकि यह व्यवहार सदा से चला आया है और आज भी सब छोटे बड़ों में विद्यमान है अर्थात् कोई अकुलीन चाहे जितनी उन्नति की दशा को क्यों न प्राप्त हो जाय और कोई कुलीन चाहे कैसा दरिद्री भी क्यों न हो जाय किन्तु वह कुलीन उस अकुलीन को सकर ही समझेगा । और इससे सदा दोनो में परस्पर द्वेष रह कर जो जब प्रबल होगा तब वह उस निर्बल को अवश्य नाश कर देगा और वे दोनो अपनी अपनी वंशावली में अपने अपने वैरी का नाम तक नहीं गिनेंगे । इसी कारण से हमारे आर्य-काल-निरूपको (The Arya Chronologists) की भी यह शैली होगई है कि जो स्वयम् कुलीन हैं अथवा कुलीनो के पत्तपाती हैं वे उस अकुलीन राजा के नाम और समय को अपनी संपादित ख्यात में नहीं लिखते हैं और उसके समय आदिक को या तो उसके आगे पीछे के किसी कुलीन राजा में मिला देते हैं अथवा ऐसे स्थलो में यह लिख देते हैं कि इतने समय तक "कटार अथवा तरवारि ने राज किया इत्यादि" । इसके अनेक उदाहरण राजपुत्रो की वंशावलिषो में मिल सकते हैं परन्तु एक ऐसा आधुनिक उदाहरण है कि जिस को सर्व साधारण जानते हैं वह मेवाड राज की वंशावली में बनवीर का है कि उससे ही विचार देखिये । क्या मेवाड देश के परम कुलीन महाराणाजी साहब और क्या और कुलीन उमराव सरदार और पासवानादि लोग और क्या हम जो कदाचित् मेवाड की ख्यात (Chronicles) लिखे तो बनवीर का नाम और उस का समय अपनी कुलीन अवली में न तो किसी ने मिलाया है और न हम मिलावेंगे किन्तु उसका वृत्त सब के जानने के लिये हम एक पृथक टिप्पण में लिख देंगे कि जिससे हम को पुरातत्त्ववेत्ता वृत्त का चौर न ठहरावें और जो कोई कदाचित् हम को ऐसा करने के कारण मुत्तश्चिन्न अर्थात् दुरावही भी कहेंगे तो हम उसको अपनी एक अति प्रिय पदवी समझकर उस पर अभिमान करेंगे । इसी लिये कुलीन तन्त्रियो के अभिमानी चंद्र बरदाई ने विक्रमादित्यजी के समय में से अकुलीन मौर्य समय २० । २१ वर्ष का ह्रास करके शुद्ध तन्त्रिय समय ग्रहण किया है और उसका नाम विक्रम का अनन्द सवत् अर्थात् पृथ्वीराजजी का तृतीय शक रक्खा है । हम यह यहा तक भी मान कर कह सकते हैं कि यदि आज इस विषय को समर्थन करने को कोई भी प्रमाण न मिले तथापि बाद की निज-काल निरूपण शैली तो स्वयम् सिद्ध ही है ॥

६ छठे चंद्र के प्रयोग किये हुए विक्रम के अनन्द सवत का प्रचार बाह्य यतक तक ही राजकीय व्यवहार की लिखावटो में भी हमको प्राप्त हुआ है अर्थात् हम को शोध करते करते अपने स्वदेशी अतिम बादशाह पृथ्वीराजजी और रावल समर्सेना और महाकाव्यी पृथा ब्राईना के कुछ पट्टे परवाने मिले हैं कि उनके सवत् भी इस महाकाव्य में जिये सवतो से ठीक ठीक मिलते हैं और पृथ्वीराजजी के परवानो में जो मुहर अर्थात् हाथ है उसमें उनके राज्याभिषेक का १०११२२ लिखा है । इन परवानो के प्रतिफल अर्थात् १०११२२ हमने चरना और से वेग पाठिक पोसाईटी बंगाल को भेठ करने के लिये अपने स्वदेशी नरम अतिदृढ़ राज्याभिषेक इ क्रु राव बहादुर राजा राजेन्द्रलाल जी मित्र एलए लेजो डीए सीए अ ईए ईए के नाम से वे वेग बनके अक्रिचिम होने के विषय में उनसे बहुत कुछ अव्यवहार रक्खा है । यदि हमारे राजा साहब एकस्मात् राव अस्त न हो गये होते तो उनके ही हस्तो इस विषय में कुछ लिखे हुए राजान लेखो को अपने विचार सचिव दुराजसेन को ही सदन में रखे किना देखा रव परवानो के अतिरिक्त हम को और भी कई रकम मिले हैं जो कि दृष्टा है कि अतिरिक्त

कर लेने के कि वर्तमान विक्रमी में से १३५ वर्ष घटाने से शालिवाहन का शक और ५६ वा ५७ घटाने से ईसवी सन् और इसी प्रकार से अन्य संवत् भी और इसी हिसाब से ईसा मसीह के ५६ वा ५७ वर्ष पहिले कोई विक्रम नाम का राजा हुआ था कि जिसका यह संवत् प्रचलित है, न तो कोई और फल निकला है और न कोई वैसा प्रामाणिक प्रत्यक्ष प्रमाण किसी को मिला है और न कोई आज दे सकता है कि जैसा विचारें स्वर्गवासी चंद्र कवि के लिखे सवतो को सिद्ध करने के लिये बड़ी धूम धाम से हम चाहते हैं । क्या यह न्याय है कि विक्रम के प्रचलित संवत् को सिद्ध करने के समय तो हम गोलमाल कर जावें और चंद्र के संवत् को सिद्ध करने के लिये दूसरे से प्रत्यक्ष प्रमाण मांगें ? फिर विचार कीजिए कि संस्कृत भाषा के कोषादि में जो यह- **तत्र शककारकस्य विक्रमादित्यस्य हननात् शालिवाहनस्य शकर्तृत्वम्** लिखा प्राप्त होता है और आर्देन अकबरी के ग्रन्थकर्ता ने भी यही आशय ग्रहण किया है । इस से विक्रमादित्यजी का मरण तो १३५ में होना निश्चित ही है तथा १३५ वर्ष तक राज्य करना भी स्वतः सिद्ध है । अब रहा यह कि विक्रम के संवत् का प्रारंभ उनके जन्म से अथवा गढ़ी पर बैठने के दिन से अथवा गढ़ी पर बैठने पीछे किसी बड़े कार्य के करने के दिन से हुआ है । यदि ज्योतिर्विदाभरण को कदाचित् सत्य होने की अपेक्षा असत्य ही मानें और उसे किसी भी समय में बना क्यों न ग्रहण करें तथापि उसके अतिरिक्त कोई अन्य प्रमाण दृष्टि में नहीं आता कि जिसके इस- **“निहन्ति यो भूतलमंडले शकात् । संपंचकोट्यब्जदलप्रमान् कलौ ॥ स राजपुत्रः शककारको भवेत् । नृपाधिरान्ये ह्युतशाककर्तृ हा ॥”** वाक्य के अनुसार पचपन करोड़ शकों को अथवा किसी शक-कर्ता को मारने से विक्रमी संवत् का प्रारंभ होना ही अति संभवित प्रतीत होता है । तदन्तर यह अनुमान करना भी अनुचित नहीं है कि विक्रम ने कुछ अपने बालकपन में तो ऐसा बड़ा साका किया ही न होगा किन्तु उस समय उसकी कम से कम २५ वर्ष की वय तो भी होगी कि जिससे १३५ + २५ = १६० एक सौ साठ वर्ष की सब वय सिद्ध होती है । निदान उसको हम पृथ्वीराजजी और समरसीजी के ६२ वर्ष तक न जी सकने के अनुमान की अपेक्षा से बहुत ही असंभव समझ सकते हैं । सारांश यही है कि चंद्र ने विक्रम की १६० वर्ष की वय की असंभाव्यता से जो अपने लिखे सवतों को अनन्द संवत् संज्ञा दी है वह अन्यथा नहीं है और प्रचलित विक्रमी संवत् कि जिसको हम सनन्द कहते हैं उसमें अवश्यमेव कुछ नन्द का समय मिला हुआ है और वह चंद्र के संवत् को दीप देने जैसा स्वयम् निर्दिष्टी प्रमाण रूप नहीं है । जब कि प्रचलित विक्रमी संवत् अपने को भले प्रकार सिद्ध कर प्रमाण नहीं दे सकता तो वह जिस प्रकार से आज माना जाता है उसी प्रकार पृथ्वीराजरासो के संवत् ९० । ९१ वर्ष के अन्तर के माने जाने में भी कुछ हानि दृष्टि नहीं आती । हमको एक बड़ा शोक इस बात का है कि यदि विद्वानों ने रूपक ३५५ और ३५६ को एक दूसरे की सगति लगाकर विचारा होता और रूपक ३५६ को बिलकुल ही न छोड़ दिया होता तो रासो के संवतो के विषय में संदेह ही नहीं हुआ होता क्योंकि वे दोनों रूपक मानों खड़े हुए पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि हमारे आशय ये हैं ॥

५ पांचवें चंद्र के नवें नन्द के समय को नहीं ग्रहण करने का एक यह भी प्रबल कारण सब के ध्यान में आ सकने जैसा है; कि महानन्द को नौ पुत्र थे, आठ तो विवाहिता रानियो से और एक चंद्रगुप्त नामक मुरा नाम की नाइन उपस्त्री से । हमारी इस बात को भी स्मरण में रखना चाहिये कि मुरा नाम की नाइन से उत्पन्न होने के कारण चंद्रगुप्त और उस के वंशज मौर्य कहलाये हैं । अन्य देश देशान्तर के मनुष्यों की अपेक्षा हमारे स्वदेशीय बन्धुओं के

समीप कुलीन और अकुलीनों में परस्पर डाह बैर का होना कोई आश्चर्यदायक बात नहीं है क्योंकि यह व्यवहार सदा से चला आया है और आज भी सब छोटे बड़ों में विद्यमान है अर्थात् कोई अकुलीन चाहे जितनी उन्नति की दशा को क्यों न प्राप्त हो जाय और कोई कुलीन चाहे कैसा दरिद्री भी क्यों न हो जाय किन्तु वह कुलीन उस अकुलीन को सकर ही समझेगा । और इससे सदा दोनो में परस्पर द्वेष रह कर जो जत्र प्रबल होगा तब वह उस निर्बल को अवश्य नाश कर देगा और वे दोनो अपनी अपनी वशावली में अपने अपने बैरी का नाम तक नहीं गिनेगे । इसी कारण से हमारे आर्य-काल-निरूपको (The Arya Chronologists) की भी यह शैली होगई है कि जो स्वयम् कुलीन हैं अथवा कुलीनो के पत्नपाती हैं वे उस अकुलीन राजा के नाम और समय को अपनी संपादित ख्यात में नहीं लिखते हैं और उसके समय आदिक को या तो उसके आगे पीछे के किसी कुलीन राजा में मिला देते हैं अथवा ऐसे स्थलो में यह लिख देते हैं कि इतने समय तक "कटार अथवा तरवारि ने राज किया इत्यादि" । इसके अनेक उदाहरण राजपुत्रो की वशावलियों में मिल सकते हैं परन्तु एक ऐसा आधुनिक उदाहरण है कि त्रिम को सब साधारण जानते है वह मेवाड राज की वशावली में **वनवीर** का है कि उसमे ही विचार देखिये । क्या मेवाड देश के परम कुलीन महाराणाजी साहब और क्या और कुलीन उमराव सरदार और पासवानादि लोग और क्या हम जो कदाचित् मेवाड की ख्यात (Chronicles) लिखे तो वनवीर का नाम और उस का समय अपनी कुलीन अवली में न तो किसी र ने मिलाया है और न हम मिलायेगे किन्तु उसका वृत्त सध के जानने के लिये हम एक पृथक टिप्पण में लिख देंगे कि त्रिममे हम का पुरातत्त्ववेत्ता वृत्त का चौर न ठहरावे और जो कोई कदाचित् हम को ऐसा करने के कारण मुत्पस्मित अर्थात् नुरायही भी कहेंगे तो हम उसको अपनी एक प्रति प्रिय पदवी मन्जतर उस पर प्रमिमान करेंगे । इसी लिये कुलीन लत्रियों के अभिमानो चर बरदाई ने **पद्मनाभिका** के समय में से अकुलीन मौर्य समय ९० । ९१ वर्ष का ह्रास करके शुद्ध लत्रिय समय एवण किया है और उसका नाम विक्रम का **अनन्द** सबत् अर्थात् पृथ्वीराजजी का तृतीय शक रखा है । हम यह यदा तक भी मान कर कह सकते है कि यदि आज इस विषय को समर्थन करने जो कोई भी प्रमाण न मिले तबपि चर को निज-काल निरूपण शैली तो स्वयम् सिद्ध ही है ।

हम उस समय विद्वत् मंडली में प्रवेश करेंगे कि जब कोई विद्वान् उनको क्लिप्त होने का दोष देगा । देखिए जोधपुर राज्य के काल-निरूपक राजा जयचंद्रजी को सं० ११३२ में और शिवजी और सैतरामजी को सं० ११६८ में और जयपुर राज्यवाले पञ्जनजी को सं० ११२७ में होना आज तक निःसंदेह मानते हैं और ये सबत् भी हमारे अन्वेषण किये हुए ९१ वर्ष के अंतर के जोड़ने से सनन्द विक्रमी होकर संप्रत काल के शोध हुए समय से मिल जाते हैं । इसके आतिरिक्त रावल समरसीजी की जिन प्रशस्तियों को हमारे मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्यामलदासजी ने अपने अनुमान को सिद्ध करने को प्रमाण में माना है वे भी एक अन्तरीय हिसाब से (indirectly) हमारे शोध किये इस अनन्द सबत् को और उस के प्रचार को पुष्ट और सिद्ध करती है । देखिए और इन दो ध्रुवों को अपने ध्यान में रख लीजिए कि प्रथम तो रावल बापाजी के नाम पर सब ख्यात की पुस्तकों में सदैव से सं० १९१ लिखा चला आता है कि जिसको कर्नेल टाड साहब ने तो बल्लभी के नाश से चीताड प्राप्त होने तक का समय माना है और मेवाड के छोटे छोटे लडके तक इतना अवश्य जानते हैं कि बापाजी सं० १९१ में हुए और उन्होंने १०१ वर्ष राज्य किया अथवा उनकी वय १०१ वर्ष की हुई और ऐसे आज तक के इस बड़े निश्चय के साथ सर्वसाधारण के मानने को महामहोपाध्याय कविराजजी भी कदापि अस्वीकार नहीं कर सकते हैं । दूसरे रावल समरसीजी के नाम पर भी उसी तरह सर्व साधारण के दृढ़ निश्चय के साथ ११०६ का सबत् ख्यातिओं में लिखा हुआ बराबर चला आता है । अब हमारे पाठक उक्त सब प्रशस्तियों के सब सबत् अर्थात् १३३२, १३३५, १३४२, और १३४४ में से बापा जी के पूर्व का समय १९१ घटाकर देखें तो ११४१, ११४४, ११५१ और ११५३ पावेंगे कि जो हमारे अनन्द विक्रमी से मिलजाते हैं । क्या यह प्रशस्तियों भी हमारे अनन्द विक्रमी संवत् से आतरीय हिसाब से नहीं मिल जाती हैं ? यह क्यों मिल जाती है इस बात के भेद को हम अपनी संभक्त के अनुसार जानते हुए भी अभी प्रकाश नहीं करते हैं किन्तु किसी उचित समय पर उसे शास्त्रार्थ के साथ प्रकाश करके अपने मेवाड राज की वंशावली को शुद्ध और प्रतिपादन कर मेवाड देश की एक अमूल्य सेवा करेंगे ॥

० सातवें यदि कोई यह तर्क करे कि राजा नन्द के विक्रमादित्यजी से पहिले अथवा पीछे होने का मतान्तर प्राचीन समय के विद्वानों में होना कुछ भी सिद्ध हो जाय तब हम यह अनुमान कर सकते हैं कि अनन्द और सनन्द संवत्ओं के भेद अवश्य हो सकते हैं । अतएव हमारा कहना यह है कि जिस किसी को इस विषय का कुछ मतान्तर हो वह एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के स्थापन-करनेवाले सर विलियम् जोन्स साहिब (Sir William Jones) लिखित (The Chronology of the Hindus) हिन्दुओं का काल निरूपण नामक विषय के अंतिम दो तीन लेख-खंड अर्थात् फिकर पठकर संभक्त लें [देखो एशिया टर्क रिसर्चज पुस्तक २] परन्तु स्मरण रहै कि हम राजा नन्द का विक्रम से पहिले होना अपने देशा शास्त्रों के अनुसार मानते हैं ॥

पाठको ! रूपक ३५६ भी पुरातत्व विद्या में बड़ा उपयोगी है । उस में आपके मालूम होगा कि चंद्र यह तात्पर्य वर्णन करता है कि जिस ११०० अथवा १११५ में पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए है वह सख्या कैसी है कि उसी ११०० अर्थात् १११५ में धर्म-सुत हुए थे तथा उसी ११०० अथवा १११५ में विक्रमादित्यजी भी हुए थे और उसी में अर्थात् विक्रम से ११०० अथवा १११५ वर्ष पीछे पृथ्वीराज जी हुए हैं कि जिनका यह तृतीय शक में ने विप्रगुप्त [ब्रह्मगुप्त]

सोमेश्वरजी के अपूर्व तप से पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए ॥

श्लोक ॥ सोमेश्वर महाबाहो । तस्यापूर्वं तपो गुणैः ॥

तेने पुण्यं जगज्जेता । गर्भान्ते पृथुराडयम् ॥ कं० ॥ ६८६ ॥ ३५७ ॥

सोमेश्वरजी का राव (वेन) को वधाई देना ॥

पद्दरी ॥ अनगेस पुत्रि हुअ पुत्र जन्म । जिज्जल चमंकि जनु मेघ घन्म ॥

वडाइ राव * सोमेश दीन । इक सहस हेम ह्य हुकम कीन ॥ कं ६८७ ॥

को गुन कर लिखा है (ल्या विप्र गुन गुप्) क्या चद्र यह अमूल्य पुरातत्व इस रूपक में नहीं कहता है ? नहीं वह हमको निःसंदेह यही कहता हुआ दृष्टि आता है ॥ यदि यहा धर्ममुत का अर्थ युधिष्ठिर का यहण हो सकता है तो हमारे देशी महाकवि का विक्रम से युधिष्ठिर तक का १५०० अथवा १११५ वर्ष का अंतर मानना मिस्टर वैन्टली साहब के अनुमान ११२३ के से बहुत मिनता हुआ है अर्थात् उम में केवल २३ अथवा ८ वर्ष का ही अंतर है । और यह हमारे स्वदेशी काल निरूपको की गणना से भी मिनता हुआ है क्योंकि १५०० अथवा १११५ युधिष्ठिर से क्षेमक तक तथा उमसे विक्रम तक १५०० अथवा १११५ और विक्रम से पृथ्वीराजजी तक १५०० अथवा १११५ और इस गणना के अनुसार ८१४ क्रिस्ताब्द में युधिष्ठिर हुए । तथा चद्र के कहे विप्रगुप्त कि जिसको हम ब्रह्मगुप्त होना अनुमान करते है उसके विषय में मिस्टर वैन्टली साहब यह कहते है कि यह विप्रमा ५२३ तदनुसार ५२० ई० में हुआ था । उमने ब्रह्म-कल्प की गणना का प्रकार स्थापन और प्रकाश किया था कि जिस पर प्राथमिक गणित का आधार है और ऐतिहासिक सबत् नी उती के अनुसार परिवर्तन हुआ है (देखा परिभाषिक रिसेर्च पुस्तक ८ पृष्ठ २३६-७ इस ब्रह्मगुप्त की गणित में और अन्य स्वातियाचार्यो के सिद्धांतों में कुछ अंतर है कि जिसके लिये अन्य कोई कोई इस ब्रह्मगुप्त को दोष देने हैं कि इस का कुछ विषय Mr Samuel Davis के लिखित हिन्दूओ की ज्योतिष विद्या ॥ A)

दिय ग्राम एक हय इक्क हथ्य । परिग्रह प्रसाद सह कीन तथ्य ॥
नीसांन वाजि दरवार जोर । घन गर्ज्ज जान दरिया हिलोर ॥ कं० ॥ ६९८ ॥
पधाराइ राइ मुष दरस कीन । क्रित क्रम्म पुब्ब फल मान लीन ॥
करि जान क्रम्म मति ग्रंथ सोधि । वेदोक्त विष्प वर बुद्धि बोधि ॥ कं० ॥ ६९९ ॥
मंगल उच्चार करि नृत्य गान । अक्करि अलाप सुर भुवन जान ॥
कं० ॥ ७०० ॥ ह० ॥ ३५८ ॥

पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुणों का वर्णन ॥

साटक ॥ जन्मोत्तरि गुन जन्म राजन् वरं, चालीस वर्षं चती ॥

सा भोगं धर लक्खि टिलति वरं, पंजाव पंचै पथं ॥

इन्द्रप्रस्थय संभरी ववरयं, सोमसजा जौतयं ॥

भुक्तं मुक्तय बंधि गज्जन वरं, जन्मं करं सुक्तयं ॥ कं० ॥ ७०१ ॥ ह० ॥ ३५९ ॥

सोमसजी के पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुन सुन कर हर्ष और शोक होना ॥

कवित्त ॥ सोम वत्त सुनि अवन । हर्ष अरु शोक उपनो ॥

देव काल संजोग । तपै ठिल्ली घर थनौ ॥

कहै व्यास संभरी । क्रन्न इह वत्त प्रमानं ॥

किं जानै किं होइ । घरी इक घटन जानं ॥

न्निम्मान मान संभर धनी । सुनी कित्ति अनगोस वर ॥

मंची प्रमान सब इष्ट गुरु । कहै राज पृथिराज वर ॥ कं० ॥ ७०२ ॥ ह० ॥ ३६० ॥ †

३५८ पाठान्तर—अनगोस । हुव । विजलं । विजुंलि । वमक । जुंतु । मैघ । जन्म । वट्टाय ।
राज । सोमस । दीय । ग्राम । इक । इक । हयः । हय । परिग्रह । परीग्रह । कीन । तथ । वल्लि ।
गर्ज्जि । नांनि । पधराय । राय । मुष । सरसन । हरप । कर्म । पुव । मांनि । क्रम्म । मनि ॥
चेदेक्त । विप्र । बुधि । प्रमोधि । गांम । ग्यांन । अछिर । अछर । सुरं । भुवन । जानि ।

३५९ पाठान्तर—जन्मोत्तरि । राजन्म । वर । च्यालीस । वर्षं । घटी । सोभाभयं । सोभाभयं ।
लक्खि । दिलित । दिल्लित । वर । पंचं । पंच । इद्रप्रस्थ । ववरय । जौतियं । भुक्त । वर । जन्मं ॥

३६० पाठान्तर—सोम । वती । उपनौ । उप्पनौ । देव । सजोग । ठिली । घर । थनौ ।
क्रन । वत । जाने । हौय । यक । घटिन । जान नमान । संभरि । सुतिकित्री । प्रमान । पृथीराज ।
पृथीराज ॥

† यह रूपक हमारे पास की और सब पुस्तकों में तो है किन्तु सं० १७७० वाली में नहीं है ॥

विक्रम के सदृश पृथ्वीराजजी हुस कि जिन की बुद्धि का
वर्णन चंद्र करता है ॥

दूहा ॥ विक्रम राज सरीस भौ । बुधि व्रनन कवि चंद्र ॥

भूत भविष्यत व्रत्तमन । कहत अनूपम कंद ॥ कं० ॥ ७०३ ॥ रु० ॥ ३६१ ॥

पृथ्वीराजजी के जन्म समय के ग्रहों की स्थिति ॥

दूहा ॥ ग्रह स पंच चव हंस हय । लगन सु अष्टम मंद ॥

दुतिया गुरु मेष ह तरनि । चित्र ह जनम नरिंद ॥ कं० ॥ ७०४ ॥ रु० ॥ ३६२ ॥

सोनेश्वरजी का दरबार में बैठ ज्योतिषियों से पृथ्वीराजजी की
जन्मपत्री का फल पूछना और पंडितों का फल वर्णन करना ॥

पधुरी ॥ दरबार वैठि सोने राइ । लीने हजूर जोतिग बुलाइ ॥

कहौ जन्म कर्म वानक विनोद । सुभ लगन महरत सुनत मोद ॥ कं० ॥ ७०५ ॥

संवत्त इक्क दस पंच अंग । बैसाप मास पप कृष्ण लग ॥

गुर निर्द्धि जोग चिचा निप्रच । गर ना । करन सिसु परम दित्त ॥ कं० ॥ ७०६ ॥

ऊपा प्रवास इक धरिय रात । पल लोस संस नथ बाल जानि ॥

गुरु बुद्ध सुक परि दसै धान । मष्टनै नग ग्रानि फल विमान ॥ कं० ॥ ७०७ ॥

पंच दृअ थान परि हो । सोमा श्यारनै राह पल करन होम ॥ कं० ॥ ७०८ ॥

बारसै सर हो करन रंग । अतनी नयन दिन करै भोग ॥

संषेप विरद उच्चार कीन । कौं सकौं जंपि मो बुद्धि चीन ॥
 सुनि रद दान मंडौ अपार । है गै सु वस्त्र द्रव्या न पार ॥ कं० ॥ ७१२ ॥
 सब सहर नारि अंगार कीन । अप अप्य भुंड मिलि चलि नवीन ॥
 थपि कनक थार भरि द्रव्य दूत्र । पट कूल जरफ जर कसी ऊव ॥ कं० ॥ ७१३ ॥
 अक्कित अनूप रोचन सुरंग । मृदु कमल चान लोइन कुरंग ॥
 इक जात मद्धि इक फिरत गेह । पहिराइ परस पर बढत नेह ॥ कं० ॥ ७१४ ॥
 दरबार भी बरनी न जाइ । सुगंध वास नासा अघाइ ॥
 विगसंत बदन कृत्तीस वंस । जटुनाथ जन्म जनु जटुन वंस ॥
 कं० ॥ ७१५ ॥ कृ० ॥ ३६३ ॥

हैं । सूत्र । शत्र । दिलिय । दिल्लिय । मडे । वूंदीवाली मे=चाजीस वर्ष तिम मांस साज ।
 चालिस । पुहवि । हरे । भूम । सुंप । भूम । वरणीय । वरनीअ । अष्ट बल । लेइ । व्यांहि । दुंग ।
 दुंग । थैपि । चाहि । विरुद । उचार । सकौं । जपि । मौ । सुनि । राय । दांन । हय । गाय ।
 द्रव्यान । जव्याम । अंगार । भूड । नवान । कुंल । कल । उव्य । अद्धित । रोचन । लोइन । कुरग ।
 जाय । मधि । गेह । नेह । जाय । सुगंध । नाशा । अघाय । विगसत । कृत्तीस । जटुनाथ । यटुन ।

जैसे कवि चंद्र रूपक ३५५ और ३५६ में अपनी प्राचीन गूढ़ भाषा के गूढ़ार्थ में पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् वर्णन कर आया है, वैसे ही यहा भी वह इन रूपक ३६२ और ३६३ में उन की जन्मपत्री तथा उस के यहाँ का पलादेश वर्णन करता है । इन दो नो रूपकों के पाठ जहा तक हमारे पास की पुस्तको से शुद्ध हो सके वहाँ तक हमने शोध दिये है; कि उनके इतने ही शोधने पर जो कई एक शंका अब तक लाग करत थे वह दूर हो गई । और जो इसीतरह और भी कुछ प्राचीन पुस्तकें मिल जावे और उन से यह रूपक फिर शोध दिये जावें तो आशा है कि इन रूपकों में लिखी ज्योतिष शास्त्र सबन्धी सब बात मिल जावे और विद्वानो की जो जो शंकाए अब भी बाकी रहती हैं वे भी निवारण हो जाय । इसके अतिरिक्त हमारे पाठक यह अच्छी तरह जानते हैं कि इस रासो जैसी भ्रष्ट लिखित प्राचीन पुस्तको में अथवा वैसे ही कोई कोई बड़े प्रतापी मनुष्यों की जन्मपत्री अथवा ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिसका कुछ अन्वेषण किया जावे ऐसा कुछ विषय हम को वर्तमान समय में कहीं लिखा हुआ प्राप्त होता है उसको यथायोग्य रीति शोध लेना कैसा कठीन है । उसमें भी चंद्र की जैसी गूढ़ार्थ की कठिनता और ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तियो के मतान्तर पर दृष्टि दी जावे तो प्रत्येक सज्जन मनुष्य सुखपूर्वक कह सकता है कि यह कार्य बहुतही कठिन है और जो कदाचित् ऐसी कठिनता का कुछ पता लगा सकें तो हमारे स्वदेशी जगत विख्यात ज्योतिष शास्त्राचार्य पंडित धर श्री बापूदेवजी शास्त्री अथवा उन के शिष्य वर्ग में से भी कोई लगा सकते हैं, किन्तु अन्य के वश का यह कार्य नहीं है । इस जन्मपत्री को शोधने के लिये हमने बड़ा परिश्रम कर रक्खा है अर्थात् जितने पाठान्तर रासो की भिन्न भिन्न पुस्तको में से मिलते जाते है और जितनी भिन्न २ प्रकार की पृथ्वीराज जी की जन्मपत्रियें भरतखंड में से मिलते हैं वे भी एकत्र किये जाते है और ब्रह्मगुप्त का रचित ज्योतिषशास्त्र की पुस्तक भी प्राप्त करने का उद्योग कर रहे है, कि

जिसका चंद्र का आश्रम करना उसकी शैली से अनुमान होता है । इस प्रकार से शोध होने पर हम इस जन्मपत्री के विषय में जिस विद्वान के गणित के अनुसार जे बात निश्चय होगी वह प्रकाश करेंगे । किन्तु अभी हम कुछ उन शंकाओं के विषय में भी कहते हैं कि जो इस विषय में महामहोपाध्याय कविराज श्री श्यामलदासजी ने कवि का सरल और स्पष्ट अर्थ न समझकर केवल प्रतिकूल-अनामन-जन्यभ्रम के वश हो अपने खंडन-ग्रथ में की हैं-

१ प्रथम कविराजजी ने पृथ्वीराजजी के जन्म संवत् के प्रकाश करनेवाले रूपक ३५५ के साथ का रूपक ३५६ जैसे अपने खंडन-ग्रथ में छोड़ दिया है वैसेही यहा भी उन्होंने रूपक ३६२ को छोड़ कर केवल रूपक ३६३ के आधार पर जन्मपत्री के सबन्धित दोष दिये हैं । इन दोनों स्थलों को हमारे विद्वान पाठक विचार कर समझ सकते हैं कि रूपक ३५६ और ३६२ को छोड़ देना उचित था कि नहीं और उनका रूपक ३५५ और ३६३ के साथ पूर्ण सबन्ध है कि नहीं । यदि पूर्ण सबन्ध है तो निर्णय करने के समय उनका त्याग देना किसी वास्तविक पुरातत्ववेत्ता के लिये कैसा अनुचित कर्म है ॥

२ दूसरे जो कुछ दोष इस विषय में दिये गये हैं वे मालूम होते हैं किसी एक पुस्तक के पाठ पर से ही दिये गये हैं । किन्तु मैं आशा करता हू कि डाक्टर होर्नली साहब कि जिन्हा ने अपने हाथ से रामा के कुछ भाग को बड़ी सूक्ष्म दृष्टि देकर शोध है वे भले प्रकार साक्षी दे सकते हैं कि इस ग्रथ के पाठान्तर, अपपाठ, विशेष पाठ और न्यून पाठ आदिक की क्या दशा है और क्या किसी एक पुस्तक के पाठ पर ही किसी बात का निर्णय होना उचित है ॥

३ तीसरे यदि रूपक ३६२ न छोड़ दिया गया होता और पुरातत्ववेत्तयो के निर्णय करने की रीति से ध्यान दिया गया होता तो कविराजजी अपनी क्लितीक गतायो के समाधान स्थयम् इन रूपको और भिन्न भिन्न पाठान्तरा से जान सकते थे जैसे कि-

(क) रूपक ३६२ से पृथ्वीराजजी के जन्म की सूत्र तिथि ज्ञात होती है । यदि तिथि की माया का शब्द अशुद्ध भी हो तो भी हम कवि के कहे चित्रा नक्षत्र में स्पष्ट अनुमान कर सकते हैं कि या तो यह सूत्र कवि ने पड़वा उपरान्त की पहल की है अथवा किसी और तिथि की सख्या वहा धल हो गई है । हम ज्योतिष शास्त्र तो नहीं जानते हैं किन्तु पंचस्युद्ध प्राप्त्तयो में अभी तक प्राचीन प्रणाली चली आती है कि यज्ञोत्सव होने पर मात ग्रथ के बालक को भी पितादि देहात्मा के कुछ धुवे चर्चान् पुत्र निगवाया करने हैं । उन के अनुमान पर यह कह सकते हैं कि हमारे शर्य मातो के नाम नक्षत्रा पर से बड़े हैं और प्रत्येक माहने का नक्षत्र शुद्धी १४ किंवा पूनम अथवा वसा प्रतिस्था के दिवस में हे मा है अतएव इस सूत्र के स्थान में कोई ऐसीही तिथि ही की जा चुकी है । देहा कविराजजी ने 'वैशाख तृतीय परव कृष्ण लग्ना पाठ किया है उनके लिये हम को स. १३३०. १३३१ या १३३२ की पुस्तको में यह वैशाख मास परव कृष्ण लग्ना वा आगा स्पष्ट अनुमाननया है जो यह एक प्रकार से ठीक ही साबित है क्योंकि एक ही मास के दो तिथि कर पाया है अतएव यह एक ही मास और एक कहलाये । चित्रा नक्षत्र के दिवस में कुछ निम्नान्त कि ११ पुस्तक में दृष्टि नहीं आती और हे मा के दिवस में कुछ पुस्तक में ही तिथि है अतएव यह कोई तिथि से वैशाख का ही वा अनुमान करे तो हमें स. १३३० के ही ही कोई अनुमान वायक ही नहीं है ।

- (ख) कविराजजी ने कवि के कहे 'बारहवें घर में होना असंभव माना है तथा इतनी ही बात पर दोष देकर अन्य ग्रंथों का कुछ शोध नहीं किया है। परंतु जो वे रूक्त ३ २ के तीसरे चरण पर कुछ थोड़ी सी भी दृष्टि देते तो उनको मालूम हो जाता कि चंद्र कवि मेष का सूर्य होना स्वयम् कहता है कि जो संभव भी है "दुतिथा गुरु मेषह तरनि" इससे यह भी समझ सकते थे कि जब मेष के सूर्य का बारहवें घर में होना कवि कहता है तब वृष लान भी है और "ऊषा प्रकाश इक घरिय रात" से कवि का गूढार्थ भी यह है कि पृथ्वीराजजी का सूर्योदय के पश्चात् जन्म होने से ऊषा एक घड़ी थी अर्थात् ऊषा के एक घड़ी पीछे उनका जन्म हुआ ॥
- (ग) कविराजजी के खंडन ग्रंथ में "गुरु सिद्ध जोग चित्रा नखत्ता" पाठ से मिट्टे योग ग्रहण किया है कि जो चित्रा नक्षत्र के साथ वा पास आना असंभव है परंतु थोड़ी सी भी सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते अथवा पुस्तकान्तर में पाठ देखते तो कितनीक पुस्तकों में सिद्धि पाठ जैसे हमको मिल गया वैसे मिल जाता ॥
- (घ) कविराजजी ने अपने खंडन ग्रंथ में बड़ी बड़ी सूक्ष्म युक्तियों में सूक्ष्मतर अनुमान किये हैं परंतु इस स्थान पर वे बड़ी ही बेतरह चूक गये हैं। उन्होंने "गुरु नाम करन सिद्ध परम हित्त" का गुरु पाठ से धोखा खाकर यह अर्थ किया है कि "गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा" किन्तु यह अर्थ बिल्कुल ही असत्य है। यद्यपि इस गुरु पाठ का पुस्तकान्तर में गर पाठ स्पष्ट मिलता है परंतु वह न भी मिले तथापि पुरातत्ववेत्ता विद्वान इस छंद की प्रत्येक तुक की एक दूसरी से संगति मिलाकर भले प्रकार जान सकते हैं कि कवि तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करणमेव च" के अनुसार यहा यह कहता है कि "गर नामक करण शिशु को परम हितकारी है" न कि यह कि-गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा-हमारे हे सज्जन पाठको। आप सोचो, विचारो, न्याय करो, और सत्य सत्य कहो कि यह महा अनर्थ करने वाली भूल है कि नहीं और जो हम इतना पौरुषम केवल स्वदेशवत्सलता से उन्नामित होकर न करते तो हमारे देश की हिन्दी भाषा और ऐतिहासिक विद्याओं की कितनी हानि संभव थी। राजपूताने के कितनेक कवि लोग अपने को हिन्दी भाषा के काव्यों में ऐसा उत्कृष्ट समझते हैं कि मानो अन्यदेशीय उनके आगे कुछ मालही नहीं है परंतु इस अवसर पर हमको मिस्टर जोन बीम्स साहब का यह कहना स्मरण आता है कि "The Pandits of Rujputana even do not understand Chand beyond the general drift of the poem." "राजपूताने के पंडित भी चंद्र के काव्य को उसके एक साधारण भावार्थ के सिवाय नहीं समझते हैं" ॥
- (ङ) कविराजजी के लिखे पाठ में "पंचमें थान परिसोम भोम" है और हम को पुस्तकान्तर में पंचदुत्र थान परि सोम भोम" पाठ मिला है। क्या इससे जन्म पत्री के यहाँ में कुछ अंतर नहीं पड़ जाता है? और क्या जब तक कि अनेक प्राचीन पुस्तकों से इन रूपों का पाठ मिलानकर के शुद्ध न किया जावे तब तक जन्मपत्री को अशुद्ध कह देना मानो सहसा सिद्धान्त कर लेना नहीं है? यदि कोई कोई विद्वमान पुरातत्ववेत्ता अपने सहसा सिद्धान्त कर लेने को अच्छा समझ लेना अयोग्य नहीं समझेंगे और वे इस प्रकार को एक कमल बंद नहीं कर देंगे तो पुरातत्वविद्या को निःसीम हानि पहुंचनी संभव है। यहा कन्या का चंद्रमा और पृथ्वीराजजी का पृथ्वीराज नाम होने के कारण उनकी कन्या राशी का होना स्पष्ट है। और

पृथ्वीराजजी के जन्म होने पर क्या क्या आश्चर्यदायक बातें हुईं ।

कवित्त ॥ भयौ जनम पृथिराज । द्रुग पर चरिय सिपर गुर ॥
 भयौ भूमि भूचाल । धर्मास धम धम्म अरिनि पुर ॥
 गढन काट से लोट । नीर सरितन बहु वट्टिय ॥
 भै चक्र भय भूमिया । चमक चक्रित चित चट्टिय ॥
 पुरसान थान पल भल परिय । अम्भ पात भय अम्भनिय ॥
 बैताल बीर विक्रमे मनच । हुंकारत पह देवनिय ॥

छ० ॥ ७१६ ॥ सू० ॥ ३६४ ॥

पृथ्वीराजजी की बाल अवस्था के चरित्रों का वर्णन ॥

कवित्त ॥ बरप बधै बिय बाल । पिथ्य बधै इक मासह ॥
 घरी दीह पल पप्य । मान ल प्यय द्रप तासह ॥
 मनिगन काँठना काँठ । मडि केहरि नष कोहत ॥
 घूघर वारे चिहुर । रुचिर बानी मन कोहत ॥ छं० ॥ ७१६ ॥ सू० ॥ ३६७ ॥

ज्यौतिष शास्त्र के एक अचल ध्रुव के अनुसार यह अनुमान कर लेने का काम भी चंद्र ने हमारे ऊपर ही छोड़ दिया है कि कन्या के चंद्रमा के साथ केतु भाँ दे क्योंकि राहु और केतु मर्दा परस्पर साथ में रहते हैं ॥

३६४ पाठान्तर-जन्म । पृथीराज । पृथीराज । प्रथिराज । द्रुग । द्रुग । भूचाल । धम । घेरट । से । लोट । वहि । वट्टिय । भैचक्र भय भूमिया । धम । धम । अरिनि पुर । धाटिय । पुरसान । थान । परीय । अम्भ । बैताल । विक्रमे । मनच । हुंकारत । देवनिय ॥

इस रूपक में जो कुछ आश्चर्यदायक बातों के भाव कवि ने कहे हैं वे कोई वास्तविक आश्चर्य नहीं हैं किन्तु कवि लोग बड़े बड़े प्रतापी पुरुषों के जन्मादि के वर्णन में प्रदुन (धम) का आशय करके पायः ऐसा प्रसंग बाधा करते हैं । देखो जैसे यहाँ 'धर्मास धम धम्म अरिनि पुर' अथवा 'पुरसान थान पल भल परिय' कवि ने कहा है । वेदों में यज्ञज्ञान नामकी नामक तंत्रों में देखो कि महामुद्र राजनी जिस रात्रि को उत्पन्न हुआ था उसी समय जिन नदों के किनारे एक मंदिर का फट जाना उस में लिखा है । उसने जिस दिन ही जन्म पाया था कि महामुद्र मंदिरों को भूट करने और मुर्तियों को तोड़ने इत्यादि किया था अथवा कवि ने इसके जन्म समय भी वैसाही उल्लेख किया है कि वह कवि ने लिखा है । इस प्रकार के वर्णन बहुत ही अर्थहीन हैं । अतः मंदिर कर्तव्य के लिये कवि ने उल्लेख किया है कि वह कवि ने लिखा है ।

३६७ पाठान्तर-बधै । पप्य । द्रप । तासह । मनिगन । काँठना । काँठ । मडि । केहरि । नष । कोहत । घूघर । वारे । चिहुर । रुचिर । बानी । मन । कोहत ॥

केसर सु मंडि सुभ भाल क्वि । दसन जोति हीरा चरत ॥
नह नलप इक्क यह षिन रहत । हुलसि उठि उठि गिरत ॥

कं० ॥ ७१७ ॥ ह० ॥ ३६५ ॥

दूहा ॥ रज रंजित अंजित नयन । घूठन डोलत भूमि ॥
लेत बलैया मात लषि । भरि कपोल मुप चूमि ॥

कं० ॥ ७१८ ॥ ह० ॥ ३६६ ॥

पद्धरी ॥ अंगुरिन लगि रगि चलत लाल । सर मडि उठत गज हंस बाल ॥
मिलि बालजाल फवि रही केलि । वठि रही दूंदू जनु बीजवेलि ॥ कं० ७१९ ॥
जनु रमत कमल कृत कमल अगग । तप तेज वडि मुष षिच नगग ॥
सब देव तेज देषंत अंग उकार अंग अद्भुत प्रसंग ॥ कं० ॥ ७२० ॥
संग बाल बैठि भोजन करंत । परिवार वस्तु लै हठ धरंत ॥
आदर अदव्व सथीन देत । बगसीस करत हिय परम हेत ॥ कं० ॥ ७२१ ॥
है हथिय चढत बढुन आनंद । मन मौज चौज कवि पढत कंद ॥
जिन हृदय कमल विद्याह हेत । कल क्केद भेद तिन बुद्धि लेत कं० ॥ ७२२ ॥
पाइक्क संग कायक्क केलि । धरि धूप हथ्य वाहंत भेलि ॥
गहि बगग हथ्य फेरत तुरंत । नट नृत्य निपुन धावत कुरंग ॥ कं० ॥ ७२३ ॥
जल केलि करत मिलि सजन संग । अल्लोल कलभ जनु सरति रंग ॥
पक्कवांन पांन सूगंध पूर । मादक सु मोद सुष सुषन नूर ॥ कं० ॥ ७२४ ॥
षेलत अषेट संग श्वानडोर । बग्गु वधंत पर गोस कोर ॥
सुष घरिय पहर दिन पष्य मास । सोमस सूर चित वढत आस ॥ कं० ॥ ७२५ ॥
जिम राम कृष्ण सुख नंद गेह । संभरिय राय तिम दसा देह ॥

कं० ॥ ७१९ ॥ ह० ॥ ३६७ ॥

२६६ पाठान्तर-अजांत । घूठन । डोलत । बलइया । भुंष । चूम ॥

३६७ पाठान्तर-लगि । लगि लगि । लौल । कैलि । अय । तैजि । वठि । पत्रिग । पत्रि ।
पग । तैज । देपत । उदार । अद्भूत । सुरंग । सग । वैठ करत । वस्तू । वस्त । हठि । अद्ब ।
सथीन । हीय । हथि । वठत । मौज । चौज । रिदे । सुंहेत । विद्या सु । कल । वेदि । भैदि ।
क्केदि । बुधि पाइक । काइन । कैलि । धोप । धोप । हय । वाहंत । बग । हय । मृत्यु निपुन्य ।
तुरंग । कैलि । अल्लोल । सरमि । सुगंध । पुर । पैलत । अषेट । सगि । स्वान । डोरी । बगुरि ।

कवित्त ॥ कै दसरथ ग्रह राम । कै * धाम वसुदेव कृष्ण वर ॥
 कै कलि कस्यप कूप । जानि उपज्यौ किरनाकर ॥
 कृष्ण ग्रह कै काम । कै * काम अंगज जनु अनुरध ॥
 कै * नल कस्यप अवतार । किधौं कौमार दृश्य रुध ॥
 लघिन बतिस बहुतरि कला । वाल बेस पूरन सगुन ॥
 क्रीडत गिलोल जब लल कर । तब * मार जानि चायक सु मन ॥
 कं० ॥ ७२७ ॥ ह० ॥ ३६८ ॥

दूहा ॥ कुटत गिलोला दृश्य तैं । पारत चोट पयल्ल ॥
 कमल नयन जनु कांमिनी । करत कठाक क्यल्ल ॥
 कं० ॥ ७२८ ॥ ह० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वीराजजी का गुरु राम से सब प्रकार की विद्या सीखना ॥

दूहा ॥ कोइक दिन गुर राम पै । पढी सु विद्या अप्य ॥
 चवदसु विद्या चतुर वर । लई सीप पट लिप्य ॥
 कं० ॥ ७२९ ॥ ह० ॥ ३७० ॥

बंधत । पगौस । कैरि । कोरि । धारीय । परऊ । पय । सोमोम । सुटा । चित । बडि । बडि । राम ।
 कृष्ण । सुभि । ग्रह । जिम राम नद सुप कृष्ण ग्रह । सभराय । राय । दैह ॥

* यहा शब्द पाठ मे विशेष है । ऐसे उदाहरण इन ग्रंथ की विहित पुस्तको मे बहुत हैं और वह भी किसी किसी में ऊपर से लिखे हुए हैं । इसका कारण हमें विनाए करने से यह मानना होता है कि किसी कवि ने पठने के समय अर्थ के लगाने की सुगमता के लिये इन मंत्रों के सूचन करनेवाले शब्दों को संकेत की भांति लिख लिया होगा और ऐसी पुस्तक में प्राप्त करनेवाले पाठकों ने उनको पाठ मे मिलाकर प्रति कर दी है इस हमारे मनामान की पृष्ठ में कई वक्त ऐसे स्थल हम अपने पास की प्राचीन पुस्तको मे बतला सकते हैं । अतएव इनको कवि का मूल अथवा Poetical licence नहीं समझा चाहिये ।

पङ्करी ॥ लिपि सिष्य कुँअर प्रथिराज राज । गुरु द्रोण पास सुत भ्रम ताज ॥
 ॐ नमो सिद्धि प्रथमं पठाय । सब भाव भेद अप्पर वताय ॥ कं० ॥ ७३० ॥
 दस पंच† दिन्न अध्येन कीन । दस चारि सार सब सीप लीन ॥
 सीषी सु कला दस अठु चारिातिन नाम कहत कवि अगग सारि ॥ कं० ॥ ७३१ ॥
 गुरु गीत वाद बाजिन नृत्य । सोचक सु वाच्य सविचार वृत्य ॥
 मनि मंच जंच वास्तुक विनोद । नैपथ विलास सुनि तत्त मोद ॥ कं० ॥ ७३२ ॥
 साकुन्न कला क्रीडन विसार । चिचन सु जोग कवि चवत चारु ॥
 कुसु मेष कला जुत इन्द्र जाल । सुचि क्रम विचार आहार लाल ॥ कं० ॥ ७३३ ॥
 सौभग प्रयोग सूगंध वस्त । पुनरोक्त छंद वेदोक्त हस्त ॥
 बानिज्ज विनय भाषित्त देस । आवद्ध जुद्ध निर्जुद्ध सेस ॥ कं० ॥ ७३४ ॥
 बरनंत समय हस्ती तुरंग । नारी पुरुष्य पंषी विचंग ॥
 भू भू कटाक सुल्लेष सल्य । वृष कृष्ण प्रष्ण उत्तर विजल्य ॥ कं० ॥ ७३५ ॥
 सुभ सास्त्र कहे गनिकह पठन । लिपितव्य चिच कविता वचन ॥
 व्याक्रन कथा नाटकक छंद । अविधान दरस अलंकार बंध ॥ कं० ॥ ७३६ ॥
 धातक सु कर्म सुभ अर्थ जानि । सुर सरी कला बहुतरि वषान ॥
 कं० ॥ ७३७ ॥ ह० ॥ ३७१ ॥

दूहा ॥ कला बहुतर करि कुसल । अति निबद्ध जिय जानि ॥

हेत आदि जानन जिपुन । चतुरासीत विग्यान ॥ कं० ॥ ७३८ ॥ ह० ॥ ३७२ ॥

† इस दसपंच शब्द को पंद्रह ही दिन का वाचक नहीं समझना किन्तु कुछ दिन अथवा कुछ समय अथवा थोड़े दिनों का वाचक समझना उचित है क्योंकि रूपक ३७० में स्पष्ट कोईक दिन पाठ आ गया है ॥

३७१ पाठान्तर-लिपि । शिष्य । सिषि । कुअरं । कुँअर प्रथीराज । पृथीराज । गुरं । गुर । द्रोण । पासि । धम । नमः सिद्धिं । पठाइ । भैद । अप्पर । वताइ । वताई । अध्ययन । अध्येन । दस पंच विद्य अध्येन कीन । सीषि । अठ । नाम । कहित । जग । सार । गुर । नृत्य । सौचक । वृत्य । वास्तुन । विनोद । नैपथ । सुनि । तत । साकुन । शाकुन । वितार । विचार । सू जोग । कुंस । युत । सोभग । प्रयोग । पुनरुक्ति । वैदोक्त वस्त । वानिज्ज । भाषित आवध । युद्ध । निरयुद्ध । सैस । पुरुष । वचंग । भू भू । सुलैष व्रप । छंद । उत्तर । विजल्यं । कहे । पठन । लिपित व्याचित्र । लिपितव्य । वचन । व्याक्रन । नाटक । नाटिक । दरसन । अलंकार । शुभ । जानि । जाण । वषानि ।

३७२ पाठान्तर-बहुतरि । जानि । जानन । विद्यांन । विग्यांन ॥

अरिस्त ॥ चतुरासीत विग्यानन जानन । भर मन मन आसंका भाजन ॥
 मनिहा वीर सदा मन जोदन । बहुतरि विचित्र कृतीस विनोदन ॥ कं० ॥ ७३९ ॥
 दरसन श्रवन गीत वर वाही । नृत्य ब्रत्य पाठक पुनि आदी ॥
 लेषक वित्त बाज बक्तवनि । सस्त्र सास्त्र जुडाकर तत्वनि ॥ कं० ॥ ७४० ॥
 जुद्ध गनित पंथी गज तुरगा । अघेटक दूतन जल उरगा ॥
 जवन मंच महोक्व पवन । पुष्प कला फल कथा सु चित्रन ॥ कं० ॥ ७४१ ॥
 करन पदारथ आयुध केली । बलकरि सूत्र ह तत्व पहेली ॥ कं० ॥ ७४२ ॥ कृ० ॥ ३७३ ॥
 दूहा ॥ कमल वदन रवि तेज कर । लघ्यन संति वत्तीस ॥
 कान नित प्रति सीषत कला । आवध धरन कृतीस ॥ कं० ॥ ७४३ ॥ कृ० ॥ ३७७ ॥
 सायक ॥ विद्या वंस विचार सत्य विनयं, सौच्यं समाधीनता ॥
 सन्मानं संस्थान सौम्य विजयं, सौजन्य सौभाग्ययं ॥
 संपूर्णं च सहस्र रूप प्रसन्नं, चित्रं सदा चारनं ॥
 सांगीतं च सजोग चार सकलं, विस्तारयते कला ॥ कं० ॥ ७४४ ॥ कृ० ॥ ३७८ ॥
 दूहा ॥ युन गरिष्ठ गौ विप्र प्रति । पूजक दान वरीस ॥
 सब्द आदि है निपुन अति । सात्त्विक सतावीस ॥ कं० ॥ ७४५ ॥ कृ० ॥ ३७९ ॥
 श्लोक ॥ संख्यतं प्राकृतं चैव । अपञ्चशः पिशाचिका ॥
 मागधी शूर सेनी च । पट् भाग्यैः ज्ञायते ॥ कं० ॥ ७४६ ॥ कृ० ॥ ३८० ॥
 पृथ्वीराजजी के वत्तीस लक्षणों का वर्णन ॥
 श्लोक ॥ दिनयी करजनज्ञाता । सर्वज्ञः सर्वपात्रकः ॥

काव्यजाति ॥ अरि तर वर तुंगो । कट्टनार्थे कुहारो ॥

कुल कमल प्रकाशो । तेज तप्तो दिनेस ॥

दरसन रस सेवी । कामिनी काम मूर्त्ति ॥

पर वर प्रति पंच । पालनं पार्थवानां ॥ कं० ॥ ७४८ ॥ ह० ॥ ३८२ ॥

अरिस्त ॥ सूरज ज्यो तप सत्रु कपोदन । फूलत अंग महा मन मोदन ॥

भूपति भूप प्रतापन भारी । दृठ करि रावन ज्यो अहंकारी ॥

कं० ॥ ७४९ ॥ ह० ॥ ३८३ ॥

श्लोक ॥ ज्ञानधर्मार्थकामं च । वल शत्रु सिंहासनं ॥

सभारंभक्षितेश्चैवा । मिधानं अष्टधा स्मृतं ॥ कं० ॥ ७५० ॥ ह० ॥ ३८४ ॥

दूषा ॥ पाघ वीराजत सीस पर । जरकस जोति निचाय ॥

मनों मेर के सिषर पर । रह्यो अहप्यति आय ॥ कं० ॥ ७५१ ॥ ह० ॥ ३८५ ॥

ता पर तुररा सुभत अति । कहत सोभ कवि नाथ ॥

मनु सूरज के सीस पर । धिषन धय्यौ धनु चाय ॥ कं० ॥ ७५२ ॥ ह० ॥ ३८६ ॥

अवन विराजत स्वाति सुत । करत न वनै वषान ॥

मनु कमल पत्र अग्रज रहै । औस उडगन आन ॥ कं० ॥ ७५३ ॥ ह० ॥ ३८७ ॥

कंठ माल मोतीन की । सोभत सोभ विखाल ॥

मेरु सिषर पारसु फिरत । जानि नक्किन माल ॥ कं० ॥ ७५४ ॥ ह० ॥ ३८८ ॥

मिस भीने सु मयंक मुष । निपट विराजत नूर ॥

मनों बीर उर काम के । उगे आनि अंकूर ॥ कं० ॥ ७५५ ॥ ह० ॥ ३८९ ॥

भाषां । चैव । ग्यायते । विनयं । जनं । ग्याता । सर्व्वज्ञं । पालकं । शरीरे । सरीरे । सोभ्यते । सोभते । श्रेष्ठं । द्वित्रिसमपि लक्षणे ॥

३८२ पाठान्तर-अति । घर तुंगो । कट्टनार्थे । कुठारो । प्रकाशो । तप्तो । दिनेसः । सेवी । मूर्त्ति । पंच । पार्थवाना ॥

३८३ पाठान्तर-सूरज । सूरज । ज्यो । ज्यो । शत्रु । फूलति । भुप । ज्यो ॥

३८४ पाठान्तर-ग्यान । सत्रु । सिंघासनं । तत्ते चैव । अभिधानं ॥

३८५-८९ पाठान्तर-शीस । ज्योति । कै । शिषर । शिषर । परि । अहप्यति । अहपति ।

त्रुरा । सोभै मनु । मनो । सूरज । मनो सूरज । कै । शीस पर । परि । धषन । विराजित । वषान । मनो । मनो । अग्रजु । रहे । औस । पयोक्कन । पयोक्कण । आनि । शौनत्व । शौभ । विशाल । सोभति । मेर । शिषर । पास । जनन । छिन्न । मिसि । निपट । मनो । काम कै । उगे । उगे । आनि । अंकूर ॥

अरिह्व ॥ आनन इंद्र उदोत सु मानों । जानन भोज विचप्यन जानों ॥
रवि ज्यों सचुन के तन तापन । कामिनि कों मकरध्वज मानन ॥
ॐ ॥ ७५३ ॥ ६० ॥ ३८० ॥

अरिह्व ॥ जा सरनागत मानव वंछै । जा सरनागत दानव इंछै ॥
जा सरनागत देव विचरै । सो प्रिथिराज प्रिथीपति सारै ॥
ॐ ॥ ७५७ ॥ ६० ॥ ३८१ ॥

दूहा ॥ प्रिथिराज पति प्रिथीपति । सिर मनि कुली कृतीस ॥
नष सिष पर मित लस तजै । ते गुन बरनि बतीस ॥ ॐ ॥ ७५८ ॥ ६० ॥ ३८२ ॥
तिन सचाय असुरह सुभट । सत सामंत रु सूर ॥
तिन सु कित्ति प्रगटी करन । कही चंद्र कवि पूर ॥ ॐ ॥ ७५९ ॥ ६० ॥ ३८३ ॥

कवित्त ॥ चहूआन कै वंस । वीर मानिकक पुत्र दस ॥
ता सु कित्ति कवि चंद्र । जनम लगगै जंपत जस ॥
ज्यों बीत्या भारथ्य । आदि अंतह ज्यों जंपों ॥
वय वानी सु प्रमान । लगन मरनह गुन थप्यों ॥
ज्यों भयौ जनम कवि चंद्र कै । भयौ जनम सामंत सच ॥
इक थान मरन जनमह सु इक । चलचि कित्त ससि लमिग रथ ॥
ॐ ॥ ७६० ॥ ६० ॥ ३८४ ॥

एक दिन रात्रि को चंद्र की स्त्री का रस में आकर पृथ्वीराज जी की
आदि से अंत तक कीर्त्ति वर्णन करने के लिये चंद्र को कहना ॥

गाथा ॥ समयं इक निशि चंद्रं । वाम वत्त वद्वि रम पादि ।
दिखी ईस गुनेयं । कित्ती कही आदि अंतहि । ॐ ॥ ७६१ ॥ ६० ॥ ३८५ ॥

चंद का अपने घर में कथा कहना और उसकी स्त्री का उसे
सुनते हुए जो स्मरण आवे वह पूछते जाना ॥

दूहा ॥ एक दिवस कवि चंद कथ । कही अप्पने भोन ॥

जिम जिम अवनत संभरी । तिम पुछि सारंग नैन ॥ ३६० ॥ ७६२ ॥ ३६६ ॥

चंद की स्त्री का उससे पूछना कि कौन दानव, मानव, और
नृप कीर्ति करने योग्य है ।

दूहा ॥ कह्यौ कंत सैं कंति इम । सैं पूछैं गुन तोहि ॥

को दानव मानव सु को । को नृप कितिक होहि ॥ ३६० ॥ ७६३ ॥ ३६७ ॥

चंद का अपनी स्त्री को गूढ़ उपलक्ष्यों के द्वारा उत्तर दे कहना
कि केवल हरि की कीर्ति करने योग्य है क्योंकि उसकी भक्ति
के बिना मुक्ति नहीं है ॥

कवित्त ॥ पेट काज चढि बंश । परें फर हरैं अवनि पर ॥

पेट काज रिन भौम । मरैं मरैं सु डुरैं धर ॥

पेट काज बहि भार । पार पाहारन पारैं ॥

पेट काज तरु तुंग । चिन्न परि घर पर डारैं ॥

इति पेट काज पापी पुरुष । वधै बह लख्खी चरन ॥

नर वर सुकम्म कहा नह करै । इहै उदर दुष्कर भरन ॥

३६० ॥ ७६४ ॥ ३६८ ॥

इस रूपक से अत्र तत्र कवि इस आदि पर्व का तौ उपसहार और दशम की कथा का प्रसंग अपनी स्त्री के वार्त्तालाप के द्वारा बड़े गूढार्थ में वर्णन करता है । हम आशा करते हैं कि काव्य के रसिक इस प्रसंग के दोहो और उनके अर्थ के गांभीर्य को अनुभव करके बहुत ही प्रसन्न होंगे ॥

३६६ पाठान्तर—सुदिन । वद । कहीय । अप्पने । भौन । अवनंत । अवनन । शचवनह । पूछीय । सारंग । नैन ॥

३६७ पाठान्तर—कंति । सैं । सैं सैं । कंत । ईम । हो । हो । पुछ्यौ । पूछूं । गुन । तोहि को । दानव । मानव को । को । को नृप । कसि । कह्यौहि ॥

३६८ पाठान्तर—काजि । वस । वंश । परयइं फरअकहरै । परइ । फरहरइ । पैठ । काजि । रन । भौमि । मरें । मारे । मरैं । मरैं । मारे । सुं । डरे । डरइं । पैठ । काजि । पाहारम । पैठ । काजि । तरु । चिन्न । तिन । चिन । परि । परिय । डारैं । इन । इत । काजि । पुरुष । वधै । बधै । लख्खी । चर । सुकम्म । कहा । करहि । इहइ । ईह । भरण ॥

कवित्त ॥ नेह विना नहि तेह । नेह विन गेह अरसु रस ॥
 प्रिय विन तिय न उमंग । अंग अंगार रूप रस ॥
 नायक विन नह सेन । दंत विन भुक्ति न होई ॥
 तेग त्याग तैं रहित । कहै कीरति को लोई ॥
 विन नीर मोन राजत कहूं । छत्रो विन सूर तरिन ॥
 मन बच क्लेश निम जानि जिय । न है मुक्ति हरि भक्ति विन ॥
 कं० ॥ ७६५ ॥ क० ॥ ३८८ ॥

चंद्र की स्त्री का उसे कहना कि चित्रनेवाले को चित्र कि जिससे
 तू दुस्तर के पार उतरै-चहुवान की कीर्ति कविने से वह क्या रंजैग
 दूहा ॥ चित्रनचारे चित्रि तूं । रे चतुरंगी नाह ॥
 का चहुआन सु किति कवि । मन मनु ह्य हरि छाह ॥ कं० ॥ ७६६ ॥ क० ॥ ४०० ॥

कवित ॥ तत्त हीन पुत्तरी । पंच बंधी कर नंचै ॥
 आसा नदी सपूर । जीय मनोरथ संचै ॥
 बहु तरंग तिश्राह । राम बहु गेह करंगी ॥
 का चहुआना किति । कंत धीरज तिर भंगी ॥
 मन सोह ष्ठ विस्तरि रह्यौ । चिंता तट घट भंगिय ॥
 उत्तरदि पार दुत्तर कवी । का चहुआना रंजिय ॥
 कं० ॥ ७६७ ॥ क० ॥ ४०१ ॥

चंद्र का अपनी स्त्री को कहना कि मैं चहुआन का नरगा
 उतारता हूं ॥

दूहा ॥ कहे गुपत गुन तैं भले । सो जिय ह्य अंटेन ।
 रिन अयो चहुआन वै । पञ्चह विद्य नरंग ॥ कं० ॥ ७६८ ॥ क० ॥ ४०२ ॥

चंद्र की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देता है तो
गोविन्द को क्यों नहीं सुमरता ॥

दूहा ॥ चित्रनहारे हेरि चित । चित्रन हेरि कविंद ॥

जो रिन अप्यै राज कौ । तो सुमरै न गुविंद ॥ कं० ॥ ७६८ ॥ ह० ॥ ४०३ ॥

अम जल मन मंदा न करि । अम जल भेष न फेरि ॥

चित्त न अप्य चित्र कौ । चित्रनहारे हेरि ॥ कं० ॥ ७७० ॥ ह० ॥ ४०४ ॥

चंद्र का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देखकर अकुलाया
हूँ, केवल भक्ति विलंब करनेवाली है ॥

दूहा ॥ कमलासन देखत थक्यौ । भगत विलंबन चार ॥

क्रोध अप्य सब जग ग्रसै । ग्रसत न लगौ वार ॥ कं० ॥ ७७१ ॥ ह० ॥ ४०५ ॥

तथा चंद्र का कहना कि संसार में जो कुछ और सर्वव्यापी
है वह कमलासन ही है उसी की उपमा करके

मैं पृथ्वीराज जी की कीर्ति वर्णन करता हूँ ॥

भुजंगी ॥ वही तत्त त्रैलोक संसार सारं । वही तारनं सत भौ सिंध पारं ॥

जगत्तं अधारं निराधार बोही । वही अब्बदा संपदा नित्य सोही ॥ कं० ॥ ७७२ ॥

वही भेद मंत्रं गजानंत लोयं । वही पूरनं ब्रह्म संसार भौयं ॥

नवं भक्ति कौ संव ही कच धारी । भय्यौ ब्रह्म बुभ्यौ वही सिद्ध तारी ॥ ७७३ ॥

जगत्तं सुरत्तं वही है निनारं । वही वासता वासुदेवं प्रकारं ॥

वही भक्त दृश्यं नच्यौ कप्यमानं । वहीयै वही यै वही यै निधानं ॥ कं० ॥ ७७४ ॥

इकं एक आचिज्ज कीनें गुसाई । चवै चंद्र जो रंग गोव्यंद पाई ॥

वही की उपमा करै किति भासौं । वही सब्ब संसार मझै प्रकासौं ॥ कं० ७७५ ॥

वही अंतरंगी सुरंगी निनारं । वही राज राजीव लोचन सारं ॥ कं० ७७६ ॥ ह० ४०६ ॥

४०३-४०४ पाठान्तर-चित्रनहारे चित्र तू । कवि चंद्र । ज्यौ अप्यौ । अप्यै । कौ । तो । समरे ।
समरि । गोविंद ॥ ३६८ ॥ मंदा करि । भेष न फेरि । चित्रन अप्यौ । अप्यै । कौं । चित्रनहारै ॥

४०५ पाठान्तर-देषत । क्रोध । सप्यं । यहै । लगौ । लगै ॥

४०६ पाठान्तर-तत । नारणं । भव । सिंधु । जगत्तं । सोही । ऊही । ऊही । सरदा ।
सोही । भेद । मंत्र । गजा मत । लोयं । पूरनं । सोय । भोयं । नव । भाति । शव । भय्यौ । जगत्तं । सुरत्तं ।
हेनि । हैनि । वासता । वास । हैवं । वास हेवं । भक्ति । दृश्यं । कप्यमानं । कपिमानं । नधानं ।
वही यै वही यै निधानं निधानं । इक । अक । अक । अश्चिर्ज । कीनै । कीने । गुसाइ । गुसाई ।
जौ । रंगी । गोविंद । उपमा । करै । भासौ । कही । सब्ब । मझै । प्रकासौ । कहै । लोयंच ॥

चंद्र की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख जो उरं
देखता है उसे वह दीखता है, नर की कीर्ति मत गा
क्योंकि उससे और कोई बलवंत नहीं है ॥

दूषा ॥ ब्रह्म देषि ब्रह्मान्तरव । हरि दिषियन दिष्पाइ ॥ ३ ॥

बिज्ज क्कटा अग्यांन मन । गोपी हरि गो गाइ ॥ कं० ॥ ७७७ ॥ ह० ॥ ४०७

ब्रह्म ब्रह्म हरगत वर । नर जानी न गुविंद ॥

सकल घटं घट हरि रमै । ज्यौ अनेक घट चंद्र ॥ कं० ॥ ७७८ ॥ ह० ॥ ४०८

जस अपजस लाभिष्ट दोइ । अवगति गति न बुझाइ ॥

गोप ग्वाल बूझे नहीं । गोपन बूझी गाइ ॥ कं० ॥ ७७९ ॥ ह० ॥ ४०९

कवित्त ॥ कच्चि महियल बल कितौ । एक दट्टं हरि धारिय ॥

कच्चि वासिग बल कितौ । सु फुनि करि नेचां सारिय ॥

सुमुंद कितौ गरुअत्त । अप्प भुज जोर हिलोरिय ॥

कितौक सबल मेरु गिरि । कमठ छोइ पिठुच तोलिय ॥

लघु बली सेस वंभानवै । सुर असुरायन दिठु सध ॥

कवि चंद्र अवर बल वैम कच्चि । कच्च तो हरि बलवंत कच्च ॥

कं० ॥ ७८० ॥ ह० ॥ ४१० ॥

चंद्र का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग अंग में
हरि रूप रस है ॥

दूषा ॥ त्रिय वर ज्यौ नर ज्यौ सु कवि । नर कित्ती नन गाइ ॥

अंग अंग हरि रूप रस । ब्रह्म दिषाइ मुनाइ ॥ कं० ॥ ७८१ ॥ ह० ॥ ४११ ॥

४०७ पाठान्तर—ब्रह्मान्तरवर । हरिदिषियेन दिषायं । बिज्ज । अग्यांन । गोपी । गो । पाप ।

४०८ पाठान्तर—ब्रह्म ब्रह्म । जानी । गोविंद । घटमै । ज्यौ । मे । अनेक ।

४०९ पाठान्तर—लाभिष्टी । बुझाय । औप । बुझे । बुझे । गोपन । बुझी । गाइ ।

४१० पाठान्तर—दडह । धारिय । कितौ । कितौ । सुनि । करिय । नेचां । सारिय ।

सुमुंद । गरुअत्त । अप्प । भुज । जोर । हिलोरिय । कितौक । मेरु । कमठ । छोइ । पिठुच । तोलिय ।

लघु । बली । सेस । वंभानवै । सुर । असुरायन । दिठु । सध ।

४११ पाठान्तर—ज्यौ । सु । कित्ती । नन । गाइ ।

चंद्र की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देता है तो
गोविन्द को क्यों नहीं सुमरता ॥

दूहा ॥ चित्रनहारे हेरि चित । चित्रन हेरि कविंद ॥

जो रिन अप्पै राज कै । तो सुमरै न गुविंद ॥ कं० ॥ ७६९ ॥ हू० ॥ ४०३ ॥

अम जल मन मंदा न करि । अम जल भेष न फेरि ॥

चित्त न अप्प चित्र कै । चित्रनहारे हेरि ॥ कं० ॥ ७७० ॥ हू० ॥ ४०४ ॥

चंद्र का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देखकर अकुलाया
हूँ, केवल भक्ति विलंब करनेवाली है ॥

दूहा ॥ कमलासन द्वेषन थक्यौ । भगत विलंबन चार ॥

क्रोध अप्प सब जग ग्रसै । ग्रसत न लगै वार ॥ कं० ॥ ७७१ ॥ हू० ॥ ४०५ ॥

तथा चंद्र का कहना कि संसार में जो कुछ और सर्वव्यापी
है वह कमलासन ही है उसी की उपमा करके
मैं पृथ्वीराज जी की कीर्ति वर्णन करता हूँ ॥

भुजंगी ॥ वही तत्त त्रैलोक संसार सारं । वही तारनं सत भौ सिंघ पारं ॥

जगत्तं अधारं निराधार बोही । वही अब्बदा संपदा नित्य सोही ॥ कं० ॥ ७७२ ॥

वही भेद मंत्रं गजानंत लोयं । वही पूरनं ब्रह्म संसार भोयं ॥

नवं भक्ति कै संव ही क्वच धारी । भूम्यौ ब्रह्म बुभ्यौ वही सिद्ध तारी ॥ ७७३ ॥

जगत्तं सुरत्तं वही है निनारं । वही वासना वासुदेवं प्रकारं ॥

वही भक्त दृश्यं नच्यौ कपिमानं । वहीथै वही थै वही थै निधानं ॥ कं० ॥ ७७४ ॥

इकं एक आचिज्ज कीनें गुसाईं । चवै चंद्र जो रंग गोव्यंद पाई ॥

वही की उपमा करै कित्ति भासै । वही सब्ब संसार मझै प्रकासै ॥ कं० ७७५ ॥

वही अंतरंगी सुरंगी निनारं । वही राज राजीव लोचन सारं ॥ कं० ७७६ ॥ हू० ४०६ ॥

४०३-४०४ पाठान्तर-चित्रनहारे चित्र तूं । कवि चंद्र । ज्यौ अप्पौ । अप्पै । को । तो । समरे ।
समरि । गोविंद ॥ ३६९ ॥ मंदा करि । भेष न फेरि । चित्रन अप्पौ । अप्पै । कां । चित्रनहारै ॥

४०५ पाठान्तर-द्वेषत । क्रोध । सर्प । यहै । लगे । लगै ॥

४०६ पाठान्तर-तत । नारणं । भव । सिधु । जगत्तं । सोही । ऊंही । ऊही । सरदा ।
सोही । भेद । मंत्र । गजा मंत्र । लोयं । पूरनं । सोय । भोयं । नव । भाति । शव । भूम्यौ । जगत । सुरंत ।
हेनि । हैनि । वासता । वास । हैवं । वास हैवं । भक्ति । दृश्यं । कपिमानं । कपिमान । नधानं ।
वही थै वही थै निधानं निधानं । इक । अक । अक । अखिज्ज । कीनें । कीने । गुसाइ । गुसाईं ।
को । रंगी । गोविंद । उपमा । करै । भासै । कही । सकल । मझै । प्रकासै । कहै । लोचन ॥

चंद की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख जो उसे देखता है उसे वह दीखता है, नर की कीर्ति मत गा क्योंकि उससे और कोई बलवंत नहीं है ॥

दूषा ॥ ब्रह्म देषि ब्रह्मान्तरव । हरि दिषियन दिष्पाइ ॥ ३ ॥

बिज्ज क्कटा अग्यांन मन । गोपी हरि गो गाइ ॥ कं० ॥ ७७७ ॥ ह्र० ॥ ४०७ ॥

ब्रह्म ब्रह्म हरगत वर । नर जानी न गुविंद ॥

सकल घटं घट हरि रमै । ज्यौं अनेक घट चंद ॥ कं० ॥ ७७८ ॥ ह्र० ॥ ४०८ ॥

जस अपजस लाभिष्ट दोइ । अवगति गति न बुझाइ ॥

गोप ग्वाल बुझे नहीं । गोपन बुझी गाइ ॥ कं० ॥ ७७९ ॥ ह्र० ॥ ४०९ ॥

कवित्त ॥ कच्चि महियल बल कित्तौ । एक दट्टं हरि धारिय ॥

कच्चि वासिग बल कित्तौ । सु फुनि करि नेत्रां सारिय ॥

सुमुंद कित्तौ गरुअत्त । अप्प भुज जोर हिलोरिय ॥

कित्तौक सबल मेरु गिरि । कमठ होइ पिठुह तोलिय ॥

लघु बली सेस बंभानवै । सुर असुरायन दिठु सह ॥

कवि चंद अवर बल वैम कच्चि । कह तौ हरि बलवंत कच्च ॥

कं० ॥ ७८० ॥ ह्र० ॥ ४१० ॥

चंद का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग अंग में हरि रूप रस है ॥

दूषा ॥ त्रिय वर ज्यौ नर ज्यौ सु कवि । नर कित्ती नन गाइ ॥

अंग अंग हरि रूप रस । ब्रन्न दिषाइ सुनाइ ॥ कं० ॥ ७८१ ॥ ह्र० ॥ ४११ ॥

४०७ पाठान्तर—ब्रह्मांतरवर । हरिपिदिषियंन दिषायं । बिज्ज । अग्यांन । गोपी । गो । पाय ॥

४०८ पाठान्तर—ब्रह्म ब्रह्म । जानी । गोविंद । घटमै । ज्यौ । मै रामचंद्र ॥

४०९ पाठान्तर—लाभिष्टकी । बुझाय । ग्यौप । बुझो । बुझै । गोपन । बुझी । गाय ॥

४१० पाठान्तर—दट्टह । धारीय । कित्तौ । कित्तौ । फुनि । सारीय । सारी । समुद्र । कित्तौ ।

गुरु वत्त । गुरुवत्त । अप्प व । भुज । जोर । हिलोरीय । कित्तक । मेरु । मेर । गिर । होइ । पिठह । तोलिय । सेस । असुराईन । दिठ । कहै । त । बलिवंत । कच्चि ॥

४११ पाठान्तर—च्यौय । सु कित्ती लाई । गाय । अत्रि । दिषाई । त्रिषाय । सुनाई । सुनाय ॥

चंद की स्त्री का उसे कहना कि अंग अंग में हरि रूप
रस वर्णन कर दिखाओ ॥

दूहा ॥ अंग अंग हरि रूप रस । विविधि विवेक वरेन ॥

मुक्ति समप्यन कंत रस । जुग तिनि जोग सरेन ॥ कं० ॥ ७८२ ॥ सृ० ॥ ४१२ ॥

चंद का उत्तर दे कहना कि कान दे सुन में वर्णन कर दिखाता हूं ॥

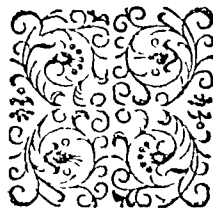
दूहा ॥ कछौ भामि सौं कंत इम । जो पूकै तत मोहि ॥

कान धरौ रसना सरस । ब्रन्नि दिपाजंतोहि ॥ कं० ॥ ७८३ ॥ सृ० ॥ ४१३ ॥

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराज रासके आदि पर्व नाम
प्रथम प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥

४१२ पाठान्तर—विविध । वरनं । मुगति । जुंग । जौग । सरन ॥

४१३ पाठान्तर—भामिन । सौ । जौ । पुकड़ । पुकै । कान । दिपाजं नौहि ॥



उपसंहारिणी टिप्पण ॥



यद्यपि इस महाकाव्य के महाकवि चंद्र बरदाई ने इस आदि पर्व का उपसंहार अपनी निम्न काव्य रचन-शैली के अनुसार ३९५ रूपक से लेकर ४१३ तक में बड़े गूढार्थ के साथ वर्णन कर दिया है परन्तु यह भी उचित और अत्यावश्यक है कि हम भी अपनी शैली के अनुसार अपनी टिप्पणों के उपसंहारार्थ कुछ थोड़ा सा अपने पाठकों की सेवा में सविनय निवेदन करें कि जिससे सर्व साधारण को हिन्दी भाषा के इस महाकाव्य का कुछ स्वरूप-ज्ञान हो ॥

इस महाकाव्य का नाम पृथ्वीराजरासो है और यह दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् पृथ्वीराज और रासो । इस संज्ञा का अर्थ यह होता है कि 'पृथ्वीराज का रासो' अथवा अर्थात् पृथ्वीराज नामक संज्ञा से, हमारे उन पृथ्वीराजजी चौहान को अपने इस महाकाव्य का नामक

वर्णन किया है, कि जो विक्रम के बारहवें शतक में हमारे स्वदेशी अतिम राजरा-

जेश्वर अर्थात् बादशाह हुए हैं, कि जिनकी सूरवीरता का अभिमान आज तक प्रत्येक आर्य को है और जिनके नाम का औठा रात्रिदिन की बोल चाल में हमारे देश के सर्व साधारण किया करते हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि वे एक कैसे बड़े कट्टर आर्य और सूरवीर राजा हुए हैं, कि जिन्होंने सुलतान शहाबुद्दीन गोरी को कई बेर घोर युद्ध कर कर के पराजित किया था परन्तु होनहार परम बलवान होती है कि जिससे अचिंतित घटना भी भट उपास्यत हो जाती है। देखो ईश्वरही की इच्छा हिन्दुओं की बादशाहत स्थिर रखने की न थी, कि दैवयोग से पृथ्वीराजजी चौहान जैसे सूरवीर राजा, सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के हाथ से, अपनी अतिम लड़ाई में, अंत को प्राप्त हुए। वह भी फिर कैसे-कि वे हिन्दुओं की बादशाहत के सब टाठ पाठरूपी सर्वस्व को मानो अपने साथ ही लोकान्तर में लेगये और जगत को यह निर्देश कर गये कि लौकिक में जो प्रायः यह कहा करते हैं कि किसी के अंत समय उसके साथ कुछ नहीं जाता है वह एक प्रकार से असत्य है-अब रहा हिन्दी रासो शब्द, वह संस्कृत रास अथवा रासक से है और संस्कृत भाषा में रास के 'शब्द, ध्वनि, क्रीडा, शबला विलास, गर्जन नृत्य और कोलाहल आदि' के अर्थ और रासक के काव्य, अथवा दृश्यकाव्यादि के अर्थ परम प्रसिद्ध हैं। मालूम होता है कि गणेश ने संस्कृत भारत शब्द के सदृश रासो शब्द को भावार्थ से महाकाव्य के अर्थ में ग्रहण कर प्रयोग किया है। यह रासो शब्द आज कल की व्रज भाषा में भी अप्रचलित नहीं है किन्तु अन्वेषण करने से वह काव्य के अर्थ के अति रिक्त अन्य अनेक अर्थों में भी प्रयोग होता हुआ विद्वानों की दृष्टि आवेगा, जैसे- 'हमने चौदों के गदर को एक रासो जोड़ो है कल बहादुर सिधजी की बैठक में बदर ने गदर को रासो गाया हो फिर मैं ने भरतपुर के राजा सूरजमल को र सो गाया सो सब देखते ही रह गये अती ये कहा रासो है मैं तो कल्ल एक रासो मैं फँस गयो या स तुमारे वहा नाय आय सख्यो-अनी राम गोपाल बडौ दिवारिया है, वाके रासे में फँस के रूपैया मन बिगाड दीजो-हमने आज बिन को रासो निमटाय दोनो है-देखो सब रासो के सग रासो है, वुरी मत मानो'-तथा लुगाइयें भी गाया करती है-

गीत ॥ मत काची तौन्ह रवियो घानी

नान्ह कहुंगी अंत रासा

गुर राख, पकावा, मत काचा । इत्यादि ॥ १ ॥

जिव लोगन की रास उठेगी तौन्ह के खाक उठावेगा,

हल जोत, नहीं पढतावेगा । इत्यादि ॥ २ ॥

२ यद्यपि इस् महाकाव्य का केवल नाम सुनते ही उसका विषय यह प्रतीत होने लगता है कि उसमें पृथ्वीराजजी चौहान के जन्म से लेकर मरण तक के ही सब चरित्र वर्णन किये गये हैं,

विषय

परंतु उसके गर्भित वृत्तों की परीक्षा करने से जानने में आता है कि महा कवि चंद्र ने उसमें पृथ्वीराजजी के चरित्रों के साथ ही उनके सब समकालीन सूर,

सामंत, आधीन राजा, इष्ट मित्र और सगे संबन्धी और सहायक यावदार्य राजकुलों के भी कुछ न कुछ चरित्र और शौर्य वर्णन किये हैं । अतएव यह कदापि नहीं समझा जा सकता कि यह महाकाव्य पृथ्वीराजजी चौहान के नायक होने के कारण से केवल चौहानों की ही बापैती का ग्रंथ है किन्तु वह वास्तव में यावदार्य राजकुलों का सर्वस्व है । देखो, पृथ्वीराजजी से लेकर जिन जिन सूर वीरों के चरित्र उसमें वर्णन किये गये हैं उन सब की विद्यमान संतान वर्तमान काल की हमारी श्रीमती भारत-राजराजेश्वरी विक्रोरिया के सिंहासन के चारों ओर उपस्थित होकर अपनी अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार तन मन और धन के द्वारा परम राजभक्ति को प्रकाश कर रही है और श्रीमती के प्रस्वेद के साथ मानों अपना रक्त तक वहाने को प्रस्तुत खड़ी है । क्या पृथ्वीराजजी के एक बड़े सूर वीर सामंत पञ्जूनजी के वंश में श्रीमहाराज साहब जयपुर और उनके राज वंशीय सरदार नहीं हैं ? क्या पृथ्वीराजजी के सगे संबन्धी जयचंद्रजी के वंशज श्रीमहाराज साहब जोधपुर और छष्णागढ़ और उनके भाई बेटे नहीं हैं ? क्या पृथ्वीराजजी के वहनेऊ और परम सूर वीर सहायक रावल समरसीजी की कुलीन संतान में श्रीमहाराज साहब नेपाल, श्रीमहाराजा जी साहब उदयपुर, श्रीदरबार डूंगरपुर और प्रतापगढ़ अपने अपने राजवंशी उमराव और सरदारों के सहित नहीं है ? क्या चौहानजी के अनेक वंशज बूंदी, कोटा सिरोही, नीमराणा, भदावर बेदला, कोठारिया, और पारसोली आदि के राजा महाराजा और सरदारों को आज हम अपनी आंखों से नहीं देखते हैं ? इसी तरह अन्य सब की विद्यमान संतानों को भी हमारे पाठक स्वयम् विचार देखें और इस थोड़े में ही बहुत करके समझ लें कि इस महाकाव्य का विषय बारहवें शतक के यावदार्य राजकुलों के संवलित चरित्रों से परम विभूषित है ॥

३ इस पृथ्वीराज रासो को जो हम अपने लेखों में महाकाव्य कर के लिखते हैं वह कुछ

काव्य

अन्यथा और आश्चर्यदायक नहीं है किन्तु साहित्यदर्पण में महाकाव्य का जो नीचे लिखा हुआ लक्षण लिखा है उससे वह विशेषांश में मिलता हुआ है—

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः । सदृशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः ॥

एकवंशभ्रवाः भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा । शङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस ईष्यते ॥

अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः । इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम् ॥

चत्वारस्तस्य वर्णाः स्पेस्तेष्वेकं च फलं भवेत् । आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा ॥

क्वचिचिन्दा खलादीनां सताञ्च गुणकीर्तनम् । एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः ॥

नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह । नानावृत्तमया क्वापि सर्गः कखन दृश्यते ॥

संगान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् । सन्ध्या सूर्येन्दुरजनीप्रदोशध्वान्तवासराः ॥
 प्रातर्मध्यान्हृगयाशैलर्तुवनसागराः । सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः ॥
 रणप्रयाणोपयम मन्त्रपुत्रोदयादयः । वर्णनीया यथ.योगं साङ्गेषाङ्गा अमी इह ॥
 कवेर्वृत्तस्य वा नान्ना नायकस्येतरस्य वा । नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गं नाम तु ॥

सा० द० ५५९ ॥

जब कि वह महाकाव्य के लक्षण के अनुसार वास्तविक एक महाकाव्य है तो फिर उस के रचनेवाले का भी साहित्यशास्त्र में एक अच्छा व्युत्पन्न महाकवि होना क्या अनुमान नहीं किया जा सकता है ? जैसे कि इस महाकाव्य का विषय पृथ्वीराजजी चौहान और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलो के चरित्रों से संवलित है वैसे ही उसका काव्य भी भिन्न भिन्न प्रकार के छंदों से विभूषित अनेक प्रकार के काव्यों का एक ऐसा संवलित काव्यात्मक है कि उसको हम किसी एक प्रकार के काव्य की संज्ञा प्रदान नहीं कर सकते हैं। उसके काव्य को श्राव्य काव्य की संज्ञा देने में हम आशा करते हैं कि किसी विद्वान को भी कुछ शंका न होगी किन्तु सूक्ष्मतर अन्वेषण करने से ज्ञात होगा कि उसको कोई दृश्य-काव्य का अच्छा व्युत्पन्न परीक्षक भूट शोधकर जान सकता है। क्या हम यह नहीं विचार सकते कि इस महाकाव्य के छंदों को कवि ने रूपक के क्रम से क्यों गिना है ? इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से यहा तक भी स्पष्ट विदित हो सकता है कि महाकवि चंद ने उसको काव्य की अनेक उत्तमताओं के इन तीन मूलों से भी भले प्रकार विभूषित किया है। प्रथम तो महाकवि ने अपने वचन को शृंगार, रस, अनुपास, और अलंकारादिक से परम विचित्र किया है। दूसरे उसने भाव में चोज रक्खा है। तीसरे इस महाकाव्य के सब छंद प्राचीन और नवीन प्रकार की गानविद्या के अनुसार गाये भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त महाकवि ने पृथ्वीराजजी और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलादि के इतिहास भी जहा तक उससे हो सके हैं भले प्रकार से वर्णन किये हैं। हिन्दी भाषा में साहित्यशास्त्र और सब पौराणिक अनुवाद विषयिक ग्रंथ जो अब तक प्राप्त हो सके हैं वे बारहवें शतक के अथवा उसके पहिले के नहीं है किन्तु वे सब इधर के समय के रचित हैं अतएव हम को समझना चाहिये कि चंद ने संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों के आधार से ही यह महाकाव्य रचा है और जब कि यह बात ऐसी ही है, तो फिर हमको उसके परम परिश्रम के लिये कितना आभारी होकर उसकी प्रशंसा करनी चाहिये। क्या हमको इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से चंद की उक्ति, साहित्यशास्त्र विषयिक नियम, और पौराणिक कथा आदि में उसका संस्कृत भाषा के अनेक विद्या ग्रन्थों का अनुकरण करना नहीं दृष्टि आता है ? जहां तक हिन्दी भाषा के ऐसे अनेक ग्रंथ कि जो चंद के पीछे के रचित हैं हमारे पथ में आये हैं, उन सबसे यही ज्ञात होता है कि उनके रचनेवाले चंद कवि जैसे संस्कृत भाषा से भले प्रकार परिज्ञात नहीं थे और उन्होंने चंद की शैली का ही निःसंदेह अनुकरण किया है। हमारे कहने का सारांश यह है कि इस महाकाव्य का उसके अति क्लिष्ट और हमारी बुद्धि को चल विचल कर देनेवाला होने के कारण निन्दनीय ठहराना नहीं चाहिये किन्तु साहित्यशास्त्रादि के संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों का हाथ में लेकर और अपने हृदय को चारण और भाटादि के वश परपरा के हाड-चैर के दुरायह से गुठु करके सूक्ष्मतर परीक्षा करनी चाहिये कि उससे हमको निःसंदेह यह ज्ञात हो जायगा कि हमारे स्वदेशी और यूरोपियन बड़े बड़े विद्वान जो इस महाकाव्य की प्रशंसा अत्र तक करते चले आये हैं वह वास्तव में वैसा ही अमूल्य महाकाव्य है और वह ऐसा है भी—कि मानों चंद अपने समय

तक के हिन्दी भाषा के सर्व प्रकार के काव्यों का एक अमूल्य संग्रह हमारे लिये प्रस्तुत कर के हमारी हिन्दी भाषा को अति धनाढ्य कर गया है । क्या यह बात पक्षपात रहित विद्वानों को अति आश्चर्य और अट्टाट्टहास कराने वाली नहीं है, कि हम इस महाकाव्य को अभी तक बहुत ही अच्छी तरह से पढ़ पढ़ा और समझ समझा तो सकते ही नहीं और न इस महाकाव्य में यूनीवर्सिटी (University) की परीक्षा की शैली के अनुसार परीक्षा दे कर उत्तीर्ण हो सकते हैं किन्तु उसके दोष देकर विध्वंस करने को तो हम सबसे आगे आबड़े होने को प्रसन्नतापूर्वक तयार हैं ? निदान किसी कवि के कहे अनुसार जो जिसके गुण को नहीं जानता वह उम की निन्दा निरंतर करता है:—“न वेत्ति, यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निन्दा सतत करोति । यथा किराती करिकुंभजाता मुक्ताः परित्यज्य विभाति, गुंजाः” ॥

जैसे इस महाकाव्य का काव्य अनेक प्रकार के काव्यों का एक संग्रहित काव्य है वैसेही उसकी भाषा भी उसके ग्रंथकर्ता के समय तक की अनेक प्रकार की प्राचीन हिन्दी भाषाओं की एक अति संवलित

भाषा	हिन्दीभाषा है । यदि किसी को इसमें कुछ सदेह हो तो वह इस आदि पर्व को ही ध्यान देकर पढ़ देखे कि उसके किमी छन्द की तो कैसी भाषा है और किसी की कैसी । क्या विद्वानों से यह बात छिपी हुई है कि भाषा और काव्य का नित्य-संबन्ध नहीं है ? जब कि उनमें नित्य-संबन्ध का होना यथार्थ है तो फिर क्या प्रत्येक का अपने अपने अनेक प्रकारों से संवलित होना भी स्वतः सिद्ध नहीं है ? इस महाकाव्य की भाषा के चीज को वे विद्वान भले प्रकार से जान सकते हैं कि जो वर्तमान समय में फिलोलोजिस्ट (Philologists) अर्थात् शब्दोत्पत्तिविद्याज्ञ कहलाते हैं । और वैसे तो हमारे पढ़ने में वर्तमान समय के ऐसे ऐसे सहसा सिद्धान्त कर लेने वाले विद्वानों के भी लेख आये हैं कि जिन्होंने ऐसा अन्यायभाव का वाक्य भी कहा है, कि इस महाकाव्य के महाकवि को अनुस्वार और विसर्ग तक के प्रयोग करने का बोध नहीं था । और विद्वान भलेही ऐसा कहने में सम्मत हों परंतु हमारे मुख से तो इस महाकाव्य के काव्य को देखते हुए ऐसा सुन कर वारंवार यही निकलता है कि—ब्राहि गोविन्द । ब्राहि गोविन्द ॥ ग्रंथकर्ता ने इस ग्रंथ को जिस भाषा में लिखा है वह उसने स्वयम् ही इस आदि पर्व के रूपक ३९ में स्पष्ट कह दी है और जैसा उसने कहा है वैसी ही भाषा हम इस महाकाव्य की पाते भी हैं । फिर आश्चर्य क्या है ? वह यही है—कि न तो इस इस ग्रंथ को आदि से लेकर अंत पर्यंत पढ़ते हैं, न समझते हैं, न कवि के अभिप्राय को लक्ष में लाते हैं, न यह विचारते हैं कि बड़े बड़े विद्वान कि जिन के वचन पर अनेक मनुष्य विश्वास करते हैं उनके सिर पर कुछ सम्मति देते समय बड़ी भारी जिम्मेदारी अर्थात् अनुयोज्यता का बोझ भी रक्वा हुआ है कि नहीं—किन्तु जो मन में आया वही हम लिख डालते हैं, क्योंकि न तो चंद्र कवि, न पृथ्वीराजजी चौहान, और न रावल समरसीजी हमसे हमारे ऐसा कहने के लिये अब लड़ने को आ सकते हैं, और न किसी क्षीर-नीर का सा न्याय करने वाले विद्वान का हमको डर है । देखो, हमने अपनी प्रथम टिप्पणी में ही कह दिया है कि इस महाकाव्य की हिन्दी भाषा तीन प्रकार की है । प्रथम पट-भाषा-और-कुरान-की भाषा-की-यानिवाली दूसरे पट-भाषा-और-कुरान-की-भाषा-के-सम, और तीसरे देशी प्रसिद्ध । इसके अतिरिक्त विद्वानों को इस महाकाव्य की भाषा की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से ज्ञात होगा कि चंद्र कवि ने साहित्यदर्पण में लिखे हुए भाषा के प्रयोग के निम्न लिखित नियमों का भी अपने निज विचार और शैली के संस्कार सहित इस महाकाव्य के रचने में कुछ अनुकरण किया है—
------	--

पुरुषाणामनीचानां संस्कृतं स्यात्कृतात्मनाम् । शौरसेनी प्रयोक्तव्या तादृशीनाञ्च योषिताम् ॥
 आसामेव तु गाथासु महाराष्ट्रीं प्रयोजयेत् । ऋत्नोक्ता मागधीभाषा राजान्तःपुरचारिणाम् ॥
 चेटाना राजपुत्राणां श्रेष्ठीनां चार्दुमागधी । प्राच्या विदूषकादीनां धूर्तानां स्यादवन्तिका ॥
 योधनागरिकादीनां दाक्षिणात्या हि द्वीव्यताम् । शकाराणा शकादीनां शाकारों सम्प्रयोजयेत् ॥
 बाह्लीकभाषा दिव्यानां द्राविडी द्रविडादिषु । आभीरेषु तथाऽभीरी चाण्डाली पुक्कसादिषु ॥
 आभीरी शावरी चापि काष्ठपत्रोपजीविषु । तथैवाङ्गाकारादौ पैशाची स्यात् पिशाचवाक् ॥
 चेटानामप्यनीचानामपि स्यात् शौरसेनिका । बालानां पण्डकानाञ्च नीचयहविचारिणाम् ॥
 उन्मत्तानामातुराणां सेवे स्यात् संस्कृतं क्वचित् । ऐश्वर्य्येण प्रमत्तस्य दारिद्र्योपस्कृतस्य च ॥
 भित्तुबन्धरादीनां प्राकृतं सम्प्रयोजयेत् । संस्कृतं संप्रयोक्तव्यं लिङ्गिनी पूत्तमासु च ॥
 देवीमन्त्रिसुतावेश्या स्वपि कौशिकतयोदितम् । यद्वेशं नीचप्रात्नन्तु तद्वेशं तस्य भाषितम् ॥
 कार्योत्तमादीनां कार्यो भाषाविपर्यः । योषितु सखीबालावेश्यां कितवाप्सरसां तथा ॥
 वैदग्ध्यार्थं प्रदातव्यं संस्कृतं चान्तरान्तरा ॥

स०द० ४३२ ॥

इस बात की कुछ परीक्षा हम इस आदि पर्व में ही कर सकते हैं । देखिये रूपक ३३, ३६, आदि शुद्ध संस्कृत भाषा में हैं और रूपक १६, २२, ४७, ५७, ५९, इत्यादि में पठभाषाओं का सादृश्य और साठकों में प्रायः संस्कृतादि भाषाओं का सादृश्य है । इसी प्रकार हमारे पाठक इस भाषा सम्बन्धी सब बातों को इस समय ग्रन्थ में अन्वेषण कर जांच देखें । यदि इस प्रकार की परीक्षा करने पर सब विद्वानों की सम्मति में यही तुलगा कि चंद्र कवि वज्र-मूर्ख या तौ हम भी उस को बड़ा वज्र-मूर्ख कहने लगेंगे क्योंकि वह हमारा कोई सबन्धी नहीं है और न हम को अपने कहे का कुछ हठ है वरन हमारा सिद्धान्त यही है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग हो । इस महाकाव्य की भाषा में दो एक वर्ष से एक यह भी बड़ी भारी शंका लोगो ने खड़ी की है कि उस में आठ या १० दस भाग में एक भाग के फारसी शब्द हैं और फारसी शब्द अकबर बादशाह के समय से हिन्दी भाषा में मिले हैं अतएव यह महाकाव्य सं० १६४० से १६७० के बीच में कृत्रिम बना है । हम इस बात से बिलकुलही असम्मत हैं और ऐसा अनुमान करने वाले को हम समझते हैं कि उसने न तो यह पृथ्वीराज रासो कभी आदि से अंत परियंत अच्छी तरह से पठा है और न उसको ऐतिहासिक विद्या का पूरा पूरा बोध है क्योंकि यह अनुमान बिलकुलही अटुट और अपरिपक्व है । वरन अब तक के ऐतिहासिक शोधों के अनुसार हमारी सम्मति में फारसी शब्दों का मेल हमारे भरतखण्ड की बोलचाल की भाषाओं में सातवें शतक तक पाया जा सकता है कि फिर इस बारहवें शतक की हिन्दी भाषा की तौ क्याही कथा कहनी है । ठुक विचार कर देखिये कि किसी देश की भाषा में अन्य देशीय भाषा के शब्दादि का मेल बहुधा करके प्रथम बोलचाल की भाषा में ही हुआ करता है न कि किसी मृतप्राय भाषा में और वह विदेशियों के किसी देश में आने जाने, बसने बसाने, रहने सहने, मिलने मिलाने वाणिज्य करने कराने, राज्य के बदलने बदलाने, मत के विगड़ने विगड़ाने आदि कारणों से ही हुआ करता है । तदनन्तर आप नीचे लिखे कारणों को विचार कर देखिये और निर्णय कीजिये कि चन्द्र की हिन्दी में जो फारसी शब्दों के प्रयोग सबन्धी दोष दिये जाते हैं वे वास्तव में यथार्थ हैं अथवा नहीं—

५ पृथ्वीराज रासो के किसी भी समय में आठ या दस भाग में एक भाग के फारसी शब्द नहीं हैं और जब प्रत्येक समय में नहीं हैं तब समय ग्रन्थ में भी न होना स्वतः सिद्ध है ।

यदि किसी को निश्चय करना हो तो इस आदि पर्व से ही गिन कर निश्चय करले । हां ऐसा तो निःसंदेह कह सकते हैं कि उसमें अनेक फारसी शब्द हैं किन्तु बिना गिने ऐसी असत्य संख्या स्थिर नहीं कर सकते हैं ॥

२ गन्यकर्ता ने रूपक ३९ में स्वयम् कहा है कि उसने कुरान की भाषा का भी आश्रय लिया है ॥


३ गंथकर्ता महाकवि चंद्र पंजाब देश के लाहौर नगर में उत्पन्न हुआ था, जहां कि उस के जन्म होने के १०० वर्ष पहिले से ही महमूदी सलतनत का होना और उसका पृथ्वीराज जी के साथ ही साथ नाश होना तबकात नासरी से ही सिद्ध है । फिर क्या कोई विद्वान यह अनुमान कर सकता है कि इस सौ १०० वर्ष के समय में लाहौर नगर की भाषा में कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का नहीं मिल सका था और न चंद्र कवि एक भी फारसी शब्द जानता था और न उसके सुनने में कभी कोई एक भी फारसी शब्द आया था किन्तु वह इस वाक्य “न वदेत यावनी भाषां कंठे प्राण गतैरपि” का ही अनुरूप था ? क्या महमूदी सलतनत के राज्य समय में कोई एक भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था, न कोई मसजिद बनी थी, न कोई नगर आदि मुसलमानी नाम से बसे थे ? ।

४ क्या पृथ्वीराजजी के राज्य की और महमूदी सलतनत की परस्पर सीमा नहीं मिली हुई थी ? क्या इन दोनों राज्यों के दूत एक दूसरे के राज्य में आते जाते और नहीं रहते थे ? यदि परस्पर लिखा पढ़ी का काम पड़ा था तो क्या वह शुद्ध वैदिक संस्कृत भाषा में लिखा पढ़ी हुई थी और क्या महमूदी सलतनत वाले भी संस्कृतादि मृतःप्राय भाषाओं में ही अपना राज का काम चलाते थे ?

५ क्या हसन निजामी आदि से हम को यह ज्ञात होता है कि पृथ्वीराजजी के राज्य समय में उनकी सेवा में अथवा उनके राज्य में न तो कोई फारसी जानने वाला था न कोई सुलतान की और से कभी कुछ संदेश लेकर पृथ्वीराजजी के पास गया, न कोई मुसलमान सिपाही था, न कोई मुसलमान सौदागर था, न कोई मुसलमान यात्री वहां आया था, न कोई मुसलमान उनके आधीन देश में रहता था, मानो पृथ्वीराजजी के राज्य समय की हिन्दी भाषा को मुसलमानी भाषा की किंचित् वायु ही नहीं लगी थी ? क्या चित्ररेखा नाम की सुलतान शहाबुद्दीन गोरी की एक परम प्रिया पासवान को हसन नामक व्यक्ति का उडा लाना तबकातनासरी से कुछ भी सिद्ध नहीं होता और क्या यही सुभगा पृथ्वीराजजी की शरणागत में रह कर हमारी हिन्दुओं की बादशाहत को समूलनाश को प्राप्त कराने वालों में नहीं हुई है ?

६ क्या सुलतान शहाबुद्दीन गोरी ने कई बेर पृथ्वीराजजी और लाहौर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाईया नहीं की थीं ? क्या इन अवसरों में भी जो फारसी शब्द बन्द ने प्रयोग किये हैं वे चंद्र और पृथ्वीराजजी की सेना के सुनने और समझने में कभी नहीं आये थे और न उनमें का कोई एक शब्द भी उनकी भाषा में मिल गया था ? क्या जब शहाबुद्दीन ने लाहौर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाईयां कीं तब लाहौर वालों ने पृथ्वीराजजी से कुछ मंत्रणा नहीं की थी और न उनकी कुछ सहायता ली थी ?

७ क्या मसूद ने हासी पर चढ़ाई नहीं की थी ? क्या वह लाहौर के एक घाईसराय (Viceroy) के साथ बनारस तक नहीं आया था और न उसने उस शिवपुरी को लूटा था क्या इस समय में भी कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का हमारी हिन्दी भाषा में नहीं मिला था ?

- ८ क्या महमूद गजनवी की १६ वा १७ चढ़ाइयां (सन् ९९६ से १०३० तक) हमारे देश की भाषाओं में कोई एक भी मुसलमानी शब्द नहीं मिला सकी थीं ? क्या हमारे गुजराती बन्धुओं को महमूद गजनवी के निज मुख के "बुत्शिकिन्" और "बुत्फरोश" शब्द मोमनाथ के नाश के दिन से आज तक नहीं याद रहे हैं ? क्या गुजरात के नागर ब्रह्मणों में से जिन्होंने अपने देश की संरक्षा के लिये पुष्टार्थ किया और मुसलमानी बादशाहों की सेवा करना अंगीकार किया उनका नाम "सिपाही नागर" नहीं पड़ा है ? क्या महमूद के समय में कोई भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था ? क्या मथुरापुरी में उसके लर में अनेक हिन्दू गुलाम दौ दौ रूपों पर नहीं बिके थे ? क्या उसकी एक लाख सवार और बीस हजार पैदल फौज के साथ हमारे स्वदेशी व्यापारियों की बोलचाल देववाणी में होती थी और कोई एक भी मुसलमानी शब्द उसकी फौज हमारे देश के अनेक नगरों में अपने पीछे अपने स्मारकचिन्ह की भांति नहीं छोड़ गई थी ? क्या महमूदबाद नामक कोई भी नगर महमूद का बसाया हुआ हमारे देश में नहीं है ?
- ९ क्या अब्दुल्असी ने सन् ६३६ ई० के लगभग बंबई के समीप के थाना पर चढ़ाई नहीं की थी ? क्या इराक के परम प्रसिद्ध जालिम गवरनर हज्जाज के समय में राजा दाहिर से सिंध विजय नहीं किया गया था ? क्या फिर सन् ७१२ ई० में महम्मद कासिम ने सिंध पर चढ़ाई करके सिन्ध को नष्ट भ्रष्ट और लूट खसोट नहीं किया था और राजा दाहिर को नहीं मारडाला था ? क्या राजा दाहिर का लड़का जयसिंह इस समय कितनेक और छोटे मोटे सिन्ध के राजा और सरदारों सहित मुसलमान नहीं होगया था और क्या तब से ही मुसलमानी धर्म का आज तक सिन्ध में बराबर चला आना ऐतिहासिक शोध नहीं सिद्ध करते हैं ? क्या सिन्धी मुसलमान पृथ्वीराजजी के पीछे हुए हैं ? क्या इस दशा में कोई एक भी अरबी शब्द हमारी देश भाषाओं में उस समय नहीं मिला है ?
- १० क्या ऐतिहासिक शोध हमको यह नहीं विदित करते हैं कि पारसी लोग सैसेनियन वंश की अवनति के समय फारस से भागकर हमारे देश के बंबई नगर के आस पास आकर बसे हैं ? क्या इन लोगों ने अपनी मातृभाषा का कोई एक शब्द भी पृथ्वी-राज जी के समय तक हमारी देश भाषा में नहीं मिलाया था ? क्या उनको हमारे देश के लोग पारसी के बदले कोई अन्य वैदिक शब्द से पुकारते थे ?
- ११ क्या गुजराती भाषा में फारसी शब्दों के मिलने का शोध स० १३५६ तक शास्त्री व्रजनाल कालिदासजी के रचित गुजराती भाषा के इतिहास नामक ग्रन्थ से पहुंचना नहीं विदित होता है ? जो इसी तरह हमको देशभाषा के प्राचीन ग्रन्थादि बराबर मिलते जाय तो क्या हम सातवीं सदी तक कोई एक भी मुसलमानी शब्द अपनी देशभाषाओं में मिला हुआ नहीं शोध सकते हैं ?
- १२ क्या पुरातत्त्ववेत्ताओं ने यह शोध लिया है कि हिन्दी भाषा का अग्रक समय में प्रागट्य हुआ है ? क्या बारहवें शतक के पहिले और उसके एक दौ शतक पीछे के कोई पुस्तक ताग्र-पत्र प्रशस्ती पट्टे परवाने  के अनुमान ^{हैं} ~~कर~~ ^{हैं} कि जिनसे हम यह कह सकें कि बारहवें शतक के पहिले अथवा उसके कुछ पीछे के समय तक भी मुसलमानी भाषा के शब्द हिन्दी में नहीं मिले थे ? क्या अब तक के प्राप्त हुए पुरातत्व संस्कृतादि गृतप्राय भाषाओं में नहीं हैं और उनकी अपेक्षा से हिन्दी भाषा के विषय में कल्पना करना बहुत ही आश्चर्य दायक और अयोग्य नहीं है ?

- १३ क्या संस्कृत भाषा के उन ग्रंथों में, जिनको पुरातत्त्ववेत्ता बारहवें शतक के पहिले के बने हुए मानते हैं, ऐसे ऐसे शब्द हमको प्राप्त नहीं होते हैं कि उन नाम के देश और मनुष्य यूरोप आदि अन्य खंडों में आज भी विद्यमान हैं? क्या विक्रमादित्यजी की "शाकारि" पदवी साधु संस्कृत भाषा की है? क्या रावल समरसीजी की आजू की प्रशस्ति के ४५ वें श्लोक में 'तुष्क' शब्द नहीं प्रयोग हुआ है? क्या व्याकरण महाभाष्य से बहुत सी धातुओं का प्रयोग द्वीपान्तरेण में होना विदित नहीं होता है? क्या महाभारत में पांडवों का यावनी भाषा में बात करना नहीं लिखा मिलता है?
- १४ क्या वर्तमान समय के अच्छी हिन्दी लिखनेवालों में से कोई किसी विद्वत् मंडली में खड़ा होकर यह कह सकता है कि चिट्ठी पत्री से लेकर ग्रन्थ तक जो कुछ उसने आज तक हिन्दी भाषा में लिखा है उन सबकी हिन्दी एक सी ही है अर्थात् उसके अनेक लेखों में से ऐसे ऐसे उदाहरण बिलकुल नहीं मिल सकेंगे कि उनके किसी लेख में तो एक भी फारसी शब्द नहीं आया होगा और किसी में अनेक फारसी शब्द प्रयोग हुए होंगे? यदि पृथ्वीराज रासो की भाँति एक हजार वर्ष के पीछे कोई ऐसे हमारे स्वदेशीय बन्धु को ऐसे लेखों को हाथ में लेकर वाद विवाद करें तो क्या दोनों पक्षकारों को प्रत्येक के अनुकूल तर्क नहीं मिल सकेंगे? जब आज ही हम लोगो की यह दशा है कि कभी कैसी हिन्दी लिखते हैं और कभी कैसी तो फिर प्राचीन समय के ग्रंथकर्त्ताओं में से जिसने यह स्पष्ट कह दिया है कि मैं कुरान की भाषा को भी प्रयोग में लेता हूँ उसको हम क्योंकर दोष दे सकते हैं? क्या हम अनुमान नहीं कर सकते कि प्राचीन ग्रंथकारों में से जिसने जैसी हिन्दी चाही उसने वैसी ही लिखी है?
- १५ क्या आज कल के विद्यमान देशी राजस्थानों में आस्मात्त समय से अब तक मुसलमान बादशाह सिपहसालार, सरदार, सौदागर, मौलवी, मुल्ला और काजी आदि के नाम अपनी देशभाषा हिन्दी और मृतप्राय भाषा सस्कृतादि के होते हुए भी फारसी अक्षरों और उसी भाषा में चिट्ठी पत्री और फ़रमान खरीते आदि के लिखे जाने का प्रचार नहीं प्रचलित है? क्या आज के एक-दुकी अंग्रेजी राज्य शासन समय में भी राजपुताने के अंतरगत राज्यों से श्रीमान् वाइसराय और गवर्नरजनरल साहब बहादुर के नाम उभय को विदेशी फ़ारसी भाषा और लिपि में खरीते नहीं लिखे जाते हैं? बहुत समय के व्यतीत होजाने पर जब कि वर्तमान समय के वृत्त पुरातत्त्व संज्ञा से माने जावेंगे और वे ऐसे ही आलभ्य होंगे जैसे कि आज पृथ्वीराजजी के समय के हैं तब फिर क्या उस समय के विद्वानों का वैसे ही तर्कों से कि जैसा से आज हम लोग रासो में दोष देते हैं इन देशी राज्यों की इन फ़ारसी लिपि और भाषा में गवर्मण्ट हिन्द के नाम लिखे हुए खरीते को भी जाली समझना यथार्थ होगा? क्या यह व्यवहार भी वर्तमान समय में देशी राजस्थानों में प्रचलित नहीं है कि जब गवर्मण्ट हिन्द के नाम खरीता लिखने का काम पडता है तब फ़ारसी भाषा के विद्वानों को घेर घार कर, फारसी कोषों में शब्दों को टूट ठाँठ कर, और एकान्त में बैठ बाठ कर, कई दिनों तक अति परिश्रम कर के वे नहीं लिखे जाते हैं; उसी तरह जब किसी मन्त्रिपर चढ़ाई का काम पडता है तब वैसेही देशी और विदेशी पंडितों को चाहे वे अनुकी, अन्नासहायता नीयणी नहो घेर घार कर संस्कृत भाषा में प्रशस्तिया नहीं लिखाई जाती है और जब किसी राजा की विरदावली का कोई कवित्त बनवाने का काम पडता है तब पठ भाषाओं की भाषा से विगड कर बनी हुई डिगल भाषा में काव्य नहीं रचवाया जाता है और जब लाठ साहब की पधरावनी का उत्सव किया जाता

है तब उसमें Address अर्थात् अभिवादन अंग्रेजी भाषा में नहीं दिया जाता है ? क्या ये सब भाषण आज प्रचलित हैं और क्या आज मुसलमानों की बादशाहत है ? क्या जो आज हम महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के राज्यशासन समय के सर्व प्रकार के सब राजकीय लेख एकत्र करके देखें तो वे सब एकही भाषा में हमको लिखे मिलेंगे ? क्योंकि क्या सब राजा साहबों के स्वर्गवास होने पर राज की मोहर, छाप और स्टाम्प और सिक्के आदि में उसी दिन नवीन राजा साहब का नाम पलट करके वैसेही हुकम जारी हो जाते हैं कि जैसे आज अंग्रेजी राज्य में होते हैं कि जिस राजकीय व्यवहार के संस्कार से विद्यमान पुरातत्ववेत्ता उपलब्ध पुरातत्वों को जांचा करते हैं ? क्या मेवाड़ राज्य में महाराणाजी श्री शंभूसिंहजी के नाम का स्टाम्प आज तक नहीं जारी है ? क्या महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के नाम की छाप वर्तमान महाराणाजी साहब के राज्य शासन समय में कई वर्षों तक नहीं जारी रही है ? क्या ऐसे स्टाम्प पर लिखी हुई दस्तावेजें और ऐसी छाप लगे पत्र बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जाली समझे जायेंगे और जिन जिन के पास ये राजकीय लेखादि उस समय में मिलेंगे वे सब जाल के अपराधी समझे जाकर फासी लगाये और कालेपानी भेजे जावेंगे ?

साराश हमारे निवेदन करने का यह है कि हिन्दी भाषा में अन्य देशीय भाषाओं के शब्दादि के मिलने का प्रश्न बड़ाही सूक्ष्म और कठिन है और जो हमारी तरह विद्वान लोग यह मान लें कि जब जिस अन्य देशीय का आना हमारे भरतखंड में हुआ तब ही से उसकी भाषा के शब्दों का भी मेल होना अति संभवित है तो यह प्रश्न बड़ाही सरल हो जाता है । हमारे सिद्धान्त को माने बिना इस प्रश्न का निर्णय करना बहुत दुस्तर है क्योंकि जो चंद्र कवि के पहिले अथवा उसके समय के भी हिन्दी भाषा के पुस्तकादि मिल जायें और उनमें मुसलमानी भाषाओं के शब्द न भी मिलें तो भी हम सुख से यह अनुमान कर सकते हैं कि उनके रचनेवाला ने उनको जानकर प्रयोग नहीं किया और चंद्र ने रूपक ३९ की प्रतिज्ञा पूर्वक उनका प्रयोग किया है जैसे कि वर्तमान समय में भी हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान अनेक प्रकार की हिन्दी लिखते हैं ॥

कविराजजी ने इस महाकाव्य की भाषा के प्रसंग में जैसे मुसलमानी शब्दों के प्रयोग होने का दोष दिया है वैसे ही उन्होंने इन सूक्त । चावदिसि । भारत्य । पारत्य । सारत्य । और चूक शब्दों को भी राजपुताने की कविता के ही शब्द होना समझकर इस महाकाव्य का मेवाड़ राज्य में जाली बनना भी अनुमान किया है । तथा इस यथ में बहुत से शब्द अनुस्वार सहित प्रयोग हुए हैं उनके विषय में भी उन्होंने महाकवि चंद्र पर आरोप करके यह कहा है कि “ अनुस्वार लगाने से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि वह संस्कृत कुछ भी नहीं जानता या क्योंकि उसको बिन्दु विसर्ग का भी ठीक ज्ञान न था ” परन्तु हमारी तुच्छ सम्मति में महामहोपाध्याय कविराज श्री श्यामलदासजी महाशय का यह सब कहना बिल्कुल ही असत्य और निर्मूल है । अथ जो प्रमाण हमारे इस कहने को समर्थन करने को हम आगे दिखावेंगे उनसे यह भी स्पष्ट सिद्ध होगा कि जिन जिन यथों से हमने उनको उद्धृत किया है वे कविराजजी के पुस्तकों में नहीं पाये जायेंगे, वे ऐसे अत्यन्त अनुमान रुदापि नहीं करते—

१ पद्यपि सूक्त शब्द क
अपनी लिखित प्रथम संस्कृत
अथै वासुं सूक्त चड आयौ-तवै वो स.

संस्कृत । अथै । वासुं । सूक्त । चड । आयौ-तवै । वो स ।

- १३ क्या संस्कृत भाषा के उन ग्रंथों में, जिनको पुरातत्त्ववेत्ता चारहवें शतक के पहिले के बने हुए मानते हैं, ऐसे ऐसे शब्द हमको प्राप्त नहीं होते हैं कि उन नाम के देश और मनुष्य यूरोप आदि अन्य खंडों में आज भी विद्यमान है? क्या विक्रमादित्यजी की "शाकारि" पदवी साधु संस्कृत भाषा की है? क्या रावल समरसीजी की आजू की प्रशस्ति के ४५ वें श्लोक में "तुरुष्क" शब्द नहीं प्रयोग हुआ है? क्या व्याकरण महाभाष्य से बहुत सी धातुओं का प्रयोग द्वीपान्तरों में होना विदित नहीं होता है? क्या महाभारत में पांडवों का यावनी भाषा में बात करना नहीं लिखा मिलता है?
- १४ क्या वर्तमान समय के अच्छी हिन्दी लिखनेवालों में से कोई किसी विद्वत् मंडली में खड़ा होकर यह कह सकता है कि चिट्ठी पत्री से लेकर ग्रन्थ तक जो कुछ उसने आज तक हिन्दी भाषा में लिखा है उन सबकी हिन्दी एक सी ही है अर्थात् उनके अनेक लेखों में से ऐसे ऐसे उदाहरण बिलकुल नहीं मिल सकेंगे कि उनके किसी लेख में तो एक भी फारसी शब्द नहीं आया होगा और किसी में अनेक फारसी शब्द प्रयोग हुए होंगे? यदि पृथ्वीराज रासो की भांति एक हजार वर्ष के पीछे कोई ऐसे हमारे स्वदेशीय बन्धु को ऐसे लेखों को हाथ में लेकर वाद विवाद करें तो क्या दोनों पक्षकारों को प्रत्येक के अनुकूल तर्क नहीं मिल सकेंगे? जब आज ही हम लोगों की यह दशा है कि कभी कौसी हिन्दी लिखते हैं और कभी कौसी तो फिर प्राचीन समय के ग्रंथकर्त्ताओं में से जिसने यह स्पष्ट कह दिया है कि मैं कुरान की भाषा को भी प्रयोग में लेता हूँ उसको हम क्योंकर दोष दे सकते हैं? क्या हम अनुमान नहीं कर सकते कि प्राचीन ग्रंथकारों में से जिसने जैसी हिन्दी चाही उसने वैसी ही लिखी है?
- १५ क्या आज कल के विद्यमान देशी राजस्थानों में अस्मार्त्त समय से अब तक मुसलमान बादशाह सिपहसालार, सरदार, सौदागर, मौलवी, मुल्ला और काजी आदि के नाम अपनी देशभाषा हिन्दी और मृतप्राय भाषा सस्कृतादि के होते हुए भी फारसी अक्षरों और उसी भाषा में चिट्ठी पत्री और फ़रमान खरीते आदि के लिखे जाने का प्रचार नहीं प्रचलित है? क्या आज के एक-डंकी, अंग्रेजी राज्य शासन समय में भी राजपुताने के अतरगत राज्यों से श्रीमान् वाइसराय और गवर्नरजनरैल साहब बहादुर के नाम उभय को विदेशी फ़ारसी भाषा और लिपि में खरीते नहीं लिखे जाते हैं? बहुत समय के व्यतीत होजाने पर जब कि वर्तमान समय के वृत्त पुरातत्त्व संज्ञा से माने जावेंगे और वे ऐसे ही अलभ्य होंगे जैसे कि आज पृथ्वीराजजी के समय के हैं तब फिर क्या उस समय के विद्वानों का वैसे ही तर्कों से कि जैसा से आज हम लोग रासो में दोष देते हैं इन देशी राज्यों की इन फ़ारसी लिपि और भाषा में गवर्मैण्ट हिन्द के नाम लिखे हुए खरीतों को भी जाली समझना यथार्थ होगा? क्या यह व्यवहार भी वर्तमान समय में देशी राजस्थानों में प्रचलित नहीं है कि जब गवर्मैण्ट हिन्द के नाम खरीता लिखने का काम पड़ता है तब फ़ारसी भाषा के विद्वानों को घेर घार कर, फ़ारसी कोषों में शब्दों को ढूँढ ढाँढ कर, और एकान्त में बैठ बाठ कर, कई दिनों तक त्रुति परिश्रम कर के वे नहीं लिखे जाते हैं; उसी तरह जब किसी मंदि पर पढ़ाई का काम पड़ता है तब वैसेही देशी और विदेशी पंडितों को चाहे वे उन्की क्कनासहायता नी पत्री नेहो घेर घार कर संस्कृत भाषा में प्रशस्तियां नहीं लिखाई जाती है और जब किसी राजा की विरदावली का कोई कवित्त बनवाने का काम पड़ता है तब पठ भाषाओं की भाषा से विगड़ कर बनी हुई डिंगल भाषा में काव्य नहीं रचवाया जाता है और जब लाट साहब की पधरावनी का उत्सव किया जाता

है तब उसमें Address अर्थात् अभिवादन अंग्रेजी भाषा में नहीं दिया जाना है ? क्या वे सब भाषण आज प्रचलित हैं और क्या आज मुसलमानों की वादशाहत है ? क्या जो आज २२ महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के राज्यशासन समय के सर्व प्रकार के सब राजकीय पत्र-पत्र हकूम करके देखें तो वे सब एकही भाषा में हमको लिखे मिलेंगे ? क्योंकि क्या सब राज-साहबों के स्वर्गवास होने पर राज की मोहर, छाप और स्टाम्प और सिक्के आदि में उनी नवीन राजा साहब का नाम पलट करके वैसेही हुकूम जारी हो जाते हैं कि जैसे अंग्रेज अंग्रेजी राज्य में होते हैं कि जिस राजकीय व्यवहार के संस्कार से विद्यमान पुरातत्त्ववेत्ता उपलब्ध पुरातत्त्वों को जांचा करते हैं ? क्या मेवाड़ राज्य में महाराणाजी श्री शंभूसिंहजी के नाम का स्टाम्प आज तक नहीं जारी है ? क्या महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के नाम का छाप वर्तमान महाराणाजी साहब के राज्य शासन समय में कई वर्षों तक नहीं जारी रही है ? क्या ऐसे स्टाम्प पर लिखी हुई दस्तावेजें और ऐसी छाप लगे पत्र बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जाली समझे जायेंगे और जिन जिन के पास ये राजकीय लेखादि उस समय में मिलेंगे वे सब जाल के अपराधी समझे जाकर फांसी लगाये और कालेपानी भेजे जावेंगे ?

सारांश हमारे निवेदन करने का यह है कि हिन्दी भाषा में अन्य देशीय भाषाओं के शब्दादि के मिलने का प्रश्न बड़ाही सूक्ष्म और कठिन है और जो हमारी तरह विद्वान लोग यह मान लें कि जब जिस अन्य देशीय का आना हमारे भारतखंड में हुआ तब ही से उसकी भाषा के शब्दों का भी मेल होना अति संभवित है तो यह प्रश्न बड़ाही सरल हो जाता है । हमारे सिद्धान्त को माने बिना इस प्रश्न का निर्णय करना बहुत दुस्तर है क्योंकि जो चंद्र कवि के पहिले अथवा उसके समय के भी हिन्दी भाषा के पुस्तकादि मिल जायें और उनमें मुसलमानी भाषाओं के शब्द न भी मिलें तो भी हम सुख से यह अनुमान कर सकते हैं कि उनके रचनेवाले ने उनको जानकर प्रयोग नहीं किया और चंद्र ने रूपक ३९ की प्रतिज्ञा पूर्वक उनका प्रयोग किया है जैसे कि वर्तमान समय में भी हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान अनेक प्रकार की हिन्दी लिखते हैं ॥

कविराजजी ने इस महाकाव्य की भाषा के प्रसंग में जैसे मुसलमानी शब्दों के प्रयोग होने का दोष दिया है वैसे ही उन्होंने इन सूक्त । चावहिसि । भारत्य । पारत्य । सारत्य । और चूक शब्दों को भी राजपुताने की कविता के ही शब्द होना समझकर इस महाकाव्य का मेवाड़ राज्य में जाली बनना भी अनुमान किया है । तथा इस ग्रंथ में बहुत से शब्द अनुस्वार सहित प्रयोग हुए हैं उनके विषय में भी उन्होंने महाकवि चंद्र पर आपत्ति करके यह कहा है कि " अनुस्वार लगाने से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि वह संस्कृत कुछ भी नहीं जानता था जो उसको बिन्दु विसर्ग का भी ठीक ज्ञान न था " परन्तु हमारी तुच्छ सम्मति में महामहोपाध्याय कविराजजी श्री श्यामलदासजी महाशय का यह सब कहना विलकुल ही असत्य और गलत है । अब जो प्रमाण हमारे इस कहने को समर्थन करने को हम आगे दिखावेंगे उनसे यह भी स्पष्ट सिद्ध होगा कि जिन जिन ग्रंथों से हमने उनको उद्धृत किया है वे कविराजजी के पढ़ने में आये हैं ।

चार नित्त हैं—तथापि एक यह दोहा भी हम कविवचनसुधा से उद्धृत करके प्रमाण में प्रवेश करते हैं—“सत्त सुबचन कवीर के, वित्त देय सुन लेहु ॥ अरु नानक गुरु के वचन, सत्त मत्त करि गेहु” ॥ तथा खालशाकृत विनयपरिचयिका में—“दात्य मोत पाद देख हरे सर्व सत्त लेप मो दीन रख मेख मार भाल मन्द के” यह शब्द ऐसा अप्रसिद्ध नहीं है कि जिसके प्रयोग के विषय में हिन्दी भाषा के विद्वानों को किंचित् भी संदेह हो अतएव हम अधिक उदाहरण नहीं लिखते ॥

२ श्रीमद्वल्लभ संप्रदाय में जो अष्ट-छाप करके प्रसिद्ध हैं उनमें के एक कुंभनदासजी ने “चावद्विसि हरि रूप रम्यो” अपने एक कीर्तन में कहा है ॥

३ इन भारत्य, सारत्य, और पारत्य शब्दों के प्रयोग के विषय में हमने प्रथम संरक्षा में बहुत कुछ कहा ही है परन्तु फिर भी हम एक प्रमाण अष्ट-छापवाले छीत स्वामी के एक कीर्तन में से यह बताते हैं “भारत्य में सारत्य है हरि जू कहाये सारयी” और पंडित कन्हैयालालजी द्वारा छंदप्रदीप नामक ग्रंथ से वैसे ही अन्य शब्दों के प्रयोगों के उदाहरण भी विदित करते हैं यथा—(१) करि गहि भार समथ्य । (२) यश पायो नृप मथ्य । (३) मत्थन नत करि लज्जित दिगज । (४) सुसज्जिय भ्रमगति । (५) उत्थिय समुद्र वट्टिय लहरि । (६) रहि तदत्थकि जियसु अरि(७)लाख दन्वत सब नृपति(८)सिंहवली समरत्य हत्थिवर मत्थविदारन

४ अब शेष चूक शब्द के विषय में भी हमारी लिखित संरक्षा में लिखे के सिवाय हमको यह कहना है कि उसके शब्दार्थ तो वही हैं कि जो डाकुर हार्नेली साहब ने हिन्दी शब्दों की धातुओं के संग्रह में वर्णन किये हैं किन्तु यह शब्द जिस विषय के प्रसंग में प्रयोग होता है वैसेही उसका भावार्थ हो जाता है जैसे कि छल के अर्थ में अष्ट-छापवाले परमानन्ददासजी ने उसका प्रयोग किया “अहो हरि वलि सौं चूक करी” इसी तरह समझ लेना चाहिये कि जब वह छल से मारने के प्रसंग में प्रयोग होता है तब उसका वैसे भावार्थ ग्रहण किया जाता है । राजपुताने के किसी किसी कवि को हमने ऐसा भी कहते हुए सुना है कि यह चूक शब्द राजपुताने की भाषा में ही प्रयोग हुआ मिलता है और हिन्दी भाषा के किसी काव्य में किसी भी अर्थ में यह शब्द प्रयोग नहीं हुआ है परन्तु उनका यह कहना हमारे नीचे लिखे प्रमाणों से विलकुल ही असत्य प्रतीत होता है ॥

वृन्द सतसई ॥

दोहा ॥ पिशुन कल्पो नर सुजन सों, करत विसास न चूक ।

जैसे दाधो दूध को पीवत छाहहि फूंक ॥

मूरख गुन हों हेनहों, तौ न ही चूक ।

कहा भैया के विद्विभौ, तुल्ल दिवाने उलूक ॥

नाथ कवि अथवा वाठ कर, अनाकूजी चौबे कृत ॥

कवित्त ॥ सुखद रसाल को रिसाल तह तापै बैठि, एंठि बोलै बोलै पिक, मधुप दुहू दुहू ॥

कुंज कुंज कारे हैं कुटिल अलि पुंज, गुंज गुंज फूल रस, चुहकै चुहू चुहू ॥

चूक बिन प्यारी कीन्ह मेरो मन, टूक, कूक सुने हूक परे, करत उहू उहू ॥

नाथ दिसि चार अंधियार ही, माहि तातें किल कोकिला, कहत कूहू कूहू ॥

सूरसागर ॥

राग काफ़ी ॥

मैं अपने कुलकानि डरानी । कैसे श्याम अचानक आये मैं सेवा नहीं जानी ॥
 बहै चूक जिय जानि सखी सुनि मन लै गये चुराई । तनतैं जात नहीं मैं जान्यौ लियो श्याम अपनाई ॥
 ऐसे ठगत फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध । सूर श्याम मन देखि न मेरो पुनि करिहो अनुराध ॥
राग विहागरो ॥ कहा करो गुरजन डर मान्यो ।

आये श्याम कौन हित करि कैं मैं अपराधिनि कहु नहिं जान्यो ॥
 ठाढ़े श्याम रहे मेरे आंगन तब तैं मन उन हाथ विकान्यो ।
 चूक परी मोकों सबही अंग कहा करौ गई भूलि सयान्यो ॥
 वे उनही को नए हरष मन मेरी करनी समुझि आयान्यो ।
 सूर श्याम संगम उठि लाग्यौ मो पर वारं वार रिसान्यो ॥ ३७ ॥
 बीच कियो कुल लज्जा आई ।
 सुन नागरी बकस यह मोकों सनमुख आये धाई ॥
 चूक परी हरि तैं में जानी मन लै गये चुराई ।
 ठाढ़े रहे सकुच तो आगे राखा बदन दुराई ॥
 तुम हो बड़े महर की बेटी काहे गई भुलाई ।
 सूर श्याम हैं चोर तुम्हारे छाड़ि देहु डरपाई ॥ २० ॥

कवि ललूलाल कृत ॥

दोहा ॥ धरम राज सौं चूक करि । दुरजोधन लै लीन्ह ॥
 राज पाट अरु बित्त सब । बनोबास दै दीन्ह ॥
 करी चूक प्रहलाद पै । हिरन असुर परचंड ॥
 हरि सहाय हित अवतरे । असुरन किये विखंड ॥

रामायण ॥

समहु चूक अनजानत केरी । चाहिये विप्र उर कृपा घनेरी ॥

स्त्रियें गाया करती हैं ॥

मेरा भया चुकान हियारी । कार करत मैं वर घर चूकूं
 फुंका जात सई जीया री ॥

कवीर ॥

काशी का मैं वासी कहिये, करम दशा का हीना ।
 राम भजन में चूक पड़ी, तब पकर जुलाहा कौना ॥

कहावत ॥

आहार चूके वह गये व्योहार चूके वह गये ।
 दरबार चूके वह गये सुतराल चूके वह गये ॥

चूरनवाले ॥

है चूरन खटा चूक । जिस में नित्त लगेगी भूक ॥

५ हम अनुस्वार सहित शब्दों के प्रयोग के विषय में जो ऊपर कह आये हैं उसके नीचे लिखे उदाहरणों को अवलोकन करने से आशा है कि हमारे पाठको पूर्ण सतोष हो जायगा—

सूरसागर ॥

राग भैरवी ॥ भजि श्री विठ्ठल चरण सरोजं । नन्वमणि दीधिति दमित मनोजं ॥
 इच्छसि यदि सततं सुख सारं । त्यजसि न किमिति विषय धृतभारं ॥
 यदि वांछसि हरि भक्ति सुरत्नं । कुरु चपलं शरणगत यत्नं ॥
 प्राप्य सुदुर्लभ नर वर देहं । परिहर सकल निगम संदेहं ॥
 मानय हृदय भयोदित वचनं । तदथा सिनो चेदतिशय पचनं ॥
 घत्सपदं भावय भव जलधिं । अत समै भवधिन ववधिं ॥
 नाथ तबाह मतीरण रावं । पूरय सततमिमं मयि भावं ॥
 तब गुण गण कथिता मृत गाथे । प्रार्थ्यमिदं दिश तव रघुनाथे ॥

रामायण ॥

छंद ॥ दै भक्ति रमा निवास त्रास हरण शरण सुखदायकं ॥
 सुप्रधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥ १०४ ॥
 सुर वृंद राजत वृंद भंजन मनुज तनु अतुलित वलं ॥
 ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं ॥ १०५ ॥

तोटक छंद ॥ गुण ज्ञान निधान अमान मजं । निति राम नमामि विभुं विरजं ॥
 भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । पल वृंद निकंद महाकुशलं ॥ १०६ ॥
 बिनु कारण दीन दयालु हितं । छवि धाम नमामि रमा सहितं ॥
 भव तारण कारण कार्य परं । मनसं भव दारुण दोष हरं ॥ १०७ ॥
 शर चाप मनोहर तूणि धरं । जलजासण लोचन भूप वरं ॥
 सुप्र मंदिर सुंदर श्रीरमणं । मद मार महा ममता शमनं ॥ १०८ ॥

खालशा कृत विनयपत्रिका ॥

भैरवी ॥ रे मन सन्त चरण धरु माथं ।

जिस वासर जिनके जग नायक वास करत हैं साथं ॥ १ ॥

तिन को छोड विश्व में भटकै वेश्या को करि नाथं ।

भक्ति सहित सेवा तुम करते वह भारत है साथं ॥ २ ॥

तत्रापी कछु लाज न आवत मलत चरण धरि हाथं ॥

सिंह मदन गोपाल साधु पद गहु अघहर सम पाथं ॥ ३ ॥

गोस्वामी श्री लक्ष्मीनाथजी परमहंस कृत पदावली ॥

नमो नमो गीता हरि वंशं । सुर नर मुनि सज्जन अवतंशं ॥
 क्रोमल पद उपनिष श्रुति अंसं । हरि मुप कथित सन्त हिय हंसं ॥
 विमल व्यास भाषित गन संशं । देव दनुज मानव अहि वंशं ॥
 भक्ति विराग ज्ञान परगाशं । काम क्रोध मद मोह विनाशं ॥
 सकल शास्त्र सम्मत निति शोशं । अर्थ धर्म सुख दायक हंसं ॥
 सुचि सागर तीरथ फल देशं । कलिमल तिमिर प्रकास दिनेशं ॥
 गुण अनन्त कहि गावत सेशं । चतुरानन गण देव महेशं ॥
 सुनत सकल मन होत हुलाशं । लक्ष्मीपति अति पाप विनाशं ॥ १ ॥

नरहरदास कृत अवतार चरित्र ॥

भुजंगी । सुगन्धं विगन्धं न अस्तूति गारी । विभेदं न सत्रं न मित्रं विचारी ॥
 न महिमा न माया न मदं न मोहं । न रंग विरंगं न दाया न द्रोहं ॥
 न सीतं न तापं न संग कुसंगं । न भावं न भिष्यान अंगं अनंगं ॥
 सुखं भूमि सज्या न डासं न वास । ग्रहे वाहं अनै ततौ पंच ग्रासं ॥
 समं विष्वहं भूमि पथं सहज्जं । वसन्नं दिगं वीत रागं विलज्जं ॥
 विमोहं विदेहं न इन्द्री विकारं । अधानै रहे निति वातं अहारं ।
 विलेपं न श्रीषंड आगी विचारं । धरी पुष्प माला गलै विष्य धारं ॥
 प्रकासी जु निदा महा मोद पावै । हसे तान दे आप औरै हसावे ॥
 अलेपं अछेपं रहै अप्रकासं । निरापेत्त निर्वेध नगनं निरासं ॥
 अनाजून अवधून माया अतीतं । अमोहं अछोहं अद्रोहं अभीतं ॥
 अनामं अकामं अठामं अजेयं । अनाधार आकार महिमा अमेयं ॥
 पशू वृत्ति लीनै भवै पान पानी । विचारं प्रचारं विहारं विमानो ॥

यह महाकाव्य आज तक महाकवि चद का बारहवीं शताब्दी का रचा हुआ एक बड़ा प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थ है हमारे स्वदेश में प्राचीन काल से चला आता है

अक्रित्रिमता

और उसकी यथार्थता में आज तक क्या तौ स्वदेशी और क्या किसी विदेशी विद्वान को कोई वैसी शका नहीं हुई है कि जैसी हमारे परम प्रिय मित्र महामहोपाध्याय कविराजजी श्री श्यामलदासजी को बैठे बैठे हो गई है । यद्यपि हम इस महाकाव्य को अभी तक अनुकूल दृष्टि से ही देखते हैं किन्तु उसी के साथ हम उसकी परीक्षा करने में प्रतिकूल दृष्टि देकर उसके गुण-दोषों को भी देखते जाते हैं और जब हमको उसमें कोई दोष देने जैसी बात नहीं मिलती तब उसी स्थान पर हम अपनी टिप्पण में अपना अभिप्राय लिख प्रकाश करते हैं । हमारे पाठकों को यह भले प्रकार समझ रखना चाहिये कि जिस दिन जिस स्थान में जो कुछ हमको क्रित्रिम दीयेगा उसे हम उतनेही बल पूर्वक दोष देकर प्रकाश कर देंगे कि जैसे हम गुणों को प्रकाश करते हैं और जो कोई बात हमको उसमें दोष देने जैसी मिलेगी ही नहीं तौ फिर हम अशक्त हैं । इस महाकाव्य को क्रित्रिम अनुमान करने में जितने हेतु दिये गये हैं उनमें से प्रत्येक के विषय में हम निम्न लिखित कुछ निवेदन करते हैं-

- १ इस महाकाव्य में जो सबत लिखे हुए हैं वह मुसलमानी तवारीखों में लिखे और सबत शोध हुए संवत्तों से नहीं मिलते और उनमें ८० वा ८१ वर्ष का अन्तर पड़ता है अतएव इस बात का निर्णय करने को हमारी टिप्पण १६८ और ३५५ । ५३ वादी पठें कि उनके पठने और पक्षपात रहित मनन करने से हम आशा करते हैं कि वादी की सबत के अन्तर विषयिक शंका निवारण हो जायगी ॥
- २ इस ग्रंथ में मुसलमानी भाषादि के शब्द प्रयोग हुए दृष्टि आते हैं उनके विषय का समाधान हमारी इसी उपसंहारिणी टिप्पण का भाषा सञ्चयी चौथा लेख-पत्र अवलोकन करने से भले प्रकार हो सकता है ॥
- ३ अब तक पृथ्वीराजजी के समकालीनों में से केवल रावल समरसीजी को ही आक्षेप करने वाले ने उदाहरण में ग्रहण किया है कि उसके विषय में केवल आबू और चित्तौड़ की पाच चार प्रशस्तियों से ही सशय—करनेवाले को सशय होता है अर्थात् सशय का आधार उन ही प्रशस्तियों पर है । यदि उन प्रशस्तियों के सबतों को विद्वान लोग भले प्रकार परीक्षा करके यह निश्चय कर लें कि वे रावल समरसीजी के ही समय की हैं और उनके सबत अमुक प्रकार के हैं और हमको पृथ्वीराजजी समरसीजी और पृथ्वीराजजी के जो पखाने प्राप्त हुए हैं उनके सबतों को भी उसी प्रकार जांच देवे तो फिर रावल समरसीजी के समकालीन होने में कुछ भगडा ही न रहेगा क्योंकि भगडा तभी तक रहता है कि जब तक किसी विद्वान को किसी प्रकार का पक्षपात होता है और वह दर्पण लेकर मुप दिखते हुए भी नहीं दूर होता है । जहां तक हमने रावल समरसीजी के विषय में शोध किया है वहां तक हमको इस बात में कुछ संदेह नहीं है कि वे पृथ्वीराजजी के बहनेऊ और समकालीन थे । आबू और चित्तौड़ की प्रशस्तियों के सबतों को समझ लेने के लिये एक चोज की बात हमने अपनी टिप्पण ३५५ । ५६ में अति संक्षिप्त रूप से कही है । इसके अतिरिक्त हम एक बड़ी अद्भुत बात पर विद्वानों का ध्यान दिलाते हैं कि कविराजजी ने इस महाकाव्य के सबत १६४० से १६७७ के भीतर जाली बनने के सिद्ध करने में नीचे लिखे प्रमाण कहे हैं —

“इस किताब में मेवाड़ के राजाओं की बहुत सी प्रशंसा रावल समरसिंहजा के नाम से की है और एक स्थान में उनको आशीस देने में ये शब्द लिखे हैं—

- (१) कलकियां राय केदार ॥
- (२) पापियां राय प्रयाग ॥
- (३) हत्यारां राय खणारसी ॥
- (४) मखवान राय राजान री गंग ॥
- (५) सुलतान ग्रहण मोरवन ॥
- (६) सुलतान मान मलन ॥

इन पदवियों से मेवाड़ के महाराणा संयाम सिंहजी (सांगा) की ओर संकेत है” — इत्यादि ॥
अब विद्वानों को रासो के उस रूपक को अवलोकन कर के परीक्षा कर समझना चाहिये कि

जिसमें से यह वाक्यखंड उद्धृत किये गये हैं, वह रूपक यह है—

छंद पद्धरी ॥ सामंत सब्ब मनुहार कीन । प्रोहित राम आशीस दीन ॥
हरि सिद्धि दिहु बरदान भट्ट । उच्चर्यौ चद पैये सु थट्ट ॥
दुहु पय्य चवर सिर धरिय छत्र । बरदाइ देत आसी तत्र ॥

उठियो सिंघ बरदाइ देपि । बोलंत बिरद बहु बिधि विसेपि ॥
 चीतोर राज काइम्प कीन । पुम्मान पाठ पग अवल दीन ॥
 मेर गिरि सरिस चितोर मानि । किरनाल तेज बढे पुमान ॥
 जैचंद समह जिन जुहु कीन । मानो कि उरग जनु मैर पीन ॥
 कलंकिया राय केदार राय । कवदेत बिरद मनउमंग चाय ॥
 पापी राय प्राग घड समान । कप्पन दरिद्र करतार जान ॥
 हित्यार राइ कासी अभंग । महुआन राइ गंगा उतंग ॥
 सुरतान मलन बंधन समोप । हिंदून राइ टालन दोप ॥
 उज्जैन राइ बंधन समथ्य । आचार राइ जुजुष्टरह पथ्य ॥
 भीमंगराइ भंजन सुषेत । जस लयौ धवल राजिंद्र जैत ॥
 रिनथभ राय सिर दंड कीन । अब्बुआ राइ गठ लेइ दीन ॥
 उष्याप राइ थापन समथ्य । सोपन सरीर प्रथिराज सथ्य ॥
 दप्यनी साह भंजन अलग । चंदेरि लिहु किय नाम जग ॥ ४१ ॥

हमारे पाठको को इस रूपक का तात्पर्य निकालने के पहिले यह जान लेना अत्यावश्यक है कि वह रासो के **समरसी दिल्ली सहाय** नामक समय में का है। रासो की किसी पुस्तक में तो यह समय पृथक है और किसी में वह बड़ी लड़ाई नामक समय के आदि में ही मिला हुआ है। इस रूपक के अन्तरगत वृत्त का प्रसंग यह है कि रावल समरसीजी अपनी महाराणीजी श्री पृथा-बाईजी सहित अपने साले पृथ्वीराजजी की सहायता करने को चितौड़ से दिल्ली पहुंचे और वहा उनका आदर सम्मान वहां के सब राज-पुरुषों ने करना प्रारंभ किया कि उसी प्रसंग में महाकवि चंद बरदाई ने भी वैसे ही रावलजी को आशीस दी कि जैसे वर्तमान काल में प्रत्येक देशी राजस्थानों में चारण और राव आदि स्तुति पाठक दिया करते है। रावलजी श्रीसमरसीजी में जो जो मुख्य गुण थे और उन्होंने जो जो बड़े बड़े काम अर्थात् शौर्य किये थे उन सब को उनकी प्रशंसा में कवि चंद ने प्रयोग करके यह बिरदावली कही है। अब इसमें यह बात विचारने की है कि कविराजजी ने जो इस रूपक में के—“कलंकिया राय केदार” “जैसे विशेषणों का महाराणाजी श्रीसंगामसिंहजी (सांगा) की और संकेत होना अनुमान करके रासो के जाली बनने के समय के प्रारंभ का सं० १६४० निश्चय किया है वह इस मूल रूपक के अवलोकन करने से सत्य मालूम होता है कि नहीं। यदि हम कविराजजी के अनुमान का यथार्थ होना भी मान ले परन्तु इस रूपक में—“कलंकिया राय केदार”—आदिक के साथ ही—“जैचंद समह जिन जुहु कीन—और”—“सोपन सरीर प्रथिराज सथ्य” जैसे स्पष्ट विशेषणों के वाक्य खंडो को हम महाराणाजी श्रीसागाजी में कैसे घटा सकते हैं। क्या यह बात विद्वानों के कहने की है कि—“जैचंद समह जिन जुहु कीन”—और—“सोपन सरीर प्रथिराज सथ्य”—जैसे स्पष्ट विशेषणों को छोड़ देना—और—“कलंकिया राय केदार”—आदिक को यहण कर लेना। यदि कविराजजी ने इन—“कलंकिया राय केदार”—आदिक को सागाजी पर घटा कर केवल उनही तुको को लेपक बताया होता तो भी यह एक प्रकार से कुछ ध्यान में बैठने जैसी बात होती। हम यह भी नहीं समझ सकते है कि हम रूपक से सं० १६४० कैसे सिद्ध होता है क्योंकि महाराणाजी श्रीसागाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार सं० १५६५ से सं० १५८४ तक ही होता है। और सं० १६३० का वर्ष महाराणाजी श्री बड़े प्रतापसिंहजी के राज्य समय सं० १६३३ से १६३३ तक में आता

है । रासो की सं० १६३१ । ३२ और १६४५ की लिखित पुस्तकें हमारे पास विद्यमान हैं । तथा अकबर बादशाह ने पृथ्वीराज रासो की कथा अपने दरबारी भाट गंगजी से सं० १६२७ । २८ में सुनी थी कि जिसके वृत्तान्त की एक सं० १६२९ की लिखी हुई चंद्र छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक हमको प्राप्त हो चुकी है और उसीके साथ जो समय सं० १६४० से १६७० तक का रासो के जाली बनने का अनुमान किया गया है उस समय में मेवाड़ में एक राणारामो नामक ग्रथ राघ दयाल कवि ने बनाया है कि जिसको भी हमने शोध काठा है । इस राणारामो की पुस्तक सं० १६७५ की लिखी हुई प्रति से हमने अपने पुस्तकाल के लिये एक प्रति करवाई है और हमारी प्रति से बहुत से अन्य भद्रपुरुष प्रतियें करवाते हैं । वरि यह सब बातें तो जाने दीजिये और एक इस छोटी सी बात पर ही ध्यान दीजिए कि रासो की उन सध पुस्तकों के अंत में की जो मेवाड़ राज की एक पुस्तक से प्रति हुई है मूल पुस्तक के लिखनेवाले लेखक के लिखे हुए नीचे लिखे छंद प्राप्त होते हैं कि जिनमें यत्कचित वृत्त लिखा हुआ है । ये छंद हम आशा करते हैं कि उन पुस्तकों में भी अवश्य होंगे कि जो एशियाटिक सोसाईटी बंगाल के पुस्तकालय में हैं—

कवित्त ॥ मिली पंजग गन उदधि । करद कागद कातरनी ॥
 कोटि कवी काजलह । कमल कटिकते करनी ॥
 हित्तिथि संख्या गुनित । कहै कक्का कवियाने ॥
 इह श्रम लेषन हार । भेद भेदैं सोइ जानै ॥
 इन कष्ट ग्रन्थ पूरन करय । जन वभ्या दुष नां लहय ॥
 पालिये जतन पुस्तक पवित्र । लिपि लेपक विनती करय ॥ १ ॥
 गुन मनियन रस पोइ । चंद्र कविनय कर दिद्विय ॥
 छंद गुनीतैं तुट्टि । मंद कवि भिन भिन किद्विय ॥
 देस देस विपरिय । मेल गुन पार न पावय ॥
 उद्विम करि मेल वत्त । आस विन अलस आवय ॥
 चित्रकूट रान अमरेस नृप । श्रीमुख आयस दयौ ॥
 गुन बीन बीन करुना उदधि । लपि रासौ उद्विम कियौ ॥ १ ॥
 दोहा ॥ लघु दीरघ ओछा अधिक । जो कहु अंतर होई ॥
 सो कवियन मुख सुदुते । कहो आप बुधि सोइ ॥ ३ ॥

इन छंदों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि किसी कक्का नामक पुरुष ने मेवाड़राज्य के आधीश बड़े श्री अमरसिंहजी (चित्रकोट रान अमरेस नृप) के आज्ञानुसार राज के पुस्तकालय के लिये उक्त पुस्तक लिखी थी । इन महाराणाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार सं० १६५३ से १६७६ तक का है । जब कि मेवाड़ राज की पुस्तक का उसकी अन्य प्रतियों से सं० १६५३ से १६७६ के बीच में लिखा जाना अनुमान होता है तो फिर इस समय में जाल बनना भला कोई कैसे मान सकता है । अब रहा संवत् १६७७ की भविष्य वार्ता का विदित करने वाला दोहा उसके विषय में हमने अपनी संरत्ता के लेखखंड २७ पृष्ठ ३५ में सविस्तर कह दिया है अतएव यहां कुछ अधिक नहीं वर्णन करते ॥

४ यद्यपि इस महाकाव्य के जाली बनने के अनुमान का प्रश्न तो रीति से किया गया है कि इस ग्रन्थ में लिखे पृथ्वीराजजी के समय के मनुष्यों के नाम और वृत्त उस समय की मुसलमानी तथारीखों में लिखे हुआं से नहीं मिलते हैं परन्तु जिस प्रकार से उस प्रश्न का निर्णय किया

गया है उससे प्रश्नकर्ता की प्रतिज्ञाहानि और हेत्वाभास स्वयम् सिद्ध हैं । हमने इस विषय में अपनी लिखी पृथ्वीराज रासो की सरता की अंग्रेजी पुस्तक के पृष्ठ १५ और ३७, लेखखंड ११ और २८ और हिन्दी की के पृष्ठ १८ और ३९ और लेखखंड ११ और २८ में बहुत कुछ लिख कर प्रकाश किया है । क्या जितना अंश इस महाकाव्य का मुसलमानी तवारीखो से मिलता हुआ है वह उसके बनानेवाले ने उन तवारीखो को सोलहवीं सदी में पढ़कर यह जाल निर्माण किया है ? क्या उस समय की हसन निजामी की तवारीख, तबक़ात नासरी, और अब्बुलफ़िदा, आदि नामक तवारीखों में परस्पर कोई ऐसे विरोध नहीं हैं और क्या वे एक दूसरे से सर्व प्रकार से परम सम्मत हैं ? कविराजजी ने स्वयम् यह स्वीकार किया है कि तबक़ात नासरी ने मनुष्यों के अशुद्ध नाम लिखे हैं और अब्बुलफ़िदा ने संवत ही नहीं लिखे हैं फिर उनके दोषों से यह महाकाव्य क्योंकर दूषित हो सकता है ? क्या उक्त मुसलमानी तवारीखों के कर्ताओं ने सब वृत्त यथातथ्य लिखकर केवल सत्य ही लिखने और मिथ्या कुछ भी न लिखने का एक भंडा हाथ में लिया है ? देखो क्या यह शोक की बात नहीं है कि तबक़ात नासरी का यथकर्ता विचारा स्वयम् कहता है कि जिस वर्ष में पृथ्वीराजजी की अंतिम लड़ाई हुई थी उसमें तो वह उत्पन्न हुआ था और उसके ३५ वर्ष पीछे वह पहिने ही पहिल हिन्द में आया था, उसने जो कुछ इस विषय में लिखा है वह उसने एक मनुष्य से सुनकर लिखा है, फिर हम नहीं जानते कि कविराजजी मिनहाज-इ-सिराज जैसे एक भले आदमी को क्यों प्रत्यक्ष प्रमाण की साक्षी में घेरते हैं । हम पृथ्वीराजरासो और उस समय की सब मुसलमानी तवारीखो को एक दृष्टि से देखकर यह कहते हैं कि जिस जिस ग्रन्थकर्ता ने जो, जितना, और जैसा, देखा और सुना, वह उसने अपनी इच्छा और शैली के अनुसार लिखा है; यदि उनमें से किसी की कोई बात हमको अर्थार्थ प्रतीत और सिद्ध हो तो हम उसको अस्वीकार कर सकते हैं, किन्तु हम उनमें से किसी को भी लार्ड. हेस्टिङ्स के समय में जैसे नन्दकुमार को जाल के अपराध में फासी की शिक्षा दी गई है वैसी शिक्षा विद्वानों के हाथ से कदापि नहीं दिलाना चाहते । निदान हम फिर भी प्रसन्नता और विचार पूर्वक कह सकते हैं कि प्रत्येक ग्रन्थकर्ता ने अपने अपने ज्ञान के अनुसार ऐतिहासिक वृत्त लिखे हैं चाहे उसमें कोई बात असत्य भी क्यों न हो परन्तु उस असत्य बात के कारण से आदि से अंत परियत कोई ग्रन्थ जाली नहीं हो सकता । इस बात के मान लेने में हमको कोई लज्जित होने की भी बात नहीं है कि यह पृथ्वीराज रासो चंद का लिखा हुआ सच्चा है, उसके दो एक समय उसके बड़े बेटे जल्ह के लिखे हुए हैं और उसमें जो कहीं कहीं कुछ त्रुटि अथ पीछे से किसी ने मिलाया होगा वह विद्वानों की परीक्षा करने से स्वयम् तरजावेगा । अब तो कोई बात अडचल की रही ही है क्योंकि यह आदि पर्व तो हमने यथाशक्ति संशोधित करके अपने पाठको की सेवा में अर्पण कर ही दिया है, कि उसीसे हम इस महाकाव्य की अक्रिचमता की परीक्षा करना प्रारंभ कर सकते हैं और प्रति मास में हम यह भी सिद्धान्त कर सकते हैं कि यहा तक तो जाली अंश है अथवा नहीं ।

इस बात के जानने से हमारे पाठको को बहुत प्रसन्नता होगी कि हमको गोध करने से पृथ्वीराजजी और रावलजी श्रीसमरसीजी और महाराजा श्रीपृथाचार्डजी के घोड़े से घाम रूके और पट्टे पखाने प्राप्त हुए हैं कि जिनमें वही अनन्द विक्रमा संवत् है कि जो पृथ्वीराज रासो में लिखा हुआ मिलता है । इन सब के फोटोयाफ हमने एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के

पृथ्वीराजजी,
समरसिजी और
पृथाबाईजी के
खास रूके पट्टे
पखाने आदि

भेंट करने तथा उनकी सत्यता की परीक्षा करने के लिये अपने स्वदेशी परम प्रसिद्ध विद्वान राय बहादुर डाकूर राजा श्रीराजेन्द्रलालजी मित्र एल० एल० डी०, सी० आई० ई० की सेवा में भेजे हैं । उक्त डाकूर साहब अकस्मात् रोगग्रस्त हो गये कि जिससे यह हमारे बड़े परिश्रम से शोध किये हुए लेख उक्त विद्वत् मंडली में प्रवेश नहीं हो सके हैं किन्तु हम को आशा है कि राजा साहब के नैरोग्य होते ही उक्त लेख सोसाईटी में प्रवेश होकर

यह विषय विद्वत् मंडली में छिड़ेगा । यह विषय अभी हमारा मौपा हुआ एक महान पुरातत्ववेत्ता विद्वान के हाथ में है अतएव हम उन लेखों की प्रतियों तथा अपने निज विचारों को प्रकाश नहीं कर सकते परन्तु इतना तो निःसंदेह कह सकते हैं कि अभी तक हम उनको अतित्रिम समझते हैं और ऐसा समझने को सतर्क सिद्ध भी कर सकते हैं । इसके साथ हमको इस कहने में कुछ भी लज्जा नहीं है कि यदि उक्त डाकूर मित्र, हमारे विद्या-गुरु डाकूर हार्नली साहब, मिस्टर याउस साहब और मिस्टर ग्रियरसन साहब, जैसे पक्षपात रहित और सहजा मिदुान्त न करने वाले पुरातत्ववेत्ता विद्वान उनको अत्रमाणिक सिद्ध कर ग्रहण करेंगे तो हम भी उनकी से सम्प्रत हो जायेंगे क्योंकि हमको किसी बात का वास्तव में दुराग्रह नहीं है वरन इसमें भी कुछ मदेह नहीं है कि जो कोई अन्य मनुष्य बिना किसी योग्य कारण के हमारे स्वदेश और उसकी विद्या पुस्तकों को दोष दे तो हम उस दशा में उनके एक बड़े कट्टर पक्षकार हैं ॥

अंत में हमारा सब विद्वानों से यही सविनय निवेदन है कि वे इस महाकाव्य को उसकी भले प्रकार परीक्षा कर के पढ़ें और पढ़ावें और जो कहीं उसमें कुछ हमारा कहना तथा कोई अनुमानादि का करना अयोग्य प्रतीत हो तो हम को क्षमा करें । यही प्रार्थना हम विशेष कर

समाप्ति

के अपने मित्र महामहोपाध्यय कविराज श्रीश्यामलदासजी की सेवा में भी करते हैं क्योंकि उनके विचारों और अनुमानों का हमने विशेष करके एक वल्लिष्ट भाषा में खंडन कर अपने स्वदेशाभिमान और उसकी हिन्दी विद्या

की सरक्षा की है । इसके साथ यह भी वक्तव्य है कि जैसे हमने इस उपसंहारिणी टिप्पण में इस महाकाव्य के पांच चार विषयों के विषय में अपने विचार प्रकाश किये हैं वैसेही चंद्र के व्या-कारणादि जैसे शेष विषयों के विषय में भी हम यथावकाश लिखेंगे । इत्यलम् ॥



अथ दसम* लिख्यते ।

[दूसरा समय ।]

हरि रूप का मंगलाचरण ।

साटक ॥ सो ब्रह्मा सो इन्द्र ईति भजनं, ईपाल ईयं हरं ॥
पिट्टे निट्टु कमट्टु साइर उरं, जठराग्नि वारी वरं ॥
सो भानं विधि भान नेत्र कमलं, बाहौ गिरं ग्रभिभयं ॥
जंघा अष्ट कुला चलं न ग्रभितं, जै जै हरी रूपयं ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

दशावतार का नाम स्मरण ।

चौपाई ॥ मच्छ कच्छ वाराह प्रनम्मिय । नारसिंघ वामन फरसम्मिय ॥
सुअ दसरथ्य हलद्धर नम्मिय । बुद्ध कलंक नमो दह नम्मिय ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

दशावतार की स्तुति ।

विराज ॥ करे मच्छ रूपं धरेना अनूपं ॥ वधे संघ धूपं । वरे वेदभूपं ॥ ३ ॥
* * * * । * * * ॥ * * । नमो मच्छ रूपं ॥ ४ ॥
धरा पिट्टु तिट्टुं । कनंगे गरिट्टुं ॥ जले धार दिट्टुं । नमो तो कमट्टुं ॥ ५ ॥
स्वयं दे वराहं । हयग्रीव गाहं ॥ रदये इलाहं । उपम्माति चाहं ॥ ६ ॥

* इस समय में दशावतार की कथा होने के कारण चंद्र ने उस का नाम दशम रखा है ॥

१ पाठान्तरः-सो । सो । ईद्र । भजन । इपाल । हार । हरि । पिंठ । पिठे । निठ ।
निह । कमठ । कमह । साईर । जराग्नि । वर । सो । भान । नेत्र । कमल । बाहौ । गरभितं ।
ग्रभित । जघा । गभितं । हरि ॥

२ पाठान्तर मछ । कछ । प्रनम्मियं । नारसिंघ । फरसम्मिय । दूमरम्मियं । सुत । सुअ ।
दसरथ । हलधर । नगियः । रम्मियं । बुद्ध । कमल । नमो । दह । नम्मियं । रगिय ॥

३ पाठान्तरः-करे । मछ । सिरेनारनुपं । वधे । धुप । धरे । वेद । भुपं । नमो । मछ ॥ ३-४ ॥
पिट । तिठं । तई । तठं । कंगेजे । गरिठं । दिठं नमो नै । कमठं ॥ ५ ॥ सुअ । दे । हयं ।
आहं । खद्रे । इलाहं । उपम्माति । उपम्माति । नैगहं । नमो । नै । न ३-५ ॥ दसंथ ।

* * * । * * * ॥ ससी सेष राहं । नमो ते वराहं ॥७॥
 हिरन्नष्य वीरं । प्रहलाद पीरं ॥ उठे षंभ चीरं । महा वीर वीरं ॥८॥
 * * * । * * * ॥ बढी पंक नीरं । नमो भ्रम्म धीरं ॥९॥
 मृगंकस्य ऊरं । नषं तोरि तूरं । बजी दठु पूरं । थपे जान जूरं ॥ १० ॥
 दया सिंधु मूरं । कुकंपीस भूरं ॥ नटी लछिछ नूरं । धवी अंषि धूरं ॥ ११ ॥
 भयं देव दूरं । नियं भत्ति भूरं ॥ थुती पानि जूरं । नमो सिंघ सूरं ॥ १२ ॥
 बली राइ अग्गी । छली भूमि मग्गी ॥ लुके वंभ तग्गी । मुष वेद जग्गी ॥ १३ ॥
 निषे गंग लग्गी । सुलोकी सुभग्गी ॥ तिहूँ लोक बानी । रिजे देव गानी ॥ १४ ॥
 प्रसन्नौ बलिज्जा । दई भोमि सज्जा ॥ त्रिलोकी तिडग्गी । नमो वाम लग्गी ॥ १५ ॥
 पिता वाच मानं । हते ग्रभ थानं ॥ सहस्रं भुजानं । रुधिद्रा धरानं ॥ १६ ॥
 नछची छितानं । दई विप्र दानं ॥ सुरानं प्रमानं । नमो परसरामं ॥ १७ ॥
 हरे राम ग्यानं । सु रामं सुरानं ॥ रघुवीर रायं । दया देह कायं ॥ १८ ॥
 सु वैदेहि दायं । सुमित्रै सषायं ॥ विसामित्र सष्यं । षरं दूष नष्यं ॥ १९ ॥
 सुपनी सहायं । तडिकी निहायं ॥ वटीपंच पत्ते । मृगं चाय हत्ते ॥ २० ॥
 रजं वारि दंती । जमं जाममंती ॥ मतं मेघ कंती । * * * ॥ २१ ॥
 धनं धार भारी । मरीचं प्रहारी ॥ सुअं सुइकारी । हनुमान धारी ॥ २२ ॥
 गजतम्म नारी । सिला तंग तारी ॥ जरी लंक चाही । पुरी हेम दाही ॥ २३ ॥
 रिछं वानरायं । भय सो सहायं ॥ हनुमान तायं । दधी सीस आयं ॥ २४ ॥
 पषानं तिरायं । सुहिद्रा सहायं ॥ हनुमान रही । समुद्देस बही ॥ २५ ॥

हिरनप । हांरिणाप्यदाहं । प्रहलाद । पहल्लाद । उठै । मनौ । धंम । उरं । नूर । जानि । दया ।
 दधिपुरं । कुकांपिस मूरं । लछि । नुरं । धषी । अंष । धुरं । धुर । दैव । दुरं । भंति । भति । भुरं ।
 थुती । पानि । पानि । जुरं । नमौ । सि ॥ ८- १२ ॥ राष । अग्गै । लछी । छलै । भुमि । मग्गै ।
 मग्गी । लुकै । तग्गै । तगी । मुप । मुषे । वैद । वेदं । जग्गै । जगी । नषे । नषे । लग्गौ । लगी ।
 लौकी । स । भंगौ । भगी । तिहौं । लौक । बानी । रिजे रिजे । दैव । ग्यांनी । गानी । प्रसन्नौ ।
 बलीजा । दइ । भुमि । भूमि । सजा । सिज्या । त्रिसौकेतड्यो । ठगै रूठ ठगौं । तडकी । वाम-
 नग्गी ॥ १३-१९ ॥ ता वचमार । ग्रभ । थानं । सहस्रं । रुधिजा । रुधिजा । नछित्री । दइ । प्रनामं ।
 नमौ परसरामं । परशुरामं ॥ १६-१७ ॥ हरे । रामं । राम । सुमित्रे । विश्वामित्र । मष्यं । मषं ।
 हरैदुकरिष्यं । सपत्नी । सुपणी । सुपनी । तडिका । बढी । वठी । पती । मृगै । हतै । हते । रज ।
 जंम जाम मतीः । मत । मैघ । भारी । भरी । मरीचं । सय संधिकारि । हनुमान । गउतम् । गउमंती ।
 सिलाक त्रुंग तारी । चाहा । हेन । हैम । रिचं । वानरायं । वनरायं । सौ हनुमान । दरदा ।

तजै बीर हृद्यं । सँदेसं सु कथ्यं ॥ जहाँ लंक गढुं । तहाँ बग्न बढुं ॥२६॥
 उहाँ सीय दिष्पी । हुंती दुष्प मुष्पी ॥ दियं मुद्रितांम । सहिन्नानरामं ॥२७॥
 दमानन्न आदं । गयं मेघनादं ॥ करे कुंभ चूरं । भरे वान भूरं ॥२८॥
 सती सीय अंभी । कियं काज वंभी ॥ त्रिकूटेसनायं । बभीषन्न हायं ॥२९॥
 प्रसूनं विमानं । चढे वेगियानं ॥ अयोध्या सपत्ते । नमो राम मत्ते ॥३०॥
 वसुदेव अँनी । वरी कंस भँनी ॥ बियं पानि बद्धे । पुरानं प्रसिद्धे ॥३१॥
 जयं जग्ग धारी । दियं दान भारी ॥ रथं आप रूढे । समं कंस सूढे ॥३२॥
 अकासे सुवानी । अवन्न गियानी ॥ उवं षग्न भारे । अनुज्जां प्रहारे ॥३३॥
 वरं पानि बद्धे । सुवाले अबद्धे ॥ इयं ग्रम्भ पुत्तं । रुके तथ्य दत्तं ॥३४॥
 सतं किल्ल दिस्रं । भये राम किल्लं ॥ प्रयंमं सुभदं । तिथी पष्य अद्धं ॥३५॥
 नषत्रं सु रोही । भुजं जन्म सोही चतुर्बाहु चारं । किरीटं सुहारं ॥३६॥
 सतं पत्र नेनं । क्रने कुंडलेनं ॥ नियं मुत्ति नासी । इयं अब्बिनासी ॥३७॥
 सदा लछ्छिदासी । चरंनं निवासी ॥ मुखं मंद हासं । चतुर्वेद भासं ॥३८॥
 अगू लत्त गत्तं । प्रभासी प्रभुत्तं ॥ मनी नील सीतं । कटी पट्ट पीतं ॥३९॥
 स्वयं ब्रह्म देही । नियं नंदगेही ॥ विषं पूतनायं । पियं दूध तायं ॥४०॥
 सकट्टं प्रहारै । ब्रजज्जा विहारै ॥ तिनं व्रत्त तानी । उवं आसमानी ॥४१॥
 प्रभू ग्रीव लग्गो । तिनं तामभग्गे ॥ रिषी आप आपं । नलं कूब तापं ॥४२॥
 दहं देवदारं । ब्रजंजा कुमारं ॥ नवं नीत चोरं । दही मट्ट ठोरं ॥४३॥

रदी । समुदेस । वदी । तिनै । हाथ्यं । हथं । सँदेसं । संदेसं । कथ्यं । कथं । तहाँ । गढं । तहाँ
 वग्न बढ । उहाँ । दिष्पी । दिपी । हुंती । दुष्प मुष्पी । दीयं । सहं । दानरामं । सहंनान । दसानन्न ।
 आदी । मयं । नादी । करे । चूरं । भरे । वानं । भुरं । अभी । कियं । वभी । कुंटे । वभीपन ।
 प्रसूत । विमानं । चढेवेगि । आनं । अयोध्या संपत्ते । संपत्ते । नमो । राम । मते ॥ २७-३० ॥ वसुदेव ।
 अँनी । वसुदेव । भेनी । वीयं । पानि । प्रसिद्धे । प्रसद्धे जागवारी । सट्टं । मुट्टे । अकासे । वानी ।
 अवन्नो । गियानी । उवं पग । भारे । अनुज्ज । प्रहारै । पानि । वव । वद्धे । वाळे । अबद्धे ।
 अवधे । गभ । पुत्तं । रुके । तथ्य । दत्तं । दत्त । किमन दिस्रं । किल्लं । प्रयंमं सुभदं । प्रयंमं
 सुभदं । परक । पप । पष्य । नित्रित्री । निद्रित्री । गैहो । मोही । चतुर्बाहु चारु । किमटी मुं
 हासु । चतुर्बाहु । किरीटी । नेनं । नेन । क्रनं । कुनै । कुंडलेन । कुंडलेनं । अयं अयं आदिनासी ।
 जयं । जविनासी । लछि । चरंनं । चरने चतुर । वेद । भृगु । भृगुं । प्रभुत्तं । देही । प्रेही ।
 पूतनायं । शीयं । धृत नाये । सकट्टं । सकट्ट । ब्रजज्जा । ब्रजज्जा । विहारं । तिनं । व्रत्त । प्रभु ।
 ग्रीव लग्गो । तान । भग्गे । भग्गे । रिषि आप आपं । देव दारं । कुनजा । कुमारं । चोरं । मट्टोरं ।

कियं गोप सौरं । अनौषं किसौरं ॥ ग्रही दान पानी । जसोदा रिसानी ॥४४॥
 सिस्त्र उषसद्धे । किहों बंध बंधे ॥ सुयं ब्रह्म लेष्यो । अचिज्जं सपेथ्यो ॥४५॥
 लघु दीर्घ इदं । कला की गुावदं ॥ ररोषं सहासी । मुक्ती निवासी ॥४६॥
 सुतं जषष राज । कियं ऊर्द्ध काजं । द्रुमं गात बीची । परे वृष्य सिंची ॥४७॥
 थुती बंध पानं । प्रसिद्धे पुरानं ॥ वरूनं पिवासी । ग्रहे नंद ग्रासी ॥४८॥
 जिते लोक पालं । व्रजं जाल वालं ॥ बधी धेन मारै । प्रलंबं प्रहारै ॥४९॥
 मुषे काल वयालं । सिस्त्र वच्छ पालं ॥ कली उत्तमंगं । कियं न्वित्तरंगं ॥५०॥
 व्रजं वारि लोपं । मधु मेघ कोपं ॥ परी व्रज्ज धारा । गिरं धारिधारा ॥५१॥
 नषे सैल सारं । त्रिभंगी त्रिसारं ॥ पुरदं पुलानं । व्रजे वानि सांनं ॥५२॥
 निसा अंध घोरं । कियं गोप सौरं ॥ धरा नील रैनं । तज्यौ देव सैनं ॥५३॥
 कचं वक्र वेनी । अमी भूरि सैनी ॥ श्रुती कुंडलीनं । दुती काम लीनं ॥५४॥
 चषं पु डरीकं । वपं मेघ लीकं ॥ नसं मुत्ति सारै । निसामेक तारै ॥५५॥
 धरो सुद्ध हासं । करै देव वासं ॥ रदं छद मुदं । नगं कौक नदं ॥५६॥
 ग्रिवा कंबु रेषं । भुजाक्रित्त सेषं ॥ वयज्जंत मालं । उरै सो विसालं ॥५७॥
 लियं वैत सेली । वने जाम केली । जसोदा जगायं । मृगे सिंग वायं ॥५८॥
 जिते गोप सथ्यं । दही पत्त हथ्यं ॥ वनेजा विहारी । गज वच्छ चारी ॥५९॥
 अगं कांन मुद्दे । दिये हेरि सद्दे । नियं गेह चारी । हसे गोप भारी ॥६०॥
 सतं पत्र पुत्तं । अचिज्जं सुहित्तं ॥ नियं तप्य लागं । हरे वच्छ भागं ॥६१॥
 स्वयं स्याम चित्तं । धरयो ध्यान हित्तं ॥ नियं नंद पुत्तं । मलानं सजुत्तं ॥६२॥

गौप । सौर । अनौप । किसौरं । गहीदान पानी । जसोदा रिसानी । सिसुर्ष्य । सोयं । अचिज्जस ।
 लघु दीर्घ । जष्य । उरद्ध उर्द्ध । उर्द्ध । द्रुम । परै वृष्य । सीवी । सिंची । थुती । प्रसिद्धे विपासी ।
 ग्रीहे । गृहे । जितै लोक माल । व्रज । बधी धेन सारे । प्रलंबे प्रहारे । मुषे । वछ । उत्तमंग ।
 कियनृत्यंगं । नृत्यानुत्त । विज्ज । वृजं । लौपं । मधुमैव कोपं । वृज । धार । गिर धारि वाए ।
 नषे सौरसालं । शैल । त्रिभगी त्रिसालं । पुरदं । व्रजेवा । व्रजेवा निसानं । घौरं । कियं व्रजसौर ।
 रने । कंचवक्र ऐनी । ऐनी । भूमी । भमी । भुरि । सैनी । स्लती कुंद्ध लीनं । काम । पुंडरीकं ।
 चपं मेघ लीकं । नासं मुत्तिसारे । निशा । मैक । तारे । सुद्धि । सुधि । करै । रद छद मुद । रद
 सद मुदं । नागं कौक नदं । कंबु । रेषं । सैपं । शेषं । वयजत । उरे । सो । वैत । सैली । वने
 जाम केली । जसोदा । गृगैसिंगवायं । जितै । गौप सथं । दहीपन हथं । वनेजा । गौचछ चारी ।
 वछ । अग कांन मुद्दे । दिऐ । सद्दे । निय गेह चारी । गेह । हसे । हमै । गौप । पत्र पत्रं ।
 अचिज्जं सुहितं । तप । हरै । वछ । स्याम वित । ध्यान । हितं । निय । मिलानंस । कियं । सांक ।

कियं सोक कोपं । कहां वच्छ गोपं ॥ हरे ब्रह्म ग्यानं । पुरष्यं पुरानं ॥ ६३ ॥
 रचे किष्ण सोची । त्रियं अंब रोची ॥ तिनै रंग नेहं । अपं अप्य गेहं ॥ ६४ ॥
 तनं संघ चक्रं । चतुर्बाह वक्रं ॥ पियं पट्ट बंधे । सहं ग्वाल नंधे ॥ ६५ ॥
 अचिज्जं विहारी । नले ब्रह्मचारी ॥ अमे लोक पालं । वियाप सुकालं ॥ ६६ ॥
 * * * । * * * ॥ युती सा मुरारी । सुब्रह्मं विचारी ॥
 छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ३ ॥

भुजंगी ॥ न रूपं न रेषं न सेषं न साधा । न चंद्रं न तारानभानं न भाषा ॥
 अविद्या न विद्या न सिद्धं न सादी ॥ तुही ए तुही ए तुही एक आदी ॥ ६८ ॥
 न अंभं न रंभं न रुद्रा न पाया । न सेतं न नीलं न पीतं न गाया ॥
 न काया न मोया न घायान छाया । तुही देव सदेव सिद्धे न पाया ॥ ६९ ॥
 तुही सर्व माया दिषायान माया । तुही सर्व माया तुही घाम छाया ॥
 न बंभा न रंभान रुद्रे न देहं । न मंद्रे न मायान रायान गेहं ॥ ७० ॥
 न सैलं न गैलं न तापं न छाया । न गाहान गीतं न श्रोतान ताया ॥
 न प्रव्वी न पालं मृजादं न मादं । न तारी न वारी न हारी न नादं ॥ ७१ ॥
 नवे मेष रेष न भूरी न भारी । नवे ध्यान मानं न लग्गे न तारी ॥
 न लोकं न सोकं न मोहं न मादं । तुही ए तुही ए तुही एक आदं ॥ ७२ ॥
 तहां पं न तारं न वारं न वीरं । नयं दठु मठुं न ध्यानं न धीरं ॥
 नहं जोति हस्तं न वस्तं सरुष्यं । तहां तू तहां तू तहां तू गुरष्यं ॥ ७३ ॥
 प्रकृतं प्रथमं त्रयं तत्त जोई । तहां नभभ तेता सरोजं न सोई ॥
 न माया न काया न हायान होई । तुही देव सा देव साधा न सोई ॥ ७४ ॥

कोपं । कहा । वछ । गोपं । हैर । ग्यानं । पुरुषं । रचकिष्ण सोची । सोची । अपं अंब रोची । त्रय
 अंब रोची । तिनै रंग नेहं । अप अप्य गेहं । तन । चतुर । अंबे । नयं । अचिज्जं । नले । अमे ।
 लोक । सारारी ब्रह्मं । * पाठ नहीं मिले ॥ * सं० १८९९ में है अन्य में नहीं ॥

४ पाठान्तरः—रूपं । रेषं । सेषं । साधा । चंद्र । नरुभान । भाषा । चद । नरुभान ।
 भाषा । नुही । अदी । अम्भ । अंभ । रंभं । रुद्रा । मैने । नील । ने । नकाया । वाया । तुही ।
 देव । सदेव । सिद्धे । पीया । * यह तक सं० १८९९ का में नहीं है अन्य में है । सरव । दिषायान ।
 सरव । तुही । घाम । धंभा । संभा । वभा । रुद्रा । रुद्रा । मंदे । नया । गेह । अदे । अदे ।
 मगाहा । श्रोत । न । प्रवीनें । नपाले मृजादं । मृजादं । नवारी नवारी हागी । नाद । नये ।
 नैप । रेषं । भूरी । नवे । ध्यान । मानं । लग्गे । लोक । सोक । शोक । मादं । पं । नयं । दठ ।
 मठं । ध्यान । वारं । तही ज्योति । नहायोति । सरुष्यं । तु । त । तो । मुष्यं । पुष्यं । प्रकृतं ।
 प्रथम । त्रयं । तत्त । जोई । तोही । तहां । नभ । तेता । सरोजं । सोई । * सं० १८९९ का में १८९९

तुही अंबुजा अंबुकामिनि कामं । तुही तत्त कै तत्त रामं न रामं ॥
 तुही दीप स्वरं सिरं नभभ तेरैं । भुजा इंद्र तूही नभं नाभ फेरैं ॥७५॥
 सुयं सायरं पेट सा मुष्य अग्गी । तुही तेज ब्रह्मंड सासीस लग्गी ॥
 तुही बाल वृद्धं तुही एक आदी । तुही तंत्र मंत्रं कवी चंद्र वादी ॥७६॥
 तुही राग जंत्रं जगत्रं बजावै । तुही सार पंचै सु पंचै चलावै ॥
 भगव्वांन जंत्री सु वज्जंति लोई । सुरं राग बंधै बंध्यौ आप सोई ॥७७॥
 प्रलै अंभ अंबं तुही हन्य बोधै* । तहांमोहि अग्या सु सिष्टं समोधै ॥
 छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४ ॥

साटक ॥ किं सन्मान ससेव देव रजयं, दुष्टान उस्तासयं ॥
 किं सुष्यानि दुषानि सेवन फलं, आयास भूमौ मयं ॥
 किं ईसं न सुरैस सेस सनकं, ब्रह्मात ग्यानं लहं ॥
 किरंनं छितया छितं सु कमलं, वंदे सदा विषयं ॥छं०॥७९॥रू०॥५॥
 दूहा ॥ नंदकिसोर किसोर मग । निसि पुनिम ससि अच्छ ॥
 ब्रह्म स्तुति ब्रह्मा करिय । गोन मिले गुन वच्छ ॥ छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ६ ॥

॥ ब्रह्मोक्ति ॥

दूहा ॥ ब्रह्म कहै सुर सकल सों । गोकल हरि अवतार ॥
 नारद सुर पति स्तुति करन । अप आए तिन वार ॥छं॥८१॥रू०॥७॥
 प्रथम कित्ति रवि ससि करी । अहो देव देवेस ॥
 तुम गुन बरनत जनम लौं । पार न पायो सेस ॥छं०॥८२॥रू०॥८॥

की में नहीं है । तुहा । अंबुजा । मनि । तत । तत । राम । सूर । नभ । तेरं । तेरे । तेरै । तुही ।
 नभ । नाम । फेरै । सोसुप । सामुप । अंगी । श्रष । ब्रह्मंड । सुसीस । लगी । वृद्ध । तत्र । मंत्र ।
 वाही । रगयंत्रं । तुही सार पंचै चलावै । भगवान । सुवजेति । लोई । बंधे । बंध्या । सोहा ।
 * सं० १७७० की में नहीं है । प्रछै अंभ अंबं तुही । हन्यं । बोधै शिष्टं । समोधै । समोधे ॥

१ पाठान्तरः—इसकी पहिली तुक सं० १७७० की में “कि प्रलै अंभ अंबं नहा हन्य बोधै”
 है । सान्मान । सैव । देवं । दुष्टान । उस्तासयं । उसासय । सुष्यानि । दुषानि । सेवनि । कि ।
 ईसं । सुरैस । सेस । शेष । ब्रह्मान । ब्रह्मयान । ग्यान । रन । दे सदा विषय । विषयं ॥

६ पाठान्तरः—नंदकिसौर । किसौर । निसि । पुनिम । पुनिम । शशि । अच्छ । ब्रह्मस्तुति ।
 ब्रह्मा । ब्रह्मा । गोन । गोन । मिलै । वच्छ । वच्छ ॥

७ पाठान्तरः—ब्रह्म । कहै । सौः । गोकल । किरन ॥

८ पाठान्तरः—कित्ती । करिय । अहो देव देवेस । देवेश । तुमि । लौं । पावै । पायो ।
 शेष । सैस ॥

॥ मच्छावतार की कथा ॥

॥ वृद्ध नाराच ॥

प्रथम मच्छ रूपयं, सरूप अंगनूपयं। सुपर्व रिषितातयं, तमात मंत भूपयं। ८३
ठठुक्कि एक घट्टवानं, ता निमान वज्जही। अनेक देव रंजय। सुरंभ ग्यान सज्जही। ८४॥
विवान छित्त रंग कित्त जित्त षंड षंडही। करन एक हेत सेत ता समंद मंडही। ८५॥
सुरंभ हृद तव्विकांन कित्त कथिय चंदयं। बरन वान संकरे, जमात मोद कहयं। ८६॥
सुचंद सूर नेक भंति कित्त जीह जंपही। कमल केलि बंक मेलि बंधि सिंधु चंपही ८७
सुदौरि दो दिसांन छोरि तोरि झोरि भंपही। सुरंज तंज जेज जेत तिष्य क्किष्य रंजही॥
सुरंसु देह विद्धहार कित्त कथिय चंदयं। सुजोगयान जोगयं सपूरयंनिकंदयं॥ ८८॥
सुमालयं न माल देव मालयं सुरज्जयं। दिसान दिस्स उच्चरं सरूप मच्छयं जयं॥
श्रवंत लोक लोके पाल फूल माल रंभयं। सुमंन देव सीसरज्जि बंचयं जयं जयं॥

छ० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ सायर मद्धि सु ठाम। करन त्रिभुअन तन अंजुल ॥

देव सिंगि रषि धरिनि। सिरन चक्री चष अंपल ॥

गैन भुजा ग्रज्ज त। रसन दसनं भुकि भांडय ॥

एक करन ओढंत। एक पहरंत सवांडय ॥

९ पाठान्तरः—मच्छ। सरूपयं अनूपयं। सुपर्व। सुपरव। रिषि। भूपय। ठठुकि। घट्टवान।
घट्टवान। निमान। अनैक। देव। सज। छिछीह। छित। रंगग। कित। जित। करन। सैन।
हेन। सुरभ। हर। हृद। तविकान। किति। कत। कथि। चंदयं। सु जोग यान। सपूरयं।
मौद। कंदयं। सु चंव। सुर। नेक। भति। लीह किति। जंपही। भंति जीह कित्त जंपही।
कमल। कैलि। मैलि। सांध। सुदौरि त्रैरि दो निसान दैरि छोरि भंपही। दिमाने। छोर।
छोरि। सुरमजतजनेज तिपक्किप रंजही। सुरग जतं। जज। तेज। तिष। तिष्य। क्किष।
देव। विद्ध। किति। काये। काये। वंदय। सु। जोग। पान। जोगयं। संपूरयं। नमानयं न।
माल देव मालयं सुरजयं। दिशान। दिशि। दिमि। उच्चर। उच्चरं। सरूप। मच्छयं। श्रवन।
लोकं। पाल आय। रजयं। सुमान। दिव। जय जय ॥

१० पाठान्तर—ककित्त। मद्धि सु मद्धि। मध्य। ठाम। करे। करे। अजुल। “देव सिंगि
सठि हय। मिवनं चक्रीवप संज्ञल” ॥ “देव सिंगि सठि हय सिर चक्री चष संज्ञल” ॥ नेन। गैन।
गुरजन। गर्जन। रसन रसन। शाइयं। शाइय। कंन। कन्न। उदयन। उदयं। न। पहरन।
सवाइय। १० वृद्धी वाली में नहीं है। चलं। सत। मायर। इद्र। चयन। पग नयन कदि। लन यदि ॥

तुही अंबुजा अंबुकामिनि कामं । तुही तत्त कै तत्त रामं न रामं ॥
 तुही दीप स्वरं सिरं नभभ तेरै । भुजा इंद्र तूही नभं नाभ फेरै ॥७५॥
 सुयं सायरं पेट सा मुष्य अग्गी । तुही तेज ब्रह्मंड सासीस लग्गी ॥
 तुही बाल वृद्धं तुही एक आदी । तुही तंत्र मंत्रं कवी चंद्र वादी ॥७६॥
 तुही राग जंचं जगचं बजावै । तुही सार पंचै सु पंचै चलावै ॥
 भगव्वांन जंची सु वज्जति लोई । सुरं राग वंधै वंध्यौ आप सोई ॥७७॥
 प्रलै अभ अंबं तुही हन्य बोधै* । तहांमोहि अग्यासु सिष्टं समोधै ॥
 छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४ ॥

साटक ॥ किं सन्मान ससेव देव रजयं, दुष्टान उस्तासयं ॥
 किं सुष्यानि दुषानि सेवन फलं, आयास भूमी मयं ॥
 किं ईसं न सुरेस सेस सनकं, ब्रह्मात ग्यानं लहं ॥
 किरंनं छितया छितं सु कमलं, वंदे सदा विषयं ॥छं०॥७९॥रू०॥५॥
 दूहा ॥ नंदकिसोर किसोर मग । निसि पुनिम ससि अच्छ ॥
 ब्रह्म स्तुति ब्रह्मा करिय । गोन मिले गुन वच्छ ॥ छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ६ ॥

॥ ब्रह्मोक्ति ॥

दूहा ॥ ब्रह्म कहै सुर सकल सों । गोकल हरि अवतार ॥
 नारद सुर पति स्तुति करन । अप आए तिन वार ॥छं॥८१॥रू०॥७॥
 प्रथम किति रवि ससि करी । अहो देव देवेस ॥
 तुम गुन बरनत जनम लौं । पार न पायो सेस ॥छं०॥८२॥रू०॥८॥

की में नहीं है । तुहा । अबुजा । मनि । तत । तत । राम । सूर । नभ । तेरै । तेरे । तेरै । तुही ।
 नभ । नाम । फेरै । सोसुप । सामुप । अंगी । श्रष । ब्रह्मंड । सुसीस । लगी । वृद्ध । तत्र । मंत्र ।
 वाही । रगयंत्रं । तुही सार पंचै चलावै । भगवान । सुवजेति । लोई । वंधे । वंध्या । सोहा ।
 * सं० १७७० की में नहीं है । प्रलै अभ अंबं तुही । हन्यं । बोधै शिष्टं । समोधै । समोधे ॥

१ पाठान्तरः—इसकी पहिली तुक सं० १७७० की में “किं प्रलै अभ अंबं नहा हन्य बोधै”
 है । सन्मान । सैव । देवं । दुष्टान । उस्तासयं । उस्तासय । सुष्यानि । दुषानि । सेवनि । कि ।
 इस । सुरैस । सेस । शेष । ब्रह्मान । ब्रह्मयान । ग्यान । रन । दे सदा विषय । विषयं ॥

६ पाठान्तरः—नंदकिसौर । किसौर । मिशि । पुनिम । पुनिम । शशि । अच्छ । ब्रह्मस्तुति ।
 ब्रह्मा । ब्रह्मा । गोन । गोन । मिले । वच्छ । वछा ॥

७ पाठान्तरः—ब्रह्म । कहे । सौः । गोकल । किरन ॥

८ पाठान्तरः—किसी । करिय । अहो देव देवेस । देवेश । तुमि । लें । पावै । पायो ।
 शेष । सैस ॥

॥ मच्छावतार की कथा ॥

॥ वृद्ध नाराच ॥

मच्छ रूपयं, सरूप अंगनूपयं। सुपर्व रिष्य तातयं, तमात मंत भूपयं। ८३
 एक घट्टवांन, ता निमान बज्ज ही। अनेक देव रंजण. सुरंभ ग्यान सज्ज ही। ८४॥
 छित्त रंग कित्त जित्त षंड षंड ही। करन्न एक हेत से त ता समंद मंड ही। ८५॥
 हृद तब्बिकांन कित्त कथिथ चंदयं। बरन्न वान संकरे, जमात मोद कहयं। ८६॥
 मूर नेक भंति कित्त जीह जंप ही। कमल्ल केलि बंक मेलि बंधि सिंधु चंप ही ८७
 दो दिसांन छोरि तोरि झोरि भंप ही। सुरंज तंज जेज जेत तिष्य किष्य रंज ही॥
 देह विद्धहार कित्त कथिथ चंदयं। सुजोगथान जोगयं सपूरयंनिकंदयं॥ ८८॥
 नयं न माल देव मालयं सुरज्जयं। दिसान दिस्स उच्चरं सरूप मच्छयं जयं॥
 लोकलोकपाल फूल माल रंभयं। सुमंन देव सीसरज्जि बचयं जयं जयं॥

छ० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ८ ॥

॥ सायर मद्धि सु ठाम । करन चिभुअन तन अंजुल ॥

देव सिंगि रषि धरिनि । सिरन चक्री चष अंपल ॥

गैन भुजा ग्रज्ज त । रसन दसनं भुकि भांडय ॥

एक करन ओढंत । एक पहरंत सवांडय ॥

१० पाठान्तरः—मच्छ । मुरूपयं अनूपयं । सुपर्व । सुपरव । रिषि । भुपयं । ठठुकि । घंटवान ।
 । निसान । अनेक । देव । सज । छिछीह । छित्त । रंगग । कित्त । जित्त । करन । सैन ।
 सुरभ । हर । हृद । तविकान । कित्त । कत । कथि । चदयं । सु जौग यान । सकरैज ।
 कंदयं । सु चंव । सुर । नैक । भंति । लीह कित्त । जंपही । भंति जीह कित्त जंपही ।
 । कैलि । मौलि । सांध । सुदौरि त्रैरि दौ निसान दौरि छौरि झंपही । दिसाने । छोर ।
 । सुरंजतज्जनैज तिपकिप रंजही । सुरग जतं । जज । तेज । तिष । तिष्य । किप ।
 विद्ध । कित्त । काथि । काथै । वंदयं । सुं । जौग । पांन । जौगयं । संपूरयं । नमाजयं न ।
 देव मालयं सुरजयं । दिशान । दिशि । दिसि । उचर । उचरं । सुरूप । मच्छयं । श्रवन ।
 । पाल आय । रजयं । सुमान । दिव । जय जवं ॥

१० पाठान्तर—ककित्त । मद्धि सु मद्धि । मध्य । ठाम । करे । करे । अजुल । “ देव सिंगि
 हय । मिवनं चक्रीवप शंशल ” ॥ “ देव सिंगि सटि हय मिर चक्री चप शंजन्न ” ॥ नैन । गैन ।
 । गर्जत । रसन रसन । झाइयं । झाईय । क्रन । क्रन्न । उदयन । उदयं । त । पहरत ।
 य । १० वूंदी वाली में नहीं है । चलं । सप्त । सायर । इद्र । चलत । पग नल्लन कहि । लेंन ग्रहि ॥

चल चले सपत साइर अधर * । इंद्र नाग मन कवन कहि ॥
 गिर धर चलंत पग मलनमल । लेन वेद अवतार गहि ॥ छं० ॥ ६२ ॥ रू० ॥ १० ॥
 भुजंगी ॥ धरे गेन सीसं चले वेद रीसं । गदा मुदगरं दत पारंत चीसं ॥
 पगं पिठु नठुं कमठुं डरानं । थके वेद ब्रह्मा कमठुं भजानं ॥ ६३ ॥
 भगे जोग जोगं छुटे थानं थानं । छुटे विश्व लोकं महा लोक जानं ॥
 फटे कन्न रानं प्रथी लोक जानं । चितं रक्त लोकं भ्रमं लोक मानं ॥ ६४ ॥
 पुले पिच लोकं ब्रहं लोक देवं । * * * * ॥
 सिवं कूट थानं हरं थान लोकं । जहूरस्त लोकं परे सत्य सोकं ॥ ६५ ॥
 परे दिव्य लोकं सुरंगं सु पालं । ब्रहं रापिसं लोक भग्गेस कालं ॥
 परे निठु तठुं कमठुं रहानं । चले दैत संघं जुटे वेद रानं ॥ ६६ ॥
 ब्रह्मा भजानं न जानं कि जानं । धरं जा फटानं ग्रहं निठु भानं ॥
 परे लोक सोक करे देव कुकं । डकं डक वज्जी करै ईस डकं ॥ ६७ ॥
 ग्रहे ब्रह्म लिड्वं धरै वेद मुष्यं । गजे जोग सठ्ठी हुवं दैत दुष्य ॥
 करे मच्छ रूपं धरै धार धूपं । छिले सत्तयं सायरं अध कूपं ॥ ६८ ॥
 परे छोनि छकं विछकं बरानं । करे कुंभ नदं विहदं सुनानं ॥
 तहां संघनं पानि संघा सुरानं । नहीं पाव संघं प्रलंबं बरानं ॥ ६९ ॥

११ पाठान्तरः—धरे । गेन । चले । मुदर । मुदरं । पंग । पिठ । नठं । नंठं । कमठं ।
 झरानं । थके । ब्रह्मा । कमठं । भगे । जोग जोगं । छुदै । छुदै । विश्वलोक । महालोक । क्षानं ।
 जानं । फदै । कन्न । प्रिथी । पृथी । जानं । चित । लोकं । भ्रमं । लोक । मानं । पुलै । लोक ।
 ब्रह्मलोक । ब्रह्मलोक । देवं । * * यह तुक किसी पुस्तक में नहीं मिली । कूट । थान । लोकं ।
 जहूरस्त । जहुरस्त । नोकं । परै । सत्यको । सोकं । सीकं । लोकं । सुरंग । ब्रह्म । ब्रह्मं । लोक ।
 भगे । परै । निठ । तठ । तठं । कमठ । कमठं । रहानं । राहानं । चले । संघं । जुटे । वेद ।
 ब्रह्मा । बृहंमा । जानं । फटान । गृहं । निठ । निठं । ठ । जानं । शोकं । कौकं । कोकं । डक ।
 वजी । इस । डक । ग्रहे । लिड्व । धरै । वेद । मुषं । गजे । जौगि । सठी । हुंअं । हुअं । दुषं ।
 मछ । धरे । रूपं । रूप । छिले । सतयं । अत्र । परै । छौनि । थक । छकं । विछैकं । विछकं ।
 करै । कुभ । नदं । विहदं । सुरानं । पानि । सुरानं । नही । संघ । शंघं । प्रलंबं । प्रलंब । धुमर ।
 धुमर । अंवर । अत्र । दझी । मझ । पौडस । कला । सुझी । धरै । गेन । मैम । पानं । लरै । आउदानं ।
 मनौ । मनौ । आसुर । वासुर । सत । सुत्त । करकंत । मछी । कटि । कटि । मछं । मनौ । मनौ ।
 आउवं । वजि । जनु वज्र वछं । वज्जि । वछं । धपै । पानि । फटे । छैदं । कदै । पैट । मझ ।
 सुर वैद । वैदं । धरै । चले । व्रष्य । थानं । किए । वजं । वज्ज । पुरात । वृष्टि । वृष्ट । दैवं ।
 सुरब्रह्म । सैवं । * बूंदीवाली में इस तुक के दोनों पाठ उलट पुलट है मुष । वैद । पानि ।

धजा धूमरं अंमरं अंब दम्भी । तिनं मभम्भी षोडष्कला अप्य सुभम्भी ॥ १०० ॥
 धरे गेन पानं लरे आवधानं । मनो आसुरं वासुरं सत्त पानं ॥
 कारकत मच्छी कटिं कट्टि मच्छं । मनो आवधं वज्जि जौं वज्ज वच्छं ॥ १०१ ॥
 धपे पानि लड्डं फटे पारि छेदं । कढे पेट मभम्भीं सुरं वेद वेदं ॥
 धरे अप्य पानं चले ब्रह्म थानं । किये जैत वज्जं पुरानं सुरानं ॥ १०२ ॥
 करी विष्टि फूलं सुरंसिद्ध देवं । सुअं ब्रह्म जय्यं कियं अप्य सेवं ॥
 मुषं वेद पिद्धं न लै पानि ब्रह्मं । जलै षोलि पान भजै अति अंमं ॥ १०३ ॥
 न्दियं चारनं भट्ट वेदं सु पानी । रहे ब्रह्म ग्यानं हरी सिद्धि रानी ॥
 अपं इद्र आपं भगं कोरि कोरं । कियं मच्छ रूपं छुटे वेद रोरं ॥
 छं ॥ १०४ ॥ रू ॥ ११ ॥

॥ कच्छावतार की कथा ॥

दूहा ॥ मंडि गजिन बहु बल उअर । तल कल बल जल जाल ॥
 मंदिराचल बल विपुल पुल । थल थरहर हल पाल ॥ छं ॥ १०५ ॥ रू ॥ १२ ॥
 दंडमाली ॥ धरि कच्छ रूप सरूपयं । कुस कूप मंडित भूपयं ॥
 धरि मंद प्रवत पुठयं । जल जात चाल गरिठयं ॥ १०६ ॥

न हमारे पाठकों को यह स्मरण मे रखना योग्य है कि चंद्र के इस वाक्य "दियं चारनं भट्ट वेदं सु पानी" से वास्तव में चाहे यह ऐसा ही हुआ हो अथवा न हो किंतु ज्ञान होता है कि इन दोनों जाति के मनुष्यों में जो वर्तमान समय में अनवन दृष्टि आती है वह चंद्र के समय में विद्यमान न थी किन्तु कुछ थोड़े ही काल से उस का जन्म हुआ है । यदि हम यह भी मान लें कि चंद्र के समय मे इन दोनों जातियो में परस्पर विरोध था ; तथापि चंद्र कवि प्रशंसा करने के योग्य है, क्योंकि उसने चारनों का नाम अपने इस ग्रंथ मे कहीं नहीं छिपाया है वरुक्त पहिले उनका नाम उसने प्रयोग करके फिर अपनी जाति का नाम प्रयोग किया है । तथा इन दोनों जाति के मनुष्यों की उत्पत्ति के शोधकों को यह वाक्य बारहवें शतक तक का प्रमाणरूप भी उपलब्ध ममजना चाहिये । इस महाकाव्य मे आगे अनेक स्थानो में ऐसे प्रयोग आवेगे । इन दोनों जातियो की उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार के शंका समाधान हे । परन्तु इन लोगो की उत्पत्ति का कुछ विषय हमारे पास एकत्र किया हुआ है वह अवकाश मिलने पर यदि कहीं आवश्यकता हुई तो हम किसी टिप्पणी मे लिख विदित करैंगे ॥

ब्रह्म । जल । जलं । षोलि । षोलिं । पान । न्नति । भ्रमं । वेदं । पानी । हरे ब्रह्मम ग्यान हरी सिद्धि रानी । हरे । रानी । अयं । इद्र । भगौ । भगे । कोर । सौर । कोर । कोडिर । किय मन द । छुटे वेद जौर । मछ । छटे ॥

१२ पाठान्तरः—गजि गन । उर । मंदिरा । वव ॥

१३ पाठान्तरः—छेद दंडमाली । कछ । कुस । कुपयं । प्रवत । पुठयं । गरिठयं । गरिठयं । गरिठयं । वाम । दिन । अदिन । वम । प्रचंडय । श्रुति । सुति । अहिगुन । गुनगन

दिव वाम मान न छंडयं । दित अदित वंस प्रचंडयं ॥
 स्तुति चवत सुर नर गुन गनं । * * * * ॥ १०७ ॥
 लिय रतन चवदसु वीनीयं । वंटि वंटि निज कर दीनयं ॥
 वर विदरि विहरि वोरयं । सुर असुर मिलि जलफोरयं ॥ १०८ ॥
 जै चवत चंद कविदयं । कलि क्रूरमं वर इंदयं ॥ छ० ॥ १०९ ॥ रू० ॥ १३ ॥
 दूहा ॥ कहि सनकादिक इन्द्र सम । किम लिय पाथर तन्न ॥
 कहै इन्द्र सनकादिकसौं । सुनौ कहौं करि भ्रम ॥ छ० ॥ ११० ॥ रू० ॥ १४ ॥
 दैत राज धर प्रवख हुअ । अमर परे सब मंद ॥
 गण पुकारन सकल मिलि । जहां लछ्छि गोविंद ॥ छ० ॥ १११ ॥ रू० ॥ १५ ॥
 कही ईस इन्द्रादि सौं । सजौ सेन चतुरंग ॥
 तुम सहाय असहाय अरि । करौ दैत सब भंग ॥ छ० ॥ ११२ ॥ रू० ॥ १६ ॥

लघु नाराज ॥

कियंति नह भदयं । लियंति रथ्य बहयं ॥ चले सु देव इंदयं । करे सु सेन वंदयं ॥
 अनेक धालुषं धरं । अनेक चक्र संवरं ॥ चले अवड्ड षेदयं । परे भरेति वेदयं ॥
 धजा पताघ धूमली । समूह सेज*संमली ॥ दईत दूत दौरयं । करे सनाह जोरयं ॥
 चले सु दैत चंचलं । मनो अघाठ धूमलं ॥ मिले जू रिषिमानयं । जू देवता दधानयं ॥

* यह तुक घटती है । लिय । चउद । सु वीनयं । वंटि । विदुर विदुर । विदुर । चिहुरि वारय ।
 असुर । सौमयं । ववत । कविदय । कवीदयं । व्रमं । कुउम । चर ॥

१४-१६ पाठान्तर-पाथौ धर । पाथेधिर । सनकादि । सौ । कहू । कहौ । भिन्न
 भिन्न ॥ १४ ॥ देतराज । हअ । परै । लछि । गोविंद ॥ १५ ॥ ईश । ईद्रादि । सौ । सजो । सहाय ।
 दैत्य ॥ १६ ॥

१७ पाठान्तरः-नद । भदयं । लियंति । रथ । वदयं । चलै । इद्र । दैवयं । करै । सैन ।
 एवयं । अनैक । संचरं ॥ । चलै सु वंद्र षेदयं । परै भरेति वैधयं । वेधयं । पताक । धूमली ।
 सन्नह फौज संमली । समूह फौज संमली । करे । जोरियं । चलै । चंचलं । मनौ । धूमलं । मिलै ।
 सु रिषि । रिप । ज्यौ । ज्यौ । देवता । त्रिलोक । नैवता । लछमी । लछिमि । * यह बूंदीवाली
 पुस्तक में नहीं है । कैसवं । केशवं । भालयं । यौ । यौ । यो । दइत । यो । यौ । दैव । झुरयं ।
 मिलै । कछावनिर । किदयं । लछंमि । लछमी । जित । गिरि । धरे । पिठ । नैत । मथयं । दइत ।
 मुप । दपयं पुछ । दैव । रषयं । विरौलि । धुमही । धूमही । प्रथम । लछिमी । लछमी । लक्षमी ।
 वप्यमी । लक्षमी । स्रपारिजात । सौमं । उगि । ऊगि । सु कल । सु बैन । गज । उजला । सु
 रग मौधनी परा । सु रंग मेघनी परी । अस्व । धनुष । समैन । पपयं । दस । दर । दैन । दक्षयं ।
 फैन । मक्षयं कितैक सैन कुकही । मुए सु । मान । मुकही । लपंत रन ईदयं । लयं । अमृत । अप ।

दियं सराप देवता । त्रिलोक मध्य तेवता ॥ अवंत लछ्छिमी गईनराधि देवन्निम्नई ॥
 न केसवं न दानवं न नागयं न भानवं ॥ यु देवता विचारयं नही सनाह भारयं ॥
 दईत भग्नि दूरयं । यु देव दूत भूरयं ॥ मिले त्रिलोक संमिली । बिना पराग विह्वली ॥
 कछावतार किड्यं । लछ्छिमी जीत लिड्यं ॥ मदाचलं महा गिरं । धरे सुपिट्टु उष्यरं ॥
 सुनाग नेत किड्यं महा समंद मंथयं ॥ दईत मुष्य दष्ययं । सु पुच्छ देव रष्ययं ॥
 विरोलिद्विज्यौ मही । घटातटा कधूं मही ॥ लियं प्रथम लछ्छिमी । सुकौस्तुभं चवछ्छिमी
 सु पारिजात पानयं । सुराधनं त भानयं ॥ जु सोम उगि सुकला । सु धेन गज्ज उज्जला ॥
 सुरं भ मोहिनी परी । सुसप्त अश्व सुडरी ॥ धनुष्य ईस संषयं । विषं सभेत पष्ययं ॥
 सुचारि दिस्स पंचही । दिण सुदेव संचही ॥ दईत वंस दभभयं । सुनाग फेन मभइयं
 कितेक सेन कुक्कही । मुएति मान मुक्कही ॥ लियं सुरत्न इंदयं । दईत किड्य दंदय ॥
 अमृत अष्य अचरं । कियं सु देव कचरं ॥ अनाथ नाथ अष्ययं । दईत देव चाष्ययं ॥
 पवंत दीय पष्यली । दईत देव रष्यली ॥ अमृत देव पिड्ययं । सुरा सु दैत सिड्ययं ॥
 जु सोमनाथ सों कही । रवी सुरा सु देत ही ॥ हरी सु चक्र सड्ययं । जु दैत वस बड्ययं ॥

छ० ॥ ११३-१२८ ॥ रू० ॥ १७ ॥

कवित्त ॥ दानव तव गय दौरि । करे इक बंध कटकं ॥

हुअ देवासुर जुड । चढे देवता चटकं ॥

धरे रथ्य पष्यरे । आइ लग्गे सम धारं ॥

रथ सौं रथ भंजियहि । कूक लग्गी पुकारं ॥

जोगनी जोग माया जगी । नारद तुवर निहसिया ॥

दस एक रुद्र दारिद्र गता दानव तामर हसिया ॥ छ० ॥ १३० ॥ रू० ॥ १८ ॥

अचरं । अचर । कवरं । कचरं । आथ । अथं । दानव । दानव । चपय । चपयं । पावंत । पावंत
 दीय पपली । दानव । रुपली । अमृत । दैव । सुग न । सुरा जु । ज्यु । सौरुनाथ । रची मुरा
 स दौर ही । संधियं । मदय ॥

† इस महाकाव्य में मुमलमानी भाषा के शब्द प्रयोग हुए देख कर शका करनेवालों को जानना और विचारना चाहिये कि किसी पुस्तक में कौज और किसी में सेन पाठ मिलते हैं । क्या यह दोनों पाठ चंड ने प्रयोग किये हैं ? ॥

१८ पाठान्तर—गय तव । करे । कटकं । देवामर । चढे वता चटक । चढे । चटकं ।
 परे । रथ । पष्यरे । पपरे । लग्गे । सम वार । सुं । से । लग्गी । पुकार । पुकारं । जुगिनी । जोग ।
 तुवर । निहसिया । दारिद्र । तामर । हसिया ॥

भुजंगी ॥ इतें चक्रधारी कियो चक्ररूपं । उतं कुंभनी कुंभ सा दैत्य भूपं ॥
 उतें दानवं बोलै बोलै करारै । इतें देवता गज्जयं सार भारै ॥१३१॥
 रिषं हथ्य सादिष्ट दीनी असीसं । तिनं वज्रमै कोप दानव्व दीसं ॥
 कुकी जोगमाया बकी थान थानं रटै । नारदं तुंवरं ब्रह्मगानं ॥१३२॥
 कियो कुंभ कोपं चलीसंग माया । इतें इन्द्र ब्रह्मादि सब देव धाय ॥
 घरे देव देवाधि चारथ्य चूरोधजा की पताषं । लगी धुरि धुरै ॥१३३॥
 छुट्यौ पट्ट पीतंवर कटि छुट्टी । मनो स्यांम आकास तें वीज तुट्टी ॥
 हुए सिथ्यलं देव दानव्व धारकरें रूप अन्नैक अन्नैक काए ॥१३४॥
 तवें भूत वेताल नचैति घाए । धरे पग चीशूल अन्नैक धाए ॥
 ततथ्ये ततथ्ये नचै तार विद्धी । कतथ्ये कतथ्ये कहै देव किद्धी ॥१३५॥
 परथ्ये परथ्ये कियं आर पार । मनथ्ये मनथ्ये कियं देव मार ॥
 असित्तै असित्तै हुए एक सेनं । असत्तै असत्तै महोदेवमेन ॥१३६॥
 अलुञ्जे अलुञ्जे करी अंतक्षुभञ्जे । हुए देवता दानवं अंगदभञ्जे ॥
 फिरै रथ्य सा देव कीनं अनूपं । घरे रथ्य अप्प करे कछ्छ रूपं ॥१३७॥
 न लग्गै न लोहं न संगी न सार । न अस्चं न लेपं न छेपं न पार ॥
 फिरै चक्रधारी सु राषीस वृंदं । किये एकठे एक एकं मुनिंदं ॥१३८॥
 हुए चक्र अन्नैक अन्नैक भारी । मरे राषिसं वृंद दैत्यान मारी ॥
 इसौ एक अज्जेज जुद्धं अनूप । हुअं देव देवा सुरं क क रूपं ॥१३९॥
 इम कछ्छपं रूप ओप्यौ अपारं । धरा पिठु रष्यी सरापं सुधारं ॥
 जुगं अ त दानव्व भूमौ उपारी । तवै कोल रूपं कियो श्री मुरारी ॥

छ० ॥ १४० ॥ रू० ॥ १९ ॥

१९ पाठान्तरः—इतै । कियो । उतै । कुंभनि कुंभ । सा दैत । भुपं । उतै । ब्रह्मीवाला
 पुस्तक में नहीं है । बोलै । बोलै । करारै । इतै । देवता । सजिय । भारौ । रिष । हथ । तिमं ।
 मै । कौप । दानव । जोगमाया । थाम । थानं । रटै । रहे नारनं । तुवर । ब्रह्मग्यानं । कीयो ।
 कौपं । इने । इद्र । सादेव । बरे । चारथ्य । पुरै । धुरि धुरै । छुट्यौ । यद्र । पीतंवर । कटि ।
 छुट्टी । मनो । श्यांम । तै । हुअै । सथलं । सतलं । दैव दानव । करै । अनैक । आये । काये ।
 तवै । भुत । वेताल । नचैत्रि घाई । नचचैत्रि थाई । परै । पग । त्रिशूल । अनैक । अनेकं । अघाई ।
 वाई । ततथ्ये । ततथ्ये । नचै । नचै । तारि । विद्धा । कतथ्ये । कतथ्ये । कहै । दैव । कियो । परथ्ये ।
 परथ्ये । मनथ्ये । मनथ्ये । दैव । असितै असितै । हूए कैक सेनं । हुए कैक सेन । यसितै । यसित ।
 मन । अलुञ्जे । अलुञ्जे । अलुञ्जे । अलुञ्जे । हुअै । देवता । दानवं । दञ्जे । दञ्जे । फिरै रथ्य । दैव ।

कवित्त ॥ धरि कछ्छप कौ रूप । भूप दानव संहारे ॥
 लइ लछि सागर सुमथि । रिष्य आपान सुधारे ॥
 राह सौस किय घंड । मंडि दानव सब भंजिय ॥
 किय देवासुर जुद्ध । ईस वर करि अरि गंजिय ॥
 धारी सु धरा हरि पिठु पर । दिए रत्न बंठिय सुरनि ॥
 कवि चंद दंद मेटन दुनी ॥ श्री कछ्छप तेरे सरनि ॥ छ० ॥ १४१ ॥ रू० ॥ २० ॥

॥ वाराह अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ हिरनाषह प्रियवी हरी । धर दानव अवतार ॥
 इन्द्रादिक नागन सजिय । प्रति अवतार पुकार ॥ छ० ॥ १४२ ॥ रू० ॥ २१ ॥
 कवित्त ॥ प्रति अवतार पुकार । लीन प्रियवी सर पारिय ॥
 जवन जिहां न सु ठाम । धरनि सत साइर गारिय ॥
 किन्न रूप वाराह । जोति मन जोति सु कट्टिय ॥
 बहुल रूप तन दुरद । रिसन वैश्वानर बट्टिय ॥
 कवि चंद चवत दानव भिरन । धरन धरा रद अग्र वर ॥
 सुर राज काज उपर करन । कोल रूप जगदीस धर ॥

छ० ॥ १४३ ॥ रू० ॥ २२ ॥

कानं । अनुप । परै । रय अयं । आय । करै कछ । लगै । स लौह । सु लोहं । मंनं सगी ।
 कुसस्त्र । कुशस्त्रं । न लगै । न लगै । न छैव । न छेवं । कुशस्त्र न लगै न छेव न पार । फिरै ।
 सु रापिन । वृदं । कोए । मुनीद । अनैकर । अन्नेक । मुरै । मरै । मुरे । इसो । अजेज । अजेज
 अनुपं । हुआ । सुर । कछयं । औय्यौ । पिठ । रपी । जुग दान । भुमी उधारी । उधारी । तैपै
 कौल । कयौ ॥

१४० पाठान्तरः— कवय । को । भुप । दानव । संहारि । लई । लछिछ । सुमरिपिथी ।
 सुमथि । रिपि । स्यायन । सुधारि । शीश । काय । मीड । दानव । भजिय । भंजाय । देवासुर ।
 युद्ध । इससर वर करि मकिजिप । ईशवर । धारि । पिठ । परं । दए । वट्टिय । सुरन । दट ।
 गैटन । कछप । तैरै । सरण । सरन ॥

१४१ पाठान्तरः— हयग्रीवहि प्रियवा हरी । हयग्रीवहि पृथिवी हरी । प्रथमी । धुर । दानव ।
 ब्रह्मचार । ब्रह्मचचार । ब्रह्मचार सुर । इन्द्रादिक । सुर इन्द्रादि ॥

२२ पाठान्तरः— नील प्रथी सर पारीय । जव्वन । जिहांन । ठाम सापर । गारीय । कानं ।
 किन्न । जौति । मनि । मोने । जैति मनि प्रगटी । कट्टिय । कट्टिय । कट्टिय । बट्टिय । ववत ।
 वरनि । उपर । कौल ॥

कवित्त ॥ बल प्रचंड बल मंड । ज्वल विकराल काल कल ॥

धर बितंड वाराह । वीर वीरन विदारि पल ॥

हरि हरनछ्छि सु अछ्छि । बछ्छि वर जछ्छि विभावस ॥

विधि विधार वीधार । विदर विकरार भार असि ॥

उद्धारि धरा रहि अग्र वर । सुर विकास किय च द वर ॥

जै जया सबद धुनि सुर चवत । जोरि पानि बंढै सु चिर ॥

छ० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ २३ ॥

वृद्धनाराच ॥

परठि प्रान मैसुरांनभांनिअष्विभज्जयं । कला गृहीरनीरतीर आय दैत गज्जयं ॥१४५॥

पयं पताल सीम सग अश्व मुण्ण दष्ययं । रटंत वैन भुज्ज गेन रैन नैन रष्ययं ॥१४६॥

भुजाग्र भाग मेर नाग इद्र दाग दभ्जयं । वरन्न धुम्म, धुम्मरं सुरं पुरं सु धुज्जयं ॥१४७॥

पया पुरं धरा धुरं, नरानर नरष्ययं । इसौ अवाह अश्व दाह एकराह दष्ययं ॥१४८॥

जुटे जुरं भरे भरं, सुरे सुरं सु वाहयं । चटे चटं नटे नटं लटे लटं सु साहयं ॥१४९॥

करंत कूक मान मूक दैत दुष्य मानवां पगांनि पानि साहि कांनि लैरु चीरि दानवं ॥

॥ १५० ॥

करी सु कित्ति दैत देव नीति जीति रष्ययं । हयं सु ग्रीव किडरी वकट्टि जीव नष्ययं ॥१५१॥

सुरा निसार लिद्ध भार दैत्य मारि धारनं । अये वराह अश्व दाह दैत्य दाह दारुनं ॥

छं० ॥ १५२ ॥ रू० ॥ २४ ॥

२३ पाठान्तरः—मंडि वितुंग । वितुंड । हरनाछि । अछि चाछि । वाछि । जछि । जगि ।
वहि विधार विद्वार । विधि विधार विद्वार । विकराल । उद्धारि । धरा । रह । शवद । सुरि ।
जौरि । पानि ॥

२४ पाठान्तरः—परठि प्रान मैथ रान । परठि प्रान मेथ रांन । मान । अपि । अपि । भजयं ।
नार । आइ देत । गज्जय । गजयं । प्रिथी पताल । पृथी पताल । सृग । मुप । दष्ययं । रटनैतवै-
नभुजनैः । वैन । भुजनेन । रैन नैन । नैन । रष्यय । मेर । इद्र । दागइज्ययं । दभ्ययं । वरन्नं ।
वरन । धुम । धुम । धुम्म । धूमर । सुर । स । धुजयं । पयापुर । रष्यय । इसो । दष्ययं । जुदै । जुदे ।
सुरै सुर । सूरं । स । वाहयं । चटै चट । नटै नटं । लटै । अक । कुक्क । मान । मुक्क । मुक ।
दैत्य । दुप । साहिकानं । चीरे । वीरि । किति । दैव । नीति रष्ययं । केडरी वकट्टि । नष्ययं ।
नष्ययं । सुरान सार । सुरं नसार । धारिनं । वैराह । दाह दारुनं ॥

कवित्त ॥ करि विरूप वाराह । धरनि पुर अविगत षिल्लिय ॥
 जनु कि मेघ उतक ठ । कला ससि षोडस भल्लिय ।
 असिय मुष्प दंतलिय । तरुन तिष्पिय आधारिय ।
 मेर चंद्र मनु बीज । चंद्र मनि परह सुधारिय ॥
 आरोपिप्रथिय अंबर पुरह । सत साइर संसै परिय ॥
 कहि चंद्र दंद करि दैत सौं । धरनि धार अइर धरिय ॥
 छ० ॥ १५३ ॥ रू० २५ ॥

भुजंगी ॥ बपू बीर बीर धृतं धृत्त सारं । दिठं दुष्ट दाने कलं कोल कारं ॥
 वरं तुंड तुंगं विसालंत नैनं । छिनं छीन लोकं जुरे दूत सेनं ॥ १५४ ॥
 रुधिं फट्टि वज्रंग वज्जे वितूरं । गनं आन कंतं वजं पंच पूरं ॥
 अवं सोर भारं भिरे भूर भारौ । तिनं मेक मानी अफाली असारी ॥ १५५ ॥
 घटे घोष छोनी बलं छीन नूरं । धरे सुद्ध उद्धं दिवं समजूरं ॥
 धरे दंत धारा वरं सेष औपं । मयं कंक लंकं कियं कंठ लोपं ॥ १५६ ॥
 जयं जोगधारी महापान पानं । हयं ग्रीव नषे तिनं तोरि तान ॥
 करे तुंड तुंडं वितारंत तारं । तियं लोक सोकं विलोकन पारं ॥ १५७ ॥
 सुरे मूर कंतं जयं जो करालं । समं गुच्छ अछं करं जूल जालं ॥
 चवै चंद्र चंडी नमो वेद चारं । नमो देव कोलं वरं रूप सारं ॥
 छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ २६ ॥

२५ पाठान्तरः—कर । करी । अविगति । पलियं । षिलिय । जनु कि । जनु कें । षोडस ।
 झलिय । ईसी । इसी । मुप । दन्तीय । दितलीय । तरुनि । तरुन । तिषिय । तिपीय । आधारीय ।
 मेर । मनौ । मनौ । सुधारिय । आरोप । आरोप । पृथी । प्रिथी । सायर । कवि चंद्र दंद करि
 दैत सौ । कवि चंद्र दंद करि दैत सौ । कहि चंद्र दंद कहि दैत सौ । धरनि धार ॥

२६ पाठान्तरः—वयं । वपं । धृत । धृत । दिवं । दानै । कौल । तुग तुंड । तुंगं तुंडं । नैनं ।
 छिन । लौकं । दूत । सैनं । दरुधि । रुद्धि । वज्ज । वज्जे । विनुर । आनं । पुरं । अवं । सोर ।
 भिरे । भुर । मैक । मानी । घटे । औप । छोनी । छलं । ललं । वीत । नूरं । वरे । मुद्ध उद्धं ।
 मुद्धं उद्धं । दिव । समजूरं । समजूरं । धरे । वर । सेष । औपं । कियं । लोपं । जोगधारी । पानं ।
 पानं । हयग्रीव । नषे । तोरि । करे । विलोकन । मूरं । कैति । जो । गुच्छ । अछं । जूल । निमो
 दैचार । देव चारं । नमो । कौल ॥

कवित्त ॥ कोल रूप जगदीस । हत्यौ हयग्रीव सु दानव ॥

जय जय सबद चवंत । सुमन वरषिय सुर मानव ॥

पद्मारे हरि लोक । सोक मेय्यौ सबन सुर ॥

कोइक काल अंतर । हुओ हिरनंकस आसुर ॥

तप ईस उग्र परसन्न हुओ ! ब्रह्म सिष्ट नह तौ मरन ॥

कवि चंद कष्ट मेटन कलू । कोल रूप तेरे सरन ॥छं० १५६॥रू०॥२७॥

॥ नृसिंह अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ सुवर ईस वरदान दिय । किय सुरपति अनुकाज ॥

अवनि असुर अदभुत तप्यौ । चप्यौ तीनपुर राजा ॥छं० १६० ॥रू०॥२८॥

जाइ पुकारे सब सुर । जहाँ आप जगदीस ॥

दानव तप चै लोक लिय । वर अप्यौ तिन ईस ॥छं०॥१६१॥रू०॥ २९॥

ब्रह्म सिष्ट सौं नां मरै । सस्त्र अस्त्र नहि जाम ॥

तब हरि नरहर रूप किय । असुर विदारन काम ॥छं०॥१६२॥रू०॥३०॥

घरक घंड घंहे अखिल । तिल तिल षल भै भीर ॥

बिहरि थंभ सुअंभ वर । उदर डारि डर झीर ॥ छं० ॥ १६३ ॥रू०॥३१॥

विराज ॥ जयं सिंघ रूपं । भयं भीत भूपं ॥ वजे घग्ग घंभं । स्वरूपं स्वयंभं ॥ १६४ ॥

द्रिगं तेज तामं । हवी जान जामं ॥ मुछं सेत सारं । जयं देव धारं ॥ १६५ ॥

हयं रूप दानं । मृगंकस्य भानं ॥ रवरूप पूरं । लवी लोक स्वरं ॥ १६६ ॥

तिषी तष्यि चूरं । कनंकीक नूरं ॥ दिठं दिठु मूरं । बजी तर तूरं ॥ १६७ ॥

२७ पाठान्तरः—कौल । हत्यौ । जै जै संवद चवंत । वरषै । वरषे । पाधारे । पवारे । शेक । सौक । मैय्यौ । सबन कैइक । केइक । कल । अंतरे । अंतरे । हुओ । भयौ । हिरनंकुस । इस । ईश । प्रसन । प्रसन्न । तह । तौ । मेष्टन । कलु । श्रीकौल रूप तेरै सरनं । शरन ॥

२८—३१ पाठान्तरः—सुवर । ईश । वरवान । वरदान । करि । सुर पलि । अदभत्त । चप्यौ ॥ २८ ॥ जाय । पुकारै । सबनि । सा । निवर । जहा । रानव तप भै लोक लिय । दानव । अप्यौ । इस । ईश ॥ २९ ॥ ब्रह्म । सिष्टि । सौं । सुं । षह जाम । शस्त्र । नह जाम । नहर । करि । मैछ विदारण काम । मोछि । काम ॥ ३० ॥ घंडन । आपलं । विदरं । विद्द । थंभ । अव । अंव । भर । वर । उदरि । झार झर झीर । उदर डारि डर डीर ॥ ३१ ॥

३२ पाठान्तरः—सिघ । भुपं । वजै । थंभ । स्वरूप स्वयंसं । तेज । जानि । जामं । सेत । चारं । देव । मुगकस्य । पूरं । लोक । शूरं । सूरं । तिषी । तिष्य । चुरं । नूरं । दिठ दिठ नूरं । हिय

जयं देव दूरं । सिरं संम जूरं ॥ दिषे विष्यनन्दी । भयं भी अनंदी ॥ १६८ ॥
 ट्रिगं दिट्ट चकी । रही मौन पकी ॥ मनं जोग जकी । थलं थूर थकी ॥ १६९ ॥
 प्रह्लाद तकी । करं हूरि बंकी ॥ दिवं काम अंकी । सुषं लोक जंकी ॥ १७० ॥
 बढी वेद बानी । कवित्ता वपानी ॥ कथं गछ्छ कछ्छी । चवं लोक वछ्छी ॥ १७१ ॥
 जयं देव रछ्छी । बटं वीर मछ्छी । उरं मभ्छ पछ्छी । तिनं तांम अछ्छी ॥ १७२ ॥
 सुषं सुष्य सानी । हरी रूप रानी । बजी दिव्य भेरी । श्रियं सिंघ केरी ॥ १७३ ॥
 कवी चंद चंदं । जयं जै अनंदं ॥ * * । * *

॥ छं० ॥ १७४ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

कवित्त ॥ वीर हक बर बज्जि । थंभ फट्ठ्यौ धर फट्टिय ॥

निडर जोति निव्वरिय । लयौ मृगकस्य दवट्टिय ॥

धरनि धूरि धुंधरिय । तीन भुवनं परि भग्गिय ॥

भयौ सद्द हंकार । जोग माया ते जग्गिय ॥

प्रह्लाद थप्पि उथ्यपि अरिन । तीन लोक सुर असुर डरि ।

धिल अधिल षेल षेलन षलन । कहर रूप नरसिंह धरि ॥

छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

लघुनाराच ॥

लियंत रूप नारसं । वदंत वेद चारसं ॥ अरुन्न तेज उगगयं । भरक्कि देव भग्गयं ॥ १७६ ॥

उचाय धाय उडले हिरन्नकस्य षंडले ॥ छुटंत कट्टि ठुंमरं । उठंत मुछ्छ धुंमरं ॥ १७७ ॥

ललंत लट्ट लै लटा । भटा पटा कछ्छटा ॥ षटाक षट्ट षल्लरी । कटाक बज्जि गल्लरी ॥ १७८ ॥

दिट्ट मूरं । तुरं । देव । सिर । सम । जूर । दिषे । विष । वृष्य । भयं भीय नदी । भयं अनंदी ।

दिवाहे छवकी । रदी मौन यकी । दिव । दट्ट । चकी । मौन । पकी । मन । जोग । जाग ।

नकी । थुर । थुन । थकी । प्रहिलाद तकी । प्रह्लाद तकी । कर । हूर । काम । लोक । वेद ।

वपाना । कैव गछ कछी । लोक । चछी । जय देव रछी । खटं वीर मछी । मंझ । मझ । पछी ।

अछी । सुखी सुख सानी । रानी । भेरी । श्रियं । सिंघ केरी । कवि । अनंदः ॥

३३ पाठान्तरः—वीर । हक । वरज्जि । निझर ज्योति निधरयं । ज्योति । निवरी । लीयो

लीयो । दवट्टिय । धुरि । भवनं । भग्गिय । सवद । हुकार । जोग । तै । थपि । थापि । उथापि

लैक । लिपि अपिल पैल पैलन पुलन । धिल अधिल पैल नषचन कहरु ॥

३४ पाठान्तर.—लीयत । वदत । वेद । चारसं अरुनं । तेज । उगयं । भरक्कि । देव । भग्गय ।

उडलै । हिरन्यकस्य । हिरन्नकस्य । षंडलै । वुदंतं । कटि । कट्टि । त्रुंमरं । टुंमरं । उठंत । मुछ्छ ।

धुंमरं । धुमरं । धुमरं । ललितं । ललित । लट । लै । लु । पदाकि पद पिलरी । पटाकि । पट ।

दटाकवज्जिदोठयं । कलाअनेककोटयं । नष विदारिनष्ययं । भराकिभंजिभष्ययं १७९
 उरक्त माल अंतयं । भगेभगत्त अंतयं । नराधिपन्न देवता । न नागयं न सेवता
 छं० ॥ १८० ॥ रू० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ मुनिवर नरहर कथ्य सुनि । भय सकल मन पंग ॥

कौन समै नरहर असुर । जुटे जुइ जोधंग ॥ छं० ॥ १८१ ॥ रू० ॥ ३५ ॥
 वेली भुजंग* ॥

* * चरन्नं सरन्नं सु मित्रं । प्रभा स्वर सेव सु पावं पवित्रं ॥
 तिहूं लोक कौ सोक भेटन्न काजं । धरयौ रूप अत्युग्र अद्भुत्त राजं ॥ १८२ ॥
 तिनं तेज तं चास (अति)* आस्वर जारे । सुतौ अरभ भे गरभ प्रदीय डारे ॥
 महा मुदितं (अति)* तेज ति रक्त नैनं । प्रलै काल (रवि)* कोटी प्रगटंत गैनं ॥ १८३ ॥
 करं कपितं चपितं सेस सीसं । गलं गरजितं तरजितं ब्रह्म ईसं ॥
 डिगे षंभ ब्रह्मंड दिग्पाल हल्ली । धरा चन्न भारतु लाजे मतुल्ली ॥ १८४ ॥
 इसौ देष रूपं असुरेस धायौ । ग्रहे षगता वीरसों षेत आयौ ॥
 उद्यौ सज्जि आवद्ध सन्मुष्य वत्तं । मनो मत्त द्वै जुइ तथ्यै निवृत्ते ॥ १८५ ॥
 गह्यौ धाइ दानं भुजं बीच गाढौ । न जुट्यौ विछुट्यौ भयौ दूरि ठाढौ ॥
 दिषै इंद ब्रह्मा भयौ चास हीयं । गयौ हाथ तै तथ्य आचिज्ज कौयं ॥ १८६ ॥

पटाकि । वजि किलरी । कल्लरी । दडाक । दटाकि । वजि । दौटयं । अनैक । कौटयं । नष ।
 नष्ययं । भजि । भष्ययं । अरक्त । आरक्त । आतयं । भगे । भगत्त । भूतयं । नराधियत । देवता ।
 सेवता । मनागयं न सेवता ॥

३५ पाठान्तरः—सुनि । नरहर । कथन । भयं । मुनि । कौन । कौन । समे । जुदे । जोधयं ॥

३६ पाठान्तरः—चरन । वरन । सरनं । सुमित्र । प्रना । सैव । पावन । लोक । सोक ।
 शोकं । भेटन । भेटन । प्रति उंग्र । अदभुत । अदभुत्त । अद्भूत । राज । विराजं । तिन । तेज ।
 तन * अधिक पाठ है । असुर ॥ असूर । जार । सुतो । अरभ । भय । भयं । गरभ । अति दीप
 झारै । अति दिए डार । मुदित । * अधिक पाठ है । तेज । तिन । नैनं । प्रले । * अधिक पाठ
 है । कोट । कोटि । कौट । प्रगटत । प्रगटंत । प्रगटत । गेनै । कर । कपितं । कपित । चपित ।
 सेस । सीस । गय । गय । गरजितं । तरजित । ब्रह्म । ईसं । डिगे । षंड । ब्रह्मंड । बृहमंड ।
 दिग्पाल । हली । चरन । लाजै । मतुली । देषतें । दैष सरू रूप । रूप । असुरेस । असुरेस ।
 गृहे । ग्रहे । वीर । सौ । षेतं । सज्जि । आउद्ध । सनमुष । प्रवृत्ते । वरतं । मनौ । मनौ । मत ।
 द्वय । दुय । तयै । तयै । तये । निवृत्ते । गृहभो । ग्रहभो । धाय । दानव । दानव । भुज । बीच ।
 वाचि । न जुप्रा । दूर । दिषे । ब्रह्मा । भयौ । चास । हथ । तै । तें । तथ । आवरिज । आचि-

भयौ जुद्ध तिं बैर तासों अपारं । कहा बर्नियै सेष पावै न पारं ॥
 दबट्यौ भवट्यौ उछायौ पछायौ । हुतीयुद्ध की आस तातें न माय्यौ ॥१८७॥
 तबै कोपिकै दुष्ट उछङ्ग लीनौ । हिदै फारि तत्काल सो डारि दीनौ ॥
 गरज्यौ गुजाय्यौ अरौ चंपि अंसै । कहा ब्रन्नि कौ रूप तिं बैर तैसै ॥१८८॥
 रही दंत विच्चंत सोहंत सारं । मनो मेरु गिष्टुंग तें गंग धारं ॥
 सुभै सीस पै मुछ्छ कौ भौर अंसै । महाराज सीसंदुरै चौर जैसै ॥१८९॥
 जुलित् पावकं तेज लोचन भारी । सकै दिष्ट को देव दानं सहारी ॥
 तथ्यौ हेम ज्यौ देह की क्रंति सोहै । सुजोती रवी कोटि दिव्यंत मोहै ॥१९०॥
 तिनं तेज ज्वाला जरे दुष्ट तेतं । रहे संत सरनं लहै पुष्ट हेतं ॥
 हुतौ दुष्ट दानं अमानं सु हत्यौ । सुतौ मृत्यु तत्काल सुरपुर पह्यौ ॥१९१॥
 भई जैत जै सद सुर सर्व हर्षे । सिरं देव नर्सि घपै पुष्पु वर्षे ॥
 अये देव अस्तूति के काज सोई । महा रूप कौ भेद पावै न कोई ॥१९२॥
 सबै सोचि आलो चिहारे निहारे । जिनं दिष्ट पल्लक कोई सहारे ॥
 फुरै वाच काहू न भैभीत सथ्यै । कह्यौ जाइ कै श्रीय देवं सुतथ्यै ॥१९३॥
 तबै लच्छमी आप सोचे विचाय्यौ । इसौ रूप गोविन्द कबहू न धाय्यौ ॥
 इतो तेज जाजुल्य कबहू न देख्यौ । प्रलै पावकं जोति ताथे विसेष्यौ ॥१९४॥
 धरे रूप जेते तिते सर्व जानों । लगै वार कहते न ताथे वषांनों ॥

रज । अचिरज्ज । युद्ध । तन । तिन । बैर । तासों । कहा । बर्णायै । बर्नीयै । बर्निये । सेस ।
 सेस । दपट्यौ । झपट्यौ । हुंती । हती । युद्ध । ताथे । तातें । तबै । कोपिक । कोपिकें उछंग ।
 रिदै । तत्काल । सो । दीनौ । गरज्यौ । गरज्यौ । गुजार्यौ । गुजार्यौ । वपि । अंसै । अंसे ।
 वरनि । वरनि । कहूं । कहूं । तिन । बैरि । बैर । तैसै । तैसे । दंति । दत । विच । विवि ।
 विचि । अंत । सोभन । सोहत । सोभत । मनो । मेर । मेर । गिरि । गिर । श्रंग । ते । तें । तै ।
 पर । पुछ । मुछ । को । डार । अंसै । सीस । दुरे । दुरि । चौर । चौर । जौसे । जैसे । जुलित ।
 ज्वलित । पावक । तैज । लोचन । लोचन । सकै । दिष्टि । कौ । देव । दानव । सहारी । हेम ।
 ज्यौ । देह । क्रंति । महा जोति रवि । जौति । क्यौटि । मोहै । जो है । तेज । नर । रहे ।
 संम । सरन । लहे । हैतं । हुंतौ । दानव । अमानं । हत्यौ । सुता । मृत्यु । तत्काल । तत्काल ।
 सुर । पुर । पह्यौ । पह्यौ । सद । सर्व्वे । सरन । हरषे । मिर । देव । नर्मि । रनसिह । पर ।
 फल पुष्प । पुष्प । वर्षे । वर्षे । अण । आय । आण । देव । अम्नुति । के । मोई । को । भेद । पाव ।
 कोई सबै । सोचि । आलो । विहारै । निहार । जिन । पल पक । कोइन । बोई । संतार ।
 सहारे । काहू । भय । सये । सथ्ये । सथे । जय कर । करि । देवे । देव । तथ्ये । तथे । लच्छमी ।
 सोचै ईसौ । रूप । गोविन्द । कबहू । कबहू । ईसौ । तेज । कबहू । देख्यौ । दिव्यौ । जोति ।

अब आइ प्रह्लाद जो होइ ठाढौ । जिनं हेत कीनौं इसौ रूप गाढौ ॥१८५॥
इहै वत्त ब्रह्मादि के चित्त आई । सुतौ जाइ प्रह्लाद कौं कै सुनाई ॥

छं० ॥ १८६ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ सुनत वचन प्रह्लाद गय । श्री नरसिंह के पास ॥

स्तुति जुति सों ठाढौ रह्यौ । फुंयौ नहीं कछु सास ॥ छं० ॥ १८७ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

सीस नाइ कर जोरि तव । रह्यौ सनमुख चाहि ॥

क्रिपा दृष्टि देख्यौ हरी । भगत वल्लभ प्रभु आहि ॥ छं० ॥ १८८ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

वेली भुजंग ॥

क्रिपा दिष्ट दिष्यौ सु ठह्यौ निनारौ । सु तौ प्रान कै प्रान तें अति प्यारौ ॥

लयौ लाइ छाती धर्यौ जंघ कोस । दियौ हथ्य मथ्यं कियौ दूरि दोस ॥ १८९ ॥

चुम्प्यौ मुष्य नैनं प्रह्लाद केरौ । जरा मृत्यु भै दूर दोसं न नेरौ ॥

भई बुधि निमल महा सुद्ध बानी । तव अस्तुतं क्रान्प्रह्लाद ठानी ॥ २० ॥

ताथै । विशेष्यो । विसिष्यौ । धरै । जैते । तितै तेते । सख । सर्व । जानौ । जानौ । लगे । वार । कहतै । कहतै । ताथै । वषानु । वषानौ । अत्रे । आस । आई । आय । प्रह्लाद । जौ । हेई । ठढौ । ठढौ । तिन । हेन । कीनौ । गढौ । इहि । इहें । वत्त । चित्त । कै । सुतौ । जाय । प्रह्लाद । कौ । कुं । काहें । ककाहि । कह ॥ * * * इस रूपक की पहिली पंक्ति के खाली स्थान में हमारे पास की सब पुस्तकों में—“वंदै वरुन हारे”—यह अशुद्ध पाठ है । इस को शोधने को कोई प्रा-माणिक आधार हम को अभी नहीं मिला और यही दशा अंत की पंक्ति, की भी है अतएव वह खाली प्रकाश कर दिया गई हैं कि विद्वान लोग विचार कर पाठ को निश्चय करें । हमारा सम्मति में तै इन का पाठ हमारे पास की पुस्तकों से भी पुरानी पुस्तकों के मिलने पर ठीक २ शुभना संभवित है । इस की अंत की तुक भर का पाठ बूरीवाली पुस्तक में—“ सुनत प्रह्लाद इह बात चलयौ । रहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलौ ”;—सं० १७७० वाली में—“ सुनिन हक्ति प्रह्लाद इह बात चलयौ ॥ रहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलौ ”;—सं० १८९९ वाली में—“ सुनत हेत प्रह्लाद इहै बात चलयौ ॥ रहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलयौ ”;—और सं० १६४९ वाली में इस का पाठ संवत् १७७० के सदृश ही है ॥

३७-३८ पाठान्तरः—दोहा । सुनत । । प्रह्लाद गौ । श्रीनरसिंह । श्रीनृसिंह । कै । युत । सौ । ठढौ । ठाढा । फुंरचौ कुर्यौ ॥ शीश । नाई जोरि । सनमुख । चाहि । क्रियादृष्ट । क्रियादृष्ट । क्रियादृष्टि । दियौ । सही ॥

३९ पाठान्तरः—छद् भुजंगी प्रयात् । द्रष्टि । दृष्टि । ढढौ । ठढौ । ठढौ । प्रान । कै । प्रान तें अति । पियारो । लय । कोसं । थमथं । सथं । मथ्यं । कीयौ । दोसं । चुम्पा । चुम्पो । मुष्य । नैनं । नैनं । प्रह्लाद । केरौ । मृत्यु । दूरि । दोसं । होस । नेरौ । वूदीवाली । में—भय भइ बुधि । निमल उत्रु ही अ । आय बौल महा सुद्ध बानी—निर्मल । बानी । तवें । अस्तुत । अस्तुति ।

अहो देव देवेस देवाधि देव । तुही अल्प अप्पार पावै न भैव ॥
 अभेदं अछेवं तुही सर्व वेदं । तुही सर्व विद्या विनोदं सुभेदं ॥ २०१ ॥
 तुही ग्यान विग्यान सौग्यान कर्ता । तुही बुद्धि कर्ता तुही बुद्धि हर्ता ॥
 तुही धरनि आकास है पौन पानी । तुहीं सर्व में एक अनेक बानी ॥ २०२ ॥
 तुही जोति संसार सारं सरूपं । तुही अघकालं अकालं अरूपं ॥
 तुही कोटि सूरज में तेज साजै । तुही चंद्रमा कोटि सीतं विराजै ॥ २०३ ॥
 तुही कोटि ब्रह्मा महादेव जेते । तुही कोटि कंदर्प लावण्य तेते ॥
 तुही हेत संतोष आनंद कारी । तुही सोक संताप सर्व प्रहारौ ॥ २०४ ॥
 तुही जोग जोगेस जोगी सु भोगी । तुही भेद अभेद संदेस सोगी ॥
 तुही मानवं देव दानं सिधानं । तुही कोटि ब्रह्मादि अंतस्मानं ॥ २०५ ॥
 जिती थावरं जंगमं षानं चाच्यौ । तिनी आप ही आप तें भेद धाच्यौ ॥
 करे जे गुसाई अगें रूप तेते । कहै ब्रह्मि को देव रिष नाग जेते ॥ २०६ ॥
 कियौ मच्छ औतार पैलै अनूपं । गयौ वेद लै दैत्य सागर अलूपं ॥
 हते स्वामि शंघासुरं वेद लीने । सुतौ आनि तत्काल ब्रह्मादि दीने ॥ २०७ ॥
 महापिष्ट के धार धारी धरती । करी न्वमलं कस्यपं रूप कती ॥
 बली वामनं पावनं किति राजै । पगं नष्य अग्रं सु गंगा विराजै ॥ २०८ ॥
 सबै षंडि षिची सुतौ विप्र तामं । महापुण्य सम्कर सकै फर्सरामं ॥
 श्रियं राम रघ्वीर लीनौ वतारं । कियौ रावनं कुंभ कर्न सहारं ॥ २०९ ॥

अस्तुतिं करन । प्रह्लाद । ठांनि । अहौ । देव । देवेस । देवाधि देवं । तुहीं । अल्प । अपार ।
 पावे । भैवं । अछेद । अभेदं । सर्व । वेदं । तुहीं । सर्व । विद्या । विनोदं । सु भेदं । तुहीं ।
 ग्यान । विग्यान । सौग्यान । करता । तुहीं । करता । तुहीं । बुद्धि । हरता । तुहीं । हें । पौन ।
 पानी । तुहीं । सर्व । मे । ए । अनेक । बानी । तुहीं । जोति । ज्योति । तौही तुहीं । अघ-
 कालं । तुहीं । तौही कौटि । सूरज । सूरज । मे तेज । तौही । तुहीं । कौटि । सीतल । तुहीं ।
 तौही । कौटि । ब्रह्मा । महादेव । जेते । तुहीं । तौही । कौटि । कंदरप । लावण्य । तेते ।
 तौही । शंतोष । तौही । तुहीं । सोक । शोक । सर्वे । तौ ही । जौग । जौगेसं । भौगीसं । जौगी ।
 तुहीं । तौही । भेद । अभेद । संदेस । सोगी । तौही । तुहीं । देव । दानव । तौही । तुहीं । कौटि ।
 ब्रह्मादी । अंतर । समान । जिजी । पानि । च्यारौ । च्यारौ । तिती । आपतै आप हों । भेद ।
 धाच्यौ । करे । जे । अगें । ते ते । कहै । वराने । कौ । रिषि । रिषं । जे ते । कौपी । मछ ।
 अवतार । पहिले । अनूपं । जे । दैत्यं । सागर । अलूपं । हने । स्वामि । शंघासुरं । वेद । लीने ।
 सुतै । सुता । तत्काल । दीने । महापिष्ट । कै । भार । धरनी । धरती । नृमली । रूपकती ।
 रूपकती । बल्यं । बलि । वामन । किति । नष । सुरंग । सुरंगं । सर्वे । षंड । षिपी । महापुण्य ।
 सम । करि । सकै । फर्सरामं । फर्सरामं । श्रीय । श्रीयं राम रघ्वीर । अवतारं । क्रियो । क्रियो ।

वसुदेव ग्रहं गच्छो कृष्ण वासं । हनेदुष्ट सर्वं कियौ कंस नासं ॥
 करे जग्य लीयं धरा भ्रम सुद्धं । प्रगथ्यौ कली काल अवतार बुद्धं ॥२१०॥
 जुगं अंत सो सति ह्यै हैं कलंकी । इहै वात सांची सदा देव अंकी ॥
 जिते सैल सुरहेति सुरपति कीने । तिते सैस गनेस जाअैं न चीने ॥२११॥
 सबै दुष्ट भंजे सु सेवक् उगारे । करे काम निज धाम नरहर पधारै ॥
 छं० ॥ २१२ ॥ रू० ॥ ३६ ॥
 कवित्त ॥ पड्यारे निज धाम । काम सुर सेव किए सब ॥

जुग जुग सब जन हेत । लिए अवतार तवहि तव ॥

निकसे पंभ विदारि । हने हिरनंकुस दानव ॥

प्रह्लाद उड्यार । कियौ पूरन पद जाहव ॥

श्री नृसिंघदेव समरंत जन । कलि कलंक दुष्यन हरन ॥

बलिरूप सरूप अनूप किय । श्रीनृसिंघ तेरे सरन ॥ छं० ॥ २१३ ॥ रू० ॥ ४० ॥

वामनावतार की कथा ॥

दूहा ॥ बहुत काल हरि सुष कियौ । सब देवादिक रिष्य ॥

पाछै बलि प्रगथ्यौ बली । किये सत्त जिन मष्य ॥ छं० ॥ २१४ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

तब इंद्रासन डग मग्यौ । जेम तुलाकी डंड ॥

सुर सुरपति आकंपि भय । जांहि कहां हम छंड ॥ छं० ॥ २१५ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

जाइ जगाए श्रीपती । बलि असुर अनपार ॥

तब सु पधारै नरहरी । धरि वामन अवतार ॥ छं० ॥ २१६ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

गवन । कुभंकरण । सहार । संहारं । वसुदेव । वसुदेव । गेह । गेहं । गृह्यौ । ग्रह्यौ । कृष्णावासं ।
 हने । सख । कीयौ । कंस । करे । धूम । बुद्धि । बुद्धं । जुग । सौ । सति । वै है । व्हे हे ।
 यहै । यहै । साची । देव । जिते । जिते । शैलसुर । सुलसुर । है त । हे त । सुरपति । कीने ।
 तिते । सैस । गनेस । जाअै । चिन्है । चीन्हे । दुष्टं । भंजे । सैवक । उधारे । करे काम ।
 धाम । पधारै ॥

४० पाठान्तरः—पधारै । पधारै । धाम काम । सैव । कीए । युग । युग । हेत । लिए ।
 वहि तव । निकसे । हने । हिरणंकिस । प्रह्लादै । प्रह्लादै । उधारि । कीयौ । बुंदीवाली । में-
 नरहंसूदेव —सं० १७७० में—नरहंसु देख—दुषन । रूप । सरू । अनुप । श्रीनृसिंघ । तेर । शरन ॥

४१—४३ पाठान्तरः—बहत । सुषि । कीयौ । सम । ऋषि । रिषि । पाछे । पाछे । बली
 बल । बुंदीवाली में—वरि कीए सित जित जिमन मख—कीए । सित । मष ॥ ४१ ॥ इंद्रासन ।
 जैन । आकंप । जाहि । छंडे ॥ ४२ ॥ जाय । पधारै । नरहरी ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥ सवा लाष वर विप्र । दियौ इक इक प्रति दानं ॥

दुरद अयुत रथ अयुत । एक हज्जार के कानं ॥

दासि दास दुय सहस । चरचि आभूषण अंबर ॥

साठि सहस मन कनक । अवर बहु भंति अडंबर ॥

औसै कि जग्य पूरन करि । निनानू बलि राय जब ॥

वामनसरूप धरि चंद कहि । अप पधारि गोविंदतवा ॥ छं० ॥ २१७ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ वलि लगौ जुध इन्द्र सम । सुर आसुर मन षेध ॥

साहस संकर विष्णु वर । षेद समव्वर वैध ॥ छं० ॥ २१८ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

गीता मालची १ ॥

लग्गेति षेधं वानवेधं, इंद्र वज्रं सज्जयं । छुट्टं त तारं नंषि भारं, काम कामं कज्जयं ॥

धमकंत धारं वार पारं, मार मारं मुष्णसंधेति वानं कर कमानं, कान तानं नष्ण

॥ २१६ ॥

विकसंतव्योमं सट्टिगोमं, भिरेभोमं धुज्जण देवकीनंदं अरि निकंदं, चले गंजन रज्जण ॥

वलिराइ वट्टिय देव दट्टिय, इंद्र कट्टिय आसुरे । मिलि तथ्य सथ्यं लथ्य वथ्यं पारि रथ्यं पासुरे ॥ २२० ॥

देवता मारे घन संघारे, हार भारे वलि जुरांडकं त डकं पारि धकं, हारि थकं चै पुरं ॥

छुट्टं त पट्टं वान छुट्टं, तौन पुट्टं चच्चलं, वलिराय जग्गं मान भग्गं, भिरे भग्गं अच्चलं ॥

॥ २२१ ॥

४४ पाठान्तरः—दानं । दाय । वामन । धारिं ॥

* यह रूपक हमारे पास की पुस्तकों में से सं० १६४७ और सं० १७७० और वृंदावाली में नहीं है किन्तु सं० १८९९ की लिखी हुई में है ॥

४५ पाठान्तरः—लगौ । जुद्ध । आसुर । मनि । वैध । विष्ण । वैध । समर । वैध । समवर ॥

१ इस रूपक के छंद के निर्णय को सहज में यों समझ लेना चाहिये कि जिस को इन दिनों हरिगीत छंद कहते हैं, वह यह है । उसके नामान्तर इस महाकाव्य के पाठान्तरो से विदित ही हैं तथापि The Revd. Joseph Van.S.Taylor B.A. साहब ने इस को गीय नाम से लिखा है । इस के चार चरण होते हैं, उनमें से प्रत्येक चरण में दो यति १६ + १२ और २८ मात्रा होती है, जिन में ९ + ७ + १२ पर विश्राम और ८ ताल होते हैं ॥

४६ पाठान्तरः—गीता । मालती धुर्यः । छंद गीतामालती । छंद माधुर्यः । छंद गीत मालती ।

लगेत । लगेत्त । पैद । पैध । वान । वान । वैध । इद्रवज्ज । सज्जयं । छुट्टं । तार । भार । काम ।

काम । धार । वारं । पार । मुष्ण । सवे । वानं । नपरा । विहसंत । व्योम । सठि । गोम । भिरे ।

भोमं । देवकीनंद । चले । रज्जण । वलिराय । वट्टिय । कट्टिय । देव । दट्टिय । आसुरे । मिलितय

सथं लथवथं पारि रथं पासुरे । देवता । मारे । संघारे । भारे । पुरं । जुर । डकहकनडक पारि

धकंहारि थकं तैपरं । थककं । छुट्टं । पट्टं । तौन पुट्टं वान छुट्टं ववलं । छट्टं पट्टं । तौन पुट्टं वान छुट्टं

चलं । वलिराय जग्गं मान भग्गं भिरे भग्गं अच्चलं । वलिराय जग्गं भिरे भग्गं अच्चलं । चोमठि । जोग ।

चौसट्टि जोगं करे भोगं, देष सोगं दष्यए । रुडंत भुंडं मुंडि सुंडं हार रुंडं रष्यए ॥
सगंत वानं भानछानं, इंद्र ढानं चाहए भूमौ भजानंगरि गुमानं, राहभानं दाहए ॥

॥२२२॥

बलिराइअगगौ भूमि मगगौ, भूमिषगगौ पारनां वरदान रहै वेद पढै, कालकह कारनं ॥
वामनं रूपं धारि धूपं, अस नूपं इलमभं । हुंकार सहं कियं नहं, वेद वहं संमभं ॥

॥२२३॥

धोमंतलगं चैवदगं कियं जगं कारनं । दिसिदिसिनदौरं कियं सौरं पौरि पौरंधारनं ॥
नषसिष्यभौरं कथियथोरं, कालकौरं कलकरी । आहुट्टपेडं भोमपंडं छौरि छंडं डरवरी ॥

॥ २२४ ॥

बलिदौरि आयो इंद्रभायौ, वेदगायो वच्छयं । मुहमंगिदानं तियपुरानं, मंडिभानं लच्छयं ॥
वाजिचवायं देवगायं, बलिसुरायं दिद्वयं । आहुट्टपगं दीनमगं, भौरभगं सिद्वयं ॥

॥२२५॥

नाषंत वानं गंग तानं, राह भानं रुक्यं । चालंत धारं सुकसारं, रुकधारं सुक्यं ॥
ठेलंत झारी वारपारी, चष्यचारो मभक्त्यं बलिराइअगं भूमिमगं, बलसुजगं भज्यं

॥२२६॥

पातालपगं दानमगं, सीससगं सज्यं । भरिपाउभारं धरनधारं, पगउभारं मग्यं ॥
असुरानभज्जं बलियगज्जं, पीठसज्जं श्रग्यं । चपंतपीठं दाइदीठे, दैतरूठ तापयं ॥२२७॥

* बंधन बद्धं बरष अद्धं, देव किद्धं सारयं । धर पिट्टनट्टं मारि मुट्टं सगग दिट्टं पारयं ॥
रहिअट्टपष्वं सष्विषलष्वं, धाररष्वं धारयं । चण्पौपयानं नहीकालं, राजभालं भालयं ॥२२८॥
तुट्टं सुनायं रष्विनायं, सव्वसायं पालयं । असुरानभगं षेलषगं, इंद्र सगं वासयं ॥
वामन्न रूपं कला अनुपं, बलिय कूपं चासयं ॥ छं० ॥ २२९ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

कौर । भौग । दैव । सौग । दषए । रुंडंत । भुंडं । मुडि । सुडि । सुड । रुड । रषए । लंगन । वान ।
भान । छानं । द्रढानं । वाहए । गुमान । भान । दाह । दाहये । बालिराय । आगौ । अंग्रें । भुमि ।
मृगें । मग्रे । मुमि । षगें । षगें । गारनं । दरवान । रैटै । वैद । पढै । काल कटे । वामना । रूप ।
नूपं । इलमभं । हुंकारणदं । शदं । कीयं । कीय । सदं । नदं । वैद । वद । वदं । मसमभं । धोमंत ।
लगं । त्रैवदगं । त्रैवदग । कीय । जगं । षगं । कारणं । दौर । कीय । सौरं । सिष । भौर । कथि ।
धौर । काल कौरं । आहुंठ । प्राहुठ । पिंड । भौम । पंड । छौरि । छंड । परवरी । बलिदौरि
आयौ इंद्र भयौ वच्छयं तिय । पुरान । मक्षि । लच्छयं । वष । दिठयं । आहुंठ । आहुठ । पेडं ।
मंग । भगं । सद्धयं । नाषंत तान । गंगवान । भानं । रुक्यं । रुक्यं । बलंत । सुकतारं । श्रुकसारं ।
रुक । मुक्यं । ठेलंत । चष । मज्जयं । बलिराय । अंग । भुमि । मंग । मगं । बलि । जिग । जगं ।
भज्यं । पगं । दान । मगं । श्रग श्रुगं । सज्यं । धरनं । मग्यं । असुराण । भजं । बलीय । ज्जं ।
गजं । पीर । सजं । श्रग्यं । श्रुग्यं । चपंत । दाव । दाड । रूपठं । रुठं । पारयं । अह तुकसं० १८५९
की लिखी पुस्तक मे तौ है अन्य किसी में नहीं है । आछे । पष । संषिन । सष्वं । रष । चण्पौ ।
पयालं । नही । नहीय । तुसं । सनायं । रषि । श्रव । भगं । भग । षगं । षगं । श्रग श्रुगं । वामनं ।
रूप । नूपं । नूपं । अनूपं । बलीय ॥

साटक ॥ नारदं कहि जाय विष्णु पुरयं, स्यामं छले वायकं ।

जग्यं फल उतपन्न दीन वर्यं, पाताल हरनं सदा ॥

वंभावलि बलि चीय पास लष्मी, पारष्विआने हरी ।

चौकी बंधि चौमास पास सरितं, पद्धारनं सत्तलं ॥ छं० ॥ २३० ॥ रू० ॥ ४७ ॥*

परशुरामावतार की कथा ॥

दूहा ॥ धिति धित्री अति प्रबल हुआ । महामत्त असरार ॥

ताहि हतन धिति दुज दियन । परसराम अवतार ॥ छं० ॥ २३१ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

दुय पुत्रिय राजन सुपति । व्याही धित्री दान ॥

जमदग्निह रिषरेनिका परिनिठिय अरि पान ॥ छं० ॥ २३२ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

कवित्त ॥ अनुकंपा श्रुत सुवर । दिड्ढ धित्रीय अरज्जन ॥

रेनुक रिष जमदग्नि । धिचि सहसार्जुन षप्यन ॥

सहस भुजा सिर दूक । सरित मन हथ्य सुबाहै ॥

नव घंडन उग्रहै । लोग सहसं तन दाहै ॥

जमदग्नि सुतन दुज धर दियन । परसराम अवतार धर ॥

धिचियन मारि वृंदह वरिय । करी टुक अज सहस कर ॥

छं० ॥ २३३ ॥ रू० ॥ ५० ॥

भुजंगी ॥ पुत्री दोइ राजं सुराजं विचारी । इकं रूप सारं बियं चतु नारी ॥

दई सैस भुज्जं अनुकंप ताहं । बियं जमदग्निं सुरेनक व्याहं ॥ २३४ ॥

४७ पाठान्तरः—वर्यं । लषिमी ॥

* यह रूप हमारे पास की सं० १८९९ की लिखी पुस्तक के सिवाय और किसी में नहीं है ॥

४८—४९ पाठान्तरः—छिति । प्रवलं । हुआं । हुय । हुषं । महामत्त । हनन । छिति । परसराम । परासराम ॥ ४८ ॥ दोय पुत्रि । पुत्री । षत्री । दान । जमदग्निह । रेणका । परिनाहय । परनठय । अरिपान ॥

५० पाठान्तरः—अनुकंपा । सुवर । धिचि । धित्री । अग्युन । अरजुन । रैनक । रेणुक । यमदग्नि । धित्री । सहसार्जुन । सहमारजुन । षपन । इक । हथ । सुबाहै । लोग । नन । यमदग्नि । जमदग्नि । दीयन । परसराम । अवतारि । धरि । करि । टुक । अजसकर ॥

५१ पाठान्तरः—दोई । दोइ । राज । सु राज । इक । सरसं । वीपं । चतुनारी । चतुरनारी । दई । सहस । भुजं । सु अनुकंप । मु अनुकंप । वीपं । जमदग्निं । मुनेक । मुनेक ।

ग्रहं बंधिरन् मभक्त रेनक राषै । मनं मभक्त विभ्रं मरिष्यं सु दाषै ॥
 तनं जानि त्रै लोक आरुन्न बढी । भरे अंब वस्त्रं रिषं पास ठढी ॥२३५॥
 ब्रषं अठुदस्सं वनव्वास रक्ष्यं । करुना सुषं मञ्जु षचीन कक्ष्यं ॥
 गई तट्टु सम्मुद्द सथ्ये सु भट्टं । मथं अनु कपं असुरान थट्टं ॥२३६॥
 धरंणीं चकडौल अस्मान चल्ली । मिले सथ्य सुर्यानि धर्यानि हल्ली ॥
 गहरं दुरंदान भद्रान मदी । भिली साइरं जानि निव्वान नदी ॥२३७॥
 पुरं तीन दरदीन मगं अमगं । नहीनं त्रिहं लौग तिनं सम्म षगं ॥
 छं ॥ २३८ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ सत षोहनि पानन सहस । रत इथ्यी सत लष्य ॥

धवल दुरद सत लष्य भर । सत लष अस्सित पष्य ॥छं॥२३९॥रू०॥५२॥
 मनहु कूर षिची मरद । पन अप्पन प्रति पार ॥

मनहु स्हर ससि डरन डर । भर षिची भर भार ॥छं॥२४०॥रू०॥५३॥
 पुज्जि आव षिचीन रन । उप्पनो रिषि राज ॥

फरसी दीनी विष्णु पुर । कलि ब्रह्म स्तुति काज ॥छं॥२४१॥रू०॥५४॥
 भुजंगी ॥ चली अनुकपं सथं सिष्ण सिष्यं । धरीयं मनं मभक्त पत्नी सुरुष्यं ॥
 भरी नेह अंबं तिनं वस्त्र भारी । डरी मन्न मभक्ता ग्रहं इष्य नारी ॥
 २४२ ॥

ग्रिहं । बधि । रिन । मञ्जु । रेनक । रेनक । मञ्जु । मरिषं । जानि । त्रयलोक । अरुनक । अरुनंत ।
 बढी । भरे । अंबं । ठढी । वरप । वरप । वरषं । अठदस । वनवास । रहि । रहिय । करुनं ।
 सुषं । मञ्जु । षित्रीन । कहीषं । कहियं । जाई । जाइ । तट्टु । समुद । समुद । सथै । सथे ।
 सथ्ये । सथ । अनुकंप । अनुकप । असुरान । असुरान । धरानि । धरनी । धरनी । चकडोल । चक-
 डौल । असमान । बली । मिलै । सथ । सुरथान । धरथान । हली । गहर । गहर । दुर दान ।
 मदी । भिलै । सायरं । जाविनिनिवाननदी । जानि । निवान । नदी । पुर । दरदीन । मग । मगं ।
 अमगं । अमंग । नहिन । नहिन् । नहिनं । त्रहुं । लौग । तिन । समन । षंग । षगं ॥

९२-९४ पाठान्तरः-सत्त । षोहनी । पानन । हथी । सित । लष । सित । लष ।
 मित । हसत । हसित । परव । परद । परप ॥ ९२ ॥ मनहुं । अपन । मनहुं । सुर । शशि ।
 षित्री ॥ ९३ ॥ पुजि । पूजि । उपनौ । ब्रह्मास्तुति ॥ ९४ ॥

९५ पाठान्तरः-भुजंगप्रयात । चलिय । अनुकंप । सथ सिषण । सिषं । धरीय । धरिय । मन ।
 मञ्जु । यत्री सरूपं । सरूपं । भरीय । नह । अंब । अब । तिन । डरपी । भरिय । डरिय । डरपि । मन ।
 मञ्जु । मञ्जु । ग्रह । इषि । इष । आइ । हथ । कर । जौर । जोरि । मुह । मैरि । कहियं ।
 कहीय । भरिय । भरीय । नह । नीर । मन । रहिय । रहियं । रहीय । रिषि । रषि । मन ।

अई हथ्य हथ्य जोरी मुहं मोरिं कछ्यं । भरौ नेह नीरं मनं पीर रछ्यं ॥
 रिषौ मन्न मैहल्ल भोजन कज्जी । किधे दस ब्रषं सु आगंम सज्जी ॥२४३॥
 अए रिषि थानं सु डेरा दिवानं । जनैं चंद्रि नभं प्रगट्टीय थानं ॥
 दुसंकन भुंडं कियं भुंडं भुंडं । जु सोभीय पंभं इभं इष्य सुंडं ॥ २४४ ॥
 दई बंब नीसान बौ बज्जि भैरी । मनो इद्र इद्रासनं धुज्जि हेरी ॥
 स्मरीयं रिषं धेन कैलास थानं । किधो विट्टियं गज्ज गाहं सुनानं ॥ २४५ ॥
 जु आतिथ्य आकर्षनं धेन आई । सुरं आसुरं नाग मझ्झै कि भाई ॥
 तवै आनि तुट्टी मझ्झै थान थायं । जिहंनं जु जो भाव भौइन्न भायं ॥
 २४६ ॥

तवै षोहनी अठु भोयन्न भाषी । कहां पाक सासनं आतंक दिषीं ॥
 तुरतं भगंनीन चिंता चितानी । इतं पुज्जिबै कौन अंनं रु पानी ॥ २४७ ॥
 दिषीयं अनुकंप धेनं सु दुझ्झी । कही राज अगै सु भोजनं गुझ्झी ॥
 मुषं दैत वंकं सुरं संक साभै । दिषं नैन ले चित्त गातन्न दाझै ॥ २४८ ॥
 करौ कंक अनसंक लै चल्ल बच्छी । किधो दौरि षिची सुरं धेन गच्छी ॥
 परे रुंड सुंडं सुरं सब्बमारे । जितै लात मारे तितै सर्व तारे ॥ २४९ ॥
 तिनं लोम लोमं प्रगट्टी दहानं । मुषं मुगलं पुछ्छ परछार भानं ॥
 पुरं पुप्परं रासि भं सिंग सिद्धं । लगे लेष आरतिनं मुक्ति लिद्धं ॥ २५० ॥
 कियं पुच ता माय धेनं दहानं । सुने वान षिची धरे पिट्ट पानं ॥

महल । महल्ल । भोजन । भोजन । कर्जा । किद्धि । किद्ध । किय । दस । वरप । आगम ।
 आगंम । सजी । आई । आए । रिषि । रिषि । थानं । डेरा । जनू । जनो । चदरं । वदरं । नभ ।
 नभम । प्रगट्टीय । दुय कनक । दुसंकन । दुत्य कनक । सुंड । किता । जनु । सोभियं । सोभीयं ।
 सोभिय । पंन । इम । इप । सुंड । दइ । तीसान । बहु । भैरी । मनो । इन्द्रासनं । हेरी ।
 समरीयं । समरियं । धेन । थानं । किधू । किधु । किधुं । विट्टियं । विट्टिय । गज । गाह । अनीत ।
 अतिथ्य । आकरपन । आकर्षन । धेने । सुर । अमुर । मझ्झै । मझ्झै । आनि । कुट्टी । त्रुट्टी । त्रुट्टी ।
 मझ्झै । ठायं । जो जिहिन भाव भौइन भायं भौइन । जै । षोहनी । अठ । भोजन । भषी ।
 कहर । दिपी । तुरत । तुरत । गनीन । भगनान । भगनीन । चित्त । चितानी । ईत । पुज्जव । पुज्जवै ।
 पुज्जिवे । कौन । कौन । अन । अनं । अन । चितानी । पानी । पानी । दिषि । दिपी । दिषिय ।
 दिषी । अनुकंप । धेन । सुदुझी । सुदुझी । करी । अग्रे । भोजनं । मुझी । दैत मुष । दिष नै ।
 चित गातनं दाझै । दिष नै चित गातं न दाझै । दिष नैन चित्त गातं न दाझ । करौं । करौं ।
 अनसंक । चल्ले । वल्ले चल्ले । वछी । वछी । किधौ । दिषि । मछी । परे । रुंड । रुंड । सुंड ।
 सुंड । सुर । सब्ब । मारे । जितै । पात मारे । लोम । लोम । प्रगट्टी । दहानं । दहानं । मुष ।
 मुगलं । मुगल । पुछ । परछाय । परछाय । भान । पर । पुप्परं । मीग मीग । निग । लगे । लय ।
 लय । आरा मुक्ति । लद्ध । कीयं । तो । तो । ते । वेन । दमहनं । दमन । सुने । वान । कान ।
 कान । धरे । पिट्ट । पानं । मनो । मनो । मनो । ते । ते । किधो । किधो । चित्तियं । व । बहु ।

मनौं भंजि कैलासते आनि धेनं । किधौं चक्षियं राजवौ उड्डि रेनं ॥२५१॥
मनं रिष्य आपन्न तापन्न तापं । किधौं पुत्र पारथ्य रेनंक कापं ॥
मनं पुत्रनं काज आसिष्य वष्यं । कियं पुत्र वृष्यं दियं आप रिष्यं ॥२५२॥
तवै फसंरामं फरस्ती उभारी । कियं रिष्य कामं सुमन्नं सुमारी ॥
भयौ पुत्र तंमंगिजौं दिड्ढ मातं । किधौं पावनं पाइ दोई सभ्रातं ॥२५३॥
करी पैज सैसार्जुनं काम धेनं । चलयौ रामफसीं धरै गज्जि गेनं* ॥
कहां जाइ सैसार्जुनं मुभुभ अग्रं* चय्यौ राम रिष्यं पयं लग्गि मग्गं ॥२५४॥
दियौ रिष्य वरदान जा जुड्ढ कज्जं । जवै दिष्ययं षिचियं फसं भज्जं ॥
मनौं अर्क वारं मधं अग्गि लग्गं । भयौ दिड्ढ सैसार्जुनं भीर भग्गं ॥
छं० ॥ २५५ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ फरसराम फरसी ग्रही । लग्यौ षचियन काल ॥

हुकम रिष्य दाहन चलयौ । जगि जोगिनि विकराल ॥

छं० ॥ २५६ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

त्रिभंगी ॥ जगि जोगिनि कालं, ईस सभालं किडा चालं, रुंडालं ।
मिलि भैरव भूतं, देविय दूतं, चष्य सरूतं, अंतालं ॥
मिलि फरसं रामं, करुना कामं, भामनि भामं, सुर इदं ।
धर धुज्जै गैनं, उड्डिय रैनं, जग्गिय नैनं, जोगिदं ॥ २५७ ॥

उड । रैनं मनौं । मनो । मन । रिषि । श्रापं । न ताप । किधौं । पारथ्य । रैनक । कापं । मनो ।
मनौ । पुत्र नह । आसिष्य । आशिष्य । वाषं । विषं । वषं । कीषं । वृष । वृषं । दीय । रिषं । रिषं ।
फरसरामं । फरसराम । फरसी । रिषि । सुमत । सुमातं । तंमंगि । तंमागि । जव । किधौं । किधौं ।
पावन । दौइ । दौइ । सहसार्जुनं । सहसार्जुन । कामधेने । राम । फरसी । धरे । गज्जि । गेन । गैन ।
गैनं । जाय । सहसार्जुनं । सहसार्जुनं । सहसार्जुनं । मुष । अग्रं । * यह दोनों बूढ़ावली पुस्तक
में नहीं है । रिषं । लगि । मग्रं । सगं । रिषि । वरदान । काजं । जवै । जवइ । दिषियं । षचियं ।
फरस । भज्जं । भजं । मनो । मनौ । अर्क । अर्क । अग्गि । लग्गं । लग्गं । दिड्ढ । दिड्ढ । सह-
सारज्जुन । सहसार्जुनं । भगं ॥

९६ पाठान्तर—दोहा । फरसराम । गृही । पित्रियन । पित्रियन । रिषि । जग । युगिनि
जोगिन ॥

९७ पाठान्तर :—छंदत्रिभंगी । जुगिन । काल ईश । सभालं । किडा । रुडालं । रुंडाली ।
मिलि । भैख । भुतं । भुत । देवीय । दूत । चष्य । नरूतं । अंताल । फरसरामं । फरसराम । करुना ।
काम । भामिनि । इंद । धुज्जै । गै । गैनं । उडीय । रेन । जग्गिय । नैनं । जोगिदं । राम । लगिष्य ।

षरि आयौ रामं, लग्गिय जामं, षत्रिय ठामं, नह लद्धं ।
 परि मोटन छोटं, दानव दोटं, जुग्गनि जोटं, लग्गि जुद्धं ॥
 थरथरि थिर थानं, रौठ सुवानं, छाद्रय भानं, गैनानं ।
 करि षित्री अंतं, मंडिय पंतं, पंगुर जंतं, हं हानं ॥ २५८ ॥
 बरवान न लग्गौ, भीर न भग्गौ, फरसी बग्गौ, कर भानं ।
 अवतार अलष्यं, भामिन भष्यं, दैतन दष्यं, ब्रह्मानं ॥
 करि रूप कुरूपं, जुद्ध मजूपं, पुत्र अनूपं, जमदग्गं । *
 नृत्तत अनलष्यै, आप अलष्यै, दानव दष्यै, जम मग्गं ॥ २५९ ॥
 गहि ग्रिद्धन गाला, किडा चाला, रिषि रंढाला, रिन कालं ।
 परि कूक सु कूकं, डक्किन दूकं, गिद्ध गहूकं अंतालं ॥
 सुर छाद्रय भानं, अरजुन वानं, सहसभुजानं, गंजानं ।
 मनु बहर चंदं, हथ्य जग्गिंदं, कौधा फंदं, दंतानं ॥ २६० ॥
 परि लोथ अलोथं, सथ्यन सथ्यं, भरि भरि बथ्यं, भंजानं ।
 षिसि षोहनि अट्टं, मारक नट्टं, ता रस तट्टं, धुकि धानं ॥
 भिरि भुज भंजानं, दैतलजानं, फरसिय पानं, रन मानं ।
 परि अर्जुन पानं, षिसीय घानं, नारद ग्यानं, विजयानं ॥ २६१ ॥
 अवतार सु दिट्टं, षित्रिय नट्टं, जोगिनि सट्टं, नाषिचं ।
 परि फूल सुरानं, मारि षिचानं चंद वषानं, गाविचं ॥
 ॥ छं० ँ० ॥ २६२ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

जाम । पित्रिय । छोटं । दौटं । लंगि । थुद्धं । थर । थानं । सुनं । गैनागं । पित्रि । पित्रयी ददं ।
 मंडोयं । जंत । वान । लग्गौ । भग्गौ । बग्गौ । भान । अलष्यं । भष्यं । दैत्यन । दष्यं । ब्रह्मानं । कुरूपं ।
 * वृंदावाली में पाठ—करि रूप कुरूपं पुत्र अनुप आपस सरूप जमदग्गं—सं० १६४७ और १७७०
 में—करि रूप कुरूपं पुत्र अनूपं जमदग्गं । नृत्तत । नृत्तत । अनुलष्यै । अलष्यै । दष्यै । यमदग्गं ।
 जमदग्गं । प्रह । गिद्धन । गिद्धनि । किधा । वाला । रिषं । रिष्य । रंढालं । रन कल । परिक्रम ।
 कसकु । सकूकं । डक्किन । दूक । गहूक । भान । अरयुन । अर्जुन । वान । भुजानं । मनौ । मानं ।
 वर । ख । हय । युग्गिद । किधा । फदं । लौथि । लोथि । अलौथ । अलोथ । सथन सथ ।
 सथं । अलोथन सथ । पिजि । षौहनि । अटं । नारक । नटं । तामर तटं । धुकि । वारं । नं जान ।
 जावं । फरसी । जान । जानं । मान । अरजुनं । अर्जुन । पिसिय । ग्यानं । दिष्ट । त्रीयनतं ।
 पित्रीय । नटं । जग्गिन । सटं । पिनानं । वषान ॥

ँ० इस छंद की प्रत्येक तुक में ३२ मात्रा और यति १० + ८ + ८ + ६ = ३२ और ताल ८ होते हैं ॥

कवित्त ॥ सहस्र भुजा सिर इक्क । नाम अर्जुन घन सज्जिय ॥
 मुर अठ घोहनि मरदि । करे सुर अप्पन कज्जिय ॥
 भरि रुद्धि षप्र जुगनीय ॥ ईस मुंडन भर वथिय ॥
 पलवर रुधि चर पूरि । सक करि कारज सथिय ॥
 दिय दान पानि पृथिवी दुजन ॥ करे रुधिर कुंडन चपन ॥
 सुर नरन नाग कित्तिय उचरि । फरसराम पित्रिय घपन ॥

छं० ॥ २६३ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

रामावतार की कथा ॥

दूहा ॥ फरसराम छिति पति हते । छिति अप्पी निज वंस ॥
 रघुवंसी दसरथ्य घर । श्रीरघुपति अवतंस ॥ छं० ॥ २६४ ॥ रू० ॥ ५९ ॥
 रघुवंसन राषिस रमन । भयौराम अवतार ॥
 वेद भ्रात दसरथ सुतन । नयर अजुध्यासार ॥ छं० ॥ २६५ ॥ रू० ॥ ६० ॥
 भये राम लषिमन सुबर । भरथ सत्रु घनघ्रात ॥
 अरि रावन रषषस हरिय । तिन वन लिषिय तात ॥ छं० ॥ २६६ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ तरुनि नाम तारिका । ग्यांन हरि परसीरामं ॥
 वरि सत्ती धानुष । किए सब सुभभह कामं ॥
 केकड्यै वर मंगि । राम वन भरत सुराजं ॥
 तब दसरथ दुषकीन । भयौ धुर काज अकाजं ॥
 दसरथ्य पाइ परसे उभवे । पंच बटी बंधी कुटिय ॥
 कहि चंद छंद परबंध करि । लंक कंक जिहि विधि जुटिय ॥
 छं० ॥ २६७ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

१८ पाठान्तर—इक । नाम । अरयुन । अर्जुन । सजिय । घोहनि । मरद । करै । सुरै ।
 वजिय । स्वरि । युगिनिय । जोगिनिय । इस मुंडम । वथिय । पलवर । रुधिवर । सक । कारिज ।
 सथिय । दीय । दान । पानि । प्रियवी । करि कुंडन रुधिर सु त्रपन । नग । कित्तिय । पित्रीय ॥

१९—६१ पाठान्तरः—फरसराम । हतै । अपी । भिज । दसरथ ॥ १९ ॥ राषि । रवन । राम ।
 श्रीराम । वेद । दसरथं । सुतन । अयोध्या ॥ ६० ॥ भयै । भयौ । राम । लछिमन । लछमन ।
 भरत । शत्रुघन । रामहरिय । वन लषिय । लिषय ॥ ६१ ॥

६२—६४ पाठान्तरः—नाम । ग्यंनं । परसीराम । वरी सती । धानुष । किए । सुभह ।
 केकड्य । केकड्यै । राम । भरत । दुषि । किन दसरथ । पाय । व । बंटी पटबंध । जिहै ।

सूपनषा राषसी । रहै बन मकर ढाली ॥

रूप नष चष धुंम । रंग अवनं तन काली ॥

नाक वक्र नष तिष । जाइ परदूषन दषिय ॥

दौरि दौरि धरि ढौरि । राम सब राषिस भषिय ॥

हरिं सीत नीत रावन गयौ । भयौ चित्त राषिस हरन ॥

कहि पवन पूत दूतह चलिय । सुर सुकाज साईं करन ॥

छं० ॥ २६८ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

गयौ लंक हनुएस । अमत सुधि सीता पाइय ॥

घन उपवन संघरिय । धरे मन राम दुहाइय ॥

वाय चढ्यौ प्राकार । दसन जुडह दनु भषिय ॥

अषै कुमारन हनिय । दौरि इंद्राजित दषिय ॥

नषि पास रास द्रढ बंधयौ । कहि सुमरन अवर धरौ ॥

लगाय पुछ्छ लंका जरिय । कनक पंक किनौ परौ

छं० ॥ २६९ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ जलन जलिय रषस छरिय । धरिय बग विपरीत ॥

मनौं अर्क कमलनि दरस । सुनिरावन मन भीत ॥

छं० ॥ २७० ॥ रू० ॥ ६५ ॥

कवित्त ॥ बंधि पाज सागरह । हनुअ अंगद सुग्रीवह ॥

नील जंबु सु जटाल । बली राहुन अप जीवह ॥

धाम धरनि वाराह । दाह धारन कटि मारन ॥

स्वामि धम्म धुर धवल । उडि असमान सुधारन ॥

६२ ॥ सूर्यनषा । तुर्यनषा । सूपनषा । राक्षसी । राषिसी । मध्य । रढाली सूपनपत्रपं धूम । सूप । नप । श्रवन । तिष । जाय । परदूषण । दखिय । वर । धर । राम । भषिय । हरि । चित्त पुत । पूतह । तद । चवलिय । साईं ॥ ६३ ॥ गयौ हनु लंकस । एस । लंकेश । पाईय । संवरीय । सहगीय । वेर राम । दुहाइयं । दुहाईय । चाय वढाय प्रकार । दरसनयुहदनुभषिय ॥ वाय चढीय प्रकार । जुडह । जुवह । भषिय । कुमारनि । हतिय । जिक्ष । जीत । सु । दषिय । नषि । दृढ । वययौ । मरन । अवर । लगाय । पुछ्छ । पूंछ्छ । जारिय । किनौ । कीनौ ॥ ६४ ॥

६५ पाठान्तर :-जलनि । जरिय । रषिस । छरीय । धरीय । बग विपरीति । मनौ । अर्क । कमिलनि । दरसि । सुनी ॥

६६-६९ पाठान्तर :-बंधि । सुज । बलि । रहुन । स्वामि । स्वामि । वूम । वूम । धुम्य । धवल । उडि । असमान । प्रकार । पुत । अवयुत । सर । वपन । वर ॥ ६६ ॥ बंधि । वर वीर ।

प्राकार धरनि दसकंध हरि । पवन पूत अधधूत भर ॥
सर * करन लंक ल्यावन सती । यप्यन लंक वभीष वर ॥

छं० ॥ २७१ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

बंधि पाज वर वीर । नपि साइर सु अष्ट कुल ॥
वय तरंग तपि तथ्य । भरे जनु अगस्ति (सु) † अंजुल ।
सिर मच्छी जछरी । मनौ रचि मनि धर सेसं ॥

पिठु राम भर हनुअ । किन्न मन कारन भेसं ॥
चक चकित नाथ दस वेद पुर । छौरि देव सेवन ग्रहय ॥
घर लंक सदा थप्यन सुथिर । अगह गहन हनुमंत भय ॥

छं० ॥ २७२ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

जब सु राम चढि लंक । तब सु मच्छी गिर तारिय ॥
जब सु राम चढि लंक । तब सु पथयर जल धारिय ॥
जब सु राम चढि लंक । तब सु चक चकी चाहिय ॥
जब सु राम चढि लंक । तब सु लंका पुर दाहिय ॥
जब राम चढे दल बंनरन । भिरन राम रावन परिय ॥
भिर कुंभ मेघ राषिस रसन । सीत काम कारन करिय ॥

छं० ॥ २७३ ॥ रू० ॥ ६८ ॥ ॥

उतरि समुह अथाह । धाह लंका धुर धुज्जिय ॥
चलिय सेन रघुवंस । जोर सामंत सु सज्जिय ॥

सायर । कुल । कुलं । विप तुरंत तिप तथ । भैर । अंजल । शिर । मच्छी । उवरी । मनौ । मनौ ।
सैसं । शंसं । पिठ । राम । कीन । नैसं । चक्रित । वदनपुर । बदपुर । छौरि । देवन ग्रहय ।
गृहय । घर । थपन । अग मग । हनुमंत ॥ ६७ ॥ राम । राम । मछी । गिरि । तारिय ।
तारिय । राम । लिंक । पथर । धारिय । राम । चकी । राम । दाहिय । राम । चढे । बंदरन ।
राम । परिय । सीन ॥ ६८ ॥ उत्तरि । समुह । धुज्जि । सैन । रघुवंस । जो । ससज्जिय । ससाजिय ।

* इस शब्द का किसी पुस्तक में सर और किमी में सरु पाठ है । मैं इसका फारसी سر
शब्द से हिन्दी का बनना नहीं समझता हं किन्तु संस्कृत सरः = गतौ । गमने ॥ भेदके । भेदने ॥
अथवा Sk. सरु = Thin, Small, minute. Hence conquest, victory, triumph. के अर्थ
में कत्रि का प्रयोग करना मानता हू । बहुत से संस्कृत और हिन्दी शब्द ऐसे २ है कि जो उच्चारण
और अर्थ में फारसी और अरबी भाषाओं के शब्दों से मिलते जुलते हुवे है । क्या उनका अन्य
देशीय भाषाओं से ही उत्पन्न होना स्वीकार करना परम प्रशंसनीय है ? † अधिक पाठ ॥

लुट्टि लंक गढ घेरि । फेरि बभभीषन थपिय ॥
 इन्द्र जीत असि सज्जि । चढे रभ अप्पन जपिय ॥
 परि सार धार परि बंनरन । मार मार उचरंत मुष ॥
 चल चलिय सेन लषमन सधर । देव विभान सु मानि दुष ॥
 छं० ॥ २७४ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

दूहा ॥ मेघ नाद नादन क्यौ । ध्यौ लंक उर धाह ॥

छुट्टि लोग सब भोग तजि । जुट्टं जंग उछाह ॥ छं० ॥ २७५ ॥ रू० ॥ ७० ॥
 विराज ॥ छुटे बान इदं । घटा जादि भदं ॥ भिरे बान मानं । करंतं वधानं ॥ २७६ ॥
 धरे ईस सीसं । किरे बानरीसं ॥ बकी थान थानं । जकी जोग मानं ॥ २७७ ॥
 वहै रत्त धारा । छुट्टै भद भारा ॥ फिकारंत पक्कं । डकारंत डक्कं ॥ २७८ ॥
 भये राम रीसं । मनौं काल दीसं ॥ धरा अंग बज्जै । परे रथ्य भज्जै ॥ २७९ ॥
 भिरे आत पारं । मनौं राम सारं ॥ हुई इन्द्र जीतं । भय देव भीतं ॥ २८० ॥
 करे रूप कोरं । सबैलोक सोरं ॥ * * । * * ॥ छं० ॥ २८१ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ धरनि धार धुकि धरनि । भिरन इन्द्राजित सरभर ॥

मुक्ति बान रुकि भान । परिय सागरन पलचर ॥

जग्गि बान मोहनिय । परिय लषि मनं पथारिय ॥

परि षट दस सामंत । सार मोहनिय सुधारिय ॥

गजि इन्द्र भद करि इन्द्र रव । गयौ लंक गाढौ ग्रन्थौ ॥

रघुवंस सेन वानन प्यौ । सार ब्रह्म मोहनि सच्चौ ॥ छं० ॥ २८२ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

घेरि । बभीषन । वभीषन । थपिय । सजि । बंदरन । थुप । चालि सेन । लपिमन । पमन । देव ।
 देवि । विमान । समान ॥ ६९ ॥

७० पाठान्तर—“ध्यौ लंक उर धाहु” के स्थान में सं० १७७० की पुस्तक में “लंक उरधाह”
 मात्र है । भोग । तिन । जुट्टे । उछह ॥

७१ पाठान्तर.—छंद विराज । छुट्टै । वान । जानि । भदं । भिरै । आत । निग । इम । ईश ।
 गिशं । बकी । थानं । जोक । रत । छुट्टै । भद । फिकारंत । पक्कं । डक्कं । भय । राम । मनौं ।
 मनौं । बजे । परे । रथ्य । भजे । भिरे । भिरे । मनौं । मनौं । राग । हुई । हुइ । इद्र । देव । कोरं ।
 सबै । सबै । लौक । सोर ॥

७२ पाठान्तरः—कवित्त । धरनिर । वरेन । धरन । इन्द्रजीत । सरम्भर । मुक्ति । वान । भान ।
 भानं । भानि । सागरह । पलचर । लषि । वान । मोहिनीय । लपिमनं । पथारीय । मोहनीय ।
 सुधारीय । भद । वंश । सेन । वानन । मोहनि ॥

वपु नंपत घुप्परिय । किनन किन नाट कुरंगिय ॥
 गनन गनन गय नंग । छलन छक्किय उछरंगिय ॥
 सनन सोक भिल्लरिय । पनन धर धार पलक्किय ॥
 गिलन डक डिल्लरिय । मनन भूभार भलक्किय ॥
 धरनी धरीय वनरं रपिय । परिय पंति मोहन प्रवल ॥
 असुरान गंजि लंका नयह । इंद्रजीत जीतित अतुल ॥

छं० ॥ २८३ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

क्वित्त ॥ फिरि सज्जिय रघुवंस । हनुगढ कोट उडायिय ॥

मरन छोरि मरजाद । इंद्र जीत म सुधि पाइय ॥
 मंत्र होम रथ जग्य । सरन देवी सुध जापं ॥
 लपिमन हनु सुग्रीव । लंकपति भीषन थापं ॥

आरूढि रथ्य अप्पन अवर । धवर पति द्वारह धरिय ॥

छर छरिय वान छकि छंछटिय । भरिय पत्र अभरन भरिय ॥

छं० ॥ २८४ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

धरनि तरनि आकास । वास रथ सासन रुक्किय ॥

दसन अंब लंगि वान । धरनि बट साधन धुक्किय ।

कुक्किय कंत विन कोर । सौर जोरह चौसट्टिय ॥

मंत्र जप्य सब भूल । करुन कारुन अन दिट्टिय ॥

रथ च्यारि चक्र फिरि चक्क चव । वान वृष्टि लपमन वलिय ॥

करि कंक मंक आसुरनि डर । कहर वत्त ता दिन कलिय ॥

छं० ॥ २८५ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

७३ पाठान्तरः—वपु । नंपत । कुरंगीय । छकिय । उछरगिय । सनत । सोक । भलरिय ।
 भिलरिय । पलक्किय । डक । डलरीय । डिलरिय । भलक्किय । धरनि । धस्य । धरिय । वनरं । वनर ।
 वनरपिय । परीय । मोहिन । असुरान । गजि । इंद्रजीति । जितंपं । अतुलं ॥

७४ पाठान्तरः—सजीय । रघुवंस । हनु । कोट । उडाइय । मरण । मारन । छौरि । पाईय ।
 होम । जांगी । देवी । लपमन । बभीषन । थापं । आरूढ । रथ । अधन । अपन । धवर । पति ।
 धारह । छरय । वान । भरय । अमर ॥

७५ पाठान्तर.—आकाश । रुक्किय । दरसन । अत्र । वानं । धुक्किय । विन । कौरं । सौर ।
 सौर । चौसट्टिय । जप । श्रव । भुलि । भूलि । करन । आनादीतेय । अनदिठिय । चक । वान ।
 लपिमन । वत्त ॥

साइर सत सोषनह । बान दिन्नौ ता हथ्यं ॥

गुन औगुन संधियहि । कब्यौ तिन जीवन सथ्यं ॥

कुसुम वृष्टि सुर कीन । भयौ रावन तन भारी ॥

सकल सोक राषिसन । हनूं जब लंक प्रजारी ॥

जैजया सह जोगिन जपिय । मंदोदरि कीनौ रुदन ॥

लछिमन राम सीता सुग्रहि । तदिन लंक लग्गौ कुदिन ॥

छं० ॥ २८६ ॥ रू० ॥ ७६ ॥

बसि निद्रा अध बरष । धाम अंबर धर धुज्जिय ॥

गौन गज्जि सुर सज्ज । पुधा बन चर बर पुज्जिय ॥

गौर मुष्य वपु स्याम । गिरन समनष्य अकारिय ॥

काल ग्राम नासाय । तार तारन तप धारिय ॥

मधि कुंड मुंड सर्गन बसै । हूर चंद संधन सषिय ॥

करि धूम नास नासत तपिय । अकल जोति कालन भषिय ॥

छं० ॥ २८७ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

कवित्त ॥ भरत काल चलि सथ्य । धाम धामन अरु छदिय ॥

सहस जष्य भषनीय । मनह अचलं चल वदिय ॥

तिष्य नष्य अनुचार । भाल रसना भुक भाइय ॥

करन काल बंदरन । धरै अग्या सिर नाइय ॥

उत्तरिय लंक असमान सिर । तरुन भार भारन तजिय ॥

करि कूह डक गिर बंदरन । भिरन राम लषमन भरिय ॥

छं० ॥ २८८ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

७६ पाठान्तरः—सायर । सौ । बान । दिन्नौ । दीनौ । हथं । अवगुन । तिन । सथं । कुसुम । मौक । हनु । सवद । शवद । जुगिर्ना । योगिनि । मंदोदरि । कीनौ । लषमन । सम । स्र । गृह । दित । लग्गौ । लंक गौकं । दिन ॥

७७ पाठान्तरः—वाम । धुजिय । धुजिय । गैन । गैन । गैन । गज । सज । तन । पुजिय । पुजय । मुप । स्याम । गिरण । समनृप । ज्ञाकारिय । अकारिय । ग्राम । तपि । वारिय । सर्गन । वनै । सवन । सर्पाय । धूम । धूम । नास । तपिय । ज्योति । जौति । कलन । भषीय ॥

७८ पाठान्तर.—सथ । धामन । छदिय । जप । अचलंचल । वदिय । तिप । नप । रसना । झाईय । झाईक । धरै । शिर । साईय । साइय । उत्तरिय । असमान । कूह । डक । गिरन । वरन । राम । लषमिन । भिरिय ॥

रिन रत्तौ कुम्भक्रन् । पच्यौ भूषौ बैसनर ॥
 धर बंदर धक धाह । दन्त कटि षड् बन्नर ॥
 पंप मष्य पलचरिय । नही लड् तिहि वारं ॥
 सोपि सरित रत धार । पानि लै पिये अपारं * ॥
 सा हंत सित्त बंदर सुघट * । गिरन धार उप्पर पच्यौ * ॥
 रघुवंस नाम रावन कच्यौ * । करन फट्टि दाहन धच्यौ * ॥
 छं० ॥ २८८ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

परत भ्रात धर १ धरनि पद्म अठुह दमि पालन ॥
 जनु कि सह साइरन । आनि प्रथ्यी जर तारन ॥
 परिभष्यन रषिसन । कुइक चीसन मुष सासन ॥
 कर सुपिट्ट (मस लिग्ग ङ्) कमंध । भरत मुष इषिय भासन ॥
 करि लंक कंक पंकन पलन । पलन राम हथ्यी दुतिय ॥
 धर धरत नारि कंतन क्रसन । कूटि कूटि दारुन छतिय ॥
 छं० ॥ २८० ॥ रू० ॥ ८० ॥

त्रिभंगी ॥ गढ लंककनन्दा, अग्गि जरंदा, धाह करंदा, मिलि जंदा ॥
 कै जंघहिकंदा, सुपरकंदा, डेढकरंदा, मुष गंदा ॥
 पल सव्वन षंदा, बधघ चवंदा, आप अनन्दा, +कुर जंदा+ ।
 किलकी कूकंदा, माता मंदा, भारी भंदा, जारंदा ॥ २८१ ॥
 परि कुंभ धरंदा, +वान चलंदा, राम कहंदा, मारंदा ।
 घर रावन रुंदा, करै ति संदा, लष्यै जंदा, दीसंदा ॥

७९ पाठान्तरः—रत्तौ । कुंभक्रनः । भूषौ । बैसनर । बंदर । षडे । पधे । भप । पलचरीय ।
 नाहि । लवै । लधेति । सौषि । सरतर । पानि । ले पिए । पीथ । * ये तुके सं० १७७० की
 पुस्तक में नहीं है । सित । उपर । करन ॥

८० पाठान्तरः—१ धर शब्द सं० १७७० की पुस्तक में है ही नहीं । अठ । सह । सद ।
 साइरनिः । आनि । प्रिथी । प्रथी । परिभषन । रषिसन । कौइक । कोइक । चीसनि । शासन ।
 सुपिट । ङ् “मसलिग” अथवा “मत्यलिग” अत्रिक पाठ मालूम होता है । कमव । भिरत । ईषिय ।
 इपीय । लकके । कक । राम । हथी । दुतीय । क्रसनं । कुटि । कुट्टि । छतीय ॥

८१ पाठान्तर.—छंद त्रिभंगी । अगि । के । जंवइकंदा । सुपरकं । सुपरकंदा । डेढकरंदा ।
 संवन । श्रवनं । वव । +यह तुक तथा तुक के टुकड़े त्रंदावाली पुस्तक में नहीं है । आपनइदा ।
 महा । वान । वलंदा । राम । रुदा । रूदा । करे । सदा । लपे । लष्ये । लपे । राषस । रूपं ।

घन राषिस वृंदा, रूप अनन्दा, पिठु द्रुगंदा, दाहंदा ।
 घन बान चलंदा, भान छदंदा, राम रवंदा, पारंदा ॥ २६२ ॥
 भर रावन हंदा, रूप करंदा, तारन चंदा, जानंदा ।
 सुर वेद चवंदा, हूर फुलंदा, बाजत वृंदा, ईसंदा ॥
 जनु कीर चलंदा, हाटे हंदा, तरबूजंदा, नाषंदा ।
 तट सागर हंदा, रावन वृंदा, रूप करंदा, रथ्यंदा ॥ २६३ ॥
 तर कोर चवंदा, रावन हंदा, स्यार सुनंदा, उसरंदा ।
 कर लषिमन हंदा, बान चलंदा, रुंड परंदा, धारंदा ॥
 परि पथ्यर वृंदा, बानर हंदा, द्रोण ग्रहंदा, नाषंदा ।
 पति लंक भगंदा, हनु आहंदा, नील निषंदा, फिरि जंदा ॥ २६४ ॥
 चक चूर करंदा, अश्व परंदा, राषिस मंदा, पाइंदा ।
 रथ इंद अनंदा, बान नषंदा, रथ्य रहंदा, भारंदा ॥
 नह ईस रहंदा, पूरा हंदा, विरदन वंदा, धायंदा ।
 रिषि देव हसंदा, राषिस रुंदा, वीस भुजंदा, ढाहंदा ॥ २६५ ॥
 परि रावन मंदा, भीषन संदा, काज करंदा, रामंदा ।
 रचि कोट सुरंदा,* हाटक हंदा,† फूल अवंदा, माल्हंदा ॥
 लै सीत चलंदा, लषिमन संदा, सागर वंदा, आनंदा ॥
 छं० ॥ २६६ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

भुजंगी ॥ कियं षंड षंडं वली मुष्य चारं । महाबाहु वाहं बलं वेद धारं ।
 हनुमान हथ्यं सदेसं सुकथ्यं । धरै पिठु तीनं लखी वीर सथ्यं ॥
 २६७ ॥

पिठ । दृगंधा । दृगदा । हदा । हाहंदा । वान । छवंदा । अवंदा । नाम खंदा । तारन वंदा ।
 वेद । हुर । वनजवृदा । इमदा । कीर वलदा । हाटै । तरबुजंदा । रावनं । रथंदा । कोर ।
 दंदा । उमुंगंदा । करि । लषमन । बान । रुड । पथर । बानग्रहद । द्रोण । गृहंदा । चकचुर ।
 पइंदा । बान नषंदा । रथ । झारंदा । इस । पुगहंदा । विरदन । रषि । देव । हमदा । राषिमं ।
 वृदा । वीस भुजिदा । मदा । भीषव । सदा । रामंदा । रवि । रिव । कौट्टि । मुरिदा । हडक ।
 फुलं । मालंदा । ले । चलदा । सदा । सह † इन तुक के ये टुकडे सं० १७७० वाली पुस्तक
 में नहीं है ॥

८२ पाठान्तरः—छद भुजंगी । किय । षंड । मुष । बाहु । वेद । हनुमान । हथ्यं । सदेसा ।
 नंदे । सुकथ्यं । धरे । पिठ । तीनं । नषं । धनुखान । वृन । वरे । पानि । वर । चंमु । सां ।

धनुर्वान सासं जरं वृन्न कारी । धरं पानि ग्रावं वरं पारि तारी ।
 चमूलंकसौ गडु विन्ध्यौ विहानं । धरं धार धुक्की करगे ग्रहानं ॥२६२॥
 कियं कोप कोपं धरं धार धोपं सिला वंधि सिंधं कुसं लूप लोपं ।
 रनं रावनं कज्ज आरज्ज काजं । वनी यपि यर थान दिन राज राज ॥
 २६६ ॥

सुरं सूर मुष्यं वरं वाद वदं । महा मोह कौहं वरं जे अनन्द ॥
 छं० ॥ ३०० ॥ रू० ॥ ८२ ॥

कवित्त ॥ जनक सुता हरि दुष्ट । हरी लंका तन दावन ॥

जीव जगत जगि छरन । हरन रिपु ग्रहन सु रावन ॥

हरन रिद्ध नव निद्ध । सिद्धि हर सागर सिद्धिय ॥

हरन पुत्र इंद्रजित । हरन भीषन ग्रह लिद्धिय ॥

तिन हरिय सीत क्रत इह करिय । भरिय पत्र पलचर भषन ॥

गढ जारि लंक दसकंध हनि । राम कित्ति चंदह चवन ॥

छं० ॥ ३०१ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

कृष्णावतार की कथा ।

कवित्त ॥ नमो देव देवाधि । नमो नाभाय कमल वर ॥

नमो माल पंकज (प्रमां*) न । नमो वर कलल कमल कर ॥

नमो नैन वर कमल । नमो चित्तह अधिकारिय ॥

नमो विकट भंजनन (मित†) । नमो संसार सुधारिय ॥

नम नमो (स्तु‡) चंद नंदन नवल । नंद ग्रह ब्रह्मंड गुर ॥

दिष्यहि जु देव देवाधि तुहिं । मुगति समप्यन तिनह उर ॥

छं० ॥ ३०२ ॥ रू० ॥ ८४ ॥

गढ । विन्ध्यौ । विहाय । धुक्की । कर गे । करं गं ग्रैहानं । कीयं । कोप कोप । ववि । सिंधं ।
 कुशलूप । लोपं । रणं । आरज्ज । वनि । यपि । थान । सुर । मुषं । वदं । कौह वर । जै । अनद ॥

८३ पाठान्तरः—कवित्त । जीवन । छरन् । रिपुं । सूर । हरिसा । ऋद्धि । सिद्धि । निद्धि ।
 हस्तागर । मिधियं । इंद्रजित । इंद्रजित । इंद्रजोति । हरच्छ । गृह । लिद्धिय । हरीय । शीत ।
 कृत । भरीय । पलचर । दसकव । राम । नदह । तवन ॥

८४ पाठान्तरः—नमो । विर । नमो । मल । पंकज प्रमानं । * अधिक पाठ मालूम होता
 है । नमो । नैन । नमो । चित्तह । अधिकारिय । नमो । विकटि । भंजन निमित । † अधिक
 पाठ मालूम होता है । नमो । सुधारिय । नमो नमो चंद नंद नंदनाह । ‡ अधिक पाठ ज्ञात होता
 है । गेह । वृह मंड । ब्रह्ममंड । दिपिहि । दिपहि । ज । गुरज । देव । त्रुहि । तुहि । मुगति । समपन ॥

दूहा ॥ प्रति सुंदरि सुंदरतमह, सुंदरि सुभति सनेह ॥

सुंदरि त्रिभुवन पुरुष पहुँ, निज आवन तन ग्रैह ॥

छं० ॥ ३०३ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

पद्मरी ॥ जो कमलनाभि द्विग कमल पानि। कोमल सु मधुर मधु मधुर बानि ॥

दुति मेघ पीत अंमर सुनंद। धर धरनि धरत सिर मोर चंद ॥३०४॥

चौ वज्र पद्म धज अकुसीय। गद संघ चक्र भृगु लत हीय ॥

संग सरै दीह सिसु कर विवाल। आचिज्ज अछ्छ बियचरै बाल ॥३०५॥

तुहि दिष्य ध्यान धरि बधु अकाम। व्रत करहि उमा पुज्जन सुभाम ॥

छं० ॥ ३०६ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ ससिर बाल तप करहि। कमल दभभय सु बदन अलि ॥

हेमवंत वन दहिग। दक्षिभ जल सुष सुष्य मिलि ॥

वर वसंत डलि पत्र। चित्त डल्लत अलि रष्यहि ॥

इक पाइ तप करहि। पवन चावहिसि भष्यहि ॥

वरषा रु सरद लग्गिय करद। मरद मैँन जग्गै सु तन ॥

सुगंधि दिव्य मिष्टह पवन। करहि सेव उमया सु मन ॥

छं० ॥ ३०७ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

सीत सु जल उष्णह सु (अग्ग*)। पवन वृष्यह घन झुल्लहि ॥

उमया उर उच्चार। सु डर गुर जन वर भुल्लहि ॥

८५ पाठान्तर.—दूहा। सुंदर। सुंदर। सुभत। सनेह। सुंदर। सुंदर। त्रिभुवन। पुरिप। पहुँ। पहुँ। आवत। ग्रैह ॥

८६ पाठान्तर.—जौ। पानि। कोमल। मिष्ट वानि। दुती। मैव। अंवस्मु। अंवरि। मोर-चंद। चौ वज्रयचदमधज अजसीय। नौ वर्ज। ध्वज। भृगु लत पीय। संग। संप। सिसि। करि विलाल। आविज्ज अर्वा बयचरै बाल। आचज। अत्र। त्रुहि। दिपि। ध्यान। वुर। अकाम। पुजन। सु भान ॥

८७ पाठान्तर:—कवित्त। सिसिर। कहि। करीह। कर्मल। दश्य। दश्यइ। वदन। हेमवत। वन। दक्षि जल सुप मिलि। दक्षिज। सुप सुप। वर। वमन। पत। चित्त। डुल्लत। रषहि। रषंहि। इक। पाय। चावामि। भष्यहि। वरषा। लगिय। मयन। मैँन। जग्गै। सुगानि। सुगंध। मिष्टान। पवन। मिष्टान पन। सैव ॥

८८ पाठान्तर:—सीतल। सीत। अगि। अग्नि। अग्ग। * अधिक पाठ है। वृष्यह। वन। सुल्लहि। हर। चार। सर। भुल्लहि। नंदुल्लं। वृत्त। मिष्टान। पान। हर। मंगे। मंगे। ह्यनछ।

दधि तंदुल घृत घीर । बहुत मिष्टान पान कर ॥

हरि मगहि हर नछ्छ । करहि तलपत्त पत्त धर ॥

स्नानं च जम्म भगिनी करहि । सुरति सेव कात्यायनिय ॥

इह कहि रु क्रान कुंडल करहि । गरथि माल पुहपै घनिय ॥

छं० ॥ ३०८ ॥ रु० ॥ ८८ ॥

हनुफाल ॥ मुहि अप्पि भगवति कन्ह । देवाधि देव सुनन्ह ।

अति सीय पुहप सुरंग । विनि पीन अंवर चंग ॥ ३०९ ॥

घन मद्धि तडिता तेज । चमकंत दुति सम केज ॥

विय ब्रन्न उप्पम देषि । कंचन कसौटिय रेषि ॥ ३१० ॥

हरि धरन तुरसिय माल । घन पंति सुक्क विसाल ॥

मंजरिय मुत्तिन माल । सुर चाप सोभ रसाल ॥ ३११ ॥

मधु मधुर मिष्ट सुवानि । कल अमृत सुमृति जानि ॥

ढिं ग स्याम कमला लछ्छि । उप्पंम गुन कवि अछ्छि ॥ ३१२ ॥

तरु स्याम तेज तमाल । चढि हेम वैलि विसाल ॥

सिर मोर मुकुट जु स्याम । नचि मोर गिरवर ताम ॥ ३१३ ॥

भलकंत कुंडल कान । कवि कहै उप्पम वान ॥

वर अरक सोम प्रमान । सित पुर्निमा निस धान ॥ ३१४ ॥

घन सघन सज्जल ताम । उठि इन्द्र चाप सु काम ॥

वर वजति मुरलिय मुष्प । संसार हरति सु दुष्प ॥ ३१५ ॥

इक पाइ तप कर न्याइ । हरि धरै अधर सु धाइ ॥

हरि लियै अंकुस वज्र । कविराज उप्पम सज्ज ॥ ३१६ ॥

हरनछि । तलपत । पत । पन । त्रमु । जमु । सैव । कात्यायनीय । करहि । गह्य । गरुअ । गरुध-
पहुपे । घनीय ॥

८९ पाठान्तरः—छंद हनुफाल । मुह । कहु । देवाधिदेव । सुनन्ह । अति सीस । पहुंप ।
वनि । पीत । घन । मधि । तैज । कैज । उपम । दैपि कसौटीय । रेषि । तुरसी । तुरसी । घन
पंत । सुक । सौच । वानि । अमृत । सुमृत । जानि । स्याम । लछि । उप्पंम । अछि । अछ ।
श्यांम । स्याम । तैज । माल । । हैम वैलि । मोर । मुकुट । मुगट । यु । स्याम । सु स्यांम । नधि ।
तांन । कान । कहि कहै । वान । वान । सौम । प्रमांन । पुर्निमा । धाम । धान । सजल ।
तांम । इद्र । काम । चर । वजति । मुरली । मुष्प । सु दुष्प । स दुष्प । पाय । करे । न्याय ।
लिये । अंकुस । वज्र । कविराय । औपम । सज । वर । भुक्त । मत । करीय । हट्टक पाट ।

वर भक्त मत्त करीव । तिन हटक पार नरीव ॥
 यौं पाइ धरि इहि भंति । ससि बीय वनि परि कंति ॥ ३१७ ॥
 हरि चरन कमल सु कोर । जनु मिलन कुमुदिन भोर ॥
 नष न्वमल कमल सु कंति । जनु उगिग तार कंपंति ॥ ३१८ ॥
 नटवत्त भेष ध्रिभंग । दुति कोट करत अनंग ॥
 मुष कमल दधिकन स्याम । नम फुल्लि मालति काम ॥ २१९ ॥
 सो इकंत अप्पहि मात । अधमान न्विमल गात ॥
 छं० ॥ ३२० ॥ रू० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ चार घटी निसि सुन्दरी । प्राण पपत्ते थान ॥
 जल अंदोलित सो भई । उदै होन वर भान ॥ छं० ॥ ३२१ ॥ रू० ॥ ८७ ॥
 कंस मेर चढि सोम बहु । सकल हरत रवि पुंभ ॥
 हंस माल भंजन सकल । सज्यौ चंद मनु सब ॥ छं० ॥ ३२२ ॥ रू० ॥ ८८ ॥
 चौपाई ॥ गावति विरति अचारे बालं । हेम मंत कष्टं तन सालं ॥
 उरमा निसि रविनी रस जामं । हरि निरदोष निहारत कामं ॥
 छं० ॥ ३२३ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ इंद उदंत सरह उद । मुद आनन्द अनंद ॥
 नंदन नंद सु वृंद व्रज । विहसिय चंद सु चंद ॥ छं० ॥ ३२४ ॥ रू० ॥ ९० ॥
 नव रवनी सखर सु नित । स्तुति अति रचि रुचि भेद ॥
 निरष निमेष विसेष विधि । असम सरन मन * षेद ॥
 छं० ॥ ३२५ ॥ रू० ॥ ९१ ॥

मरीय । हटक पाट । यौं । पाय । ससी । कौर । जुनु । मिलित । कुंमदत । भोर । भोर । नप ।
 निमल । नूमल । उगि । कंपंति । नटवत्त । भेष । दुति । कौर । कटित अनंग । स्याम । फुलि ।
 फूलि । मालनि । काम । सौ । अपहि । अधमान । निमल ॥

९० पाठान्तर.—दुहा । च्वारि । संदरी । प्राण । पयनै । पयते । थान । अंदोलित । सो ।
 भई । होत । वर । भान ॥

९१ पाठान्तर.—मैर । सोम । पुव । भजन । वंद । मनो । मनो । सब । सवम ॥

९२ पाठान्तर—छद अरिल । अगिल्ल । विरति । अवरि । बालं । हेमवत । हेमवत ।
 उरमां । रिविनी । जाम । देषि । नहारनि । निहारनि । काम ॥

९३ पाठान्तरः—ईद । इदं । सरह । मुंद । अनद । वृद । व्रजे । वृज । वंलिय ॥

९४ पाठान्तरः—स्तुति सुति रुचि भेद । स्तुति स्तुति रचि रचि भेद । निरषि । निमेष ।
 विसैष । विशेष । वधि । * देवीवाली में मन शब्द नहीं है । षेद ॥

वृद्ध नाराच ॥

जिते जितेक धामधामकामनीमनांतितेतितेसुरासुरेससूत्रभामिनिगनं ॥ ३२६ ॥
 रते रते धने धने बने बने वनं चरं । त्रिभंग वंस ग्रव्यं, श्रवन्न लग्गए हरं ॥ ३२७ ॥
 मुकट्टयं मयूर चंद्रसीसयं सु लष्यं । सुगोपिका सुगोप बालतालयं सु सष्यं ॥ ३२८ ॥
 पतीव्रतं सुधम्मधाम भामिनीसुभग्गयं । अपत्ति ईसनी सयं सुपातकं सुलग्गयं ॥ ३२९ ॥
 सुमोहमग्गकाममग्गकामिनीबुलत्तियं । अमोहमोहमारगे अलोकतक्कजत्तियं ३३० ॥
 अपत्ति सुत्तच्छंडि स्वामिवाम वाममारगे । कर्हत चंदभेदयं अकज्जवणु, सारगे ॥ ३३१ ॥
 तमेव धम्म धामयं सुधम्म धामयं सुनांतमेवकाम कामयं सुकाम* कामनीगनं ३३२ ॥
 तमेव देव देह अस देह हंस वेदनं । तमेव स्रव श्रवयं सु सर्वदा सुभेदनं ॥ ३३३ ॥
 तमेव लोक लोकलज्ज भज्जनं सदा हरौ । तमेव सुष्प दुष्पयं सुसाधवं अहं करी ॥ ३३४ ॥
 तमेव दिष्ट इष्ट पुष्ट दुष्टनं प्रतीयते । तमेव सत्ति सत्ति वाद गोपिका महं गते ॥

छं० ॥ ३३५ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

गाथा ॥ इत्थं सु नाम ग्रहनं । नत्थं यत्तेमि कहन कारन यं ॥

यत्ते पतंग दीवे । हं माधव माधवं देवं ॥ छं० ॥ ३३६ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

९९ पाठान्तरः—छंद वृद्धि नाराच । जित । जितैक । धाम धाम । काम । कामि । कामिनी ।
 तितै तितै । सुरासुरैसु । सुत्र । रतै रतै । धनै धनै । वनै वनै । वरं । रते रत धने बने वनं चरं ।
 ग्रव्यं । श्रवन्न । लग्गए । सुकट्टयं । मुकट्टयं । मयुर । शीशयं । लष्यं । गोपिका । गौपवाल । सुत्प-
 पयं । सुसरवयं । पतिव्रतं । घृत । धाम । भगयं । अपत्ति । इसनी । पातकं । लग्यं । मोह ।
 मृग । म्रिग । काम मृग । कामृग । कामिनी । बुलत्तियं । अमोह । मोह । मारगै । अलौका । तरक ।
 जत्तियं । अपत्ति । सुत । स्वाम । स्वाम । वाम । वाम । मारगै । मारगै । भैदयं । अकज ।
 वणु । सारगै । तमेव । तमेव । * बूंदीवाली में सुकाम शब्द नहीं है । तमेव । देव । अस ।
 देह । वैदनं । तमेव । श्रव । सूव । श्रवयं । श्रवदा । सूवदा । भैदनं । तमेव । लोक । लोक ।
 लज्ज । भजनं । भंजनं । तमेव । सुष्प । दुष्पयं । तमेव । दुष्टयं । प्रतीयते । तमेव । त्पतिसानि ।
 सत्ति सत्ति । गौपिका । गने ॥

इस छंद का कहीं तो वृद्धि नाराच और कहीं लघुनाराच नाम लिखा मिलता है, जैसे कि इसी समय के रूपक ९ और १७ और २४ आदि में है परंतु अभी तक कोई वृद्ध और लघु का भेद सूचक छंद नहीं आया है, जहां आवेगा वहां हम उनके विषय में कहेंगे । अभी यह समझ लेना चाहिए कि यहां तक उनमें प्रमाणिका नामक छंद का लक्षण घटता है अर्थात् वह आठ अक्षर और बारह मात्रा = लगुलगुलगुलगु—का होता है कि जो परस्पर नामान्तर है ॥

९६ पाठान्तरः—गाहा । इच्छं । इच्छं । नाम । ग्रहनं । नत्थं । पतैवि । पते । पतै । पतंग दीवं । पतंग दीव । देवं । वंदे ॥

कवित्त ॥ मधु माधव वैसाष । रषिः माधव माधव रित ॥
 वन घन तन वनि रम्य । सोभि मारुत मारुत अति ॥
 बंसी सुर संभन्धौ । हन्धौ गोपी सु चित्त सुर ॥
 कछुव कन्धौ कछु कन्धौ । गये सातुक सुभाव गुर ॥
 सु मुगति सोह एकंग ग्रहि । अध इषि चषि अजत चली ॥
 एक ही बार संभरि सु सुर । कंत चित्त चिंता पुली ।

छं० ॥ ३३७ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

गाथा ॥ वाले विभ्रम चरितं । मुक्तं तथ्य चितयं होई ॥
 रति कन्हं सम रमनं । छित छित्तं मुक्ति सा वाले ॥

छं० ॥ ३३८ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

दूहा ॥ देव देव वसुदेव सुत । नित नित गुन गन पूर ॥
 छिन इक नाम लियंत वर । घन अघ उड्डि कपूर ॥

छं० ॥ ३३९ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

कवित्त ॥ ध्यान सु प्रति प्रति कन्ह । देव देवाधिदेव वर ॥
 मधुर नरम अति वैन । मकर कुंडल चंचल गुर ॥
 नाचत चित्त चिभंग । बंस बंसीधर राजै ॥
 अति उतंग (माया *) वीभंग । नाम लियंत सुराजै ॥
 देवत्त देव देवाधि वर । नीत न मानत भजि सु वर ॥
 कहियंत गोप गोपी सु वर । विधि विधान निरमान नर ॥

छं० ॥ ३४० ॥ रू० ॥ १०० ॥

९७ पाठान्तरः—कवित । मधु माध वैसाष । मधु माधव वैसाष । रिषि । रषि । गिति ।
 तवनि । सौभ । गौपी । सु वित । स चित । कछु कढ्यौ कछु कछु कश्यौ सातुक सुभाव गुरु । मौ ।
 सौह । ग्रहि । इषि । चषि । अजत । शर । संभरी । चित । चित ॥

९८ पाठान्तर—गाथा । वालै । श्रुक्तं । तथ । चितय । चितयं । होई । कन्ह । रमनन । वाले ॥

९९ पाठान्तर.—दूहा । देवदेव । वसुदेव । पूरि । छिनक । नाम । लियंत । वर । अवाकृति ।
 उड्डिय । कपूर ॥

१०० पाठान्तर—कविता । ध्यान । कन्ह । देवदेवविदेव । वर । नरम । वै । वैन । मुत्त ।
 बंसीधर (माया *) अधिक पाठ । विभंग । देवत । देव । देवाधि । वर । मानत । भजि । वर ।
 कहियत । गोप । गोपी । विधान । निरमान ॥

दूहा ॥ अलक लोक वज्जत विषम । गन गंधर्व विमान ॥

सुर पति मति भूल्यौ रहसि । रास रचित ब्रज कांन ॥

छं० ॥ ३४१ ॥ रू० ॥ १०१ ॥

चीटक ॥ ततथे ततथे ततथे सुरयं । तत थुंग मृदंग धुनि डरयं ॥

उघटं त्रिघटी हरि विक्रमयं । भ्रमरी रस रीति अनुक्रमयं ॥३४२॥

ब्रज वालिन आलिन आलिनयं । इक इकति कन् वित्तं ब्रजयं ॥

निज निरत वित्तं किं नमनं । द्रिग पाल मिले कोतिगनं ॥३४३॥

पहु यंजलि अंजु सुरंग वनं । वर वज्जति छंद विनं धुनिनं ॥

निसि निर्मल चंद मयूषनयं । घन घंटिक नूपुर अंभनयं ॥ ३४४ ॥

धरनीधर नित्यत दिङ्करयं । नव नाग कुली कुल सुभरियं ॥

घट मास निसानिसि नृत्य कियं । तत्र गोविंद अंतर ध्यान हुयं ॥३४५॥

सत्र गोप वधू मिलि ढंढतियं ॥ छं० ॥ ३४६ ॥ रू० ॥ १०२ ॥

कवित्त ॥ गोपति अंतर (सु *) ध्यान । भये भ्रम भ्रम उपनिय ॥

विरह वान भय दौन । प्रान छुट्टिय वस्तनिय ॥

ज्यौं तर वर विन पत्त । आस तर वर वन करई ॥

ज्यौं सुद्धि भई मुष बाल । बहुरि चिंता नन धरई ॥

सांवरी स्याम मूरति सुवर । अतिस पहुप संमान वर ॥

सिर मोरपिछ्छ सोभत वसन । तरुन बाल पुछ्छै सुतर ॥

छं० ॥ ३४७ ॥ रू० ॥ १०३ ॥

१०१ पाठान्तरः—दोहा । लौक । वज्जत । वज्जत । विषम । गंधर्व । गंधर्व । विमान । सुरारि । मत्ति । भुल्यो । भुल्यै । वृज ॥

१०२ पाठान्तरः—तथेनैतथेनतथे सुरयं । ततथेग । मृदंग । धुन । धरयं । उघटै । उघटं । विक्रमयं । भ्रमरी । अनुक्रमय । ब्रज । वालिन । इकति । वित्तं । वृजयं । नरतति । नर्तित् । वरतिक । वर्तिक । कि । कंयं । नमयं । दृगपाल । मिले । मिल । मिले । कोतिगयं । कौतिगयं । कौतिगन । पुह । पजुलि । पंजु । वयं । वर । वज्जत । वज्जत । विन । विनं । धुनयं । धुनयं । निशि । निर्मलि । मयुषनय । नूपुर । नृतति । नृत्यत । निङ्करयं । कुली । कुल । सुभरियं । सुभरियं । निसानिस । निशानिश । कीयं । कायं । गौव्यंद । गोवीद । ध्यान । हुअं । गोप वधु । तयं । तीयं ॥

१०३ पाठान्तरः कवित्त ॥ गौपी । गोपी । अंतर ॥ सु * अधिक पाठ । ध्यान । भयो । भये । भ्रम भ्रम । भ्रम भ्रम । उपतिय वाम । भयं । दान । प्रान । छुटीय । छुटिय । छुट्टिय । वस्तनिय । जौं । विन । पत्र । विन । विन । जौं । सुद्धि । भई । चिंता । धरई । स्यावरी । स्याम । मूरति । सुवर । पछ्छ । सोभन । तहन । पछ्छै । पुछ्छै । पुछ्छै ॥

कवित्त ॥ किष्ण विरह गोपिका । भई व्याकुल सु विकल मन ॥
 वर गहवर बन भ्रमै । कै इक गढ़ी ग्रियलं तन ॥
 विषम वाय जिम लता । मोरि मारुत भंभोरै ॥
 कै चित्र लिषी पुत्तरी । जोरि जोरंत निहोरै ॥
 कै पाषान गढि केक मग । भ्रमत माल पुछ्छत फिरिय ॥
 कविचंद चवत हरि दरस विन । दोय कपोतह विछ्छुरिय ॥

छं० ॥ ३४८ ॥ रू० ॥ १०४ ॥

स्याम रंग पिष्यहिन । घटा घनघोर गरजत ॥
 कोइल मधुकर बयन । श्रवन संभरै वरजत ॥
 कालिंदी न्हावहि न । नयन अंजै न भ्रगंमद् ॥
 कुचा अग्र परसै न । नील दल कवल तोरि सद ॥
 पर पीर अहीर न जानि मन । ब्रज बनिता मिलि कहत सब ॥
 जिहि मग कन्ह बन संचरिय । तिहि मग जल पीवहि न अब ॥

छं० ॥ ३४९ ॥ रू० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ सुतन दुष्य अति बाल ससि । भयौ पुरन विन मंत ॥
 तिम सुष घटि दुष्यह दरस । भोर भौर उडि जंत ॥

छं० ॥ ३५० ॥ रू० ॥ १०६ ॥

भयौ सु उडगन गात वर । पूरन ससिय अकास ॥
 सुवर बाल वद्व्योति दुष । सिंधु उलट्यो भास ॥

छं० ॥ ३५१ ॥ रू० ॥ १०७ ॥

१०४ पाठान्तरः-विरह । गोपिका । भई व्याकुलविकलं मन । वन गहवर वन भ्रमै । कै । गढिय । गढी । प्रथलं । मोरि । झंझेरै । झे चित्र छिपी । फुत्तरी । जोरि । जोरितं । निहोरै । कै । के । पषान । कैक । भ्रमत । बाल । पुछ्त । फिरिय । विन । दोय । कपोतकि । विछुरिय । विछुरिय ॥

१०५ पाठान्तरः-स्याम । पिष्यहिमः । घोर । कोइलम । वरजत । कालिंदी । पसै । भील । तोरि । जानि । चनिता । मग । कन्ह । वन । ब्रल ॥

* यह रूपक स० १६४७ और १७७० की पुस्तकों में नहीं है ॥

१०६ पाठान्तरः-दूहा । सुतन । दुष । पूरन । तिम सुवट्टि दुषह दरस । सरम । व्यो नौर भौर उडि जंत ॥

१०७ पाठान्तरः-भयो । वर । ससिय । शमिय । सुवर । वद्व्योति । उलट्यो ॥

गाथा ॥ राधापतीतमारं । राधा भई भुजंगयं वैनं ॥

राधावल्लभ वंसी । वरनं षंत सु भोअनं जातं ॥छं०॥३५२॥रू०॥१०८॥

कवित्त ॥ रास बाल हरि बाल । बाल आई न बाल हरि ॥

सघन कुंज घन कुसुम । सज्जि सष सैन चैन करि ॥

कंध चढत व्रपमान । धाय मुक्की तिन वैरह ॥

कोइ लभै नह सुद्धि । विरह सभयौ घने रह ॥

पावै न बाल पुछ्छत सुव्रछ । दै देवाधि देवाधि कह ॥

आरति चरित्र बहु कन्ह कौ । को जंपन जानन कलह ॥

छं० ॥ ३५३ ॥ रू० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ वग्ग मग्ग गोपिक गमन । कंध अरोहन मग्ग ॥

द्रुम द्रुम बल्लिन अलिन अलि । हरि पुछ्छन अछि लग्ग ॥

छं० ॥ ३५४ ॥ रू० ॥ ११० ॥

मोतीदाम ॥ सुन् कैरी कदंम कयथ्य करील । कमोदनि कुंदह केतकि वीला ॥

कनैर कसोंदिय कैबर कोह । करों दिन कान्ह कहां कहु मोह ॥३५५॥

सुनी सुनि सोक समीर सुगंध । सकुंजन कुंज निरष्यत रंध ॥

कहूं बल बंधि विजोरनि जानि । कहूं वट डंस दिषावत आनि ॥३५६॥

सुनौ तुम चंप कदंम चकोर । कहौ कहूं स्याम सुने षग मौर ॥

लही ललिता बन लोचन चंग । कहौ कहूं कान्ह जुहे तुम संग ॥३५७॥

१०८ पाठान्तरः—राधापतित । राधापतित्त । राधामतीत । भार । वेंनी । वैनी । वैनं । राधावल्लभ । वसी । वरन । षंत । भोअन । जानं ॥

१०९ पाठान्तरः—कविता । आईय । आइय । सज्जि । सेन । वैन । वैन । कं । वृषमान । धीय । मुक्की । सुक्की । वैरह । कोइ । लतै । सुधि । विरह । धनैरह । पावै । पुछ्त । पुछति । विछ । दइ । देवाधि । आरत । कन्ह । कै । कौ ॥

११० पाठान्तरः—दोहा । वग्ग मग्गोपिय । मनह । अरोहन । मग । मगि । द्रु । बेलिन । बेलिन । मिलि । पुछन । पूछन । लग ॥

१११ पाठान्तरः—छंद मोतीदाम । सुनि । कोरि । कदंम । कयथ । कमौदनि । कैतकि । कसौदिय । कसौटीय । कैबर । कोह । कसौदिन । कान्ह । कदा । कहा । कहौ । मोह । सुनि सुनि । सुनि सुनि । सोक । नरपत । निरपत । कहूं । वध । विजोरनि । जानि । कहु । दिषावहु । आनि । सुनो । कदम । चकोर । कहो । कहौ । स्याम । सनै । मौर । बन । लोचन । कह । कहूं ।

हुँ मान कियौ उन मानह भंग । सख्यौ नहि ग्रब तज्यौ हम संग ॥
 दुरे अब ही तजि कुंजनमांह । गए कर ही कर छांडहि बांह ॥ ३५८ ॥
 चली मिल पंछिनि पुछ्छत भीर । कुरं कुर रंगिन कोकिल कीर ॥
 परी धर मुछ्छि गहै कर एक । तिनं लगि सास उच्चौ उडि केक ॥ ३५९ ॥
 चले असु धार तरंगिनि बाढि । गहै दह सासनि प्रानन काढि ॥
 मगें डग चालि गिरै धर धाइ । गहै कर साहसि लेइ उठाइ ॥ ३६० ॥
 गई जमुना जमुजानिन तीर करै सब कामिन स्याम सरीर ॥
 जु पूतनि रूप धरै तन आप । ग्रहै दह कन्हर कालिय साप ॥ ३६१ ॥
 धरै कर पव्वय गोप सहाय । परै जल धार तडित्त निहाय ॥
 धरै चिय ध्यान न लग्गइ नैन । परै पतिपत्त सुनै सुन वैन ॥ ३६२ ॥
 कहंत क्रिपा निधि भक्त सहाय । भए तब आनि प्रगट दिषाय ॥
 कियौ फिरि रास जु सुंदर स्याम । विचं विच कंन्ह विचं विच वाम ॥ ३६३ ॥
 भए अम अंग कलिंद्रिय तीर । छिरकत स्याम गहै भुज भीर ॥
 करी जल केलि चरित्त सुजानि । लियौ दधि दूध चियानि सुं दान ॥ ३६४ ॥
 युं रास विलास अकास प्रहून । अनंदिय अंमर अंबुज सून ॥
 छं० ॥ ३६५ ॥ रू० ॥ १११ ॥

दूहा ॥ कहिरु बाल पतिय जमुन । रमन केलि जल बाल ॥

मानहु मदन महीप गुन । कहत फंदन काल ॥ छं० ॥ ३६६ ॥ रू० ॥ ११२ ॥

कान्ह । है । मै । मै । बान । कायौ । ग्रव । दुंरै । तिजि । माहि । छडि । छाडि । केँ । कं ।
 बाहि । बाह । चलि । मिलि । पुछ्छत । कुरंग । कुरंनि । कौकिल । मुछ्छि । गहे । गहै । केक ।
 चले । असुधार । चढि । गहै । दहसति । प्रानन । काटि । कडि । डगें डग । मगें मग । गिरें ।
 गहें । गहै । साहस । लेइ । लेई । गइ । यमुना । यमुनान । यमुनानि । केँ । के । करें । कामनि ।
 स्याम । पूतना । जु पूतना । ग्रहें । धरें । पव्वय । गोप । तडित्त । वरें । अन । ध्यान । लगहि ।
 लगेंइ । लगैइ । नैन । परें । पितपता । सुनै । सुत । वैन । कृपानिधी । भक्ति । दई । अंनि ।
 प्रगट दिपाइ । स्याम । विचि । वाम । भई । कन्द्रीय । छिरकत । स्याम । कैलि । चरित । गानि ।
 लियों । पें । दूद । पै दान । यो । यौ । अनंदियं । अमर ॥

यह मोतीदाम नामक छंद चार लगुल का होता है उसमें बारह वर्ण और मोदक मात्रा होती है ॥

११२ पाठान्तरः—दौटा । बालि चाल । पतिय । यमुन । कैल । मानहुं । म्यनहु । दान । कटत । कहना ॥

पद्धरी ॥ क्रीडंत जमुन सुंदरि विसाल । प्रापत्त षट् सत वरष बाल ॥
 पौगंड छंडि किस्सोर पीय । जोति सु सिसर अतितोर जीय ॥३६७॥
 अप्पौ सु अरघ रिन पानि जोरि । मनु प्रफुलि कुमुद ससि चित्त चोरि ॥
 तजि बाल वस्त्र क्रीडंत वारि । प्रति धरे अ'वरह मिलन धारि ॥३६८॥
 आधिक बचन व्रत रपन धाम । हरि वसन कदम चढि कोटि काम ॥
 तजि बाल वस्त्र भावरि सु देस । निकरीय लपट वडवान लेस ॥३६९॥
 नव किसल धनुकजनु कनक बलि । तिरि चलिय जमुन जनु कदम केलि ॥
 लटकै सु बाल वैनिय सुरंग । सोभै सु दुत्ति विच जल तरंग ॥ ३७० ॥
 जानै कि सदन नृप रहसि जोर । जवनिका ओट नचै चकोर ॥
 मानों कि दुत्ति द्रप्पनह व्योम । निचौल स्याम मधि हमिय सोम ॥३७१॥
 मुष केस पास बिटिय विसाल । बंध्यौ कि सोम सोभा सिवाल ॥
 गहि पानि वारि रवि अरघ देहि । उप्पमा चंद वरनैति नैहि ॥३७२॥
 सैसवसु पानि जुबन सु अरघ । मनु देहि मनमथ मिलन स्वर्ग ॥
 जल कनक बुंद मुष पर विसाल । पुज्यौ कि चंद मनो मुक्तिमाल ॥३७३॥
 कुंकुम सु नीर छुटि लग्यौ चारु । नग रतन धरे मनु हैम थारु ॥
 उर बीच रौमराजीव रेष । गुरु राह मेर मधि चल्यौ भेष ॥
 छं० ॥ ३७४ ॥ रू० ॥ ११३ ॥

११३ पाठान्तरः—छंद । पद्धरी । क्रीडंत यमुन । सुंदरि । प्रापत्त । सत षट् । सत षट् । वरष ।
 बाल । किस्सोर । किस्सोर । जौनी । जु । ससिर । तौरि । अरिन वरि । पानि । जौरि । मन । सिंसि ।
 चित्त । चौरि । धरें । धरै । अवर । मिलैत । मिलित । धार । अधिक । इति । वृति । वाम ।
 वसन । चहि । कौट्टि । काम । बाल । भावरि । दैस । निकरिय । पट्ट । लैस । कीमल । कनक ।
 वैलि । वलिय । कंदम । कैलि । लटकै । लटके । बाल । वैनिय । सौहै । सोचै दुति । विच ।
 विचि । जानै । रहस । जौर । जवनका । उठ । उद । नचै चकोर । मानों । मानौ । दुत्ति ।
 द्रप्पनह । व्याम । निचौल । निचौल । स्याम । हलिय । सोम । कैस । विटीय । विसाल । विंध्यौ ।
 बंध्यौ । सोम । सोभा । विसाल । पानि । अरघ । देहि । दौहि । औपमा । उपमा । वरनैति ।
 वरनैति । नैहि । नैह । सैसवसु । पानि । जुबन । अरघ । मन्यें । मनौ । दैहि । मिलत । स्वर्ग । जग
 कनक । बुद । पुज्यौ । मनौ । मनौ । मुक्तिमल । कुंकुम । कुंकुम । छुट्यौ यु चारु । रत । धरें ।
 मनौ । हैम । उर बीच । उठास । रौमराजीव । रेष । मैर । भेष ॥

दूहा ॥ जहां पत्तवर कृष्ण गुरु । चढ़ि तमाल हरि वस्त्र ॥

मानहु सुंदरि अंग वर । करत सुमित्त पवित्र ॥ छं० ॥ ३७५ ॥ रू० ॥ ११४ ॥

कवित्त ॥ पीत वस्त्र सु निकंत । जलालंबन तन दुति दुरि ॥

दीपक करि पेंडरिक । द्विग्ग लागि गुंज सुत्ति हरि ॥

क्रिसन त्रिभंगी तन्न । धन्यौ किस्सोरति रूपं ॥

दिष्ट वाम भौ कोटि । मोह माया तन ओपं ॥

आनंद कंद जुग चंद वद । वृंदावन वासी विहर ॥

दौ वसन रसन तुट्टनन करि । देहि गारि तिय नंद पर ॥

छं० ॥ ३७६ ॥ रू० ॥ ११५ ॥

कुंडलिया ॥ धुनि वंसी सुनि सुनि अवन । चक चक्रित चित पाहि ॥

मन माया की पुत्तरी । रही स्वामि तन चाहि ॥

रही स्वामि तन चाहि । मदन दावानल बहूी ॥

मौन तनं तन फिरै । अबल व्याकुल भइ गहूी ॥

चित जल रजि पग परै । जलसायी सु सरूप सुनि ॥

निगम प्रमोद मृणाल (हरि*) । सो भइ वंसी बैन धुनि ॥

छं० ॥ ३७७ ॥ रू० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ वरषि कदम्भ सु वन्न चढि । लज्जित बहु वर बाल ॥

हथ्य जोरि सम सो भई । प्रभु बुल्ले वछपाल ॥

छं० ॥ ३७८ ॥ रू० ॥ ११७ ॥

११४ पाठान्तरः—दौहा । तहा । पतैवर । चटि । मानहु । मानहुं । सुंदर । वरत । सुमित । पवित ॥

११५ पाठान्तरः—कवित्त । कवित्तः । जलालंबन । वरी । पुडरीक । द्विगागुत्ति । हरि । मुत्ति । हरि । क्रिसल । तनं । किस्सोरति । क्रमोगति । दिष्टि । वाम । कोटिचौ । सौह । ओपं उप । वद । विहर । तुट्टनिम । तुट्टनिम । देहि । देहि ॥

११६ पाठान्तर—कुंडलिया । वंसी । चक । पाइ । पाय । मनि । फुतरी । फुतरी । स्वामि । दही । तिनंतन । फिरै । अबल । भई । हुई । गद । लत । लज्जति । परै । जल सु ईम रूपद सुनि । प्रमोद निगम । मृणाल । * अधिक पाठ । सौ । वसी । बैनि । बैन ॥

११७ पाठान्तर.—दौहा । वरषि । क्रमोद । अवनं । लज्जित । वर । हथ । जोरि । सो । भइ । बुल्लयो । बुल्ले । भूले । छपाल । वछपाल ॥

दूहा ॥ चढि कदम बुल्ले सु प्रभु । मधु रित मिष्टत वानि ॥

बंधि बसन कर कन्ह वर । लेहु न सुंदरि आनि ॥

छं० ॥ ३७६ ॥ रू० ॥ ११८ ॥

ब्रजपति ब्रजलालनि कही । रमे रमन इक काल ॥

काम अरथ करि सुंदरी । धेनन मुक्कै बाल ॥छं०॥३८०॥रू०११६॥

दूहा ॥ युति पानी जुग जोरि करि । फिर लग्गी चिहुँ पंति ॥

मानों राहें वंधनह । सोमहि पारस कंति ॥

छं० ॥ ३८१ ॥ रू० ॥ १२० ॥

दूहा ॥ इह कालिंदी कदम चढि । लैन चीर सब नारि ॥

प्रभु बैठे पातन पतन । मानहु ग्रह पति मारि ॥

छं० ॥ ३८२ ॥ रू० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तट कीले पीले वसन । रतन छतन छँटि छित्त ॥

इल अपहर सरवर रवन । भई भ्रम मन मित्त ॥

छं० ॥ ३८३ ॥ रू० ॥ १२२ ॥

कवित्त ॥ अरध विंब जल अरध । नहिन वस्त्रं छिति कारिय ॥

मनौ घंभ अहि क्रील । किड छित्तन व्रत धारिय ॥

कितक जोरि कर जुग । कितक नगनी तन तारुन ॥

कितक कूह मुहु कौन । कितक लन मथ्य सु वारुन ॥

तरु पत्त गत्त निय वसन करि । सुनि ब्रह्मा संकर हस्यौ ॥

तिन टेर वेर बंसी बजिय । रास क्रील माधव रस्यौ ॥

छं० ॥ ३८४ ॥ रू० ॥ १२३ ॥

११८ पाठान्तरः—बुल्ले । स । मधु । वानि । वानि । वसन । कन्ह । चर । लेहु । आनि ॥

११९ पाठान्तरः—ब्रजलालति । रमे । काम । करी । मुक्कै । मुकै । बाल ॥

१२० पाठान्तरः—पुति । पानि । युग । जोरि । कर । फिरि । लगी । विहुँ । मनोँ । मानों ।

राहु । जु । सोम कि । सोम कि । पारस पंति ॥

१२१ पाठान्तरः—कालिदि । कालिंदी । कदंम । लैन । बैठो । पातन । पवन । मानहु ॥

१२२ पाठान्तरः—क्रीलै । पीलै । छँटि । छटि । छित्त । सुमन । भईय । भ्रम । मित्त ॥

१२३ पाठान्तरः—कवित्त । छित्त । कारीय । मनौ । मनोँ । छित्तन । व्रत । धारीय । जोरि ।

युग । जुग । तारन । मनमथ । यत । गत । शंकरि । तिन वेर टेर । वसि । वजिय । भाव ॥

कवित्त ॥ तरु उप्पर हरि चढ्यौ । सबै सषियन मन संध्यौ ॥
 कंस चास तप प-थ्यौ । इन्द्र आसन मन बंध्यौ ॥
 ब्रह्मा मन उल्हस्यौ । रुद्र रुद्रासन रष्यौ ॥
 मसि कालह षल भल्यौ । दैत दारुन बल दिष्यौ ॥
 सुर सज्जि बज्जि गोपह सरस । अति आकर्ष नवेस सुर ॥
 रचि रूप भइ तरु अद अली । मनि दामिनि गोपिय सु हर ॥
 छं० ॥ ३८५ ॥ रू० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ चढ्यौ राह कैलास पर । फिरि राका चिहु चक ॥
 मुरत सथ्य अहि परत तव । चढि कदम रस रक ॥
 छं० ॥ ३८६ ॥ रू० ॥ १२५ ॥

दूहा ॥ फिरि गोपी चिहु मग हरि । करन रास रस रंग ॥
 इक इक कन्ह अनंग दल । विच विच सुंदरि अंग ॥
 छं० ॥ ३८७ ॥ रू० ॥ १२६ ॥

कवित्त ॥ अप्पि वस्त्र कहि रमन । रास मंडल अधिकारिय ॥
 एक एक विच गोप । कृष्ण एकह विचारिय ॥
 युत्ति पत्ति वर बंध । मंच चावदिसि जोरहि ॥
 मनौ इक घन मड । विज्ज कुंडलि संकोरहि ॥
 वर फिरति सुबर दंपति दिपति । दंपति कुंडलि मंडि करि ॥
 सुभक्त न अंग बिय अपि कै । ठौर नहीं इक अपि भरि ॥
 छं० ॥ ३८८ ॥ रू० ॥ १२७ ॥

१२४ पाठान्तर—तर । ऊपर । हर । सबै । सर्पायन । इन्द्र । इलहमौ । उल्हस्यौ । शशि ।
 स्मर्यौ । देत । मज्जि । बज्जि । आकरपनवैम । भद । अलि । मन । दामिन । सु । हगि ॥

१२५ पाठान्तर—दोहा । गिहु । विहुं । चहु । चक । मय । परत । नव । गकि । रक्ति । रक ।

१२६ पाठान्तर—गोपी । चिहु । मग । हरी । करन । विचि । विचि । सुदरि ॥

१२७ पाठान्तर—कविता । अधिकारीय । विचि । गोप । विचारिय । युत्ति पति । चावदिसि ।

जोराहि । मनौ । इक । घन । मयि । वि । विजाहि । कुंडल । मकौरहि । वर । दिगत । मुजे ।
 कै । ठौर । वौरि । नही । अपि । करि ॥

दूहा ॥ पावस रितु वित्तीत हुअ । सरद संपतौ आइ ॥

दिन आयौ सुंदरि रमन । सुवच सुबंसी गाइ ॥

छं० ॥ ३८६ ॥ रू० ॥ १२८ ॥

दूहा ॥ सरद राति मालति सघन । फूलि रही वन वास ॥

दीपक माला काम की । हरि भय मुक्किय चास ॥

छं० ॥ ३९० ॥ रू० ॥ १२९ ॥

पडरी ॥ उगिय मयंक कंदर्प रूप । दुरि गयौ तंम विन किति भूप ॥

द्रुम द्रुमति भार फुलिलता माज । जनु भार नंमि गुरु राज लाज ॥ ३९१ ॥

उज्जास बंध्यौ धवलंत छेह । सुभक्तै न हंम हंमनिय देह ॥

कुरलंत सुनत धावै न पाइ । अप अप्य तेज सहजै समाइ ॥ ३९२ ॥

पावै न पुष्पु अलि इहै वास । ज्यौं अंधत्रीय चाहंत भास ॥

अप धरिय वस्त्र पाईन जाइ । दुंदुत्त इला पावै सु पाइ ॥ ३९३ ॥

नव बधू सजत भूषन सँवारि । ससि बढी किरन अति तेज तारि ॥

मृगतिल्ल भई उर मुक्ति माल । भुल्लै चकौर ससि नैन चाला ॥ ३९४ ॥

कुरलंत हंस चुन लहिन सार । सुभक्तै न नैन गहरत माल * ॥

नाखिच छिपिग ससि क्रन प्रताप । उज्जाम आप घन मार चाप ॥ ३९५ ॥

सुभक्तै न दंत गज इन्द्र धार । कामिन कटाछ बल बुद्धि चार ॥

नागिनी भद्र गुन गरुअ अंग । दिष्यै न पति मन भइय पंग ॥ ३९६ ॥

गजराज इंद्र दिष्यै न तथ्य । मीडंत मषिका जेम हथ्य ॥

भए गुनित गाव अति सेत चार । नव बधू मुष्य इष्यै कुमार ॥ ३९७ ॥

१२८ पाठान्तर—दूहा । ऋतु । रित । वित्तीत । भय । आय । आपौ । सुवचं । गाय ॥

१२९ पाठान्तरः—फुलि । फुलि । वन वाम । हर । मुक्किय ॥

१३० पाठान्तर.—रंद्रय । गयीं । तम । भूप । गुर । उजास । बंध्यौ । बंध्यौ । छेह । सुझै ।

हंमह । हंसिनीय । हंसनी । कुरलंत । धावै । पाय । अप्य अप्य । अप अप । तेज । समाय । पुफ ।

ल्लै । ज्यौ । ज्यो । अंधत्रीय । धरिय । वस्तु । जाय । दुंदुत्त । पाय । बंधु । बधू । भूषन । सँवार ।

सँवारि । बढि । किराने । तेज । मृगात्रिण । मृगनृष्ण । भइ । मुक्ति । मुनि । भजे । भुजै । चकौर ।

नैन । कुरलत । कुरलंत । लहित । सुझै । नैन । गहरत । * सं० १७७० में "सुझै न दंत गहरत

माल" पाठ है । नापित्र । क्रन । उजाम । आपि । वाप । मुझै । सुझै । कामिनि । कामिन ।

कटाछि । बुधि । विचार । नागिनीय । गरुअ । दिष्यै । पति । भइय । इंद्र । दिष्यै । तथ । मषिका ।

बाला प्रताप मुष सुभत वार । सो भई गंग धारान धार ॥
 हारीति रास करि आस पूर । मन वंछि चियन दीनौ हजूर * ॥
 छं० ॥ ३६८ ॥ रू० ॥ १३० ॥

दूहा ॥ सो वंसी बज्जी विषम । सौरस वंसी पाय ॥
 ब्रह्मादिक सनकादि सिव । रस तन वज्जै गाय ॥
 छं० ॥ ३६९ ॥ रू० ॥ १३१ ॥

मोतीदाम ॥ सुने सुर बाल विलासत सह । तजे ग्रिह काम पियार समद ॥
 परे घन भेद सु वच्च प्रमान । चितै कुइ आन कहै कुइ आन ॥४००॥
 चले मनु ते चिय भुल्लिय देह । सती सत जानि चले तव नेह ॥
 छिनं छिन अंगन तापन जाय । मनौ सब की तडिता चमकाय ॥४०१॥
 भयो तन खेद प्रकंपि जंभाति । ठगी मनु मूरि ठगोरि सिघाति ॥
 तजे ग्रह काम मनौ ग्रसि काल । रही विरहानल के बसि बाल ॥
 छं० ॥ ४०२ ॥ रू० ॥ १३२ ॥

दूहा ॥ कै स्यामा किस्सोर कै । कै पौगंड प्रमान ॥
 रसै रसिक रस रमन कों । चलि वंसी धुनि कान ॥
 छं० ॥ ४०३ ॥ रू० ॥ १३३ ॥

जैम । हथ । भइ । गुनीत । स्याह । मैत । वधु । इप्प । इप्पे । मुप । इप्पे । प्रताम । वार । मौ ।
 भइ । रास । पुग । पूर । वंछिय । हजूर ॥

* इस "हजूर" शब्द को यहा काव ने गोपियो के परम प्राण बल्लभ प्रेयम् श्रीकृष्ण के लिये प्रयोग किया है । उम को मुसल्मानी भाषा के पक्षपानी लोग अरबी "हजूर" शब्द का अपभ्रंश होना अनुमान करैंगे किन्तु मै उसको संस्कृत "सजुप्" से बना हुआ हिन्दी भाषा का गड्ड मानता हूं । इस के संस्कृत-यान-वाला होने के विषय में मै इस दमम समय की उपसहारिणी टिप्पण में अपनी भाविस्तर और सतर्क सम्मति प्रकाश करूंगा अतएव पाठक इस के विषय में अधिक बहा अवलोकन करे ॥

१३१ पाठान्तर.—दौहा । सौ । वंसी । बज्जी । मोगम । पाई । मिवं । रमनन । वज्जै । गाई ॥
 १३२ पाठान्तर—मोतीदाम । सुने । विसालत । तजे । गृह । काम ममद परे । भेद ।
 सवचन । प्रमान । चिते । कोई । कौई । कोई आन । कौइ । काइ । आन । चले । मनौ । चांगन ।
 भुल्लिय । भुल्लिय । देह । जानि । चैल । नैह । छिन । छिन । अगन अंगन । जाइ । शग्रकाई ।
 खेद । जंभाति ठगी । मनो । मनौ । मूर । मूर । ठगोरि । मियाति । गृह । काम । मनो । मनो ।
 तौ । कै । वमि । ॥

१३३ पाठान्तर—दौहा । कै । स्याम । किमोर । किमोर । कै । कै । पगाउ । पेगाऊ ।
 प्रनाम । कौ । कौ । वंसी । कान ॥

दूहा ॥ सुत पति गुग्जन बंचि वर । तजि ग्रिह काम प्रमान ॥
धुनि बंसी संभरि श्रवन । चलि सुंदरि तजि प्रान ॥

छं० ॥ ४०४ ॥ रू० ॥ १३४ ॥

दूहा ॥ सजि सिंगार नग नग उदित । मुदि मऊष ससि हीन ॥
मुदित दीप राका दिवस । काम कामना कीन ॥

छं० ॥ ४०५ ॥ रू० ॥ १३५ ॥

दूहा ॥ चंद दरस गोपी बदन । गयौ समीप सु सज्ज ॥
धरक हीन तन छीन भौ । कला योडसी भज्ज * ॥

छं० ॥ ४०६ ॥ रू० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ फिरि फिरि चंद चंद विचारै । अैन गैन उपम बल हारै ॥
घटि बढि पंच दिसा फिरि आयौ । कवि मुष तौ सामित्त करायौ ॥

छं० ॥ ४०७ ॥ रू० ॥ १३७ ॥

कवित्त ॥ नगनि जोत उद्योत । बहुत सोहै बालं तन ॥

बिंद मृगंमद रज्जि । तिलक चिलकै भालं घन ॥

अंग अंग की क्रांति । बाल ससि जोति प्रगासी ॥

कामी मृग मारनै । तिलक कैसार हगासी ॥

जग जोति जुवति जौवन बनिय । कनिय और कामिनि कहिय ॥

ब्रजनाथ साथ गोपी मिलिय । राग रंग बंसी लहिय ॥

छं० ॥ ४०८ ॥ रू० ॥ १३८ ॥

१३४ पाठान्तरः—बंचि । वर । गृह । प्रमान । बंसी । श्रवनं । सुंदर । पान ॥

१३५ पाठान्तरः—तजि । सिंगार । मयूप । शशि । सुदित । काम ॥

१३६ पाठान्तरः—दरसि । सज्जि । भज्जि । सजि भजि ॥

* यह रूपक ब्रूदावाली पुस्तक में नहीं है ।

१३७ पाठान्तरः—अरिल । अरिल्लः । चंद बंद । विचारै । अैन । गैन । अैन । गैन । उपम ।
हारै बढि । सामित । कहायौ ॥

१३८ पाठान्तरः—कवतः । कवितः । जौति । जोति । उद्योत । सोहै । बालपन । बिन । विन ।
मृग । मृगद । राजि । तलक । त लक । बाल । सजि । जौति । प्रकासी । प्रगासी । कामि ।
मारनै । हगांसा । जोति । जुवति । जौवन । बनिक । और । ब्रजनाथ । गोपी । राम । बंसी ।
बंसाय ॥

चन्द्रायना ॥

कमलति चंपक चारु, फूल सब विद्धि फलामरद गित्त समि सीस, मरुत्तच्चिब्रह्मचल ॥
भमर टोल भंकार, उडगन छिष्य छिप । ललित त्रीभंगी मद्धि, सबै लहि दीपअपा ॥

छं० ॥ ४०६ ॥ रू० ॥ १३६ ॥

जगतपत्ति रतिपत्ति प्रगट्टय मध्य मन । गोपि असोकति कंगुर कचन पति जन ॥
बाल मुष्य कविचंद कि कंगुर चंद बनि । कन्ह विराजत बीच, सुमेर सुचंदतन ॥

छं० ॥ ४१० ॥ रू० ॥ १४० ॥

दृष्टा ॥ दै कपाट रुक्मी अवल । भद्र विहबल उडि हंस ॥
सहिय गोपि सुंदरि सकल । रस लुट्टै वर वंस ॥

छं० ॥ ४११ ॥ रू० ॥ १४१ ॥

कवित्त ॥ जदपि सु पति धन हीन । दीन जीतेरु रोग वसि ॥

त्रिद्ध कुष्ट विन रूप । हीन गुनैरु काम नासि ॥

गुंगा उध सुर अवन । विकल मति तामस धारी ॥

ब्रह्म हत्यानि समूह । पुरुष गुन तदपि विचारी ॥

उडगन समूह तप्यत जदपि । तदपि मुक्कि नन पत्ति रहि ॥

जं जोग भोग पति संग वर । चियन ध्रंम उर गाह रहि ॥

छं० ॥ ४१२ ॥ रू० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ पति मुक्कै सुनि पत्ति । बाल मुक्कै लछिछय वर ॥

पति हित जो चिय कित्त । मान मुक्कै सु मोह धर ॥

१३९ पाठान्तरः—चद्रायना । चद्रायणाः । चारु । फूल । मर्वे । त्रिवि । रित रिति ।
मरुत्त । त्रिवि । चलि । भवर । टौल । उडगन । छिप । त्रिभंगी । मदि । सबै मवे । अपा ॥
जे आज कल पवंगम नाम से प्रसिद्ध है वह यह चंद्रायना २१ मात्र ९ ताल और ११+१० यति
का छंद है ॥

१४० पाठान्तर—जगतपति । रतिपति । प्रगट्टय । गोपि । गोपि । यमोकति । बाल । बनि ।
कन्ह । विराजित । बीच । मेरु । मेरु । तनि ॥

१४१ पाठान्तर—दौहा । दैवपाट । दै कपाट । रुकिय । अवल । भई । विहबल । गोपि ।
गोप । लुट्टै । लुट्टै । वर । वंस ॥

१४२ पाठान्तरः—कवित्त । कवित्तः । यदपि सुत पति धन हीन । जनेरु । जुनेरु । गोग ।
वंसि । वसि । वृद्ध । वृध । कंष्ट । विन । गुण सठि । गुन मठ । काम । चिकल । समूह । गुण ।
विचारी । समूह । तदपि । मुक्कि । पति भोग । भाग । वर । वूम । वूम ॥

१४३ पाठान्तर—मुक्कै । पति । मुक्कै । लछिय । जौ । त्रियि । कित्त । मान । मुक्कै । म ।

जीव हित्त सुष हित्त । देषि जीति धर मुक्कै ॥
 लाज जीति गुरजन (समू*) ह । मोह माया चित रुक्कै ॥
 सा अइ काम कह कह करै । अंम अअंमन दिष्यई ॥
 चाहंत सब्ब वंसीय सुर । अंध काम नन विष्यई ॥

छं० ॥ ४१३ ॥ रू० ॥ १४३ ॥

चौपाई ॥ जिन आराध्यौ काम विनासं । गली गली वामा सुध नासं ॥
 वनी रमंत रूप रस रंगं । अकुरि वर केली मद नंगं ॥

छं० ॥ ४१४ ॥ रू० ॥ १४४ ॥

वृद्ध नाराज ॥

रमंत केलि कंन्वाम चंपियं छतीमयां विरौज कंन्ह हथ्यवाम लिज्जियं दुतीजयं ॥
 चमंकिता तडित्त मेघमद्धि जोति ठाहरी ॥ दुति उप्पम चंद की कलं कलंकताहरी ॥
 विराज प्रीत पीत वस्त्र दंपती सुनैन यौ । तडित्त मेघमध्य मौज इंद्रकौ धनुन्नयौ ॥

छं० ॥ ४१५ ॥ रू० ॥ १४५ ॥

गाथा ॥ अब्ब आदि लघु प्रेम । जं जं चित्तमि प्रेम अनुसरियं ॥
 अप्पानं ऊ सहितं । मानं कीअ हित्त ऊ पुरुषं ॥

छं० ॥ ४१६ ॥ रू० ॥ १४६ ॥

मोह । हित । सुष । हित । जिती । मुक्कै । अंमक पाठ । मुह । मोह । रुक्कै । धूम । अधूम ।
 दिष्यई । दिष्यई । सब । वंसीय । काम । विष्यई । विष्यई ॥

१४४ पाठान्तरः-अरिल । छंद । काम । विनास । विणासं । गलिय । वासं । वनि । वनि ।
 रमंत । रंगै । रंगै । अंकुर । वर । केलि । मदमंगै । मंगै ॥

१४५ पाठान्तरः-छंद वृद्धनाराजः । कैलि । कंन्ह । वाम । चंपीय । चंपीयं । वी । वि ।
 रीयु । कुन्ह । हथ । वाम । लिज्जयं । लीज्जिय । हुती । चमकिता । तडित्त । तडित्त । मैव । माधि ।
 जोति । विराजि प्रीति । प्रीति । प्रीत । दंपाति । नैन । यौ । यो । तडित्त । मेघ । माधि । कौ ।
 धनु । नयौ । नयो ।

* इस शब्द का प्रयोग विदित करता है कि कवि संस्कृत पदा था और भागवत के “जगौ कलं वाम दृशा मनाहरम्” स्कं० १० । २९ । ३ के अर्थ और भाव में उसने उसे यहाँ प्रयोग किया है ।

१४६ पाठान्तरः-गाह । अब्ब । अब्ब । लहु । चित्तमि । प्रेम । अनुसरियं । अप्पान ।
 अप्पानं । उं । उ । मानं । हित । उ । उं ।

दूहा ॥ रही रही हौं कंठ् ठिग । चन्थौ चलन नह जाइ ॥

मो इच्छो प्रिय प्रेम बर । लै चलि कंध चढ़ाइ ॥

छं० ॥ ४१७ ॥ रू० ॥ १४७ ॥

गाथा ॥ बाला रत्त सुजानं । ता चित्तं करन लोपनं नथ्यी ॥

रत्तं बाल सुजानं । अप्यानं दाहए अग्गी ॥ छं० ॥ ४१८ ॥ रू० ॥ १४८ ॥

बष्ये गुन गाहान । जं गुनपि माइं बंधए चित्तं ॥

हीनं स्हर कमोदं । औगुनं जुता इकं तार्इ ॥ छं० ॥ ४१९ ॥ रू० ॥ १४९ ॥

गाथा ॥ दुइं सकर जत्तं । विनै सहितं तूरुव साधिकं ॥

पथं निगम सु ध्रंमं । ते बाला देव मुकंदं ॥ छं० ॥ ४२० ॥ रू० ॥ १५० ॥

दूहा ॥ चित्त स्वामि तन वाम तन । जड़ भौ मन गुन जडु ॥

गोवरधनधागी सुमन । अरु गोवरधन चडु ॥

छं० ॥ ४२१ ॥ रू० ॥ १५१ ॥

संपेपक जंपी सु कथ । माधव माननि मभक्त ॥

जो चित हित्त विलविद्यौ । (सो *) हरि हर विडन सुभक्त ॥

छं० ॥ ४२२ ॥ रू० ॥ १५२ ॥

इम रूपक के छंद के विषय में सर्वत्र यह ध्यान में रखना चाहिए कि कहीं तो इस को गाथा और कहीं गाथा नाम से वर्णन किया है । वास्तव में यह छंद वह कहाता है कि जिस को संस्कृत में आर्या कहते हैं । इस के अनेक भेद हैं किन्तु विग्रह करके मात्रिक छंद आठ ताल और १२+१७ = २९ मात्रा अथवा १२+१९=२७ मात्रा का होता है । चंद्र कवि के इस महाकाव्य में इस छंद में विषमता के भेद भी दृष्टि पड़ते हैं अर्थात् कहीं कहीं उन के दमरे और चौथे चरण १९ वा १८ वा १६ । १७ आदि मात्रा के विषम भी होते हैं ॥

१४७ पाठान्तर.—दोहा । दूहा । हो । हो । जाय । मो । ड्यो । ड्यो । प्रिय । प्रेम ।
“तौ बूढ़ीवाली में अधिक पाठ है । लै । चटाय ॥

१४८ पाठान्तरः—गाहा । रत्न । रत् । चित्तं । करं । न । लोपन । नथि । तं । सु जान
अपान । दाहये । अग्नि ॥

४१९ पाठान्तरः—चपे । चपे । गुण । गुणपि । गुनपि । माइं । माडि । माड । बंधए । औगुण ।
ओगुन । जुता । जिता । तड ॥

१५० पाठान्तर दुइ । डुरइ । सकर । युत । विनय । चडव । साधिक । पथ । वृम ।
बाला । मुकंद ॥

१५१ पाठान्तर—दोहा । चित । स्वामि । तवाम । ने । जड । जडः । गोवरधनधागी ।
गोवरधन । चड ॥

१५२ पाठान्तरः—संपेपक । जंपि । जंपिय । माननि । मभ । मं । चित्त । हित्त । विविद्यौ ।
(सो *) बूढ़ीवाली और ने १७०० की पुस्तकों में अधिक पाठ है - न्ये नरह । विविन । नुन ॥

चोटक * ॥ तन मौथल च्रंमन पंग बलं । जमभाति प्रस्वेद प्रकंप ठलं ॥
फिरि बैठि वधुवर रंग मिलं । जप्यौ सु कछ्यौ व अनंग बलं ॥
छं० ॥ ४२३ ॥ रू० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ मांग मुत्ति गंग तिलक । त्रय सु नेत्रह जटालट ॥
सित दुकूल विभूत । नीलकंठी नय तारट ॥
मुष भुवि चंद्र लिलाट । अमित वर माल माल मुति ॥
सेत सिपर आभन्न । सव्व सम दिष्पि सम्म दुति ॥
तह ईस हरिय हरनछ्छि अछि । आवड जानि अड्डीक रिपु ॥
इहि विधि अबल्ल वर मुकति वर । पुरुष अवल मोरन्न अपु ॥
छं० ॥ ४२४ ॥ रू० ॥ १५४ ॥

दूहा ॥ अंतर दुष अंतर सुपन । जिय मन मजि गोपीय ॥
दरस देवि ब्रजपति सु वर । दिषि आनन प्रिय कीय ॥
छं० ॥ ४२५ ॥ रू० ॥ १५५ ॥

कवित्त ॥ मोरपंघ तन जलद । प्रीति को सेव देव उर ॥
गुंजहार तुलसी सु मार । उभयै सोभित चंद कर ॥
जलद बीच सुक पंति । भ्रंग रस दंडति लंबी ॥
मुरली सुर नट बाद । त्रिभग उर आयत कंबी ॥
नैव्रत आय गोपी हरी । नैन मुदित चामोद चर ॥
चर चारु चारु चर वर चक्रित । सो आपम्म उचार कर ॥
छं० ॥ ४२६ ॥ रू० ॥ १५६ ॥

१५३ पाठान्तरः—*चौपाई । त्रैदृक । मिथल । चरन । चरण । मण । जंभाति । सुस्वेद । प्रस्वेद । ठलं । वधुवर । वधुवर । जप्यो । चरणंग । वरनग ॥

१५४ पाठान्तरः—कवित्त । मुत्ति । गंग । मैत्रह । जटा । सुत । दकल । दकूल । विभूत । विभुत । नथ्ये । तरट । भुल । माल । मुत्ति । सैत । आभन्न । सव । दिषि । मंम । सम । नह । इस । नछि । अलि । आवध । जानि । जा । अधिक । आदिक । रिष । विषि । अंवल । अवल । वर । मुकति । बल । मोरन्न । मोरन । अषं । अष ॥

१५५ पाठान्तरः—दौहा । सुयत । सुयति । गौपीय । दरसन । दैव । ब्रजपति । सु वर । आनन प्रीय ॥

१५६ पाठान्तरः—कवित्त । कवित्तः । मोरपंघ । पीत । को । जुगहार । तुलसी । उभै सुभित । सोभित । जलदं । बीच । बीचि । भ्रंग । भृग । रसं । मंडति । डंडति । मुरली । सुश्वर । त्रिभग । आयौ । नैवृत । गौपी । नैन । चारु । वर । सौ । औपम । उंपम ॥

दृहा ॥ बंसीबट विश्राम किय । सुरभी गोप सहाइ ॥

मन वंछित दीनौ त्रियन । सुर सुंदरि सच पाइ ॥

छं० ॥ ४२७ ॥ रू० ॥ १५७ ॥

दृहा ॥ मुक्कि रास मंडल सुचिर । बर अक्रूर सुजान ॥

मानहु मदन बसंत रितु । करि उद्वेख सुस्थान ॥

छं० ॥ ४२८ ॥ रू० ॥ १५८ ॥

विराज ॥

मघं विष्णु भक्तं । सुयं स्याम पत्तं ॥ लियं ग्वाल सथ्यं । मधुन्वीर रथ्यं ॥४२९॥
 सुनी जोषि कथ्यं । गही नथ्य बथ्यं ॥ परो भूमि तथ्यं । मिलौ कृष्ण सथ्यं ॥४३०॥
 अचिज्जं सुकथ्यं । * * * * ॥ व्रजं ध्रंम धारी । सपत्न विहारी ॥ ४३१ ॥
 मुषे संभ्र ओपं । व्रषं भेस रूपं ॥ कियं केस महं । सुनी कंस नहं ॥ ४३२ ॥
 मतं मत्त साधी । मुपं चाप आधी ॥ सुअं माल मंडी । प्रजापाल टंडी ॥४३३॥
 गयं दीस पुत्तं । अक्रूरं पवित्तं ॥ कथं कन् लग्गं । अहो मात भग्गं ॥४३४॥
 रथं हेम सज्जं । चयं चक्र गज्जं ॥ सिरं कौट मंडी । उरं माल षंडी ॥४३५॥
 न्वपं वाच मानं । इहं जीव ठानं ॥ व्रजे नंद रानं * । तहा जाड आनं ॥४३६॥
 बियं पुत्त चैनं । वासुदेव ऐनं । सिता स्याम गत्तं । तहां देव पत्तं ॥४३७॥
 व्रजं ग्राम तातं । अजं देव आतं ॥ हृदै जग्य सद्धं । लियं उच्च वुद्धं ॥४३८॥
 तुमं रूप चायं । करौ अज्ज भायं ॥ रयं जाति जायं । चितं चित्त तायं ॥४३९॥
 भले भाग मातं । हृदै चित्त रातं ॥ व्रजे ब्रज्ज मग्गं । अयं क्रूर लग्गं ॥४४०॥

१५७ पाठान्तर—दौहा । बंसीबट । विश्राम । गोप । महाय । नृयन । सुंदर । मन्नि । पाय ॥

१५८ पाठान्तर—मुकि । अक्रूर । सुजानि । मानहु । मानु । मानो । रित । उद्वेख । सुस्थान ॥

१५९ पाठान्तर—मघ । प्प । भक्तं । स्याम । स्याम । पत्तं । सुयं । मधु । मधु । नीर । रथ्यं ।

मुषी । जोषि । कथ्यं । नथ्यं । व्रथं । भूमि । तथ्यं । कृष्ण । मथ्यं । अचिज्जं । अमिज्जं । कथ्यं । व्रजं ।

ध्रंम । भेस । नपत्ते । नपत्ते । मुषे । ओपं । उषं । उषं । वृष । वृषोन्म । भेस । कियं । केस ।

महं । सुनी । कंस । नहं । मतं । साधीः । सुपं । चाप । आधी । सुअं । माल । मंडी । प्रजापाल । टंडी ।

गयं । दीस । पुत्तं । अक्रूरं । पवित्तं । कथं । कन् । लग्गं । अहो । मात । भग्गं । रथं । हेम । सज्जं ।

चयं । चक्र । गज्जं । सिरं । कौट । मंडी । उरं । माल । षंडी । न्वपं । वाच । मानं । इहं । जीव । ठानं ।

व्रजे । नंद । रानं * । तहा । जाड । आनं । बियं । पुत्त । चैनं । वासुदेव । ऐनं । सिता । स्याम । गत्तं ।

तहां । देव । पत्तं । व्रजं । ग्राम । तातं । अजं । देव । आतं । हृदै । जग्य । सद्धं । लियं । उच्च । वुद्धं ।

तुमं । रूप । चायं । करौ । अज्ज । भायं । रयं । जाति । जायं । चितं । चित्त । तायं । भले । भाग ।

मातं । हृदै । चित्त । रातं ॥ व्रजे । ब्रज्ज । मग्गं । अयं । क्रूर । लग्गं ॥

वने वृन्द पथ्यं । पथे पथ्य ह्यथ्यं । चितं किन्न क्रिष्णं । मृगे तिष्ण दिष्णं ॥४४१॥
 तज्जौ रथ्य भूमौ । सिरं रेन भूमि * ॥ वने वल्लि वल्ली । विचित्रं सुरल्ली ॥४४२॥
 धने दौह अज्जं । धने वृज्ज मज्जं ॥ धने ब्रज्ज धारी । धने एक सारी ॥४४३॥
 धने गोप लच्छी । मुरारी सुरच्छी ॥ उडौ रेन संभं । दुजं देव मंभं ॥४४४॥
 व्रपभमान पुत्ती । गवं दौदुहत्ती ॥ कुसं मीय चीरं । तनं हेम भीरं ॥ ४४५ ॥
 करं हेम दोही । निकटं ससोही ॥ सिरं स्थाम सेली । गवं दोह मेल्ली ॥४४६॥
 दिठी दिठ्ठ लगी । उतकंठ भगी ॥ निधंरंकरामी । लही ब्रज्ज भासी ॥४४७॥
 चरं नस्य मंडं । मनौ हेम उंडं ॥ उठे कंठ लाई । मधू माध पाई ॥४४८॥
 चले नंद गेहं । जसोमत्त जेहं ॥ कहे दुष्य सुष्यं । जट्टनंद रूप्यं ॥ ४४९ ॥
 असुधार नंदं । चरंनस्य वंदं ॥ जहे कंस गेहं । सहं ध्रंम छेहं ॥ ४५० ॥
 उतप्यात पत्ते । ब्रजं लोक जत्ते ॥ मई कंस मुज्जं । करे भोग भुज्जं ॥४५१॥
 रथं चार दष्यौ । गनै गोप सष्यौ ॥ विलष्यौ सुमुष्यं । दम्यौ देह दुष्यं ॥४५२॥
 निसा जग्ग छंडी । उठं चंड चंडी ॥ रथं जोति जंतं । वियं बंध मंतं ॥४५३॥
 दधी ग्वाल गल्ली । समं नंद कल्ली ॥ कियौ ग्रीव लत्ती । मनौ चंद पत्ती ॥४५४॥
 करेवा विचारं । निरत्ती निहारं ॥ निहारं ॥ * * । * * ॥ छं० ॥४५५॥ रू० ॥४५५॥
 दूहा ॥ अभिनव विरह विलाप चिय । दिष्पन नंद कुमार ॥

निरगुन गुन बंध्यौ सकल । मनु पांछय परिहार ॥

छं० ॥ ४५६ ॥ रू० ॥ १६० ॥

लगं । विने । वने । वृदं । पथं । पथै । पथ । हथं चित । कान । किन्न । कृष्णं । विष्णं । मृगै ।
 दिष्ण दिष्णं । रथ । भूमि । रेने । झामि । * वृत्रिवाली में नहीं है । वने । वलि । वली । विचित्रं ।
 मुरली । धने । अजं । धनै । वृज्ज । मंडं । धनै । वृज्ज । धनै एकक । वने । गोप । लछी । सुरछी ।
 नै । सभं । देव । वृपे । वृप । भान । दौदुहनी । वीर । तनम । भीर । दौहा । निकटं । ससौही ।
 कर । स्थाम । सेली । गवं । मैली । दिठि । दिठ । उतकंठ । भगी । निध । वृज्ज । वृज्ज । चर ।
 निष्प । मड । मनो । हेम । लाइ । मधु । मधु । पाइ । चले । प्रेहं । प्रेहं । जसोमति । जसोमति ॥
 जेहं । कहे । सुप दुष । पट्टनंद । रूपं । असुधार । नंद । चरनस्य । वंदं । कहे । प्रेहं । प्रेहं ।
 सहध्रंम । छेहं । उतपात । पत्ते । वृज्ज । वृज्जं । लोक । जत्ते । मई । संक । मुज्जं । करे । भोजभुज्ज
 दिष्प्यौ । दष्ये । गने । सष्ये । सष्यौ । मुष्यौ । मपं । दस्ये । देह । सप्यौ । दुप । जग्ग । उव ।
 जोति । विय । मत । गली । सम । कल्ली । कियौ । लती । छती । मनो । पुती । करैव । निरती ॥
 * किसी में भी पाठ नहीं है ॥

१६० पाठान्तरः—दौहा । अभिनव । विरह । विलाप । दिपन । नद । निरगुण । गुण ।

मनु । मनं ॥

दूहा ॥ टगमग नयन सु मग मग । विमग सु भुल्लिय भंग ॥

रथ हित सु हित सु स्याम हित । चित्त लिए मनु संग ॥

छं० ॥ ४५७ ॥ रू० ॥ १६१ ॥

दूहा ॥ वृज हिम कुसलनि कुसल हुअ । जसु तन कुसलिन काम ॥

विछुरन नंद कुमार चिर । सब भये धामनि धाम ॥ छं० ॥ ४५८ ॥ रू० ॥ १६२ ॥

विराज ॥ वृजन्नाभिनेनी । चितं चाप चैनी ॥ जमुनेस कूले । ग्रहंवास भूले ॥ ४५९ ॥

अयं कर ध्यानं । रथंगं बिहानं ॥ चितं चित्त बट्टी । इयं बाल पट्टी ॥ ४६० ॥

बधेरान कंसं । लगे दोष बंसं ॥ रहे जोति साई । सु लच्छी सुहाई ॥ ४६१ ॥

हसे दिषि मुष्यं । हुओ हीय सुष्यं ॥ भए भेषथाई । सिरं सेष साई * ॥ ४६२ ॥

जलं केलि न्यानं । दिठे क्रिष्ण ध्यानं ॥ चतुर्बाह चारं । किरौटी सुहारं ॥ ४६३ ॥

पियं पट्ट कटी । गदा चक्र तुही ॥ नियं पानि कंवं । सयं सेन अवं ॥ ४६४ ॥

अहौ धीर जदौ । धरं क्रूर सहौ ॥ कला कंस केही । नियं ब्रह्म देही ॥ ४६५ ॥

गई चित्त बीरं । रथं पानि तीरं ॥ चले क्रूर संगं । हरेराम रंगं ॥ ४६६ ॥

मधूगी सु दिष्टी । सुपं स्याम इष्टी ॥ * * । * * ॥ छं० ॥ ४६७ ॥ रू० ॥ १६३ ॥

दूहा ॥ वारी विद्रुम सद्रुम द्रिग । लगि जगि नंद कुमार ॥

मनु विगास फुल्लिय कुसुम । इय कवि चंद उचार ॥

छं० ॥ ४६८ ॥ रू० ॥ १६४ ॥

१६१ पाठान्तरः—टग टग । सु । मग मग । मग टग । भुलिय स्याम । चित । लये मनो । मनो ॥

१६२ पाठान्तरः—वृज । हीय । कुशलन । कुशल । कमल । हुय । कुशलन । काम । वामन । धाम ॥

१६३ पाठान्तर—वृज । नेनी । चैनी । चैन । जमुनेम । जमुनेम । गृह । भूले । अयकर । ध्यानं । रथंगं । बिहानं । चित । बट्टी । इय । बाल । पट्टी । वंये । कर्मा । लगे । लगी । दार्य । वंनी । रहे । जोतिमाई । जोतिमाइ । लछी । सुहाइ । हसे । दिषि । मुष्यं । हुओ । मुष्यं । भेष-थाई । सिरसेपमाई । जल । केलि । न्यानं । क्रिष्ण । क्रिष्ण । ध्यान । चतु । बाह । कीर्ति । सुहार । पियं । पट्ट । कटी । गदा । चक्र । तुही । नियं । पानि । कंसं । सयं । सेन । अवं । धीर । जदौ । धरं । क्रूर । सहौ । कला । कंस । केही । नियं । ब्रह्म । देही । मधूगी । सु । दिष्टी । सुपं । स्याम । इष्टी ॥

* किनी किनी सुपं न । ह छंद ३६३ के अंगे है ॥

१६४ पाठान्तर—वारी । वारी । विद्रुम । सु । मनु । विगास । कुसुम । इय । कवि । चंद । उचार । मनु । विगास । कुसुम । इय । कवि । चंद । उचार ॥

बने ब्रं द पथ्यं । पथे पथ्य ह्यथ्यं । चितं किन्न क्रिष्णं । मृगे तिष्ण दिष्णं ॥४४१॥
 तज्यौ रथ्य भूमि । सिरं रेन भूमि * ॥ वने वल्लि वल्ली । विचित्रं सुरल्ली ॥४४२॥
 धने दीह अज्जं । धने ब्रज्ज मज्जं ॥ धने ब्रज्ज धारी । धने एक सारी ॥४४३॥
 धने गोप लच्छी । मुरारी सुरच्छी ॥ उडी रेन संभं । दुजं देव मंभं ॥४४४॥
 व्रषभभान पुत्ती । गवं दोदुहत्ती ॥ कुसं मीय चीरं । तनं हेम भीरं ॥ ४४५ ॥
 करं हेम दोही । निकटं ससोही ॥ सिरं स्थाम सेली । गवं दोह मेल्ली ॥४४६॥
 दिठी दिठ्ठु लग्गी । उतकठ भग्गी ॥ निधं रंकरासी । लही ब्रज्ज भासी ॥४४७॥
 चरं नस्य मंडं । मनौ हेम डंडं ॥ उठे कंठ लाई । मधू माध याई ॥४४८॥
 चले नंद गेहं । जसोमत्त जेहं ॥ कहे दुष्य सुष्यं । जदृनंद रूप्यं ॥ ४४९ ॥
 असूधार नंदं । चरं नस्य वंदं ॥ जहे कंस गेहं । सहं ध्रंम छेहं ॥ ४५० ॥
 उतप्यात पत्ते । ब्रजं लोक जत्ते ॥ मई कंस मुज्जं । करे भोग भुज्जं ॥४५१॥
 रथं चार दष्यौ । गनै गोप सष्यौ ॥ विलष्यौ सुमुष्यं । दम्यौ देह दुष्यं ॥४५२॥
 निसा जग्ग छंडी । उठं चंड चंडी ॥ रथं जोति जंतं । वियं बंध मंतं ॥४५३॥
 दधी ग्वाल गल्ली । समं नंद कल्ली ॥ कियौ ग्रीव लत्ती । मनौ चंद पत्ती ॥४५४॥
 करेवा विचारं । निरत्ती निहारं १ निहारं ॥ * * । * * ॥ छं० ॥४५५॥ रू० ॥४५५॥
 दूहा ॥ अभिनव विरह विलाप त्रिय । दिष्यन नंद कुमार ॥

निरगुन गुन बंध्यौ सकल । मनु पांछय परिहार ॥

छं० ॥ ४५६ ॥ रू० ॥ १६० ॥

लगं । विने । वने । वृदं । पथं । पथै । पथ । हयं चिन । कान । किन्न । कृष्णं । विष्ण । मृगै ।
 दिष्ण दिष्णं । रथ । भूमि । रेन । भूमि । * वृथीवाली में नहीं है । वने । वलि । वली । वचित्रं ।
 मुरली । धने । अजं । धने । वृज । मंडं । धने । वज्ज । धने पक्क । धने । गोप । लछी । सुरछी ।
 नै । सझं । देव । वृपे । वृप । भान । दोदुहनी । धार । तनम । भीर । दोहा । निकटं । ससोही ।
 कर । श्याम । सेली । मपं । मैली । दिठि । दिठ । उतकठ । भगी । निध । वृज । वृज । च ।
 निस्य । मड । मनो । हेम । लाइ । मधु । मधु । पाइ । चले । ग्रेहं । ग्रेहं । जमोमति । जमोमति ॥
 जेहं । कहे । सुप दुष । यदृनद । रूपं । असुवर् । नंद । चरनस्य । वंदं । कहे । ग्रेहं । ग्रेहं ।
 सहध्रम । छेहं । उतपात । पत्ते । वृज । वृजं । लोक । जत्ते । मइ । संक । मुजं । करे । भोजभुज
 दिष्यौ । दष्ये । गने । सष्ये । सुष्यौ । मुष्यौ । मपं । दस्यो । देह । सष्यौ । दुष्य । जम । उव ।
 जोति । विय । मन । मली । सम । कल्ली । कियौ । लती । लती । मनो । पत्ती । करेव । निरती ॥
 १ किरी में भी पाठ नहीं है ॥

१६० पाठान्तरः—दोहा । अभिनव । विरह । विलाप । दिपन । नद । निरगुण । गुण ।
 मनु । मनं ॥

दृहा ॥ टगमग नयन सु मग मग । विमग सु भुल्लिय भंग ॥

रथ हित सु हित सु स्याम हित । चित्त लिए मनु संग ॥

छं० ॥ ४५७ ॥ रू० ॥ १६१ ॥

दृहा ॥ वृज हिम कुसलनि कुसल हुअ । जसु तन कुसलिन काम ॥

विछुरन नंद कुमार चिर । सब भये धामनि धाम ॥ छं० ॥ ४५८ ॥ रू० ॥ १६२ ॥

विराज ॥ वृजन्नाभिनेनी । चितं चाप चैनी ॥ जमुने सकूले । ग्रहं वास भूले ॥ ४५९ ॥

अयं क्रूर ध्यानं । रथं विहानं ॥ चितं चित्त बट्टी । इयं बाल पट्टी ॥ ४६० ॥

बधेरानकंसं । लगे दोष वंसं ॥ रहे जोति साई । सु लच्छी सुहाई ॥ ४६१ ॥

हसे दिप्यि मुष्यं । हृओ हीय सुष्यं ॥ भए भेषथाई । मिरं सेषसाई * ॥ ४६२ ॥

जलं केलि न्यानं । दिठे क्लिष्ण ध्यानं ॥ चतुर्बाह चारं । किरौटी सुहारं ॥ ४६३ ॥

पियं पट्ट कट्टी । गदा चक्र तुट्टी ॥ नियं पानि कंबं । सयं सेन अंबं ॥ ४६४ ॥

अहौ धीर जट्टौ । धरं क्रूर सट्टौ ॥ कला कंस केही । नियं ब्रह्म देही ॥ ४६५ ॥

गई चित्त वीरं । रथं पानि तीरं ॥ चले क्रूर संगं । हरेराम रंगं ॥ ४६६ ॥

मधूरी सु दिष्टी । सुपं स्याम इष्टी ॥ * * । * * ॥ छं० ॥ ४६७ ॥ रू० ॥ १६३ ॥

दृहा ॥ वारी विद्रुम सद्रुम द्रिग । लगि जगि नंद कुमार ॥

मनु विगास फुल्लिय कुसुम । इय कवि चंद उचार ॥

छं० ॥ ४६८ ॥ रू० ॥ १६४ ॥

१६१ पाठान्तरः—टग टग । सु । गम मग । मग टग । भुल्लिय स्याम । चित । लये मनो । मनो ॥

१६२ पाठान्तरः—वृज । हीय । कुशलन । कुशल । कमल । हुय । कुशलन । काम । धामन । धाम ॥

१६३ पाठान्तर—वृज । नेनी । चैनी । चैन । जमुनेम । जमुनेम । गृह । भूले । अयक्रूर । ध्यान । रथम । विहानं । चित । बट्टी । इय । बाल । पट्टी । वंसे । कर्मा । लगे । लगी । दीप वंसी । रहे । जोतिमाई । जोतिमाई । लछी । सुहाई । हसे । दिप्यि । मुष्यं । हंओ । मुष्यं । नयथाई । मिरसेषसाई । जल । केलि । न्यानं । क्लिष्ण । दिप्य । ध्यान । चतु । बाह । किरौटी । सुहार । नियं । पियं । पट्ट । कट्टी । गदा । चक्र । तुट्टी । पानि । पानि । कंबं । सयं । सेन । अंबं । धीर । जट्टौ । धरं । क्रूर । सट्टौ । कला । कंस । केही । नियं । ब्रह्म । देही । मधूरी । सु । दिष्टी । सुपं । स्याम । इष्टी ॥ * * । * * ॥

* विनी विनी पुस्तक में यह छंद ४६३ के अंग है ॥

१६४ पाठान्तर—वारी । वारी । विद्रुम । कुंमर । मनो । विगास । कुल्लिय । कुल्लिय । मनु । उचार ॥

सुजंगी ॥ कहूं अंब विद्रुम सीतल छाया । कहूं वृष्य वटं निहटं सिलाया ॥
 कहूं कौर कोकिल नादं सुलीनं । कहूं केलि कप्योत से बोल भीनं ॥४६६॥
 कहूं वीय विजौर पीयूष भारं । जुटी भूमि लुट्टी मनो हेम तारं ॥
 कहूं दाडिमीचूव चिंचन्नचंपी । मनो लाल * मानिकपीरोज[†] थिप्यी ॥४७०॥
 कहूं सेव देवं करनं कलापं । कहूं पंघ पारेव सारो अलापं ॥
 कहूं नीवनाली अकेली घजूरी । पुंल काम झंडे महल्लै हजूरी ॥४७१॥
 कहूं ताल तुंगे सुचंगे सुचारं । कहूं काम लप्ये सुदप्ये विहारं ॥
 कहूं चंप चंपी सु कंपीय वातं । कहूं जंबु जंभीर गंभीर गातं ॥४७२॥
 कहूं नागवेली निवेली निवेसं । कहूं मालची घेरि भौरं सुवेसं ॥
 कहूं पांडरी डार पाछै विहारं । कहूं सेव तीसेव झंनी मुझारं ॥४७३॥
 कहूं अषरोटे निहट्टे तिबेली । कहूं वील विद्याम कादंम केली ॥
 कहूं केतकी फूल दल्ली विगस्से । कहूं वंस विश्राम गंठी निकस्से ॥४७४॥

१६९ पाठान्तरः—कहूं । अव । विद्रुम । सीतल । कहों । वृष । वटान । हटं । हटं ।
 कहों । कहूं । स. १७७० की में कहूं केलि कोकिल सोहिल हीनं । कहूं काइल बोल सोहलं
 शीनं ॥ स. १८९९ की में—कहों केल कोथल्ल सो जल्ल भीन । कहूं काइल बोलि सांहिल्ल
 शीनं ॥ कहों विजौर । विजौर । पीयुष । जुटी । भुम्मि । लुटी । मनो । कहौ । चुअ । चूअ ।
 चिचिण । मनो । मानिक । मानक । पीरोज । यपी । कहौ । सैव । देवं । करणं । कहौ । पारे ।
 वमारौ । अलापं । कहौ । नीव अकली । पजूरी पुलै । झंडे । महले हजूरी । कहौ । तुंगे ।
 कहौ । कौमि । काम । लप्ये । दप्ये । दप्ये । कहौ । वातं । कहौ । जंबु । जंभीरं । कहौ । नागवेली ।
 निवली । निवेसं । कहौ । कहौ । घेर । घेर । भौरं । भौरं । सुदेसं । कहौ । पंडरी । पंडरी ।
 पडरी । पडरी । छप्यै । पछै । विहारं ।

* हि० लाल (सं० लल् वा लडू) लालरंग का वाचक राधालालजी ने अपने हिन्दी शब्द
 कोष में माना है अत एव लालरंगवाल रत्न का वाचक भी अनेक प्राचीन कवियों ने प्रयोग किया है ॥

† हि० पीरोज (सं० पिरोज तथा पेरजं तथा । पेरजं=उपरत्न विशेष) उपरत्न पिरोजा ॥

। हि० हजूरी (सं० सज्जः वा सजुस् = सwithजुप to please) Associated, an associate or
 companion with, together with

§ ये तीन पाद बंदावाली पुस्तक में नहीं है । अपरोटे । निहट्टेन । विद्याम ।
 कहौ । केतकी । केलि । केली । दली । विगमै । विगस । विममे । कहौ । वंस । विश्राम ।
 निकमै । निकसे । घेर । घेरि । घेर बंदीव । पुकारै । कहौ । भौर । भौर । सुहैरं । विहारै । कहौ ।

कहूँ वेर बढीव पंघी पुकारं । कहूँ मीर टेगी सुझेगी विचारं ॥
 कहूँ सार संसारि सारन्न सोरं * । मनौं पावसी बुट्टि दादुल्ल रोरं ॥४७५॥
 कहूँ सेंसिषंडी सुषंडान फुल्लौ । कहूँ लुभिभ लोंगी रही बेलि फुल्लौ ॥
 कहूँ अष्य आसोक तैं सोक हीनं । दिषे आसिषं रूप तामं प्रवीनं ॥४७६॥
 कहूँ दाडिमी पिंड पज्जूर भुल्लौ । कहूँ मालची मल्ल भर भार भल्लौ ॥
 हसे स्याम बलभद् अकूर कुल्लौ । जहां कूवरी रूप पेघंत भुल्लौ ॥४७७॥
 दई मालिया आनि सौदाम दानं । भयं रंजकं सव्व सुं हाल कानं ॥
 रची मंडली गोप ब्रजलोक वासी । गए जगसाला तहां धनुष वासी ॥

छं० ॥ ४७८ ॥ रू० ॥ १६५ ॥

दृहा ॥ धनुष भंग कौनौ सु प्रभु । वर बजि गव्व हतीस ॥

विमल लोक मधु पुरि परिय । विहसत स्वामि सदीस ॥

छं० ॥ ४७९ ॥ रू० ॥ १६६ ॥

रंग भंग मंडप उद्यपि । अरु धनुक तिन थान ॥

मानौं धान कपाव की । लीला ही हति आन ॥

छं० ॥ ४८० ॥ रू० ॥ १६७ ॥

मधुरिपु मधुरित मधुर मुष । मधु संमत मधु गोप ॥

मधुरित मधुपुर महिल सुष । मधुरित नयन स ओप ॥

छं० ॥ ४८१ ॥ रू० ॥ १६८ ॥

गौप निरष्यत सुभ चिय । रूप सरूप रसाल ॥

भगति भाव हित चित्त धरि । हिये हरष्यहि वाल ॥

छं० ॥ ४८२ ॥ रू० ॥ १६९ ॥

सार । मारान । सारोन । सौरं । मनो । पावसी । बुठ । बुठि । दादुल्ल । गेर । कहो । मे । मधाना । मृधानं ।
 सुफुल्लौ । सफुल्लौ । कहो । भुलि । लागी । बेलि । कुली । कहो । अप । आसोक । ते । ते ।
 गोक । दिषे । रूपतानंतजकं । कहो । पिंड । पज्जूर । पज्जूर । पज्जूर । कुली । कहो । मल्ल । मल्ल ।
 नार । नेर । मुंली । मुंली । हसे । स्याम । बरिन्द्र । वरन्द्र । अकूर । कुली । कवरी । पेघत ।
 मुषी । दई । मालिया । आनि । सौदाम । रंजक । मंडल । नेहाल । मव । मुनी । मुनिय । गोपी ।
 कुली । जिम । जग । जग्य ।

* लि० वरिं (नें० स्वर) १०००००, १०००, १०००, १०००

१६६ १०० ५००० - बोहा । मय । निहाम । वर । नजि । गड । पुर । परीष । स्वामि ।

१६६ । अरु । ननु । धनुक । धन । भना । जग्ये यो । आदि । १६९ अत्रि । मंत ।

गै । धनुष । नेर । मव । मुनी । मुनिय । १६८ । मल्ल । मुनि । हिनु । पित । दिने हरष्यहि । १६९ ।

दूहा ॥ गौषनि गौष गवष्य गुरु । गोधन गो विस्तार ॥

गोरुचि गोपति गुपति मन । रुचि रोचन भरि थार ॥

छं० ॥ ४८३ ॥ रू० ॥ १७० ॥

चोटक ॥ ततथाल तिथाल तिथाप तियं । पहु पंजुलि अंजुलि लै सुतियं ॥

निज नेह सुनेह जनेह लियं । अरि अश्रति सुश्रति संजतियं ॥ ४८४ ॥

परकृति पराक्रम पंथ नियं । निज नथ्यन मेघनि कुंज नियं ॥

त्रिदबद्ध सुबद्ध सु पुबु जियं । गुरु मात पिता भय नां लजियं ॥ ४८५ ॥

नृप चंदन बंदन बंद तियं । असु नंदन नंद सुनंद तियं ॥

किल किंचित कंज मनोहरियं । मथुरं मनि माथुर सौ हरियं ॥ ४८६ ॥

द्रिग दासिय कंसति श्री षडयं । रथ अप्पति श्री लघि मंडनयं ॥

ग्रह ग्रैह निग्रैह सु बहदियं । वसुदेव सुतेव सुकुंज तियं ॥

छं० ॥ ४८७ ॥ रू० ॥ १७१ ॥

दूह ॥ प्रति सुंदरि सुन्दर तनह । सुंदर सुभति सनेह ॥

सुंदर त्रिभुवन पुरष पहु । निज आवन तुअ ग्रैह ॥

छं० ॥ ४८८ ॥ रू० ॥ १७२ ॥

सकल लोक ब्रजवासि जहँ । तहँ मिलि नंद कुमार ॥

दधि तंदुल मंजुल मुषह । किय बिय बंध अहार ॥

छं० ॥ ४८९ ॥ रू० ॥ १७३ ॥

प्राची रवि रत्तल दिसह । बजि दुंदुभि तिय नंच ॥

अघिल अघार अषंड लिय । रुचि सुभ मंजुल मंच ॥

छं० ॥ ४९० ॥ रू० ॥ १७४ ॥

गौपन । गौष । निर । गवप । गुरू । गौ । धनु । गो । गौरचि । गौपति । रौचन । याल । १७० ॥

१७१ पाठान्तरः- त्रौटिका । चोटक । तिथाल । तियं । पहुं । पंजुलि । मंजुलि । निजु । नैह ।

सुनैह । जुनेह । अमित । सुभित । परकृति । निजु । नियन । नय । निमेपन । कुज । सुपुत्र । पिता ।

जलियं । त्रिपि । नृपि । चद । अशु । त्रियं । कलकिचति । किलकिचत । मनोहरियं । कंस ।

मन । सौ । दृग । दासीय । कंसति । षडय । मंडतयं । ग्रैह । न ग्रह । सवद । वसुदेव । सुतेव । सकुंज ।

१७२-१७९ पाठान्तरः-दौहा । सुन्दर । सुन्दरः । सुदरि । सुभति । सनैह । पुरिष । पहु ।

आवतनउ । त्रुहि । गौह । १७२ । लोक । जिहा । जहा । तहा । तहा । बिय । बंध । १७३ ।

प्राची । रत्तल । दुंदुभि । असार । अषंड । रवि । १७४

प्रजा परसत भेट दधि । अरु सिर परसत पग्ग ॥

पट गुन प्रभु बलिभद्र सम । हरि मिलि गोचर लग्ग ॥

छं० ॥ ४६१ ॥ रू० ॥ १७५ ॥

राज सुराजत मातुलह । मत लहि अतुल प्रहार ॥

कुवलय गज मुह लय सुदित । विदित बली दरवार * ॥

छं० ॥ ४६२ ॥ रू० ॥ १७६ ॥

दिठि बल दिन बालक विहसि । कुसलिय कुसद्वि गभभ ॥

सुत रोहिन रोहित रिसह । दिठ दिग लग्यौ अरुभ ॥

छं० ॥ ४६३ ॥ रू० ॥ १७७ ॥

व्रज सरनागत बसत व्रज । व्रज कहि संगै मग्ग ॥

हम गज दिट्टु निरष्ययो । निमष उसारहु पग्ग ॥

छं० ॥ ४६४ ॥ रू० ॥ १७८ ॥

रिस लोचन रन रत्त किय । रत्तंमर व्रजपाल ॥

रति रत कंस उदंसि सिप । क्रिस पंचित निय काल ॥

छं० ॥ ४६५ ॥ रू० ॥ १७९ ॥

भुजंगी ॥ मदं भारि भूरंग रुरं गरज्जं । अहो बाल बालं तिवारं वरज्जं ॥

अथं बाद वहं पथं पीलुवानं । ठिलै ठह नट्टे जुधं जू जू आनं ॥४६६॥

कटिं पट्ट पीतं सिरं स्याम सेली । सिता नील वसनाय दसनाय केली ॥

धरै मोरछत्तं सुवज्जंत फूलं । हसै विकसे मुष्य गेनं गह्वरं ॥ ४६७ ॥

गङ्गी गंड मंडील पंडी अपारं । नटी जानि वंसा सुचुकी विहारं ॥

पथं पात भूमि सुभूमि जु आनं । दिठी कंस लग्गी सुवज्जं निसानं ॥४६८॥

हतं हंत हंतं हहत्तं सुरष्पं । प्रसिद्धे पुरानं प्रसादं पुरुष्पं ॥
 दुवं वैर पुष्पं दनं देव पच्छी । मदं जे ह्रिदं ते ह्रिदै जानि लहछी ॥४६६॥
 हरन्नछिहारी विहारी सुगोपं । विरंनष्पि वैरी जदों जावि कोपं ॥
 रमे रास किष्णं गजं केलि मंडी । तमं तेज तेजं तपैता चिपंडी ॥५००॥
 हुअं हूअ हकं सुभापं सुचारी । अहो साधुसाधं अजुत्तं निहारी ॥
 किसोरं किमावर्त गातं सुक्रीसं । वपं एस वल्लं मदोमत्त दीसं ॥ ५०१ ॥
 छुटे पट्ट पीतं कियं किष्ण रीसं । बलीभद्र भद्रं अनूजा नितोसं ॥
 तुअं बालबुद्धं न सुद्धं सुदेहं । गही पट्ट पंचै सु अछ्छै सनेहं ॥५०२॥
 मनो संकला हेम तें सिंधु छुट्टं । गही सिंधु बली [भ १०३] धपी धाम पुट्टं
 गही पंछ फेरे सिरं तीन वारं । उद्यौ हंस हंसीन भूमी प्रहारं ॥५०३॥
 दुवं बंध दंतं धरे कट्टि कंधं । लगी ओनि छिछं मनो गुंज बंधं ॥
 हते गज गज्जै दुवं मल्ल मल्लं । परी रौरि पौरं प्रसारं विहल्लं ॥५०४॥
 मिले रंग भूमी बलराम किल्लं । नवं रंग दिष्टी तनं तेज तिल्लं ॥
 बदी बाय चानूर मामल्ल जूद्धं । रनं राज अग्या सु मेटौ विरुद्धं ॥५०५॥
 समं डोरि बंध्यौ निबंध्यो निबंध्यो । हमं जोति तेजं मिलं मुत्ति संध्यो ॥

छं० ॥ ५०६ ॥ रू० ॥ १८० ॥

१७८-पाठान्तर-भूरग । रजं । अहौ । बलं । वरजं । अय । वदं । पय पीलवानं । ठिलै ।
 टिलै । ठट । वट्ट । नदै । नटें । ज्वद्धं । जूजू । जुजु । जूजु । कट । कटि । पट । सरं । स्याम ।
 सैली । वमनाय । कैली । धरा । मौरमलंत । वाजत क्रूरं । हसे । विकसै । विकसे । मुष । गेंन ।
 गहूरं । गफूलं । अपार । जानि धंसी । सुचुकी । पय । भुमी । सुझुंगी । लगी । सुवज्जै । निसानं ।
 हत । हहत्तं । सुरपं । प्रामिद्धै । पुरुष । वैर । पुवं । पुंव । दनु । दनुं । पछी । जै । हृदतै । हृदे ।
 जानि । लछी । हरनाछि । मगोपं । विरंनपि । वैरी । जदो । कौपं । रमै । तैजनैजंतपैता विपंडी ।
 तपैता । हुंअ । हुह । हकं । सुभापं । सुचागी । अहो । माधं । अयुतं । किमौरं । कूसावस्त । बलं ।
 मदौमत । छुट्टै । पट । कृष्ण । कृष्ण । रीसं । अनूजा । नितोसं । तूअं । षट । पंचे । अछे ।
 सनेहं । मनो । मनौ । हेमते । सिव । सिव । छुटं । सिव । बली । * अधिक पाठ है ॥ धापि ।
 धम । पुट्ट । पुठं । पुछ । फेरे । दुयं । बंध । कट्टि । कट्टि । कटि ओन । छछं । मनौ । गुज ।
 हतै । हते । गज राजे । गजगज्जै । दुअ । दुअं । मल । मल । प्रसाद । विहलं । मिलै । भुमी ।
 बल्यं । बल किष्णं । तिनं । तैज । तिष्णं । चाप । पाय । चानूर । मामल । युद्धं । रण । मेटौ ।
 मेटौ । विरुद्धं । डौरि । निबंध्या निबंध्या । जोति । तैज । मुत्ति ॥

* हिं० पीलवानं (सं० पीलु, An elephant and, वान, going, moving or driving)

Hence an elephant driver

दोहा ॥ हम वनचर बालक सुव्रज । तुम जुध मल्लनि मल्ल ॥
 अपति जुद्ध तुम प्रति करहि । विहतन होइ न बल्ल ॥ छं० ॥ ५०७ ॥ रू० ॥ १८१ ॥
 प्रथम मत्त गजराज दर । दस सहस्र बल ताहि ॥
 सो अग्या बल छौन भौ । लीला ही हति ताहि ॥ छं० ॥ ५०८ ॥ रू० ॥ १८२ ॥
 हति रूपति गजराज भौ । मंच सुमंडिय कंस ॥
 चानूरह मुष्टिक बलिय । मुकति समप्यन अंस ॥ छं० ॥ ५०९ ॥ रू० ॥ १८३ ॥
 कवित्त ॥ स्त्री निकेत तन स्याम । पीत कौ सेव देय दुति ॥
 धूमकेत वर जलद । काम उदित सु कोट रति ॥
 नयन उदय पुंडरिक । प्रसन अमरीय सुराजै ॥
 गुंजहार जंजरित । तडित बहरि सु विराजै ॥
 नहिं बाल वृद्ध किस्सोर तुअ । धुअ समान पै डिडपरौ ॥
 पावै न जोग जोगी जुगति । किन गुन तुम गुन विस्तरौ ॥
 छं० ॥ ५१० ॥ रू० ॥ १८४ ॥

साटक ॥ किंवा जोग सहस्र कोटित गुना, आवै न ध्यानं उरं ।
 नैवानं सनकादि रिप्य बहलं, ना ब्रह्म कर्म गुरं ॥
 किं किं जै बर गोकलेस हरि सो, कष्टं घनं अद्भुतं ॥
 किं निर्माय सु बालयं अभिनवं, नी तोय वानी वदं ॥ छं० ॥ ५११ ॥ रू० ॥ १८५ ॥
 दृष्टा ॥ पुब्ब स्त्राप सम दिठु करि । वचन ति लच्छिय काज ॥
 दर दर बानी देव गुरु । रोकि देव सिर ताज ॥ छं० ॥ ५१२ ॥ रू० ॥ १८६ ॥

१८१-१८३ पाठान्तरः-दोहा । वनचर । वचनचर । बालिक । वृज । वृज । युव । मल्लन ।
 मल । अपात्ति । युद्ध । युध । होइ । नवल ॥ १८१ ॥ मत । मत्त । मो । छान ताही ॥ १८२ ॥
 रूपति । फिर । जहा । मच । कम । चानुरह । मुष्टिक । वृत्तियं ॥ १८३ ॥

१८४ पाठान्तरः-निकेत । नकेत । म्येन । स्याम । को । सेव । गति । धुमकेत । काम ।
 उदित । कोट । जडरीत । बहरि । द हे । डिनेर । तुव । वंस । समान । पै । डिड । उड । जोग ।
 जोगी । जुगति । गण ॥

कवित्त ॥ एक समै रुकि लछिछ । रोहितह ब्रह्म ब्रह्म सिसु ।

सनक सनंद रु सनत । सकल रुक्केसु पवरि उसि ॥

तिन सराप भयौ पतन । वैर भावह हरि किन्नौ ॥

हरनकस्य हरनछिछ । इक अवतारह लिन्नी ॥

अवतार एक सिसुपाल भय । दंतवक्र रुकमनिवयर ॥

रावन्न कुंभकरनह बलियाचित अवतार सुमंत भरा ॥ छं० ॥ ५१३ ॥ रू० ॥ १८७

श्लोक ॥ पूर्वशापं समदृष्ट्वा स्वामिवचन प्रीतये ।

क्रोधमुक्ताश्चाविनाशी पीडितो गजराडयम् ॥ ५१४ ॥ रू० ॥ १८८ ॥

गीतामालची ॥ गजराज दंतिय भ्रमति कंतिय मह मंतिय कीजथं ।

बल कन्ह अग्गै करिन भग्गै रोस रंगै नीलयं ॥

फहरंत पीतं बल अभीतं भीम भीतं संजुरे ।

गहि दंत पंतिय कंध कंतिय रोस मंतिय उभरे ॥

अत्रियषट प्रमानं बल बलानं सेन मानं दुस्तरे ।

दिषि कंस सैनं काल ऐनं हथ्य गैनं भभरे ॥ छं० ॥ ५१७ ॥ रू० ॥ १८९ ॥

भुजंगी ॥ न बालं न बालं किसोरं न तोही । न वृद्धं जुवानं न व्रन्नं न जोही ॥

हतं हंत हंतं विषं वीर बुल्ली । धरे कंध दंतं रने नेच पुल्ली ॥ ५१८ ॥

बलंतो बलिंद्री वजानं न देवं । न व्रन्नं न देहं न सैसं न सेवं ॥

महा भाग भागं जुरं जष्यकेवं । दिवं दिष्ट मल्लं सुमुष्टीक एवं ॥

छं० ॥ ५१९ ॥ रू० ॥ १९० ॥

चिभंगी ॥ रन रंगे थालं, जेहा कालं, तेहा मालं, चानूरं ।

तोसल चिसूलं, मुष्टिक थूलं, हस्त विहूलं, धूसल्लं ॥

१८७ पाठान्तरः—कवित । इक । रोहितह । ब्रह्म ब्रह्म । रु । रुक्केसु । तन । भये । कीनौ ।
हरणकसप । हरणकस्य । हरनाछि । ईक । लीनौ । इक । भयं । दतवत । रुकमनि । वयर । रावन ।
कुंभकरमह । त्रिना । त्रितय ॥

१८८ पाठान्तरः—पूर्व । पुव्व । श्रापं । दिथा । स्वामी । सु । प्रीतयं । मुक्तं । अविनासी ।
गजराज ।

१८९ पाठान्तरः—दंतिय । भ्रमत । मह । मंतिय । उभरे । नैनं । ऐनं । हत । गैनं । उभरे ॥

१९० पाठान्तरः—बालं । वजानं । व्रन्नं । मूली । देहं । वर्णं । शस । जरका । स ॥

रन रंग गतानं, भेलि मिलानं, अंग समानं, भूमकान्ते ।
 धव धूसर दंते, मन हर धंते, रज विलसंते, बलवन्ते ॥
 चव गज्ज सतानं, जम सम पानं, बलि बलवानं, बोलन्ते ।
 रन रत वैनं, बहु बल मैनं, कन्ध समैनं उचरन्ते ॥
 आवर्त्तति हल्लं, मं पप गल्लं, वज्जन मल्लं, भूभल्लं ।
 धर धर थर हल्लं, पीपर पल्लं अमर हल्लं, भू भल्लं ॥
 वज्जियते भूलं, हस्त विकूलं, गेने हूलं, गैतूलं ।
 गैगर गत्तानं, घन वत्तानं, परि वथ्यानं, मल्लानं ।
 धम धम लत्तानं, वहं गत्तानं वजिबिन्नानं, उभमानं ॥
 सक्के घन वल्ले, छति धूसल्ले, कौन विहल्ले, भूभल्ले ।
 अन रोम रिसल्ले, रंग रिभल्ले, जिन बल अल्ले, धरहल्ले ॥
 कसि डोरिय भेवं, हल धर छेवं, हवि वत भेवं, द्वै वीरं ।
 चानूरं सक्कं, धरि मुष्टिकं, तत गुर वक्कं, बल नीरं ॥
 कटि थान परंसं, पोषित कंसं, जीनि जुगंसं, गिरदंते ।
 अन पग्ग पुलन्ते, सास उलन्ते, मन दम पंते अनपंते ॥
 तरवर संतज्जे, आयत वज्जे, घायै गज्जे, भैभानं ।
 दोज तन वीरं, जम्म सरौरं, वधि गुनितौरं, विधि भानं ॥
 गुरु जन विरुभानं, वह असमानं, धर धर थानं, वजिपानं ॥
 उप्पारे पग्गं, ब्रह्माड लग्गं, फिरि फिरि जग्गं, मिर भग्गं ॥
 फिरि कंसं दिप्पिय, आचिज लप्पिय, जग सह भप्पिय, तपितानं ।
 आतम गुरु पानं, तजि उभमानं, चंपिय कानं, मिर भानं ॥
 उच्चारहि वीरं, बहु व्रत नीरं, जम्म सरौरं, जुग भीरं ।
 कसि कसि उत्तंसं, डोरिय दंसं, कारि रिपुनंसं, विनुहीरं ॥

दूहा ॥ हहकारत मनल्ल सुभर । अति बल दिन बल बीर ॥

सुर नर नाग निबद्ध नर । भई कुलाहल भीर ॥

छं० ॥ ५३४ ॥ रू० ॥ १६२ ॥

रसावला ॥ उत्तमल्लंभरी । अति धारं धरी ॥ जांनि मत्ते करी ॥ होइ हायं घरी ॥ ५३५ ॥

घाय बज्जे घरी । गज्जि भदों भरी ॥ मच्छ फलं ठरी । धम्म धम्मं धरी ॥ ५३६ ॥

मल्ल भु, भुञ्जै हरी । वारि स्वदं भरी ॥ मेघ लग्गं गिरी । हेम कं पं ठरी ॥ ५३७ ॥

हीय ता कित्तरी । प्रान पछ्छै लरी ॥ जानि धक्कै धरी । उन्न उन्नं हरी ॥ ५३८ ॥

धूरि भूमि भरी । डोर लग्गी ठरी ॥ ओन मुष्यं भरी । द्रोण द्रुग्गं घरी ॥ ५३९ ॥

मुट्ट चुक्कं परी । राम कामं रूरी ॥ मल्ल भूम परी । कंस चासं डरी ॥ ५४० ॥

मंच मुक्की मुरी । धाय जदों धरी ॥ केस यंचै करी । * * ॥

छं० ॥ ५४१ ॥ रू० ॥ १६३ ॥

दूहा ॥ सत्तपुत्त बंधव सपत । लष्य असी गनि भूत्त ॥

काम आय बलिभद्र कर । कन्ह कंस नव हत्त * ॥ छं० ॥ ५४२ ॥ रू० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ राति कंस सुपनंत । कंध दिष्ठी न कंध पर ॥

वर ग्रिद्धव उच्चार । षोज लभ्भै न अंग उर ॥

चिन्ह हीन तन चित्त । बीर जग्यौ भ्रम षण्डे ॥

मुकति बंस मति हीन । रंग मंडप फिरि मंडे ॥

चानूर बीर मुष्टक बलिय । तोसल्लह रन रंग सजि ॥

कलि काल म कलि काल गति । कलिय काल भंजन सुरजि ॥

छं० ॥ ५४३ ॥ रू० ॥ १६५ ॥

गजे । जंम्म । बंधि । विधि । छिरु । छह । उपारे । पंग । ब्रह्मभ । जंग । दिषिय । लषिय ।

भषिय । उमानं । चंपय । उच्छारहि । डंरीय । विन हंस ।

१६२ पाठान्तरः—हहकारति । मल्लनि ।

१६३ पाठान्तरः—मलं । अति । अधि । दुगे । करी । धुरी । मल्ल । मल । । जुञ्जै । कित्तरी ।

प्रान । पछ्छै । जानि धक्कै । उन्न । उन्नं । द्रुग । मुठ । चुक्कं । शरी । मरी । मुक्की । यदो । * *

मेरे पास की किसी पुस्तक में पाठ नहीं है ॥

१६४ पाठान्तरः—सत । पुत । भूत । काम हत ।

* यह रूपक सं० १६४७ की लिखित पुस्तक में नहीं है और उसके पीछे की सं० १८९८ वाली में है ।

१६५ पाठान्तरः गृध्वन । उच्चार । मुगति । चानूर । मुष्टिक । तोसल्लह ॥

दूहा ॥ जमुन सपत्नी कंस हति । विख विराजत साथ ॥

बर विश्राम विश्राम घट । धनि जदुनाथ सुहाय ॥ छं० ॥ ५४४ ॥ रू० ॥ १६६

अरिल्ल ॥ मलन मारि पछारति कंसह । बंधव के रिपु केरि पुनंसह ॥

सूरसेन पुत्तिय सुत छंडिय । उग्रसेन सिर छत्रह मंडिय ॥ ५४५ ॥

जनम धाम वसुदेव देवकिय । किय बरपान प्रसन्न अंसु किय ॥

विप्रदान ग्रहगान सुमंडिय । कवि कविचंद्र इंद मुष बंदिय ॥

छं० ॥ ५४६ ॥ रू० ॥ १६७ ॥

दूहा ॥ हत्यौ कंस केसी हत्यौ । काल ग्रहति जिन मात ॥

नंद कछ्यौ नन्दादि सौं । जाहु ग्रह अब तात ॥ छं० ॥ ५४७ ॥

जननि जसोदा सौं कछ्यौ । राम किस्र संदेस ॥

छां दधि मांपन चोरते । छां हत कंस नरेस ॥ छं० ॥ ५४८ ॥

गोधन गोपी ग्वाल सब । सुष रहियो ब्रजबास ॥

दिन दस पाछें आय हौं । मात जसोदा पास ॥ छं० ॥ ५४९ ॥

बंसी वेत बपान बन । गंद हींगुरी जोरि ॥

धरियो सबै दुराय कै । लेइ न राधा चोरि ॥ छं० ॥ ५५० ॥

अंसुधार अंसुरार मुष । परत नंद सब गोप ॥

जा छांडे अब दीन करि । कत राषे जल कोप ॥ छं० ॥ ५५१ ॥

अप बक धेनक चास तें । अरु दावानल पान ॥

कत राषे इन विघन तें । जमला अरजुन ढान ॥ छं० ॥ ५५२ ॥

इह कहि सब अंकन मिले । नंद गोप सब साथ ॥

पगन परत ब्रज जात मग । कहत सुनाय अनाथ ॥ छं० ॥ ५५३ ॥

उग मगि पग पेडन चले । फिरि चितवै गोपाल ॥

का जाइ जसोदा कहैं । विना नंग ब्रजलाल ॥ छं० ॥ ५५४ ॥

जाइ जसोदा सौं कछ्यौ । रहे राम बलवीर ॥

सुनत जसोदा यों टरौ । ज्यों तह काटे नौर ॥ छं० ॥ ५५५ ॥

गोपी गोप गोपाल विन । यों दौपत दौनंग ॥

कह्लं न मन माने निमघ । ज्यों मनि बिना भुयंग ॥ छं० ॥ ५५६ ॥
 सद मापन साटौ दही । धयौ रहै मनमंद ॥
 षाइन विन गोपाल को । दुषित जसोदा नंद ॥ छं० ॥ ५५७ ॥
 प्रभुमाया फेरौ प्रबल । सब लागे ग्रिह टंद ॥
 पलन सुहाई राधिका । विन वृंदावन चंद ॥ छं० ॥ ५५८ ॥
 घर अंगन गायन घिरकि । जमुना जल वन कुंज ॥
 फिरत उचाटौ सी भई । विन वृंदावन चंद ॥ छं० ॥ ५५९ ॥
 वंसीबट वन बीथिकनि । दधि रोकन की ठौर ॥
 नैकु न मानै कहं न मन । कहों कहां लैं और ॥ छं० ॥ ५६० ॥
 लीला ललित मुरार की । सुक मुनि कही अपार ॥
 ते बड भागी देव नर । जपत रहत नित्यार ॥ छं० ॥ ५६१ ॥
 नंद तात पत्तौ सु ग्रह । सिसु बसुदेव प्रमान ॥
 कोइ कला मथुरा सु बसि । चलि द्वारिका निधान ॥ छं० ॥ ५६२ ॥
 मधु मंडित मधु पुरित मधु । मधु माधुर सु अजाग ॥
 कवि बरनिय सुर स्वामि को । कहत दसम संभोग ॥
 छं० ॥ ५६३ ॥ रू० ॥ १६८ ॥

जूतिचाल ॥ बाले जसोदा मतिर्लाले । कंस काले सुकाले ॥
 जसोमति नंदो गोप बंदौ । कंदो गुठिगो बाल चंदौ ॥
 दीन बंदौ न बंदौ । जयौ वासुदेव नन्दा ॥ छं० ॥ ५६४ ॥ रू० ॥ १६९ ॥

बौद्धावतार की कथा ॥

दूहा ॥ उतपन कैकट * देस कलि । असुर जग्य जय हारि ॥

जय जय बुद्ध मरूप सजि । है मुर सिद्धि सुधार ॥ छं० ॥ ५६५ ॥ रू० ॥ २०० ॥
 १९८ पाठान्तरः—सौं ॥ ५४७ ॥ सुं । मान्यो ॥ ५४८ ॥ रहीयो । पाछे । आइहो ॥ ५४९ ॥
 वठ । गिद । हिंगुगी । हिगुरी ॥ ५५० ॥ असुरार । असरार । छाडें ॥ ५५१ ॥ पांन । दान ॥ ५५२ ॥
 कहा । कहे । विना ॥ ५५३ ॥ सौं । यो ॥ ५५५ ॥ विन । दिपत । हीनंग । निपम । विना ॥ ५५६ ॥
 मापन । विन ॥ ५५७ ॥ फिर । वृंदावन ॥ ५५८ ॥ परकि । वन ॥ ५५९ ॥ नेकुं । लों ॥ ५६० ॥
 नित्यार ॥ ५६१ ॥ पत्तौ । प्रमाण । निवांन ॥ ५६२ ॥ स्वामि । कों ॥ ५६३ ॥

२०० पाठान्तरः ककट । किकट ॥

* श्रीमद्भागवत पुराण में बुद्ध की उत्पत्ति " कौकट " में होनी लिखी है—

विराज ॥ जयो बुद्ध रूपं । धरंतं अनूपं ॥ हरी वेद नंदे । दया देह बंदे
 परूहंत रष्ये । कियं भष्यभष्ये ॥ जयं जग्य जोपं । कियं दक्ष भोपं ॥
 म्रिगंया विहारं । सुरष्ये दायरं । असूरं सुगती । घहं रष्यपती ॥
 कला भंजि कालं । दया भ्रंम पालं ॥ सुरं ग्यान मत्तं । प्रवत्तेसुजत्त
 धरे ध्यान नूपं । नमो बुद्ध रूपं ॥ छं० ॥ ५७० ॥ रू० ॥ २०१ ॥

कलिक अवतार की कथा ॥

दृहा ॥ कलि कलिंग उतपन असुर । हती भ्रंम धर भूप ॥

कलि कलिमल सों हरन हरि । कियौ कलंक सरूप ॥

छं० ॥ ५७१ ॥ रू० ॥ २०२ ॥

विराज ॥ भयं भूप लिंगं । अनीतं उतंगं ॥ विपंनौ दयारं । अधर्म विच

कलंकं सुकालं । विया पुच्छ आलं ॥ धरा भ्रम्म लीपे । चवं एक रोपं

वधे मेच्छ मत्तं । चितं काल रत्तं ॥ जुगं वेद हारी । न ग्यानं विचारं

नयं दान ध्यानं । मुपं जानि मानं ॥ नहो मन्न पूजा । न सोचं अनूपं

न जग्यं न जापं । सर्व आप आपं ॥ न देवं न सेवं । अहं मेव मेवं

न गाहा न गीयं । न पत्यं सुत्रीयं ॥ न ग्रयं न पुरातं । धरायन्न जा

धरे ध्यान सामं । कियं ग्यान तामं ॥ कलंकौ सरूपं । धरंतं अनूपं ।

इयं स्याम रोहं । किरौटी ससोहं । जुगं वाहु चारं । मनीजोति ता

कटी पीत पट्टं । महा विष्य भट्टं । करे षग धारं । विकट्टं करारं ॥

मुठी हेम भेतं । मजों धूमकेतं ॥ करे खग धारं । असूरं प्रहारं ॥

कियं पंड पंडं । धरा पूर रुंडं ॥ धरं भ्रम्म चारं । पवित्रं विधारं ॥

कियं श्रद्ध मत्तं । सुषौनौ पवित्रं ॥ सुरं पुष्प विष्टं । सुचारं सुतिष्टं

रचे मत्त जुगं । कलौकाल भगं ॥ कृतं मत्य नूपं । जयो ता सरूप

छं० । ५८४ ॥ रू० ॥ २०३ ॥

उपसंहार का कथन ॥

दूहा ॥ राम किसन कित्ती सरस । कहत लगै बहु वार ॥

छुच्छ आव कविचंद की । सिर चहुआना भार ॥

छं० ॥ पूट्पू ॥ रू० ॥ २०४ ॥

कवित्त ॥ सिर चहुआना भार । राम लीला छिग गाइय ॥

सनक सनंद सनत्त । कही सुकदेव न जाइय ॥

बालमीक रिषराज । किसन दीपायन धारिय ॥

कोटि जनम संभवै । तोय हरि नाम अपारिय ॥

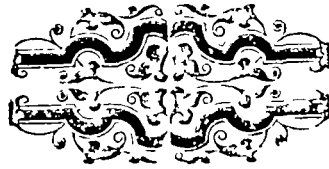
मानुच्छ मंद मति मंद तन । पुब्वभार चहुआन सिर ॥

जं कह्यौ सलप मति सुलप करि । सुहरि चित्त चित्यौ सुधिर ॥

छं० ॥ पूट्ई ॥ रू० ॥ २०५ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथीराजरासके दसावतार

वर्णनं नाम द्वितीय प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २ ॥



२०४ पाठान्तरः—राम । कुछ । चहुआना ॥

२०५ पाठान्तर—चहुआना । राम । सुनद । नाम । मानुछ । चहुआने ॥

अथ दिल्ली किल्ली कथा लिख्यते ।

(तृतीय समय)

मंगलाचरण ।

चंद्र की अपनी स्त्री के प्रति उक्ति कि विधना ने दिल्ली
सोनेसरनन्द के बसने को निर्माणा को दे ॥

श्लोक ॥ राजं जा अजमेर केलि कलयं, व्रंढं व्रतं संभरी ।

जुझारा भर भोर मीर वहनौ, दहनौ दुरंगो अरी ॥

सो सोनेसरनंद दंद गहिला, वहिला वनं * वासनं ।

निम्मानं विधना सुजान कविना, दिल्लीपुरं वासनं ॥ कं० ॥ १ ॥ कृ० ॥ १ ॥

चंद्र का अपनी स्त्री को कहना कि अनंगपाल की पुत्री को पुत्र
उत्पन्न होने से दिल्ली की पूर्व कथा का प्रसंग प्राप्त हुआ है ।

श्लोक ॥ अनंगपाल पुत्तीय सुरंग +, पुत्त इच्छा फल दिनौ ।

नालिकेर फल सुफल, मंत आरंभन किनौ ॥

तव प्रसाद उष्यनौ, पुष्व मंडी कथ भारिय ।

वर वीसल वै वंस, कछौ वर द्रुग विचारिय ॥

प्रथिराज जोति वरनोह कवि, अन्तिमंत मामंत भर ।

चंदानि वदनि तुनि चंदमनि, भयौ दानवी वंसवर ॥ कं० ॥ २ ॥ कृ० ॥ २ ॥

१ पाठान्तर—वहिला । वासन । सुजान । वासन ।

विहित रहे कि यहा कवि ने दिल्ली देवता का मंगलाचरण न कर के पदार्थनिर्देशय,
मिला प्रसाद दिया है । * जहा दिल्ली बसा है उस वन का पुराना नाम है ।

२ पाठान्तर—उष्ये न लट है । पुत्र । इच्छा । दिनौ । किनौ । प्रसाद । अपनी । भारिय
। तुनि । विचारिय । वरनोह । वरनोह । दानवी ।

बालकपन में पृथ्वीराज का दिल्ली प्राप्त करने का स्वप्न देखना ॥

दूहा ॥ बालकपन प्रथिराज ने, इह सुपनन्तर चिन्ह ।

जै जुगिगनि जुगिगनि पुरह *, तिलक चथ्यकरि दिन्ह ॥ कं० ॥ ३ ॥ ह० ॥ ३ ॥

ककु शेवत ककु जागते, निशि सुपनन्तर पाय ।

अह रयन के अंतरै, सुष सुत्तह सुभदाय ॥ कं० ॥ ४ ॥ ह० ॥ ४ ॥

अभयदायिनी नाम तिहिं, जुगिगनि जग आधार ।

सुपनंतर सुभदायिनी, आयै आप पधार ॥ कं० ॥ ५ ॥ ह० ॥ ५ ॥

कनक कंति दुति अंग की, निरषि सु पातग जात ।

परमानन्दप्रदायिनी, पार करन जग मात ॥ कं० ॥ ६ ॥ ह० ॥ ६ ॥

नष सिष प्रभा प्रकास दुति, चष मुष कमल सुफूल ।

ब्रन ब्रन नग जोति जग, जरकस कंति दुकूल ॥ कं० ॥ ७ ॥ ह० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज की माता का उससे स्वप्न का वृत्तान्त पूछना ॥

दूहा ॥ सुपन पुच्छि माता तबै, कहौ पुत्र सब भाष ।

जो दिष्यिय तुम अह्वं निशि, सो कारन समभाय ॥ कं० ॥ ८ ॥ ह० ॥ ८ ॥

पृथ्वीराज का माता को उत्तर दे स्वप्न का वृत्तान्त कहना ॥

कवित्त ॥ करि जुगिनी रत भेस, सुरंग सिंगार अभासिय ।

चंद पंति तारकक, नरन परि बिंदि प्रहासिय ॥

अंबर दिय उचार, दिव्य बानी धुनि मंडिय ।

ध्यान में रहे कि यहा से सब कथा चंद और उसकी स्त्री के संवाद में है और उस संवाद के अतर्गत अन्य सब संवाद वर्णन किए गए हैं, अतएव छंदों का लगाना कुछ गूठ सा हो गया है । निदान हमारे दिए शीर्षको के बल से अर्थ सुगमता से लग सकता है ॥

३-७ पाठान्तर-वालापन । पृथ्वीराज । निशि । जुगिनि । जुगिनिपुरह । हथ ॥ ३ ॥ निशि । पाइ । अध । रयनिकै । सुभ सुत्तै सुपदाइ ॥ ४ ॥ अभैदायिनी । तिहिं । जुगिनि, । सुभ दायिनी । आपै ॥ ५ ॥ अगसह । पातक ॥ ६ ॥ सफूल । सुफूल । वरन बरन नग । जरकस ॥ ७ ॥

इनमें स० १६४७ की लिखित पुस्तक के अनुसार दोहा ६ और ७ का पाठ है, परन्तु, उसके इधर की लिखी नवीन पुस्तको में उनके पहिले पाद तो ऐसे ही हैं, किन्तु शेष तीन पाद ६ के ७ में और ७ के ६ में लिखे भिन्नते हैं ॥ * जुगिनिपुरह-दिल्ली का एक पुराना नाम है ॥

८ पाठान्तर-सुपिन । पुच्छि । कहौ । कहइया । समभाय । सबभाइ । दिपिय । दिप्यवि ।

समुभाइ ॥

सुपनंतर चहुवान, जाय जुग्गिनिपुर मंडिय ॥
जाग्रंत मात दिष्पो सुपन, प्रकृति न कोय तिन थान रहि ।
भय प्राय मात पुच्छिय प्रगट, सो सुपनंतर अरथ कहि ॥

कं० ॥ ९ ॥ ह० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज की माता का स्वप्न का वृत्तान्त सुन

अद्भुत रस में रंजित होना ॥

अरिह ॥ सुनि सुनि वचन मात तव बुद्धिय, सुभ अद्भुत चित्तरस भुक्खिय ।
सुष दुष द्विग भरी जल भ्रांश्य, मन भौ चास करन फुनि आइय ॥

कं० ॥ १० ॥ ह० ॥ १० ॥

उसका ज्योतिषियों को बुला स्वप्न का सत्यफल पूछना ॥

दूहा ॥ तत्र बुलाय सब जोतगी, कही सुपनफल सत्य ।

दिवस पंच के अंतरे, होय सु दिल्लीपति ॥ कं० ॥ ११ ॥ ह० ॥ ११ ॥

गाथा ॥ दिल्ली वै स्वपनं तं, प्रातं कहिय प्रगट विषायं ।

जोतिग गनिक गुनीसं, सुनियं तो सति मतायं ॥ कं० ॥ १२ ॥ ह० ॥ १२ ॥

ज्योतिषियों का उत्तर दे कहना कि पृथ्वीराज

दिल्ली का राजा होगा ॥

दूहा ॥ न इह वात जोनिग बटै, मनस धृत्र थिरताव ।

जोग नैर। जोतिग कहै, प्रभु तु होय प्रयुराव ॥ कं० ॥ १३ ॥ ह० ॥ १३ ॥

ज्योतिषियों के विदा कर माता और पुत्र का एक गृह में जा बैठना ॥

दूहा ॥ न इक्ष कथ्य दुजराज कथि, प्रक्षमि करी सु विदाय ।

मात पुत्त दो इक्क गृह, बरभति वैठे आय ॥ कं० ॥ १४ ॥ ह० ॥ १४ ॥

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र के आगे दिल्ली की पहिली
किल्ली की पूर्वकथा का कहना और राजा कल्हन का वनक्रीडा
करते सुसा और स्वान के चरित्र से भूमि का वीरत्व देखना ॥

कवित्त ॥ तव अनगानी पुत्ति, कहै सुनि पुत्त सु वत्तह ।

पुब्ब कथा ज्यौ भई, सुनौ त्यों कहूं अपुब्बह ॥

हम पितु परिषा पुब्ब, नृपति कल्हनवन क्रीलत ।

सुसा कंडि ता पुट्ट, स्वान संचरिय सचीलत ॥

सिसु संमुष हुइ बैठी सु तर्चा, भगिग स्वान भैभीत हुअ ।

सब सथ्य तथ्य आचिज्ज भय, करि पारस ठठे सुभय ॥ कं० ॥ १५ ॥ ह० ॥ १५ ॥

उस वीरभूमि में व्यास का कीली गाड़ना ॥

दूहा ॥ व्यासो जोति जगजोति तहँ, सिद्ध भूहरत ताव ।

द्वैव जोग खेसच सिरह, किल किलित्त सु आव ॥ कं० ॥ १६ ॥ ह० ॥ १६ ॥

१४ पाठान्तर—नह । कथ । विदाय । पुत्त । दोइ । इक्क । यह । वैठ । आइ ॥

१५ पाठान्तर—पुत्रि । कह । पुत्रि । पुत्र । वत्तह । ज्यो । सुनौ । त्यों । कहौ । पित्त । पुवि
किल्हन । स्वान । सचीलत । सव्वीलत । समुष । होय । होइ । वैठैज । स्वान । श्वान । भय ।
होइ । सथ । तथ । आचिज्ज । ठठे ॥ * कल्हन चन्द्र का वाचक होने से राजा चन्द्र । उपस
हरणी टिप्पण देखो ॥

१६ पाठान्तर—द्वैवयोग । सिरनि । कील । कलित ॥

† व्यास राजगुरु का वाचक है । तैवर राजपुत्रों के पांडववंशीय गिने जाने से उनके
राजगुरु व्यास कहाते थे । यह वह व्यास था जो कल्हन राजा के समय में राजगुरु था

वहां कल्हन का कल्हनपुर बसा कर राज करना और फिर
उसके कितनीक पीढी पीछे अनंगपाल का होना ॥

दूहा ॥ कल्हनपुर + कल्हन नृपति, वासी नृप निज साज ।

कितक पाट अंतर नृपति, अनंगपाल भय राज ॥ कं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १७ ॥

इतनी कथा सुनकर राव (पृथ्वीराज) के मन में अचरज हुआ ॥

दूहा ॥ सुनत राव इह कथ्य फुनि, उपजिय अचरज अंग ।

सिथल अंग धीरज रहित, भयो दुमति मति पंग ॥ कं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

विपरीत समय का आना देखकर सकल सभा का शंकित होना ॥

दूहा ॥ सकल सभा संकित भई, व्यास वयन वर वेद ।

क्रमय समय विपरीत भय, उपज्यो अंतर षेद ॥ कं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १९ ॥

+ दूसरी किल्ली की कथा ॥

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र (पृथ्वीराज) के आगे
अपने पिता के फिर से दिल्ली बसाने के लिये पाषाण
और किल्ली गाड़ने की कथा का कहना ॥

कवित्त ॥ अनंगपाल पुत्रीय, फेरि बुल्ली सुत सम्मच्च ।

एह वक्त आचिज, उपजि सो पित्त तु तच्चच्च ॥

पुच्छि व्यास † जग जोति राज मंघौ उच्छव घन ॥

१७ पाठान्तर—किल्हनपुर । किल्हन । अनंगपाल । भयो ॥

* कल्हन राजा के दिल्ली बसाने के समय का दिल्ली का पुराना नाम कल्हनपुर है ॥

१८ पाठान्तर—कथ । अचरज ॥

१९ पाठान्तर—वयन । विरति ॥

† ध्यान में रहे कि कल्हन के पीछे कई पीढी तक नर कल्हनपुर में भय से राज कर रहे और हपम १८ और १९ कथे में दूसरी किल्ली की कथा का प्रमाण मिलने का प्रमाण है क्योंकि जो कुछ विपरीत हुआ है वह दूसरा किल्ली के पीछे हुआ है ।

२० पाठान्तर—अनंगपाल पुत्रीय । फेरि । बुल्ली । सुत । सम्मच्च । पित्त । तच्चच्च । पुच्छि । व्यास । जग । जोति । राज । मंघौ । उच्छव । घन ॥ अनंगपाल के समय का राजगुरु

। एवमेव स्पष्ट है कि अनंगपाल ने दूसरा वर दिल्ली बसाने का प्रयत्न सभा की कामसे किया था । इसी लिये कथे में—वयन नाम । विरति, कुनन । जित । हाय । एह । घन—कथा के और । एव । शब्द यहाँ बताने का इ इतना है ।

ग्राम नाम अप्पियै, कुसल जिन होय ग्रेह धन ॥

चिंतयौ चित्त दुजराज तव, अगम निगम करि कट्टयौ ।

सुभ घरी महरत संधि कै, फिरि पाषाण सु गठ्टयौ * कं० ॥ २० ॥ ह० ॥ २० ॥

व्यास का कहना कि पांच घड़ी तक पाषाण को हाथ न
लगाने से वह शेष के सिर पर दूढ़ हो जायगा परन्तु

राजा कां इसे अनर्थ कर मानना ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जग जोति, सुनधि तूवर नरिंद तुअ ।

एह सेस सिर आव, अचल निहचल सुरंग धुअ ॥

मोहि अरथ पल एह, केह अप्प नह राजन ।

पंच घरी इह मुक्ति, राज रहियो इन काजन ॥

इननौ जु कह्यौ बर व्यास तहँ, इन अनथ्य का मानयौ ।

भवकित्त बत्त मिटै न को, कत्त क्रम नह जानयो ॥ कं० ॥ २१ ॥ ह० ॥ २१ ॥

साठ अंगुल की कीली गाड़ना अर्थात् शंकुपात कर्म करना ॥

अरिहत्त ॥ सुनी बत्त इह तत्त प्रमानं, व्यास करी किल्ली पुरायानं ।

साठि सु अंगुल लोहय किल्लिय, सुकर सेस नागन सिर मिलिय ॥

कं० ॥ २२ ॥ ह० ॥ २२ ॥

सब के बरजने पर भी उस कीली को उखाड़ डालना ॥

अरिहत्त ॥ मुंध लोह आचिज्ज सु मान्यौ, भावी गति सो व्यास न जान्यौ ।

बरजे सह परिगह परिभानं, उष्यारी किल्ली भू थानं ॥ कं० ॥ २३ ॥ ह० ॥ २३ ॥

पाषाण के उखाड़तेही रुधिर की धार चलना और आश्चर्य होना ॥

कवित्त ॥ अनंगपाल पृथ्वी, नरेस आचिज्ज सु मान्यौ ।

भवसि बत्त जो होय, सोग ब्रह्मान न जान्यौ ॥

* “ फिर पाषाण सुगठ्टयौ ” अर्थात् वास्तुशास्त्रानुसार शिलान्यास कर्म किया ॥

२० पाठान्तर—तू अर । शेष । फिर । निश्चल । धुय । इह । मुक्ति । सु । तहा । अनथ । मानयौ । को । मिटै । क्त । क्रम । जानयौ ॥

२२ पाठान्तर—बत्त । प्रमान । किल्लीपुर । किल्लीय । मिलिय ॥

† अनंगपाल के समय का दिल्ली का नाम “ किल्लीपुर ” ॥

२३ पाठान्तर—लोय । अचरिज । मान्यौ । जान्यौ । वरजे । सव । उषारिय । किल्लीय

आराधत वर ग्यान, सोइ संसार मुषाल्यौ ।
 दैवकम्म करि जोग, सोइ पाषान उपास्यौ ॥
 रुधि कंक कुट्टि समुह चलिय, अति अद्भुत सु दिग्घियौ ॥
 परिगह पवास मंची नृपति, इन आचिज्ज सु लघियौ कं० ॥ २४ ॥ २४ ॥
**पाषाण का उखाड लेना सुन व्यास का दुखित हो
 राजा के पास आना ॥**

दूहा ॥ सुनि आयौ वर व्यास तह, दुष पायौ जन मझू ।
 का जंघ्यौ मुप नृपति सैं, इह मति मूढ अबुभक्त ॥ कं० ॥ २५ ॥ २५ ॥

अनंगपाल का पश्चाताप करना और व्यास का प्रागम कहना ॥
 कवित्त ॥ अनंगपाल कक्कवै, बुद्धि जो इसी उक्खिय ।
 भयौ तूअर मति हीन, करी किल्लिय तैं ठिल्लिय ॥
 कदै व्यास जग जोति, अगम आगम हैं जानों ।
 तूअर तैं चहुआन, अंत ह्लैहै तुरकानों ॥
 तूअर सु अवट्टि मंडव घरह, इक्क राय वनि विक्कवै ।
 नव सत्त अंत सेवात पति, इक्क छत्त मधि चक्कवै ॥ कं० ॥ २६ ॥ २६ ॥

व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना ॥
 पद्धरी ॥ उहख्यौ व्यास जग जोति वीर । मृत सुगम जाक पातान नीर ।
 अथकाल दरह दरसिय सु देव । व्यासह ममान जोतिगिय तेव ॥ कं० ॥ २७ ॥
 संसार सार अस्सार कीन । वर व्यास बुद्धि कोविद प्रवीन ॥
 मंडपौ सु राज सैं क्रोध नृप । वरज्यो मुक्तिषण व्यासह सहप ॥ कं० ॥ २८ ॥

जनमैज राज तस मत्त मान । आनी न चित्त तिन निमष ग्यान ॥
 षिति राज सरिष रिष राइ बोलि । कीनीय वत्त तुम गत्त षोलि ॥ कं० ॥ २९ ॥
 हूं गड्डि गयौ किछी सजीव । हल्लाय करी ठिछी सईव ॥
 तूंअर अवटि मंडव सुथान । भोगवै भूमि सुरतान पान ॥ कं० ॥ ३० ॥
 मो मत्ति जाति तूंअर चिनेत । मति करै रोस राजन सुहेत ॥
 जान्यौ सु कछ्यौ वर व्यास रूप । भूंठी सुवत्त वरजित्त भूप ॥ कं० ॥ ३१ ॥
 हिन्दून + जानि पंडव सु वंस । तिन भयौ अंस पारथ्य नंस ॥
 तिहि वंस भीम अरु धम्म सुत्त । तिहि वंस बली अनगोस तुत्त ॥ कं० ॥ ३२ ॥
 मति करहु सोच मम मंत्र मानि । हुअ राज काज दर चाहुवान ॥
 वर वंस सुमति अति मति प्रताप । दिन कितक तपै चहुवान आप ॥ कं० ॥ ३३ ॥
 फिरि व्यास कहै सुनि अनग राइ । भवतव्य बात सेटी न जाय ॥
 रघुनाथ हाथ चैलोक देव । ते कनक मृगग लागे पक्केव ॥ कं० ॥ ३४ ॥

* ये दोनो पाद सं० १६४७ की लिखित पुस्तक में नहीं हैं और उसके इधर की सबत् १८५९ की में हैं ॥ २९ ॥ हुं । किलि । किली । गडि । हलाप । ठिली । इव । तूंअर । अवटि । सुथान । सुरतानं । पानं ॥ ३० ॥ मति । जानि । तूंअर । जान्यौं । भूंठी । स । वरदात्ति ॥ ३१ ॥ जानि । पारथ्य । धम्म सुत्त । वंसं । बली । तुत्त ॥

३२ पाठान्तर—मानि । हुय । चाहुवानं । चाहुवानं ॥ ३३ ॥ राय । मृग । लगे ॥ ३४ ॥

+ इस महाकाव्य में “हिन्दू” शब्द यहा पर आया है । उसकी व्युत्पत्ति वाचस्पय्य वृहत्संस्कृताभिधानकर्त्ता और शब्दकल्पद्रुमवाले ने पुल्लिङ्ग में यह की है—

“होनं दूषयतीति । दुष+डुः पृषोदरादित्वात् साधुः । जातिभेदे । जातिविशेषः ॥

और उसका प्रयोग मेहतंत्र में यह दिखाया है—

पश्चिमान्नायमंत्रास्तु प्रोक्ताः पारस्य भाषया । अष्टोत्तरशताशीतिर्येषा संसाधनात् कलौ ॥

पंच खानाः मत्तमीरा नव शाहा महावलाः । हिन्दुधर्मप्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्तिनः ॥

हान च दूषयत्वेन हिन्दुरित्युच्यते प्रिये । मेहतन्त्रे २३ प्र० ॥

और भविष्यपुराण के प्रतिसर्गपूर्व के तृतीय खंड के दूसरे अध्याय में लिखा है कि विक्र-
 मादित्य के पौत्र शालिवाहन ने पितृराज्य पाने पर शक्यादि को जीत कर आर्यदेश और सैक
 देश की सीमा इस प्रकार से स्थापित की—

एतस्मिन्नन्तरे तत्र शालिवाहन भूपतिः ॥ १७ ॥

विक्रमादित्यपौत्रश्च पिताराज्यं यहातवान् ॥

जित्वा शकान्द्राघर्षाश्चीनतैः तत्रिदेशजान् ॥ १८ ॥

बाल्हीकान्कामरूपाश्च रोमजान्खुजाकृठान् ॥

तेषां क्रीपां यहीत्वा च दडयौग्यानकारयत् ॥ १९ ॥

स्थापिता तेन मर्यादा स्त्रैचार्याणां पृथक् पृथक् ॥

मारीच अथ्य आयौ करन्न । हुइ होनहार सीता करन्न ॥

पंडवन जाग आरंभ कीन । वरज्यो सु व्यास पंडित प्रवीन ॥ कं० ॥ ३५ ॥

दुरवास द्वारिका दिषन आइ । जहवन वाल मंड्यौ उपाइ ॥

करि पुरुष नारि रचि गर्भ हास । कह देव याहि उपजै सु आस ॥ कं० ॥ ३६ ॥

पित्री कही विप्र तस उदर जोइ । जहवन बंस नष्यै सु षोइ ॥

वरजे सुधम्म सुत रमन जूप । देपंत अंष ते परे कूप ॥ कं० ॥ ३७ ॥

केतेक कहैं सुनि अनंग राइ । जानति जान कीनौ उपाय ॥

भवतय्य वात उतपात मोटि । मिट्टै न बुद्धि कोइ करौ कोटि ॥ कं० ॥ ३८ ॥

जिन करौ षेद उपदेस मोहि । हैं जानि ग्यान इह कहैं तोहि ॥

करि धरा धम्म उद्धारि देह । ससार अनित कंडौ सनेह ॥ कं० ॥ ३९ ॥

चैलोक जीति जिन जेर कीन । ते गये अंत हुइ आपु हीन ॥

इक गल्ह अमर संसार सार । रष्यै न पछुमि ते बड़ गमार ॥

कं० ॥ ४० ॥ हू० ॥ २७ ॥

सिधुस्यानमितिज्ञेय राष्ट्रमाय्यस्य चान्तमम् ॥ २० ॥

स्वच्छस्यान परसिधोः कृत तेन महात्मना ॥ २१ ॥

यदि यह माननीय है तो स्पष्ट है कि "हिंदु" शब्द तो 'सिधु' का और "हिन्दुस्यान" शब्द "सिधुस्यान" का अपभ्रष्ट है अर्थात् वह यावनी नहीं है। यदि उनको यावनी भी माने तो भी तो आजकल हमारे देश में बड़ी ही प्रचलता से यह माना जाता है कि संसार भर की सब भाषा हमारी संस्कृत से ही निकली है। अतः अब फिर हमको धननाना पड़ेगा कि यावनी "हिंदु" शब्द किस संस्कृत शब्द का अपभ्रष्ट है ? और जब वह संस्कृत का अपभ्रष्ट है तो फिर उससे घृणा क्यों करनी चाहिये ?

तथा हमारे दिग्गज इतिहासकारों से पुरातत्ववेत्ता विद्वानों के विचारार्थ एक यह प्रश्न भी उपस्थित होता रहे कि इससे तो शालिवाहन का विजय का योना होना सिद्धित होता है और अन्य शोधों के अनुसार प्रचलित शालिवाहन राजकर्ता कल्पित नामक सिद्धिपन राजा माना जाता है। हमारी देशी साक्षी से विजय और उनके पति शालिवाहन का १३५ वर्ष का अंतर असंभव होना प्रतीत नहीं होता है। इस के अतिरिक्त शालिवाहन का बोटु हो जाना भी कहा जाता है और शक भी बोटु धर्मोत्तरी माने जाते हैं। अतः आवश्यक है कि यह मान्यता ही शक धर्मोत्तरी हो कर कल्पित नामक राजा हो गया है और हमारे यहां उपरि पढ़ने नाम से ही एक प्रख्यात चला आया है।

अनंगपाल के पीछे जो जो राजा दिल्ली में होंगे उनके
विषय में व्यास का भविष्य कथन करना ॥

तुंअरों का नाश और चौहानों का राज्य होना ॥

कवित्त ॥ सुनि अनंगेस नरेस, मोहि इह आगम बुझै ।

अंत राज चहुआन, मोहि इह बेगो सुझै ॥

सब तूंअर पग मग, भिरिग मंडव आहुटै ।

सार धार धर धूमि, मुगति पै बंधन कुटै ॥

इह दोष राज दिज्जै नहीँ, मैं बहु बार बरज्जयौ ।

भवतव्य बात मिट्टै न को, होइ सु ब्रह्म सिरज्जयौ ॥ कं० ॥ ४१ ॥ ह० ॥ २८ ॥

चौहानों के पीछे मुसलमान और उनके पीछे फिर
हिन्दुओं का राज्य होगा ॥

कवित्त ॥ ता पछ्छै सुनि राज, राज भज्जै चहुआनिय ।

बहुत काल अन्तरै, तपै पुहमी तुरकानिय ॥

मेछ्छ अविनि तप अहुटि, प्रलै हुइ है तिन बंसह ।

बहुरि जोर हिन्दून, राह हुइहै इक अंसह ॥

संघारि सकल दानव कुलह, धर्म राह सह विस्तरै ॥

जितै जगत तप प्रबल करि, आनि दिसा विदिसा फिरै ॥

कं० ॥ ४२ ॥ ह० ॥ २९ ॥

फिर मेवातपति सं० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे* ॥

कवित्त ॥ नव सत्तै वर अंत, बहुरि दिल्ली पति होई ।

पग घोद धुरसान, पहुमि चक्रवै सु जोई ॥

२८ पाठान्तर—वहुआन । वेघो । सूझै । तूंअर मग । मैं । बरज्जयौ । मेट्टै । होय । सिरज्जया ॥

२९ पाठान्तर—पछ्छै । चहुआनिय । चहुआनीय । तुरकानीय । मेछ्छ । मेछि । हुँ हैं ।

हिन्दून । हूँ । दानव । आन । दिसा । फिर ॥

* यह ३० और ३१ दोनों रूपक पुरानी पुस्तक सं० १६४७ की लिखी में वास्तव में तो नहीं हैं । परंतु उसके पत्रे के किनारे पर किसी अन्य ने पीछे से इन दोनों को लिख दिया है । और उसके पीछे की नवीन पुस्तकों में इन दोनों के पाठ हैं । संवत् १८३८ की में तो “मेवातपति”

महि भेवात महीप, दीप दीर्पान दल मंडै ।
 क्लिक्क रहें पय आप, इक्क षल षंड निषंडै ॥
 मंडै सु पहुमि प्रधिराज जिम, सत्त वान जोतिक जपिय ।
 मानी सु सत्ति करि खनि इह, व्यास वचन व्यासह थपिय ॥

कं० ॥ ४३ ॥ ह० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सोरै सै सत्योतरै, विक्रम साक वहीत ।

ठिल्ली धर भेवातपति, लैहि षग बल जीत ॥ कं० ॥ ४४ ॥ ह० ॥ ३१ ॥

व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा ॥

कावित्त ॥ तिहि जथ वत्त प्रमाण, सुनहि दिठ तुच्छ सुअंतं ।

वर ल्लेच्छनि सत घटइ, भ्रम पारस रस रंतं ॥

हुइ नव सत्त प्रमान, धूअ टरइ रवि टरइ ।

टरै न व्यास वचन, मान जस ते अजु टरई ॥

ए सब अजान सता जु ही, परी इक्क मक्की मुही ।

परि पै प्रसन्न परतीत करि, तव काढत आवह जुही ॥ कं० ॥ ४५ ॥ ह० ॥ ३२ ॥

माता का दान और होम करना ॥

मुरिल्ल ॥ सनि आतान भर चहुआनं, कही मात मति तत्त सुजानं ।

बहुरि पुच्छि दुजराज न आनं, कियौ होमदै दान प्रमानं ॥ कं० ॥ ४६ ॥ ह० ॥ ३३ ॥

पाठ है और स० १६४७ की प्रति में "मेशापति" पाठ है । वैसे ही पहिली में १५७७ और दूसरी के में १७७७ पाठ हैं । निदान ये दोनो तो स्पष्ट रूप से स्पष्ट हैं । तथा हमारे पाठको के ध्यान में रहे कि उदयपुर वाले स्वर्गवासी कविराज श्यामलदासजी ने जो इस महाकाव्य का आद्योपान्त वाली घनना संवत् १६४० से लेकर १६७० तक के भीतर माना है उसका आधार इन स्पष्ट रूपको में से रूपक ३१ पर रखा है । उसके जाली बनने के समय के विषय में हमने आदि पर्व की "उपसहारणी टिप्पण" पृ० १७५-१७८ तक वाक्य ३ और "पृथ्वीराजरासे की प्रथम संरता" के पृष्ठ ३४ से ३७ तक वाक्य १७ में सविस्तर कथन किया है अतएव यहां अधिक नहीं कहते हैं ॥

३० पाठान्तर—सतैं । डिली । पग । पोदि । चकवि । मेवाट । किक आइ रहि पाइ । सति । जपिव । धपीय ॥

३१ पाठान्तर—सोरै । सतरिसे । सित्योतरि । विक्रम । शाक । ठिल्ली । मेवारपति । लइ । पग ॥

३२ पाठान्तर—अय । घत । प्रमान । तुछ । सेच्छनि । होय । सत । प्रमान । मान अजान रइ । मही । परा इह मही मही । परिये । प्रसन ॥

३३ पाठान्तर—हंइ वाधा । चहुआनं । सुआनं । पुछि । दुजराजनि ॥

मातुल का अपने मन में मोह करना ॥

दूहा ॥ सुनत सुपन सोमेस सुअ, बज्जाए वर बाज ।

गिन्यौ सु मातुल मोह मन, और अवनिय काज ॥ कं० ॥ ४७ ॥ ३४ ॥

पृथ्वीराज का स्वप्नफल सुन आनन्द में फूला न समाना ॥

पड़री ॥ सुनि सुपन मात फल कहै राइ । दरिया तरंग मन मोज पाइ ॥

ज्यों मोर मेह आगम अनंद । राका चकोर ज्यों मुष्य चंद्र ॥ ४८ ॥

चंदनह बन्न ज्यों पाय चिख । तिह नाह पिष्य ज्यों सुभग सिख ॥

संग्राम भूमि ज्यों सुभट पिष्य । गुरु विद्यवंत ज्यों पाय सिष्य ॥ ४९ ॥

घत्तार घत्त ज्यों इष्य चोट । दातार पाइ जाचिक्क टोट ।

पंडित पाइ ज्यों गुनियग्राह । व्यापार पाइ ज्यों साह लाह ॥ ५० ॥

परि वित्त पेषि ज्यों षेल ज्वारि । छल छैल पाइ लंपट नारि ॥

आनंद सु यों प्रथिराज पाइ । फुल्ल्यौ सु अंग अंगह न माइ ॥ ५१ ॥

बज्जे अनंत बज्जहि अनंद । दिय दान विदुष दुज भट्ट वंद ॥

दिन दिन नरिंद तन दसा बट्टि । चढंत दीह जो दसा चट्टि ॥ ५२ ॥ ३५ ॥

स्वप्नफल सुन कर पृथ्वीराज की सर्वस्व वृद्धि कैसे होने लगी ॥

कावित्त ॥ चढत नदी जिम मेह, नेह नवला जुवनागम ।

सिद्धदाह दिन चढत, सु गुरु सिष्यक विद्या क्रम ॥

सस्त्र ओप ज्यों भरनि, लच्छि व्यापारह बढत ।

बढत भट्ट गज वंस, बेलि द्रुम सीसह चढत ॥

जिस सरद रयनि सुद पष्य तिथि, बढत कला ससि तस गमत ।

चहुआन सूर सोमेस सुअ, इम सुदसा दिन दिन जमत ॥ ५३ ॥ ३६ ॥

कावित्त ॥ बढत पटन उमराव, बढत साहन तुरियन दल ।

बढत भंडारन दाम, बढत कोठार अन्नवल ॥

३४ पाठान्तर—अवनिय ॥

३५ पाठान्तर—राय । दरीयाव । पाय । मुष । पाइ । विन्द । पयि । सील । पिपि । विद्या-
वंत । सिपि । इषि । जाचिग । पंडित । गुनयग्राह । लंपट । पाय । माय । दान । चढंत । दसा । चट्टि ॥

३६ पाठान्तर—लछ । बढत । चहुआन ॥

जमदर षानान वस्त्र, बढत दानन दिन ही दिन ।
 हड्ड मंस तरवारि, बढत सस्त्रन्न षिन हि षिन ॥
 वढंत कित्ति दिन दिन अमल, प्रथीराज सोमेस सुअ ।
 दस दिसा जोति दिन दिन बढत, महा निसा षह जानि धुअ ॥
 कं० ॥ ५४ ॥ ह० ॥ ३७ ॥

पृथ्वीराज का अजित अवतार होना ॥

कवित्त ॥ सहारि गहंमह सूर, नूर नवलन नवला मुष ।
 चार वरन चिर आव, गेह बिलसंत महा सुष ॥
 पदत मैवासन धाह, दाह दिज्जन दुज्जन घर ।
 अडटनि उटत सुदंड, थप्पि थिर करत अप्प वर ॥
 चिंहु चक्क हक्क धर थर हरत, पिसुन पिंजि किज्जय नरम ।
 अवतार अजित दानव मनुष, उपजि सूर सोमह करम ॥
 कं० ॥ ५५ ॥ ह० ॥ ३८ ॥

लोहाना का गौख में से कूदना और अजानवाह नाम और जागीर पाना ॥

कवित्त ॥ षोडस गज उरड्ड, राज ऊभौ गवष्य तस ।
 संभू समय चीतार, पच कीनो पेसकस ॥
 देषत संभरीनाथ, हथ्य कूटन हथ सारक ॥
 तीर कि गोरि विकुट्टि, तुट्टि असमान की तारक ॥
 अधवीच नीच परते पच्छि, लोहाने लीनो भरपि ।
 नट कला षेलि जनु फेरि उठि, आनि हथ्य पिथ्यह अरपि ॥
 कं० ॥ ५६ ॥ ह० ॥ ३९ ॥*

३७ पाठान्तर-भंडारन । दाम । तरवार । वढंत ॥

३८ पाठान्तर-सहारि । स्यारि । दुज्जन । अडटन । दटत । थपि । अप । चिंहु । चक ।
 हक । किज्जय ॥

३९ पाठान्तर-गवष । चित्रकार । हथ । असमान । आनि ॥

* ये ३९ । ४० दो रूपक सं० १६४७ की पुरानी पुस्तक में नहीं हैं और इधर की सं० १८५९ में हैं ॥

गाथा ॥ हरषि राज प्रथिराजं, कीन सूर सामंतं ।

बगसि ग्राम गजवाजं, अजानंवाह दीनयं नामं ॥ छं० ॥ ५७ ॥ छ० ॥ ४० ॥*

दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार ॥

दूहा ॥ सुपन सुफल दिल्ली कथा, कही चंदवरदाय ।

अब अग्ने करि उच्चरौं, पिथ्य अकूर गुन चाय ॥ छं० ॥ ५८ ॥ छ० ॥ ४१ ॥

इति श्रीकविचंद्रविरचिते पृथ्वीराजरासके

दिल्ली किल्ली कथा वर्णन नाम तृतीय

प्रस्ताव संपूर्णम् ॥



४० पाठान्तर—यांम । वाज । अजांनं ॥

४१ पाठान्तर—दिल्लीय । वरदाय । अग्ने । उचरो । पिथ । अकूर । गुनवार ॥

उपसंहारणी टिप्पण ।

जो कुछ हमने प्रथम और द्वितीय समय की टिप्पणी और उपसंहारणी टिप्पण में कहा है वह हमारे पाठकों के ध्यान में होगा और जो अब निवेदन किया जाता है वह भी उसी के साथ सदैव स्मरण में रहेगा । क्योंकि वह सब इस महाकाव्य के विषयक अनेक वाद विवादों के विचार और निर्णय करने के समय बहुत ही उपयोगी होगा ॥

अब इस तीसरे समय—दिल्ली किल्ली कथा—का मूल लेख हमारे पाठकों की सेवा में उपस्थित है । और जो कुछ उन्होंने अब तक इस महाकाव्य के नाम से अनेक दंत कथा और वृत्तान्त पुस्तकादि में पढ़े और सुने हैं वे भी उन्हें ज्ञात हैं । अत एव अब यह एक बहुतही अच्छा अवसर है कि हम उन दोनों का मिलान कर के देखें कि क्या आज कल के ग्रन्थकर्त्ताओं ने भी अपने लिखे वृत्तान्त ठीक ठीक इस महाकाव्य के वृत्तान्त के अनुकूल ही लिखे हैं, अथवा उनको बदल कर उनमें कुछ और अपनी मनमानी गठन्त भी करी है? यदि उनमें परिवर्तन किया गया है तो क्या उनका ऐसा करना ठीक है? मूल में मिला हुआ अगला त्रैपकांश तो अब निश्चित होना कैसा कठिन हो रहा है, तिस पर भी क्या आधुनिक ग्रन्थकर्त्ताओं का मूल से विरुद्ध कथन करना मानो नवीन त्रैपक मिलाना नहीं हो सकता है? आश्चर्य यह है कि आज कल के ग्रन्थकर्त्ता प्रतिज्ञा तो पृथ्वीराजरासो वा कवि चंद्र के कथनानुसार अपने कथन करने की करते हैं और जब उनकी ऐसे मूल से मिलान कर के परीक्षा की जाती है तब उनके वृत्तों में रात्रि दिन का सा अन्तर दीख पड़ता है! इसके केवल दो तीन ही उदाहरण हम यहां पर दिखाते हैं, अन्यो का विचार हमारे पाठक स्वयं कर लेंगे—

(क) हिन्दी गीडर नंबर ५ अर्थात् हिन्दी शिवावली भाग पंचम नामक पुस्तक जो पाठशालाओं में पढाई जाती है और जिससे बालकपन से ही हमारे बालकों के हृदय पर सस्कार होता है उसमें कवि चंद्र के नाम से यह कहा हुआ है—

“चंद्र कवि लिखता है कि तोमर वंश के १६ वे राजा अनंगपाल ने पृथ्वीराज के जन्म के उत्सव के लिये व्यास नामक एक ब्राह्मण से मुहूर्त्त पूछा । ब्राह्मण ने कुछ सोच कर उत्तर दिया कि यही शुभ समय है, इस कीली को गाड़िये और यह शेषनाग के सिर में जा लगेगी और फिर तुम्हारा राज्य अचल हो जायगा । यह कह कीली को धरती में गाड़दी । परंतु राजा को विश्वास न हुआ । निदान उसने उम कीली को निकलवा डाला तो निकालने पर लोह से भरी मिली । तब ब्राह्मण ने राजा से कहा कि तुम्हारा राज्य कीली के समान अस्थिर हो जायगा और तोमर वंश के बाद चौहान वंश के राजा राज्य करेंगे और उनके बाद मुसलमानों का राज्य होगा । राजा ने क्रुद्ध होकर उस ब्राह्मण को देश से निकाल दिया परंतु वह अज्ञमेर में चला गया जहां कि उसका मान अधिक हुआ ॥ ”

(देखो हिन्दी शिवावली पत्रक भाग पृष्ठ ४१) ॥

(ख) तथा उसी पुस्तक में शाहजहां के समय में हुए लङ्कराव कवि के लिखे इस वृत्तान्त को भी पढ़िये—

“व्यास ब्राह्मण ने तोमर वंश के प्रमर राजा अनंगपाल को एक पच्चीस अंगुल लंबी कीली दी और उसने कहा कि इसको धरती में गाड़िये । शुभ संवत् ९९२ अथवा इसवी सन् ७३५ में वैशाख बदी त्रयोदशी को राजा ने इस कीली को पृथिवी में गाड़ दिया । तब व्यास ने राजा से कहा कि अब तुम्हारा राज्य चल हो गया क्योंकि यह कीली शेषनाग के माथे में गड़ी है । जब ब्राह्मण चला गया तब राजा ने उस की बात का विश्वास न कर कीली को उखाड़ देखा तो उस को लोहू से भरी पाया । राजा ने भयभीत हो उस ब्राह्मण को फिर बुलवाया और कीली को फिर गाड़ने की आज्ञा दी । परंतु कीली उचीस ही अंगुल पृथिवी में धसी और ठीली रही । तब ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारा राज्य इस कीली के सदृश अस्थिर रहेगा । और उचीसवीं पीढ़ी के बाद चौहानों के हाथ जायगा । और उनके बाद मुसलमान राज्य करेंगे ” ॥

(देखो हिन्दी शिवावली-पंचम भाग पृष्ठ ४१) ॥

तदनन्तर “पृथ्वीराज चरित्र” नामक पुस्तक को पढ़िये । उस के कर्ता ने भूमिका में हम को यह कह कर उसके लेख की परम प्रामाणिकता का विश्वास कराया है—

“प्रगट है कि पृथ्वीराज रासो नाम का पुस्तक भारतवर्ष के इस प्रान्त (राजपूताना) में अति ही प्रसिद्ध है और प्रत्येक क्षत्री व चारण भाट इस के लिये निर्विवाद ऐसा मानते चले आये हैं कि दिल्ली के अंतिम महाराजाधिराज पृथ्वीराज चौहान के प्रधान कवि व मित्र चन्द्र वरदाई ने इस पुस्तक को बनाया है । ”

“मैंने चाहा कि इस प्रसिद्ध पुस्तक का, जो छन्दबद्ध है, सरल साधुभाषा में कथारूप से सारांश लिख कर इसके सत्यासत्य विषय में जो कुछ प्रमाण मिल सकें वे भूमिका में लिख दूं” ॥

“तथापि ऐतिहासिक विषय में मूल पुस्तक के विरुद्ध कुछ भी नहीं लिखा गया है । ”

मैंने जो यह आशय गद्य में किया वह उदयपुर राज्य के विकटोरिया हाल के पुस्तकालय में रासो की एक लिखित पुस्तक से लिया है । ’

और अपनी इस प्रतिज्ञा के अनुसार उसने इस महाकाव्य के मूल पद्य का यह गद्य किया है—

“यमुना तट पर हस्तिनापुर नामी नय प्राचीन काल से विख्यात है जहां पांडववंशी राजा अनंगपाल तंवर राज्य करता था । राजा की सुनीति और धर्माचरण से सर्व प्रजा सुखी और राज्यकार्य आनन्द पूर्वक चलता था । इस राजा ने अपने भुज बल से कई भूपालों का गर्व गंजन कर अपनी प्रभुता के सूर्य का प्रकाश दूर दूर तक फैला दिया था सहस्रों सामन्त देश देशान्तर से आकर इस की सेवा करते थे । राजा के दो कन्या थीं बड़ी का नाम सुरसुन्दरी और छोटी का नाम कमला । सुरसुन्दरी का विवाह कन्नौज के राठोड़ राजा विजयपाल से हुआ था और कमला जो रूप में रति को भी लज्जित करती थी अपनी बालक्रीडा से माता पिता के हृदय को हुलसाती हुई शुक्लपत्र की चन्द्रकला के तुल्य सुन्दरता सुघड़ाई और यौवन में वृद्धि को प्राप्त होती थी ॥

एक दिन राजा अनंगपाल अपने सुभट सामन्तों सहित हस्तिनापुर से कुछ दूर आखेट के वास्त वन में गया । अपनी हिनहिनाहट से वज्र के तुल्य हृदय को भी कपाने और टापों के प्रताप से शेष के सीस तक धरा को धुजाने का अभिमान रखने वाले चंचल तुरंगो पर कई ब्राह्मण क्षत्री शिकारी पोशाक पहने नेत्रे हाथ में लिये चलते थे, काली रात्रि के तुल्य कई मद्योन्मत्त हस्त्रियों के भुंड साथ थे जिन के [गंडस्यल में से भरनेवाले सुगन्धित मद्य के पान करने

को आये हुए भ्रमरों का गुंजार शब्द ऐसा प्रतीत होता था कि मानो कई बन्दीजन मधुर बाणी में महाराज का यश गाते हों। रेशमी डोरियों से बन्धे हुए कई कुत्ते अपने रक्तको को ताने लिये जाते थे मानो सूअर सामर कुरग आदि पशुओं का गध पाकर उनके रुधिर से अपनी पिपासा बुझाने का आतुर हो रहे हों। पायदलों के ठट्टे ने चारों ओर बिखर कर बन को घेर लिया और भेरी नफीरी आदि कई वाजित्र बजा कर पशुओं को डराने और उनका स्थान छुड़ाने लगे। राजा और उसके साथी सामंतों ने सेल सभाले सूअरों के पीछे छोड़े छोड़े और बात को बात में कई बड़े बड़े वराहों को भूमि पर गिरा दिया। बन में चारों ओर धूम मच रही थी बिचारे पशु प्राण भय से इधर उधर भागते फिरते थे कि कज कली को प्रफुल्लित करने वाले सूर्यदेव ने मिर पर आकर मानो इम हिंसा से शिकारियों को निवारण करने के लिये क्रोध दृष्टि धारण की हो, प्रचंड ताप से पृथ्वी को तपा दिया सूर सामन्त व सिपाहियों ने जहा जहां वृक्षों की साया देख कमर खोनी और जलपानादि करके श्रम दूर करने को लगे, राजा भी एक बट वृक्ष की मघन साया में बैठा हुआ था कि अचानक उसकी दृष्टि बन में एक स्थान पर पड़ी तो क्या देखता है कि झाड़ी की ओट में एक अज्ञात अपने दो बच्चों को लिये बैठी है उधर से एक भेड़िया आकर बच्चों पर लपका चाहता था कि दोनों को उठा कर ले जावे इतने में माता ने सचेत हो भेड़िये से युद्ध करना आरंभ किया और भेड़िये को भगा कर बच्चों को बचा लिया। यह कौतुक देख राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उस स्थान पर कुछ चिन्ह कर दिया कि भूल न जावे। जब अपनी राजधानी को लौटा तो दिन भर के परित्यग से थका हुआ भोजनोत्तर वह शयन एह में आकर निद्रा निमग्न हुआ। पभात् होते ही गुरु व्यास देव के आश्रम पर जा हाथ जोड़ कर श्रुति से वह बन का चरित्र बर्णन किया। व्यास देव कुछ काल तक समाधिस्थ हो बोले कि राजन्! वह भूमि महा पवित्र और बीर है यदि वहा गठ बनाया जावे तो उस गठ का स्वामी सर्व भूमिदल के अधिपतियों का सर्दार होवे। राजा ने निवेदन किया कि महाराज मैं वहा एक नय बसा कर गठ बनाऊंगा व्यास देव बोले कि आज तिथि, नक्षत्र वार योगादि सर्व शुभ हैं अत एवा हथ लोहे की कीली मंगवाओ कि वहा गाड़ दी जावे। आज्ञानुसार कीली मंगवाई गई व्यास राजा सहित उसी स्थान पर गये और मंत्र पठ कर कीली वहा गाड़ दी जहां बकरी ने एक को भगाया था। फिर राजा से कहा कि यहीं गठ की नींव दिलावना। इस कीली को निकालने का माहस मत करना यह कीली शेषनाग के सिर में जाकर बैठ गई है सो जय तक यह अचल है तुम्हारा राज्य भी अचल रहेगा। व्यास के मुख से यह सुन कर कि "यह किल्ली शेष के सिर में ल बैठी है" राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और कहने लगा कि महाराज! इतनी सी किल्ली शेष के सिर तक कैसे पहुंच सकती है? एक दिन कुतूहल घस राजा ने अपनी शक्ति निवारण करने को धिना विचारे उस कीली को निकलवा लिया। कील के निकलते ही भीतर से रुधिर की धारा छूटी और कील का मुख भी रुधिर से भागा हुआ देखा। राजा को बड़ा परवाताप हुआ कि मैंने केशल अपने सशयुक्त वित्त का सन्तोष करने के निमित्त उस महर्षि की आज्ञा उल्लंघन की और अपने को महा हानि पहुंचवाई। फिर उस स्थान पर एक नय बनाया क्योंकि उस किल्ली को राजा ने कीली कर दी थी अत एव उस नय का नाम भी किल्ली ही रहा तो वर्तमान काल में किल्ली करके प्रसिद्ध है। राजा को आज्ञा से वहा बड़े २ महल बने और शिवाग्र

(पृथ्वीराज चरित्र पृष्ठ ३८-३९)

निदान इन तीनों वृत्तान्तों का जिस चंद्र कवि के नाम के ओट से ग्रन्थकर्ताओं ने लिखा है उनको उसी कवि के मूल पद्य से मिलाने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि उन्हें ने (ग्रन्थकर्ता) इस दिल्ली किल्ली कथा के मूल पद्य को भले प्रकार पढ़े और समझे बिना जैसा जिसके ध्यान में केवल दत्त कथाओं पर से आशय आया वह अपने अपने ग्रन्थों में लिख लिया है । इनको मूल पद्य से मिलाने पर वृत्ती में यह बड़े बड़े अंतर स्पष्ट देख पड़ते हैं—

हिन्दी शिक्षावली के कथन में ॥

१ चंद्र का मूल पद्य चाहे शुद्ध वा अशुद्ध वा जाली कैसा ही क्यों न हो परन्तु उस के अनुसार वृत्तान्त लिखने की प्रतिज्ञा करने वाले को उसके बिरुद्ध कुछ भी नहीं लिखना चाहिये उपन्यास और नाटकादि लिखने के भी नियम हैं । ऐसा कदापि नहीं होसकता कि जहा से मूल कथा ग्रहण करी हो उस लेख के वृत्ती को ऐसे बदल देना कि उनमें रात्रि दिन का सा अंतर पड़जाय । देखो चंद्र ने अपने मूल पद्य में दो दिल्ली किल्ली कथा वर्णन करी है । एक तो कलहन वा कल्हन वा किल्हन राजा के समय की और दूसरी राजा अनंगपाल के समय की । परंतु इन ग्रन्थकर्ताओं ने दोनों के वृत्ती को घेल घेल करके एक ही कथा कर दी है । क्या मूल पद्य को पढ़ और समझ कर लिखने वाला ऐसी भूल कर सकता है ?

२ चंद्र ने मूल पद्य में कहीं नहीं कहा है कि राजा अनंगपाल तोमर वंश में सोलहवा राजा हुआ था ।

३ और उसने यह भी नहीं कहा है कि अनंगपाल ने पृथ्वीराज के जन्म उत्सव के लिये व्यास नामक ब्राह्मण से किल्ली गाड़ने का मुहूर्त्त पूछा था ॥

४ और न यह कहीं मूल में कहा है कि भविष्य कहने पर राजा ने अप्रमत्त होकर व्यास को निकाल दिया और वह अजमेर चला गया जहा कि उसका अधिक मान हुआ ॥

खड्गराय के कथन में ॥

५ व्यास का राजा को पच्चीस अगुल कोली देना मूल पद्य में वर्णन नहीं किया हुआ है । किन्तु जो किल्ली कलहन के समय में गड़ी उसका कुछ परिमाण नहीं लिखा है और जो अनंगपाल के समय में गड़ी थी उसका रूपक १२ में साठ सु अगुर जोहय किल्लिय साठ ६० अगुल का परिमाण लिखा है ॥

६ कोली गाड़ने का सवत् ७८२ वैशाख बदी १३ मूल पद्य में कहीं नहीं कहा है ॥

७ कोली को उखाड़ने पीछे फिर उसका गाड़ना और केवल उन्नीस ही अगुल पृथ्वी में धसना कहीं भी मूल पद्य में नहीं कहा हुआ है ॥

८ व्यास का अनंगपाल को कहना कि तुमारी उन्नीस पीछी पीछे राज्य चौहानो के हाथ में जायगा मूल पद्य में कहीं नहीं वर्णन किया हुआ है ॥

पृथ्वीराज चरित्र के कथन में ॥

९ हस्तिनापुर का नाम तक मूल पद्य में नहीं है और न उसका और अनंगपाल के राज्यशासन की अत्यन्त प्रशंसा उस में चंद्र ने कथन की है ॥

१० एक दिन राजा अनंगपाल का हस्तिनापुर से आखेट के लिये बन में जाना मूल पद्य में बिल्कुल नहीं है । किन्तु रूपक १७ में कलहन राजा का बन क्रीडा करना कहा हुआ है ॥

११ आखेट का सावस्तर वृत्तान्त, जैसा कि वर्णन किया गया है, मूल में नहीं है ॥

१२ राजा अनंगपाल का एक बट वृत्त की सघन साया में बैठना भी मूल में नहीं है ॥

१३ राजा अनंगपाल का एक अजा का एक भेड़िये के साथ युद्ध करना देखना लिखा है उसके स्थान में मूल पद्य के रूपक १७ में कलहन राजा के प्रसंग में "सुसा और स्वान" शब्दों का प्रयोग हुआ है ॥

१४ इस कौतुक की भूमि पर राजा अनंगपाल का चिन्ह कर देना कि भूल न जावे मूल में नहीं है ॥

१५ दूसरे दिन राजा अनंगपाल का गुरु व्यासदेव के आश्रम पर जाना आदि भी मूल में नहीं कहा है ॥

दिल्ली में कुतुबमीनार के पास जो एक लोहे की बड़ी कीली अब तक विद्यमान है उसके विषय में पुरातत्ववेत्ता विद्वानों में मत भेद है । तबरो की ख्यातिओं में कलहन, कलिहन, कल्हन और किल्हन का चंद्र भां नामान्तर मिलता है । तथा कलहनादि नामान्तरों की चंद्रवाचक व्युत्पत्ति हो सकती है । अत एव अनुमान होता है कि कीली पर जो नीचे लिखे श्लोक खुदे हुए हैं और उनमें जिस राजा चंद्र का नाम है वह यही राजा कलहन उपनाम चंद्र होगा—

यस्योदृत्तयतः प्रतीपमुदधेः शत्रुन् समेत्यागतान् ।

वद्गुण्वाहवर्षासिनोविलिखिता खड्गेन कीर्तिर्भुजे ॥

तीर्त्वा सप्तमुखानि येन समरे सिन्धोर्जिता बाल्हिका ।

यस्याद्याप्यधिवास्यते जलनिधि वीर्यानिर्द्वेषिणः ॥ १ ॥

विवस्यत्र विसृज्य गा नरपतेर्गामाश्रितस्येतराम् ।

मूर्त्या कर्मचितावनिं गतवतः कीर्त्या स्थितस्य चितौ ॥

शान्तस्यैव महावने हुतभुजे यस्य प्रतापो महान् ।

नाद्याप्युत्सृजति प्रणाशितरिपोर्यत्रस्य लेशः चितौ ॥ ३ ॥

प्राप्तेन स्वभुजार्जितञ्च सुचिरं चैकाधिराज्यं चितौ ।

चद्राहून समयचद्रसदृशी वक्तुश्रियं विभ्रता ।

तेनाय प्रणिधाय भूमिपतिना भावेन विष्णौ मतिम् ।

प्राशुर्विष्णुपदे गिरौ भगवतो विष्णोर्ध्वजस्यापितः ॥

इस कीली के परिमाण के विषय में इलाहाबाद लिटरेरी इन्स्टीट्यूट की बनाई हुई हिन्दी रोडर नम्बर ५ अर्थात् हिन्दी शिवावली भाग पंचम में जो सन् १८९७ ई० में पावनी वार ५पी है, यह लिखा है—

इसी लाट के पास एक बड़ी लोहे की कीली नग भग १६ इञ्च मोटी धरती में गड़ी हुई है । परन्तु से ऊपर इस कीली को ऊचाई २२ फुट है और कनिगहम साहब लिखते हैं कि यह निश्चय नहीं हुआ कि यह कीली पृथिवी के नीचे कितनी दूर तक गई है । एक बार २६ फुट तक परती खोदा गई था परन्तु कीली का जड़ का पता न लगा ।

सो अशुद्ध है । मालूम होता है कि ग्रन्थकर्त्ता ने जनरैल कनिंघम साहब की सन् १८७१ की रिपोर्ट पुस्तक १ पृष्ठ १६९ हो पढ़ कर यह वृत्तान्त लिख दिया कि जिस को अब तक अनेक बालक पढ़ कर मिथ्याज्ञान उपार्जन करते चले आते हैं । यह तहकीकात पीछे के अन्वयण से गढ़ हो गई है कि जिसका वृत्तान्त उक्त जनरैल साहब की रिपोर्ट पुस्तक ४ पृष्ठ २८ में लिखा है पिछली तहकीकात के अनुसार इस कीली की ऊंचाई धरती से ऊपर २२ फुट और धरती के नीचे केवल बीस इंच और कुल लंबाई २३ फुट ८ इंच निश्चित हुई है । उक्त सभा जो अपनी पुस्तक में इस भूल को सुधार दे तो अत्युत्तम है ॥

इति ।



अथ लोहानो अज्ञान बाहु समय लिख्यते ।

(चौथा समय)

पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को बत्तीस हाथ
जुंघी गोष से कूदने की उल्लेजना देना ॥

कवित्त ॥ इक्क समय प्रिथिराज । राज ठट्टा सामंतह ।

इथ बत्तीस इक गोष । चित्रसारी कच्चवत्तह ॥

घटिय सेष दिन रह्यौ । सबै भर भीर गहम्मह ।

नयनाथ नागौर । पहराजंत इन्द्र पद ॥

उच्चारय वत्त इमि मत्ति करि । सोइ जोधा पब्बह जिसे ।

मै भित्त चित्त मै भित भरै । इह सुथान कुहै इसौ ॥ कं० ॥ १ ॥ छ० ॥ १ ॥

लोहाना का कूदना ॥

कवित्त ॥ दुचित चित्त सामंत । चाहि लग्गिय टगटग्गिय ।

चित्र जानि पुत्तरिय । नयन जुब्बै पग मग्गिय ॥

रज्जि मत्ति नादान । कंन्ह उच्चरिय वत्त इह ।

चामुंडा जैतंसि । रोस आकस्स कियौ वच ॥

ठट्टौ सु इक्क लोहान भर । कहर कवुत्तर कुह्यौ ।

जो नेक चूकि ऐहो गिख्यौ । साष अंव हू च्छय्यौ ॥ कं० ॥ २ ॥ छ० ॥ २ ॥

यह समय हमारे पास की संवत् १६४० की लिखित पुस्तक में नहीं है किन्तु उसके
द्वारा की लिखी यह पुस्तक में मिलता है । तथा इस कथा का सदर्भ तीसरे समय के रूपक २८
"पोडम गज ऊरट्टु"-से लगाकर अभिप्राय समझने से ध्यान में आयेगा कि एक दिन राजा
पृथ्वीराज सायकाल के समय सोलह गज वा बत्तीस हाथ ऊंची चित्रसारी की गोष में सामन्तों
सहित पडे थे और एक चित्रकार ने एक पत्र अर्थात् चित्र पेश किया उसको संभरी नाथ देख
रहे थे कि देखते देखते यह हाथ में से हुट पडा । उसको लोहानो अज्ञान बाहु ने कूद कर
अपबीध में ही भड़प लिया इत्यादि ।

१ पाठान्तर-अज्ञान बाहु । पृथीराज । ठट्टा । ठट्टा । बट्टा । सामंतह । बत्तीस । कूहें ।
भर गहम्मह । वत्त । मत्ति । ज्जोधा । ज्जिसो । भित्त । चित्त । कुह्यै ॥

२ पाठान्तर-मत्ति । वत्त । चामुंडा । जैतसी । आकस्स । चट्टौ । नेकि । चोक । अषो ॥

लोहाने के कूदने की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ इक्क कहै धर जीव ॥ काज पंषिनी भस्पिय ॥
 इक्क कहै सो वन्न ॥ इन्द्र को; पुरपेव नंप्रिय ॥
 इक्क कहै आकास । तास चौ उडियन तहौ ।
 इक्क कहै सुरलोक । तास कोई नर लुहौ ॥
 कविचंद्र कित्ति उप्पम कहै ॥ लोहाना; तौवर सुभर ।
 जाजुखि राइ सुत किइ चित । नाथ्य हुवै दुज्जै सुभर ॥

॥ कं० ॥ ३ ॥ छ० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का दौड कर लोहाना के पास आना और उसे हिये लगाना ॥

अरिख ॥ दौरि राज पृथ्वीराज सु आधे । प्रमाप्रमा अप्प उचायो ।
 और सूर सामंतइ अग्गी ॥ हियरा मभिक्षण परि लग्गी ॥

॥ कं० ॥ ४ ॥ छ० ॥ ४ ॥

उसे आप उठाकर अपने घर ले जाना और इलाज करना ॥

अरिख ॥ अप्प उचाइ अप्प गृह आने । सब तबीब बहुत सनभाने ।

मौज मना मक्ति होइ सुमंगौ । चारि पहर दिवसइ मक्ति चंगौ ॥

॥ कं० ॥ ५ ॥ छ० ॥ ५ ॥

हकीमों का लोहाना को दवा के लिये ले जाना और नवें दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पास आना ॥

दूहा ॥ तब तबीब तसलीम करि, लै घरि आइ लुहान ।

नव दीहे सिर भल्लयो, ढंढोलन गय ठान ॥ कं० ॥ ६ ॥ छ० ॥ ६ ॥

३ पाठान्तर—कहैं । को । कहै । उडियन । कोइ । कहै । तौवर । किट्ट । दुज्जै ॥

४ पाठान्तर—राजा । प्रथीराज । उचायो । मभिक्षण ॥

५ पाठान्तर—आनै । बहुमत । सनै मानै । सुमंगा ॥

६ पाठान्तर—भल्लयो ॥

चंद्र पंचमे अति सुअक, दिण विप्र बहु टान ।

तिथि तेरस रविवार दिन, पय लगौ चौवान ॥ कं० ॥ ७ ॥ हू० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहाना को ग्वालियर, रणथम्भौर,
उड़छा आदि पांच हजार गांव देना ॥

कवित्त ॥ पय लगगत चहुवान । मौज ग्वाजेर सुदिनौ ।

रिनथभह ऊड़छे । कहर सूरब्बर किनौ ॥

लोहाना आजान (बाह) * नाम थप्यै बहु अप्यै ।

सहस्र पंच दिय ग्राम । जैत कविचंद्र सुजप्यै ॥

तिहि घरिय मभिक यह अप्यै ॥ जै पहा सीसह धरिय ।

रक्खी सुवत्त दिन तीन मंह । षग मग अप्यै घरिय ॥

॥ कं० ॥ ८ ॥ हू० ॥ ८ ॥

आजानुवाहु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि देना ॥

दूहा ॥ पूनस तिथि अंगल दिनह, गृह तेरिय आजान ।

आसन कंडि तु अप्य दिय, बहु आदर सनमान ॥

॥ कं० ॥ ९ ॥ हू० ॥ ९ ॥

कंद पद्धरी ॥ नव दून अप्य मदभर गयंद । कज्जल सकेट उज्जल अनंद ॥

सै पंच दिन वाली पवंग । गो अप्य सैक (वान) * ग्रहता कुरंग ॥

॥ कं० ॥ १० ॥

सै पंच दिन अति उंट अच्छ । कत्तार भार पक्कार कच्छ ॥

दोइ सै दिन दासी सुचंग । भलकंत तान द्रप्यन सुअंग ॥ कं० ॥ ११ ॥

७ पाठान्तर—पंचमौ । दिथे । तेरसि । लगौ । चहुवान ॥

८ पाठान्तर—तगात । चहुवान । दिनौ । रिनथिंभह । उड़छा । सूरवर । किनो । * अधिक पाठ है । थप्ये । अप्य । जप्ये । जै । रपी मखत दिन तीन पर ॥

९ पाठान्तर—पुनिम ॥

१० पाठान्तर—बनहु । सै । * अधिक पाठ है । दिन । अच्छ । कछ । सै नये । मरस । गने । अस । मुषि । वानडराय । सुम्कि । मख्य । सुनीर । जौहर । मुरत । यहि । डारे ॥

* पाठ उपस्थित पुस्तको में नहीं है ॥

सिरपाउ भाउ नष्ये भरस्त । को गने द्रव्य भंडार अस्त ॥
 सामंत सूर मुख नूर नय्य । * * * ॥ कं० ॥ १२ ॥
 अब्बूसराइ जामानि जइ । चामंडराइ मन मुक्कि मइ ॥
 गोयंठ राइ धीवी प्रसंग । उर लुगि अगि नह मुप्य अंग ॥ कं० ॥ १३ ॥
 नष्यंत सूर सामंत और । खरगोस लहै पै कीस दौर ॥
 ऐ सरस सब्ब सामंत सूर । तिन चै नाम आजान नूर ॥ कं० ॥ १४ ॥
 जुगिन पुरेस कजि अपि जीव । एती सबत चथ्ये सुदीव ॥
 सिर पटा काप लोहान होइ । लुगो मुसरह सब पाइ लोइ ॥ कं० ॥ १५ ॥
 कपूर चीर खागर सुनीर । सह धन्न धान जौधर सुधीर ॥
 फुल्ले न अरगजा बहु सुगंध । कोठार भार उगह सुबंध ॥ कं० ॥ १६ ॥
 कामंतु अपि ऐसे सुकित्त । परधान मान करि मानमत्त ॥
 रत्तौ सुखामि धम्मह सुखब्ब । अदि चले स्वामि डारै सुतब्ब ॥
 कं० ॥ १७ ॥ कृ० ॥ १० ॥

लोहाना के वीरत्व का वर्णन ॥

गाथा ॥ लोहाना आजानं । लानं पथ भीम जुधानं ॥
 आ आरुप सहपं । बंकां भरं पद्धरं करनं ॥ कं० ॥ १८ ॥ कृ० ॥ ११ ॥
 दूहा ॥ लोहाना तैंधर अभंग, मुद्धर सब्ब सामंत ।
 साईं काज सुधारना, ठंडोलन गय दंत ॥ कं० ॥ १९ ॥ कृ० ॥ १२ ॥

लोहाना का पांच हजार सेना लेकर औड़छा के राजा

जसवन्त पर चढ़ाई करना ॥

कवित्त ॥ उंडछा अरि थान, कच्छ ईहां धर रनौ ।
 नाम तास जसवंत, पग राजन धर रत्तौ ॥
 लोहाना अनवीह, नीय भारत समथ्यै ।
 साज्ज सेन सामंत, कलह रष्यन जस कथ्यै ॥

हजार पंच सेना समथ, करि जुहार भर चह्लयो ।
भलचलि गसत सायरत दिन, छाक मेर गिर हह्लयो ॥

ॐ० ॥ २० ॥ ६० ॥ १३ ॥

ओड़छा पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन ॥

गीता मालती ॥ सजि चह्लो तामं युद्ध धामं केन कामं पूरयं ।
घन घोष घटा समुद्र फटा इम उलहा सूरयं ॥ २१ ॥
धुंधरिग भानं पुरेसानं हेम जानं चह्लयं ।
कनवज्ज थानं परि भगानं सूरतानं सल्लय ॥ २२ ॥
आजानुवाहं परे थाहं गज्ज गाहं घुम्नरे ।
चह चहे महं गज्ज सहं घटा महं उप्परे ॥ २३ ॥
नारह वक्कं सूर हक्कं लेयन्न लंकं जुद्धरे ।
ऊड़छा उप्परि कंठला करि षराभष्परि अष्परे ॥

ॐ० ॥ २४ ॥ ६० ॥ १४ ॥

ओड़छा के राजा जसवन्त का सामना करने के लिये प्रस्तुत होना ॥

१३ ॥ सुनी धाह जसवंत नृप, आयो सेन सुसज्जि ।
ठलकि ठाल वदल मिलिय, पुव्व भङ्गाउ अवज्जि ॥

ॐ० ॥ २५ ॥ ६० ॥ १५ ॥

लड़ाई होना और लोहाना का जीतना ॥

१४ ॥ दिराज ॥ बजे सिंधु नहं । करी सुक्कि महं ॥
हक्कं सूर वज्जे । मनें मेघ गज्जे ॥ २६ ॥
कुटे अग्ग वाजी । अजे सार भाजी ॥
मचे गोम धोमं । मनें राह सोमं ॥ २७ ॥
लिये हथ्य वथ्यं । मनें जुद्ध पथ्यं ॥
धरे धीर धारी । बके मार मारी ॥ २८ ॥

१३ पाठान्तर—उड़छा । घान । कछ । इहा पगा । सजि गमत ॥

१४ पाठान्तर—पुरेसान । सलयं घुम्नरे । क । लेयन । उड़छा । कवला ॥

१५ पाठान्तर—बव । पुव्व । भङ्गाउ ॥

ग्रहे सीस ईसं । करा रंत हीसं ॥

जुटंतं मरहं । मचे एम कदं ॥ २९ ॥

लरै यो लुहानं । अभंगं जुवानं ॥

जसव्वंत जोरं । चच्चककेति धोरं ॥ ३० ॥

गमेते गमानं । गण अग्ग थानं ॥ छं० ॥ ३१ ॥ छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ घेचर भूचर जलचरह, सूर गण सुर यान ।

जुद्ध जुरे जसवंतसी, रन जित्यो लोहान ॥ छं० ॥ ३२ ॥ छं० ॥ १७ ॥

लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना ॥

कवित्त ॥ सहस्र उभय लोहान, सुमट परि घेतह मज्जे ।

सार धार परहार, उभय गजराज विभज्जे ॥*

सय सत्तह हय घेत, नेत बह रिन जित्यौ ।

षट् सहस्र (अरि) † पवंग, कवी चंदह कहि कित्यौ ॥

परि लुथ्य कोस मुर दून प्रति, धर लिनी गढ़ भंजिये ।

करि जेव वयठो गढु परि, इक्क यानि मन रंजियौ ॥

छं० ॥ ३३ ॥ छं० ॥ १८ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराजरासके लोहाना राजा-
नवाहु समय नाम चतुर्थ प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४ ॥



१६ पाठान्तर—भनौ । अग्गि । मनौ । हय । मनौ । राम । मचै । लरै । यौ ।

१७ पाठान्तर—थलचरह । सुर । जसवंतसा ॥

१८ पाठान्तर—लुहान मजे । * यह पाठ संवत् १८५८ की लिखित पुस्तक में नहीं है ॥

† यह अधिक पाठ है । कितौ । लिनी । भंजियो । वयठो । रंजियो । लेहान ॥

अथ कन्हपट्टी* समय लिख्यते ॥

(पांचवां समय)

पृथ्वराज के भोरा भीमंग से वैर होने का कारण ॥

दूहा † ॥ सुकी कहै सुक संभरौ, कहौ कथा प्रति प्रान । ‡

पृथु भोरा भीमंग पडु, किम हुअ वैर विनान ॥ कं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

१ पाठान्तर-शुक । कहैं । सम्भरौ । कहौ । पांन । पान । प्रथु प्रियु । वीर ॥

* कन्ह पृथ्वीराजजी का चाचा अर्थात् काका था । वह सदा अस्त्रों के पट्टी क्यों बांधे रहता था इसका पर्याय इसमें होने से इसका "कन्हपट्टी समय" नाम हुआ है ।

इस समय में गुजरात के दूसरे चालुक्य राजा भोला भीम का नाम और उससे पृथ्वीराज के वैर होने की कथा प्रथम की आई है । और इसमें कहीं भी यह नहीं कहा हुआ है कि सोमेश्वरजी का भीम ने मार डाला था और उसका वैर लेने को पृथ्वीराजजी ने उस पर चढाई करके उसे मार डाला था । जिन लोगों के हृदय में यह रासो काटा सा सतता है उनके ही मानने के अनुसार भीम देव दूसरा स. १२३५ ई० ११७८ में गद्दी पर बैठा था और ६३ वर्ष राज्य करके स. १२९८ ई० १२४१ में परलोक को सिधारा । और पृथ्वीराजजी का जन्म स. १२०६ में होकर वे ४३ वर्ष की वय में स. १२४९ में मरे । इस से सिद्ध है स. १२४९ तक तो दोनों राजा निर्विवाद सम्माननीय रहे । अब रहा उनके मारे जाने का हाल तो यहाँ है नहीं । जहाँ वह जावेगा वहाँ हम उसके विषय में भी ऐसी ही सत्यविवेचना करेंगे । अतएव यह समय तो सपक सिद्ध नहीं होता ॥

। एक पाठक की शंका है ' क्या दूहा और दोहा की मात्रा में कुछ भेद है' ? उत्तर- कुछ भेद नहीं है । दूहा पुराना और दोहा नया प्रयोग है । उनमें से दूहा "दु+उह" से बना है अर्थात् जिसमें दो ऊह हो उसे दूहा कहते हैं । और हिन्दी दोहा शब्द संस्कृत दोहा से इस प्रकार बना हुआ जाल जैसा उदाहरण-दु + उ + उ = दु + उ + उ = दु । दु + उहा = दु + उ + उहा = दु + उ + उहा = दोहा = हिन्दी दोहा । पटनावा के प्रचार के समय में इसका उदाहरण या दोहादोहा भी कहते थे । उसका संस्कृत में लक्षण और उदाहरण यह है-

भाः प्रयोदशक यदि पूर्व लघुक विराप । पश्चादेकादशकतु दोहादिका प्रियुजिन ॥

तथा उभया भालत उदाहरण यह है -

भाः दोहादिकेण शुभ हीनयो नाव गो नाल । वृत्तावस्थावसमुज्ज चरिदो कनक रत्नानि ॥

हे भातः । दोहादिकायाट शुक्वा क्वप्य मोशजो हसित्वा जमपि रत्नानि उजिनः शुभ वृत्तावन-
य शुभ उदाहरणस्य निबिडानेमुजे । राई इति उचित् पाठः तन्मतेन राधिकाया दोहादिका
याट शुभ । शुभ शुभ मन्त्रमेव बहुधा मन्ति ॥

यह दो भागों का दोहा है । दोनों पंक्ति ५३ । ५१, ५३ । ४१ पर है । और उसमें ६ ताल के दो दोहा हैं - ४ ४ - ४ ४ - दोहा दोहा नाम से टीका टिप्पणी है ॥

पृथ्वीराज के कुंअरपन का तपतेज वर्णन ॥

कवित्त ॥ कुंअरपन प्रथिराज । तपै तेजह सु मचावर ॥
 सुकल बीजू दिन छुते । कला दिन चढत कलाकर ॥
 मकर आदि संक्रमन । किरन बाँटै किरनाकर ॥
 धीं सोमैस कुंआर । जोति छिन छिन अति आगर ॥
 हय हस्थि हेन संकै न मन । पल पंडन गढ गिरन वर ॥
 चिहु और जोर दसहूं दिसा । कीरति दिस्तरि महिय पर ॥ कं० ॥ २ ॥ ह० ॥ २ ॥

गुजराज के राजा भोरा भीम का तपतेज वर्णन ॥

कवित्त ॥ भोरा भीम भुअंग । तपै गुज्जर धर आगर ॥
 है गै हल पायकक* । धग्गवल तेजह सागर ॥
 काका सारंगदेव । देव जिम तास बड़ादय ।
 तासु-पुत्र परताप । सिंघ सस अत्त सु भाइय ॥
 परतापसोह अरसीह वर । गोकुलदास गोविंद रज ।
 हरलिंछ श्याम भगवानभर । कुल अरेह मुष नीर सज ॥ कं० ॥ ३ ॥ ह० ॥ ३ ॥

उसके काका और चचेरे भाइयों की वीरता का वर्णन ॥

दूहा ॥ जोरावर जुरि जंगमति, भरे बस्थ नम गाज ।
 धुकम स्वामि कुटत सु इल, मनौं तितर पर बाज ॥ कं० ॥ ४ ॥ ह० ॥ ४ ॥
 तिन पर तुट्ट बीज जौं, जिन पर राज अरुट्ट ।
 राजकाज संमुह भिरन, दई न कबहू पुट्ट ॥ कं० ॥ ५ ॥ ह० ॥ ५ ॥

‡ यहां शुक और शुक्री से कविका अभिप्राय चंद और उसकी स्त्री से है । क्योंकि यह मधु महाकाव्य उनके ही सवाद में रचा गया है और आगे भी कई एक समयों में यही प्रयोग आयेगा । चंद प्रायः कवि को कीर की उपमा देता है—“शास असन कवि कीर” ॥

२ पाठान्तर—कुअरपन । कुंअरपन । पृथीराज । * ज्यों ज्यों अधिक पाठ है । जिम । बडे । कुवार । कुंआर । छिन ही छिन । हयि । गिनर । चिहु । विहु । दिशा विसतरि ॥

३ पाठान्तर—गुजर । हय । गय । पाइक । * प्रचंड अधिक पाठ । पायक । सु । सारंगदेव । अडाई । तास । भाई । सिंघ । सिंघ । श्याम । भगवान । सजि ॥

४ पाठान्तर—जग । मय । गाजि । स्वामि । कुटत । मनौं । तीतर ॥

५ पाठान्तर—ज्यों । असट्टं । पिट्ट ॥

गाथा ॥ मारे रान सुरानं । भालासबलं अंगं भालालं ॥

जिन भजे जैमालं । कव्यौ धातराजसि पंचं ॥ कं० ॥ ६ ॥ छ० ॥ ६ ॥

पाट बैठने पर प्रतापसी को गर्व होना ॥

दूहा ॥ सारंग दे सुरलोक गत, भौ प्रतापसी पाट ।

सात आत सेवा करै, तपै तेज थिर थाट ॥ कं० ॥ ७ ॥ छ० ॥ ७ ॥

अद्वसहस दलबल अनंत, बहुत अब्ब वर अप्प ।

सतरि सहस धर गुज्जरनि, मधि आपत जिमकप्प ॥ कं० ॥ ८ ॥ छ० ॥ ८ ॥

स्वामि धम्म रत्ते सुमन, जे ठेलै गजठट ।

ठरै परव्वत जिपर डर, करै सचु दहवट ॥ कं० ॥ ९ ॥ छ० ॥ ९ ॥

प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भीमंग के पास होना ॥

दूहा ॥ भोरा भीम भुआल के, कोई एक मैवास ।

तिन उज्जारत देस कौं, परि पुकार नटप पास ॥ कं० ॥ १० ॥ छ० ॥ १० ॥

गाथा ॥ प्रात समय पूकारं, आई नरिंदं भीम दरवारं ।

करि नीसान सुधावं, चठि राजं साजि आतुरयं ॥ कं० ॥ ११ ॥ छ० ॥ ११ ॥

दूहा ॥ चालुककह गुज्जर धरा, ईस नेति किय भीम ।

भौ उभ्रै तिहु पूर सुवर, को चंपै अरि सीम ॥ कं० ॥ १२ ॥ छ० ॥ १२ ॥

भोरा भीम की लड़ाई ॥

कं० पद्य० ॥ चठि चलन राज आवाज कीन । नीसन नद वज्जे वजीन ॥

चिहु और भरनि कुहे तुरंग । सजि सिलह भाति नाना अभंग ॥ कं० ॥ १३ ॥

६ पाठान्तर—रान । भजे ॥

७ पाठान्तर—सारंगदे । भय । करै ॥

८ पाठान्तर—यव । अप । सतरि । गुज्जरति । उपति ॥

९ पाठान्तर—स्वामि । रत्ते । धंम्प । ठट । ठरव । परवत । जिपर । करता । शत्रु । ठट ॥

१० पाठान्तर—भुआल । स १६४७ की में 'कोई एक' के स्थान में 'धर नाटव' पाठ है ।

उज्जारत । देशको ॥

११ पाठान्तर—पुकार । आई । निसान । निसान । घात्र । साजि ॥

१२ पाठान्तर—किये ॥ यह रूपक स. १६७० की पुस्तक नहीं है किन्तु उसके रघु की लिखित पुस्तका में है ॥

१३ पाठान्तर—नीसान । बजे । चिहु । चिहु । टर । कुट्टेति तुंग । तितुंग । भाति ॥ १३ ॥

धम धमकि धरनि थाने सुभंग । गज्जिय अकास कै गहर गंग ॥
 भय हूह हाक आतंक जौर । सह सुरन फेरि भेरीन घोर ॥ १४ ॥
 उडि रेन सेन मुंदिग अकास । परि रोर खोर जहां तहां मैवास ॥
 धरि रोस मुच्छ मुररंत भीम । रस वीर बक्र संक्रोध हीम ॥ १५ ॥
 चंपी सु सीम आरियन सुजाम । डेरा सुदीन नृप सरित ताम ॥
 जुररा सिक्कार तीतर बटेर । घेलंत सरित तट भइ अवेर ॥ १६ ॥
 इहि समय ताम परतापसीह । उहु बंधु साथ अरसी अवीह ॥
 ए हुते सकल बाहुर ते बेर । नय मभक्त आइ घेलत अवेर ॥ १७ ॥
 गाजराज नाम साहन सिंगार । सरितान मभक्त वह पिथै वार ॥
 सुनि सार दान कुटे छंकार । जनु भूत भांति भय भीत भार ॥ १८ ॥
 जमुना कि जगिग काली करार । सिर धूनि मचावन दिवौ डार ॥
 गज एक वारि, पीवंत दूरि । तिन पर सु तुटि जनुं सिंध चूरि ॥ १९ ॥
 धरि पंष पष जनु धषि धाय । भुज पखौ नभ वदर सुमाय ॥
 दिषि दुग्द उजहि आवंत आन । धुनि करि सु डारि उन पीलवान ॥ २० ॥
 धायै ति समुह साहन सिंगार । जनु बंध जंम उप्पर अपार ॥
 कलपंत पाइ जनु पवन आइ । हल हलो पब्य जित नित विठाइ ॥ २१ ॥
 जम रूप दूअ जनु जंम द्वार । दय आन बीच घेरे असार ॥
 इक ओर वारि द्रह गहर गूल । इक जौर जौर बर उंच कूल ॥ २२ ॥
 परताप सनमुष पखौ जाइ । डारंन अश्व असि कियौ घाइ ॥
 बहि सीस परन दो हथ करार । परबूज जानि विफय्यौ विषार ॥ २३ ॥
 जगनाथ हंडि जनु वंति दोइ । इह भंति कुंभ कुंभो ज होइ ॥
 गज पय्यौ धरनि साहन सिंगार । किन्नो अकाम परताप पार ॥ २४ ॥

थाने । गज्जिय । गग ॥ १४ ॥ रेन । सेन । भिवास । मुंछ । कर्क ॥ १५ ॥ सुजाम । ताम ॥ १६ ॥ *
 इस छंद की चारो तुकें स. १६४७ की पुस्तक में नहीं है । ताम । परतापसिंह । बाहुरत ।
 मभ । अवेरि ॥ १७ ॥ नाम । मिरतान । द्वि । पीवंत । वारि । दान । कुटे । छंकार । भै ॥ १८ ॥
 जगि । डारि । चूर ॥ १९ ॥ पषय । जनुं । धषि । नभ । वदर । किमाय । आनि । पीलवान ॥ २० ॥
 साहन । शंगार । पाय । पषय । बठाइ ॥ २१ ॥ जंमरूप । जंम । और । तौर ॥ २२ ॥ जाय । घाय ।
 बिकस्यौ ॥ २३ ॥ वंटिय कि । दोय । कुभिय । होय । शंगार । सिंगार । कीनौ ॥ २४ ॥ अरसिंह ।
 पुठि । देषि । सनमुष । रुही । गिर । पय । चीरि । हथ ।

अरसीह पुठु जग धर्यौ द्वेष । सनमुष्य क्रम्यौ सम सीह भेष ॥
 गज गही दौरि सिर पगघ सुंड । द्विय गुरज चीर द्वय हृथ्यि मुंड ॥ कं० ॥ २५ ॥
 फय्यौति सीस भइ पंच फारि । गज द्यौ जानि गिरवर विसार ॥
 सुनि वत्त राज भोरा सु भीम । पाथौ अनंत दृष आप हीम ॥ कं० ॥ २६ ॥
 कह वाव कियौ नृप अष्य साम । तुम शो न हर्माह चाकरह काम ॥ कं० ॥ २७ ॥ ह० ॥ १३ ॥

उन सारों भाइयों का चलचित्त होना ॥

दूहा ॥ आ उभय अहंकार करि, हन्यो सुवर गजराज ।
 दोष हर्माह लग्यौ नहीं, आप हि कीन अकाज ॥ कं० ॥ २८ ॥ ह० ॥ १४ ॥

पृथ्वीराज का उन चलचित्त सारों भाइयों को जागीर और शिरोपाव देना ॥

दूहा ॥ सात आत निज वात सुनि, जए अष्य चलचित्त ।
 प्रथीराज सुनि कुंवर नें, आप बुलाये हित्त ॥ कं० ॥ २९ ॥
 द्विये हृथ्य लिषि गाम पट, रहे वास थिर आनि ।
 चालुक चातुर वीर वर, जिन उंपत सुप पाणि ॥ कं० ॥ ३० ॥
 वाजी सन हीने बगसि, संवोधे सत आत ।
 एक एक सिर पाव दिय, बहु आदर किय वात ॥ कं० ॥ ३१ ॥
 गुरु लज्जा गुरु मति गुरु, पन गुरु साष नरेस ।
 गुरु उर सत गुरु सूरतन, गुरु गति मति गुरु भेस ॥ कं० ॥ ३२ ॥ ह० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का दरबार करके बैठना--उसमें प्रतापसी का आना और उसे भूछ भरोड़ने पर कन्ह का मारना ॥

दोहरी दूहा ॥ सक हक सोम कुमार, सम सामंतन मूर सम ।
 सोम सीस भूअ भार, सो बैठे नुम सभा रचि ॥ कं० ॥ ३३ ॥ ह० ॥ १६ ॥

२५ ॥ सुनीम । भय । फार । ने । जानि । विनाल । वत । हीम ॥ २६ ॥ कहवाय । कौया ।
 प्रथ । शाम । साम । सो । सो । न काम ॥ २७ ॥

२८ पाठान्तर-पान । कहारि ॥ यह स- १२०७ की पुस्तक में नहीं है । और भा गच्छ
 वात जा वापक है ॥

२९ पाठान्तर-नेति । भय । अष । उठल । चित्त । कुंवर । बुलाय । तिन ॥ ३० ॥ हय ।
 गाम । भोवत ॥ ३१ ॥ वाज । सपत्त । द्विये । गिरपाव । वर । गुरु । नरे । गुरु । ३२ ॥

३३ पाठान्तर-ने रटा । मने । मने । रक । कुमार । सामंतन । भा । भू । बैठे ॥

कंद मोतीदाम ॥ रची सुभ सोम सभा प्रथिगज । विराजित मेरु जिसे भर साज ॥
 भुजा सम कन्ह रजे चहुवान । तिनै मुकु राजत है मुह पान ॥ ३४ ॥
 जिनै चष चाहि कँपै भर मान । कँपै जनु सोरन अप्य पिवाम ॥
 रहै चष वारि सुरातन एम । जवा ग्रन प्रात कियो सक जेम ॥ ३५ ॥
 तहां वर चावँड राइ रजंत । जुधं मधि चावँड रूप सजंत ॥
 नृसिंघ विराजत सिंघ जिसौह । विभीषन भा कयमास जिसौह ॥ ३६ ॥
 सबै भर ओर उन्थ्य सुभंत । तिनं मधि पीथ कुंआर रजंत ॥
 मनौं सुकलं पष बीज कौ चंद । तिया रस राजत तारन वंद ॥ ३७ ॥
 प्रतापसि सातउ आत सरीस । प्रथी पति आइ नमाइय सोस ॥
 ति सोहन मानुस तं सत मेर । किधौं सत सिंधु सुहंत उजेर ॥ ३८ ॥
 सनमुष कन्ह प्रतापसि आइ । ठई तिन वैठक शान सुभाई ॥
 कहै भर भारथ वक्त स बांन । धर्यौ परतापसि मुच्छन पान ॥ ३९ ॥
 लषी चहुआन सु कन्ह अपंन । कठी अस्ति न्च असंघ भषंन ॥
 दई अस्ति दौरि जनेउ उतारि । इही धर अध उपंम बिचारि ॥ ४० ॥
 मनौं सब नागर साबु कटंत । इही जनु गंठि बिचें विच तत ॥
 पक्षौ परताप प्रथी पर आप । भई भर मध्य सुजेर अमाप ॥

॥ ३० ॥ ४१ ॥ ४० ॥ १७ ॥

भाई के मारे जाने पर अरिसिंह का क्रोध करना और कन्ह
 चौहान पर धार करना ॥

दूहा ॥ भई हूह मभरूह मचल, पक्षौ भूमि परताप ।

हाक वीर वज्जे विषम, अरसी कुषौ आप ॥ ४२ ॥ ४० ॥ १८ ॥

१७ पाठान्तर-पृथोराज । मेर । कन्ह । रजे । चहुवान । तिन । मुकु पान ॥ ३४ ॥ जिन ।
 कँपै । चंपै । अप्यन मोर । रहे । कि ठसकनेम ॥ ३५ ॥ चावँड । चावँठ । राय । चामुंड । नरसिय ।
 विराजित । जिसौ । मिसु । भीषन । जिसौ ॥ ३६ ॥ सबै । और । जनथ । पिय । कुमार । कुभार ।
 मनौं ॥ ३७ ॥ पृथीपति ।

नमाईय । शीका । सोहति । मनौं । मानुस । किधौं ॥ ३८ ॥ प्रतापसी । आय । कहै ॥
 वक्त । मुकन । मुच्छन ॥ ३९ ॥ चहुवान । अपान । तारि । वही ॥ ४० ॥ मनौं । नीगर । बिचै । पृथी ॥ ४१ ॥
 १८ पाठान्तर-दोहा । भई । भूमि । यह रूपक सं. १६४५ की पुस्तक में नहीं है ॥

कवित्त ॥ भई हूह परताप । पच्यौ दिष्यौ अरसी वर ।
 उद्यौ कट्टि तरवारि । दई भुज कन्ह वाम कर ॥
 हुक्क सोह वर और । गरै पष्वर गहि डारी ।
 एक अगनिता मडि । आनि कूपी घन धारी ॥
 चहुआन कन्ह अगौ सुवर । ता पच्यै लोहन दग्यौ ।
 जाजुलित सत्त वर बीर मनि । बीर वोर रस सौं क्यौ ॥

कं० ॥ ४३ ॥ छ० ॥ १९ ॥

पृथ्वीराज का महल में जाना और अरि सिंहादि की लडाई का होना ॥

दूहा ॥ उठि कुंवर प्रथिराज लषि, गयौ महल निज मडि ।
 दै किवार मिलि थोट जुध, मच्यौ कलह सभ मडि ॥ कं० ॥ ४४ ॥ छ० ॥ २० ॥
 गाथा ॥ कट्टी अरि अरसिघं । नरसंघस्य भारयं सीसं ।
 दई गुरज गुर अडुं । बड गुज्जरं रंभ कंदाइं ॥ कं० ॥ ४५ ॥ छ० ॥ २१ ॥
 चालि ॥ दिषि चावंडं ॥ विजि चावंडं ॥ लोह चावंडं ॥ मन चावंडं ॥ चावंडं ॥
 कं० ॥ ४६ ॥ छ० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ बढिय जंग उत्तंग । दंग जनु दाह जुर्गिगय ॥
 परिय रौर राव रन । जरिय जुध कन्ह अभिगिगय ॥
 मारि ठारि अरिसीह । हक्यौ गोयंद सेह गति ॥
 कट्टि हथ्य जम दहु । दई चहुआन कूप घन ॥
 करि रोस कन्ह कर चंपि सिर । दो हथ्यन भेजी उडिय ॥
 निकसीय प्रान गोविंद उर । जाति भेदि जातिह मिलिय ॥

कं० ॥ ४७ ॥ छ० ॥ २३ ॥

१९ पाठान्तर-वाम । एक । और । डारीय । आनि । चहुआन । अगे । पच्यै । मत्त । सो ॥

२० पाठान्तर-उठि । लिषि । मधि । सभ । मधि ॥

२१ पाठान्तर-गाथा । अरसिघ । शीन । बडगुज्जर । कंदाई ॥

२२ पाठान्तर-बदलीका । हड । वामुड । विजि वामुड । वामुडं ॥

२३ पाठान्तर-उत्तंग । यु । लगिय । रौरिय । रौरि । अभिगिय । मन्वागीय । हथ । उड ।

कुवि । घनि । हथ । निरसि ॥

हरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ हस्ति कहर हरसिंघ । बथ्य नरसिंघ मिलिगिय ॥

लक्ष्य बथ्य लोहान । उपर तर तर परि दग्गिय ॥

नंषि अइ नरसिंघ । भयौ हरसिंघ उइ वर ॥

हौरि राव चामेड । दई तरवारि पिठु पर ॥

कर फौरि मुक्कि डर अइ धर । भयौ विबंधव वंदि घा ॥

हरसिंह बस्यौ हरसिंघ पर । रवि मंडल बल अदि करि ॥

छं० ॥ ४८ ॥ छ० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ भेद्यौ रवि मंडल सु पहु । करि प्राक्कम प्रमान ॥

धनि चालुक पित मात धनि । जिकसि न षोदौ मान ॥

छं० ॥ ४९ ॥ छ० ॥ २५ ॥

नरसिंह का युद्ध १

कवित्त ॥ करि उप्परि तैं दूरि । तरह नरसिंघ सु उठिय ॥

तवै भरीक भगवान । आइ सिर सार सु बुट्टिय ॥

जव नरसिंघ नरंन । करन कट्टी कहारिय ॥

घस्ति हथ्य गल बथ्य । तेन उदरें विच फारिय ॥

पर भूनि सुर भगवान भिरि । चलयौ प्रांन ऊरइ अय ॥

खै है सु सवद अत लोक भय । जै जै सुर सुर लोकजय ॥

छं० ॥ ५० ॥ छ० ॥ २६ ॥

कैमास का युद्ध ॥

मोकल गंडि गोकल सुजान । मद् मोकल कुट्टिय ॥

तुट्टिय वीज अकास । सीस कैमान अहुट्टिय ॥

२४ पाठान्तर-बय । लय । वय । लोहान । उपर । घट लगिय । चामुड । फौरि । मुक्कि । अघ । विबंधव ॥

२५ पाठान्तर-प्रमान । मान ॥

२६ पाठान्तर-उठिय । तव । भगवान । कटारिय । हथ । बथ । विच । फारी । भगवान । सवद । मृत ॥

तुरस फाहि कटि गुरज । मुकुट करि रेष रिषेसर ॥
 असि कटुत बर रोस । उदर बर वक्षिय सु ओभर ॥
 त्रिन पत्त मत्त जनु डंड डक । रंभ पंभ कर कटीयश्वज ॥
 तिहि काज साज साकल सुरर । सु गुरुर पठाइय गुरुरध्वज ॥

ॐ ॥ ५१ ॥ ६० ॥ २७ ॥

माधव खवास का युद्ध ॥

कवित्त ॥ काम धाम रिम राह । स्याम जिम धाम पिथ्यपति ॥
 पत्त लत्त दिव रोस । फहि क्लिप्याट थाट मजि ॥
 घस्त्रिय मय माधव पवास । आय पत्तौ तहां अरौ ॥
 लुगि बध्य विन नथ्य । संड मल मचि ऋषारौ ॥
 जम दट्ट कट्टि चालुक्क चंभि । टिट्ट पौनि पाशर उर ॥
 अंडल दिनेस में भेद करि । सुपाट परट्टिय ब्रह्म पुर ॥

ॐ ॥ ५२ ॥ ६० ॥ २८ ॥

कन्ह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ परि भूमि पावार । उररि भजन त्रिवार दुअ ॥
 तत्र लुगि कन्ह तलंकि । आइ पहुच्यौ अंतकलुअ ॥
 मुक्कि रोस अनि तमनि । घाइ हिर जाइ रह्यौ उत ॥
 मनहुं सक्ति वल दैन । अंग जनु चन्धा अजा सुत ।
 तिन चन्त सिंभु धुन हनिय हिर । राज अह मधि समर हुअ ॥
 हल हलकि मचि नोलाहलह । हाय हाय दरवार धुअ ॥

ॐ ॥ ५३ ॥ ६० ॥ २९ ॥

२७ पाठान्तर—सुजाजि । जीज । साजास । शीव । रिषीसर । औभर । उभर । कटीय ।
 अज । तिहि । तयके सुरर ॥

२८ पाठान्तर—काम । धाम । स्याम । धाम । पिथ्यपति । पत्त । लत्त । पट्टि । क्लिप्याट ।
 मधि । लुगि । अय । नथ्य । मचि । जमदट्ट । चालुज । चंभि । टिट्ट । पौ । परट्टिय ॥

२९ पाठान्तर—तमनि । हुब । मुक्कि । हिर । मनहुं । यक्ति । दैन । हलहलकि । मचि ।

चालुकों के मारे जाने से दरवार में कोलाहल होना ॥

दूहा ॥ कोलाहल दरबार भौ । सुनि चालुक अत सथ्य ॥

धसिय पै रि गज मत्त सम । पुच्छत पुच्छत नथ्य ॥ कं० ॥ ५४ ॥ ह० ॥ ३० ॥

किंछ रुधिर डठत गिरिय । परिय सच परिधारि ॥

दिषि चालुक अत तेह टग । कुलह बाजि जनु डारि ॥ कं० ॥ ५५ ॥ ह० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ संकर सिंघ कि कुटि । कुटि इन्द्र कि गह्य गज ॥

कि मद्धिप कुटि मय मत्त । भरिय दीपौ कि दुष्ट कजि ॥

भौ कि चास रस रोस । मद्धि रावत्त विरच्चिय ॥

कोलाहल बल कूक । मज्झ रावर हल मच्चिय ॥

चालुकक षवास ताकथ्य कथि । कोलाहल इन जानि घर ॥

कंडिय सयल बोच्चिय नटपति । हनिग कन्ह सारंगहर ॥

कं० ॥ ५६ ॥ ह० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ भर प्रताप दरबार के । द्वार घरे मय मत्त ॥

सुनत वत्त इह कहि परे । मनु निस तुटि नक्त्त ॥ कं० ॥ ५७ ॥ ह० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ निसि षह तुटि नक्त्त । रोष मद्धिषा कुटि वातन ॥

परि कि दं प पातंग । सिंघ जनु कुटि कुधा तन ॥

यो तूहें भर भरन । भररि भैभीर सुभगिय ॥

मनहुँ पग पति चुनत । परिय सिंचान अचिंतिय ॥

परि रौर पौरि दीनो दरकि । धरकि कूह कल पौरि विचि ॥

षेलत सब संत कलहंत जनु । पारथ सम भारथ्य मचि ॥

कं० ॥ ५८ ॥ ह० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ माया मोह विरत्त मन । तन तिनुका सम डारि ॥

३० पाठान्तर—मय । मत्त । पुच्छत । क्रय ॥

३१ पाठान्तर—बाज । यह रूपक सं. १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

३२ पाठान्तर—भरीय । दीपि । मधि । रावत । विराच्चिय । मझ । मच्चिय । कथ । जान ॥

३३ पाठान्तर—मत्त । वत्त । मनौ । नक्त्त ॥

३४ पाठान्तर—नक्त्त । परिय । संघ । मनौ । तनहुँ । अचिंतिय । दीनीय । बच । पेतंत ।

स । भारथ ॥

३५ पाठान्तर—विरत्त । पिथ ॥ यह रूपक सं. १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

जुटे पिथ्य द्वा बार मच्चि । करि तरवार दुधार ॥ कं० ॥ ५८ ॥ छ० ॥ ३५ ॥
 चोटक ॥ तरवार जुधार दुधार धरै । सिर मार अपार विचार परै ॥
 निरवार किवार दुकार द्विष । घर द्वार उघारि सुसार किए ॥ ६० ॥
 सर मार डरार सिरार सरै । धर बारि मभार सुवारि परै ॥
 तरवारि करार अंगार भरै । परिमार अपार सुभार डरै ॥ ६१ ॥
 हडवारि क्रचार किचार करै । तर सारक वारि कन्धार करै ॥
 कर नारि दै नारद नृत्य करै । विकारनि चौसठि पत्र भरै ॥ ६२ ॥
 किलकारनि भैरव भूत करै । चलकारत घेतरपाल परै ॥
 ॥ कं० ॥ ६३ ॥ छ० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ अंत कल्प जनु मचि कलह । भिरे मच्चिष मय छुड ॥

चालुक अरि चहुआंन भृत । काल कलह कित युद्ध ॥ कं० ॥ ६४ ॥ छ० ॥ ३७ ॥
 कंद विराज ॥ जुगजुड जुरै । मन को न मुरै ॥
 धरु धींग धरै । वक्र वैन वरै ॥
 घट घाव घने । वलि जोग वने ॥
 तरवारि कसी । घन विज्ज लसी ॥
 नर मुंड नचै । सिव मानु सचै ॥
 रिन देन रच्यौ । रंग रत्त मच्यौ ॥
 धरती धरकै । घन घाव रकै ॥
 पग हथ्य परै । ववि आप करै ॥
 मधु माधु समै । मधु जानि भरै ॥
 सब देव श्रगै । पलकै न लगै ॥
 किनजा करै । पिनवार परै ॥
 दुग्गिनी हुलरै । रुधि पत्र भरै ॥ कं० ॥ ६५ ॥ छ० ॥ ३८ ॥

३६ पाठान्तर—तरवारि । धरे । दये । किये । करार । परे । भरै । क्रवारि । कन्धार । करै । चिदराजनि । करै । परे ॥

३७ पाठान्तर—मच्चिष । अरी ॥

३८ पाठान्तर—जुरै । कोन । वने । घने । वलि । वने । नचै । सचै । रंग । धरकै । पादरके हथ । परै । ३५ । करै । जानि ॥

दूहा ॥ पत्र भरे जुगिगनि रुधिर । अग्निधिय मंस उकारि ॥
 नच्यौ ईस उमया सहित । रुंड माल गल धारि ॥ ६० ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ३८ ॥
 हंड पडरी ॥ दरवार ताल रुधि भरित वारि । इक हृथ्य रत्त चढी किनारि ॥
 तिन मधि मगन तह जिम मजंत । धर धारि मारि जे धुकत संत ॥
 ॥ ६० ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ४० ॥

दूहा ॥ * षेल मच्यौ दरवार मक्ति । मत्त गवार बसंत ॥
 सिर श्रुक बिनु घावह करै । सुभट सुअंगध कां ॥
 ॥ ६० ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ४१ ॥

हंड लघुनाराच ॥ धुकंत धार धार सैं । बकंत मार मार सैं ॥
 भुकंत मार मार सैं । तकंत सार तार सैं ॥ ६८ ॥
 उकंत भून डाक सैं । कसंत बीर बाक सैं ॥
 परंत हीन पाहै । भरंत हृथ्य घाहै ॥ ७० ॥
 लरंत मंत मंत सैं । घुरंत घाइ घंत सैं ॥
 सुषम अंगुली धिरै । फलो सुकैर बियुरै ॥ ७१ ॥
 नचंत घाइ नारदं । टटे सुघाइ ठारदं ॥
 भभक्कि रुडि भभसे । बवक्कि रह बह से ॥ ७२ ॥
 हवक्कि हाक हक्कण । चवक्कि कुंभ चक्कण ॥
 मोरित मुच्छ मुच्छण । चढी सु आनि चच्छण ॥ ७३ ॥
 चलंत हाय चंचलं । परंत वांन पंचलं ॥
 भिदंत भांन मंडलं । भयौ सु नह कुंडलं ॥ ७४ ॥
 बहंत मोष बहण । चराकि लगिग हहण ॥
 कटंत लीस कहर । रिनंक पत्त फहण ॥ ७५ ॥
 फटंत फंफ फेफरं । गटंत पेषि केफरं ॥
 वजंत घाव घुंनरे । मनौं परेव घुंनरे ॥ ७६ ॥

३८ पाठान्तर—विधिय । विधिय ॥

४० पाठान्तर—हय । रत्त । चढी । मधि । ते ॥

४१ पाठान्तर—मत । गवार । अनु । घावहं ॥

• यह रूपक सं- १६४० को पुस्तक में नहीं है ॥

कुटै हिरं करायं । कपास ज्यौं पिंजारयं ॥

फुटंत घौं सुषोपरी । कि जोग पत्र टोपरी ॥ ७७ ॥

कटंत जंघ कुंभण । मनौं सुरंभ गिंभण ॥

* परिय संभू सामयं । चलुक्क रषि नाभयं ॥ कं० ॥ ७८ ॥ ह० ॥ ४२ ॥

सांभू हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी ।

कवित्त ॥ परिय संभू जग मंभू । टरिय कंकन रंकन धन ॥

भरिय पत्र जुगिनीय । करिय सिव माल सीस घन ॥

रुरिय न भ्रित चालुक्क । धरिय रसगोस कन्ह हिय ॥

पैरि चलिय दरवार । सीह गज घट्टि उ हिय ॥

मय कत्त मार मत्तौ उररि । भररि भररि भगिय अनिय ॥

है धरिय लोह बुझौ लहरि । षेल कस्यौ किगदारनिय ॥

॥ कं० ॥ ८६ ॥ ह० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ कन्ह जाइ संजुह परत । कला एक मचि रारि ॥

सत सारध दूनौ कटै । भजै अवर तजि ठार ॥ कं० ॥ ८० ॥ ह० ॥ ४४ ॥

कान्ह चौहान का युद्ध जीतना ।

कारषा ॥ भरै (* सार) हिर मार विक्रार रक्तन भारत ॥

परत धरनीय ठरै जरकि जूपी ॥

चवक चहुवांन चालुक्क भूत उपर चर ।

कोपियं कन्ह मनौं काल हूपी ॥ कं० ॥ ८१ ॥

हुंड भहुंड क्रिय तुंड मुंडन हरत ।

बाहि निर सार मनौं मेह वट्टै ॥

४२ पाठान्तर धकत । सो । डकत । हुं । हय । घाय । पिर । परें । यिलारें । घाय । भरकि । सध । भट्ट । भट्ट । बवकि । रद । वद । हवकि । हकए । वधकि । चकर । मेरित्त । पिर । मुद । मुद । मुद । चानि । वदर । नट । रिनेकि । पत । मनो । कुटै । पिर । ल्यो । सा । मनो । * यह पाठ २- १६४० को पुस्तक में नहीं है ॥

४३ पाठान्तर—शिव । चालुक्क । पैट । चलाय । घट । उपटिय । भाठीय ।

४४ पाठान्तर—जाय । संजुह । दूनौ । कटै । अनि ॥

४५ पाठान्तर—* अधिज पाठ है । धरनि । मनो । जय । दारि । नृयात । † यह रूपक

२- १६४० को पुस्तक में नहीं है ॥

कूह करि जूह संमूह को कोक हर ।

रोस रिम राह जेम जीव कुहैं ॥ कं० ॥ ८२ ॥

पांनि करि पांनि अरि पांनि करनीय हक ।

सीस अरी पारि सब घेत सीच्यौ ॥

आत सोमेस नृघघ त मंजन भरत ।

घेत पयकार पय काल पीज्यौ ॥ कं० ॥ ८३ ॥ ह० ॥ ४५ ॥

श्लोक ॥ हनिनं विनायकं सेना, कथितं न च पूर्वयम् ।

अयुद्धं चक्रतं एषां विना स्वामि रणे युधम् ॥ कं० ॥ ८४ ॥ ह० ॥ ४६ ॥

प्रतापसिंह आदि के मारे जाने का समाचार

सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ नीठ विसासत अप्प भर, गह्यौ कन्ह चहुआन ।

गए ग्रेह लै सकल मिति, प्रथीराज अकुलान ॥ कं० ॥ ८५ ॥ ह० ॥ ४७ ॥

पारि भित्त चालुक भर, मध अजमेर प्रमान ।

सात आन भीमह हते, रन जीत्यौ भर कांन ॥ कं० ॥ ८६ ॥ ह० ॥ ४८ ॥

पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चौहान का घर बैठ
रहना, तीन दिन तक अजमेर में हरताल पड़ना ॥

बत्त सुनो तव कान्ह ने, पिज्यौ कुंअर प्रथीराज ।

बैठि रहे तव निज सुघर, औदरवार समाज ॥ कं० ॥ ८७ ॥ † ह० ॥ ४९ ॥

तीन दिवस अजमेर में । परी हट हटनार ॥

हूह कोह बज्यौ विषम । लग्यौ सुभूत भूत भुआर ॥ कं० ॥ ८८ ॥ ह० ॥ ५० ॥

मधि वजार चलि रुधिर नदि । रुरत तुंड घन मुंड ॥

वरकि कन्ह चहुआन करि । तिल तिल सम तन तुंड ॥

॥ कं० ॥ ८९ ॥ ह० ॥ ५१ ॥

४६ पाठान्तर—हननं । यं । असुद्धु । स्वामी । रिते । लुधं ॥

४७ पाठान्तर—अप । चहुआन । अकुलान ॥

४८ पाठान्तर—मध्य । प्रमान । * यह रूपक सं- १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

४९ पाठान्तर—वत । पिज्यौ । कुंअर । प्रथीराज । रहे । † यह रूपक कौलफील्ड वाली पुस्तक में नहीं है ॥

५० पाठान्तर—हट । हटनार । भुआर ॥

५१ पाठान्तर—वहुआन । तिन ॥

सात दिन तक कन्ह के न आने पर पृथ्वीराज का उनके घर
मजाने को जाना और कहना कि संसार में यह बुराई
हुई कि घर बुलाकर चालुक्यों को मार डाला ॥

कवित्त ॥ सात दिवस जब गए । कन्ह दरबार न आए ॥

तब प्रथिराज कुँआर । अप्य मनए ग्रह जाए ॥

तुम ऐसी क्यों करौ । अप्य खिर चठिय सुकाई ॥

कहिहै सब चहुआन । हने चालुकक सुराई ॥

आणनि विषे अप्य न सुघर । सो रावर ऐसी करिय ॥

इह होस अप्य लग्यौ खरौ । वत्त वित्तरिय जग वुरिय ॥

॥ कं० ॥ ८० ॥ कृ० ॥ ५२ ॥

कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा में बैठकर
मोछ पर ताव रख सकता है ॥

दूहा ॥ कही कन्ह चहुआन तव । सो बैठे कोइ आनि ॥

सभा मडि संभरि अवर । मुच्छ धरै क्यों पानि ॥ कं० ॥ ८१ ॥ कृ० ॥ ५३ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आंख में पट्टी

बांधे रहा कीजिए ॥

करी अरज प्रथिराज वर । जो मानौ इक कन्ह ॥

सभा बुराई जौ नटै । चप बंध पह रतन ॥ कं० ॥ ८२ ॥ कृ० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज का जडाज पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कन्ह
के आंख में बांध देना ।

तब प्रथिराज विचार करि । चप आग्यौ हो पह ॥

बनुरै कोइ तर जोरही । धरत परै इह कह ॥ कं० ॥ ८३ ॥ कृ० ॥ ५५ ॥

५२ पाठान्त-सुनरा । आ । शिर । कटव । कडिहे । चालुक । राव । अये ।

५३ पाठान्त-वेई । आने । अथि । समरा । मु । पानि

५४ पाठान्त-प्रथिराज । जो । मानौ । जो । बधि । कन्ह । रतन । पह । रतन ।

५५ पाठान्त-पह । पह । पह ॥

कन्ह भीहान की प्रशंसा ॥

शक्ति ॥ इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ भारथ्य भीम वर ॥
 इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ द्रोनाचारज वर ॥
 इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ दससीस बीसभुज ॥
 इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ अवनार वारि सुज ॥
 जुध वेर इस्स तुहै जरिन । सिंघ तुहि लषि सिंघनिय ॥
 प्रथिराज कुँअर साहाय कज । दुरजोधन अवतार लिय ॥

छं० ॥ १०१ ॥ छ० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ जहँ जहँ राजन काज सुअ । तहँ तहँ होइ समथ्य ॥

मेर दह्य बध्यह भरै । नर नाचां नर नथ्य ॥ छं० ॥ १०२ ॥ छ० ॥ ६४ ॥

चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का
 समाचार सुन कर बहुत दुखी होना ॥

गाथा ॥ फुहिय वक्त प्रहासं । अनिसं वसिजेम परिमलयं ॥
 सुनियं चालुक भीमं । सारंग सुत छंति चहुआनं ॥

छं० ॥ १०३ ॥ छ० ॥ ६५ ॥

जलियं चालुक नाथं । अग्नि विलगिय उअर मभायं ॥

मुक्किय नृप नीसासं । मनिय दुष आत अप्यायं ॥

छं० ॥ १०४ ॥ छ० ॥ ६६ ॥

भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ॥

दूहा ॥ अति दुख मच्यौ भीम हिय । लिखि कगद चहुआन ॥

सत्त आत मेरे हते । इहै वैर अप्यान ॥ छं० ॥ १०५ ॥ छ० ॥ ६७ ॥

६३ पाठान्तर-इसौ । चहुआन । जिसौ । भारथ्य । द्रोणाचारिज । वर । इन । सिंदरीय ।
 प्रथिराज । कुँअर ।

६४ पाठान्तर-जरा २ । तहा २ । होय । समथ्य । हउ । भरइ । भरै । नृय ।

६५ पाठान्तर-वत । सुनीय । मारा । चहुआन

६६ पाठान्तर-लुनिय । मनाय ॥

६७ पाठान्तर-कगर । चहुआन । सत्त । अप्यान ॥

मनी बत्त सुसत्य मन । कै जराव को पट ॥

राजन कन्ह चष बंधी । मनीं खिरी जग घट ॥ कं० ॥ ८४ ॥ ह० ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ पाव लष्प परिमान । मोल किंमति ठहराय ॥

तौल टंक इक्कईस । नयन आकार सवारिब ॥

जरिय जवाहर मडि । अरक उद्योत प्रकासिय ॥

दिष्टि मंडि देषंत । दुअन उर अंदर चासिय ॥

कंचन किलाव लगाय कल । पट्टी बंधिय चंद भट ॥

तिहि बेर कन्ह चषुआन चम । रूप प्रगटि अति धिचि बट ॥

कं० ॥ ८५ ॥ ह० ॥ ५७ ॥ †

दूहा ॥ पाटी बंधिय कन्ह चष । इह औपम कारि अर्षि ॥

तन सरवर जल बीर रस । ओटा बंधि सुरर्षि ॥ कं० ॥ ८६ ॥ ह० ॥ ५८ ॥ †

पट्टी रात दिन बंधी रहती थी ॥

दूहा ॥ सो पट्टी निस दिन रहै । कोरि देइ द्वै टाम ॥

कै सिज्या वामा रमत । कै कुहत संग्राम ॥ कं० ॥ ८७ ॥ ह० ॥ ५९ ॥

कारि सुचित्त चित कन्ह कों । प्रथीराज रस भाइ ॥

अवर सूर साभंत सब । रहे धीय सुख पाइ ॥ कं० ॥ ८८ ॥ ह० ॥ ६० ॥

एक बाज ऐराक वर । हंस नाम अवनीस ॥

साजि साजि राजन रजक । कन्ह कीन बगसोस ॥ कं० ॥ ८९ ॥ ह० ॥ ६१ ॥

जम दूठ इक्क जराव जरि । एक उंच सिर पाव ॥

नर (सु^०) जाहर वर कन्ह कों । कीनीं कुंअर पसाव ॥

कं० ॥ ९० ॥ ह० ॥ ६२ ॥

५६ पाठान्तर—मानी । सति । पट । राजन हय चष कन्ह बंधि । मनुं । सरी । घट ॥

५७ पाठान्तर—परिमान । ठहराईय । तौल । मधि ।

५८ पाठान्तर—अर्षि । रषि ॥ † ये दोनो रूपक सवत १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ॥

५९ पाठान्तर—निशि । सेज्या । संग्राम ॥

६० पाठान्तर—चित्त । भाय । चाय । पाय ॥

६१ पाठान्तर—ए । नाम ॥

६२ पाठान्तर—शिरपाव । * अर्चिक पाठ है ॥ कों । कीनी । कुंअर ।

कन्ह भीहान की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ मारथ्य भीम वर ॥
 इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ द्रोनाचारज वर ॥
 इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ दससीस बीसभुज ॥
 इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ अवनार वारि सुज ॥
 जुध वेर इसु तुहै जरिन । सिंघ तुह्नि लषि सिंघनिय ॥
 प्रथिराज कुँअर साहाय कज । दुरजोधन अवतार लिय ॥

छं० ॥ १०१ ॥ छ० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ जहँ जहँ राजन काज सुअ । तहँ तहँ होइ समथ्य ॥

मेर दूहा बध्यह भरै । नर नाहां नर नथ्य ॥ छं० ॥ १०२ ॥ छ० ॥ ६४ ॥

चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का

समाचार सुन कर बहुत दुखी होना ॥

गाथा ॥ फुहिय वक्त प्रहासं । अनिलं वसिजेम परिमलयं ॥

सुनियं चालुक भीमं । सारंग सुत हंति चहुआनं ॥

छं० ॥ १०३ ॥ छ० ॥ ६५ ॥

जलियं चालुक नाथं । अग्नि विलगिय उअर मभायं ॥

मुक्किय नृप नीसासं । मंजिय दुप आत अघायं ॥

छं० ॥ १०४ ॥ छ० ॥ ६६ ॥

भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई नांगना ॥

दूहा ॥ अति दुख मथौ भीम हिय । तिसि कागद चहुआन ॥

सत्त आत मेरे हते । इहै वैर अमान ॥ छं० ॥ १०५ ॥ छ० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार हैं जब चाहे आओ ॥

सुनिय राज बहुआन वर । दिय कंगद फिरि तेह ॥

जब तुम मंगौ वैर वर । तब हम वैर सुहेह ॥ १०६ ॥ छ० ॥ ६८ ॥

भीम का चढ़ाई के लिये तय्यार होना पर खरदोरों के कहने
से वर्षा जलु भर ठहर जाना ॥

कविस ॥ बँचि कंगद चाबुकक । रोस लग्यो अयान कह ॥

करो सेन सब एक । चलो अजमेर देस रह ॥

तब कछौ वीर परधान । मास पावस्त रहें घर ॥

करि कातिक घन कटक । हनै बहुआन सोम वर ॥

सुनि राज अप्य मन्यौ सुदिय । अतरु सब जन अवर नर ॥

उपसम रोस चाबुकक नृप । पिन पिन वित्तिय जेम थिर ॥

छं० ॥ १०७ ॥ छ० ॥ ६९ ॥

उपसंहार का कथन ॥

दूहा ॥ रचै राज अजमेर महि । संभरेस बहुआन ॥

निसि दिन यौं क्रीला करै । ज्यौं अवतार सुकाम्ह ॥

छं० ॥ १०८ ॥ छ० ॥ ७० ॥

इति श्री कवि चन्द्र विरचिते प्रथिराजरासोके कन्हायपट्ट

अन्धनं नाम पञ्चम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५ ॥



६८ पाठान्तर—कंगर । मंगौ ॥

६९ पाठान्तर—बँचि । कंगर । लग्यौ । अयासकह । अयासकहि । रहि । प्रधान । मांस । पावस्त । कातिक । मन्यौ । उपसमि । सितीय ॥

७० पाठान्तर—बहुआन । यौं । ज्यौं ॥

आय आषेटक वीर बरहान वर्णन समय लिख्यते ॥



(छठां समय)

पृथ्वीराज के कुँअरपने के तपतेज का वर्णन ।

कवित्त ॥ कुँअरपन प्रथिराज । वर्ष विय सपत समर तन ॥
 समुह तेज असहेज । हरन तम गोर समर गन ॥
 उर किवार भुज वज्र । अंग वज्रंग पलन लुअ ॥
 भुज भुजंग वर जोर । जोर व्रंनह सचुन भुअ ॥
 अनभंग अंग जनु अंगदह । पवन पाइ आषेट महि ॥
 संग डेरि श्वान जीवन लपै । सबन अंग अपजह तिवहि ॥

छं० ॥ १ ॥ सू० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ वर्षन सोभा नैन । मैन जनु मुदित सरित सर ॥
 हरष छस मुष कंति । विकसि जनु कमल सूर वर ॥
 मधुर सबद गुंजार । जानि गंभीर हरिय सद ॥
 भयन गरुध गज भंति । चलत कुल चालि वेद वद ॥
 बहुधान सूर सोपेस सुध । धुअ जनु भुअ अवतार लिय ॥
 मन हरनि हरत मन पिप्यि कै । जनु विधिना अम ह्य्य किय ॥

छं० ॥ २ ॥ सू० ॥ २ ॥

पंद पदुरी ॥ रहै सुभट थह प्रथिराज संग । जै पैज गंग सुअ कपि पंग ॥
 पट रस विलास वनन अनार । सुतंत भोग भट सुभट मार ॥ छं० ॥ ३ ॥

१ पाठान्तर—स० ५२६० की मुद्रक में इस का ऐसा पाठ है —“ कुँअरपन पृथीराज । वर्ष विय वीस समर वरथ । समुह तेज अस हेज । जोर व्रनह सचुन भय । भुज भुजन वर जोर । उ न तौर मरव । उर उर वार भुज वज्र । अंग वज्रंग पलन मन । उ वारा डेरि श्वान जीवन लपै के तैसि हे ॥

२ पाठान्तर—सोभा । नैन । मैन । मुदित । हरनि । जानि । विकसित । जानि । मुनि । बहुधान । मधुर । मर । विधिना । वद ॥

सुरनाथ संग सुर सकल सोम । बंसह कृतीस चहुआन जोप ॥
 नव कुलन मध्य नव नाग जानि । तिम जूथ मडि गज राज वानि ॥ ४ ॥
 उडगनन मडि गुरदेव कंति । वरनी न जाइ सुत सोम भंति ॥
 छह पंच मडि ज्यौं हनुअ लंक । तिम पिथ्य कथ्य प्रल परत वंक ॥ ५ ॥
 नव ग्रहन मडि जनु सूर तोष । षग भ्रंम क्रंम संमर अदोष ॥
 क्रीडंत अंग रंगह धुलास । विअषा पुत्र जनुं अलक वास ॥ ६ ॥
 कर तानि वान कंमानि धारि । अनभूल घात नपै उतारि ॥
 अदभूत वान विद्या अमंग । है दाव आव दज्जंम अंग ॥ ७ ॥
 पाइक्क अंक षेलत कितेक । गहि चिन सुदंत दुहंन एक ॥
 आषेटनि पुन लषि जीव घात । गज सिंघ रिंक् कुपि कोर पात ॥ ८ ॥
 है लषै सक्क करि भेद क्केद । दिष्यंत नयन सालोष वेद ॥
 गज चिगच्छ इच्छ जानंत सब्ब । नाटिक निवास सम सेस कब्ब ॥ ९ ॥
 सम सिल्य सास्त्र वसु क्रंम क्रंम । सब वेद रीत रोपंत भ्रंम ॥
 यौं तपै पिथ्य अजमेर मांहि । सोमेस सूर चहुआन क्काहि ॥
 १० ॥ १० ॥ १० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज की दिनचर्या का वर्णन ।

कवित्त ॥ प्रथम जामि निशि रज्ज । कज्ज हैगै दिष्यत लगि ॥
 दुतिय जाम संगीत । उक्ख रस कित्ति काथ जगि ॥
 चितिय जाम भोजन । समय चव जाम विलंसिय ॥
 सुष्प सुलष उर अप्प । वारि अप्पी उर वंसिय ॥
 घरियार रदिय बंदीं पदिय । आनि सूर सोमेस जघ ॥
 उठि ब्रह्म मुहूरत राज वर । हय पष्परिय सिक्कार रस ॥

११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ४ ॥

३ पाठान्तर-प्रथीराज । कपि । अनन । ज्यो वंश । छतीश । चहुआन । उप । मधि । जानि । मधि । प्रथीराज । वानि । मधि । गुरदैव । जाय । मधि । ज्यो । पिथ्य । कथ्य । मधि । समेर । धिलास । वान । अनभूल । वान । पायक । अंग । जन । सिंह । रींछ । यह । हय । सक । दिपंत । चिगिच्छ । इच्छ । शिल्प । शासन । यो । पिथ्य । छाह ॥

४ पाठान्तर-जामि । निसरज । काज । दिष्यत । जाम । ततीय । जानि । भोजन । समय । जाम । विलसीय । अप । अप्पिय । वंसीय । वंदिन । ब्रह्म । मुहूरत । पपरीय ॥

पृथ्वीराज का आखेट के लिये निकलना ।

कवित्त ॥ कर पद मत्त धनुष्य । ढाल आनन सुचक्क रथ ॥
 पटह हींस घन स । विपुल बढ्ठीय समग पथ ॥
 इक बंधिय इक बधिय । एक भंभिय भ्रम भोर ॥
 इक सु मृग विफुरीय । इकक चिकरीय दीन सुर ॥
 कवि चंद्र सार चिहुँ और घन । दिग्घ सह दिग अंत भौ ॥
 संक्रिय सयल्ल जिम रंक । इम अरन्य आतंक भौ ॥

ॐ० ॥ १२ ॥ ह० ॥ ५ ॥

अकेले कवि चंद्र का बन में भूल जाना ।

कवित्त ॥ जंगल धर सुकुमार । करत आषेट सपत्तौ ॥
 संग सूर सामं । गहन गिरि षोच सुरतौ ॥
 एक सहस्र सँग खान । एक सत चीते संगह ॥
 उभै सत सँग छिरन । करत मन पवन सुभंगह ॥
 सम विपम विहर वन सघन घन । तहां रुथ्य जित तित्त दुअ ॥
 भूल्लौ सुसंग कविधन वनह । और नहीं जन संग दुअ ॥

ॐ० ॥ १३ ॥ ह० ॥ ६ ॥

एक आम के पेड़ के नीचे एक ऋषि से उसकी भेंट होना ।

दूहा ॥ विपन विहर जपल अकल । सकल जीव जड जाल ॥
 परसंपर बेनी बितप । अवलंबि तरल तमाल ॥ ॐ० ॥ १४ ॥
 सघन छांह रवि करन चप । पग तर पसु भजि जान ॥
 हरित सोच सम पवन धुनि । सुन्त अवन भूहजत ॥ ॐ० ॥ १५ ॥
 गिरि कष्ट इका हरिता रुजल । भिरत भिरन चिहुँ पान ॥
 सुतह प्रांच फल अनिय सम । बेरु विन्द दिवान ॥ ॐ० ॥ १६ ॥

तहां सु अँवतर रिष्य इक । कस तन अंग सरंग ।

दव दड्ढो जनु द्रुस्म कोड । कै कोडभूत भुअग ॥ छं० ॥ १७ ॥ छ० ॥ ७ ॥

गाहा ॥ जप माला गृग काला । गोटा विभूतं जोग पहायं ॥

कुविजा खप्पर हृष्यं । रिद्धं सिद्धाय वचनयं मभं ॥

छं० ॥ १८ ॥ छ० ॥ ८ ॥ *

कविचन्द्र का ऋषि के पास जाकर पूछना कि आप कौन हैं ?

दूहा ॥ चंद पिष्यि चरच्चौ सुमन । इह कोड रूप अलेष ।

पग परसौं दरसौं दरस । उत्तिम भूत अरेष ॥ छं० ॥ १९ ॥

करि बंदन कविचंद्र कहि । को तुम आदि अनादि ।

तुम दरसन विन दिन गण । ते सब बीते वादि ॥ छं० ॥ २० ॥

तुं + धाना करतार तुं । भरता हरता देव ।

तुं दत्ता गोरस तुही । प्रसन होउ प्रभु देव ॥ छं० ॥ २१ ॥ छ० ॥ ९ ॥

ऋषि का पूछना कि तुम कौन हैं इस बोहड़ अन्न में कैसे आए ।

दूहा ॥ कहै जंगम तुं कौन नर । क्यो आगम ह्यां कौन ।

जीव जंत घन विघन बन । जीव जीव बल कीन ॥

छं० ॥ २२ ॥ छ० ॥ १० ॥

चन्द्र का अपना परिचय देना ।

गाहा ॥ दरसन देव मुनिंदं । चंद्रं विरहं च दुष्यदं दायं ॥

अव मुक्त कस्य सुफनियं । दिष्ये सुफल रूप तपसीयं ॥ छं० ॥ २३ ॥

देवान वरं सिद्धाय दरुं । गुर जरिंद सवमानं ॥

गग भूमि दब्ब नट्टा । पां मिज्जे पुण्य रेहायं ॥ छं० ॥ २४ ॥ छ० ॥ ११ ॥

७ पाठान्तर—ऊपर । परसपर । जवनवे ॥ १४ ॥ भइनात । भइनाट ॥ १५ ॥ गिर । भरत । भरन ॥ १६ ॥ गंनर । तरु । जती । जग न रंग । दूम ॥ १७ ॥

८ पाठान्तर—विभूच । पटाय । मभं । मभ ॥

* यह रूपक स० १६४७ वाली पुस्तक में नहीं है ।

९ पाठान्तर—पिषि । को । परसो । दरसो ॥ १९ ॥ तुं । भरता । तू । दत्ता । तुहो । होहि ॥ २१ ॥ † यह संस्कृत त्वम् का पहिला हिन्दी रूप है ।

१० पाठान्तर—जती । तू । कौन ॥

११ पाठान्तर—गाथा । दसन । चंद्र न विरह इदेह दंदायं । चंद्रन । दंदाई । कर्म । दिषे । सकल ॥ २३ ॥ सिद्धान । दसन । भूमि । भूमि । पा । मिज्जे । पुण्य । रेहा इं ॥ २४ ॥

दूहा ॥ भट्ट जाति कवियन नृपति, नाथ नाम मो चंद्र ।

आलस में गंगा बही, अब्ब गए सब दंड ॥ कं० ॥ २५ ॥ छ० ॥ १२ ॥

जती का प्रसन्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके
वश में बावन बीर हैं ।

कवित्त ॥ प्रसन चंद्र सम जतिय । दिन्न इक मंत्र इष्ट जिय ॥

इह आराधत भट्ट । प्रगट पंचास बीर बिय ॥

करि साधन इह साध । व्याधि नास्त फल धारिय ॥

गुह्य उपदेश पाइ । सकल आधीन अकारिय ॥

धरि कान मंत्र लीनौ कविय । परसि पाइ अगैं चलिय ॥

करवे सुपरिष्ठा मंत्र की । रचि आसन अगैं बलिय ॥

कं० ॥ २६ ॥ छ० ॥ १३ ॥

चन्द्र का मंत्र की परीक्षा करना और बीरों का प्रगट होना ।

दूहा ॥ भली बुरी निमित्त ककू, मेटि न सककै कोइ ।

याही सों भवनव्यता, कहत सयाने लोइ ॥ कं० ॥ २७ ॥

पसु आषेटक करन कौं, संग नृपति वरदाइ ।

जैसे में इह भावई, अरु समात हुअ आइ ॥ कं० ॥ २८ ॥

मंत्र परिष्ठा करन कौं, वन मक्त वैद्यौ चंद्र ।

रचि रचना सुचि स्नान करि, धूप दीप पढ़ि कंठ ॥ कं० ॥ २९ ॥

रचि आसन गनेस तँह, सिद्धि बुद्धि लखि लभ ।

फुनि मंत्रह भैरव जात, उक्कु गरजिय आम ॥ कं० ॥ ३० ॥

गैन गहर गंभीर धुनि, सुनि ससंक भय गात ।

आनन अग मअ गंज हुअ, जानि उलक्का पात ॥ कं० ॥ ३१ ॥

सुप दाता माता पिता, देवक सरन सधार ।

उपवन बैठे चंद्र जहँ, है पंचास पधार ॥ कं० ॥ ३२ ॥

मंत्र जंत्र धरंत मन, आकरषे जव चंद्र ।

प्रगट दरस दीने सबन, कवि उर ब्रह्मो अनंत ॥ कं० ॥ ३३ ॥

२२ पाठान्तर—वर्तत । नाम । बाल समे । बाल समय । इव ।

२३ पाठान्तर—दान । नृप । प्रदाइ । ए । नासन । धारिय । अकारिय । शाय । अने ।

२४ कने । बरते । परसा । इने ।

महा पुरिष पिष्यै जवै, तव धुअ हरष शरीर ।

दंडव्रत अंजुलि करिय, मन आनंद रुधीर ॥ कं० ॥ ३४ ॥ हू० ॥ १४ ॥

बीरों के रूप आदि का वर्णन ॥

छंद पद्धरी ॥ आनंद चंद दरसंत इंद । सोभा सुभंत वज्रंग दंद ॥

तन तेजतरनि ज्यौं धनच ओप । प्रगटी कि किरनि धरि अग्नि कोप ॥ ३५ ॥

चंदन सुल्लेष कसतूर चिच । नभ कमल प्रगटि जनु किरन सिच ॥

जनु अगनित नग क्वितन विसाल । रसना कि वैठि जनु भमर व्याल ॥ ३६ ॥

रुग मद मयूष जनु पिउष पान ॥ प्रभु मुदित भगन नामा रसान ॥

महान कपूर क्वि अंग हंति । सिर रची जानि विभूत पंति ॥ ३७ ॥

कज्जल सुरेष रचि नेन शंति । सुत उरग कमल जनु कोर पंति ॥

चंदन सुचिच रुचि भाल रेष । रजगुन प्रकासते अरुन भेष ॥ ३८ ॥

रोचन लिलाट सुभ मुदित ओद । रवि वैठि अरुन जनु आनि गोद ॥

धूंघर घमंकि पाइन विसाल । नृत्तंत जननि जनु आग बाल ॥ ३९ ॥

धूसरस भूर बनि बार सीस । क्वि बनी मुकट जनु जटा ईस ॥

वनि विसदकंठ इक बेलि माल । आभाति उडगन जिहापाल ॥ ४० ॥

चंपकनि पुहप बनि कंठ कंति । रस रमत अमर जनु पीत पंति ॥

नृत्तंत एक संगीत भंति । नारद रिभक्त कर धरत तंति ॥ ४१ ॥

इक परत वथ्य इक लरत हथ्य । गज तरनि कोलि जनु सरित सथ्य ॥

इक प्रगट हैत इक दुरै जात । परसंत परस्पर सुमन दात ॥ ४२ ॥

क्विन एक हैत गिर गरुअ देह । गरजंत एक जनु घटा मेह ॥

इक उघटि सज्द संगीत ताल । इक पठत भाष नागह विसाल ॥ ४३ ॥

इक ब्रह्म पोष सम करत घोष । पौराज प्रगट इक वचन मोष ॥

दाढाय इक्क चर्वत फुनिंद । इक धरत ध्यान जानिक मुनिंद ॥ ४४ ॥

इक गरनि मुंड मुष रुंड एक । कुंजर सचार गिर तरन तेक ॥

इक मुष्य अगिग ज्वाला उठंत । इक परह देह वरिषा उठंत ॥ ४५ ॥

१४ पाठान्तर-त्रिमित । भवितव्यता । सयाने ॥ २७ ॥ कों । जपति । ज्यैसैं । आय ॥ २८ ॥
परिष्या । कों । वैठौ । खान । परि । चंद ॥ २९ ॥ गनईस । तहां । बुधि । उक । गरजिय ॥ ३० ॥
गगन । आनन । अगं । गअ गंज । भौ । जानिक । उलका ॥ ३१ ॥ जहां । तहा ट्टे ॥ ३२ ॥
धारता । आरुपे । बठ्यौ ॥ ३३ ॥ पुत्प । पिपे । जवें । हर्ष । शरीर ॥ ३४ ॥

इक करत गाज चिक्कार एक । इक रुदत मुदत गिरि उठत केक ॥
 इक करत रूप गिरि सिषर कोइ । इक रूप बहुत इक एक दोइ ॥ ४६ ॥
 धमकंत धरजि इक लात घात । इक स्वास उडत उपवनह पात ॥
 पिष्पीय चरित ए चंद भट्ट । हर्षित हुलास मन में अघट्ट ॥ ४७ ॥
 रोमंच अंग उन्मार देह । भैभीति भंति तहाँ दिष्पि एह ॥ कं० ॥ ४८ ॥ हू० ॥ १५ ॥
 कवित्त ॥ जिन देवन दरसत । देव दानव हिय संकहि ॥

किंनर जप गंधर्व । सर्व सनमुष जिन कंपहि ॥

सिध साधक जिन दरसि । तरसि संकत हिय विभ्रम ॥

महावीर बलवंत । कवन सहि सकै तिनं क्रम ॥

अदभुत चरित चंदन चरचि । सुर विचित्त हिय हृथ्य किय ॥

आराधि मंच मन ताप सह । साव धान सम्भारि जिय ॥ कं० ॥ ४९ ॥ हू० ॥ १६ ॥

दूषा ॥ फुनि सुदिष्ट दूरी करन, अकल भयानक भीर ।

विना मंच को वसि करै, महाकाय वे वीर ॥ कं० ॥ ५० ॥

अनरति फल काहू करन, किहिकर अगरित फूल ।

दिव्य परल काहू करन, नाना वरज अमूल ॥ कं० ॥ ५१ ॥

सत्त मंत जो दिष्पियत, रज मय के दीसंत ।

तामस के पिप्पे प्रवल, क्रोध कलह किरतंत ॥ कं० ॥ ५२ ॥

को इक कुंजर मट बहत, को इक सिध सहप ।

को इक पन्नग विष गरल, को इक दिष्पित भूप ॥ कं० ॥ ५३ ॥

ब्रह्मरूप को इक रुदत, को इक तापस भेष ।

जप रूप तसवार सुके, शिव में भेष अलेप ॥ कं० ॥ ५४ ॥

अग्निज्वाल जिन तन उडत, किन तन वरनै मेह ।

पको पवन डंडर के, नंतन कंठर पेह ॥ कं० ॥ ५५ ॥

१५ पाठान्त-इया । उप । मान ॥ ३५ ॥ अग्नि । अमर ॥ ३६ ॥ विषमट । विषय ।
 शक्ति । अमुत । विमति ॥ ३७ ॥ नेव । प्रकाश ॥ ३८ ॥ अग्नि । सुवत । यमकि । वायन । रवान ।
 सुवत । अम ॥ ३९ ॥ कलि । आशक्ति । उडतन । निपाणज ॥ ४० ॥ नृत्यत । नारट । रिन ॥
 ४१ ॥ उप । तन । लप । दुरे ॥ ४२ ॥ उडत । ४३ । इह दोष । वायन । रक । ध्यान तानि
 के । जानिक । सुप । अज । सुडत ॥ विशार । उडत ॥ ४६ । धमकति । स्वास । पिष्पिय ।
 आरध । वारव । मट । मे । उडत ॥ ४७ ॥ उन्मार । अय । तहा । दिदि ॥ ४८ ॥

१६ पाठान्त-उख । मरु । सिद्ध । महावार । अटनुत । दनि । हय । सवधान ।

सुमन वृष्टि केइक करत, के फल अन्न रसंस ।

रुधिर मंस तन चमकते, आप परस्पर संस ॥ कं० ॥ ५६ ॥ ह० ॥ १७ ॥

चन्द्र का बीरों को देख कर प्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ दिष्षि चंद आनंद मन, धनि मुक्त गुर उपदेस ।

महा पुरुष पिष्ये प्रसन, सो मन मिटि अंदेस ॥ कं० ॥ ५७ ॥ ह० ॥ १८ ॥

चन्द्र का बीरों की पूजा करना ॥

कवित्त ॥ सनमुष अंजुलि जाई, करी दंडौत सबन कहूँ ॥

कुसुमंजलि सिर मंडि । धूप नैवेद समुह सहूँ ॥

आरति सबनि उतारि । नयन नैनह सब मिल्लिय ॥

रहे पिष्षि सब बीर । जानि पंगव वच पिष्लिय ॥

किंनी सुभ गति भव भावना । चित चंचल सुस्थिर करिय ॥

भय चंद चंद तन मन प्रसन । अस अभूत पुज्जिय रलिय ॥ कं० ॥ ५८ ॥ ह० ॥ १९ ॥

चन्द्र का पृथ्वीराज के लिये शत्रुशमन मंत्र ग्रहण करना ॥

कवित्त ॥ जिन बीरन बसि करन । जोग जोगी चठ मंडहि ॥

जिन बीरन बसि करन । दुंदु आराधत तंडहि ॥

जिन बीरन बसि करन । चरन सत गुर अभ्यासहि ॥

जिन बीरन बसि करन । प्रेत भूतन विस्वासहि ॥

सो बीर पंच हुअ सहज में । जती एक परसाद किय ॥

प्रथिराज भाग बरदाइ बर । सचु समन इह मंच दिय ॥

कं० ॥ ५९ ॥ ह० ॥ २० ॥

**क्षेत्रपालों (बीरों) का पूछना कि हम लोगों को
क्यों बुलाया है ॥**

१७ पाठान्तर—करण । भयानक । वे ॥ ५० ॥ काहूँ कदण । बर्ण ॥ ५५ ॥ सत । मत ।
दियियत । में । पिषे । क्रत्यंत ॥ ५२ ॥ पचग । दियित ॥ ५३ ॥ कोई । भेस । अभेस ॥ ५४ ॥ बरसं ।
मंडूर ॥ ५५ ॥ केइ । करतह । रसस । मंस । आपस पद परसस ॥ ५६ ॥

१८ पाठान्तर—दियि । पिषे । प्रसन । अंदेस ॥

१९ पाठान्तर—जाई । दंडौत । कहौं । कहूँ । नैवेद । सहौं । सहूँ । सबन । नैन । नैनन ।
मिल्लिय । पिषि । जानि । मिल्लिय । किनी । भवना । सुथिर । प्रसन । पूजित ॥

२० पाठान्तर—अधंम आतम भम मंडहि । वाशिकरन । विस्वासहि । सोइ । पृथ्वीराज । शत्रु ॥

दूहा ॥ घे ॥पाल तव चंद्र सौं । किन्न हुकम सुंहेव ॥

जंघ मंघ आराध हुत । क्यौं आकर्षे मेव ॥ कं० ॥ ६० ॥ छ० ॥ २१ ॥

चन्द्र का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की सहायता के लिये आप लोगों को बुलाया है ॥

साटक ॥ आकर्षे च देव मेव स्वयं, पिथ्यं हितं कारनं ।

विषमं बंक सहाय आय भट्ट, भट्टं भया भैकरं ॥

इच्छेयं मन पेमयं च वरयं, दंढं दलं दाहनं ।

श्रीवीराधि सुरिंद चंद्र नमयं, चर्नस्य सर्नागतं ॥ कं० ॥ ६१ ॥ छ० ॥ २२ ॥

चन्द्र का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि की लड़ाई में रक्षा करते आए ऐसे ही पृथ्वीराज को भी करना ॥

कवित्त ॥ महनि मच्चि जब सुरनि । जुइ असुरां सुर जव्वह ॥

अमरन अमिय अमीय । मोहि असुरन तव तव्वह ॥

काली सुर महिषास । तिपुर जित्तिय महिपासुर ॥

जालंधर भसमास । राम दरुकांध अंगुर ॥

जहँ जहँ सुदेव बंकम परिय । करिय अभय तुम देव तव ।

देवाधि देव दानव दहन । चरन सरन हन राष्य अब ॥

कं० ॥ ६२ ॥ छ० ॥ २३ ॥

वीरों का प्रसन्न होकर कहना कि जध गाढ

पड़ै तब स्मरण करना ॥

कवित्त ॥ विनक मौंन रचि देव । वचन चंद्रह उचारिय ॥

हम प्रसन्न तुम सेव, सुनहु भट्टं सुभ कारिय ॥

सुभर संग तुम राज, जब सु संकट पल जानिय ।

तहँ सुभरंत सु चंद्र, दंढ छनिहै सुन मानिय ॥

२१ पाठान्तर-सो हुकम । सु ॥

२२ पाठान्तर-रिप । शक । सुभट्टं । प्रट । इच्छेयं । सुरोट । चर्नस्य । सर्नागतं ।

२३ पाठान्तर-महन । मवि । असुरान । जव्वह । अमिय । अमीय । मोहि । तव्वह । राम ।

दमनप । कदा २ । संकट । रचि ॥

सिर धारि चंद वाचा लदय, सदा प्रसन्न सेवक रहौ ।

करि विषा नाथ भटं सरिस, विवरि नाम वीरन कहौ ॥

कं० ॥ ६३ ॥ कू० ॥ २४ ॥

भैरव का एक वीर को आज्ञा देना कि सब वीरों का नाम
बतला कर चन्द्र को पहिचनवा दे ॥

दूहा ॥ तब भैरव इक गन सरिस, किंन हुकम हर नंद ।

विवरि नाम वीरन सबन, कहि पिक्कनाबहु चंद ॥

कं० ॥ ६४ ॥ कू० ॥ २५ ॥

सब वीरों का नाम गुण कथन ॥

दूहा ॥ वज्रपाट ता नाम गन । घन तन घोर भयंक ॥

प्रथुक नाम बरनत सबन । सुनत मिटे तन संक ॥

कं० ॥ ६५ ॥ कू० ॥ २६ ॥

कंद पडरी ॥ गुन ईस चरन गुन गहर गाइ । फल सिद्धि बुद्धि जा नाम पाइ ॥

बानिय प्रसन्न जो प्रथम होइ । करौं प्रसन्न वीर पंचास होइ ॥ ६६ ॥

आइकक वीर यह प्रथम सेव ॥ तिहि प्रसन्न प्रसन्न सब जानि देव ॥

वपुलाइ वीर हुंनत विनोद ॥ जिहि प्रसन्न सदा आनंद सोद ॥ ६७ ॥

बुद्धिआइ वीर बन्दौ सनेह ॥ जल मय सुथलनि करि बरसि मेह ॥

आनखप्रहारिय प्रबल वीर ॥ जिहि जुरत दनुज भरहरै भीर ॥ ६८ ॥

नारीय क्रीडनह होड कोइ ॥ ब्रह्मा उपास करै टूक दोइ ॥

सूलीय भंज अनगंज वोर ॥ वज्रह सुभंजि होइ करै चीर ॥ ६९ ॥

समसान लोटजा वोर बंक तिहि पीर भीत अन संक भंक ॥

गढ उपडनाइ तो वीर नाम ॥ क्रोधंत कूट नह लहै उम ॥ ७० ॥

सामुद्र तिरन इह वीर चाव ॥ सप्तम समुद्र मनु बहत वाव ॥

सामुद्र सोष अनभंग वीर ॥ दनु देव समुद्रन हरत नीर ॥ ७१ ॥

२४ पाठान्तर—मोान । वचन । उचारिय । उचारीय । प्रसन्न । हुव । हुप्र । भटं । कारीय । जानीय । तहा । दंद हर्मे स नमानीय । सनमांनिय । सदा । प्रसन्न । करिं । भट्टह । बिचारि । नाम । कहौ ॥

२५ पाठान्तर—दोहरा । नाम ॥

२६ पाठान्तर—नाम । पृथक । प्रथुक । बरनन । मिटे ॥

इह लोह भंजनिय वीर दीस ॥ सारन पहार भंजै सरीस ॥
 संकना चोट इह नाम धारि ॥ भंजै जंजीर जनु सूत नार ॥ ७२ ॥
 विस्र प्राय राय सो वीर जानि । पचवंत जहर जनु दुध पानि ॥
 हूँडमाल नाम लोह है देष । पिषिय भयंक इक कालभेष ॥ ७३ ॥
 अग्निगय वीर कुप्यंत वार । प्रब्वतप्रजारि सो करत द्वार ॥
 बिपषिया वीर वीराधि वीर । तिहि क्रोध दनुज संहरै भीर ॥ ७४ ॥
 जमघंड नाम औघह जोर । जिन सहज गाज घन घोर सोर ॥
 कालाड नाम इह वीर लेषि । सब तजै भीर भै भीत देषि ॥ ७५ ॥
 कुरलाड नाम इह कलन जाड । सुर असुर नाग तातकै पाड ॥
 अगिक्रान्त वीर जव होत कोह । तव जरत तेज गिरसिधर षोह ॥ ७६ ॥
 विपकंत वीर अत्यंत वंक । जिन पिषि कंक अन संक संक ॥
 रगतिया वीर पग रत्त रंग । अर रक्त वाह सो करत भंग ॥ ७७ ॥
 गोडलाड नाम जो सेव पाड । तिन कष्ट होत भगौ सदाड ॥
 कालक नाम करौ वीर सेव । तिहि प्रसन काम दुग्धं कि देव ॥ ७८ ॥
 कानवे लाड नाम विन वीर कौन । गम अगम यान जनु वहत पौन ॥
 बाल घटाड वज्रंग वान । कोपंत दनुज दन हरन पान ॥ ७९ ॥
 इंद्र वीराड वल इंद्र जोर । चीगुन विमान तन हरत रोर ॥
 जम वीराड वीर कृत्यन्त कोह । सत्तउ समुद्र जन्त करत गोह ॥ ८० ॥
 देवगिन नाम करौं सेव पाड । सुभ धर्म कर्म दाता सदाड ॥
 उकार वीर नमि करौं ध्यान । जिहि प्रसन सदा आनन्द ग्यान ॥ ८१ ॥

भापटा बीर जब जुगत जुद्ध । नहिं सहत जोर दनुदेव सुद्ध ॥
 मांनिकक भद्र है मेर मान । डेलन अठिखल गढ द्रुग पान ॥ ८२ ॥
 कपडिया बीर कहा करौं किति । मन वित्त राग लै मुक्ति जिति ॥
 केदाइ राइ नव जुद्ध आप । दिष्यन्त नैन जिन जात पाप ॥ ८३ ॥
 नरसिंघ बीर नरसिंघ रूप । त्रीगुन विलास आतम अनूप ॥
 गोरिया बीर गुन सकल जानि । नव रसन रास नाना विनान ॥ ८४ ॥
 घट घंट बीर जनमे सुजान । सोषत समुद्र अरि समुद्र पानि ॥
 कंटेभ्य बीर सुनि समर बाज । दनु दलन कटक में परै गाज ॥ ८५ ॥
 बग नाम बीर जब समर कच्छ । बग लेत दुंड जनु नीर मच्छ ॥
 माहवगाव दजंग अंग । अद्भूत अंग रूपह सुरङ्ग ॥ ८६ ॥
 संतो साइ सत मतह सुधीर । पर मथ्य अथ्य भव नाव कीर ॥
 महा संतोष सत संग धार । सेवक समुद्र भव नाव पार ॥ ८७ ॥
 भ्रमराइकाइ बल बाय बेय । भ्रम परे समर घन परै लेय ॥
 महाभ्रमराइ काइक अजीत । भ्रम होइ ताहि जाकूर चीत ॥ ८८ ॥
 सहसाष अघि कर सहस जान । जानु द्रुपद मथ्य रहै गच्छ दान ॥
 सह स्वांग अंग नित रूप विच । भय भीत अभय भै करन मिच ॥ ८९ ॥
 पेश पाल प्रिति घल करै प्याल । नाना चरिच गे पाल बाल ॥
 भूतपनाइ बीर बलवन्त कूर । तटकन्त पिभिक्त तन करत चूर ॥ ९० ॥
 साकिनीमार अद्भूत जोर । समरन्त भक्त तन हरत गोर ॥
 बेदरी रीति भङ्गन बलाइ । कल्पंत करन जे तक तपाइ ॥ ९१ ॥
 सालि वाहनह ससि सूर रूप । सेवक निवाजि बर करत भूप ॥
 ए नाम बीर सुनि चंद लेइ । पहिचांनि प्रसन करि दिदा देइ ॥
 ६० ॥ ९२ ॥ ६० ॥ ९७ ॥

समीर । वान । दनुनि । पानि । पान ॥ ९९ ॥ वीर । त्रिगुन । कर्मन्त । जल हरन ॥ ९० ॥ नाम ।
 कह । करो । पाय । सहाय । करौ । ध्यान । जिहिं । ग्यान । ग्यान ॥ ९१ ॥ भापटा । युद्ध । नह ।
 मांनिक भद्र । मांन । पानि ॥ ९२ ॥ कपडिया । कहा । करौ । वीत । जिति । केदाइराय ।
 दिषंत । नैन ॥ ९३ ॥ त्रिगुन । गोदिला । जान । जानि । विनान ॥ ९४ ॥ घटाघटे । दुजान ।
 में । सु जान । समुद्र । यानि । कुनटेभ्य । सनि । में । परं ॥ ९५ ॥ बग । नाम कछि । कछ ।
 लेत । दुठि । मछ । माहवगाव ॥ ९६ ॥ सत । मत्तह । परमय । अय । नामकीर । बीर सत्यग ॥
 ९७ ॥ भ्रमराय काय । परं । परै । महाभ्रमराय । कायक । होत ॥ ९८ ॥ सहसाष अघि । जानि
 द्रुपद । रछि । दान । सहशाग ॥ ९९ ॥ पित्रपाल । प्याल । पाल । भूतपानाय । भूतपनाइ ।
 पिभि ॥ ९० ॥ साकिनीमार । बलाय । पाय ॥ ९१ ॥ सालिवाहन । नाम । लेई पहिचान ॥ ९२ ॥

चंद का बावना वीर को पहिचान कर प्रणाम करके विदा
करना और आप पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना ।
कवित्त ॥ पहिचानिय कविचंद । वीर बावन सूर दर ॥

महाकाय मदमत्त । अंत जनु अहित दनुज कर ॥

तेज साजि चष भाजि । तास धीरज्ज धीर धर ॥

भीत भयंक भयांन । जानि ग्रीषंम अगनि भ्रर ॥

करि नवनि चंद पहिचान सब । वज्रपात अग्या कलिय ॥

बहुराइ देव कवियन प्रवल । मिलन पिथ्य आगैं चलिय ॥६०॥६३॥ हू० ॥ २८ ॥

चन्द का उख जङ्गल का वर्णन करना जहां पृथ्वीराज
आखेट खेलता है ॥

कवित्त ॥ अग गयौ गिरि निकट । विकट उठान भयंकर ॥

जँद न पवरि दिसि विदिसि । बहुत जहँ जीव पयंक

सिंह कोल गज रीछ । बहुत सामर वनवंते ॥

चीतल चीत चिरंन । पाइ परकैं भजि जन्ते ॥

रोही शियाल लंगर बहु । कुड कटंम भरि तर रचिय ॥

पिथ्ये सु जीव कवि चंद नें । तुच्छ नाम सौपद कहिय ॥

६० ॥ ६४ ॥ हू० ॥ २९ ॥

कवित्त ॥ राम राम जल धान । नदि जल जीव निवासिय ॥

हेक कुरंम कुरंन । हंस सारस सुभ भासिय ॥

बगले बत न विहंग । मगर मरु बहू द्रष परिय ॥

देवि दनुज पंगम जिवास्त । सिद्ध शायक रचि हरिय ॥

पर परदि वरन पन पिप्लियै । रोम चर्ह देवत नरन ॥

तुय बुदि भइ देपत भुद्धौ । कवि सुभन्नि कहै का वरन ।

६० ॥ ६५ ॥ हू० ॥ ३० ॥

कवित्त ॥ सघन वृष्य घन क्रांद् । जानि बद्दल नभ वासिय ॥
 देषत पथ्य गिरंत । वेत्ति अवलम्बि विलासिय ॥
 मोर मोर कोकिलन । (गोर) * चीद्द पप्पीद्द पुकारत ॥
 सुमन सुगन्ध सम्बद्ध । अंध मधुकर मधु आरत ॥
 बहु कुही बाज सिंचान बच । लंगूर लाग लेयन फिरै ॥
 देषन्त जनावर भष्य ही । जनु अकास तारा गिरै ॥

कं० ॥ ८६ ॥ छ० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ तहँ षेलत पृथिराज । संग सांमंत जङ्ग जुरि ॥
 षट सुडोरि संग स्वान । लेत ते जीव सवन जुरि ॥
 बगुर घेरि विप्यंन । अप्प मूलन में मंडिय ॥
 तक्क तके इक रहिय । हक्कि षेदा षिभ्त कंडिय ॥
 भहराड भग्गि पसु उठि चले । आवै आवै होइ रहि ॥
 पररुपर मोर वे करत सुनि । यों सिकार चन्दह सुलहि ॥

कं० ॥ ८७ ॥ छ० ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ तिलक भाल ससि षण्ड । गण्ड मद भमग् बिलुद्धिय ॥
 सुरभि तेल सिंदूर । सुमन संपति मन सुद्धिय ॥
 सुइ दुइ जिम दसन । विसद वांनो जिस त्रिंमल ॥
 फरस मुसल असि चर्म । ह्यथ पंचम मोदक कल ॥
 पुज्जिय सुचंद सुरचंदजग । गवरिनंद दूषन दुरय ॥
 कंपहि सिकार गज तुंड डर । स्व विघंन गनपति चरय ॥

कं० ॥ ८८ ॥ छ० ॥ ३३ ॥

३१ पाठान्तर-वृष्य । जानि । बद्दल पद्म । पय । * अधिक पाठ है । पपीह । सीचान ।
 लंगूर । फिरै । देषत । जिनावर । भष्य ही भष्यक हों । जनुं । आकास गिरें ॥

३२ पाठान्तर-तहां । सुं डोरि । संग । स्वान । बंगुर । घेरीय । वियन । पडिय । हकि ।
 भयराय । भग्गि । हुइ । रहिय । लहिय ॥

३३ पाठान्तर-गंड चम्मर मदलुद्धिय । सुम्भि । संपति । दुइ । दूध मुइ । वांनो ।
 त्रिमल । चर्म । हय । पुजिय ॥

वत्त ॥ दुजपति अंकह हिरन । इक्कनिमय सुभाय अति ।

गजननह टारन्न । विघन विय दिठु गनप्पति ॥

पट आनन वर मोर । त्रितिय उप्पोय निसंक उर ॥

भगवति वाहन सिंघ । वेद्ग जीय सुमेर थरि ॥

वरदाइ चंद मुषच्चारि षग । पंचम वह सुषह ररुहि ॥

आतंक अवर आरन्ध पसु । उर थरहरि कंपत ररुहि ॥

ॐ ॥ ९९ ॥ ६० ॥ ३४ ॥

वित्त ॥ हहरि हिरन हारियव ॥ हिरिकातर रव ररुयि ॥

अप्य चास भय मोह । विरह लग्गी चटपट्टिय ॥

रुयि धरक्क धुधरह । वदन लोइन जल निभभर ॥

तकित चकित संकीत । समग संकरिय दुष्पभर ॥

भैरत्त चमक्कत पत्त रव ॥ पिनक चित्त जिम उप्परै ॥

पिल्लत सिकार पिय कुँअर उर । पसु पीपग दन थरहरै ॥

ॐ ॥ १०० ॥ ६० ॥ ३५ ॥

वित्त ॥ पोमिन वन नहिं चरुहि ॥ नहिंन संचरिहि कुमुद वन ॥

ईप घेत परहरुहि । जीर परहु अविरत्त मन ॥

मंथर गति लखि मुंथ । कास कानन नह चप्पाइ ॥

नह पिप्पै नियनारि । नहिंन चप कंदनि ररुहि ॥

गिरि मड्डि गहिर गुभभरह वसहि । नीर सर्नप न संचरुहि ॥

सोभेस सुतन आवेट उर । इमड डाल उस सह चनहि ॥

ॐ ॥ १०१ ॥ ६० ॥ ३६ ॥

वित्त ॥ गिर कंदर सर वरह । सरित कच्छह घन गुच्छह ॥

निभभर कुल न द्रहन । वेतनल तिन सर पुंजह ॥

६४ पाटात्तर-इक्क सुभिय निसक अति । गजननह तह । गजननह । द्विष्टिय । गनपति ।
त्रतीय । उप्पोय । निसक । गज्जीय । गलिय । थर । ररुयि । आतंक । आरन्ध । ररुयि ॥

६५ पाटात्तर-हहकि । हीरन । हारियव । रव । अप्य । लप्पिय । धरक । धुधर ।
निभभर । सकित । समग । संकरिय । दुष्प । भयभर । चमकत । पत्त । उप्परै । पिल्लत । कुमुद ।
ररुयि ॥

६६ पाटात्तर-नहिं । चरुहि । इप । परहरन । परमय । मपर । मुंथ । चपट्टि । पिपै
नियनारि । ररुहि । भयि । गुभभर । इमड । सह ॥

कवित्त ॥ सघन वृष्य घन क्रांत्त । जानि बद्दल नभ वासिय ॥
 देषत पथ्य गिरंत । बेलि अवलम्बि विलासिय ॥
 मोर मोर कोकिलन । (गोर) * चीह पपीह पुकारत ॥
 सुमन सुगन्ध सम्बृंह । अंध मधुकर मधु आरत ॥
 बहु कुही बाज सिंचान बच । लंगूर लाग लेयन फिरै ॥
 देषन्त जनावर मष्य ही । जनु अकास तारा गिरै ॥

कं० ॥ ९६ ॥ छ० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ तहँ षेलत पृथिराज । संग सामंत जङ्ग जुरि ॥
 षट सुडोरि संग स्वान । लेत ते जीव सवन जुरि ॥
 बगुर घेरि विप्यंन । अप्य मूलन में मंडिय ॥
 तक्क तके इक रहिय । हक्कि षेदा षिभ्त कंडिय ॥
 भहराइ भग्गि पसु उठि चले । आवै आवै होइ रहि ॥
 पररुपर मोर वे करत सुनि । यों सिकार चन्दह सुलहि ॥

कं० ॥ ९७ ॥ छ० ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ तिलक भाल ससि षण्ड । गण्ड मद भमर बिलुडिय ॥
 सुरभि तेल सिंदूर । सुमन संपति मन सुडिय ॥
 सुड दुड जिम दसन । विसद वानी जिस त्रिमल ॥
 फरस मुसल असि चर्म । ह्य्य पंचम मोदक कल ॥
 पुज्जिय सुचंद सुरइंदजग । गवरिनंद दूषन दुरय ॥
 कंषहि सिकार गज तुंड डर । स्व विघन गनपति चरय ॥

कं० ॥ ९८ ॥ छ० ॥ ३३ ॥

३१ पाठान्तर-वृष्य । जानि । बद्दल पथ्य । पय । * अधिक पाठ है । पपीह । सीचान ।
 लंगूर । फिरै । देषत । जिनावर । भपक ही भप्यक हैं । जनुं । आकास गिरें ॥

३२ पाठान्तर-तहा । सुं डोरि । संग । स्वान । बंगुर । घेरीय । वियन । पडिय । हकि ।
 भयराय । भग्गि । हुइ । रहिय । लहिय ॥

३३ पाठान्तर-गंड वम्मर मदलुडिय । सुम्भि । संपति । दुडु । दूध मुट्ट । वानी ।
 त्रिमल । चर्म । हय । पुजिय ॥

कवित्त ॥ दुजपति अंकह हिरन । इक्कनिमय सुभाय अति ।
 गजननह टारन । विघन विय दिठु गनपति ॥
 षट आनन वर मोर । त्रतिय उषीय निसंक उर ॥
 भगवति वाहन सिंघ । बेदग जीय सुमेर थरि ॥
 वरदाइ चंद मुषचारि षग । पंचम वह सुषह ररहि ॥
 आतंक अवर आरन्य पसु । उर थरहरि कंपत ररहि ॥

कं० ॥ ९९ ॥ ६० ॥ ३४ ॥

कवित्त ॥ हरि हिरन हारियव ॥ हरि कातर ख रदिय ॥
 अष चास भय मोह । विरह लग्गी चटपदिय ॥
 हिय धरक्क धुधरह । वदन लोइन जल निभभर ॥
 तकित चकित संकीत । समग संकरिय दुषभर ॥
 भैरत चमकत पत्त ख ॥ पिनक चित्त जिम उषरै ॥
 पिलत सिकार पिथ कुँअर डर । पसु पीपर दूज थरहरै ॥

कं० ॥ १०० ॥ ६० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ पौमिन वन नहिं चरहि ॥ नहिन संचरिहि कुमुद वन ॥
 ईष घेत परहरहि । जीर परहु अविरत्त मन ॥
 मंथर गति लखि मुंथ । कास कानन नह चषाद ॥
 नह पिष्यै नियनारि । नहिन चष कंदनि रषहि ॥
 गिरि मडि गहिर गुभक्तह वसहि । नीर समीप न संवरहि ॥
 सोमस सुतन आवेट उर । इमड ढाल उस सह चसहि ॥

कं० ॥ १०१ ॥ ६० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ गिर कंदर सर वरह । सरित कच्छह घन गुच्छह ॥
 निभभर कूल न द्रहन । वेतनल तिन सर पुंजह ॥

३४ पाठान्तर-इक सुभिय निषक अति । गजवदन तह । गजनंतह । दिठिय । गनपति ।
 त्रतीय । उषीय । निषक । गज्जीय । गलिय । थिर । रहिय । आतंक । आरन्य । रहिय ॥

३५ पाठान्तर-हरकि । हीरन । हारीयव । रच । अय । लगिय । धरक । धुंधर ।
 निभर । सकित । समग । संकरीय । दुष । भयपत्र । चमकत । पत्र । उपरं । पिलत । कुँअर ।
 पिषद ॥

३६ पाठान्तर-नहि । चरहिं । इष । परहरत । परभय । मथर । मुथ । चपहि । पिषै
 नाहि । रषहि । मधि । गुजह । इमड । सहि ॥

ऊजर अरि पुर घरह । सैल तट उडन अडह ॥
 हथ्य जोरि सब सुभि । उभ दिप्यहि कित लडह ॥
 फल नल इप्य भु अकास थल । वन उपवन घन सचरहि ॥
 दुंढत उढाल उढाल त्रिय भुक्कारन बहु भुक्करहि ॥

छं० ॥ १०२ ॥ छ० ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥ नहिं गळत करि गळ । नहिन गज्जत घन गज्जत ॥
 घोळत नहिय नयन । सिंघ कहि बोळत लज्जत ॥
 भुअन मडि संचरत । नहिन कुंचरत दुग्द वन ॥
 चरन लेष लुप्यतसु । पुंछ गज मुत्तिय मग गन ॥
 थक थकहि धुकहि तकहि चकहि । दिद्य उसासन उल्हसहि ॥
 प्रथिराज कुंवर कोबंड डर । गिर कंदर केसर बसहि ॥

छं० ॥ १०३ ॥ छ० ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥ बगुर अगिनत परत । कितिक फंदन पगविद्धत ॥
 कितेक खलन मरत । कितिक स्वानन मह सिद्धत ॥
 घंटरागज कितक । कितक चीते तकि दळ्वत ॥
 बाज सिंचान कुचीन । क्षपटि चंचनु फल चळ्वत ॥
 घन कूच सिकारन ह्वै रही । भजि न जीव कहुं जै सकै ॥
 बलवतं बाघ हथिय अजर । पकरि हंकि लीजै धकै ॥

छं० ॥ १०४ ॥ छ० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ गाडी लिए कितेक । कितक उंटन पर डारे ।
 पत राषे धर कितक । कितक हथी पर धारे ॥
 काहर कंधन कितक । कितक स्वानन मुष टुहत ॥
 विंकी सर्प विषंग । मंच वादी भिल लुहत ॥

३७ पाठान्तर-गिरि । कऊह । गुठह । निअर । कुलन । कुलह । सेल । अघह । हय ।
 सुभि । उभ । दिपहि । इप । भू । भुपुकारनिबहुसुकरहि ॥

३८ पाठान्तर-नहिं । गवनु गव । गजत । नैन । लाजत । भुययन । रेप । लुंपतसु ।
 पुछ । मग मुति । हिवकहि । दिद्य । उल्हसै । पृथीराज । कुंवर । केहरि । बसै ॥

३९ पाठान्तर-बगुरि । कितेक । स्वानन । दवत । चंचनु । पल । चूळ्वत । चूवत ।
 कहु । कहुं । अथिय । हथीय । हथिय । हकि ॥

वज्रत निसान सहनाइ सुर । तबल डक्क वज्रत बलिय ॥

सिक्कार बेलि घन रस रछौ । सब पहार पग बलदलिय ॥

छं० ॥ १०५ ॥ छं० ॥ ४० ॥

कन्ह चौहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से
मिलना और कहना कि आज यहीं शिकार हो ॥

कवित्त ॥ आइ कन्ह चहुआन । नवनि प्रथिराजसु किन्निय ॥

आइ राइ गोयंद । प्रथुक आदर आदन्निय ॥

आइ चंद पुंडीर । धीर सध्यह हंसि मिल्लिय ॥

बलिभद्रह कूरंभ । कहर किन्ने रस पिन्निय ॥

अनुआ राइ पावार मिलि । बरुन बंध सिर कर धरिय ॥

मिजी कही सिंह पाचार इह । आज केलि अदभुत करिय ॥

छं० ॥ १०६ ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ मिलिय सकल सामंत तहँ, गनि न कहे प्रथु नाम ॥

हयन हींस परबत गजिय, सघन सुविद्रुम भाम ॥ छं० ॥ १०७ ॥ छं० ॥ ४२ ॥

पृथ्वीराज का शिकार से घर की ओर लौटना ॥

छंद पद्धरी ॥ फिर चले कुंअर प्रथिराज गेह । मिनि सकल सूर सामंत नेह ॥

परदास परसपर करत केलि । तारीन तक्कि नृप लेत भेलि ॥ १०८ ॥

संगाइ नीर कर मुष पवारि । सब करन मंडि कर्पूर धारि ॥

गोठ (भोजन) के स्थान पर ठहरना ॥

जहां छुई गोठि भोजन नरिंद । तहां हुते सकल सामंत वंद ॥ १०९ ॥

चन्द बरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला

सब वृत्तान्त एकान्त में ले जाकर कहना ॥

फुनि मिले चंद बरदाइ आइ । ककु कही वात पिक्ली सुनाइ ॥

नृप भट जाइ बैठे इकंत । फिरि कही वत्त जो आदि अंत ॥ ११० ॥

४० पाठान्तर-लोण । कितक । कितक । पति । हथी । स्वानन । सप्य । वज्रत ।
निसान । सहनाय । डक । वज्रत । सिक्कार ॥

४१ पाठान्तर-साय । चहुआन । पृथ्वीराज । किन्नियः । आय । राय । गोइद्र । प्रथुक ।
साय । सघह । हंसि । मिलिय । पिन्निय । कहीय ॥

४२ पाठान्तर-तहा । नाम ॥

पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ॥

सुष मद्धि सुष्य प्रथिराज पाइ ॥ भोजन करन नृप बैठे आइ ॥
 क्वच रसु नवास आहारि अन ॥ करि कुरल पान करपूर लिन ॥ १११ ॥
 मृगमद जवाइ सब चरचि अंग ॥ कसमीर अगुर सुर रहिय अंग ॥
 सुभ कुसुमहार सब कंड मेलि ॥ इमः चलिय बलिय चहुआन घेलि ॥ ११२ ॥
 क्वच आगा इक्क सौः तुरिय तेज ॥ उहुंतः पंपि विनः पंपिकेज ॥
 बगसीस सकल सामंत जोग ॥ दिषि वाह वाह सब कहत लोग ॥ ११३ ॥
 सुष चाल फाल जे हिरन लेत ॥ उत्तंग गात पष्यर समेत ॥
 गज घालि बांह घूघर सलोल ॥ लष्ये न राह करते कलोल ॥ ११४ ॥
 हा कहत उडत हां कहत ठठु ॥ गिर परत धक्क जिन कोट गठु ॥
 पित मात असलि औराक देस ॥

**सब सरदारों को एक एक घोड़ा बांट दिया उसी पर
सब चढ़ कर चले ।**

सोभंत बानि रवि रथ्य भेस ॥ ११५ ॥

है एक एक सब बंटि दीन ।

चढ़ि सूर सकल सामंत लीन * ॥

कविचन्द को एक हाथी देना जो महा बलवान था ।

दिय हस्ति एक कवि चंद बोलि ।

अंदून ताहि को सकै षोलि ॥ ११६ ॥

तल बहत पाट सुभक्तै न अषि ।

अति पाइ काइ गहि लेइ पंपि ॥

अनि गज्ज मुष्य को सकै भेलि ।

खल दलन मभक्त पारत्त भेलि ॥ ११७ ॥

सुर नाथ वाह सम अंग आप ।

दिष्यियै खिज्यौ जनु काल कोप ॥

विन रोस सहज में अजा जानि ।

हर कोइ वंचिहै चल्पौ कानि ॥ ११८ ॥

सकै न बोलि को हय अरुठ । करहरौ पग बलि कवन षुठ ॥
 अगि जल्ल मझु मानै न संक । होइ रहै भूत सुनि बज्जि डंक ॥ ११९ ॥
 सुनि विरद कांन चख्खंन मगग । तिहि चंद ह्य्य दिय कनक बग ॥
 कं० ॥ १२० ॥ सु० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ बाग धरी कवि चंद सिर, हरष भयौ बहु अंग ।
 तूं विक्रम अक्रम चरन, करन दरिद्रह भंग ॥

कं० ॥ १२१ ॥ सु० ॥ ४४ ॥

एक एक सामंत हय, कीनिय चंद हजूर ।

घडि चख्खिय हख्खिय अगै, सरित तुरंगन पूर ॥

कं० ॥ १२२ ॥ सु० ॥ ४५ ॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की स्तुति करना ॥

कवित्त ॥ करिय नवनि कविचंद । कंद अनेक पट्टि कर ॥

तूं सुरपति सम कुंअर । देव सामंत समो वर ॥

अग्नि कन्ह जल चंद । पवन गोरंद प्रबल बल ॥

धरा चंद बल धीर । तेज चामंड जलन षल ॥

रवि तेज कहर कूरंभ सब । चंद अमृत आवू धनी ॥

द्रुगपाल सबल सामंत सब । रहै दखि धरती धनी ॥

कं० ॥ १२३ ॥ सु० ॥ ४६ ॥

४३ पाठान्तर—फिरि । पृथीराज । येह ॥ १०८ ॥ मगाय । मगि । होइ ॥ १०९ ॥ मिलें ।
 घरदाय । आय । कहिय । घत्त । पल्लि सुनाय । जाय । एकत ॥ ११० ॥ मध्य । सुप । पृथी
 राज । पाय । भोजन । करन फुनि । वैठि । आय । लीन ॥ १११ ॥ जवादि । सुम कंठहार ।
 मेल्हि । चहुवान ॥ ११२ ॥ इरु । एक सो । उडुत पंपि ॥ ११३ ॥ उत्तंग । पपर । लपे ॥ ११४ ॥
 धरु । जिहि । गठ । रथ ॥ ११५ ॥ हय । लिन । आंदून ॥ ११६ ॥

तव लहत । सुभै । काय । पाय । लेय । गज । मुहप । मझ । पारंत ॥ ११७ ॥ उंप ।
 दिप्रिये । मै । चलो । जान ॥ ११८ ॥ सकै । कोइ । पग । जल । मझ । मानै । होय ।
 बज्जि ॥ ११९ ॥ चालंन । सघ ।

४४ पाठान्तर तु । तू ॥

४५ पाठान्तर—कीनाय । वलिय । हलिय । अगै । तुंगन ॥

४६ पाठान्तर—पडि । कुमर । कुंअर । समवर । अगानि । चावंड । अत्रू । मरुत । रहे ।

दूहा ॥ जीभ एक कविचंद्र कै, कित्ति कही क्यौं जाइ ।

जीव बुद्धि पिथ्यह निमित्त, रच सो मत्ति सुभाइ ॥

छं० ॥ १२४ ॥ छ० ॥ ४७ ॥

सब लोगों को अपने अपने घर विदा करना ॥

रह्यौ रंग बहुरे ग्रहन, करिय विदा सनमान ।

निहा सुष्य मंडै सुषन, जागे जगत भान ॥

छं० ॥ १२५ ॥ छ० ॥ ४८ ॥

वीरों के मिलने के समाचार से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ॥

पृथीराज आनंद मन, सुनि वीरन वर वत्त ।

फूलत तन तर नीर लभि, इम आतम उलसत्त ॥

छं० ॥ १२६ ॥ छ० ॥ ४९ ॥

श्लोक ॥ शुभं दिवसे शुभं वार्ता । अशुभेच अशुभानि च ॥

शुभाशुभं यथायुक्तं । भवंति दिवसानि च ॥

छं० ॥ १२७ ॥ छ० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ पृथीराज चहुआन । वान पारथ बलिबंडह ॥

पृथीराज चहुआन । दंड दंडैति अहंडह ॥

पृथीराज चहुआन । सरिम जुध कौउ न मंडै ॥

पृथीराज चहुआन । सचु चिनु रद गहि छंडै ॥

पृथीराज चहुआन पहु । कली करज अवतार कहि ॥

सोमेश सूर पूरई सुभग । उदः पिथ्य अवतार लहि ॥

छं० ॥ १२८ ॥ छ० ॥ ५१ ॥

४७ पाठान्तर-जाय । बुधि । पिथह । मत्ति ॥

४८ पाठान्तर-सनमान । सुष । मंडे । उगत । भान ॥

४९ पाठान्तर-वत्त । लहि । इम नृप आतम उलसत्त ॥

५० पाठान्तर-शुभं । सुंभ । वार्ता । अशुभे । अशुभानि । शुभाशुभं । यथायुक्तं ॥

५१ पाठान्तर-पृथीराज । चहुआन । चहुवान । वान । चंडह । पृथियराज । अहंडह ।

जुहु । चिनु । कलि । पिथ ॥

दूसरे दिन सबेरें पृथ्वीराज का उठना और नित्य कृत्य करना ॥

दूहा ॥ प्रात राज जगो प्रथम, गो दुज दरसन कीन ।

देहकृत्ति पुनि होइ सुचि, पावन पानि सुलीन ॥

कं० ॥ १२९ ॥ ह० ॥ ५२ ॥

करि पावन पवित्र वर, मोहन सुरभि सुतेल ।

मर्दनीक मर्दन करै, बढै धात तन बेल ॥

कं० ॥ १३० ॥ ह० ॥ ५३ ॥

नहाकर दस गोदान, दस तोला सोना और बहुत सा
अन्न दान देना ॥

करि सनान गंगोदकह, दिय सुगाइ दस दान ।

दस तोला तुलि हेम दिय, अन्नदान अमान ॥

कं० ॥ १३१ ॥ ह० ॥ ५४ ॥

महल में पृथ्वीराज का विराजना और सरदारों का आना ॥

कन्द पडरी ॥ करि स्नान दान सुचि रुचि कुंआर । होइ देवहूप साध्यात चार ॥

कीनौ सु महल वज्रै निसान । आनन्द सकल सामन्त मान ॥ १३२ ॥

आये सुमहल सामंत सूर । पूरंन तेज वीरत्त पूर ॥

अनभङ्ग अङ्ग अनभूल वान । जिन दिठु अरिय पावै न जान ॥ १३३ ॥

कैमास आइ कीनौ जुहार । विद्या सु चतुर्दस मत्ति सार ॥

गोयन्दराज गहिचौत आइ । बैठे सुकुंअर कमलं नवाइ ॥ १३४ ॥

चहुवान कन्ह आथौ अन्नङ्ग । भारथ्य कथ्य भीषम प्रसङ्ग ॥

अनि अनी सुभर बैठे सुआइ । अज गित मत्ति बल अप्रमाइ ॥ १३५ ॥

५२ पाठान्तर—गो । देह कृत्ति । पुनः । शुचि । पान । पानि ॥

५३ पाठान्तर—पावन । सुरंभ । सुरभ । मर्दनीक । मर्दन ॥

५४ पाठान्तर—सुखान । गंगोदकहि । दान । अन्न । दान । अमान ।

राजन कुँआर मधि सूर साज । देवतन मद्धि जनु देवराज ॥
गिरिराज मद्धि सब गिरन रज्ज । देखन्त सभा सुभ इन्द्र लज्ज ॥
कं० ॥ १३६ ॥ ह० ॥ ५५ ॥

वीरों के बश होने की बात से पृथ्वीराज का पेट
फूलता है पर किसी से कह नहीं सकता ॥

दूहा ॥ बैठि सभा प्रथिराज रचि, आय सुरति निज चित्त ॥
वत्त वीर बरदान की, अति उमंग उलसित्त ॥
कं० ॥ १३७ ॥ ह० ॥ ५६ ॥

रचै न आनँद कुँआर चिय, उगमत कण्ठ प्रमान ।
कचै न कासों वत्त बर, मानों दुइ उफान ॥ कं० ॥ १३८ ॥ ह० ॥ ५७ ॥

कैमास का हाथ जोड़कर पूछना कि आपके मुख पर कुछ उत्साह
दिखाई देता है पर आप खुलकर कहते क्यों नहीं ?

अरिख ॥ पानि जोरि कयमास । बदै तब राज प्रति ॥
उर अवलोकित उलसत । सामन्त राज अति ॥
को कारन मुष चारु । न कथिहि वत्त सति ॥
सुभर सूर सामन्त जु । विनवत्त राज प्रति ॥ कं० ॥ १४० ॥ ह० ॥ ५८ ॥
पृथ्वीराज का चन्द के वीरों को बश करने का
समाचार कहना ॥

५५ पाठान्तर—खान । दान । कुआँर । कुआर । होय । वजे । निसान । मान ॥ १३२ ॥
पूरन । तैज । वीरत । अभूल । खान । दिठ्ठि । जान ॥ १३३ ॥ आय । चतुर्दश । मंति । गोदद ।
आय । आई । कुमर । कमल । नवाय ॥ १३४ ॥ बहुआन । भारय । कथ । अनि अनी । आय ।
आई । मित । अप्रमाय ॥ १३५ ॥ कुआर । कुआर । देवतनु । मधि । मधि । रज । शुभ ।
लज ॥ १३६ ॥

५६ पाठान्तर—पृथीराज । बरदान । अलहसित्त ॥

५७ पाठान्तर—आनंदद । कुआर । कुमर । प्रमान । मनो । दूध । उफान ॥

५८ पाठान्तर—चन्द्रायना । पानि । उलहसत । सामंत ॥ १३९ ॥ चारु । कथि । वत्त ।

विनवत्त ॥ १४० ॥

दूषा ॥ मत्र कच्चै कुँअर सामन्त सम, कलि आपेटक रंग ।
भयौ सुर समै एक मय, आलस ही में गंग ॥

ॐ ॥ १४१ ॥ ६० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ अपरंजे आपेट । चन्द भुल्यौ सुबह वन ॥
जंगम इक तापस । मिल्यौ बरदाइ सुद्ध मन ॥
प्रसन भयौ कविचन्द । धीर मन्त्रह दीनौ बर ॥
अजमायौ कविचन्द । वीर बावन ढरस चिर ॥
तिन देखि अमित चरितह सुनत । बरनै कवि बरदाइ अति ॥
अनेक रूप अनेक गुन । अनंत गति अनतह सुमति ॥

ॐ ॥ १४२ ॥ ६० ॥ ६० ॥

सरदारों का उपहास करके कहना कि भाट, नट, चारन, ये सब
आरत हैं इन की बात सत्य नहीं माननी चाहिए ॥

अरिस्त ॥ प्रसन सूर सामन्त सकल वर । हासे अप्प परसपर सुभर ॥
भट नट चारन जू आरतह । इनकी गति न मन्त्रियै सत्तह ॥

ॐ ॥ १४३ ॥ ६० ॥ ६० ॥

कैमास ने कहा कि चन्द को देवी ने बरदान दिया है वह
सचमुच कोई अवतार है ॥

गाथा ॥ कथिय वर कैमासं । देवी वरदाय चन्द भटायं ॥
अस तिन चवै असेसं । सत्यं रूप सत्य अवतारं ॥

ॐ ॥ १४४ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

कन्ह ने कहा कि चन्द छूट गया था यह बात सच है, इसी पर
उसने यह बात प्रसन्न करने के लिये गढ़ी है ।

५९ पाठान्तर—कुमर । कुँअर । कालि ।

६० पाठान्तर—अपरजेन भयौ । कविचंद्र । भुल्यौ । भट । तापस । मिल्यौ । चंद्र ।
वरने । बरदाय । अनेक । अनत ॥

६० पाठान्तर—प्रसन । सुभर । भट्ट । नट्ट । चारन । जू । आरतह । मन्त्रियै ॥

६१ पाठान्तर—कथिय । भटायं ॥

अरिस्त ॥ कहै कन्ह ह्वम मानी सब्बह । भुल्यौ भट मगा वन तव्वह ॥
हसन केलि डर जोरिय वत्तं । इह अचिञ्ज मन्ने न विसत्तं ॥

कं० ॥ १४५ ॥ ह० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज के मन में सन्देह हो जाना ॥

दूहा ॥ किहि मंणी अमनी सुकिहि, त्रिविधि जानि संसार ॥
सुनत राज विभ्रम भयौ, पख्यौ सुचित्त विचार ॥

कं० ॥ १४६ ॥ ह० ॥ ६३ ॥

इतने में चन्द्र का आकर आसीस देना ॥

इहि विचार करवह मनह, आयौ चंद सुनव्व ।
दिय असीस कर उंच करि, वेद नीत वर कव्व ॥

कं० ॥ १४६ ॥ ह० ॥ ६४ ॥

पृथ्वीराज का चन्द्र को पास बुलाकर वीरों की बात छेड़ना ।

राजह सूर हकार लिय, दिय सादर सनमान ।
वीर विरह वरदाय प्रति, लगे वत्त पुछान ॥

कं० ॥ १४७ ॥ ह० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का चन्द्र की बडाई करके कहना कि हम लोगों की
बडी अभिलाषा है सो आज वीरों का दर्शन करवाओ ॥

कवित्त ॥ कहै चंद कविराज । वत्त पूरव जो वित्तिय ॥
कहिय कुँअर प्रथिराज । चंद चरची सो सत्तिय ॥
हमहि बहुत अभिलाष । देव वीरानि दरस कज ॥
पावहिं तो परसाद । सूर साजेत मंत अज ॥

६२ पाठान्तर—कहैं । मंती । भुल्यौ । मग । तवह । जोरीय । शुभ हित डवर गाम
सपत्तं । अचिर्न ॥

६३ पाठान्तर—किहिं । स । किहिं । त्रिधा । जानि । चित ॥

६४ पाठान्तर—इह । विचारि । तव । द्रीय ।

६५ पाठान्तर—राज । हकार । सनमान । वरद । वरदार । लगे । पूछान ॥

तेज सम न और तिहु लोक में । नह मह नाटिकक नर ॥
संसार पार बोद्धिय समह । तेहि मात देवी सुबर ॥

ॐ ॥ १४८ ॥ ६६ ॥

कवि चन्द का मंत्र जपना और होम करना ॥

दूहा ॥ सुनि आनंथौ चंद चित । कीन मंत आरंभ ॥

जप्य जाप हवि होम सब । लग्यौ कज्ज असंभ ॥

ॐ ॥ १४९ ॥ ६७ ॥

वीरों का प्रगट होना ॥

गाथा ॥ किय जप जाप तुहोमं । आए वीर धीर आनुरयं ॥

गज्जै गयन गहीरं । भय भै भीत सोर आघातं ॥

ॐ ॥ १५० ॥ ६८ ॥

छंद भुजंगी ॥ धलंकी धरा धंम धंनै धरक्की । कठं पिठु कंमठु कडै करक्की ॥

डिगौ अडिगं सो दिगंषाल दसं । तरकै चकै मुनि जनं तपसं ॥ १५१ ॥

भरकै सुवाजं सु वाजं विकुटै । तरककै एकं उलट्टै सुलट्टै ॥

इसो आगमं भौ सुवावन वीरं । कपे काइरं धीर रघौ सुधीरं ॥

ॐ ॥ १५२ ॥ ६९ ॥

वीरों के शब्द से सामंतों का डरकर सोचना कि बिना

काम इन को बुलाना ठीक नहीं हुआ ।

दूहा ॥ सुनिअ घात वर वीर वौ, चमकै चित सामन्त ॥

इन आकप कज्ज विन, किनौं अप्प अमन्त ॥ ॐ ॥ १५३ ॥ ७० ॥

६६ पाठान्तर-कहै । कुंअर । प्रधीराज । चचा । चरचि । सतिय । हमहि । वीरति ।
वीरांन । कजि । पाषाहि । सामंत । तिहु । मै । नठ । भठ । नाटिक ।

६७ पाठान्तर-आनंदो । मंत्र । जप । सम । लगौ । कज्ज ॥

६८ पाठान्तर-गाहा । स । गजे ॥

६९ पाठान्तर-धम्मकौ । धम । धंनै । धम्मै । धम्मै । धरकी । कमठ । कडै । करकी ।
डिगौ । डिगे । अडिगं । त्रिगंषाल । दस । तरकै । करकै । चकै । मुनि । मुनि । जन । तपस ॥

१५१ ॥ भरकै । विकुटै । तरककै । उलट्टै । सुलट्टै । इसो । धीरं । कपे । कपे कायरं स ॥ १५२ ॥

७० पाठान्तर-सु आघात । चमकै । कज्ज । किनौ ॥

दो मत्त हाथी दरवार के बाहर बांधे थे वह बीरों का
भयानक शब्द सुनकर चौंके ॥

दूहा ॥ गज घुमन्त गजराज बर, दो हथ्यी दरवार ॥

दूरि दूरि बन्धे रहै । काल समान करार ॥ कं० ॥ १५४ ॥ ह० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ अति बलवन्त अनन्त । गरुअ मानहु गिरवर से ॥

गगन जेम गाजन्त । बंध बंधन ते सरसे ॥

चार पटे कुट्टे * कंकाल । मह नदह सुअहो निसि ॥

पवन पाइ पुरवाइ । काल रूपी कंकाल रिस ॥

सिर दिघ्घ दिघ्घ दन्तह सुभग । जरजराइ बंगरि जरिय ॥

लष लष्य दाम पावहि पटै । कनक साजराज सु करिय ॥

कं० ॥ १५५ ॥ ह० ॥ ७२ ॥

दोने हाथियों का तुड़ाकर लड़जाना और दरवार में
खलभली मचना ॥

दूहा ॥ बीर सेर आघात सुनि, गज कुटि बन्धन तोरि ॥

भिरे उभय भय भीत होइ, परि दरवारह रौरि ॥

कं० ॥ १५६ ॥ ह० ॥ ७३ ॥

कं० मोतीदाम ॥ भिरे गजराज भयानक रूप । उभै मदमत्त महा जम जूप ॥

भए कइकाल कराल अहट । लगै जनु क्रोध सु कज्जल कूट ॥१५७॥

जुरे जुग जानि गुरु गजराज । किधौं कउ दानव रूप दुराज ॥

जगे प्रलकाल भयानक भूत । इसे दुइ दन्ति भिरे अदभूत ॥

कं० ॥ १५८ ॥ ह० ॥ ७४ ॥

७१ पाठान्तर—गुमान । हाथी । रहै । समान ॥

७२ पाठान्तर—गस्य । मानहु । तैं । चारि । पठ । * अधिक पाठ । मद । हद हट्ट ।
अहनिंसि । पाय । पुरवाय । कंकाल । दिघ्घ दिघ्घ । गरजराइ । बंगरी । लष २ । दाम । पावहि
पटे । साजसु ॥

७३ पाठान्तर—कुट्टि । भिरे । भै । दरबारहि । रौरि ॥

७४ पाठान्तर—भिरे । भयानक । मदमत । कोइ । अहट । लगै । कजल । कूट ॥१५७॥
जानि । गिरराज । कोज । दानव । लगै । जगै । प्रलै । भिरे ॥ १५८ ॥

सरदारों का बहुत उपाय करना पर हाथियों का बध में न आना ॥

दूहा ॥ दौरि सकल सामन्त मिलि, करे अनन्त उपाइ ॥

रोस लगे कुट्टै नहीं, भई सुहायो चाह ॥

कं० ॥ १५८ ॥ सू० ॥ ७१ ॥

चिहूँ और हरषी कुट्टै, परै अगड सुमार ॥

गोला लगे गिलोल गुरु, कुट्टै न तौ दूसरार ॥

कं० ॥ १६० ॥ सू० ॥ ७६ ॥

गाथा ॥ वर बावन सु वीरं । कौनिग लषन्त सूर सामन्तं ॥

करे अनन्त कलापं । नह कुहन्त गज गरु आइ ॥

कं० ॥ १६१ ॥ सू० ॥ ७७ ॥

चन्द का बावन वीरों से प्रर्थना करना कि आप लोग इन हाथियों को कुड़ाकर बांध दीजिए ॥

दूहा ॥ तव कर जोरिय चन्द कवि, अगै बावन वीर ॥

तुम सु कुडावहु मन्त कहु, बहुरि जरहु जञ्जीर ॥

कं० ॥ १६२ ॥ सू० ॥ ७८ ॥

भैरव की आज्ञा से वीरों का हाथियों को जंजीर में बांध देना ॥

अरिख ॥ तव भैरव भूवाल वीर वर । कीन हुकम कालीय जंच कर ॥

होरावहु गजराज पांनि गहि । बहुरि जरौ जञ्जीर थान कहि ॥

कं० ॥ १६३ ॥ सू० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ तव काली दोखौ तलपि । गज कुराइ समथ्य ॥

उभै पांनि सौं रद उभै । गहै उभै वरहथ्य ॥

कं० ॥ १६४ ॥ सू० ॥ ८० ॥

८५ पाठान्तर—दौरि सामन्त । करै । उपाय । लगे । कुट्टै । नहीं । स ॥

८६ पाठान्तर—चिहु । उर । परे सुगड पर मार । लगे । गुरु । कुट्टै । तो । अस ॥

८७ पाठान्तर—बावन । सामन्तं । करै । गुरुपाइ । गुरुपाइ ॥

८८ पाठान्तर—बावन । बावन । स ॥

८९ पाठान्तर—भुवाल । किन । रव । होरावौ । पांनि । अरो । पांनि । कहि ।

९० पाठान्तर—गज । होराय । समय । पांनि । सौं । सं । हथ ॥

यह कौतुक देखकर सरदारों का आश्चर्य में होना और
सब का दरबार में आकर बैठना ॥

गाथा ॥ बंधन दीन सु पाइं । कौतिगं दिष्ययं सब्ब सरं ॥
मंनिय मन आचिज्जं । बैठे फेरि आइ दिवानं ॥

कं० ॥ १६५ ॥ ह० ॥ ८१ ॥

पृथ्वीराज का सब बीरों को प्रणाम करना, चन्द्र का नाम
ले लेकर सब बीरों को पहिचनवाना ॥

परसे बीर सु सब्बं । करी प्रथिराज पाइं परिनामं ॥
प्रथक चन्द कथि नामं । पहिचाने बीर वीरायं ॥

कं० ॥ १६६ ॥ ह० ॥ ८२ ॥

चन्द्र का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इन को
बुलाया है इस से इन की बलि दो पृथ्वीराज का
बावन घडा मदिरा बावन बकरे मंगाकर बलि
देना और भैरव आदि की पूजा करना ।

कंद पड्वरी ॥ पहिचानि राज प्रथिराज बीर । भयो उदित मन आनंद घीर ॥
कविचंद कहिय प्रथिराज राज । इन देहु सुबल व्याकुल समाज ॥ १६७ ॥
विन कज्ज अप्प आराध कीन । नवि विहित कुसल लभ्यो सुईन ॥
बावन घट वासनि मंगाइ । बावन बीर प्रति घट पाइ ॥ १६८ ॥
बावन अजासुत भष्य आनि । दीने सु आदि भैरव निदांन ॥
सिंदूर तेल पुहपनि अरच्चि । सन्तोषि पोषि सब तन चरच्चि ॥

कं० ॥ १६९ ॥ ह० ॥ ८३ ॥

८१ पाठान्तर-दीय । सु पाय । पाईं । सब्ब देषोय । दिष्यय सब । मनिय । आचिजं ।
फिरि । आय । दीवानं ४ ॥

८२ पाठान्तर-कर । करि । पाय । प्रथुकर । करि ॥

८३ पाठान्तर-पहिचानि । प्रथीराज । भयो । श्रीर । कहीय । प्रथीराज । स । व्याकुल ॥
१६७ ॥ कज्ज । कुशल । नभों । बावन । घट । मंगाईं । घट । पात ॥ १६८ ॥ भष्य आनि ।
निदांन । आरच्चि । चरच्चि ॥ १६९ ॥

वीरों का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि बर माँगो सो
हम दें और अब हमको बिदा करो ॥

दूचा ॥ मये त्रिपत बीराधिवर, पूरन उक्क उकार ॥

अति आनन्दत उल्लसत, बोलै बयन वकार ॥

कं० ॥ १७० ॥ ह० ॥ ८४ ॥

मङ्गि मङ्गि महिपति तुअ । सोइ समयै आज ॥

दै सुविदा न बिलख करि । जु ककु चित्त तुअ काज ॥

कं० ॥ १७१ ॥ ह० ॥ ८५ ॥

पृथ्वीराज की और से चन्द का कहना कि लड़ाई के समय
हमारी सहायता कीजिएगा ॥

गाथा ॥ जंपे वर वरदाई । तुम वरं बीरं देव देवाधिं ॥

भौ प्रथिराज सहाई । जुइं जथ राज जुहाईं ॥

कं० ॥ १७२ ॥ ह० ॥ ८६ ॥

भैरव का चन्द को बुलाकर कहना कि जब तुम्हें टेढ़ा
समय आवे तब हम को याद करना ॥

गाथा ॥ तव वर भैरव बीरं । उचारीगं संमुष्यं चन्दं ॥

जं तुंम बंकट ठौरं । तं सँभारं विचित अम्हाईं ॥

कं० ॥ १७३ ॥ ह० ॥ ८७ ॥

गाथा ॥ परतिपि अन्ह सुहुब्बं । करयं जुइं तच्च साहसं ॥

जथ्यं चण्डिन चन्दं । तथ्यं करै न हम आगमं ॥

कं० ॥ १७४ ॥ ह० ॥ ८८ ॥

८४ पाठान्तर-तृपति । डंरु । डरु । आनंद तन । वैन ॥

८५ पाठान्तर-महिपति । समयै । दैह । तू ककु चित्त काज ॥

८६ पाठान्तर-ज्यै । घर । बीर । देवधि । वीर देवाधि । जुहाई ॥

८७ पाठान्तर-उचारीगं चद संमुषं । तुंम । बंकट । ठौरै । सभारै । संभारै । विचित । अम्हाईं ॥

८८ पाठान्तर-अन्ह । जुहु । तच्च । साहसं । जयं । तथ्यं । हम । आगमं ॥

बचन देकर बीरों का बिदा होना, सरदारों का चन्द की
बात पर प्रतीत करना और पृथ्वीराज का चन्द
पर अधिक प्रेम बढ़ना ॥

दूहा ॥ दइय वाच सब वीर नैं । बहुराए कवि चन्द ॥

सब सामंत अनन्द भौ । दरसत नठे दन्द ॥

छं० ॥ १७५ ॥ ह० ॥ ८९ ॥

सत्य करै मान्यौ सकल । हरषित भय प्रथिराज ॥

प्रेम बढ्यौ अति चन्द सों । साइस रीत समाज ॥

छं० ॥ १७६ ॥ ह० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज का चन्द से कहना कि सब सरदारों को मन्त्र
बतला दो, चन्द का सब को मन्त्र बतलाना ॥

गाथा ॥ तब कुंअर कहि चन्दं । देहुं मन्त्रं सब्बं सामन्तं ॥

तब कहि मन्त्रं चन्दं । कीन अप्प अप्पं सहायं ॥

छं० ॥ १७७ ॥ ह० ॥ ९१ ॥

चन्द को बीस गाँव और एक घोड़ा पृथ्वीराज ने दिया ॥

दूहा ॥ बीस गांमं कविचन्द प्रति, करी कुंअर वगसीस ॥

एक बाजि साजति सजहि । दीयौ सु सम्भरि ईस ॥

छं० ॥ १७८ ॥ ह० ॥ ९२ ॥

इति श्रीकविचन्द विरचिते प्रथिराजरासके आषेटक

बीरवरदान बर्णनं नाम षष्ठ प्रस्ताव

सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥

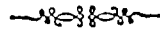
८९ पाठान्तर-वीरनैं । सामंत । नठै ॥

९० पाठान्तर-सति । करे । मंन्यौ । हरषत । प्रथीराजं । समाजं ॥

९१ पाठान्तर-देहु । मंत्र । सब । अप्प । अप्प ॥ * यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

९२ पाठान्तर-यांम । कुअर । कुंअर । सजि । दीयौ ॥

अथ नाहर राय कथा वर्णनं लिख्यते ॥



(सातवां समय)

सोमेश्वर देव का शिवरात्रि का व्रत जागरण करके सोने की
तुला दान करना और उसे बांट देना ॥

दूहा ॥ ग्यारह सौ गुन तीस बदि, फागुन चवदसि सोम ॥
शिवरत्ती सोमैस नृप, निसा मण्डि जप होम ॥

कं० ॥ १ ॥ ह० ॥ १ ॥

पञ्च गव्व अज्ञान करि, सीस सहस घट मण्डि ॥
दीपदान घत सहस शिव, कुसुमंजलि सिर ळण्डि ॥

कं० ॥ २ ॥ ह० ॥ २ ॥

शिव उपास सोमैस वर, पञ्च उपासि सुराज ॥
महा मोह भक्ती सुगुर, करिय किति कविराज ॥

कं० ॥ ३ ॥ ह० ॥ ३ ॥

श्लोक ॥ शिवशिवा उपास्य राजन् वीर्य देवन कामयम् ॥
कविचन्द महावाणी, प्रगट रूपेण विस्मितम् ॥

कं० ॥ ४ ॥ ह० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ चतुर जाम जगिगय नृपति, कनक तुला तहँ कीन ॥
प्रात तमै वर दुजन कहुँ, वंदि अप्प कर दीन ॥

कं० ॥ ५ ॥ ह० ॥ ५ ॥

१ पाठान्तर-दोहा । सैं । सैं । सुनि । चवदसि । शिवरती । जप ॥ इस रूपक में
संवत् ११२८ अनन्द साक वा पृथ्वीराज का तृतीय साक है । इस का वर्णन कवि ने आदि पर्य
के रूपक ३५५ । ३५६, पृष्ठ ५३८ में किया है । तदनुसार इस में अन्तर के ८० । ८१ वर्ष जोड़ने से
११२८ + ८० । ८१ = १२०८ । १२२० । वर्तमान विक्रमी होगा ॥

२ पाठान्तर-पचगव्व । अज्ञान । सहस । दान । महास । कुसुमंजलि । शिर ॥

३ पाठान्तर-शिव । स राज । स गुर ॥

४ पाठान्तर-शिवशिवा । राज । राज्य । वीर्य । कामय । वानी । रूपेण । विस्मितं ॥

५ पाठान्तर-जाम । तहा । तमै । कहुँ ॥

अन्न अमार अपार उठि, जिहि लीनो दिव ताहि ॥
करस भोग भोजन भले, रची न मनसा काहि ॥

कं० ॥ ६ ॥ छ० ॥ ६ ॥

उमय ईस अग सोम पुनि, अस्तुति मण्डि समुष्य ॥
तब चिनेत तन ताप हर, संचन सेवक सुष्य ॥

कं० ॥ ७ ॥ छ० ॥ ७ ॥

शिव जी को स्तुति करना ॥

कवित्त ॥ विदित सरल अति चपल । विमल मति कञ्ज निअच्छिनि ॥

गीत राग रस रटित । सती लंपट विस भच्छिन ॥

भुगति दैन जन विभव । भूर भूक्ति तन सोभित ॥

चिपुर दहन कबिचन्द । केन करन क्रम लोकित ॥

श्रीविश्वनाथ संमित गवन । गरल चिलोचन रस कुसल ॥

मुष अमल कमल परिमल बहुल । भुगति चारु चर्मन असल ॥

कं० ॥ ८ ॥ छ० ॥ ८ ॥

कन्द पडरी ॥ जत गरल कंड दीसहति बीय । जिम चित प्रगट संसार न य ॥

सारङ्ग उक्कह तिन पान पानि । दिवतुङ्ग जाल जव जवनि मानि ॥ ९ ॥

जट मुकुट गंग दीसहि उतङ्ग । सोभन्त चन्द लिखाट रङ्ग ॥

सारङ्ग मूल सादूल चर्म । सेवक सहाय अघ हरन कर्म ॥ १० ॥

कटि विकट निकट नटवत चिभङ्ग । यनभूत लेय विभूत अङ्ग ॥

बुन्द जा काम जा आप कूल । जैजै सुईस माया अमूल ॥

कं० ॥ ११ ॥ छ० ॥ ९ ॥

साटक ॥ कय्याली कपआल बाहु अहयौ, गिरजाइ सारङ्गनौ ॥

बीभच्छौ रस तय्य न्रित्य रतयौ, मुर्ब्बी सदा तुङ्गयौ ॥

६ पाठान्तर—अमरअन्न । उठि । जिहि । नहीं ॥

७ पाठान्तर—मंडिय मुप । मंडीय समुप ॥

८ पाठान्तर—विअच्छनि । विअच्छिनि । विपभयिन । विभौ । क्रत । गवन । कुशल । चांस । चर्मन । असल ॥

९ पाठान्तर—जुत । दीसहति । जम । पानि पानि । * “दिव तुङ्ग जाल दिव दिव न मानं” संभत् १६४० की पुस्तक में पाठ है ॥ ९ ॥ लिखाट । सादूल । चर्म । कर्म । विभूत । अमूल ॥

रुद्रो रुद्रि पाय नग्नि उरथौ, चास्यं रसं शङ्करं ॥
जामन्तं गिरिजानिनं विरचयौ, कर्नाथ कामं चयं ॥

छं० ॥ १२ ॥ छ० ॥ १० ॥

साटक ॥ वामं गौरि शृंगार चास्य नगनं, कर्नाथ कामं चयं ॥
रौद्रं रौद्ररि पाय भार दमनं, वीरं त्रिनेत्रं ज्वलं ॥
मै भीतं दिषि अङ्ग भङ्ग अहितं, वीभच्छ नटव्वतं ॥
सान्तं संमित जोग दीन अदभू, तौ रस्स रस्तं शिवं ॥

छं० ॥ १३ ॥ छ० ॥ ११ ॥

शिवजी की स्तुति करके सोमेश्वर देव का अपने कुमार
के विवाह कि लिये नाहर राय के पास दूत भेजना ॥
दूता ॥ सा देवच करि अस्तुती, वर सोमेश कुमार ॥
नाहरराइ नरिंद कै, दूत संपते वार ॥

छं० ॥ १४ ॥ छ० ॥ १२ ॥

शामदामादि में निपुण दूत का पत्र दरसाना ॥

गाथा ॥ सामं दामं भेवं । वेदं गुनं विगयं अंगार्ई ॥
जानं पनं सलीहं । ते पत्तं दूत दरसायं ॥

छं० ॥ १५ ॥ छ० ॥ १३ ॥

कवि का सनीचरी दृष्टि के योग पर से भविष्य में वैर दोष
होने का कथन करना ॥

साटक ॥ दिष्टी दिष्ट, सनीचरी वसहिने, हनेपि दुज्जं घरं ।
पावारं परिहार वैर गुरय, जहांरु वैाचानयं ॥

१० पाठान्तर—कप्याल । यहयो । गिरिजाई । गिरसाई । नो । वीभच्छे । तप । रतये
सुर्ती । तुंगयो । उरथो । गिरिजां । करुनाथ । काम ॥

११ पाठान्तर—शृंगार । करुण्यथ । काम । चिय । त्रिनेत्र । भय । वीभच्छ । नटव्वतं
नटव्वतन । इदभूत । अदभुत् । नौ रस । नौ रस्स । रमित ॥

१२ पाठान्तर—अस्तुति । नाहरराय । कै । कै । सपते ॥

१३ पाठान्तर—दानय । गुन । विगय ॥ * यह हरक स० १२७७ पौर १८५६ की लि
पुस्तको में नहीं है ॥

सोगिनीरि समस्त संयुत कला, भारथ्यनो द्रिष्टयं ।
साबाला वर वैर ग्रेह तिगुना, के के नगे राजयं ॥

कं० ॥ १६ ॥ ह० ॥ १४ ॥

कवि का कहना कि स्त्री के कारण से वैर दोष आगे रामादि
घड़े बड़े का हो चुका है ॥

कवित्त ॥ गयौ चन्द तारिका । पुत्र लज्जा विन आन्यौ ॥

षेच वीर्य सम्भवै । वीर्य लभवै न पान्यौ ॥

वैर दोष श्रीराम । वैर दोषइ दुर्योधं ॥

वैर दोष नघुराई । वैर दोषइ मुचकन्धं ॥

सा वैर दोष पण्डव बलिय । मात वचन ग्रह दोष सहि ॥

इक दिनइ समय सुन्दरि सचिय । सभ समय इह चरित लहि ॥

कं० ॥ १७ ॥ ह० ॥ १५ ॥

कामधेनु का चरित्र ॥

कवित्त ॥ कामधेन पच्छै प्रचण्ड । त्रिषभयं चइ अधिकारिय ॥

एक एक उत्तरै । एक चट्टै रस भारिय ॥

हसी सची दिषि निजर । दीन सराप सुधेनइ ॥

हैं पसु तुअ सुमनुच्छ । होइ पञ्चाल ग्रेह मह ॥

लभी सुपच्छ जननी बचन । यंति लई क्रम क्रम सुसर ॥

तिह ग्रेह और जो सम्भवै । तौ बनहिं डैवर सबर ॥

कं० ॥ १८ ॥ ह० ॥ १६ ॥

प्रात समय जगते ही दूत का पत्र पठना ॥

१४ पाठान्तर-हननोपि । दुजन । दुज्जन । घनं । परिहारं । पावार । वैर । जदौर ।
घहुवांत । गिरिनारि । भारथ ॥

१५ पाठान्तर-श्रीरज । लभवै । श्रीराम । दुर्योधं । तघुराय । मचकन्धं । दिन । सुन्दर । इक ॥

१६ पाठान्तर-कामधेनु । पच्छै । प्रच्छै । प्रच्छण्ड । त्रिषभ । अधिकारीय । उत्तरै । चट्टै ।
भारीय । साराय । हो । तूं । मनुष । मनुक । लभी । सुपच्छ । बटि जौर । हीण्डे ॥

दूहा ॥ भयौ प्रात जगात दुतिय, बंचि सुकगद पानि ।
आवू रा सलषान लिषि, बर गिर नारी बानि ॥

कं० ॥ १९ ॥ ह० ॥ १७ ॥

उस पत्र में बीर रूप देवस्थान हिंगुलाज के प्रभाव से
पृथ्वीराज के बलवान होने और नाहरराय के बल
प्रताप का वर्णन था ॥

कवित्त पूना कर पर बत्तह । कोरि दह नील सवायौ ॥
बीर रूप इक रुद्र । थांन हिंगुलाज बनायौ ॥
देवल एक अचम्भ । हेम पुत्तलि इक मंडी ॥
धूप दीप साषा* सूरङ्ग । धजा पत्ताकह ठण्डी ॥
दिष्पन सुथांन आचम्भ बर । ज्यौ कवि मंची होइ कल ॥
कवि कहै चन्द बरदाइ बर । जौ चहुआन सुहोइ बल ॥

कं० ॥ २० ॥ ह० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ बर गिरनारि नरेस । सिंधु बही सुरतानं ॥
तेज तुङ्ग तप तेज । वैर भंजै अरि पानं ॥
वर गुज्जर वैसाहि । जमत अड्डौ सुस्त्र बल ॥
तिन मुक्कलि दिथ दून । राज सम्भरिय पित्ति षल ॥
परिहार नाथ नाहर नृपति । दुह बक्यौ इक इक्क अग ॥
जानें कि जरा जुब्बन दुवन । सामन्तां संतोष भग ॥

कं० ॥ २१ ॥ ह० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ इत सामन्तन नाथ । वाथ बडवानल घल्लन ॥
सण्डल घल्लन नाथ । सार अगगी पन जल्लन ॥
अकह कहानी करन । सरन रष्यन असरन बल ॥
सुथिर अथिर करि थपन । अंग जग जन दाहन दल ॥

१७ पाठान्तर—शानि । पान । बानि ॥

१८ पाठान्तर—शरवत्तह । प्रवत्तह । घान । थानि । हिंगुलाज । फूतरि । पुत्तलि । * अधि-
पाठ है । सुरङ्ग । पत्ताकह । दिषिन । सु थात । ज्यौ । कहै । जौ । चहुंवांन । चहुंवांन ॥

१९ पाठान्तर—पटौ । पान । गुज्जर । बडौ । मुक्कलि । पित्त । षल । जानें । जुब्बन । सामन्तां ।

भुअ लोक सोक हर सुद्धिन तन । पन अप्पन सोमिस सुअ ॥

क्वच धर्म कलिमल मलन । तिद्धिन क्कोर पिष्पिय सुदुअ ॥

कं० ॥ २२ ॥ ह० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ चलत पंषि पिषि बाज । पिष्पि मृगराज मृगनि गन ॥

गोधन धरत गुवाल । हंकि जै चलत वननि वन ॥

महु तजि चलत मुद्धान । अन्य तरु साष लगन कहूँ ॥

बदल विसद विसान । चलत वसि पवन गगन महुँ ॥

तिम नाहर राइ नरिन्द पिषि । समर सहिन सककहि सकज ॥

गिरि लङ्क सङ्क सम बढ गरुअ । गिरद पारि किज्जै अजक ॥

कं० ॥ २३ ॥ ह० ॥ २१ ॥

पट्टन में चौलुक्य भीमदेव, आबू पर जैत (सलख?) पंवार,

मेवाड में समरसिंह, दिल्ली में अनङ्गपाल जैसे

बलवानों में मण्डोवर में नाहरराय के

राज्य करने का वर्णन ।

कवित्त ॥ उत पट्टन भीमंग । ब्रह्म चालुकक लोह लुअ ॥

अब्बू जैत पवार । लोह लरि जांनि अचल धुअ ॥

समर सिंघ मेवार । दण्ड देवार अजर जर ॥

दीली पत्ति अनंग । लरन अड्डौ सुलोह लरि ॥

परिहार नाह नाहर नृपति । इतन बीच अप बल रहै ॥

मण्डोवराइ मारु मरद । वर विरद बंके बहै ॥

कं० ॥ २४ ॥ ह० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्था: में दिल्ली ननिहाल में
आना, दिल्लीश अनंगपाल के अधीन राजाओं का वर्णन ॥

२० पाठान्तर—घलन । जलन । कहांती । रपन । अर्ग । जगन । जग । कलिमल कलि
मलन । पिष्पिय । सुअय ।

२१ पाठान्तर—पंष । बाज । पिषि । मृगनी । वनन वन । महुवाल । साष । कहूँ । कहु ।
महु । नाहरराय । सकहि ॥

२२ पाठान्तर—चालुक । अबू । जांनि । दिल्लीपति । अड्डौ । बीचि । विरद । बहै ॥

कवित्त ॥ बरष अठु प्रथिराज । गयौ मुसाल दिल्ली यक्ष ॥
 राज करे अनंगेस । सेव मरुधरा करै सक्ष ॥
 मंडोवर नागौर । सिंधि जलवह सुपठै ॥
 पेसौरां लोहार । धरा कंगुर लुगि कंठै ॥
 कासी प्रयाग गढ देवगिर । इते सेव अग्या धरै ॥
 सीमाडवियां संकै सुपसु । श्रित अनंग सेवा करै ॥

कं० ॥ २५ ॥ छ० ॥ २३ ॥

मंडोवर के नाहर राय का दिल्लीखर की भेट को दिल्ली
 आना, पृथ्वीराज का रूप देखकर प्रसन्न होना और
 माला पहिरा कर कहना कि जब पृथ्वीराज
 सोलह वर्ष का होगा तब मैं अपनी
 कन्या इसको विवाह दूंगा ॥

कवित्त ॥ आयौ नाहर राइ । सेव आदरय दिलेसर ॥
 दिषि कुंवर प्रथिराज । नूर अदभूत नरेसर ॥
 अंबर माला इक्क । अंक पहिराइ कछौ बूझ ॥
 मै दिखी रूपमंगि । सबै उच्छाह कियौ यक्ष ॥
 आनंट तेज राजा अनंग । प्रथीराज आयौ घर ॥
 दुइ अठु बरस जब बीति गय । व्याह्युं कछा दव गिरक्ष ॥
 कं० ॥ २६ ॥ छ० ॥ २४ ॥

नाहर राय का मत पलट जाना अर्थात् कन्या
 देना अस्वीकार करना ॥

२३ पाठान्त-प्रथीराज । मुर । छप । बट । पुठै । पेसौरा । कटे । इते । पक्ष । धत ॥

२४ पाठान्त-नाहरराय । आदरी । दिलेसर । देधि । कुंवर । प्रथीराज । अदभूत । बक ।
 पहिराय । योधी । सबै । उच्छाह । कियौ । यक्ष । आभग । अनंग । प्रथिराज । आयौ । मत ।
 बीतिगा । व्याहयुं । व्याहयु । देवगिर ॥

दूहा ॥ लालपनै प्रथिराज नै, दिथ कंचन वैमाल ॥

मतौ फिरि किनौ अक्रम, नाहर राइ विसाल ॥

कं० ॥ २७ ॥ ह० ॥ २५ ॥

नाहर राय का उत्तर लिखना कि तुम्हारा कुल
आदि हमारे योग्य नहीं है ॥

कवित्त ॥ लिषि कगद परिमान । थान अजमेर पठाइय ॥

दूत पंथ अखिखंब । पास संभरि वै आइय ॥

चिंति मत्त आरंभ । सेन पारंभ विचारिय ॥

बाल बीर प्रथिराज । देइ नांही परिहारिय ॥

सग पन सुआदि सम वर नृपति । समर जुद्ध साधै समर ॥

कुल हुंठ नाम दिजै नहीं । इह कलंक लगै सुघर ॥

कं० ॥ २८ ॥ ह० ॥ २६ ॥

अरिख ॥ घेतरपाल कौं पूजै कौनं । जो परहरि गौ विंदह मैनं ।

परहरि सिव उमया गुन तचं । को मंडै चंडाली मंचं ॥

कं० ॥ २९ ॥ ह० ॥ २७ ॥

दूत का यह पत्र लाकर पृथ्वीराज के हाथ में देना ॥

दूहा ॥ लिषि कगद परिहार पर, विवरि विवर करि दूत ॥

लै दीनौ प्रथिराज कर, समी संभ सपहूंत ॥

कं० ॥ ३० ॥ ह० ॥ २८ ॥

पृथ्वीराज का क्रोध करना, सोमेश्वरदेव का समझाना ॥

कवित्त ॥ बढि अवाज* अजमेर । बंचि कगद चौरासिम ॥

परिहारह सब सेन । धर्म परिहरि बळ्छौ भ्रम ॥

२५ पाठान्तर-बालपनै । पृथीराजनै । फिर । कीनौ । नाहर राय ॥

२६ पाठान्तर-परिमान । थान । चित्ति । मत्त । विचारीय । पृथीराज । देत । नाहीं । परिहारीय । नृपति । जुध । साधै । नाम । दिजै । नाहो । लगै ॥

२७ पाठान्तर-घेत्रपालकूं । पूजै । गो । मैनं ॥

२८ पाठान्तर-पृथीराज । पहूंत ॥

सूर नूर तिन तेज । मध्य अषियन यैं राजै ॥
 प्रात ओसु जिम बूंद । जबह अग्रच अनु साजै ॥
 मंगल अनेक जंपत करत । तात वरज्यौ पुच फिरि ॥
 मंजाह साच सिसु बत्त सुनि । करहि जुड भुम्मिय सु जुनि ॥
 कं० ॥ ३१ ॥ क० ॥ २९ ॥

सरदारों का पत्र सुनकर क्रोध करना ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त सामंत । बँचे कग्गद परिहारौ ॥
 सीस लगिग असमान । षिज्यौ लंगा वंगारौ ॥
 सिंघाने करि हन्यौ । केन जबू कवर षड्यौ ॥
 केन कीन सनि राह । जुड तारा ससि बध्यौ ॥
 वर कन्ह नीर सोमिस पहु । चाहुवान बकरियै ॥
 बाहंत वीर अरि नीर विच । दल चौहाना तारियै ॥
 कं० ॥ ३२ ॥ क० ॥ ३० ॥

कवित्त ॥ मुक्कै दूत सुदूत । रत्त गुन अरिन विरत्ता ॥
 चिंत तनौ सिर भार । सार कारज सो रत्ता ॥
 वर अघ्यन जानही । प्रमान नृमान सुरघ्यै ॥
 द्रिग राजान प्रमान । देस विदेस परघ्यै ॥
 ते दूत सपत मंडौवरह । चर चरिच अनुसरि परे ॥
 भय प्रात राज दरवार गय । दिष्यि धार धर धर उरे ॥
 कं० ॥ ३३ ॥ क० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये सेना सजना ॥

२९ पाठान्तर-आवाज । धूम । मधि । अषियन । राजे । उस । बूंद । अघन । मंजाह
 माह । भूमिय ॥ • यह शब्द अर्थात् "आवाजि और आवाज" आदिपदों के रूपक १८१ तथा
 १८२ पृष्ठ ७६ में भी आया है । उस पर की टिप्पण देखो । संस्कृत 'घात' और 'वाद' शब्द
 Sound, sounding, discourse, speech and prayer आदि के अर्थों में प्रयोग होते हैं उन से यह
 हिन्दी अपभ्रंश शब्द बने दीखते हैं ॥

३० पाठान्तर-सुनीय । सामंत । बँचे । बचे । कग्गद । असमान । लंगा । कर । पद्यौ ।
 हानं । षयो । कन्ह । चाहुवान । बहुवान । बकारीयै । बाहट । विचि । चौहानां । तारीयै ॥

३१-पाठान्तर-मुक्के । काण्डि । जान हि । प्रमान । विमान । प्रमान । राजान । विदेस
 परघे । संरत । चर चरिच । दिषि ॥

दूषा ॥ तार बरज्यौ बत्त बहु, एक न आवै दाइ ॥
उत प्रथिराज नरिंद ने, सज्ज्यौ सेन सुभाइ ॥

कं० ॥ ३४ ॥ क० ॥ ३२ ॥

सेना का वर्णन ॥

लघुनाराच ॥ ह्य गगयं सजे भरं । निसांन बज्जि दूभरं ॥
नफेरि बीर बज्जई । मृदंग भल्लरी गई ॥ कं० ॥ ३५ ॥
सुनंत ईस रज्जई । तनीस राग सज्जई ॥
सुभेरि भुंकयं घनं । अवन्न फुहि भंभनं ॥ कं० ॥ ३६ ॥
नरह नाद रिभक्तयं । चुसठु ताल दिज्जयं* ॥
तुरंग पंति चल्लयं । मनौं जलह चल्लयं ॥ कं० ॥ ३७ ॥
तरप्पि तेज तामसी । मनौं कि नह वामसी ॥
भल्लक्कि मंत दंतयं । मनौं कि बीज पंतयं ॥ कं० ॥ ३८ ॥
जेर जराय बंगरी । मनौं चमक्क विज्जुरी * ॥
सिरीसु सोभ जगयं । कि भान मेघ उगयं ॥ कं० ॥ ३९ ॥
अवंत सोभ दानयं । भरंत मेघ जानयं ॥
उपंम और दुत्तियं । पिलाव राह पुत्तयं ॥ कं० ॥ ४० ॥
उपंम तीय उद्धरं । कि मिच कज्जलं गिरं ॥
जु वैरपं विराजही । वसंत वृष्ण लाजही ॥ कं० ॥ ४१ ॥
दुरंत चौर सीसयं । गिरं कि गंग दीसयं ॥
दुती उपंम लगयं । कि बहलं कि बगयं ॥ कं० ॥ ४२ ॥
जु घूघरं घमक्कयं । कि दादुर सु भहयं ॥
दुती उपंम मेलयं । सुहाग वाम केलयं ॥ कं० ॥ ४३ ॥

३२ पाठान्तर—दाय । पृथीराजनै । सुभाय ॥

३३ पाठान्तर—कंद लघुनाराज वा नराजा । ह्यगयं । निसांन । दुभरं । बजई ॥ ३५ ॥
रजई । सजई । बजई । नफेरि । अवन ॥ ३६ ॥ नारद नरद रिक्तयं । चौमट्ट । * यह दूसरा पाठ
सं १६४० की पुस्तक में नहीं है । चलयं । मनौं । जलद । हल्लयं ॥ ३७ ॥ तरपि । तामसी ।
मनौं । वामसी । भल्लक्कि । मनौं । बगयंतयं ॥ ३८ ॥ * ये दोनों पाठ सं० १६४० की पुस्तक
में नहीं हैं । ससोभ । जगयं । भान । उगियं ॥ ३९ ॥ दानयं । जानयं । दुतीयं पिलावे । पुत्तियं ॥
४० ॥ उपंम । कज्जलं । ह ॥ ४१ ॥ चौर ॥ ४२ ॥ घूघरं । घमघमं । बहुरं । भहयं । उपम ॥ ४३ ॥

सुघट घोर सोरयं । सुनंत श्रोन फोरयं ॥
 तिलककं चंद्र साजही । मनैं गनेस राजही ॥ * कं० ॥ ४४ ॥
 दुती उपम जगयं । द्वंकि लगिग पब्वयं ॥
 गह्व गर्ज सदयं । मनैं कि मास भदयं ॥ कं० ॥ ४५ ॥
 सु पीलवांन चंदयं । अरापती कि इंदयं ॥
 सुअस्सवार राजही । कि जंम जोर साजही ॥ कं० ॥ ४६ ॥
 मिलंत मुंक् नैनयं । तिलगिग सीस गैनयं ॥
 ते रूप भूप मारसे । कि अश्वनी कुमार से ॥ कं० ॥ ४७ ॥
 चिगुंन तेज तंतनं । तिनंक कंक मंमनं ॥
 सनाह रूप अंगमं । मनैं कि जोग जंगमं ॥ कं० ॥ ४८ ॥
 सनाह जोति दिष्ययं । मरीच भान भिष्ययं ॥
 सुभह कंद बहयं । कि वीर वान सदयं ॥ कं० ॥ ४९ ॥
 आगंम विप्र बोलयं । बुलास कचि चालयं ॥
 सु पाइ कंषनं षनं । वुलंत ते भनं भनं ॥ कं० ॥ ५० ॥
 जुरंत जाम मल्लयं । प्रभा प्रसाद वुल्लयं ॥
 तिमध्य राज पिथ्ययं । सु अंग गंग तिथ्ययं ॥ कं० ॥ ५१ ॥
 सामंत मध्य सोभयं । कि इंद्र देव लोभयं ॥
 कि पथ्य पंडवं दलं । धनुक्क वान सब्वलं ॥ कं० ॥ ५२ ॥
 चढंत राज प्रातयं । ते दूत देषि जातयं ॥
 कहंत अब्व घटायं । भई समुद्र पाटयं ॥ कं० ॥ ५३ ॥
 उषाह मध्य ते चलं । सगुन्न वंदि जे भलं ॥
 *ससूर सूरयं कलं । दिनं सु अष्टमी चलं ॥ कं० ॥ ५४ ॥ छ० ॥ २९ ॥

सुघट । तिलक । मनैं । गनेस । * यह चौथा पाद सं० १६४० की पुस्तक में नहीं है ॥ ४४ ॥
 गह्व । मनैं ॥ ४५ ॥ पीलवांन । चंद्रायती । बु दासवार ॥ ४६ ॥ मुह । नैनयं । नैनयं ॥ ४७ ॥
 चिगुन । तिनंन । मनै ॥ ४८ ॥ दिष्यं । मरीचि । भान । भिष्यं । बहयं । वान ॥ ४९ ॥ पाय ।
 भननं भनं ॥ ५० ॥ पिथयं । तिथयं ॥ ५१ ॥ पय वान संबलं ॥ ५२ ॥ अब । भयो ॥ ५३ ॥
 उषाह । मधि । सगुन । जे । * अंत के ये दोनों पाद सं० १६४० की पुस्तक में नहीं हैं ॥ ५४ ॥

पिता की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का लड़ाई
के लिये यात्रा करना ॥

कवित्त ॥ दिन अष्टमि रवि वार । राज सुभ मँडि प्रस्थानं ॥

अष्ट दिसा जोगनी । भई साहाय सुथानं ॥

अष्ट च्यारि भय भान । राजदौ अर्घ्य वधाइय ॥

इन में भौम अनिष्ट । चंद चौथे ग्रह आइय ॥

चले नरिंद धायि दूत तब । मन आनंद सु चंद हुअ ॥

प्रथिराज तात आग्या सुगुन । चरन बंदि चलि वज्र भुअ ॥

कं० ॥ ५५ ॥ ह० ॥ ३४ ॥

चौपाई ॥ * तात मात आग्या परमानहि । ता समान नह भ्रंम प्रमानहि ॥

गुरु द्रोही पति प्रोही जानं । सो निहचै नर नरकहि थानं ॥

कं० ॥ ५६ ॥ ह० ॥ ३५ ॥

नाहर राय के दूतों का पृथ्वीराज की चढाई और सेना
बल का समाचार नाहर राय को देना ॥

कंद पद्धरी ॥ नाहर नरिंद जे दूत आइ । समाचार सबै कहिते सुनाइ ॥

दिसि जीतसत्त चहुवान सूर । लषियै चरित्र मन मभक्त कहर ॥ कं० ॥ ५५ ॥

इक सचस स्वान संग नाम धार । देसान देस बल पग अपार ॥

तिन मंभक्त पंच सै पवन प्रात । पित मात असल लाहौर जात ॥ कं० ॥ ५६ ॥

पांभरी अंग जिन पसम हेत । दिषि दीप जोति तिन नैन हेत ॥

रातब्व मंस घृत दुग्ध पान । आजानवाह दिषियै बलान ॥ कं० ॥ ५७ ॥

रेसमी डोरि पही नरंम । रहै सीत कांच दुषित गरंम ॥

तिन सथ्य पंच सै और डोरि । ते रषिक विन को सकै कोरि ॥ कं० ॥ ५८ ॥

३४ पाठान्तर-शुभ । मँडि । भान । मै । भौम । अरिष्ट । चौथे । यह । नरिंद । धसि ।
पृथीराज । आग्या ॥

३५ पाठान्तर-आग्या । परमातीय । परमानहि । समान । धृम् । प्रमानाय । जानं ।
निहचै । नरकन । थानं ॥ * सं० १६४७ की पुस्तक में इसे अरिल्ल करके लिखा है ॥

३६ पाठान्तर-समाचार । सब । जित्त । सत । चहुधानं । मनमें । स्वान ॥ ५५ ॥ संग ।
नांमधार । देसान । मभक्त । से । असल ॥ ५६ ॥ नयन । रातब्व । पान । आजानवाह । बलान
॥ ५७ ॥ नरंम । सीत । दुषित । सद्य । होइ । ति । रषिक । विना ॥ ५८ ॥

इक आइ पेस इके अश्व मोल । बलवान अंग चष रक्षत षोल ॥
 सिक्कार नाम जक्षतह तिकान । आरंभ जुद्ध सब लषि विनान ॥ कं०॥५८
 इक सत्त ऊंट भरी जीन साल । तिन धरै अंग क्षिप्यै न काल ॥
 भेटैन वज्र वर नीर धार । तिन धरै अंग जे दल पगार ॥ कं० ॥ ६०
 सनाह महिम वरनी न जाइ । जिपनि कि देव दनुजनि उपाइ ।
 जनु ब्रह्म होम कठि मंच जोर । कै इद्रं अग्नि अप्ये अकोर ॥ कं०॥६१
 कै बहून अप्पि पाताल ईस । कै पवन प्रसन परसाद दीस ॥
 वाचिष्ट कठ्ठि कै कुंड होम । दीनी कि प्रसन है मात भौम ॥ कं०॥६२
 असि सिलह सथ्य लीनी नरेस । जितनह समर सज सचुदेस ॥
 कं० ॥ ६३ ॥ ६० ॥ ६६ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप सुनकार नाहरराय का चौकन्ना होना ।

दूहा ॥ सुनी पवर जव दूत सुष । चमक्यौ नाहरराव ॥
 ए अप्पन गनियै नहीं । वैरी विस हर घाव ॥
 कं० ॥ ६४ ॥ ६० ॥ ३७ ॥

अपने सरदारों से नाहर राय का कहना कि अब क्या
 करना चाहिये पहिले चौहानों से हम से और बात
 थी पर अब तो विगड़ गई ॥

कावित्त ॥ सुभ्रित सकल लिय बोलि । पुच्छि परिहार तिनहि मत ॥
 बाहुआन पायान । कक्षत आषिट जुद्ध वत ॥
 तनक भनक सी कान । दूत इत्तह सुनि आए ॥
 अप्प अचेतन रचौ । धरौ धर भूमि सदाए ॥

पाठान्तर—पेसि । बलवान । सिक्कार । नाम । जहां । कान । विनान ॥ ५८ ॥ सत
 उंट । धरै । क्षिप्ये । भेटैन । धरै ॥ ६० ॥ सनाह । महिम । जिपनि । उपाय । ब्रह्म । इद्र । अप्ये
 ६१ ॥ कै । पाठाट । कठि । प्रसन । भौम । भौम ॥ ६२ ॥ सथ्य । जितनह । सचु ॥ ६३ ॥
 ६० पाठान्तर—पवरि । चमक्यौ । कक्षत । गनियै । नहीं ॥

सोमेश हमह ककु द्वै नर्ची । तिन सुहित्त माना लई ॥
तब तौ सनेह ककु और चौ । अब तौ ककु औरै भई ॥

कं० ॥ ६५ ॥ छ० ॥ ३८ ॥

सरदारों का कहना कि लड़ना चाहिये ॥

दूहा ॥ कहत सुभट परिहार के दृश्य चढी क्यों देइ ॥
सख मारि दल भंजि कै । पग धार धर लेइ ॥

कं० ॥ ६६ ॥ छ० ॥ ३९ ॥

**नाहर राय का कहना कि आगे से बढ़कर एक बारगी उन
पर चढ़ाई करना चाहिये नहीं तो जीत न होगी ॥**

कवित्त ॥ सुनि मंडोवर राइ । कहन बलवंत सुभट सह ॥
द्रव्य उनह कर चढ्यौ । कहहि सुतौ * सति वत यह ॥
जाइ अचानक परौ । बहुरि केश्यौ नहिं जैहै ।
प्रथीराज उस सबल । मारि धरती सब लैहै ॥
इक सुनत सबन बैठी सुमन । सजन सेन बेगो कछ्यौ ॥
चर चरन चरचि कै बत इह । सो भक्ती मारग गछ्यौ ॥

कं० ॥ ६७ ॥ छ० ॥ ४० ॥

नाहर राय का सेना सजना ॥

दूहा ॥ सजी सेन मंडोवरह । नाहरराइ नरिंद ॥
संभरि संभरि राव नृप । उर उदोत आनंद ॥

कं० ॥ ६८ ॥ छ० ॥ ४१ ॥

३८ पाठान्तर—पुहि । चाहुआंन । पायांन । कांन । इतह । अचेतनह । सुदाए । हमह
कम । नही । सुहित ॥

३९ पाठान्तर—हय । कै ॥

४० पाठान्तर—मंडोवरराई । मंडोवरराय । सुनह । कह हि सुतौ सति वत रह । * अधिक
पाठ है । परों । नहिं । जैहैं । इंस । धरती जैहैं । सबल । बेगो । वत । भक्ती ॥

४१ पाठान्तर—नाहरराय । संभरि वार । उद्योत । आनंद ॥

पृथ्वीराज की सेना की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ सद्गुण सेन संभारी । नरेस* मध्य मन टारि पंच भ्रम ॥
 वीर सिंगार सुभंत । कंत जनु रत्त वाम सम ॥
 सत्तउभय नंचास । सिलह सज्जी चहुआनं ॥
 चंद्र देषि मन मगन । कविन तिन करै बधानं ॥
 पंचमी सोम रितु राज गत । सूर तेज जाजुलित हुअ ॥
 करतार हथ्य किती कही । वजि निसान चहुआन धुअ ॥

कं० ॥ ६८ ॥ ह० ॥ ४२ ॥

पृथ्वीराज का आगे से बढ़कर लड़ने के लिये जोवनराय को आज्ञा देना ॥

तवै सुजोवन राई । सूर साछौ चहुवानं ॥
 तुम गुज्जर वैषंड । गाम मुरधर अगिवानं ॥
 पंथ पंथ परवान । धाद अगिवानी किज्जै ॥
 सगा सपन जंपियै । हमनि आगेहि सुनिज्जै ॥
 वामान पंथ अंधी प्रकृति । विन टिट्टै दिट्टै न ककु ॥
 बन पंन अड्डु परवत रहै । भेद विना जानहि न ककु ॥

कं० ॥ ७० ॥ ह० ॥ ४३ ॥

जोवनराय का उत्तर दे कहना कि नाहरराय का पथ बांधा सो वह रक्षभूमि को तिरछी छोड़ कहीं चला गया ॥

तव्य सुजोवन राइ । वत्त जंपै चहुवानं ॥
 अड्डु पंन परवत्त । नत्त गुज्जर घर मांनं ॥
 लोधानौ आजान । पंथ बध्यौ पालुक्की ॥
 नाहर राइ नरिंट । गयौ तिरछी भुअ मुक्की ॥

४२ पाठान्तर-संभारि । * अधिक पाठ है । मधि । सिंगार । सज्जी । चहुआन । पेषि ।

वधान । रिते । हय । किती । निसान । चहुआन ॥

४३ पाठान्तर-तवै । राय राव । चहुवान । चहुआनं । गुज्जर । मांन । मुरधुर । अगिवान ।

परवान । अगिवानी । कीजे । लिजे । वामान । टिट्टै । दिट्टै । अड्डु । अड्डु । परवत । जानै ।

करिवर अनेक केंवर ग्रहिय । ए अगैं कौ धाइया ॥
तिह ठाम चुक चिंत्यौ हुतौ । पै नाहर राइ न पाइया ॥

कं० ॥ ७१ ॥ ह० ॥ ४४ ॥

**सबेरे नाहरराय के भग जाने पर सांभू के पृथ्वीराज
का पहुँचाना और उसकी खोज करना ॥**

गयौ प्रात परिहार । संभू चहुआन सपनौ ॥
वरज्यौ जीवन राइ । घोज क्रम क्रम करिलिन्नौ ॥
पंथवान पुच्छ्यौ । नदी उत्तरि तिन अग्रिय ॥
ताते पूर नरिंद । वाज ततौ करि नषिय ॥
आनंद सिलह सज्जिय नृपति । पंपी पारिव मोह जिम ॥
ज्यौं गिह अंम पच्छो करै । चित्त दिगंबर कियौ तिम ॥

कं० ॥ ७२ ॥ ह० ॥ ४५ ॥

**चालुक के प्रधान (दीवान) के घर नाहरराय
का पता मिलना और सामन्त सहित
पृथ्वीराज का नदी उतरना ॥**

कुंडलिया ॥ नदी उतरि सामंत सह । डीस संपते जाई ॥
चालुक्कां परधान ग्रह । पटन नाहर राई ॥
पटन नाहर राइ । सेन सज्जे सथ घंच्यौ ॥
चय हजार असवार । वीर संधान जुसंच्यौ ॥
प्रात कूच उषरै । आज मुकांम जुदुस्तर ॥
भुकि प्रथिराज नरिंद । सिलह सज्जी नदि उत्तरि ॥

कं० ॥ ७३ ॥ ह० ॥ ४६ ॥

४४ पाठान्तर-तवैं । तवैं । यौवनराय । चहुआन । चहुवान । अद्रु । अडु । परवत ।
गुजर । मांनं । लोहानौ । अजांन । पालुकी । नाहरराय । भुइ । रहिय । के अगैं उधाइया ।
तिहि । ठाम । यैं । नाहरराव ॥

४५ पाठान्तर-चहुआन । संपनौ । यौवनराव । लोनौ । पंथवांल । पुच्छ्यौ । नदि । उत्तरि ।
अपीय । अप्पीय । नषिय । सज्जिय । पारेव । परेव । ज्यो । गट्ट । गंद । पच्छो । चित्त । डिगंबर । कीयौ ॥

४६ पाठान्तर-नदि । उतरी । उत्तरि । सामंत सब । संपते । जाय । चालुकां । परधान ।
राय । सेन जेन । सजे ऊपरै । मुकांम । सुदुस्तर । प्रथीराज । सजी । उत्तरि ॥

सुभट सहित सेना में पृथ्वीराज कैसा शोभता है ॥

कवित्त ॥ सुभट सिलह घट जोति । भयौ घट सिलह सुभटन ॥

कै * दोष मध्य भूडोल । कै * भान वदली सुभटन ॥

कै * मुकर मध्य प्रतिबिंब । कै * संभु विभूत अधारै ॥

ते आरसि में सार । हथ्य करतार सुधारै ॥

पाहार भार ठिल्लै क्रमनि । कै * उदधि मद्धि लंका दहै ॥

चिय वसिन द्रव्य अहू मोह वसि । तजि जुगिंद वानै ग्रहै ॥

कं० ॥ ७४ ॥ ह० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के ग्राम पहुंचने का समाचार नाहरराय का
सुनना और सेना इकट्ठी करना ॥

दूहा ॥ भई पवरि परिहार कौं, चढि आयौ प्रथिराज ॥

लग्यौ सेन एकत करन, दंद वजाने वाज ॥ कं० ॥ ७५ ॥ ह० ॥ ४८ ॥

घाटी पर पर्वतराय को रास्ता रोकने के लिये भेजना ॥

दूहा ॥ जहँ पव्वय घाटौ हुतौ, मीना मेर मवास ।

प्रव्वत सौं प्रव्वत मँझौ, अनमीजौ धन चास ॥ कं० ॥ ७६ ॥ ह० ॥ ४९ ॥

दूहा ॥ हुकुम कीन परिहार तिन, प्रव्वत मीना मेर ।

इतने तू रुकि एक टक, जितने आवत बेर ॥ कं० ॥ ७७ ॥ ह० ॥ ५० ॥

पर्वतराय का घाटी रोकना ॥

दूहा ॥ सुनि प्रव्वत घायौ तुरत, घाटौ रोक्यौ जाइ ।

चारि सहस मीना प्रवल, बैठे आइ वलाइ ॥ कं० ॥ ७८ ॥ ह० ॥ ५१ ॥

४० पाठान्तर—ज्योति । अधिरू पाठ है । मधि । भान । वदली । सुदटन । मुकर । विभु ।
विभूत । आरसि सार में । हथ । सुधारि । मधि । दहै । वसि । वानै ॥

४८ पाठान्तर—भई । कौ । प्रथौराज ॥

४९ पाठान्तर—जहा । जह । घाटौ । हुतौ । तहा मोतां । मीनां । परव्वत । सौं परव्वत ।
प्रव्वत । मँझौ । प्रव्वत । मँझौ । लौ ॥

५० पाठान्तर—परव्वत । इतने । इतने । हु । जितने ॥

५१ पाठान्तर—परव्वत । घाटौ । रोक्यौ । बैठे । चारि ॥

दूहा ॥ तीन पनच धुनहीं करन, बडे कटन तंडीर ॥

सगुन बिना पग ना धरै, विकट वंन हंडीर ॥ कं० ॥ ७८ ॥ ह० ॥ ५२ ॥

पर्वतराय कैसे घाटी रोक कर बैठा है ॥

कवित्त ॥ जंडोवर धर लाज । राज रघ्यन परिचारन ॥

स्वामित सक बज्रंग । जंग जिन अंग न हारन ॥

देत मेवासनि भेलि । मारि धर पर पसु लावै ॥

देषत कै राजान । बिरदवा नैन चलावै ॥

बैठे सु ओट हंपन उपल । करि तरकस उंधे धरनि ॥

देषंत वद्ध चहुवान की । भरै जानि विसहर वरनि ॥

कं० ॥ ८० ॥ ह० ॥ ५३ ॥

घाटी रुकने का समाचार पृथ्वीराज को मिलना ॥

दूहा ॥ लही षबर प्रथिराज तिन । मीनां मरद अमान ॥

पकरि लोह पब्वय गह्यौ । लहै को अगौ जान ॥

कं० ॥ ८१ ॥ ह० ॥ ५४ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का पर्वतराय से लड़ने का
कन्ह चौहान को भेजना ॥

कवित्त ॥ सुनि कुपिय प्रथिराज । जानि पुंखिय सुअप्य मलि ॥

मनु मृगराज मृगीन । जोर क्रुधिय दिषिय बलि ॥

ग्राह ग्रहन जनु जीव । देषि तुहिय सुमीन कह ॥

समर समुद जल पियन । जानि घट जन्म क्रोध मह ॥

षिजि कही कन्ह चहुआंन सहु । रंक आइ अड्डे फिरे ॥

सिर नाइ धाइ नरनाह तव । प्रब्वत सम प्रब्वत भिरे ॥

कं० ॥ ८२ ॥ ह० ॥ ५५ ॥

५२ पाठान्तर-धुनहीं । वट्टु । कठन ॥

५३ पाठान्तर-बजरंग । जंग किन अगन हारन । दैत । मेवासन । मेवासन । कै । राजान ।
विरदवां नेन । हंप ऊटन । औधे । चहुवांन । भरै । जानि ॥

५४ पाठान्तर-पवरि । प्रथीराज । मोनां । अमान । गह्यौ । अगौं । अगौ । जान ॥

५५ पाठान्तर-प्रथीराज । जानि । पुंखिय । मनो । क्रुधिय कि दिषि बल । जानि ।
चहुआंन । आनि । परब्वत । भिरै ॥

कन्ह का पर्वत से युद्ध और उसमें पर्वतराय का मारा जाना ॥

कंद भुजंगी ॥ मँडे सेर मीना ग्रह्यौ घोरि घाटौ । मिले आइ कन्ह मनों लौन आटौ ॥
मँडे मूल वृष्यं कहुं दंत ओटं । ठिले ना सुमेरं मँडे जानि कोटं ॥
कं० ॥ ८३ ॥

भई तीर मारं सरोसं सवेगं । तकै ताहि पारै सविद्धं अक्केगं ॥
महावज्रघातं उतप्पातमंड्यौ । करे हूल चाकं वरं वेग हंड्यौ ॥ कं० ॥ ८४ ॥
जुटे जुद्ध अनवद्ध करिकुद्ध ठाढे । करै ह्यथ वाहं पयं मंडि गाढे ॥
गिरै वान लगै वियं इत्त उत्तं । महाअंच विद्या गुं ड्रोन चित्तं ॥ कं० ॥ ८५ ॥
भई वान छाया न सूक्षै मरीचं । मिले लोह लकाह तत्ते नरीचं ॥
गिरै अश्व अस्वार लोहं जहीरं । परै जानि उंडूर वृष्यं गहीरं ॥ कं० ॥ ८६ ॥
हयं कंडि ननाह हूण उतारै । हहंकार वज्जै सहोमं पुतारै ॥
परै अश्व घातं सरोसं सरोरं । वकै केय वक्कं करै के अरीरं ॥ कं० ॥ ८७ ॥
सरं जान भाळं उडै लोह अग्गी । जरै पंप पंपी गिरै स्वर्ग मग्गी ॥
भरै मुठि कन्हं सरं मार वग्गं । निकसै सुविद्धे हुअै पग्ग उग्गं ॥ कं० ॥ ८८ ॥
लगै गुज्ज सीसं कहै उक्ति कोगी । पछारंत तूवा मनों पीजि जोगी ॥
वहै अस्सि द्विधघात रोसं प्रहारं । मनों निकसै सच्चनं तंततारं ॥ कं० ॥ ८९ ॥
लगै संग क्त्ती फुटै पुठि पच्छी । किकंधं कचारं कटै जार मच्छी ॥
जितं तित्त जटंत किंकिं रक्तं । फिरै भट भीते भयानं वक्तं ॥ कं० ॥ ९० ॥
नचै भूत बेताल घेतं भयानं । रसं वीर रस्से इसे निर्दयानं ॥
मिल्यौ भुष्य कन्हं परच्चत वीरं । हन्यौ अस्सि घातं धुक्यौ ता सरीरं ॥ ९१ ॥
जय्यौ कांध कन्हं असीघात धीरं । करी कटि संना परी चग्ग हीरं ॥
पख्यौ भुभिक्त प्रच्चत रावत्त सेरं । गज्यौ नाहरं गाज नाहर्मेवरं ॥
कं० ॥ ९२ ॥ कं० ॥ ९३ ॥

१६ पाटाकर-मँडे । मीना । घाटौ । मिले । कन्ह । मनों । लौन । लौन । मँडे । वृष्यं ।
उटै । ठिले । ना । मँडे ॥ ८३ ॥ सवेगं । कुक हाक ॥ ८४ ॥ करै । हय । गिरै । वान । लगै ।
वियं । इत्त । उत्त । दित्त ॥ ८५ ॥ वान । लकाह । गिरै । परै । जानि । वृष्य ॥ ८६ ॥ ननाह ।
१२९६६ । मँडे । मट मे । परै । सरोस । ककै । उंकिं । वक्तं । करै ॥ ८७ ॥ जरै । गिरै । भरै ।

पर्वत के मारे जाने पर नाहरराय का स्वयं टूट पड़ना ॥

कवित्त ॥ परत धरनि परवत्त । आइ हुक्किय नाहर रन ॥

बलबट्टे सह मेर । जानि हनुमान लंक बन ॥

इक्क गिरत घन थाप । इक्क बथ्यनि पक्कारिय ॥

बहर रूप सम भूप । रूप अनभूत संचारिय ॥

मानिकक बंस आयौ उतह । इत नाहर गल गज्जयौ ॥

परवत्त पख्यौ पहु पिष्यिकै । सिंधू वज्जनं वज्जयौ ॥

कं० ॥ ८३ ॥ लु० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज का भी चढ़ चलना ॥

कंद पद्धरी ॥ चढ चलयौ राज प्रथिराज ताम । साधन सुसेन वरं वरन वाम ॥

दुल्लहै भयो सोमैस पुत्त । वनिता विवाह मन कंक पुत्त ॥ ८४ ॥

बज्जहि निसान दस दिस गुरान । आषाढ अगम ज्यो मेघ थान ॥

रथ वाजि करी पयदल पुलेन । सज्यौ नरिंद चतुरंग सेन ॥ ८५ ॥

मुक्की सुभुम्भि अजमेर राज । यंतौ सुजाइ पढन समाज ॥

बज्जी सुलागि सिंधू निसान । भयभीत भेष भय दस दिसान ॥ ८६ ॥

बज्जिय सुभेरि भय भंकारीस । गज गजे गाह हय हठु हींस ॥

गिरनार देस अरु सिंधु वह । गज्जे सुगाज सजि थह थह ॥ ८७ ॥

ढलकंत ढाल वैरष्य रंग । सोभंत विपन रिति राज संग ॥

मिलि आय पंथ नाहर नरिंद । वीराधि वीर बट्टे सुदंद ॥ ८८ ॥

हक्कारि भट सेना स्वान । सासंत सूर करि लोह पांन ॥

कन्हा नरिंद आजान बाह । लंगरी राव स्वामित्त राह ॥ कं० ॥ ८९ ॥

भूठि । निकसै । बुट्टी । हुत्रै । उगं । डंग ॥ ८८ ॥ लगे । गुर्ज । गुरज । शीस । कहै । पकारत ।

तुंवां । मनां । वहै अश्व निर्घात । वहै । चिघात । मनां । निकसै । निकसै । सर्वन ॥ ८९ ॥

लगे । संगि । छती । फुट्टे । पुठि । मछो । कहारं । कठै । मृच्छो । तित । उठंत । छिछं । रकत ।

फिरें । फिरै । भट । वकतं ॥ ९० ॥ नचै । रसैं । मुय । सुपरवत । असि ॥ ९१ ॥ कन्हा । असि ।

कटि । संनाह । परि । चप । भुक्ति । परवत्त । रावत्त । नाहर । सवेरं ॥ ९२ ॥

५७ पाठान्तर—परवत्त । आय । हक्किय । बट्टे । बडे । जानि । हनुमान । रक । घन घाय ।

इक । बथन । पकारिय । पकारिय । सम रूप । संचारिय । संचारीय । मानिकं । मानिकू ।

गज्जयौ । परवत्त । पिपि । कै । सिंधू । वजन । वजयो ॥

संभारि वीर चालुकक भूप । उपज्यौ ब्रह्म कुंडह अनूप ॥
 अतताइ तुरग तेरह सुषंड । षिजि रछ्यौ रोपि रन रोहि भुंड ॥
 ॥ कं० ॥ १०० ॥

तिन ठाम आइ नाहर सुघेरि । वाहंत हथ्य जनु करिय केरि ॥
 ॥ कं० ॥ १०१ ॥ ह० ॥ ५८ ॥

इधर पृथ्वीराज इधर नाहरराय का सन्मुख युद्ध ॥
 कवित्त ॥ उत प्रथिराज नरिदं । इत सुपरिहार प्रबल रन ॥

दुअन खेन असि कट्टि । करन कलपंत समय जनु ॥

दुअन अङ्ग संनाह । दुअन नष चष्य उघारें ॥

दुअन इष्ट आरंभ । दुअनि दुअ हथ्य दुधारें ॥

दुअ सुम्भि अङ्ग दुअ देव जनु* । दुअन धार दुअ तुक् वहिय ॥

संनाह कट्टि कट्टी सुतुक् । तस उप्पम चन्दह कहिय ॥

कं० ॥ १०२ ॥ ह० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ दुअन हथ्य दुअ भूप । रूप अदभूत रेष वहि ॥

इन्द्र सिलह प्रथिराज । चंद्र परिहार तेज गहि ॥

दुअ अभंग संनाह । दुअन देवन आधारन ॥

दुअन तेज तन अस । हंस दुअ हंस समाधन ॥

अवतार भूत दुअ देव सम । दुअन चिन्ह उत्तम करिय ॥

परभास घेत परब्रह्म दृति† । अगु लंछन जनु धरि हरिय ॥

कं० ॥ १०३ ॥ ह० ॥ ६० ॥

५८ पाठान्तर—* ये ६४ । ६५ और आधा ६६ हट स० ५६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥
 प्रथीराज । ताम । वाम । दुल्लह । पुत ॥ ६४ ॥ ज्यौ । घान । पुजेन । मज्यौ ॥ ६५ ॥ मतौ ।
 वजो । लाग । निमान । दिमान ॥ ६६ ॥ वजिग । गजै सुराज हय हट हौम । गिरनारि । बट ।
 गजे । घट घट ॥ ६७ ॥ वैरष । बडे ॥ ६८ ॥ हहवार । भट । सवान । आमानवाह । स्वामित
 ॥ ६९ ॥ चालुक । ऊपज्यौ । तुरग । रोहि ॥ रिन रोप ॥ ५०० ॥ टाम । इय ॥ ५०१ ॥

५९ पाठान्तर—प्रथीराज । अट्टी । संनाह । चष्य । हय । दुअर । सुम्भि । कट्टि । कट्टी । *उप्पम ॥

६० पाठान्तर—हथ्य । प्रथीराज । रहि । उत्तम । द्युति । भृगु । वहिन ॥

* शोधपाठिक सेनापटी की पुस्तक में 'दुअन इष्ट आरंभ' से 'दुअ देव जनु' तक नहीं है । परंतु स० ५६४७ की में है ॥

† शोधपाठिक सेनापटी की पुस्तक में 'दुअ देव सम' से 'अस दृति' तक नहीं है । परंतु स० ५६४७ की में है ॥

उसमें पृथ्वीराज का नाहरराय के घोड़े को मार डालना ॥

दूहा ॥ फुनि प्रथिराज कुमार नै, हय हन्यौ परिहार ॥

कंध दुअं कटि वग सहित, धुक्यौ धरनि असिधार ॥

॥ कं० ॥ १०४ ॥ ह० ॥ ६१ ॥

दूहा ॥ धुकत धरनि नाहर तुरिय, भूपय्यौ वंध कनंक ॥

तेक तोकि तक्यौ तुरी, बहि असि कंध कनंक ॥

॥ कं० ॥ १०५ ॥ ह० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ दुअ कोटन दुअ नृपति के, किनें हाजुर आनि ॥

दुअन वीच दुअ सुभट थट, अठु भैं चट्टानि ॥

॥ कं० ॥ १०६ ॥ ह० ॥ ६३ ॥

रनबीर का सन्मुख हो पृथ्वीराज से जुद्ध करना ॥

कवित्त ॥ बर पावस रनबीर । दुतिय पावस सम सज्यौ ॥

धूम जोति अरु सलिल । मरुत प्राकारन बज्यौ ॥

सज्जि सेन अतुरंग । बरन बहल रंग धारिय ॥

स्याम सेत अरु पीत । रत्त धज मत्त विचारिय ॥

उन्नयौ धार धारहधनी । लुरन तिरच्छौ बुट्टिवर ॥

विज्जुलि भूमंकि षग पंतिकर । षिवी सेन अरिजुथ्य पर ॥

॥ कं० ॥ १०७ ॥ ह० ॥ ६४ ॥

मोहन परिहार और पवार का सन्मुख हो लड़ना ॥

दूहा ॥ उत मोहन परिहार रन । मेर समान अमान ॥

द्वै द्वै असि कटि विकट बनि । द्वै धनु द्वै द्वै बान ॥

॥ कं० ॥ १०८ ॥ ह० ॥ ६५ ॥

६१ पाठान्तर—प्रथीराज । कुआरनै । है । हन्यो । कन्ह कटि हुअ ॥

६२ पाठान्तर—तुरी । तोकि ॥

६३ पाठान्तर—दुतीय । सज्यौ । मरुत । प्रककारन । सजि । बट्टर । धारीय । स्याम । रत
विचारीय । उन्नयौ । तिरच्छौ । छुटि पर । बुट्टि । विज्जुलि । भूमंक जुथ ॥

६५ पाठान्तर—दोहरा । समान अमान । द्वै द्वै धनु द्वैवान ॥

कवित्त ॥ उत मोहन परिहार । इत सुपावस पंवार वर ॥
 दिष्ट दिष्ट अंकुरिय । संस्त जुग सैत दिष्ट धर ॥
 मोहन कोपि करार । सीस पांवार सुभारिय ॥
 टोप कहि फटि मुंड । भूपटि पांवार निभारिय ॥
 फटि मुंड तुंड धर कहि भूटि । लह विफार अफार भूट ॥ *
 कर वत्त तत्त विहार कि तुरत । जनुकि कवारिय पटुपट ॥
 छं० ॥ १०९ ॥ छ० ॥ ६६ ॥

चामंड का युद्ध ।

कवित्त ॥ चंड रूप चामंड । बलत बलवन्त प्रतापन ॥
 हन्यौ संग दुअ अंग । निकसि दुअ अंगुल सापन ॥
 उभै संग चलि आइ । मथ्य गहि हथ्य दु हथ्यन ॥
 उडि भेजी सुअकास । कुटि पिचकार दद्विकन ॥
 परताप भग्नि परि प्रथि पर । लोक तीन कीरति कहिय ॥
 द्रव्यान पान निकसी सुरवि । जोति जाइ जोतिन मिलिय ॥
 छं० ॥ ११० ॥ छ० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ मिले पौन सैं पौन । मिले पानी सैं पाजी ॥
 मिले तेज सैं तेज । मिले सूनै सुनानी ॥
 मिले प्रथी सैं प्रथी । मिले हरि सैं हरि ब्रेता ॥
 मिले धुतासन होत । होम होमै जो होता ॥
 जन होत जोत जल भिरन हरि । पय सैं जिम पय मिलि सुपय ॥
 तिनि भरत दुरत जेइ भरत रनि । सुमिलिय प्रताप सु आय स्वय ॥
 छं० ॥ १११ ॥ छ० ॥ ६८ ॥

६८ पाठान्तर—पावार । भारीय । फटि । निभारिय । “ * फटि मुंड तुंड ह्य पड ह्य ।
 धर फटु धर पग भूट । ” ६७ १२४७ की में यह पाठ है । घत । तत्त । विहार कि । कवा-
 रिय । पटु ॥

६९ पाठान्तर—आय । मथ । हथ । दुहथन । दधि । प्रताप । पर । हथी । लोक तन ।
 द्रव्यान । पान । जाय ॥

७० पाठान्तर—सैन । सैं । सैन । सानी । सैं । सानी । सुने । सुनानी । हथी । मो । हथी ।
 रता । होमै । मिलत हर । दुजन । जेई । रिन ॥

कवित्त ॥ मंस चड्डु रद गूद । अंत वर वाज गज्ज नर ॥

अथ भूधत्त असत्त । चठिय जुभिगन तिन उप्पर ॥

इक्क दंत गज गिद्धि । उतरि लै अंत अलुभिकय ॥

इक्क कोद जुगिनीय । करन अचत सैं भुक्किय ॥

तिद्धि दिष्प चंद कविराज तत । अति उल्हास ओपंम वठि ॥

उडवत्त चंग सुचंग अंग । राज कुमारि अट्टानि चठि ॥

कं० ॥ ११२ ॥ छ० ॥ ६९ ॥

दूद्धा ॥ धवलंगो धवली दिसा । धवल तन चहुवान ॥

धवल दीध संमुद्ध लख्यौ । जस धवलौ तन आनि ॥

कं० ॥ ११३ ॥ छ० ॥ ७० ॥

स्वामि रत्त रत्ते समुद्ध । रत्ते नैन कहर ॥

रत्त रत्ते दव दाध सम । गुंजत गल्ल गहर ॥

कं० ॥ ११४ ॥ छ० ॥ ७१ ॥

नाहर ? से नाहरराय का लडना ॥

कुंडलिया ॥ नाहर सैं संमुद्ध लख्यौ । नाहर राइ नरिंद ॥

मंडोवर माहू बली । धनुवर भूपति दंद ॥

धनुवर भूपति दंद । सेन चहुआन ठंठोरी ॥

सुर असुरन करि मेर । मथत दरिया हिलोरी ॥

हय हथियन घन हंकि । वीर कुय्यौ ककि छाहर ॥

मरदन सैं मिलि मरद । मरद बुख्यौ मुष नाहर ॥

कं० ॥ ११५ ॥ छ० ॥ ७२ ॥

६९ पाठान्तर—वाल्लि । गज्ज । भृत । असत्त । जुगिना । उप्पर । इक्क । उतर । अलुभिकिय । इक्क । जोगिनीय । अचत । सो । भुक्किय । तिद्धि । दिष्पि । तित । उपंम । उडवत्त । अंग । कुमारि । अट्टानि ॥

७० पाठान्तर—तन । तन । चहुवान । आनि ॥

७१ पाठान्तर—स्वामिरत्त । रत्ते । रत्ते । नैन । दत्ते ॥

७२ पाठान्तर—सो । नाहरराय । धनुवर । चहुआन । ठंठोरी । ठंठोरी । टंठोरी । असुरनु । दरीया । हिलोरी । हथिन । सैं ॥

बलराय का खेत में मँडना ॥

कवित्त ॥ ह्य रघौ थिर सुथिर । घेत मंड्यौ बलरायं ॥

सार मार अप्पार । धार लग्गा धर चायं ॥

उडिय अगग षगघार । धपी द्रुगा धर लोइय ॥

धक्क हक्क उच्चार । सार अप्पं दल भोइय ॥

न्निघात घात भरकर करच्चि । नभ निसान तिन सह भरि ॥

सब सूर सुरंगीय कंक बल । सुभर कठ्ठि असि वर पसरि ॥

कं० ॥ ११६ ॥ छं० ॥ ७३ ॥

घोर युद्ध वर्णन ॥

कंद विराज ॥ कठी * तेग तत्तं । मनौं मल्ल घत्तं ॥

लग्गे लोह लग्गं । षगं षग वगं ॥ कं० ॥ ११७ ॥

दुअं वाह बाहं । गजै गज्ज ठाहं ॥

जुटे दत्त उत्ते । मंवां मंल चित्ते ॥ कं० ॥ ११८ ॥

धुकै धीग धक्कै । धकै सार हक्कै ॥

भिरै भूमि रुंडं । वकै वैन मुंडं ॥ कं० ॥ ११९ ॥

सुटै तूट वाहै । दतै दंत माहै ॥

धकं पाइ कूटै । टिकै तेज रुंदै ॥ कं० ॥ १२० ॥

चहै चाहुआनं । तडित्तं कमानं ॥

रम वीर रत्ते । वहै लोह हरो ॥ कं० ॥ १२१ ॥

गजै गैन देवी । अभूतं सुषवी ॥

नचै भूति भूमी । जकै देवि भूमी ॥ कं० ॥ १२२ ॥

धिले पेत पाज । विहंडं कपालं ॥

रहै रुंड माल । अरुं शोन नाल ॥ कं० ॥ १२३ ॥

दरुपी रिवारै । फिकीयं फिनारै ॥

गमं गिह्व गह्वै । पलं पूचि चह्वै ॥ कं० ॥ १२४ ॥

भिरै भंति भारी । अभूतं सुरारी ॥ कं० ॥ १२५ ॥ ह्र० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ परत क्षिरत तुष्टत सुकर । करत निवर्त्त सुदृथ्य ।

अप्यानौ बल दृथ्यनच । का मंगै बल तथ्य ॥

कं० ॥ १२६ ॥ ह्र० ॥ ७५ ॥

नाहर कर वन्हा सुपय । भय भारथ्य उपाउ ।

जासु जहां जो जवरै । तिहि बल रोह सदाउ ॥

कं० ॥ १२७ ॥ ह्र० ॥ ७६ ॥

गाथा ॥ कायर मुष्य प्रमानं । बर कंमोदयं मोदयं मुष्यं ।

सत सित पच प्रमानं । उधारियं वीर वृंदायं ॥

कं० ॥ १२८ ॥ ह्र० ॥ ७७ ॥

छंद चिभंगी ॥ हंकारे सूरं, बज्जत तूरं, नचत हूरं, सुर सुरयं ।

हय छंडिय राजं, तेजय पाजं, लरे सुसाजं, भुर भुरयं ॥

चलि चालं बंधी, तारा संधी, हँसै सुनंदी, दै तारी ।

तुरसी रस मंजरि, तव नव घंजरि, तज घन पंजरि, वैमालं ॥१२९॥

घन केसर रंगं, अंबनि अंगं, नचत जंगं, अहि कालं ।

जंपे चरि गंगं, गुन अनभंगं, चरमन अंगं, असि भारे ॥

दूनों बवकारै, दुनों न चारै, छौच करारै, गुन भारे ।

केसरि रंग शेरं, असिवर भोरं, भौ तज कोरं, घटि कालं ॥१३०॥

सिर तुष्टि प्रमानं उमया जानं, भूअ सजानं, मुर चालं ॥

७४ पाठान्तर— नेग । तले । मनों । दुहं । गजे । गज । इत उत्ते । मनों । चित्ते । धुकें । धगि । हकें । हके । वेंन । तुटें । लुटें । चूटि बाहें । बंते । साहें । पाय । रुटें । चाहुवानं । रसे । बहें । हसे । गेंन । भूमि भूमी । लकें । रचें । रुड । भ्रवें । घषटी । चवटी । फकारी । फिकियं । फिकारें । गोमं । गिद्वु । गट्टें । चुट्टे । चिट्टें । सारी । अभूतं ॥ * स० १६४७ की लिखी पुस्तक में इस छंद का शुद्ध नाम विराज है और इतर में रसावला है । यह दो लगुग और रसावला दो गुलगु का होता है ।

७५ पाठान्तर—चुटत । हय । अप्यानौ हय । मगौ । मगै । तथ ॥

७६ पाठान्तर—भारथ । तिहिं ॥

७७ पाठान्तर—मुष । प्रमान । कमोद । कमोद । ह्रं । प्रमानं । उधारियं । वृंदायं ॥

हिल्लोरे षगं, अरि घट जगं, करिन अभगं, जुषमैरं ।
 परिहार सु आपं, अरि उर दापं, रूपा रन थापं, षग भोरं ॥
 चालुक्क सुमानं, जुद्ध समानं, अरि हरि मानं, गुम्मानं ॥ कं० ॥ १३१ ॥
 पर मध्य पवारं, असि बहु भारं, अच्छरि तारं, सो रानं ॥
 कूरभ षग जगगी, टस क्रम भगगी, फिर रन लगगी, परिहारं ॥
 दाहिम षग पुख्खं, वीर सु वुख्खं, नद्ध मन डुख्खं, भर सारं ॥
 कन्ह कुंमारं, रन परि भारं, सार सुमारं, नद्ध छ्खं ॥ कं० ॥ १३२ ॥
 आवध नद्ध फुट्टै, गुरजनि कुट्टै, सीसय फुट्टै, कर च्खं ॥
 रन जैत सरीसं, तुट्टिय सीसं, लगि घन रीसं, परि वथ्यं ॥
 रन लुथ्यि अलुथ्यं, गुन कवि कथ्यं, अचरिज सथ्यं, रवि रथ्यं ॥
 कं० ॥ १३३ ॥ कृ० ॥ ७८ ॥

कंद भुजंगी ॥ इकायौ जुसूरं विराजंत वीरं । स्वयं कंठ आभूषणं कंद नीरं ॥
 पया सेस मत्ता चवं पंच अच्छी। कितौ कंद नामं विराजै सु अच्छी ॥ कं० ॥ १३४ ॥
 नवं नेह नारी लकी देह दूनौ । करी सूर नांही विराजंत सूनौ ॥
 छयं कंडि राजं लरे सूर तेजं । मनें जुद्ध आकूत भारथ्य एजं ॥ कं० ॥ १३५ ॥
 चले चाल वंधे तनं मंड आसं । कहै चंद कव्वी तिनं जुद्ध भासं ॥
 कं० ॥ १३६ ॥ कृ० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ इकारे विप सेनं । वजे वज्राइं पंच सहायं ॥

खडे नव रंडा रंगं । भगं कन्ह चितयं पलयं ॥ कं० ॥ १३७ ॥ कृ० ॥ ८० ॥

८८ पाठान्तर— हकारे । धजत । नंदत ॥ ५२६ ॥ केसरि । नवत । गग । विरमन ।
 धवपारे ॥ १३० ॥ सुट्टि । प्रमानं । हिल्लोरे । धनं । जगं । करि रनभग । चालुक्क । गुमान ।
 सुमानं ॥ १३१ ॥ अरि । सोमान । कूरभं । कूरभं । कूरं । भगी । फिरि । लगगी । युल । युन ।
 डल । भाल भार तिर । कुमारं । हल ॥ १३२ ॥ फुट्टै । विहुट्टै । फुट्टै । दन । योम । धय ।
 लुप ड लुप । वप । लप । रप ॥ १३३ ॥

८९ पाठान्तर— लो सु । एठ । कटी । कितौ । नामं । लकी ॥ १३४ ॥ लरे । मनें । भारथ्य ।
 १३५ ॥ कहै । कव्वी । १३६ ॥

९० पाठान्तर— हकारे । वीर वज्राइ । हट्टारं । हट्टै । रं रंग । रं रंग । भग ॥

दूचा ॥ उत मंडोवर वीर कै, इत संभरि वै राव ॥

दुअ लगगा अस रार जुध, सुकवि चंद्र करि काव ॥

कं० ॥ १३८ ॥ ह० ॥ ८१ ॥

कंद भुजंगी ॥ सलुथ्यं सलुथ्यं अलुथ्यं तिलुथ्यं । इयानं उवानं समानं पलुथ्यं ॥

हयगं रथगं धरं धार तुहै । धरं धार धीरं महा वीर लुट्टै ॥

कं० ॥ १३९ ॥

पलककै हृधिजा प्रवाहं सिरज्जं । धरं धाम चाहं स्नं केन रज्जं ।

भनकंत भेरी चिकारै सुहथ्यी । नचै रंग भैहं ततथ्ये ततथ्यी ॥

कं० ॥ १४० ॥

प्रहारं सुदंती सुचंती अलुभक्तं । अलुभक्तं सुदंती उडै किंक भुक्तं ।

मनं भारते जान हेमं हयनं । परज्वाल तुहै तनंजा विननं ॥

कं० ॥ १४१ ॥ ह० ॥ ८२ ॥

लोहाना आजानु बाहु के युद्ध का वर्णन ॥

कवित्त ॥ लोहानौ आजान । बांह लंबी पसारै ॥

लंबी बांह पसारि । तेग लंबी उभारै ।

उभारै विभार । वीर बाहै बढाली ॥

अढाली अर बढि । कंध सोहै सुढाली ॥

सुढाल कंध विव षंड हुअ । विधि ओपन कवि चंद्र कचि ॥

आवृत्त घत्त आजान भुअ । मनु कजल कोटकि विज लचि ॥

कं० ॥ १४२ ॥ ह० ॥ ८३ ॥

८१ पाठान्तर—कै । दोउन के असराल युद्ध । सो चंद्र करीय सु काव ॥

८२ पाठान्तर—सलुथं सलुथं । सलुथं सलोथं । अलुथ तिलुथं । उयानं । प्रलथं । हयं गंगरथं । तुहै । लुट्टै ॥ १३६ ॥ पलकै । हृधिजा । प्रवाहं । स्नं । भनकंत । चिकारै । सुहथी । नचै । भैरी । ततथे । ततथी ॥ १४० ॥ अलुभक्तं । अरुभक्तं सुदंती । अलुभक्तं । उडे । भुक्तं । हयनं । गयनं । परं । तुट्टै ॥ १४१ ॥

८३ पाठान्तर—आजान । बाह । पसारै । उभारै । उभारै । विभार । बढाली । षढाली । अरिक्कि । सोहैट्टै । सुढाली । सुढालि । कंध किक्कि षंड हुअ । उपम । आवृत्त । घत्त आजानु । मनो ॥ मनौ ॥

कवित्त ॥ लोहानै अरि फौज । चक्क चिहुँकोद फिराइय ॥
 ज्यौ तूल मध्य वातूल । पवन जिम पत्त अमाइय ॥
 मास्त बजि आरिष्ट । वाइ चिहुँकोद भुलावय ॥
 कै वाय पुरातन धञ्ज । चिविधि विध तुंग हलावय ॥
 कै कुलाल चित चक्रित भौ । चक्र चिहुँ दिसि फेरइय ॥
 मृगराज मृगनि ज्यौ क्रोध बल । बल समूह अरि घेरइय ॥
 कं० ॥ १४३ ॥ कृ० ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥ तहां पिभिक पिय कुँअर । लोह भारै गज मथ्यं ॥
 भइय भसुंड विपंड । अंम सोभंत सुतथ्यं ॥
 कै * जलधि तह हवि होम । घोम घारा घृत सिंचिय ॥
 कै * तडित तेज नव घंन प्रमान * । भान चलि बहल पंचिय ॥
 कज्जल प्रमान प्रब्वत द्यौ । रत्त धार बुठंत जलु ॥
 कांचन प्रनार है सुर श्रवकि । इह ओपम दीसंत पलु ॥
 कं० ॥ १४४ ॥ कृ० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ जावक श्रोन प्रनार जल । इंगुर फटिक वचात ॥
 जीवत रद कठि रुहिर तिन । दंत सर दररात ॥
 कं० ॥ १४५ ॥ कृ० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ लोहानौ आजान वाह * । जित्त आरनि जस लिन्नौ ॥
 ज्यौ इक लेई कन्ह । दंग दावा नल पिन्नौ ॥
 जग इकले हनुवंत । वंका खका गठ टाह्यौ ॥
 ज्यौ इकलेई भीम । सित्त कौरव तन गाह्यौ ॥

८४ पाठांतर—लोहानौ । विहु । दौट । ज्यौ । तुल । मधि । मृमाइय । बति । विहु ।
 ८५ पाठांतर—भयो । विहु । फेरइय । ज्यौ । घेरइय ।
 ८६ पाठांतर—एक । कुनार । मघ । प्रईय । तय । कै । तरह । चिंचिय । विंदीय ।
 ८७ सब इपिक पाठ है । भान शुकल । बहल । प्रमान । प्रबत ।
 ८८ पाठांतर—प्रनाल ॥

ज्यौ पुनि अगस्ति अप इक्कलै । सोपि सब्ब सायर लयौ ॥
दांनव कि चंपि अंगद बलिय । नंघि उदधि परसैं गयौ ॥

॥ १४६ ॥ ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ बल बंध्यौ नाहर नारिंद * । इंद्र जनु वज्र हथ्य भलि ॥

मुकति सुफल लहीय । वीर ब्रह्मांड तार पुलि ॥

नर नाहर ज्यौ लस्यौ । लज्ज पंकह आलुभ्यौ ॥

सार धार निहार । पार मुक्किग जग सुभ्यौ ॥

कलहंत केलि परिहार रिन । चिसल तेज लगिय चिभुअ ॥

भगौ न भूमि रजपूत हैं । करौ नाम जिम अटल धुअ ॥

॥ १४७ ॥ ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ सुनिय मंच सेवक प्रमांन * । रंघट घटी फेरहि हम ॥

पेट भरन * चख्खन । पुठि दै भार चलहि क्रम ।

ते नह गनियै सूर । भ्रंम छिचिन कौ नांही ॥

स्वामि संकरै कंडि । लोभ अप्पन घर जांही ॥

गनियै न सूर अरि जूह बल । अप्प सेन इषि घट्टियै ॥

जै अजै भाग भूपति क्रमह । अप्पु टोस अष जिट्टियै ॥

॥ १४८ ॥ ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ वाय रूप प्रथिराज । गज्जि गयो असि रूकं ॥

सार धार उभकार । गुरज भंज्यौ सिरभूकं ॥

रह्यौ भान रथ पंचि । पवन रह्यौ गति कूंडि थिर ॥

रहे देव टग चाहि । नचै वैताल वीर भर ॥

८७ पाठान्तर—* अधिक पाठ है । जिति । लोनौ । ज्यौ । इकलेइ । इकलेइ । ज्यौ । इकलेइ । हनघंत । हनुमंत । ज्यों । इकलै । सत्त इकलै । सब । दांनव । परसैं ॥

८८ पाठान्तर—नाहर । * अधिक पाठ है । हथि । हथ । मुगति । ब्रहमंड । ज्यों । जल पंकह । निहार । मुक्किग हौ । करौ । नाम ॥

८९ पाठान्तर—सेवक । * अधिक पाठ है । घटी । घटिका पुठि । चलि । कौ । स्वामी । जांहीं । रपि । भुआति ॥

मंडे जु रास किती प्रबल । सोइ मरन कुहैत दिन ॥
पल पंष रास पच्छै चढौ । नाहरराइ नरिंद रन ॥

कं० ॥ १४९ ॥ छ० ॥ ९० ॥

कवित्त ॥ नाहर राइ नरिंद । चित्त चिंता उत्तारिय ॥ १ ॥
मन बध्यौ बल घद्यौ । मरम केवल विचारिय ॥
सुनहूँ तौ * कहूँ कवित्त । सुधिर जीवन जग नांही ॥
इह संसार असार । सार किती कलु मांही ॥
ज्यौ उरगह मुष उंदर परै । यौं सुदेह नाहर कहै ॥
भवतव्य बात मिहै नही । नाम एक जुग जुग रहै ॥

कं० ॥ १५० ॥ छ० ॥ ९१ ॥

दूखा ॥ इह कहि रहि रन मंड छपि । ज्यौ कपि रष्यस सेन ॥
कोपि कन्ह धायौ बली । ज्यौ अगि विकुटिय गेन ॥

कं० ॥ १५१ ॥ छ० ॥ ९२ ॥

कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ॥

विराज ॥ धयौ कन्ह धही कुटी अंघि पही ॥ अरी सेन फही । मनौं दूध पही ॥ कं० ॥ १५२ ॥
पगंगे उहटी । मनौं कठु कही । परे भूमि लही । मनौं मह जही ॥ कं० ॥ १५३ ॥
बहै पग घडी । मनौं चक्क मही ॥ तरफ्फे कि तही । मनौं लागि नही ॥ कं० ॥ १५४ ॥
भरै यौं सुभही । मनौं लौंन अही । सुरें मारि भही । मनौं लत्त तही ॥ कं० ॥ १५५ ॥
पसू पंष टही । पलं श्रोन चही । कवीचंद भही । मुषं कित्ति रही ॥

कं० ॥ १५६ ॥ छ० ॥ ९३ ॥

९० पाठान्तर—पृथ्वीराज । गजि । उभार । मान । मवन । मंडे । यु । रासि । किंति । सोई ।
पछै । नाहरराइ ॥

९१ पाठान्तर—नाहरराइ । चित्त । चिंता । उत्तारिय । केवल । विचारिय । सुनहुँ । सुन
हुँ । * कवित्त पाठ है । कवित्त । ज्यौ । उरगह सुमुष । यौं । सुदिहै ।

९२ पाठान्तर—रन । ज्यौ । रष्यस । कन्ह । अगि । विकुटिय ।

९३ पाठान्तर—* स. १२६० की प्रतीति में युद्ध नाम लिखे हैं सोइ इतर प्रे इह रष्यसला है ।
१५२ ॥ मनौं । दूध । पही । मनौं । कठु । कही । परे । भूमि । लही । मनौं । मह । जही ॥ १५३ ॥ बहै । मनौं । तर्फे । लागि । नही ॥ १५४ ॥
१५५ ॥ भरै । यौं । सुभही । मनौं । लौंन । अही । सुरें । मारि । भही । मनौं । लत्त । तही ॥ १५५ ॥

ज्यौ पुनि अगस्ति अप इक्कलै । सोषि सब्ब सायर लयौ ॥
दांनव कि चंपि अंगद बलिय । नंषि उदधि परसैं गयौ ॥

॥ कं० ॥ १४६ ॥ सू० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ बल बंध्यौ नाहर नारिंद * । इंद्र जनु वज्र दृश्य भलि ॥

मुकति सुफल लह्यौ । वीर ब्रह्मांड तार पुलि ॥

नर नाहर ज्यौ लस्यौ । लज्ज पंकह आलुभ्यौ ॥

सार धार निहार । पार मुक्किग जग सुभ्यौ ॥

कलहंत केलि परिहार रिन । चिसल तेज लगिगय चिभुअ ॥

भगौ न भूमि रजपूत हैं । करौ नाम जिम अटल धुअ ॥

॥ कं० ॥ १४७ ॥ सू० ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ सुनिय मंच सेवक प्रमांन * । रंहर घटी फेरहि दम ॥

पेट भरन * चखन । पुठि दै भार चलहि क्रम ।

ते नह गनियै सूर । भ्रंम छिचिन कौ नांही ॥

स्वामि संकरै कंडि । लोभ अपन घर जांही ॥

गनियै न सूर अरि जूह बल । अप्प सेन इषि घटियै ॥

जै अजै भाग भूपति क्रमह । अप्प दोस अष जिदियै ॥

॥ कं० ॥ १४८ ॥ सू० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ वाय रूप प्रथिराज । गज्जि गयो असि रुकं ॥

सार धार उभहार । गुरज भंज्यौ सिरभूकं ॥

रह्यौ भान रथ पंचि । पवन रह्यौ गति कूंडि थिर ॥

रहे देव टग चाहि । नचै वैताल वीर भर ॥

८७ पाठान्तर—* अधिक पाठ है । जिति । लोनौ । ज्यों । इकलैइ । इकलैइ । ज्यौ । इकलैइ । हनवंत । हनुमंत । ज्यों । इकलै । सत्त इकलै । सब । दांनव । परसैं ॥

८८ पाठान्तर—नाहर । * अधिक पाठ है । हथि । हथ । मुगति । ब्रह्मंड । ज्यों । जल पंकह । निभार । मुक्किग हौ । करौ । नाम ॥

८९ पाठान्तर—सेवक । * अधिक पाठ हैं । घटी । घटिका पुठि । चलि । कौ । स्वामी । जांहीं । रपि । भुआति ॥

मंडे जु रास किती प्रबल । सोइ मरन कुहैत दिन ॥

पल पंष रास पच्छे चढौ । नाहरराइ नरिंद रन ॥

कं० ॥ १४९ ॥ ह० ॥ ९० ॥

कवित्त ॥ नाहर राइ नरिंद । चित्त चिंता उत्तारिय ॥ १ ॥

मन बध्यौ बल घब्यौ । मरम केवल विचारिय ॥

सुनहूँ तौ * कहूँ कवित्त । सुथिर जीवन जग नांही ॥

इह संसार असार । सार किती कलु मांही ॥

ज्यौं उरगह मुष उंदर परै । यौं सुदेह नाहर कहै ॥

भवतव्य बात मिटै नही । नाम एक जुग जुग रहै ॥

कं० ॥ १५० ॥ ह० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ इह कहि रहि रन भंड हपि । ज्यौं कपि रषस सेन ॥

कोपि कन्ह धायौ बली । ज्यौं अगि विकुठिय गेन ॥

कं० ॥ १५१ ॥ ह० ॥ ९२ ॥

कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ॥

विराज ॥ धयौ कन्ह थही।कुटी अंषि पही ॥ अरी सेन फही । मनौं दूध षही॥कं०॥१५२॥

षगंगे उहही । मनौं कठ कही । परे भूमि लही । मनौं मह जही ॥ कं० ॥ १५३ ॥

बहै षग घड़ी । मनौं चक्क मही ॥ तरफ्फै कि तही । मनौं लागि नही॥कं०॥१५४॥

लरै यौं सुभही । मनौं लौंन अही । सुरें मारि भही । मनौं लत तही ॥कं०॥१५५॥

पसू पंष ठही । पलं श्रोन चही । कवीचंद भही । मुषं कित्ति रही ॥

कं० ॥ १५६ ॥ ह० ॥ ९३ ॥

९० पाठान्तर—प्रथीराज । गजि । उभार । भान । गवन । मंडै । यु । रासि । कित्ति । सोई ।

पछें । नाहरराव ॥

९१ पाठान्तर—नाहरराय । चिंत । चिंता । उत्तारीय । केवलह । विचारीय । सुनहु । सुन

हूँ । * अधिक पाठ है । नाहीं । ज्यौं । उरगह सुमुष । यो । सुमिटै ।

९२ पाठान्तर—हन । ज्यौं । रपस । कन्ह । ज्यौं । विकुठिय ॥

९३ पाठान्तर—* स. १६४० की प्रति में शुद्ध नाम विराज है और इतर में कंद रसावला है ॥

१५२ ॥ मनौं । कठ । परें । मनौं । मनौ । मद्र ॥ १५३ ॥ बहै । मनौं । तरफें । लाग ॥ १५४ ॥

लरें । यौं । मनौं । लौंन । मनौं । लत ॥ १५५ ॥ पसू । थट्टी । कवि ॥ १५६ ॥

कवित्त ॥ नाहर नाहर राव । कहर नाहर सुकन्ह कर ॥

दिठ दिठ अंकुरिय । भरिय विस जांनु विषहर ॥

हमसि कन्ह असिरीस । सीस चुकि परिय वांम भुज ॥

पुनि उकुटि परिहार । सार सिर कन्ह टोप धुज ॥

लग्गे सुटोप उड्डिय किरच । बहत धार उत मंग बचि ॥

जैजया सह जुगिन करहि । दुअन जुड अदभूत मचि ॥

कं० ॥ १५७ ॥ ह० ॥ ८४ ॥

डारि कन्ह तरवारि । कठि जम दठु मिल्यौ चिय ॥

मचि जुड इत बीच । धप्य भतीज दिष्यि निय ॥

गहि सुसिष्य षुठि आइ । घाइ जम दठु कियौ तिय ॥

कंडि प्रान परिहार । परे पालहन ऊपर जिय ॥

गहि रोस नंषि नर भूमि पर । हनि अनियारिय उभय कसि ॥

तिन हनत घाय घुंमत भुमत । गयौ निठि नाहर निकसि ॥

कं० ॥ १५८ ॥ ह० ॥ ८५ ॥

नर नाहर जिम लखौ । गयौ नाहर जिम नाहर ॥

घाव घट घन घुंमि । भुंमि निकसिय बल नाहर ॥

कन्ह कंक किय नन्ह । बंक भर भूमि पछारिय ॥

जनु कि लंगूरह लंक । तोरि वारा धर डारिय ॥

सादान बज्जि रन रज्जि सह । तह सु सथ्यरकत करिय ॥

सोमेश सूर चहुआन सुअ । कित्ति चंद कंदह धरिय ॥

कं० ॥ १५९ ॥ ह० ॥ ८६ ॥

८४ पाठान्तर—कन्ह । दिठ दिठ । जांनि । परीय । वांम । पुनि । उकुटि । उकुटि । कन्ह । उड्डिय । सवद । जुगिन ॥

८५ पाठान्तर—कन्ह । जमदठ । मचि । जुध । बीच । धपि । भतीज । दिषिनीय । सिषि । पुठि । जमदठ । प्रान । पल्हन । उपर । अनियारीय । निठि ।

८६ पाठान्तर—घट । घूमि । भूमि । नन्ह । भूमि । लंगूरह । डारीय । सादान । बज्जि । रज्जि । सथ । करीय । चहुआन । चहुआन । सुय । कंदहि ॥

बल घट्यौ सब सथ्य । जुद्ध धायौ तत्तारिय ॥
 चाहुआन कौ साथ । तेग तुंगद विडुारिय ॥
 उंच गात अरु द्यथ्य । वीर कही पट भारिय ॥
 इह ओपम कविचंद । चिंति मन मझु विचारिय ॥
 पल्लव सुवीर केतुकि नवल । वरवसंत वायद द्यजै ॥
 तम तेज रुधिर भीज्यौ बहुल । कलद किति जावक पुजै ॥

कं० ॥ १६० ॥ छ० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ नाहर नाहर जिम निकसि । भिरि नाहर के भेष ॥
 कहर कन्ह धपि कुपि पुठि । बली मीर चष लेष ॥

कं० ॥ १६१ ॥ छ० ॥ ९८ ॥

कुंडलिया ॥ फिरि जुहार किय स्वामि कौं । मुक्किय काम धमारि ॥
 बली मीर गठौ लख्यौ । मरन सरन विचारि ॥
 मरन सरन विचारि । मिलन अंतदपुर किनौ ॥
 बंधि चिय सांद्र सुधित्त । करि साई सौं दिनौ ॥
 सार धार तन षंड । षंडि माख्यौ रिपु जरु जरि ॥
 तिल तिल तन तुदयौ । रंभ दुंध्यौ दित फिरि फिरि ॥

कं० ॥ १६२ ॥ छ० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ सिर तुट्टै परि भूमि पर । यौं राजै कविचंद ॥
 कमल जानि नचंत सर । सरद चंद पर कंध ॥

कं० ॥ १६३ ॥ छ० ॥ १०० ॥

कुंडलिया ॥ कमल जानि नच्यौ जु सर । दिसि सोभै संग्राम ॥
 मानहु जलद कमेद तजि । थल ऊए ए ताम ॥

९७ पाठान्तर-सथ । तत्तारीय । चाहुवान । विहारीय । हाथ । कट्टी । भारीय । उपम ।
 मन सौं । विचारीय । विचारिय । वायद । भज्यौ ॥

९८ पाठान्तर-नाहर कै । लेषि ॥

९९ पाठान्तर-स्वामि कौं । मुक्किय । काम । गठौ । सरन । विचारि । अन्तरपुर । बंधि ।
 चीय । साई । सुधित । सुभृत । तिल तिल । ठंध्यौ ॥

१०० पाठान्तर-तुट्टै । यौं । राजि । राजै । जानि । नाचंत । शरद कंध ॥

थल ऊए ए ताम । चंद औपम तहां पाई ॥
 मानहु वीर समुद्र । द्यौ फल हथ्य बधाई ॥
 धार धार चढि सूर । मूर कीणति विमलं ॥
 धनि धनि उचार । सीस नचौ सुकमलं ॥

कं० ॥ १६४ ॥ सृ० ॥ १०१ ॥

नाहरराय का भागना और पृथ्वीराज का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ भग्गा नाहर राई । पाई मुक्कै नाहर जिम ॥
 जिम जिम भर कटई । रोस लगगा वर तिम तिम ॥
 षेत सोधि चहुआनं । पस्यौ तूवर पाहारी ॥
 बर* परस्यौ तहां गोइंद । पस्यौ भट्टी अधिकारी ॥
 षोची प्रसंग बंधव उभै । मोह सुबंधा बंध वर ॥
 तिम तिम सु तेग ताहन लसै । तिम तिम वुठे सार नर ॥

कं० ॥ १६५ ॥ सृ० ॥ १०२ ॥

त्रिविध सहस्त्र नाहर * बसंत । पच कायर तन भारिय ॥
 वीर रूप तप भान । नीर सूकै षल भारिय ॥
 तत्तारि तूँ अर नरिंद । भवौ तरु गहर पत्त कंइ ॥
 क्रांइ स्वांमि संमूह । जूह टारिय सुअंग तहँ ॥
 फल फूल कित्ति पंषी वरन । विमुष न भौ संमुह लयौ ॥
 गंधर्व वीर चालुक वरन । मरन वीर अछरि बस्यौ ॥

कं० ॥ १६६ ॥ सृ० ॥ १०३ ॥

१०१ पाठान्तर—जानि । जानै । नचौ । मूर । मानहु । थल ए उए ताम । ऊपम । पाइय ।
 मानहु । हथ । बधाइय । किए ति । किए सु । धनि २ । उचार । नच्यौ ॥

१०२ पाठान्तर—नाहरराय । पाय । मुक्या । कटई । रोस । चहुवान । चाहुआन । तूवर ।
 तूअर । पहारी । परहारी । * अधिक पाठ है । तथा उलट पुलट पाठ ऐसा है—बर गोइंद तथा
 पस्यौ । बध्या बंधवर । तेज ॥

१०३ पाठान्तर—सस्त्र । * अधिक पाठ है । भारीय । भान । सुकै । भारीय । तत्तारो ।
 तूअर । तौअर । पत्त सह । पत्त कंइ । क्राइ । स्वांमि । टारीय । तहां । भौं । गंधर्व वीर चारन
 वरन । अछरि ॥

गुज्जर वै परधान । जैन धृम्मी मत लद्धो ॥

एकादस चहुआन । धर धारह आलुद्धी ॥

सुहस एक असवार । धार है गै घट मंड्यौ ॥

नाहर राइ नरिंद । कोट पहन वै चढ्यौ ॥

ढुंढ्यौ घेत चहुआन बर । अरु भारथ आहुट्यौ ॥

चामर सु छत्र धरि घेत में । सुधा विविध विधि लुट्यौ ॥

ॐ ॥ १६७ ॥ ६० ॥ १०४ ॥

डोला पंच पचीस । स्वामी संजुत चढाइय ॥

घाइ कन्ह घट घुम्मि । घाइ एकादस राइय ॥

चंपि वीर चालुक्क । राज मेलान तुच्छ करि ॥

गल गज्जै सामंत । बरै बरनी नाहर बरि ॥

रविवार वीर पंचमि दिवस । एकादस रविभुञ्जन अहं ॥

अष्टम सु चक्र जोगिनि अहन । बर बज्जेति नरिंद तह ॥

ॐ ॥ १६८ ॥ ६० ॥ १०५ ॥

पट्टन में पृथ्वीराज का राज्याभिषेक होना ॥

देव दसमि कै दीह । नथर पहन चहुआनं ॥

गुरं पंचम रवि नवम । सुवर ग्यारह ससि थानं ॥

तीय थान बर भौम । सुक सत्तम बल किन्नौ ॥

केइंद्री वर बुद्ध । राह सब कौंद अहिन्नौ ॥

आनंद चहं वरदाइ घन । राजभिषेकन पहि करि ॥

साजंत भूमि जीते सुप्रति । तेज तुंग दुज्जन सुहरि ॥

ॐ ॥ १६९ ॥ ६० ॥ १०६ ॥

१०४ पाठान्तर—गुज्जर । परधान । धृम्मी । धृमी । चहुआन । अलुद्धी । नाहरराय । चढ्यौ । चहुआन । आहुट्यौ । लुट्यौ ॥

१०५ पाठान्तर—डोला । स्वामी । स्वामि । धाय । घुम्मि । घुम्मि । धाय । एकादस । मेलान । तुच्छ । बरै । बरौ । बज्जेति ॥

१०६ पाठान्तर—चहुआनं । चहुआनं । थान । कीनौ । केइंद्री । सबकोद अहिन्नौ । वरदय धनं । पट । दुज्जन ॥

दूहा ॥ तिरिय वक्र अधचक्र नन । ऊरध वक्र प्रमान ॥

इन नक्चि चहुआंन को । पट अभिषेक समान ॥

कं० ॥ १७० ॥ क० ॥ १०७ ॥

कवित्त ॥ इन नक्चि कविचंद्र । कौन कारन उपावै ॥

पटभिषेक राजान । बहुत आराम प्रभावै ॥

अछ प्रसाद * तोरन ऊतंग । क्व जंचइ सक टावै ॥

धजा बंधि पताक । संष चामर मंडावै ॥

उदयत परब पानिं अहन । बहु विवेक ध्रंमइ सुधरि ॥

नन कूप तडागन वापियन । धन सुकियन सुकियन बरि ॥

कं० ॥ १७१ ॥ क० ॥ १०८ ॥

नाहरराय का हारकर अपनी कन्या के विवाह का लगन लिखवाकर भेजना ॥

कंद पहरि ॥ सब सथ्य तथ्य हुअ एक ठांम । मुक्कांम कीन गिरिनार गांम ॥

सब लोक मचाजन मिले आइ । चित्यौ सुचित्त नाहर सुभाइ ॥ कं० ॥ १७२ ॥

जिहि मेल होइ सो करि उपाइ । दिषियै दीप सो नही लाइ ॥

पहुमी सुकाज भरतजत प्रान । पहुमीस काज धन देत दान ॥ कं० ॥ १७३ ॥

पहुमीय काज जग बाजि देत । उपाइ नेक पहुमी सुलेत ॥

पुची सुएक तिन तन कुआरि । दीसंत देह जनु मदनधारि ॥ कं० ॥ १७४ ॥

बुल्लाइ विप्र लिषि लगन तथ्य । पठाइ दीन नृप पिथ्य जथ्य ॥

आनंद राज सब सेन अंग । फुल्ले कि कमल जनु दिषि वतंग ॥

कं० ॥ १७५ ॥ क० ॥ १०९ ॥

१०७ पाठान्तर—तिरीय । प्रमान । चहुआंन को । पटभिषेक । समान ॥

१०८ पाठान्तर—कोन । उपावै । पाट विभेक राजान । पाटभिषेक राजान । आराम ।

* अधिक पाठ है ॥ उतंग । पताक । उदय । उदयत । पानिं । पानि । ध्रंमइ । तटाकन । धन
मुकियन सुकियन धरि । मुकियन सुकियन धर ॥

१०९ पाठान्तर—सख्य । सथ । तथ । हूव । ठांम । गिरिनारि । गांम । सख्य । मिलिब ।

आय । चित्यौ । सुभाय ॥ १०२ ॥ जिहिं । होय । उपाय । दिषियै । नही । लाय । पहुमी । गांम ।

दान ॥ १०३ ॥ उपाय । कुवार । धार ॥ १०४ ॥ बुलाय । तच्छ । पठाइ । पिथ । जथ । फुल्ले ॥ १०५ ॥

पृथ्वीराज का ब्याहने को जाना ॥

कवित्त ॥ नष्टा नाहरराइ । घेत दुंढ्यौ चहुषानं ॥

राज जीति गज लभि । सीस लगगा असमानं ॥

तुम मल्लह परिहार । मत्त कीनौ अमित्त जुध ॥

बरन बीर संमुहौ । राज लगगे सुमंत सुध ॥

पंचमी वार रवि रात दिन । गंज नाम बर जोग गुर ॥

गिरि नाम करन राजन्न बर । चढ्यौ बीर बीरंस डर ॥

कं० ॥ १७६ ॥ छ० ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का तोरन की बंदना करना ॥

कवित्त ॥ वंदि राज तोरन्न सुचंग * । मुत्ति नष्यै अच्छित अलि ॥

मनों * चंद किरनि कूटंत । भान नष्यै मयूष छलि ॥

ठाम ठाम त्रिय गान । जानि अछरि कैलासह ॥

सुभ सिंगार सोभंत । भूमि रहि अलि रस बासह ॥

तोरन सुचारु आचार करि । कै जनवासत मंडपहि ॥

दिष्यंत नयन भुल्लहि चरित । का कवि व्रन्नहि भाव कहि ॥

कं० ॥ १७७ ॥ छ० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का नाहरराय की कन्या से विवाह होना ॥

दूहा ॥ करि ~~क~~ सब पंडित । पानि अछन फुनि व्याह ॥

सोम बास बसुनाइकै । धनि नाहर क्रत्याह ॥

कं० ॥ १७८ ॥ छ० ॥ ११२ ॥

११० पाठान्तर—नटा । नाहरराय । दुंढ्यौ । चहुषानं । लभि । मलह । मत्तह । मत्त । अमित । जुध । लगगा । राति । नाम । गिर । नाम । बरन । चढ्यौ । बीरंसु ॥

१११ पाठान्तर—तोरन । * अधिक पाठ है । मुत्ति । नष्यै । कुटंत । नष्यै । ठाम ठाम । त्रिय । गान । गाम ॥

११२ पाठान्तर—पंडितन । पानि । फुनि । सोधामब सुनायकै । सोबास बसुनाइकै । धनि । हत्याह ॥

नाहरराय का कहना कि आपके काम में सीस देने के
सिवाय और कुछ देने के योग्य हम नहीं हैं ॥

दूहा ॥ नाहर राइ नरिंद कहि । का तुम जोग जगीस ।

और देन हम है कषा । काम सीस हम ईस ॥

कं० ॥ १७८ ॥ ह० ॥ ११३ ॥

नाहरराय की कन्या का गुण और रूप वर्णन ।

साटक ॥ तन्मै स्याम सुरंग वाम तनयं, मन्मथ्य वल्ली कला ।

सुप्यं धामय तेज दीपक कला, तारुन्य लच्छी ग्रहा ॥

रूपं रंजित मंजु माल कलया, वासंत पचावली ।

श्रवं लच्छन काम धीरज गुणै, धन्यौ दुती दंपती ॥

कं० ॥ १८० ॥ ह० ॥ ११४ ॥

पृथ्वीराज का जीत कर स्त्री के साथ लौटना ॥

कवित्त ॥ संभरि बैरन जोत । बीर चालुक्क काम बल ॥

उमै जोध सो जितै । लेइ कर वत्त कासि कल ॥

बीर निसानति भग्ग । बग्गि आनन्द निसानं ॥

प्रात हेत बर बीर । चळ्यौ संभरि दिसि थानं ॥

भर विभर सुग मग हय गइय । रहिय तिममगत जुइ इक ॥

कालक कोटि भंजै विषल । सुवर बीर वीरह जु पुक ॥

कं० ॥ १८१ ॥ ह० ॥ ११५ ॥

अरिख ॥ लै तरुनी डोला चढि राजं । डोला लंगरिराइ विराजं ॥

धन रंगा तोर त्तिय धन्यं । जिन रथ्यौ जीवत नृप मन्यं ॥

कं० ॥ १८२ ॥ ह० ॥ ११६ ॥

११३ पाठान्तर—नाहरराव । नाहरराय । कहा । देन । और । देंन । है । काम ॥

११४ पाठान्तर—तन्मै । स्याम । वाम । मनमथ । वाली । सुप्यं । लच्छी । ग्रहा । पचावली ।
श्रवं । लच्छन । काम । गुणै ॥

११५ पाठान्तर—रिन । जोत । करवत्त । कालिकल । निसानं । बग्गि । निसानं । थानं ।
विभर । अगमगह । गइय । तिम । भंजै । पृक ॥

११६ पाठान्तर—लंगरीराय । धनि लंगा तोर तीय धन्यं । जीवित । मन्यं ॥

संग वरनि डोला चढि राजं । मनै रति दुति काम समाजं ॥
 के अलि डोलनि सुख्य सुसाजं । चढि सब सुख्य वजावत वाजं ॥
 कं० ॥ १८३ ॥ कू० ॥ ११७ ॥

पृथ्वीराज का ग्यारह डोलों सहित होना ॥

गाहा ॥ करी जर्जत सरीरं । भीरं भंजि खामि का भेवं ॥

ग्यारह डोल सुख्यं । कथं पत्तेव संभरि अहं ॥

कं० ॥ १८४ ॥ कू० ॥ ११८ ॥

पृथ्वीराज का विवाह कर घर पहुँचना ॥

दूहा । अह पत्तौ जित्तौ सयन । परनि सुचंगी बाल ॥

जंभा वीतं न्निस्सयौ । कुँअरप्यन सुहि लाल ॥

कं० ॥ १८५ ॥ कू० ॥ ११९ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ बंस अनल चहुआंन । भयौ न पिथ सम कोई ॥

जिग पंडे षल षग । दीन बंदै सब लोई ॥

जिन नाहर राइ नरिंद । पंडव सह पजारिय ॥

जिन वंभनवा सौ सिंघ । बान ढव्यौ गंजाइय ॥

अरि घरन घरनि घर चैनं नहि । सयन निसंकन संचरहि ॥

वन गहन बहन विह्वल फिरहि । ब्रंदर ज्यौं कंदर बसहि ॥

कं० ॥ १८६ ॥ कू० ॥ १२० ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराजरासके नाहरराइ

कथा वर्णनं नाम सप्तमो प्रस्तावः ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

११७ पाठान्तर-वरनि । मनो । रति । डोलन । सथ ॥

११८ पाठान्तर-करि । भजि । सुख्य । सभरी ॥

११९ पाठान्तर-गृह । निप्रयो ॥

१२० पाठान्तर-चहुवांन । भय । पिथह । नाहरराय । नाहरराष । पंतायीय । सौं ।
 वांन । ठट्टौ । ठट्टौ । चैन नह । ज्यौ ॥





अथ मेवाती सुगल कथा लिख्यते ॥



(आठवां समय ।)

— . 0 : —

सोमेश्वर के मंडोवर जीतने और लूट को सरदारों में
बांट कर प्रबल प्रातप के साथ राज्य
करने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ सुवसि देस सोमेस । पेस मेवास मचीपन ॥
सुभट थट संघट्ट । दिट्टि कुँवरं किय जीपन ॥
मंडोवर परिहार । मारि उज्जारि जेर किय ॥
सामतंन सम रंग । लच्छि लभी सुवंटि दिय ॥
दिन दसा देस दरवार दुति । दान पगग रत्तौ रचै ॥
पट्टु प्रबल पारि पच्छारि करि । अदट दह अगच्चनि गचै ॥

कं० ॥ १ ॥ क० ॥ १ ॥

सोमेश्वर के गुणों और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ भरिच दंड वल संड । गर्भ गर्भन डर कंडहि ॥
सगपन पृक पग घास । पलक सेवा सिर मंडहि ॥
दुजनि देव गुर गाध । पाइ पुज्जियहि निरंतर ॥
पंडित गुनी गुनगय । द्रव्य लै चलहि दिसंतर ॥
दरवार भीर सुभटन थटन । कला कलित जाटिक नटहि ॥
छत्तीस राग रागनि रसनि । तंत ताल कंठन ठटहि ॥

कं० ॥ २ ॥ क० ॥ २ ॥

१ पाठान्तर—सुभट्ट । दिट्ट । कुवर । कुवर । जिपन । उजारि । लच्छि । लभि । लभी । लीप ।
दान । पदारी । हन ॥

२ पाठान्तर—दडह । दुजन । गार्ह । गाय । पाय । पुजहि । पुजियहि । रागन । रसन ।
तंत ताठ ॥

सोमेश्वर का भेवात के राजा मुगल (मुद्गलराय) के
पास कार लीजे के लिये दूत भेजना ॥

कविता ॥ एक सुदिन सोमेश । दूत चञ्जूर बुलाइय ॥

भेवाति मुगल नरिंद । पत्र पठाइ लिपिदिय ॥

भूमि आस जौ करहि । भरहि तौ उंड खेव कधि ॥

नतर समर डर डरपि । समुद्र उत्तरहि पार तरि ॥

सिर धारि हुकुम घर चलिय तहँ । जहां मुगल मंडल मही ॥

सोमेश सूर प्रथिराज कल । तिम संमुच घर जर कही ॥

छं ॥ ३ ॥ छं ॥ ३ ॥

राजा मुद्गल का यह पत्र पाकर क्रोध प्रगट करके दूत को
लौटा देना और सोमेश्वर का पत्रोत्तर पाकर क्रोध
करना और उस पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना ॥

छंद पद्वरी ॥ पढ़ि पत्र पिथ्य मुगल नरिंद । प्रज्जरिंग रोस भेवात रूंद ॥

बहु दिवस सोमं नृप हुअ सुखंग । किम उच्छ्वस्त कही मुखंग ॥ छं ॥ ४ ॥

किम खलिल उंट मुख चढै नीर । किम पवन गवन गति धरै धीर ॥

किम सूर सीत गुन गचै अंग । किम धर्मराज धरै दया अंग ॥ छं ॥ ५ ॥

किम तजै व्याल बल विषम मुख । किम तजै जटी मल गरल दुष्य ॥

किम तजै उदधि उर आगनि दाच । किम तजै चंद्र रवि राइ आच ॥ छं ॥ ६ ॥

धरि नाम छचि कौं दंड देइ । इच बत्त मुख कौं राज लेइ ॥

आरु करन सेव कचि चाहु आन । मन मभक्त सौस मति राज आन ॥ छं ॥

सेवासु मोचि श्रीनाथ पाइ । तिचि चरन चित्त लग्यौ सदाइ ॥

भंडार दंड मो सस्त पान । जब तव सुलेषु चाजुर जिदांन ॥ छं ॥ ८ ॥

सिर पाव मंगि बुलिक प्रवीन । पथिराइ चरन बर बिदा दीन ॥

फिरि दूत पश्च अजमेर आइ । दिय पत्र लगि सोमेश पाइ ॥ छं ॥ ९ ॥

बंचिय सुलेष काइथ प्रमान * । सुनि सोम राज चहु आन भान ॥

३ पाठान्तर-हजूर । भेवाती । नरिंद । पठाय । लिपि । भूमियास । उत्तरहि । हुकुम ।
तहां । तह ॥

* प्रमान=प्रमानराय नामक कायथ सोमेश्वरराज की पेशी का मुंशी था ॥

करतार च्युष्य षग दान दोइ । धन मद् गर्व जिन करौ कोइ ॥ १० ॥
 अनसंक कंक चम बंरु धीर । तिहि दान दंड मो जुद्ध श्रीर ॥
 प्रजरिग सोम सुनि अवन हूत । जिहि गेह पिथ्य अवतार भूत ॥ ११ ॥
 बुह्लाइ सूर सामंत राज । दुय घटी मुहूरत सधौ आज ॥
 मेवात मची ऊजारि जारि । पुर ग्राम नैर हीजै प्रजारि ॥ १२ ॥
 षन सोहि बंक गढ ठाहि देहिं । इम करिय भूमि मेवात लोहिं ॥
 कित्तीक महिप मुंगल नरेस । बल बंधि संधि विन करि असेस ॥ १३ ॥
 पञ्जन बोलि कूरंभ राव । पुंढीर चंद जनु अग्नि बाव ॥
 दाहिम नरिंद कैमास संग । चामंड राव अरि दल अभंग ॥ १४ ॥
 गुज्जर कनक वड राम देव । गहिलौन राव गोइंद सेव ॥
 इतने सुभट सजि जूच धार । बजि पंच सबद बाजे करार ॥ १५ ॥ ४ ॥

**ज्योतिषियों से सुहूर्त दिखाकर पुष्य नक्षत्र में चढ़ाई
 के लिये निकलना ॥**

दूहा ॥ बोलिय जोगि गनिक दुज । घरी मुहूरत सइ ॥
 तेरसि पुष्य ह अगु दशा । चढि चले निशि अइ ॥ १६ ॥ ५ ॥
घर की रक्षा के लिये पृथ्वीराज को घर पर छोड़ा ॥
 दूहा ॥ रत्तजु इह विधि गेह भय । सुनि सोसेस भुआल ॥
 सिसु रपि ह संहौ चळौ । मुंगल दिसा विशाल ॥ १७ ॥ ६ ॥

४ पाठान्तर-पिथ । मुंगल । नरिंद । प्रजरिग । प्रजारिग । रोम । मेवात । सुपग ।
 उद्धवत । कठी ॥ ४ ॥ सलित उलटी । शीत ॥ ५ ॥ व्याल । मुःप । मुंष । दुःप । दुप ॥ ६ ॥ नांम ।
 छिन्नी । मुःप । चाहुआन । चाहुवान । मक । होस । होस । आन ॥ ७ ॥ पाय । तिहिं । दंड मो
 भडार पर सस्त्र पानि । निदान ॥ ८ ॥ बुलिक परवीन । पहिराय । पछ । आय । दीय । लगि ।
 पाय ॥ ९ ॥ कायथ पमान । चहुवान । भान । हय । दान । दाय । मदहि । कोय ॥ १० ॥ तिहिं
 दान । प्रजरिग । जिहि । गेह । पिय ॥ ११ ॥ बोलाय । दुअ । मुहूरत । उजारि । ग्राम । नयर
 १२ ॥ पनि । करिअ । करिसु । मेवात । कितक । सुभूमि ॥ १३ ॥ पञ्जर । ननु । चावडराव ।
 ॥ १४ ॥ रामदेव । गोयद । भट ॥ १५ ॥

५ पाठान्तर-बोलिय । घरी । पुरकर । भृगु दशा । चले । निशि ॥

६ पाठान्तर-रति यु विधि इह गेह भय । रपे समुह । दिशा विशाल ॥

यात्रा के समय अच्छे शगुन मिलने ॥

दूचा ॥ प्रथम प्रयानह सुंदरी । मिली अंक लिय वाच ॥
पीतांबर अंबर धरै । दीप जोति रचि थाच ॥

छं० ॥ १८ ॥ छ० ॥ ७ ॥

दूचा ॥ कलस कामीनी इक्क शिर । प्रात होत नृप पिष्य ॥
मच्छ कंध काचार करि । घुर धुनि वाचम इष्य ॥

छं० ॥ १९ ॥ छ० ॥ ८ ॥

दूचा ॥ अन्य सगुन सुभ पिष्य सब । गुंज गहर नीसान ॥
तमहर कर उज्जल अवनि । प्रगटे पुच्च दिसान ॥

छं० ॥ २० ॥ छ० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज को राज्य में छोड़कर सोमेश्वर का मेवात
पर चढ़ाई करना और उसकी सूचना यत्र
द्वारा मुद्गदलराय को दे कहना कि
लड़े वा दंड दे आधीन हो ॥

छंद भुजंगी ॥ चक्यौ चंपि सोमेश मेवात थानं । रघ्यौ राज प्रियराज गेहं निधानं ॥
फटी फौज बैरीन की काल दिष्यी । तवै कगदं अहराजं विसष्यी ॥ छं॥ २१ ॥
वरं वीर धीरं मचा वैर पुहं । मगै राज सोमेश सौं जुड अच्चं ॥
मचा तेज जाजुल्य भारी सुषगं । करै वैर सारथ्य पारथ्यजगं ॥ छं० ॥ २२ ॥
इसौ सूर सोमेश दीपौ मिलानं । दियं कगदं मुंगलं राजथानं ॥
करो सेव मेवं किमो अषि दंडं । तजौ आज पच्छै पगं पंडि छंडं ॥
छं० ॥ २३ ॥ छ० ॥ १० ॥

० पाठान्तर-प्रयानह । प्रयानह । लियें । पीतांबर ॥

८ पाठान्तर-एक शिर । पिपि । मछ । वामस ॥

९ पाठान्तर-सुभन सब । निसानं । उज्जल । प्रगटी । दिसान ॥

१० पाठान्तर-मेवात । प्रियराज । प्रियराज । गेहं । निधानं । दीपी । तवै । विसष्यी ॥ २१ ॥

मगै । युडु । अच्च । भारी सुजाजुल्य पगं । सारथ्य पारथ्य ॥ २२ ॥ इसौ । मेवानं । दीपौ । पछै ।
छंडि ॥ २३ ॥

सुद्धलराय का पत्नीतर देकर सोमेश्वर और पृथ्वीराज
होने से लड़ाई भांगना ॥

साटक ॥ स्वस्ति श्री सउमेश राजन वरं । प्रियाज राजं वरं ॥
तो पत्तं सुनि श्रवण कागद वरं । पल्यंज आकूनयं ॥
जाजा भंजन सेन साचस रजे । प्रातं प्रतं जुद्धयं ॥
नां किञ्चै तिन ठाम पचिय वरं । द्विम्या किमा कामनं ॥

६० ॥ २४ ॥ ६० ॥ ११ ॥

सोमेश्वर का अपने लड़के के बध के विषय में संशय करना ॥

दूचा ॥ तिसु संसौ सन्हौ फिस्यौ । उभय काम बध वीर ॥
जौ मुक्कै चिय अधम कृत । तौ दल सद्धि सरीर ॥

॥ ६० ॥ २५ ॥ ६० ॥ १२ ॥

और पृथ्वीराज के पास सुद्धलराय के पत्र का संदेश
भेजना और उसका रोस में आकर पिता के
पास रण में आ मिलना ॥

कवित्त ॥ इल भग्ना तिय पुच्छ । तात मुक्कौ संदेशं ॥
अरिन सयन संमुच्चौ । जुद्ध मंगन अंदेशं ॥
वाल कठिन कर अघ्यौ । भंम रष्यन पित कागर ॥
जु कहु अग संभवै । सोइ किञ्चै सुमत नर ॥
चढि बान वियोगन कंत अप । सो निस रष्यौ राज तिसु ॥
सामंच दोच भय प्रात वर । चढि चल्यौ संग्राम तिसु ॥

६० ॥ २६ ॥ ६० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ सुन्यौ राज प्रथिराज । तात मुक्कौ संदेशं ॥
भयौ रोस जाजुल्य । तुल्य पावकक सुभेसं ॥

११ पाठान्तर-स्वस्तश्री । सोमेश । प्रथीराज । प्रथिराज । तो । श्रवन । पलयंच । पलयंज ।
प्रात । प्रातं । नां । किञ्चै । टाम । पिचिय । द्विमया ॥

१२ पाठान्तर-दोहरा । सन्हौ । पल्यौ । उभै । मुक्कै ॥

१३ पाठान्तर-भगा । पुच्छ । पुद्धि । मुक्कौ । संदेश । अरिय । सैनं । अदेश । रपन । यु ।
आय । निशि । रष्यौ । राज । सामत । राज वर । चढे । चल्यौ । संग्राम ॥

कवन वत्त इह तत्त । मत्त मंड्यौ अरि ग्रेहं
 मर्चिम जुद्ध विन मुद्ध । करे नह सेव सनेहं ॥
 बुल्लार अप्प भर अप्प सँग । चढि चल्यौ निशि अय्य मच्च ॥
 पत्तौ सुजाह तिन ठाम तव । सुध्य सयन सोमेस सच्च ॥

कं० ॥ २७ ॥ दू० ॥ १४ ॥

**पृथ्वीराज का पिता के पास पहुंच कर सब सेना को सोते
 हुए पाना और सोमेस का उससे न बोलना ॥**

गाद्या ॥ पत्तौ पडु ढिग तात । दिप्यौ सोतय्य सब्ब सेनायं ॥
 न बुल्यौ सोमेसं । प्रथिराजं मिष्टयं वैनं ॥ कं० ॥ २८ ॥ दू० ॥ १५ ॥
**उसका पिता को निद्रा में और शत्रु की सेना को
 देख भाल कर उतापित होना ॥**

अरिह्व ॥ मसा तेज तन जग्गिय बीरं । तात दिप्पि निद्रा घन श्रीरं ॥
 पडिल्लोइ अरि सेन संपत्तिय । ज्यौं अरियं घन बीज पिवत्तिय ॥
 कं० ॥ २९ ॥ दू० ॥ १६ ॥

और उस का शत्रु की सेना पर झपटना ॥

दूहा ॥ सयन कंडि पति सयन सैं । झपय्यौ इन उन मान ॥
 लीनर तीतर देषि कै । झपय्यौ जानि सिचांन ॥ कं० ॥ ३० ॥ दू० ॥ १७ ॥

पृथ्वीराज और मुद्गलराय का युद्ध ॥

कवित्त ॥ जनु कि सिंघ बन गज्जि । झपटि करि करानि जुथ्य पर ॥
 जनु कि अंजगिय जात । पाल दनु दिप्पि ष्ठय्यवर ॥
 जनु कि भीम भीमंडा । दंन दंतीय उहारज ॥

१४ पाठान्तर-सुन्या । पावक । करे । बुल्लाय । मच । आप सग । चल्यौ । निशि । अघमड ।
 पत्तौ । ठाम सुप । सैन । सोमेस जहां ॥

१५ पाठान्तर-सो सब्ब सच्छ सेनायं । तथ । सय । नह । बुल्यौ । पृथीराजं ॥

१६ पाठान्तर-बीर । दिपि । निद्रा घठ श्रीर । पडिल्लौ । अरि । संपत्तिय संपत्तिय ।
 पिवत्तिय ॥

१७ पाठान्तर-सैन कंडि पति सैन सो । उनमान । लीनर । जानि ।

जनु कि गरुड गल गरुज्ज । बज्ज पंगव बहु पारन ॥
 तिम सूर क्षपटि सोमेस सुअ । जनु अकास तारक तुटिय ॥
 जम जोर दोर अरि उडुवन । सार मार सचुन जुटिय ॥

छं० ॥ ३१ ॥ छ० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ उन मुंगल महि इंद । इंद देवन जनु पारस ॥
 चर बल कर बल कोर । गोल मंडिय भर भारस ॥
 गहिर गुंग नीसांन । जानु बहल गुर गरुज्जिय ॥
 बरन बरन वैरष्य । इंद्र धनुषध सम रज्जिय ॥
 चथ नारि धारि आतस अनैत । सोर दोर अंमर उडिय ॥
 जानै कि विरवि बारधि लहरि । महि अजाद बूडन कुटिय ॥

छं० ॥ ३२ ॥ छ० ॥ १९ ॥

हेसे पृथ्वीराज के अन्य सूर मुद्गल के योद्धाओं से लड़े ॥

गाहा ॥ इम रंजे रन रंगं ॥ सूरं नूरं अंगं अमितायं ॥

जनु * विरचे महिष महिंद्रं ॥ बज्रं पात घाव अंगायं ॥

छं० ॥ ३३ ॥ छ० ॥ २० ॥

कन्ह का मेवातियों से युद्ध ॥

कवित्त ॥ उत्तमंग दर द्यौर । ठौर रष्यन मेवातिय ॥
 नीस नाद मुंगल नरिंद * । कहर कुष्यौ घन घातिय ॥
 इत सु कन्ह नरनाह । दाह दावालन जस्त्रिय ॥
 चक्क वक्क धरि धक्क । जानि महना रंभ क्षत्रिय ॥
 चव दंत अंत उरक्षे जनुकि । मेह बुंद सर कर कुटिय ॥
 सरजाल हाल अनचद अवनि । तिमिर पसर रविकर मिटिय ॥

छं० ॥ ३४ ॥ छ० ॥ २१ ॥

१८ पाठान्तर-कर । करिन । जुय । अजनी । दिपि । हय धर । गनि । बजि । तिम सु सूर
 सोमेल सुअ । जुटिय । उडुवन ॥

१९ पाठान्तर-मही । गहर । नीसान । जानु । रजिय । जानै । मृयाद ॥

२० पाठान्तर-सूर । नूर । अंग । * अधिज पाठ है । महिंद्र ॥

२१ पाठान्तर-ठौर । ठौर । मेवातीय । नाद । मुंगल । * अधिज पाठ है । घातीय ।
 तलिय । जानि । रंभ । क्षत्रिय ॥

कैमास का पठान बाजीदखां से जुहु ॥

कवित्त ॥ वाम अंग पठान । विरचि बाजीद + सुपंनिय ॥
 उन उप्पर कैमास । पुकन प्रथीराज सुदिंनिय ॥
 सीस नांइ बल बाइ । लाइ लुगिय घन रोसन ॥
 तीर तुवक तरवारि । तच्छि निकरै उर औरन ॥
 अनचह नह नीसान धुनि । लगी लाग मारु वजन ॥
 रन तूर तूर तबलन चक्क । गहक चक्क रज्जे रजन ॥

ॐ ॥ ३५ ॥ ६० ॥ २९ ॥

कूरंभ से राम गुजर का युहु ॥

कवित्त ॥ दक्षिन दिसि कूरंभ । नाम नरेन निवदिय ॥
 तिन पर गुजर राम । करन दस दूवस वदिय ॥
 समर अमर परै सूर । चंपि जल जानि उछारिय ॥
 लोह लहरि बुड़ि जाहि । मुररि मरदान मुछारिय ॥
 अन भंग अंग तन तन तकहि । पकहि वकहि वज्जहि वलिय ॥
 अनभूत भूत भिरै भूत भुव । समर ओन सलित चलिय ॥

ॐ ॥ ३६ ॥ ६० ॥ २३ ॥

इतने में पृथ्वीराज का रण के बीच अचानक जा पहुँचना
 और घोर युहु का होना ॥

कंद भुजंगी ॥ जयं जाय पत्तौ प्रथीराज जुहुं । करी सख्य सेना विरुद्धं विरुद्धं ॥

२२ पाठान्तर—वाम । पठान । सुयं । नीय । प्रथीराज वनिय । नांइ । बाइं । लाइं । तवक ।
 तरवार । निकरै । उंरन । नीसान । हक । रजे ॥

+ बाजीदखां नामक पठान मुद्गलराय का एक बड़ा लडाका सेनापति अर्थात् जनरल
 था और परदेशी सिपाही उसके विभाग में थे । यह वृत्त इस महाकाव्य में जो मुसलमानी भाषा
 के शब्द आते हैं उनके विषय की शंका मिटाने के लिये बड़ा उपयोगी है ॥

२३ पाठान्तर—दक्षिन । दिसि । नाम । नारि ननिवदिय । गुजर । राम । दूजल । घटिय । परै ।
 परै । जानि । लोहरि । जाहि । मरदान । मुछारिय । तकहि । वकहि । हकहि । भिरै । भुय । चलिय ॥

बजे ताल कालं मद्वा मल्ल बीरं । दुहुं बाँह सेना विरुडं सुधीरं ॥ कं० ॥ ३७ ॥
 गही बाग गट्टी कठे लोह तत्ते । मनौं कारनं काम दुग्गा विरत्ते ॥
 स्वयं सूर सूरं मही में पचारै । लगै लोह अंगं वकै मार मारै ॥ कं० ॥ ३८ ॥
 उडै छिंछ स्वगं मनौं अगिग ज्वाला । हलै जानि पत्तं वसंतं तमाला ॥
 भिनं केति षगं हिनंकेति ताजी । भिलै भूप भूपं मद्वा बीर गाजी ॥ कं० ॥ ३९ ॥
 हिनकैति षगं तुटै सीस लल्लै । उटै किंछ इच्छं मनो दाह पल्लै ॥
 लगै गुर्ज सीसं इसे टोप टुहै । मनो दंग दाहं लगै वंस फुहै ॥ कं० ॥ ४० ॥
 इसे मंच क्वची लगै लाग षगो । प्रलै काल घ्यालं मनौं बीर जगो ॥
 कं० ॥ ४१ ॥ कं० ॥ २४ ॥

**मुद्गलराय की फौज का तितर बितर होना और
 उसका पकड़ा जाना ॥**

कवित्त ॥ कहुं तिमत्त धर धुकत । लुकत कहुं सुभट घात कल ॥
 टुकत काल कहु पत्र । कुकत कहु सेन पाइ जल ॥
 रुकत समर भट भीर । धुकत धर मद् कक्क जनु ॥
 सुकत कंठ अम समर । टुकत कातर फौजन तनु ॥
 इम* खोयेस राइ चहुवान सुअ । अरि समुंद जल बहुयौ ॥
 चट्टिय जिहाज जस जट्टि पल । मुंगल मद्दि गद्दि कट्टयौ ॥
 कं० ॥ ४२ ॥ कं० ॥ २५ ॥

**कवि का सोमेश्वर की सेना और छोड़े हाथी आदि की
 यज्ञादि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ॥**

दूचा ॥ चमकत सार सनाह पर, हय गय नरभर लगिग ॥
 मनौं वृच्छ परि भिंगिनिय, करत केलि निसि जगिग कं० ॥ ४६ ॥ कं० ॥ २६ ॥

२४ पाठान्तर-दुहू । घाह ॥ ३७ ॥ गठी । मनौं । काम । दुगा । महोमे । महोमै । पचारै ।
 लगै । वल्लै । मारै ॥ ३८ ॥ छिंछि । अगं । स्वगं । मनौं । ज्वाल माला । सर्वंतंत माला । भनकैति ।
 हिनकैति । भिलै । * सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥ ३९ ॥ भिनकैति । तुटै । शीश । लल्लै ।
 उटै । इच्छं । मनौं । फल्लै । लगै । लगै । शीशं । टुटै । मनो । लगै । फुट्टै ॥ ४० ॥ मत । पित्री । माने । वीर ॥
 २५ पाठान्तर-कहु । तमंत । तमत्त । कहु । कहु । यात्त । टुकत । कहुं । कहु । सेन ।
 मद् । टुकत । तन । * अधिक पाठ है । राय । चहुवान । चट्टिय । मुंगल्ल ॥
 २६ पाठान्तर-निर । भिंगनां । निशि ॥

कवित्त ॥ जगिग सूर सोमेस । सेन सज्यौ हयगय नर ॥
 राका निसि जनु उदधि । चढैं चह्लोर चंद पर ॥
 सुन्यौ श्रवन इह वैन । लरहि प्रथिराज पलनदल ॥
 पुच्छ चांपि जनु सिंच । दिष्यि प्रजल्यौ नयन भल ॥
 दइ बंब दुतिय जनु गगन रव । कुटि अंदुन गज गुरि चलिय ॥
 दीसंत मत्त क्कै नयन । मनौं प्रवत पंपच चलिय ॥ कं० ॥ ४४ ॥ २७ ॥
 दूहा ॥ ठनक घंट घुघर धमक, धमक धरनि वर पाइ ॥
 भामकत सुंड लपेट भट, भरत देत गिर राइ ॥ कं० ॥ ४५ ॥ २८ ॥
 दूहा ॥ पग लंगर जंजीर जरि, कज्जल गिरवर अंग ॥
 दिष्यदंत बग घन वरन । भरत मदंग छदंग ॥
 कं० ॥ ४६ ॥ २९ ॥
 दूहा ॥ पब्य कै पावस जलद, दल दाचन उठि कोर ।
 दिष्यावत दल बहलन, भर चर परत अमोर ॥
 कं० ॥ ४७ ॥ ३० ॥
 दूहा ॥ दंति पंति कज्जल वरन, दिष्यि ठलमल ठाल ॥
 करहरंत वैरष लषी, दल सोमेस भुआल ॥
 कं० ॥ ४८ ॥ ३१ ॥
 दूहा ॥ उठी कोर हथ गय प्रबल, दिठु दुअन कुटि घीर ॥
 दिषि धनु धर हथनारि धरि, भरकि भरचरी भीर ॥
 कं० ॥ ४९ ॥ ३२ ॥
 कंद विराज* ॥ कियं चित्त पंगे । घटं घट भंगे ॥
 उनंगे सुषंगे । मनौं बीर जंगे ॥ कं० ॥ ५० ॥

२७ पाठान्तर-रन । चढै । सुन्यौ । बैन । पृथीराज । पुछ । दिपि । प्रज्जरै । वडै । दइय । अदुन । क्कै । क्कै । मनौं । पंपकि ॥

२८ पाठान्तर-ठनक । घुघर । धमकि । पाय । राय ॥

२९ पाठान्तर-कज्जल । दिग्ध । दिघ । सदंग ॥

३० पाठान्तर-दिष्यावत । दिष्यावै । दल बल दलन ॥

३१ पाठान्तर-दंत पंत । दिपि । ठल मल । वैरषलकी ॥

३२ पाठान्तर-हथ दल । दिपि धनुष हथ नारि धरि । फरकि ॥

* इसी समय के रूपक २२ की टिप्पण के साथ इस रूपक को भी ध्यान में लेना चाहिए ॥

रसं वीर लगगे । बढै अगग अगगे ॥

डिगै नाहि डिगगे । मचा सोर भगगे ॥ कं० ॥ ५१ ॥

परैके अकगगे । न वैरीन सगगे ॥

तजै नाम षगगे । कं० ॥ ५२ ॥ क० ॥ २३ ॥

गाधां ॥ जगगेयं जुध वानं । कुंभे यनं कंकल्लं कायं ॥

दंतं मुष्य करेयं । वाहंतं वीर सुभटायं ॥ कं० ॥ ५३ ॥ क० ॥ २४ ॥

रण में मरे और घायल कैसे पड़े दीखते थे और कौन कौन
योद्धा किस किस से घायल हुए और मारे गए ॥

कवित्त ॥ ह्य हिंसहिं गज चिकरि । भगर सम दिषि कुलाचल ॥

बलि पंषिनि बेताल । नंदि नंदिय भोलाचल ॥

गिद्धि सिद्धि किलकंत । ईस मुंडावलि संघय ॥

इकि कंमंध पर टुहि । चढी देवी दल मंधय ॥

उपमान तास कवि चंद कहि । सुभन सनाच सुकालनिय ॥

जाने कि कृष्ण दंदावनच । रास रमै निसि ग्वालिनिय ॥

कं० ॥ ५४ ॥ क० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ * जहै बाजीद पठान । सघन घुरसांन षान तहै ।

ह्य कटि दुव तंडीर । उभय कम्मान तांनि सच ॥

उंच कहर कंधान । कौट गिरि दांन लंब भुअ ॥

रकत क्रान मुष चष्यु । कंक अनसंक अवनि धुअ ॥

३३ पाठान्तर—इतर पुस्तकों में इस छंद का नाम रसावल या रसावला लिखा है परन्तु हमारी सं० १६४० की पुस्तक में शुद्रु नाम विराज है वह हमने प्रयोग में लिया है क्योंकि यहाँ पर उसका ही लक्षण मिलता है अर्थात् वह दो लगुगु का होता है और रसावल दो गुलगु का होता है ॥ घट । मनो । बढे । अगो । अगे । अग डिगो । नाहि । सोर वागे । फरके अकगे । सगे । तजै । नाम ॥

३४ पाठान्तर—कुंभेयन कंकलं कादं । दंतं मुष । सुभटादं ॥

३५ पाठान्तर—हिंसहिं । हिंसहि । दिषि । पंषिनि । गिद्धु । सिद्धु । संघिय । कंमंध । परि । तिहि उपमान । उपमान । निकि ग्वालिनिय ॥

भरि बांह कांन निलि लोह मुठि । दिष्पि घवासति ओट करि ॥
ओडन समेत संनाह सम । सर सुविधि फुटिग निकरि ॥

ॐ० ॥ पू० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ धुक्त धरनि घावास । कोपि कयमास काल कर ॥
वज्र घात बलिचंड । हनिग तरवारि टोप पर ॥
टोप टुटि सिर फुटि । सम सुसंनाह चीर हुअ ॥
बष्यर पष्यर तुटि । तुटि हय घंड परिय जुअ ॥
जय जया सह आयास हुअ । सुमन सघन उष्यर झरिग ॥
देष्यंत कहर करिवार वर । सेन सघन विंडुरि डरिग ॥

ॐ० ॥ पू० ॥ ३७ ॥

जहंत रेन धर धरन । तहंत बड गुज्जर रामह ॥
तहं मुगल रघन समर । संग घल्लिय सिर सामह ॥
तुरसबींध सिर टोप । फुटि षुष्यरि रत बुट्टिय ॥
तहां उठग इक बीर । जानि जमरान सुहट्टिय ॥
तरवारि तेज नारेन हनि । धर असंध तुटिग धरह ॥
अनभूत इष्ट अवसान बढि । करहि देव बंदनवरह ॥

ॐ० ॥ पू० ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥ जहां मंगद मरदान । कन्ह तहां जांनि नाग भुअ ॥
मिले तक्कि तरवार । झारि उभारि सीस दुअ ॥
मेलिय मांगद सीस । टोप कट्टिय सिर धारिय ॥
नर नांचै कटि कटि । अइ अइ करि डारिय ॥

३६ पाठान्तर-जहा । बाजीद पठान । तहं । तहां । दुअ । चयु । भिरि । मिलि छोह ।
दिषि ।

३७ पाठान्तर-केमास । बलिचंड । जुट्टि । वपर । पपर । जुट्टि । जुट्टि कै घंड परिय
जुअ । जै जया । हुय । दिष्यंत । विंडुरि डरिग ।

३८ पाठान्तर-जहान । जहन । धरत । तहात । तहत । गुज्जर । राम । तहां । मुंगल ।
रष्यन । घल्लिय । सामह । विधि । सेर । बुट्टिय । उठग । ईक । जानि । यमरान । जमरान ।
जुट्टिग । अवसान ॥

धर गिरत मंत माह मरद । हय धंधां अश्वर जरिय ।
जै जया सह सुरपुर भयो । इम सुकन्ह है धर परिय ॥

छं० ॥ ५८ ॥ छ० ॥ ६८ ॥

कवित्त ॥ कन्ह कटत है धरनि । करनि जिन तित मारं मचि
वहै दुहथ तरवारि । कंछ क्वि लप्पटारु तचि ॥
उडनहि हय पग न्यार । सीस हक्करि धर धावहिं ॥
हंस हंस के मिलहि । माल अच्छरि के नावहिं ॥
अदभूत भयानक भगर सम । लगर लाग लगिमथ रनह ॥
हंकार हक्क कल कूह मचि । जयं सबद मच्चिय घनह ॥

छं० ॥ ५९ ॥ छ० ॥ ४० ॥

जयजयकार का उपमाओं के सहित वर्णन ॥

कवित्त ॥ मुषनि बट्टि हंकारि । तलब टंकार लाग लगि ॥
बजि भेरी भंकार । धार भंकार षाग षगि ॥
कुट्टि सीर संकार । लुट्टि भंडार धीर मुति ॥
धुकाहि धज्ज भंडार । भुकाहि संडार मार धुति ॥
अचरिज्ज अवनि अंमर चरनि । बरनि क्वि कहा सब सकथ ॥
समरंग दुदल पिष्पिय सुभट । जकय केय कुक्कय चकय ॥

छं० ॥ ६० ॥ छ० ॥ ४१ ॥

छंद तोटक* ॥ भमरावलि कंदय चंद कलं । पठि पिंगल अच्छरि जे न्निमलं ॥
वजई भनकार सुअस्सि घनं । षह तुंमर रिभिक्षय नाद धुनं ॥

छं० ॥ ६१ ॥

३८ पाठान्तर-जहां । मरदांन । तहां नर नाह कन्हक । कमकि बाहि पग भट्ट । भारि उभारि सीस दुअ । मेल्हिय । मंगद । शीश । धारीय । नर नांहे असि कट्टि । यदु अदु, करि डारीय । जरिय ॥

४० पाठान्तर-मार मचि । उडहि । हक्कहि । अच्छरि । भयानक । लगिय । जय ॥

४१ पाठान्तर-बट्टि । धंज ॥

भननं कहि षग कला दुसरी । प्रगटे जनु विज्ज षहं पसरी ॥
उपमा तिसरी असि वैठि चयं । फिर नागनि नाग मनौं षहयं ॥

कं० ॥ ६२ ॥

जु करै दल दोइय तीर मरं । वचचै जनु टिड्डिय सेन परं ॥
दुतिई उपमा कवि यौं मनयी । किय भंगन चंद निसा जगयी ॥

कं० ॥ ६३ ॥

जु चहं चह चंबक बज्जि घनं । कि नचै उपमा अग ईस जनं ॥
जु फिरै गज गुंजत रोस चठं । षह बहल जानि किवाइ बठं ॥

कं० ॥ ६४ ॥

किसु रोपिय भुंडय सूर रनं । कि सुभै सुवसंत षजूरि जनं ॥
जुवरै बरनी घन अच्छ वरं । हुलरै छिय चांपि विपिठु करं ॥

कं० ॥ ६५ ॥ ६० ॥ ४५ ॥

जु बहै सिर उपपर राम सरं । सु मनौं अरिविंदन भौर भरं ॥
गज सीस सिरीन जु किंकि परी । कच अंगन इंद वधू विथुरी ॥

कं० ॥ ६६ ॥ ६० ॥ ४६ ॥

कुटि चक्र लगे गज कुंभ जिसे । मनु बहल पै सत चंद जिसे ॥
दुअ द्यय गुरु जन सीस जरो । दधि भाजन ग्वालिन कोरि चरी ॥

कं० ॥ ६७ ॥ ६० ॥ ४७ ॥

जु कियौ दल दोडन दुंद जुधं । मिलअंत सुदंषिन दिष्यि उधं ॥
पिसयौ दल मुंगल मार मरं । बढिई प्रथिराज नरिंद करं ॥

कं० ॥ ६८ ॥ ६० ॥ ४८ ॥

४२ पाठान्तर— * इस छंद का नाम इतर पुस्तकों में भमरावली लिखा है सो अशुद्ध है किन्तु वह तोटक वा त्राटक नामक है—इनमें इतना ही अंतर है कि तोटक चार ललगु का होता है और भमरावली पांच का ॥ अछिर । बजी । रिभिय ॥ ६१ ॥ फिरै । नागसि । मनो ॥ ६२ ॥ तीरन मार । षहै । अपार ॥ दुती उपमा कवि यौं मन लगि । कि भगन चंद निसा महि जगि ॥ ६३ ॥ चहं चहं । चठंत । जानि । बठंत ॥ ६४ ॥ कि रोपिय । अछ ॥ ६५ ॥ उपर । मनो ॥ ६६ ॥ मनो । हय । गुरजन ॥ ६७ ॥ सुजुद्ध । मिलंत । रंपिनि । दिष्यिय । उदु । पिस्यौ । मरार । बठी । नरिंदह । कोर ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज की विजय ॥

दूहा ॥ भई जीत सोमस सुअ, लियौ मुगल गज मेलि ।

सोधि घेत सब दिघ लहु, बोर बरंनिय केलि ॥ कं० ॥ ६८ ॥ हू० ॥ ४३ ॥

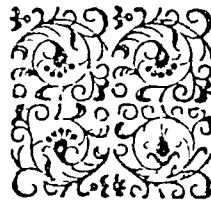
रन सुद्विष कुद्विष तजिय; घाइल लीन उठाइ ॥

भये सूभट जे अंत तन, दाघ दिघ तन तार्ई ॥ कं० ॥ ७० ॥ हू० ४४ ॥

हुअ डेरा नैवति बिहसि, पंच सबद दरबार ॥

जिन भट लगगे सस्त्र तन, तिन तन कीनिय सार ॥ कं० ॥ ७१ ॥ हू० ४५ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते पृथ्वीराजरासके मेवाती मुगल
कथा नाम अष्टम प्रस्तावः ॥ ८ ॥

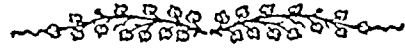


४३ पाठान्तर-जीति । दिघ ॥

४४ पाठान्तर-दाघ दिघ ॥

४५ पाठान्तर-निहसि । कीनीय ॥

अथ हुसेन कथा लिख्यते ॥



(नवां समय)



संभरिनरेश (पृथ्वीराज) और गज़नी के शाह
(शाहबुद्दीन) से कैसे बैर हुआ इसका वर्णन ॥

दूहा ॥ संभरि वै बहुआंन कै, अरु गज्जन वै साह ॥

कहाँ आदि किम बैर हुआ, अति उत्कंठ कथाह ॥

छं० ॥ १ ॥ छ० ॥ १ ॥ *

शाहाबुद्दीन के भाई मीर हुसेन के गुणों और
उसकी वीरता की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ बंधव साहि सदाव । मीर हुसेन वान धर ॥

निज्ज वान सु प्रमान । वान नीसान बंधै सुर ॥

गान तान सुज्जान । बाहु अज्जान वान वर ॥

भेव राज परवान । उच्च जस थान जुभक्त भर ॥

उदार चित्त दानार अति । तेग एक बंदै विसव ॥

संकंत साहि सादाव तिन । तेज अजे जयमंत अब ॥

छं० ॥ २ ॥ छ० ॥ २ ॥

१ पाठान्तर-बहुआंन । गज्जन । साहि ॥

* हमारे पास की सं० १६४७ वाली पुस्तक में इस प्रथम रूपक के नीचे तो इसमें लिखा दूसरा रूपक ही लिखा हुआ है परंतु उसके किनारे पर यह दोहा और लिखा हुआ है सो हम को तेषक दीखता है-दूहा ॥ आनदिय गधर्व तव, अहो सुनहि द्विग जेन । अति विचार कथन कथा, विवर कहौ वर वेन ॥

२ पाठान्तर-साहाबुद्दीन हुसेन । वान । निज्ज । वान । प्रमान । वान नीसान बंधे । गान । तान । तान । सुज्जान । सुज्जान । अज्जान । वान । परमान । परवान । उच्च । थान । जुक्त । उदार । संकंत । अजे ॥

शहाबुद्दीन की पातुर चित्ररेषा की प्रशंसा, शहाबुद्दीन
का उस पर प्रेम, मीर हुसैन का भी उस पर
आसक्त होना और चित्ररेषा का
भी मीर को चाहना ॥

कवित्त ॥ इष्यि बधु आचार । मीर उमराव जपि जस ॥
एक पात्र साचाव । विचरेषा सु नाम तस ॥
रूप रंग रति अंग । गान परमान विचष्यन ॥
बीन जान बाजान । आनि वतीसह लच्छन ॥
दस पंच बरष वाचा सुवच । सुप्रसाद साचाव अति ॥
आसिक्क तास हुस्सेन हुअ । प्रीति परसपर प्रान गति ॥
छं० ॥ ३ ॥ छ० ॥ ३ ॥

शाह का यह समाचार सुनकर क्रोध करना ॥

कवित्त ॥ एक सुदिन सुविद्यांन । साह हुस्सेन सुबुल्लिग ॥
वे काफर आतस उतंग । दह दिसि नह बुल्लिग ॥
पैसंगी पासंग । लष्य लष्यां नलवाही ॥
साईं सौं संग्राम । हक्कि हैवर गुरदाही ॥
गर्दन गुराव महि महि मषां । पांषवास अष्यिय घरह ॥
अन चहल नाल लभय रवन । करौं तुच्छ तुझी वरह ॥
छं० ४ ॥ छ० ॥ ४ ॥

हुसैन का शाह की बात न मानना और शाह का आज्ञा
देना कि या तो मेरा^३ राज्य छोड़ दे नहीं
मारे जाओगे ॥

दूहा ॥ सुनिअ बैन साचाव तव । प्रीत न छंडी वाम ॥
कोपि कछ्छौ सुरतान तव । हनौ कि छंडौ ग्राम ॥ छं० ॥ ५ ॥ छ० ॥ ५ ॥

३ पाठान्तर-इपि । बंध । स नाम । अति अंग । गान । परमान । विचत्तन । जान ।
वाजान । आनि । लछन । लवन । आसिक । हुसेन । प्रान ॥

४ पाठान्तर-सदिन । हुसेन । आतस । उतंग । पासंग । लष । लषां । साईं । सौ । गद्व ।
अनहल । लभेय । लभय । तुझीय ॥

५ पाठान्तर-सुनिग । छंडिय । वाम । सुरतान । क । ग्राम ॥

मीर हुसैन का देश छोड़ कर परिवार आदि के साथ नागौर की ओर आना ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त हुसैन । सेन अप्पन साधारिय ॥
 छंडि नयर निस्तंक । संक मन साह नहारिय ॥
 निसा जाम इक आदि । लई सो पात्र परम गुन ॥
 तरुनि पुत्र परिवार । सज्जि सब राज सु अप्पन ॥
 परिगह सुअप्य अगै करिय । षानं षानं बंधी सिलह ॥
 संचल्यौ नैर नागौर इह । तजिय देस निज गंठ अह ॥
 कं० ॥ ६ ॥ ह० ॥ ६ ॥

मीर हुसैन का पृथ्वीराज के यहाँ आना ॥

दूहा ॥ लै परिगह हुसैन गय । दिसि प्रथिराज नरिंद ॥
 संभरि बै संभारि कै । मनु आयौ अहदंद ॥
 कं० ॥ ७ ॥ ह० ॥ ७ ॥

मीर हुसैन को आदर के साथ पृथ्वीराज का बुलाना और मीर का आकर सलाम करना ॥

कवित्त ॥ पातिसाहि तहिन * नरिंद । साहि पौरोज प्रसन्नौ ॥
 घर घर साहि घरन । छित्ति नीसान दिवन्नौ ॥
 पर पठान उंचीगु । मान अगिवान अगन्नौ ॥
 तिन में रथ्यौ स हि । आन गज्जन धर थन्नौ ॥
 लभ्यै सुमीर जंभी जहर । दुनियां दित्त लुगि दुअन थां ॥
 हुसैन मीर सलाम करि । गौ चहुआनह पास थां ॥
 कं० ॥ ८ ॥ ह० ॥ ८ ॥

६ पाठान्तर-हुसैन । छंडिय । निसक । सारीय । जाम । सादिल्लीय पात्र परम गुन । सयि । परगह । बंधिय ॥

७ पाठान्तर-हुसैन । प्रथीराज । मनो ॥

८ पाठान्तर-पातसाहि । * अधिक पाठ है । नीसान । पठान । गुमान । मान । अगानौ । अगानौ । मैं । रथ्यै । थानौ । लभ्यै । जु । दुनी । हुसैन सलाम ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलना और मीर हुसैन का
सुन्दर दास को पृथ्वीराज के पास भेजना ॥

कवित्त ॥ पारधि पड्डु प्रथिराज । रमै षट्टू पुर पासइ ॥
वच्चिल चीस चिचक्क । ससिष रेसम धर रासइ ।
सो कुरंग फंदेत । डेरि बहु बंधि विनानिय ॥
जाम एक दिन आदि । मध्य घेजै मृगयानिय ॥
आथौ बसाहि हुस्सेन तहँ । सुन्धौ राज मृगया समय ।
बुल्लाय दास सुंदर विनिय । पथौ प्रत्ति चहुआन तय ॥
कं० ॥ ९ ॥ ह० ॥ ९ ॥

सुन्दर छाया का स्थान देख कर मीर का डेरा डालना ॥

दूहा ॥ उत्तम ठाम सु क्हांइ जल, करि मुकाम बलवीर ॥
षुलि डेरा बिधि बिधि बरन, तहां बयठौ मीर ॥
कं० ॥ १० ॥ ह० ॥ १० ॥

हरम (स्त्रियों) का डेरा पीछे की ओर डाला ।

दूहा ॥ डेरा हरम सुपिट्टु रषि, चिहु पष्पां बर मीर ॥
पासवांन कुल शील सम, पास रषि बर नीर ॥
कं० ॥ ११ ॥ ह० ॥ ११ ॥

सुन्दर दास का पृथ्वीराज के पास जाना, पृथ्वीराज
का मीर का कुशल समाचार पूछना और
उसका सब हाल कहना ॥

दूहा ॥ सुंदर दास सुपास गय, जहां राज प्रथिराज ॥
मिलिय बिबिधि पुच्छै कुसल, कछौ मीर सब साज ॥
कं० ॥ १२ ॥ ह० ॥ १२ ॥

९ पाठान्तर-पारिधिरा । पृथीराज । षट्टूपुर । तीस । फंदेत । विनानीय । जाम मधि
हुसेन । तहा । बुलाय । सुंदरि । विनीय । चहुआन । रय ॥

१० पाठान्तर-उत्तम । ठाम । मुकाम । बर वीर । बयठौ ॥

११ पाठान्तर-पिटि । चिहुं । पष्पा । पासवांन । शील । रषि ॥

१२ पाठान्तर-यु पास । राजन । पूछै । पुछी ॥

मंजरी, कैमास, चन्द, पुंठीर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज
का पूछना कि क्या करें क्योंकि दोनों तरह विपत्ति
है एक शाह का कोप दूसरे शरण आए
को न रखना धर्म विरुद्ध है ॥

दूहा ॥ बोलि मंजरी कैमास बर, बोलि चंद पुंठीर ॥
राव पजून प्रलंग नर, गोधेंद रा गुन जीर ॥

छं० ॥ १३ ॥ छ० ॥ १३ ॥

दूहा ॥ मेह मुष देषे न नृपति, विपति परी दुहु कंम ॥
दूक सरना दूक रघदन, दूक धर रघवन अंम ॥

छं० ॥ १४ ॥ छ० ॥ १४ ॥

चन्द का सलाह देना कि जैसे शरणागत होने पर विष्णु
भगवान ने मत्स्य रूप धर कर पृथ्वी को अपनी
सींग पर रक्खा था वैसे ही आप
भी कीजिए ॥

गाथा ॥ मनसा धारि विरंचं । दक्षिण पथ अंगुरी नषयं ॥
संभू मंन नारिंदं । सत जुगं आदि कीज पैदासं ॥

छं० ॥ १५ ॥ छ० ॥ १५ ॥ *

कविता ॥ संभू मज वरदान । लियौ तप जोर ब्रह्म पछि ॥
सरन रषि वसुमती । हेत कलपंत काल मधि ॥
नारद धरत बताइ । मच्छ रूपं जगदीसं ॥
दस हजार जोजनं । शृंग रचि ऊरध सीसं ॥

१३ पाठान्तर=मंजरी । पुंठीर । रा पजून । गोधेंद ॥

१४ पाठान्तर-यक । रघन ॥

१५ पाठान्तर-* यह रूपक और इसके आगे वाले १६ और १७ रूपक संवत् १६४७ की प्राचीन पुस्तक में नहीं है किन्तु इतर आधुनिक पुस्तकों में हैं ॥

१६ पाठान्तर-रषि । मच्छ । अग ॥

करि सदा नाव तिदि पर धरे । अनक्रांपित जिम गैज धुअ ॥

ऐसेक चंद्र कदि पीथ सम । गरुअ तंन नृप अरग हुअ ॥

कं० ॥ १६ ॥ छ० ॥ १६ ॥ *

जैसे शिवजी गले में विष धारण किस हैं वैसे ही नीर को
आप भी रखिस यह चन्द्र ने कहा ॥

दूहा ॥ संकर गर विष कंद जिम । बडवा अगनि समंद ॥

तै रव्यहु चहुआंन तिम । पां हुसेन कदि चंद्र ॥ कं० ॥ १७ ॥ छ० ॥ १७ ॥*

सुन्दरदास से पूछना कि सब स्त्रियां तो सुख से हैं और
शाह से भगड़ा होने की बात क्या सच है ?

दूहा ॥ मिलिय सु सुंदर दास तहें । पुच्छिय विधि विधिवत्त ॥

कचौ सुषी चिय सब विवर । विरस सादि सौं सत्त ॥ कं० ॥ १८ ॥ छ० ॥ १८ ॥

सुन्दरदास का कहना कि हूर की ऐसी एक पातुर
शहाबुद्दीन के पास थी उसके लेकर हुसैन
यहां चौहान की शरण में आया है ॥

दूहा ॥ पात्र एक साहाव संग । हूर नूर गुन गान ।

सौ आसौ हुसेन इत । सरन तकि चहुआंन ॥

कं० ॥ १९ ॥ छ० ॥ १९ ॥

चन्द्र का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि जैसे मौरध्वज के
यहां अर्जुन ब्राह्मण बन कर शरण गया, भगवान ने
सिंह बन कर मांस मांगा, शरणगता द्रोपदी
का चीर बढ़ाया, वैसे ही तुमने शरणगत
को रखकर क्षत्रिय धर्म की रक्षा की
तुम्हारे माता पिता धन्य हैं ॥

१७ पाठान्तर-तै । रव्यौ । चहुआंन ॥

१८ पाठान्तर-तहां । पुच्छिय । सुषि । त्रीय । विसर । सौं ॥

१९ पाठान्तर-संग । गान । हुसेन तब । तकि । चहुआंन ॥

कवित्त ॥ मोरद्वज कै सरन । गयौ दुज होइ सु अर्जुन ॥
 सिंघ रूप धरि कन्ह । मंस मंग्यौ करि गर्जन ॥
 दैन चीर अरधंग । नृपति सिर कर वत धाख्यौ ॥
 दैपि महा सतवंत । प्रगट गोविंद उचाख्यौ ॥
 धनि धनि मात पित धनि तुअ । सरनागत अंम तैं रषिय ॥
 पित्री कहंत कविचंद सैं । संभरि वै तिहि सम लषिय ॥ कं० ॥ २० ॥ ह० ॥ २० ॥

शाहसुसैन का पृथ्वीराज से मिलना, पृथ्वीराज का आदर देना ॥

दूहा ॥ गयो राज सामंत सम । मिलिग साह हूसैन ॥
 आदर नृप किनौ अदब । विवह प्रसनिय बैन ॥

कं० ॥ २१ ॥ ह० ॥ २१ ॥

हुसैन को दक्षिण की ओर नागौर की जागीर देना ।

दूहा ॥ लिये सथ्य प्रथिराज पहुं । गयौ सुपुर नागौर ॥
 धरमायन कारयधवल । दिसि दक्षिन दिय ठौर ॥

कं० ॥ २२ ॥ ह० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को घोड़े हाथी आदि देना और
 दोनों का परस्पर प्रेम बढ़ना ॥

दूहा ॥ भोजन भप्ये विविध वर, बहु आदर विधि कीन ।
 मान महातम रषिय रज, राज उभय हय दीन ॥ कं० ॥ २३ ॥ ह० ॥ २३ ॥
 दूहा ॥ धरिय डोरि हुसैन सिर, है बंधिय हैसाल ।

२० पाठान्तर-देन । धनि धनि । धंम । सैं ॥

* यह रूपक हमारी सं० १६४७ वाली प्राचीन पुस्तक में नहीं है पर आधुनिक पुस्तकों में है ॥

२१ पाठान्तर-नृप । प्रसनोय ॥

२२ पाठान्तर-सथ । प्रथीराज । पहुं । धंमाइन कायथ । दक्षिन । दपन । दै ॥

† धरमायन कायथ=पृथ्वीराज का दरवार मुंशी था । उसका काम है कि जो जो दरवार में आवें उनको उनकी नियत की हुई ठौर पर दैठावे । ऐसा करताव अभी तक राजपुताने में प्रचलित है ॥

२३ पाठान्तर-भप । मान । रपि ॥ उभै ॥

कवि । चतुर्दश दिवस, एतत्पुत्रे राजा ॥ २३ ॥ ३० ।
कवि । नरकन पंच भिरं । तीन प्रति पगत तीन सच ॥

पुरासांन कमान । पंच परमान मान जइ ॥

गज लु एक सिंघ लीय । सेत नन मइ रति ॥

सुंजन मधुर कपोल । गज भजौ प्रेमल सच ॥

इय पंच साजि साकति सुनग । ऐराकी कुल उच्च जिहि ॥

अंमोल बज्ज एक लाल दौय । रिंभू सभिय्य राज सचि ॥ ३० ॥ २५ ॥

दूषा ॥ राजन रषिय्य सुब्ब इह, प्रनवेज प्रति मंत ।

उभै परसपर गंडि परि, संचिय पेम सुमंत ॥ ३० ॥ २६ ॥ ३० ॥ २६ ॥

शहाबुद्दीन का चार दूत अजमेर भेजना ॥

दूषा ॥ च्यारि दूत अजमेर पुर, थिर मुक्केसु विहान ।

आषेटक मन देषि कै, तक्कि गए चहुआन ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को कैथल, हासी, हिसार का पगना देना

और शिकार में साथ रखना, यह सब समाचार

दूतों का शहाबुद्दीन से कहना ॥

कवि । आषेटक चहुआंन । पास हुसैन संपत्तौ ॥

बार आइ चहुआंन । भाइ घन ताहि शिषतौ ॥

नीति राब कुटवाल । तास अइ राज सु अप्पिय ॥

* वर कैथल हांभि हिसार । राजपटो दै थपिय ॥

इह चरित देषि सब दूत तब । जाइ संपते साहि दर ॥

चरवर चरित जुगिनी पुरइ । कहिय बत से मुष्पंधर ॥ ३० ॥ २८ ॥ ३० ॥ २८ ॥

२४ पाठान्तर—धरी । हुसैन । चीन्हे । पठवै ॥

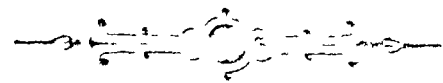
२५ पाठान्तर—तीन । पतंग । पुरासांन । कमान । पंच परमान मान जिहि । सिंघलीय । मइ रति । गज । भजौ । परिमल । है । उंच जिहि । दुइ । रोज ॥

२६ पाठान्तर—रषिय । घन ।

२७ परठान्तर—यिह । मुके । मुक्कै । विहान । चहुआंन ॥

२८ पाठान्तर—चहुआंन । हुसैन । संपत्तौ । आय । भाइ । दिपंतौ । नीतिराज । कुट-
तार । * अधिक पाठ है ॥ कैथल । हांसी । हिसार । पटो । थपीय । जाय । साहिवर । चवर
चरित । जुगिनी । मुष ॥

अथ चित्ररेखा मन्त्रो नियन्त्रे ।



(श्यारख्वां समय ।)

चित्ररेखा की उत्पत्ति पूछना ॥

॥ पुच्छि चंद्र वरदाइ नें । चित्ररेखा उत्पत्ति ।

षां हुसेन पावास कधि । जिम लीनी असपति ॥ कं० ॥ २ ॥ क० ॥ २ ॥

शहाबुद्दीन के विक्रम का वर्णन ॥

त ॥ गज्जनेस अवदेस । साहि पलांन कुम वं ॥

बदक खाभि भेहरा । कंडि गप्पर झिनि आव ॥

जल जोवन साहाव । दीन दुरंगे करि गिनिय ॥

हिदंबान मेहान । थान थानह करि गिनिय

सज्जि विषम वाइ सुरतान प्यन । साहि बदीं सत्र दीन पति ॥

धनसंकु मनु खंकपति । जनु जोवन तन रवि पति ॥

कं० ॥ २ ॥ क० ॥ २ ॥

शहाबुद्दीन का अरब खां पर चढ़ाई करने की

इच्छा कर सरदारों से पूछना ॥

कचित्त ॥ दिनि अरब सुरतान । दिष्टि आलोकिक वंक सुअ ॥

आकंपै दिसि डुसि । अचल चालं चित्त दुअ ॥

सज्जि सेन चतुरंग । जंग अनभंग विचारिय ॥

बोलि पान पुरसान । पान जित्ते अधिकारिय ॥

१ पाठान्तर-पुच्छि । वरदाइनें । उत्पत्ति । लीनिय । असपति ॥ * इस समय में कंधे के हुसेन पां के कहे अनुसार जैसे शहाबुद्दीन ने चित्ररेखा को प्राप्त किया था सो वरदाइनें के कहे हैं ।
२ पाठान्तर-पलाणि । पलांन । कसंबि । बदकर । सांभि । दुरंगे ।
हिदंबान । मेहान । थान । लीनीय । सुरतान । सहावदी । मनौ । जन

मारुफ पान तत्तार पां । पान पान सेरिन सुवर ॥

कानी बलाइ कलहत रिन । बोलि वीर पच्छे सुनर ॥

कं० ॥ ३ ॥ ह० ॥ ३ ॥

अरब खां नवता नहीं है इसलिये उस पर चढ़ाई
होनी चाहिये यह आज्ञा दी ॥

दूचा ॥ * आरव पति अर सिध तट । विन सनाम सुरतान ॥

तिन उपर सज्जिय सयन । कहर कंडि फुरमानं । कं० ॥ ४ ॥ ह० ॥ ४ ॥

चढ़ाई की सेना की संख्या ॥

कवित्त ॥ सत्त पंच वारुन विसाल * । लष्य दुइ तुरी लपिन्ना ॥

आरब्बी सैं पंच । लष्य इक सोधि सुलिन्ना ॥

काबिल्ली उर तेज । रोम रोमी पंजावी ॥

लोहानी जल वान । शेष गोरी आरब्बी ॥

लष एक लष्य लष्यां मुहा । पारेवह जिन पंष लिय ॥

चाखन कटक गोरी प्रबल । भूषी चानी पंचनिय ॥ कं० ॥ ५ ॥ ह० ॥ ५ ॥

सेना की धूम का वर्णन ॥

कंद भुजंगी ॥ चली पंषिनी सथ्य चौसठु थानं । चली अगुनी सुदंती प्रमानं ॥

तिनं दंत कंती तडित्ता समानं । कं० ॥ ६ ॥

धजा पंति फैरंत भादब्ब भारं । भवककै मनौं सूर संगी कि सारं ।

बजै चं चंवान गज्जै कहरं । बज्जै तह सहं पपीहं ददूरं ॥ कं० ॥ ७ ॥

धरं बंक यौर उझौर घंटं । बरं दैर भंजै धरै पिच दहं ॥

अगें चखियं अगिगवानं समीरं । तिनं पुठु पुसान पां बंधि भीरं ॥ कं० ॥ ८ ॥

३ पाठान्तर—दिसि बर आरव साह । द्विष्ट । सुव । डुलि । सजि । विचारिय । पांन
पुरसानं । पांन । जिते । अधिकारीय । मारुफ । पांन । ततार । पान पान । रन । बलाय । पछे

४ पाठान्तर—सिट्टु । नट । सनाम । सुरतानं । उपर । सज्जिय । फुरमानं ॥ * आरव रं
नामक कोई छोटा राजा वा सरदार उस समय सिधु तट पर के देश का पति था कि जिस
पास चित्ररेखा थी ॥

५ पाठान्तर—सत्त । वारुन । * अधिक पाठ है ॥ लषु । दोइ । लपीना । आरबी । पां
सैं । लषुगिनी । कविली । वान । शेष । गोरी । आरबी । लष । लषां । मुहां । पारेवाह
पंलिय ॥ ५ ॥

धरै क्वच जीयं प्रिराजंत गोरी । विन्तै पंति देवं विचें किडु डैरी ॥
 वकीयान थानं छुटं मानु पडं । जगी जोग जानं उन्तै सुयड ॥ ८ ॥
 चनै आरवं उप्परै साहि सज्जी । कमटं पिठं उय्यलं सेस दज्जी ॥
 विंटे गट्टु गोहार केथान थानं । मनौं सागरं वीच वड्डानलानं ॥ १० ॥
 वजे थान थानं सुचंवाल दूरं । गहै पग मीरं वडै मुप्प कूरं ॥

**ह का निसुरति खां को अरव खां के पास भेजना कि चित्ररेषा
 को देकर पैर घर गिरे तो हम क्षमा कर दें ॥ ॥**

वरं ओकले सेलनि स्सुत्ति थानं । कहौ आरवं लुगि पायं विचानं ॥ ११ ॥
 दिथौ चित्ररेषा लिथौ दंड देनं । भिरै धेत मोसौं कहूं अज्ज केनं ॥
 पम्यौ तापना आरवं निठु निठुं । गथौ काहरं धीरजं दिठु दिठुं ॥ १२ ॥

**अरव खां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेषा
 को देना स्वीकार करना ॥**

दिथौ जाइ फुर्मान निसुत्त ईसं । लिथौ आरवं आदरं नाइ सीसं ॥
 दई चित्ररेषा सितावी सुडोरं । तिर्न उप्परं गुंज भौरान केरं ॥ १३ ॥
 इकं खेत हथी दु चार्वं अराकी । पलंगी रजक्की धरें अंत पाकी ॥
 सतं एक सप्यी दई चित्ररेषा । वनी सुइ वानै एरं मडि नेहा ॥
 १४ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

६ पाठान्तर-सय । चौसठि । थान । अंग । स्रदंती । प्रमानं । तडिता ॥ ६ ॥ पत्ति । फहरत ।
 वा । भवकै । मनो । गजै । बजै ॥ ७ ॥ पट्टोर उधोर । घट । वर । वटं । अगे । चलियं ।
 पुनं । पुठि । पुरसानं ॥ ८ ॥ धरें । गौरी । थानं २ । छुटे । पट्टु । मानो । न उट्टै सुरानें ॥ ९ ॥
 सजी । कमठ । उथल । दक्षी । विंटे । गट्टु । कै । थान थानं । वडवानलान ॥ १० ॥ थान
 गहै । मुप । निसुरति । थानं । कहौं ॥ ११ ॥ भिरै । मोसूं । कहौ । केनं । तापनां ।
 निठं । दिठि दिठं ॥ १२ ॥ फुर्मान । निसुरत्त । नाय । शीशं । सडोरं । उपर । भवरांन ।
 ॥ १३ ॥ हथी । आरव । अराकी । रजक्की । सय्ये । वाने ॥ १४ ॥

निसुरति पां का अरब खाँ को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह
के बचन माने और हिन्दु धर्म को न मान कर खेच्छ
कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया ॥

कविता ॥ कछ्यौ साहि जो बचन । सोइ तुम काज सुधास्यौ ॥
तेइ बचन सति होइ । हिंदु धर्म न विचास्यौ ॥
मेक धर्यौ कुल क्रम । जोगि ग्यानह जिम धारहि ॥
सेवक मत्त सुभाइ । देन आलम नाकारहि ॥
पुरसान पान सुरतान पति । दल बहल पावस मिलिग ॥
चतुरंग सज्जि चौरंग मिलि । सिद्ध चरित सिद्धन चलिग
॥ ११ ॥ ६० ॥ ७ ॥

शाहाबुद्दीन का सेना समेत सजकर चलना ॥

कविता ॥ गज्जनेस आएस । सूर चतुरंगन सज्जिय ॥
वीर बाल ससि वट्टि । मोह पूरन जिम भज्जिय ॥
करक निशा दिन मकर । सेन बट्टी तिम चंगिय ॥
मिलि अनंग आनंद । रंज आनंद सुजंगिय ॥
द्वादस सहस्र बाहन समह । दोइ लष्य सज्जे सुभर ॥
पारन सुअन्य आरंभ दल । चढ्यौ साह मधि दुपहर ॥
॥ १६ ॥ ६० ॥ ८ ॥

चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त
गयंद की भांति लगा हुआ था ॥

गाथा ॥ चित्तं मत्त गयंदं । पुंतारं नस्थि उत्तरयं ॥
त्यौं चित्ररेषय चित्तं । सुविद्वानं मंडियं नेहं ॥ १७ ॥ ६० ॥ ९ ॥

७ पाठान्तर-सोय । साज सुधारौ । होई । धम । विवारौ । धरौ । कर्म । शा
ग्यानह । सुभाय । सुभाई । पुरसान पान । सजि ॥

८ पाठान्तर-आएक । चतुरंगति । सजिय । भजिय । निशा । बट्टी । चंगीय । जंगी
सुमुंद्र । समद । दोय । लपु । सजे । दुपहर ॥

पाठान्तर-चित्तं । मत्त । पुतारं । नथि । उत्तरयं । चित्तं ॥

सेना की शोभा का वर्णन ॥

दंड पद्दरी ॥ चढि चख्यौ साहि साहाव कूर । चल चने समुद सरिता सुपूर ॥
 सुरतान ह्व अप अप समान । मुर पंच वीर वर पति पांन ॥ १८ ॥
 काली बलाइ खेरन वितंड । सो अरिन फौज पारंत दंड
 तत्तार पांन पुरसान पांन । सो सामि धंम राषत गुमान ॥ १९ ॥
 मारूप पांन मारु मरद । दल मंझि जानि नरसिंघ सह ॥
 तत्तार पांन निसुरति वीर । आख्व मरद मझै गभीर ॥ २० ॥
 महबूव पांन महबूव साह । दल मंझ अर्क उग्यौ उगाह ॥
 वर वीर महन मझकी मरद । लज्जा कि अंग चंद सु सरद ॥ २१ ॥
 कंकर कराव मैदान भान । जादेत खेष सा धंम पांन ॥
 पानी प्रवाह टिग साह थूर । झिलि मिलिग सिद्ध अंगा कहर ॥ २२ ॥
 नीसान जोर वजे सु नह । भदव कि मास घन गरज सह ॥
 हल्ल विरद वाने विवेक । जाने कि वन रति राज नेक ॥ २३ ॥
 गज सीस चौर सेतह सुवाह । हरद्वार गंग कुटं प्रवाह ॥
 चमकंत नाह उप्पम सु जोह । ससि बाल जानि घन घटा खोह ॥ २४ ॥
 सिप्यार तीस ते पढत मुष्य । साधंम हथ्य तसवी सुरष्य ॥
 है परष परष साई सुकीय । कुटंत अरम जनु किरन कीय ॥
 ॥ २५ ॥ ॥ १० ॥ ॥

शाह की सेना की प्रबलता देख कर अरब का
 अपना बल भंग होना कहना ॥

४ ॥

दूहा ॥ सुनि अवाज आरव मुषसु । वर उत्तर तिय मुंद ॥
 बल भगौ इन भंति वर । ज्यौं तत्त तवे पर बंद ॥ २६ ॥ ॥ ११ ॥

१० पाटान्तर-साह । सुपूर । सुरतान । समान । समान । पति । पांन ॥ १८ ॥ बलाय
 पुष्टी- पांन पुरसान पांन । सामि । धूम । गुमान ॥ १९ ॥ मारूप पांन । मरद । मझि । जानि
 आद- । ततार पांन निसुरति । आख्व । मझै ॥ २० ॥ पांन । मझ । अगाह । मझी । मरद ॥
 मुक्यौ । मरद । सरद ॥ २१ ॥ मैदान । मैदान । धंम । पांन । पांन ॥ २२ ॥ नीसान ।
 लियै । ॥ २३ ॥ भदव । गहर सह । हले विरद वाने । जाने । वन । क्रनुराज ॥ २३ ॥ शीश । कुट्टे
 ॥ २६ ॥ उप्पम ॥ २४ ॥ सिप्यार । मुष । हथ । रप । साई । अरस ॥ २५ ॥
 असहनन । टान्तर-आवाज । समुष । उतरिय । भगौ । तये ॥

अरब खां का आज्ञा मानकर चित्ररेषा को भेंट में देना ॥
 अरिह ॥ अरब पान तत हन मानिय । ज्यों सुक्रिया पिय आग्या जानिय ॥
 लै फुरमान बंदि सिर धारिय । चित्ररेष हीनी सो नारिय ॥

छं० ॥ २८ ॥ ह० ॥ १२ ॥

चित्ररेषा वेष्या के रूप का वर्णन ॥

पद्यक ॥ बेस्वा बंक्ति भूप रूप मनस', शृंगार चारावली ॥

सोयं सूरति लच्छि अच्छित गुनं, बेली सु कामावली ॥
 का बनें कवि उक्ति जुक्ति मनयं, त्रिलोक्य मं साधनं ॥
 सोयं बाल तिरत उष्ट विद्रुमं, का मोद जोगेश्वरं ॥

छं० ॥ २९ ॥ ह० ॥ १३ ॥

पद्यक ॥ रूपं नदि कटाच्छ कूल तटयो, भायं तरंगं वरं ॥

चावं भावति मीन शसित गुनं, सिद्धं मनं भजनी ॥
 सोयं जोग तरंग हवति वरं, त्रिलोक्य ना ता समा ।
 सोयं साहि सहाव हीन ग्रहियं, अनंग क्रीडा रसं ॥

छं० ॥ ३० ॥ ह० ॥ १४ ॥

विना युद्ध चित्ररेषा को लेकर गोरी का लौट आना ॥

॥ अंग सुलच्छिन हेम तन । नगधरि सुंदरि सीस ॥
 गोरी ग्रहि गोरी गयौ । विना जुद्ध बुझि रीस ॥

छं० ॥ ३० ॥ ह० ॥ १५ ॥

चित्ररेषा के साथ शाह के आदर और प्रेम का वर्णन ॥

दूहा ॥ जिम जिम साह सु आदरिय । तिम तिम बढिय पेम ॥

क्रम क्रम फल गुन बड्ड इय । बेली नमै सु तेम ॥ छं० ३१ ॥ ह० १६ ॥

१२ पाठान्तर—पान । हन । मानिय । सुक्रिया । जानिय । फुरमान । धारिय ॥

१३ पाठान्तर—सोयं । लच्छि । अछित । बेली । वरनें । युक्ति । मन । तिरत । जोग

१४ पाठान्तर—नत । कटाक्ष । तटयो । मान । शसित । भजनी । हवति । त्री । जोग
 समय । त्रिलोक्य । नह । समां । साहाव । यहीयं ॥

१५ पाठान्तर—लच्छिन । शीश । ग्रहि । युद्ध ॥

१६ पाठान्तर—आदरीय । लठिय । जिम २ फलगुन बाधइय ॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब खां को पृथ्वीराज
के पास भेजना कि भला चाहे तो हुसैन
को निकाल दे ॥

छंद पद्धरी ॥ संभरिय वत्त सादाव हीन । उच्चरिय वैन अति कोप कीन ॥
मुक्कलौं इत चहुआंन पास । कठौ हुसैन जो जीव आस ॥ छं० २८ ॥
बोल्यौ पांन तातार तब्ब ॥ संजाव पांन उमराव सब्ब ॥
पुच्छी सु वत्त किय इत सार । थप्यी सु वत्त पुरसान बार ॥ छं० ३० ॥
आरव्व शेष लीनौ बुलाइ । वैरद्व बद्ध बुद्धी सुताइ ॥
बंछै सुपेम सक लोहिं साहि । बज्जी अनंत आदब्ब थाहि ॥ छं० ३१ ॥
उच्चर्यौ वैन सादाव भास । आरव्व जाहु चहुआंन पास ॥
अरबखां से कहना कि पहिले हुसैन के पास जाना जो वह
पातुर को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्व करके
न माने तो पृथ्वीराज के पास जाकर हमारा
पत्र लेकर समझाना ॥

अप्यै जु पाच हुसैन जाम । लैआउ सम्य हुसैन ताम ॥ छं० ३२ ॥
मुक्कौं सुगुनह कीनौ पसाव । मै हीन पच्छ करि पिमा दाव ॥
छंडै न पाच हुसैन ग्रब्ब । चहुआंन मिलै सामंत सब्ब ॥ ३३ ॥
जंपियौ वयन चहुआंन साइ । कठौ हुसैन नागौर थाइ ॥
अजीज पांन तुम रुच उच । लिप्यौ सु पच हम परम हच ॥ ३४ ॥
कठौ हुसैन तुम देस अंत । बंछौ जो पेम मानौं सुमंत ॥
रथ्या हुसैन जो असु परेस । चतुरंग लेन सज्जौं विसेस ॥ छं० ३५ ॥

२९ पाठान्तर-उचरीय । मुक्कलौं । कठौ । हुसैन । जौं ॥ २८ ॥ ततार । तव । सब ।
पुछी । कीय । पुरसान ॥ ३० ॥ आरव शेष । वृद्ध वृद्ध । बुद्धीय । वंछै । पिम्म । लेहिं । बज्जी ।
आदव । थाह ॥ ३१ ॥ उच्चर्यौ । वैन । आरव । हुसैन । जाम । सम्य । हुसैन । ताम ॥ ३२ ॥
मुक्क्यौ । मै । एछ । हुसैन । यव । सब । श्रव ॥ ३३ ॥ वैन । साइ । घाइ । अजीजवांन । सच उच ।
लिप्यै । हच ॥ ३४ ॥ वंछौ । जौ । यु । मानौ । रथौ । जौ । तौ चतुरंग । सज्जौ ॥ ३५ ॥ करौ ।
॥ ३६ ॥ उचरि । गुमान । कहै । मानौं । जाहु । शीघ्र । वांन । करौ । निशाम ॥ ३७ ॥ सथ ।
असहनन । नरयान । रथ । आरव । दाय । पप ॥ ३८ ॥

भजौं सुनैर नागौर हेस । जीवंत बंदि वंधौं नरेस ॥

सामंत सूर सब करौं अंत । बंधौ सुबंध सा तरुनि कंत ॥ ३६ ॥

उच्चरि गुमान तन वत्त धूल । सधेप कहै मानौं स जूल ॥

तुम जाउ सिध नागौर वान । मति करौ एक दिन घर विग्राम ॥ ३७ ॥

तीन सौ सवार और रथ लेकर अरब खां को रवाना करना ॥

सै तीन दीन असवार सथ्य । आरुचन दीन नरयान रथ्य ॥

एक महिने में अरब खां का नागौर पहुंचाना ॥

संचह्यो शेष आरब्ध राह । दो पय्य पत्त नागौर थाह ॥

३८ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

अरब खां का हुसैन से मिलकर समझाना, हुसैन का न मानना ॥

दूहा ॥ गय अरब नागौर धर । मिल्यो साह हुसैन ॥

भोजन भष्य सुभाव किय । विवध प्रसन्निय वैन ॥

४० ॥ ४० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ कही वत्त हुसैन सम । जो कहि साह सहाव ॥

नह मंनिय सोमंत दिय । दिय आरब्ध जवाव ॥

४२ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

अरब खां का पृथ्वीराज के पास जाना ॥

दूहा ॥ गयो शेष आरब्ध दर । लही पवर प्रथिराज ॥

बोलि मझु मंडिय महल । सामंतन सब साज ॥

४४ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की कुशल पूछना ॥

दूहा ॥ मझु महल आरब्ध गय । मिलि मंनिय सनमान ॥

है आसन पुच्छिय कुशल । चाहुआंन सुलतान ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

३७ पाठान्तर-हुसैन । भष्य । विवह । प्रसन्न । वैन ॥

३८ पाठान्तर-हुसैन । साहाव । नह । आरब ॥

३९ पाठान्तर-आरब । पवरि । पृथीराज । मझु । सां.ंतं । सम राज ॥

४० पाठान्तर-आरब । सनमान । पुच्छिय । कुशल । चाहुवान । सुरतान ॥

अरब खां का कहना कि हुसैन खां को जिकाल
हेने के लिये सुलतान ने कहा है ॥

छंद पद्वरी ॥ उच्चस्वौ वैन आरब्ब खेष । सल्लाम बहुत पति एक षष ॥

कठ्ठा हुसैन तुम हेस अंत । सादाव सादि बंछौ सुमंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥

जुगमीत अथ्यि उवरै न आदि । इस ताउ भाउ बहु वैन सादि ॥

जंपे सु वैन जे कछे सादि । कठ्ठी न बत्त रंभीर भादि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का संदेशा सुनकर पृथ्वीराज का
मुख लाल हो गया, भीहें चढ़ गई ॥

संभलिय वत्त प्रथिराज मंत । अिकुटी कहर दिग रत्त जंत ॥

आरत्त मुष्य स्तुत श्रोन बुंद । कलमलिय कोप रोमंच जिंद ॥ छं० ॥ ४५ ॥

कैमास ने डपट कर कहा कि अर्य लोगों का धर्म सुलतान
नहीं जानता इससे ऐसा कहता है, हुसैन पृथ्वीराज के
शरणागत है, क्षत्री का धर्म उसे छोड़ने का नहीं है ॥

उच्चस्वौ कोपि कैमास वानि । अतासनि आर्य सिंचौ सुजानि ॥

आरब्ब बोल बोख्यौ विहर । सुरतान जानि जंघ्या गहर ॥ छं० ॥ ४६ ॥

प्रति बुद्ध लक्षौ प्रथिराज जूर । अतुजित जुद्ध सामंत सूर ॥

हुसैन आइ प्रथिराज थान । जोधानं अंम षत्रीय आन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

कन्ह चौहान, सूरसिंह, गोयंदराज, चन्द्र, पुंडीर

आदि का भी यही कहना और सुलतान

से लड़ने को हम प्रस्तुत हैं यह कहना ॥

जंपे सुवैन चहुआंन कन्ह । दिग पानि रत्त रोमंच तंन ॥

रज अंम विषम बुलक्षै न साह । अनि राह जेम जंपे विराउ ॥ छं० ॥ ४८ ॥

गजै न लज्ज कोपिं नृगिंद्र । उनाष्टि सूर सिर सहि न निंद्र ॥

गुरु तज्जि जंपि गोइंद्र राज । लग वैन गीर गर वत्त साज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

संज्वान तेज सम तेज वान । निरभै सुतासु चंपै पथान ॥

उच्चस्वौ चंद पुंडीर कोप । आदीत भाउ रस दून डोप ॥ छं० ॥ ५० ॥

गज्जनौ कौन केतुक सचाव । गह अत्त वत्त जंपै कचाव ॥
हुस्सैन आइ प्रथिराज थान । सरनै सुकौज कट्टे नियान ॥ ६० ॥ ५१ ॥
दल सज्जि सीम चंपै सुसाहि । दल भंजि ग्रहै प्रथिराज ताहि ॥

अरब खां का अपना निरादर होता देख उठ

आजा और गजनी को कूच करना तथा

शाहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ॥

मानी न शेष आरब्ब वत्त । सामंत सुर देषे विरत्त ॥ ६० ॥ ५२ ॥
आदरह मंद तजि उद्यौ शेष । भंषौर बदन द्रिग वदि तेष ॥
पुच्छीय जुगति नृप महल जानि । उठि गर्व दुष्य मन चीन मानि ॥ ६० ॥ ५३ ॥
चठि चल्थौ शेष रह साह देस । गज्जनै गयौ मन मानि रेस ॥
गय महल साहि मिलि कहिय वत्त । सिर धुनि रीस करि नैन रत्त ॥ ६० ॥ ५४ ॥
उठि गयौ साह बहल महल । आसन साजि बैठौ सथल ॥

६० ॥ ५५ ॥ ६० ॥ ३४ ।

दर्बार करके शाहाबुद्दीन का तालार खां, अरब खां, मीर जमाम,
कमाम, खुरासा खां, रहन महन खां, हस्तन खां, हाजी
खां, गाजी खां, जम्मन खां, गजनी खां, मुहब्बत
खां, मीर खां, आदि सरदारों को बुला
कर सलाह करना ॥

कवित्त ॥ सजि आसन साचाव । साह काजी मत बैठौ ॥
बोलि मङ्गु तत्तार । बोलि आरव दिन जेठौ ॥

३४ पाठान्तर—उचस्वौ । वैन । आरव । शेष । सलाम ॥ ४३ ॥ युगमीत । अथि । उवरें ।
वैन । जंपै । कहै । भाह । नाह । ॥ ४४ ॥ तथ्य । तथ । प्रथीराज । भृकटी । आरक्त । मुष्य ।
श्रुत्ति । कलि ॥ ४५ ॥ उचस्वौ । वांनि । आरज्य । संघ्यौ । जान । आरव । सुरतान । जानि ॥ ४६ ॥
प्रथीराज । अतुलित । युदु । हुसेन । थान । जोधान । पित्रीय । आन ॥ ४७ ॥ जंपै । चहुआन ।
बुझै ॥ ४८ ॥ गजें । कोपे । मृगेंद्र । मृगेंद्र । उतकृष्ट । नरेंद्र । तजि । जपि । गोंयेंद्र । वैन ॥ ४९ ॥
तेजवान । निरभैं । सतास । पथान । उचस्वौ । जप ॥ ५० ॥ गज्जनौ । केतक । जंपै । हुसेन ।
प्रथीराज । थान । कौन । नियान ॥ ५१ ॥ सजि । सीस । प्रथीराज । मानी । आरव । शेष ।
विरत्त । शेष । पुच्छिय । नृप । जानि । दुष्य । मानि ॥ ५३ ॥ गज्जनै । मानि । धुनि । नैन ॥ ५४ ॥
महल । सुथल ॥ ५५ ॥

मीर जमांम कमांम । षांन पुरसांन न्यान वर ॥

षांन रहंन महंन । षांन रुस्तंम मचा भर ॥

हाजीय षांन गाजीय षां । षांन जमन बंधव सुचिय ॥

गजनीय षांन महुवत्ति षां । मीर षांन सब बोलि लिय ॥ कं० ॥ १६ ॥ ह० ॥ ३५ ॥

तातार खां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज
पर चढाई करनी चाहिस ॥

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब । अहो ततार षांन सुनि ॥

जिन जुमत्ति उपज्जै । कहौ सब षांन जानि मन ॥

गौ आरब चहुआंन । फेरि आयौ सु सुनिय सब ॥

सरन रपि हुस्सेन । बोलि सामंत राज अब ॥

जंपिय ततार संजो सयन । हनौ राज प्रथिराज रन ॥

है गौ सुबंध बंधौ रिनह । अरे कि गहि कुटै सुतन ॥ कं० ॥ ५७ ॥ ह० ॥ ३६ ॥

खुरासान खां का तातार खां से कहना कि उसके
बल को भी विचार लो जल्दी न करो ॥

दूहा ॥ कहै षांन पुरसांन तब । अहो षांन ततार ॥

चाहुआंन सामंत बल । चिंति सुविधि विचार ॥ कं० ॥ ५८ ॥ ह० ॥ ३७ ॥

आरब खां का कहना कि उसका बल अतुल है तुम लोगों
ने देखा नहीं है इससे खेसा कहते हो ॥

दूहा ॥ कहै शेष आरब अतुल । बल सामंत नरिंद ॥

अवे न तुम दिषिय नयन । सजो सैन विन बंध ॥ कं० ॥ ५९ ॥ ह० ॥ ३८ ॥

शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ॥

दूहा ॥ कहै साहि आरब तुम । कहौ सूर सामंत ॥

कहा क्रांति प्राक्रम कहा । सति पर्यं पहु तंत ॥ कं० ॥ ६० ॥ ह० ॥ ३९ ॥

३५ पाठान्तर-बोल । मझ । जिठौ । जमांम । कमांम । पुरसान । न्यान । महंन ॥

३६ पाठान्तर-मति । उपज्जै । जानि । चहुआंन । स सुनिय । हुस्सेन । सजौ । हनौ । मरें ॥

३७ पाठान्तर-कहैं । चित्त सुषुद्धि विचार ॥

३८ पाठान्तर-त्रे । शेष । दिषिय ॥

३९ पाठान्तर-आरब । तुम । क्रांति । सत्य ॥

गज्जनौ कौन केतुक सचाव । गह अत्त वत्त जंपै कचाव ॥
हुसैन आइ प्रथिराज थान । सरनै सुकौन कट्टै नियान ॥ ६० ॥ ५२ ॥
दल सज्जि सीम चंपै सुसाहि । दल भंजि ग्रहै प्रथिराज ताहि ॥

अरब खां का अपना निराहर होता देख उठ

आजा और गजनी को कूच करना तथा

शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ॥

मानी न शेष आरब्ब बरा । सामंत सूर देषे विरत्त ॥ ६० ॥ ५२ ॥

आदरह मंद तजि उद्यौ शेष । शंषौर बदन द्रिग बहि तेष ॥

पुच्छीय जुगति नृप महल जानि । उठि गर्व दुष्य मन चीन मानि ॥ ६० ॥ ५३ ॥

चठि चल्थौ शेष रह साह देस । गज्जनै गयौ मन मानि देस ॥

गय महल साहि मिलि कहिय वत्त । सिर धुनि रीस करि नैन रत्त ॥ ६० ॥ ५४ ॥

उठि गयौ साह बहल महल । आसन साजि वैठौ सथल ॥

६० ॥ ५५ ॥ ६० ॥ ३४ ।

दर्बार करके शहाबुद्दीन का तातार खां, अरब खां, मीर जमाम,
कमाम, खुरासा खां, रहन महन खां, रुस्तम खां, हाजी
खां, गाजी खां, जस्मन खां, गजनी खां, मुहब्बत
खां, मीर खां, आदि सरदारों को बुला
कर सलाह करना ॥

कवित्त ॥ सजि आसन साचाव । साह काजी मत वैठौ ॥

बोलि मझु तत्तार । बोलि आरय दिन जेठौ ॥

३४ पाठान्तर-उचस्यौ । वेन । आरव । शेष । सलाम ॥ ४३ ॥ युगमीत । अथि । उवरें ।
वेन । जंपै । कहै । भाह । नाह । ॥ ४४ ॥ तथ्य । तथ । प्रथीराज । भृकटी । आरक्त । मुष्य ।
श्रुत्ति । कलि ॥ ४५ ॥ उचस्यौ । बांनि । आरज्य । संच्यौ । जान । आरव । सुरतांन । जानि ॥ ४६ ॥
प्रथीराज । अतुलित । युदु । हुसेन । थान । जोधान । पित्रीय । आन ॥ ४७ ॥ जंपै । चहुआन ।
बुझै ॥ ४८ ॥ गर्जै । कोषि । शृंगेंद्र । मृगेंद्र । उतकृष्ट । नरिंद्र । तजि । जपि । गोयेंद्र । वेन ॥ ४९ ॥
तेजत्रांन । निरभै । सतास । पथान । उचस्यौ । ऊप ॥ ५० ॥ गज्जनौ । केतक । जंपै । हुसेन ।
प्रथीराज । थान । कौन । नियांन ॥ ५१ ॥ सजि । सीस । प्रथीराज । मानी । आरव । शेष ।
धिरत्त । शेष । पुछिय । नृप । जानि । दुष्य । मानि ॥ ५३ ॥ गज्जनै । मांनि । धुनि । नैन ॥ ५४ ॥
महल । सुथल ॥ ५५ ॥

मीर जमांम कमांम । षांन पुरसांन न्यान वर ॥

षांन रहंन महंन । षांन रुस्तंम मचा भर ॥

हाजीय षांन गाजीय षां । षांन जमन बंधव सुचिय ॥

गजनीय षांन महुवत्ति षां । मीर षांन सब बोलि लिय ॥ कं० ॥ १६ ॥ ६० ॥ ३५ ॥

तातार खां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज
पर चढ़ाई करनी चाहिये ॥

कवित्त ॥ कहै साहि साहाव । अहो ततार षांन सुनि ॥

जिन जुमति उपजै । कहौ सब षांन जानि मन ॥

गौ आरब चहुआन । फेरि आयौ सु सुनिय सब ॥

सरन रपि हुस्सेन । बोलि सामंत राज अब ॥

जंपिय ततार संजो सयन । हनौ राज प्रथिराज रन ॥

है गौ सुबंध बंधौ रिनह । अरे कि गहि कुहै सुतन ॥ कं० ॥ ५७ ॥ ६० ॥ ३६ ॥

खुरासान खां का तातार खां से कहना कि उसके
बल को भी विचार लो जल्दी न करो ॥

दूहा ॥ कहै षांन पुरसांन तब । अहो षांन ततार ॥

चाहुआन सामंत बल । चिंति सुविधि विचार ॥ कं० ॥ ५८ ॥ ६० ॥ ३७ ॥

आरब खां का कहना कि उसका बल अतुल है तुम लोगों
ने देखा नहीं है इससे ऐसा कहते हो ॥

दूहा ॥ कहै शेष आरब अतुल । बल सामंत नरिंद ॥

अवे न तुम दिषिय नयन । सजो सैन बिन बंध ॥ कं० ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ३८ ॥

शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ॥

दूहा ॥ कहै साहि आरब तुम । कहौ सूर सामंत ॥

कहा क्रांति प्राक्रम कहा । सत्ति पर्यं पहु तंत ॥ कं० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ३९ ॥

३५ पाठान्तर-बोल । मझ । जिठौ । जमांम । कमांम । पुरसान । न्यान । महंनं ॥

३६ पाठान्तर-मति । उपजै । जानि । चहुआन । स सुनिय । हुसेन । सजौ । हनौ । मरै ॥

३७ पाठान्तर-कहै । चित्त सुषुद्धि विचार ॥

३८ पाठान्तर-त्रे । शेष । दिपिय ॥

३९ पाठान्तर-आरब । तुम । क्रांति । सत्य ॥

अरब खां का पृथ्वीराज के बल की प्रशंसा करता ॥

वित्त ॥ इष्ट मंच उच्चार । दिष्ट उठु द्वित इक्क थर ॥

क्रमत पेपि पञ्चीस । भिलत सत एक इप्यि पर ॥

सहस सुभर बाधंत । एक सामंत पराक्रम ॥

जामह दुष्यल कटै । ताम बाधंत वीर हस ॥

सिर परै सुहककै धर भिरै । परै आन उठै सधर ॥

असिधार सूर उठै किनकि । एह पराक्रम सूर नर ॥ कं० ॥ ६१ ॥ कृ० ॥ ४० ॥

तातार खां का अरब खां की बात को हँसी में उड़ा
देना, अरब खां का कहना कि अपनी आंख से
न देखने से ऐसा कहते हैं ॥

कवित्त ॥ हस्यौ षान तातार । एम हाजी सम बहिय ॥

जय हूनही बिन बघत । मरन भै उरै न कहिय ॥

काहि आरव ततार । अहो सामंत न दिषिय ॥

अतुल तेज बल अतुल । अतुल बल देव सुरषिय ॥

वे साम भ्रम रत्ते अतुल । अतुल मत्त कैमास भर ॥

उमरा अनंत देषे अनत । अतुल बत्त पहुचै न नर ॥ कं० ॥ ६२ ॥ कृ० ॥ ४१ ॥

शाह का क्रोध करके तातार खां को चढ़ाई के
लिथे प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ॥

दूहा ॥ कहै साहि गोरी गरुअ । अहो षान ततार ॥

काहि तरीक सुउंच दिन । चढि अरि सडौ सार ॥ कं० ॥ ६३ ॥ कृ० ॥ ४२ ॥

दूहा ॥ उठि गोरी दिन्ने बहुरि । गयो सु अंदर साह ॥

बहुरि षान मीरं बरा । अति चंचल तुर ताह ॥ कं० ॥ ६४ ॥ कृ० ॥ ४३ ॥

४० पाठान्तर-उच्चार । उठ । इक्क । पञ्चीस । इपि । दुष्यल । ताम । परै । सुहकै । उठै । कठै ।

४१ पाठान्तर-ततार । बहिय । भय । कट्टिय । काहि । दिषिय । रषिय । साम । उमरा ।

अनंत ॥

४२ पाठान्तर-काहि । तरीक सुं । सधौ ॥

४३ पाठान्तर-दिनं ॥

शाह के जी में रात दिन चौहान की चिंता लगी रहना ॥

दूहा ॥ तपै साहि गोरी सबर । चित सलै चहुआन ॥

वैरोचन की साष ज्यौ । कीटी अंग प्रमान ॥ कं० ॥ ६५ ॥ ६० ॥ ४४ ॥

अरिख ॥ जगगत निसि अंघत सुरतानह । घरी सत्त रहि खेष प्रमानह ॥

जगि आयस दिय दीन निसानह । चिंता साहि चढी चहुआनह ॥

कं० ॥ ६६ ॥ ६० ॥ ४५ ॥

सेना के साथ चढाई के लिये शाह का तयार होना ॥

हंदमोतीदांम ॥ भए सुर तीन धुनक निसान । चढ्यौ अश्व सज्जि सिल्है सुरतान ॥

चढे सब घान सु उम्पर मीर । सजे सहनाइ बजे रस बीर ॥ कं० ॥ ६७ ॥

बजे सब वाज भयानक भाइ । चितै हिय बुद्धि जिनै जन नाइ ॥

चढ्यौ सब सज्जिय खेन गरिष्ट । परी दस दिग्ग सुधुधरि दिष्ट ॥

कं० ॥ ६८ ॥

अशकन होना

सबह सियौन सुखेन कपोत । सनंमुष साहि दिष्ट्यौ दल दोत ॥

भयौ दिसि वामिय कग्ग करार । हक्यौ दिबि धोमय धूम गभार ॥

कं० ॥ ६९ ॥

सनंमुष देषिय जंबुक खेन । विरो मिलि चंपहि भग्गहि तेन ॥

कल्ले तस उप्पर गिइ असंप । चवै सुर दद्र पसारिय पंप ॥ कं० ॥ ७० ॥

४४ पाठान्तर-चहुआन । भृग । प्रमान ॥

४५ पाठान्तर-जगत । जंपत । सुरतानह । सत्त । रही । प्रमानह । निसानह । निसानह । चहुआनह ॥

४६ पाठान्तर-मोतीदांम । निसान । साजि । सिल्हे । सुरतान ॥ ६७ ॥ सजे । चितै । जिनै । सजिय । गरिष्ट । दिग्घ । घुंवरी । दिष्ट ॥ ६८ ॥ सितान । वाम्रीय ॥ ६९ ॥ ऊपर । पसारीय ॥ ७० ॥ सुरतान । रही । कहू । कहौ । आज । गही चल मनहु चठि सगुन ॥ ७१ ॥ भयै भयै । प्रथीराज । वलु । सामय ॥ ७२ ॥ हनो । चहुआन । गहो । मुक्त । लुक्त ॥ ७३ ॥ चलयौ । सुरतान । गजिय । निसान । जलं थल हूय थरा जल चार । ७४ ॥ लप । समुक्तिन । सुरतान । मिलान २ । चहुआन ॥ ७५ ॥

अरब खां का कहना कि आज ठहर

जाइए शकुन अच्छा नहीं है ॥

गही सुरतान सु आरब बगग । रचौ दिन आज सगुन न जगग ॥

रचै कुहु अज्ज ततार सुदिन । गही चढि चह्यहु मान्न सगुन्न ॥ छं० ॥ ७१ ॥

सुलतान का कहना कि काफ़िर चौहान को जीतना कौन बड़ी

बात है जो इतना विचार करते हो ॥

कहै सुरतान अहो तुम झूर । भयै भय म्रित्यु सु भंषहु नूर ॥

कहा बल जुद्ध कहौ प्रथिराज । कितौ बल सामन जुद्धिच साज ॥ छं० ॥ ७२ ॥

हनां रन सूर जिके चहुआंन । गहौ जुध राज सु षंडिय प्रान ॥

कहा डर काफ़र दाषहु मुभक्त । कहा भर आवध आगरि जुभक्त ॥

छं० ॥ ७३ ॥ *

नमंनि चमंकि चह्यौ सुरतान । टमंक्रिय गज्जिय नह निसान ॥

जल थ्यल होय थलं जल भार । अमगह मगग चलै गहिलार ॥ छं० ॥ ७४ ॥

मिल्यौ इक साहन लष्य समुंद । समुभिक्षन कंन भयो सुर मुंद ॥

चल्यौ सुरतान मिलान मिलान । बढी अति चिंत दुनी चहुआंन ॥

छं० ॥ ७५ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

शाह का चौहान की ओर जाना और दूतों का

यह समाचार नागौर में हुसैन को देना ॥

दूहा ॥ गयौ साहि चहुआंन घर । दिण मिलान मिलान ॥

गण सुचर नागौर पुर । कही षवरि सुरतान ॥ छं० ॥ ७६ ॥ छं० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई का समाचार सुनकर सरदारों को बुला-

कर सिंध तक शाह के पहुंचने का हाल कहना ॥

कवित्त ॥ सुनिय षवरि प्रथिराज । कहिय जे चरन चरित सह ॥

बोलि मंनि कयमास । बोलि चांमड गुभक्त गह ॥

* यह ७२ और ७३ दो छंद सं० १६४७ वाली पुरानी पुस्तक में नहीं किन्तु इतर में है ॥

४७ पाठान्तर-चहुवांन । धर । दीए । मिलान २ । सुचर । सुरतान ॥

बोलि चंद्र पुंडीर । बोलि षीची प्रसंग वर ॥
 बोलि गज्जि गहिलौत । बोलि का कन्ह नाह नर ॥
 बोलेति सब्ब सामंत भर । कधी वत्त शेा कहिय घर ॥
 सामंत अंत भर सब्ब मिलि । सिंधु सुचंपिय साह धर ॥

कं० ॥ ७७ ॥ ह० ॥ ४८ ॥

लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का सब का मत होना ॥

दूहा ॥ कहत सब्ब सामंत मति । चढि दल सजौ समंकि ॥
 सुनिव मंत्रि कयमास कहि । करहु निसान टमंकि ॥

कं० ॥ ७८ ॥ ह० ॥ ४९ ॥

युद्ध की तयारी होना ॥

गाथा ॥ भय टामंक निसानं । पत्तं निज ग्रेह सूर सामंतं ॥
 बाजे बज्जि अनेकं । हय मंगे राज चहुआनं ॥ कं० ॥ ७९ ॥ ह० ॥ ५० ॥

गुरुराम ब्राह्मण का आकर आशिर्वाद देना, बहुत कुछ दान कराना और वेद मंत्र से तिलक करना ॥

कंद पद्धरी ॥ आये सुताम गुर राम राज । पढि पत्र मंत्र दुज बोलि साज ॥
 ग्रह नव सुदान विधि विद्द दीन । वेदंत विप्र अभिषेक कीन ॥
 कं० ॥ ८० ॥

चव सहस्र छेम दिय विप्र दान । अस्सेष वेद चय साम गान ॥
 दिय दान भूरि पंषी सु चंड । दीनौ सु अथ्य जिन हथ्य मंडि ॥
 कं० ॥ ८१ ॥

जै जया जोह जंपी सु आन । मंगल सुवार चव पढि गान ॥
 आसिय वयन चहुआन रान । गुरु राम जज्जि आहुत्त प्रान ॥
 कं० ॥ ८२ ॥

४८ पाठान्तर-प्रथीराज । चरनि । कैमास । भुक्क । एह । पीचि । गजि । सब । मिल्लि ॥

४९ पाठान्तर-सुनै । मंत्र । कैमास । करहु । निसान ॥

५० पाठान्तर-पत्तं । गेह । सामंता । चहुआनं ॥

अनेक सुवान अनेकह रंग । चढे सब मीरह सेन अभंग ॥
 अनेक सुवान अनेकय व्रंन । समुभिक्त न चीय समुभिक्तन क्रंन ॥ कं० ॥ १०० ॥
 पयं भर अगग अनेक सुभार । अनेक सुजाति अनेक सुतार ॥
 सिरं किय मुंडिय मुंड सु अद्ध । जुवदिय उदिय जानि अनद्ध ॥ कं० ॥ १०१ ॥
 करं तिय भंडिय रंग अनेक । फुरक्कहि भंपहि भंपह तेग ॥
 चले धर बान सुसद्विय दिठ्ठ । अगें दय नारि अभूल गरिठ्ठ ॥ कं० ॥ १०२ ॥
 अगें किय मद् सरक्क सुभार । मनौं पय चह्लत पब्बत लार ॥
 ठलै सिर ढाल अनेक सुरंग । फरें फरदारि उभारिय अंग ॥ कं० ॥ १०३ ॥
 वरंनह भंडय मंडय जूव । मनौं घट रित्ति अनंगह रूव ॥
 भई पुर डंबर अंबर रैन । जलं थल पद्धरि संक्रमि सेन ॥
 कं० ॥ १०४ ॥ कू० ॥ ५४ ॥

सारुंड अचलपुर में सुलतान का डेरा डालना ॥

दूहा ॥ जथ्य तथ्य संक्रमि सयन । उंच थांन जल थांन ॥
 दिय साहंडप अचल पुर । किय मुकाम सुरतान ॥ कं० ॥ १०५ ॥ कू० ॥ ५५ ॥
 कैमास का यह समाचार घड़ी रात रहे पृथ्वीराज को देना ॥
 दूहा ॥ घरी सुनव निसि शेष चर । आय पास चहुआंन ॥
 गये पास कैमास जपि । चरित सब्ब सुरतान ॥ कं० ॥ १०६ ॥ कू० ॥ ५६ ॥

५४ पाठान्तर—मोत दांम । सुरतान । जुमजिब । बजन । घंटन । कंच ॥ ६३ ॥ गजे । मनो ।
 भद । रदू । रुद । सकड कल । परकिय । पपर । सतांम ॥ ६४ ॥ यह तुक ए० सो० की प्रति में
 नहीं है ॥ फरें । भलकत । मनो । रजिं ॥ ६५ ॥ कमांन २ । मान ॥ लपे । जतिन । गति ॥ ६६ ॥
 बबत । पठै । रत । नमै । जिन । कुरांन । तहनीय । रतें । सबदय । करं । तांह । भ्रमंतिय ।
 धरें । सवांन । भलकत । तबलह । मांन । धरें इक । धरनाहीय । शीस । कहि । घुंघर ॥
 ६६ ॥ बांन । अनेक सु । सेनय मीर । बांन । वृच । समुभि ॥ १०० ॥ हतार । जानि ॥ १०१ ॥
 इद्विय । फरकहि । भंपय । बांन । सधिय ॥ १०२ ॥ मद् । सरक । मनो । पग । चलत ।
 पबत । ठलै ॥ १०३ ॥ मनो । रित । अनंगय । डबरे । रेणु । सेनु । ॥ १०४ ॥

५५ पाठान्तर—जथ । थांन । जलथांन । साहंडै । मुकाम । सुरतान ।

५६ पाठान्तर—निसि । सेवचर । आइ । चहुआंन । सब । सुरतान ॥

अरिह्व ॥ जगि मंची कैमाम मद्दा भर । गंठिय चित्त चरित्त कहिय बर ॥
जगिगय सथ्य सज्ज निस सेनं । गयो राज यह सज्जि द्रुगेनं ॥
कं० ॥ १०७ ॥ छ० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज का उसी समय चढ़ाई करने को तयार होना ॥
माथा ॥ जगिगय नृप चहुवानं । कहियं कैमास सज्जि सुरतानं ॥
बज्जि निहाय निसानं । सजि बाधं सेन सुरतानं ॥
कं० ॥ १०८ ॥ छ० ॥ ५८ ॥

चढ़ाई की तयारी, भगवत् स्मरण तथा दान देना ॥
कंदू चिभंगी ॥ सयनं सब्बानं, किय सज्जानं, बज्जि निहानं, नीसानं ।
बंधे सिलहानं, निज निज थानं, पष्यरि पानं, असगानं ॥
निज किय तं न्दानं, दीन सुदानं, सेव समानं, हंसानं ।
मंने विप्यानं, चंडी सानं, आसिष्यानं, जंपानं ॥ कं० १०९ ॥
तुलसी तिन मंजरि, चक्र तनं धरि हरिचरनां चरि, जल सारं ।
गिलकी सत कंतरि, कृष्ण उरं धरि, साज सबं करि जुभारं ॥
मौजह हलहं धरि, राग तबं परि, सज्जि बगं तरि, करि डारं ।
मंगै हय राजं, साकति साजं, पष्यरि आजं सुष राजं ॥ कं० ॥ ११० ॥
हिंदू अंदाजं, तेज मद्दाजं, कीरति काजं, कुल राजं ॥
नामं जा हंसं, उत्तिम बंसं, पुर गिरि जंसं, रजिमंसं ॥
पडु दिय आएसं, सेव नरेसं, कसेतं सं, उत्तंसं ।
चट्टयौ चहुवानं, मंगे जानं, पै वामानं चंपानं ॥ कं० ॥ १११ ॥
चिंते चिंतानं, चित्त सुभानं, जग इसानं ईसानं ॥
कं० ॥ ११२ ॥ छ० ॥ ५९ ॥

५७ पाठान्तर—गंठीय । कंठीय । कहीय । नेनं । सज्जि ॥

५८ पाठान्तर—चहुवानं । सुरतानं । सज्जी कै बोध सेन सुरतानं । सज्जि कै बांध सेन सुरतानं । सज्जि कै बोध ।

५९ पाठान्तर—सवानं । कीय । सज्जानं । बज्जि । थानं । पष्यरि । अस पानं । तंन्दानं । ईसानं । इसानं । विपानं । निजपानं ॥ १०९ ॥ तुलसी सिर मंजरि चक्र तनं जरि कर जुअ अंजुरि हरि चरनं । सल । सिवं । जुभारं । मौज । हलं । बगतरि । कसि डारं । है । पपर । मुपराजं ॥ ११० ॥ सदाजं । उत्तिम । कसेतमं । उत्तसं । चट्टयौ । चठियौ । पैवामनं ॥ १११ ॥ जग । सानं । इसान ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज का सवार होना ॥

कवित्त ॥ चित्तं ईस चहुआंन । चळ्यौ ह्य सज्जि सुआवध ॥

बोलि सूर सामंत । बान सज्जे सुवान जुध ॥

जय धर ! जंपे राज । चळ्यौ थप्परि चै कंधं ॥

जै मन्निय चै राव । करी कसि मुष ऊरड्डं ॥

पुंःत धरा पुर पुर विहर । करिय लोह दंतै क्रसक ॥

नाचंत तेन पैरव सुथल । धरनि धंम धुज्जिय धसक्ति ॥

कं० ॥ ११३ ॥ छ० ॥ ६० ॥

पृथ्वीराज का मीरहुसैन के डेरे में आना, मीरहुसैन
का अपने साथियों के साथ तयार होकर पृथ्वी-
राज को सलाम करना ॥

कवित्त ॥ गयौ राज चहुआंन । साह डेरा हुस्सेनह ॥

सुनी षवरि बर बीर । सज्जि आयौ सथ्यै सह ॥

करि गोसल्ल पवित्र । होइ चिंते रहमानं ॥

बंधि सिलह चै मंगि । बीर बज्जे नीसानं ॥

चठि वाह सज्जि सथ्यिय सयन । सीस नम्मि सलांम किय ॥

देषे सुबीर विकसे सुमन । बर सनमान अतित किय ॥

कं० ॥ ११४ ॥ छ० ॥ ६१ ॥

पृथ्वीराज और मीरहुसैन के मिलकर चलने का वर्णन ॥

कंद गीता मालची ॥ चठि चळ्यौ राजं सेन साजं, बीर बाजं बज्जए ॥

नहं निसानं सजे बानं, गोम गानं गज्जए ॥

फौजें चलक्की बीर बक्की, सूर जक्की जंभरं ॥

विरदैत बीरं जुद्ध धीरं, आय भीरं धर धरं ॥ कं० ॥ ११५ ॥

६० पाठान्तर—है । सज्जि । सूद सब्बान । घानं । सवानं । जुट्टु । जै । ह्य । मंची । उरधं । करिय । दंत लोहें । पयरव । धरनि ताम । धुज्जिय ॥

६१ पाठान्तर—चहुवानं । हुसेनह । सज्जि । सथ्यै । चिंत्यौ । बजे । निसानं । सज्ज । सथी । नांमि । सलांम । सनमानं । अतित ॥

असमंस हासं सांद्र आसं, उच्च भासं अजरं ॥
 लीकं सुबच्छं सुद्ध कच्छं, हूअ गच्छं धीठरं ॥
 सजि वान पथ्यं दंत अथ्यं, राज सथ्यं संभिलं ॥
 चक्षै सबल्लं ठाल ठल्लं, गज्ज मल्लं भुभ्भियं ॥ कं० ॥ ११६ ॥
 घंटा सुघोरं भेरि रोरं, तयं तोरं सहयं ॥
 संघं सबहं नीर नहं, सूर बहं बहयं ॥
 धर पाइ धक्की है घुरकी, गौग चक्की पघ्परं ॥
 उड्डी सुरेनं मुंदि गेनं, आइ सेनं सद्धरं ॥ कं० ॥ ११७ ॥
 गिड्डी सुतथ्यं चली सथ्यं, सीस रथ्यं अच्छरं ।
 निरपै सुवीरं निज्ज नीरं, अस्स वीरं मच्छरं ॥
 पुट्टे सभीरं बहि सधीरं, साइ भीरं संभरं ।
 सेनं सहस्सं तेय दस्सं, भुभभ्भ जस्सं धिद्धरं ॥ कं० ॥ ११८ ॥
 नारद नहं वीर बहं, गोम सहं तहयं ।
 सामंत सूरं चढे बूरं, जुद्ध भूरं जहयं ॥
 सथ्यं सँगारं मंस चारं, ना उचारं जैकरं ।
 श्रोनं सभषी भू चरषी, पैचरषी पेचरं ॥ कं० ॥ ११९ ॥ ह० ॥ ६२ ॥

**सुलतान के चरों का सुलतान को जाकर समाचार देना
 कि शत्रु की सेना एक योजन पर आगई ॥**

दूहा ॥ चरित लघ्य साहाव चर । गए पास सुरतान ॥
 सजी सेन सामंत पति । आयो जोजन थान ॥ कं० ॥ १२० ॥ ह० ॥ ६३ ॥

६२ पाठान्तर-बजए । नदें । निसानं । गजए । हलकी । बकी । जकी । विरट्टैत । युद्ध ।
 सांद्र । धंधरं ॥ ११५ ॥ साइं । उच । अजरं । सुबच्छं । कच्छं । गच्छं । धिठरं । घांना । पथं । अथं ।
 सथ । चढे । सबलं । ठलं । गज्ज । मलं । भुभभ्यं ॥ ११६ ॥ सदयं । बहयं । धकी । घुरकी । गहकी ।
 पघ्पर । उड्डी । सदेने । आय । सधरं । ॥ ११७ ॥ सतथं । सथं । रथं । अद्धरं । निरप्यै । निरपें ।
 निज्ज । अस । मद्धरं । पुट्टे । साय । सहसं । दसं । भुभ्भ । जसं । द्विद्धरं ॥ ११८ ॥ नारद । तहयं ।
 तद्वयं । युध । जहयं । सथं । सांगारं । संगारं । जैकरं । सभषी । चरषी । पैचरषी ॥ ११९ ॥

६३ पाठान्तर- * सं० १६४७ की में इसका यह पाठ है-मिलि भूचर पेचर सकति । लष ।
 सुरतानं । थानं ॥

सुलतान की सेना की तयारी का वर्णन ॥

कंद विअष्यरी ॥ सुनि चरित्त स'हाव तासचर । बोलि मीर उमराव महा भर ॥
दिय निरघात घावे नीसानं । चल्थौ सेन सज्जै सव्वानं ॥ कं० ॥ १२० ॥
बाजिच वीर अनेक सुवज्जे । धर पडिहाय सुगोमह गज्जे ॥
उग्यौ सूर चळ्यौ सुरतानं । वज्जि निहाव नाल गिरि वानं ॥
कं० ॥ १२१ ॥

फौज सुगंच सजी साहावं । उलढ्यौ सेन समुद्रच आवं ॥
दच्छिन दिसा सज्जि तत्तारं । दिसि वाई घुरसान सुधारं ॥
कं० ॥ १२२ ॥

हाजिय राजिय गाजिय षानं । सनमुष सेन सजी सुरतानं ॥
मीर जमांम षानं कंमानं । महवति मीर पुट्टि सजि तामं ॥
कं० ॥ १२३ ॥

षान मरुस्तम रुस्तम षानं । मद्धि फौज रज्जे सुगतानं ॥
सहते वीस वीस सजि फौजं । तुंवा पंच रचे अहहौजं ॥
कं० ॥ १२४ ॥

चिहुपष्यां गज घूमहि उंमर । हथ्य नारि गिर वानं असंवर ॥
रिन रन तूर घोरं नीसानं । भेरी अंग गरुड थन थानं ॥
कं० ॥ १२५ ॥

नफ्फेरी चिय विध सुर उंडं । जोमष पट्ट वजे घन दंडं ॥
आवत भुभभ उहक्क उहक्किय । चैवर हींस दरक्क गहक्किय ॥
कं० ॥ १२६ ॥

गज चिक्कार फिकार सबहं । तंदुल तवल मृदंग रवहं ॥
जंगी वीर गुंडीर अनेकं । बाजिच अनेक गने को वेगं ॥
कं० ॥ १२७ ॥

फौज पंच साजी साहावं । मीर अनेक गने को नावं ॥
देस देस मिलि भाष अननं । तवीयन नाम अनेक गनंतं ॥
कं० ॥ १२८ ॥

फौज पंच सजि चल्थौ जु साहं । गजैँ धरनि गैँन पुर गाहं ॥
साहं डै सज्ज्यो दिसि वामं । पधर सधर उत्तिम ठामं ॥

६० ॥ १२९ ॥ ६४ ॥

साहं डै के बाहँ और सजकर सुलतान का खड़ा होना ॥

१ ॥ उत्तिम पंथरु पुठि जन । लषी जीय सुथान ॥

साहं डै दिसि वामं दै । सजि ठ. डै सुरतान ॥ ६० ॥ १३० ॥ ६५ ॥

उडि रेन उंवर अमर । दिष्यौ सेन चहुआन ॥

सुनिगक्रान वाजिच चहक । सजे सीस असमान ॥ ६० ॥ १३१ ॥ ६६ ॥

सुलतान की सेना देखकर पृथ्वीराज का भीर हुसैन की और

देखना, हुसैन का अपने सरदारों के साथ तयार होकर

पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

वित्त ॥ देखि सेन सुरतान । नैन चहुआन मचाभर ॥

सजि फौज हुसैन । सेन सध मीर बीर बर ॥

रुमी षां कंमांम । बेग हुसैन समथ्यं ॥

षां दलेल दिषिनीय । जुद्ध करि करै अकथ्यं ॥

कासिम षांन करीम षां । पोजा कासिम काज सुध ॥

सिल है सुसच्च लिय समय सजि । करि सलाम किय सीस उध ॥

६० ॥ १३२ ॥ ६७ ॥

६४ पाठान्तर-उमदा । निघात । चल्थौ । सजै ॥ १२० ॥ वजे । गजे । जायौ । वजिच
१२१ ॥ समुद्र कि । दपिन । सजि । पुरसान । सधारं ॥ १२२ ॥ हाजीय । राजीय । गाजीय ।
रतानं । जमाम । पान । कमानं । पुठि ॥ १२३ ॥ मधि । रजे । तेईस । ठुंवा ॥ १२४ ॥ चिहुं । षां ।
मर । हय । वान । असंवर । रिनतूर । नीसान । नफेरी । त्रिविधि । पठ । आवध । भुक्त ।
हक । डहकिय । हय । गहकिय ॥ १२६ ॥ चिकार । फिकार । सवदं । रवदं । गुंडीर । अनत ॥
२७ ॥ सजी । मीर अनेक अनेक सनावं । चाप अनेकं । नाम करे सुविवेकं ॥ १२८ ॥ सु । यु ।
जि । सज्यौ । पधर । सधर । ठामं ॥ १२९ ॥

६५ पाठान्तर-उत्तम थलग्रह । लषी । थानं । वामं । सुरतान ॥

६६ पाठान्तर-उडि । मवर अवर । दिषी । सुने । असमान ॥

६७ पाठान्तर-सुरतान नैन । चहुवानं । सजि । हुसैन । कमानं । हुसैन । समथं । दपनी ।
करीय । अकथ्यं । कासिम पानं । पोजा काश्यप । सव । सय सजि । किय सलामं । करि सीस ॥

मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है
तो हमारा सिर भी आपके लिये तयार है देखिय कैसे
लड़ाई लड़ता हूं, पृथ्वीराज का कहना कि इसमें
आश्चर्य क्या है मैं भी आज तुम्हें गज़नी
का सुलतान बनाता हूं ॥

कवित्त ॥ कचै साह हुस्सेन । सुँ चहुअंन जुभू वत ॥
आज सीस तुम कज्ज । सेन साहाव पंडो पत ॥
मो कज्जै साहस । करिग प्रथिराज सरन अम ॥
हौं उज उंसू अज्ज । करौं राजन अकथ क्रम ॥
जंपै सु राज प्रथीराज तब । कवा अचिज्ज जंपौ तुमह ॥
अप्यो सु कच गज्जन पुरह । सद्धि सेन साहाव गह ॥
छं० ॥ १३३ ॥ छं० ॥ ६८ ॥

मीर हुसैन का सलाम करके बाईं ओर खेला सजना,
पृथ्वीराज का अपने सरदारों को आज्ञा देना
कि तुम लोग मीरहुसैन की सहायता
करो और सामंतों का आज्ञा
पालन करना ॥

कवित्त ॥ करि सलाम हुस्सेन । अनी बंधी दिसि बाईं ॥
सजरा बंधे कंठ । सह सज्जे थन थाईं ॥
बोलि राज प्रथिराज । बीर जहव जामापी ॥
महन सीह परिहार । सूर गुज्जर रामानी ॥
तीकंम बोलि तारंन भर । बगारीय देवह सुअन ॥
मँडलीक बोलि परसंग सुअ । जीहराज जंपै सुगुन ॥
छं० ॥ १३४ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

६८ पाठान्तर—हुसेन । भुभू । कज । पंडो । कजै । साहस । प्रथीराज । धंमं । हौं उज जुं
अज । करो । राजंनं । अकथ्यं । अकथ्य । क्रम । अप्यो ॥
६९ पाठान्तर—किय । सलाम हुसेन । सजे । प्रथीराज । जामांती । गुजर । रामांती ।
तिकंम । सगुन ॥

कवित्त ॥ चवै राज चहुआन । तुम सामंत सूर वर ॥

बर कुलीन कुल लज्ज । जुद्ध अन भंग अंग भर ॥

तुम सदाइ हुस्सेन । सेन सज्जौ दिषि बाईं ॥

तुम अनंत बल तेज । देव बर कंठ सुचाई ॥

साहाव दीन सुरतांन सौं । भिरौं चाल बंधव विंइसि ॥

मनै सुचले निज सेन सजि । नाइ सीस रजि वीर रस ॥

कं० ॥ १३५ ॥ छ० ॥ ७० ॥

कौमास आदि सामंते का चार सहस्र सेना के साथ
पृथ्वीराज के दक्षिण और सेना सजना ॥

कवित्त ॥ दिसि दक्षिन कैमास । राइ चामंड महाभर ॥

चंद्रखेन पुंडीर । सिंघ पम्मार भुभक्त सर ॥

गहअधाव गहिलौत । निभै पति धार भार घन ॥

तुँवर राइ परिहार । पित्त अनमंग जोट मन ॥

साहस चार सज्जे सयन । अनी बांधि दक्षिन नृपति ॥

रत्तामि वस्त्र रते सुभर । जै मंती चहुआन चित ॥

कं० ॥ १३६ ॥ छ० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के आगे की और गोइंदराय आदि सरदारों का
पांच सहस्र सेना के साथ खड़े होना ॥

कवित्त ॥ मडि अनी प्रथिराज । अग सज्जे भर सामत ॥

गहअ राइ गोइंद । राज मने साहस सत ॥

देवराइ वगारि । कन्ह चहुआन नाह नर ॥

षीची राइ प्रसंग । वीर कन कूबड गूजर ॥

७० पाठान्तर-चहुआन । तुम । लज्ज । सहाय । हुस्सेन । सज्जौ । बाईं । सुरतांन । भिरौं ।
बंधवि । विंइसि । नाई सास ॥

७१ पाठान्तर-दक्षिन । दपिन । राय । पामार । भुक्त । गहिलौत । तांअर । राय । पहार ।

सामं । सूर विकसे सुमज । ३। दल तिल मत्तह गनिघ ॥

कं० ॥ १३७ ॥ कृ० ॥ ७२ ॥

दोनो सेनाओं का सामना होना और निशान बज उठना ॥

इहा ॥ अनी बंधे प्रथिराज नृप । अनी पंथ सुरतान ॥

मिली सेन दूनों निजरि । गज्जे गोम निमान ॥

कं० ॥ १३८ ॥ कृ० ॥ ७३ ॥

हुसैन और तातार षां की सेनाओं की लड़ाई होना

अंत को तातारषां की फौज का भागना ॥

कंद भुजंगी ॥ जगे गोम नीसानं इवान सेन । धमकै धरा गान गज्जे सुगेनं ॥

भरं पष्परं चार ठालें ठलक्की । घनं सेन संगच्च दूनों चमक्की ॥ कं० ॥ १३९ ॥

मिले मीर धीरं सुदिट्टं दुअनं । पलं एक जीवं उभैं सिंघ जानं ॥

दिसा बाइयं साद हुस्सेन अंगी । तिनं मभक्त सामंत सामंत मंनी ॥ कं० ॥ १४० ॥

भरं जाम जहें सुमाहू महंनं । पलं गुज्जरं राम मनै न मनं ॥

सजे सेन अंगी सहस्सं चियारं । गुरुं जुभक्त भारी सुथारी करारं ॥ कं० ॥ १४१ ॥

सनमुष्य तत्तार वीसं सहस्सं । घटा बंधि भहें वकै वीर रस्सं ॥

उडी सेन रेनं रुक्यौ रथ्य सूरं । वकै दीन दीनं भरं अप्प दूरं ॥ कं० ॥ १४२ ॥

घनं बांन कमान उड्डै कि जंगं । मनै जाति षद्योन प्रस्तु निहंगं ॥

ठलक्की मिली ठाल ठालं दुसूरं । महानह सहं मनै सिंघ पूरं ॥ कं० ॥ १४३ ॥

वजै धार धारं सुभारं करारं । परै गज्ज सुंडं डरै सूर भारं ॥

वकै वक्क वज्जी सजागी सकत्ती । परै सुंड मुंडं परं शोनं रत्ती ॥ कं० ॥ १४४ ॥

मिलै षानं तत्तार हुस्सेन सेनं । वकै उंच वाचं सिरं सज्जि गेनं ॥

हयं कंडि कंधं पयं मंडि कन्ने । समं संमुषं दूव सूरं समन्ने ॥ कं० ॥ १४५ ॥

सहस्सं हयं कंडि हुसेन सथ्यं । सयं तीन ताई वियं हिंदु तथ्यं ॥

पिति । साहज्ज । सजे । दपिन । रतामि । रते । चहुवानं ॥

७२ पाठान्तर-मध । प्रथिराज । अग । सजे । सामंत । राव । चंद्र चहुवानं । कनकु । सथह । अनीय । समन । मत्तहि ॥

७३ पाठान्तर-वधी । प्रथीराज । सुरतानं । दोनुं । गजे । निसानं ॥

सधं प्रांन तत्तार सत्तं सहस्रं । हयं छंडि कामं मनं मन्नि गस्सं ॥ छं ॥ १४६ ॥
 भई फौज तीरं दुअं जुद्ध धीरं । दिषे व्रम्मलं निज्ज साभित्त वीरं ॥
 उभै डारि आडं न गज्जै गुमानं । जपै हीन मीरं सुंनपी कमानं ॥ छं ॥ १४७ ॥
 बजै नह नीसान भेरी भयंदं । गजै अंग रीसं मनौं मेघ नहं ॥
 उभै हथ्य घाले सुषगं करारं । परै सुभरं सुभरं फूल धारं ॥ छं ॥ १४८ ॥
 उभै आस जीवं नना सूर कुडी । भरी काल संवान आयं सुघटी ॥
 करी अप्य ईसं दुईसं दुघाई । मनौं वन्न भुभूँ गजं महराई ॥ छं ॥ १४९ ॥
 ठरै उत्तमंगं उडै श्रोन पूरं । मनौं काल पावकक भालं कहरं ॥
 मिले घाड हुस्सेन तत्तार पानं । जुटे डह हथ्यं उभै काल जानं ॥ छं ॥ १५० ॥
 तुटै आवधं सावधं लगि वथ्यं । सुनी कन्न कथ्यन्न दिठ्ठी अकथ्यं ॥
 जमं दट्ट प्राहार केदं कुलिङ्गा । उरा पार फुटै हवकके कसक्का ॥ छं ॥ १५१ ॥
 कलेशार घेतं ठरं दूअचेतं । उभै सूर भुभूँ उभै साहि हेतं ॥
 भिरै वान रूमीय घानं दल्लेवं । परै पाड साई हकै सेन पेलं ॥ छं ॥ १५२ ॥
 परे षंड षंडं निजं साभि अगौ । न को हारि मनै न को भूभ भगौ ॥
 हकै जांम जहो सुतं सिंघ वीरं । ठरै आवधं आवधं डारि धीरं ॥ छं ॥ १५३ ॥
 भगी प्रांन तत्तार अनी विहालं । भिरी साहि फौजं टरी गज्जठालं ॥
 छं ॥ १५४ ॥ छं ॥ ७४ ॥

७४ पाठान्तर-नीसानं । दूवानं । धमके । गजे । पपरं । डाले । डलकी । चमंकी ॥ १३९ ॥
 स । दिठ । हुसेन । अमी । मभ ॥ १४० ॥ जांम । गुजरं । रांम । मनं । सहस । जुभ ॥ १४१ ॥
 मनमुप । सहस । वकै । रसं । रथ । वकै ॥ १४२ ॥ वान । कमान । उडै । मनो । ज्योति । डलकी ।
 मनो । परे । गज । ठरे । हकै । हक । वजी । सजगी । सकती । परं । आनं रती ॥ १४४ ॥ मिले ।
 पान । ततार । हुसेन । वकै । सजि । दूअ । सूर । मनं ॥ १४५ ॥ सहस । हुसेन । सयं । तय ।
 पान । सहस । गसं ॥ १४६ ॥ दुय । युट्ट । दिषे । निर्मलं । सामित । उंडं । गजे । जपै । कमानं ।
 ॥ १४७ ॥ नद । नीमान । गजे । मनो । नद । हथ । परं । भरं । सुभरं ॥ १४८ ॥ सवान । मनो ।
 वंन । भूभूँ ॥ १४९ ॥ ठरे । मनो । पावक । हुसेन । पानं । जुटे । डट । हयं ॥ १५० ॥ तुटे ।
 लगि । वथं । सुनी कथ्य कनेन दिठ्ठी अकथ्य । प्राहारं । उराफार । फुटै । हवकै । कसक्का ॥ १५१ ॥
 कलेशार । ठरं । भूभूँ । भिरै । पानं । रूमीय । पानं । परे । पाय । हकै ॥ १५२ ॥ साड । अगौं ।
 भगौं । जाम । जदौ । ठरे ॥ १५३ ॥ पिहालं । भिरी । गज ॥ १५४ ॥

दूचा ॥ सच्चस पंच रन मीर परि । साथ सुषान ततार ॥

परे हुसेन सुतीन सै । सै दो हिंदू सार ॥ कं० ॥ १५५ ॥ ६० ॥ ७५ ॥

गाथा ॥ नंचिय तीस कमंधं । करि भोरी षान ततारं ॥

दिषिय रनसुर बहं । भय रसं अदभुत भयानं ॥ कं० ॥ १५६ ॥ ६० ॥ ७६ ॥

भगिगय अनी षान ततारं । चंपियं जहव मदा असवारं ॥

बज्जिय वर नीसानं । सज्जिय जुद्ध हिंदू सवानं ॥

कं० ॥ १५७ ॥ ६० ॥ ७७ ॥

खुरासान खां का आगे बढकर लड़ना ॥

कंद चोटक ॥ सजि संमुष षां पुरसान दलं । जग डंवर वंवर ढाल ढलं ॥

बजि भेरि नफेरि भयान सुरं । घननं किय घुघर घंट घुरं ॥ कं० ॥ १५८ ॥

गजघोर निसानत घुंमरयं । दिग अठु धरा धर घुंमरयं ॥

मिलिवीय अनी दुअ आवधयं । भरवंकि उभै षल सावधायं ॥ कं० ॥ १५९ ॥

भर आवध आवध भाक भरं । कटि मंडल षंडल ढारि ढरं ॥

घरि पेलहिं सेलहिं केस कसं । रस होइ भयानक रुद्र रसं ॥ कं० ॥ १६० ॥

असि षंड विहंडति चैवरयं । गज सुंडह मुंड ठरै धरयं ॥

घर लुहहि जुहहि रंधरयं । मिलिवीय अनी दुअ आवधयं ॥ कं० ॥ १६१ ॥

भरयं फिर गिद्धय रोर रुलं । धर ओन प्रवाहति पूर ललं ॥

करि डक्कह डक्कति बीर बचै । सिर माल सु ईसर आनि सचै ॥

कं० ॥ १६२ ॥

वर बीर भरै भर अच्छरियं । सुर रोर सकतिय मच्छरियं ॥

हनि हक्कहि षां पुरसान रिनं । दिग दिषिय चावंड राय तिनं ॥ कं० ॥ १६३ ॥

मिलि आवध सावध दुभरयं । हय घाय गुरज्जत सुभूरयं ॥

क्रमि चामंड संगिय भारि भरं । जुग फुडिय जानु हयं समरं ॥ कं० ॥ १६४ ॥

७५ पाठान्तर—हुसेन । सैं । दों । दोइ । हिंदू ॥

७६ पाठान्तर—नवीय । कमंधं । दिषिय । । बहं । रस अदभूत । भयानं ॥

७७ पाठान्तर—भगीय । *अधिक पाठ इतर पुस्तकों में है और प्राचीन में वह है ही नहीं ॥
ततारं । चंपिय । वजीय । सजि । युद्ध । हिंदूसवानं ॥

सम षां पुरसान सचाव परं । वद्धि ऋंगय ऋंग सम्वर ढरं ॥
 दस षान चयं तज उप्परयं । वद्धि जीह दुरी चति दुप्परयं ॥ कं० ॥ १६५ ॥
 पग कंडिय चामड राइ रिनं । दिषि राज पुंडीर तज्यौ चयनं ॥
 मिलि चंपिय ढारत षान घरं । तव भगिय फौज असुभक्त परं ॥
 कं० ॥ १६६ ॥ कू० ॥ ७८ ॥

पुरासान खां की फौज का भागकर सुलतान की फौज के
 साथ मिलना और कैमास का चढ़ाई करना ॥

॥ ॥ भगी अनी पुरसान षां । मिलिय जाइ सुरतान ॥
 चठिय फौज कैमास तव । सज्जे सिर असमान ॥ कं० ॥ १६७ ॥ कू० ॥ ७९ ॥
 बाई और से जमान, दाहिनी और से कैमास और
 लानने से पृथ्वीराज का चढ़ना ॥

था ॥ क्षोरी षां पुरसानं । परिय मीर रंन सहस्यं ॥
 वद्धिय जैतसु राजं । भगिय सेन देषि सुरतानं ॥ कं० ॥ १६८ ॥ कू० ॥ ८० ॥
 दिसि बाईं जामानं । दिसि दाहिनी चंपियं कैमासं ॥
 खनमुष चंपिय साजं । जै जै जंपि राइ चहुआनं ॥
 कं० ॥ १६९ ॥ कू० ॥ ८१ ॥

युद्ध का वर्णन ॥

६ नाराव ॥ जयं जयंति जंपियं । चढे सुराज चंपियं ॥
 वहंत वान वानयं । ग्रहंत गोम छानयं ॥ कं० ॥ १७० ॥

७८ पाठान्तरः—ग्रमरावली । पुरसानं । भयान । घननक्रय । घुघर ॥ १५८ ॥ घुमरयं । अठ ।
 ॥ १५९ ॥ पेलहिं सेलहिं । पेलहिं सेलहिं ॥ १६० ॥ गजन । सुडंह ॥ १६१ ॥ फर । डक ।
 ति । आनि ॥ १६२ ॥ वीरवरं । अछरियं । सकत्तिय । मछरियं । हन । पुरसानं । दिपिय ।
 वंड ॥ १६३ ॥ आउध । साउध । दुभरयं । गुरजत । सुभरयं । चामड । जानु ॥ १६४ ॥ पुरसानं ।
 डाव । सुमूर । उपरयं । तुरी । उपरयं ॥ १६५ ॥ चावंड । चामड । पुंडीर । षानं । भगिम ।
 भक्त ॥ १६६ ॥

७९ पाठान्तर—पुरसानं । जाय । सुरतान । सज्जे । असमान ॥

८० पाठान्तर—गादां । पुरसानं । रन । सहस्यं । वठिय । जै तस । भगी । गीनी । सेन ।
 तान ॥

पाठान्तर—बाईं । चंपिय । राय ॥

करी सुफौज एक्यं । बहंत ताम तेक्यं
 बहंत वीर आवधं । करंत वीर सावधं ॥ कं० ॥ १७१ ॥
 हवक्कि संग संगयं । बहंत अंग अंगयं ॥
 भाटा पटा भामक्यं । करीअ रीत टक्कयं ॥ कं० ॥ १७२ ॥
 समं भरं बगत्तरं । हुवंत षंड षंडरं ॥
 ढरंत रुंड सुंडयं । क्रमंत जंत तुंडयं ॥ कं० ॥ १७३ ॥
 फरं फरंत फेफरं । बुलंत ते डरं डरं ॥
 कटे सुपाइ रिघंघौ । करंत घात घिंघ्यौ ॥ कं० ॥ १७४ ॥
 करंत हक्क हक्कयं । क्रमंत धक्क घक्कयं ॥
 चढंत देत दंतरं । अरु अरुंत अंतरं ॥ कं० ॥ १७५ ॥
 भभक्कयंत ओनयं । बहंत वेग कोनयं ॥
 भारफरंत गिद्ध्यौ । किलक्किलंत सिद्ध्यौ ॥ कं० ॥ १७६ ॥
 नचंत सट्टि सारियं । करंत वीर तारियं ॥
 डहक्कि डक्क ईसुरं । धमं धमंत भीसुरं ॥ कं० ॥ १७७ ॥
 फिकारियंत फेरियं । पलं चरंत रेकियं ॥
 सपूर ओन सक्कती । गुरं सुरंग चक्कती ॥ कं० ॥ १७८ ॥
 किलं सुकंड घामयं । मनंत मंनि तामयं ॥
 कटे सुगज्ज कंधरं । विहंड षंड षंडरं ॥ कं० ॥ १७९ ॥
 करंत गज्ज चिक्करं । फिरंत सूर फिक्करं ॥
 किनक्किनंत वाजयं । जमं अहंत साजयं ॥ कं० ॥ १८० ॥
 बहंत ओन नदियं । चलंत सूर सहियं ॥
 धरं गजं विकं ठयं । हयं अनेक संठयं ॥ कं० ॥ १८१ ॥
 तरं सभाडं भालयं । रजंत संगि लालयं ॥
 धरं परंत मच्छ्यौ । गजं सु सीस कच्छ्यौ ॥ कं० ॥ १८२ ॥
 गजं सुसुंड ग्राह्यौ । सुरंजि अप्प चाह्यौ ॥
 रजंत वीर नम्मयं । भयं दपंति जम्मयं ॥ कं० ॥ १८३ ॥
 पलं अनंत पंक्तयं । कुक्कातरं भयंक्तयं ॥
 सुहंत सीस अंबुजं । षटं पदं द्रिगंबुजं ॥ कं० ॥ १८४ ॥

कचं सिवार विश्वरं । सुगंधि पंषि कंदुरं ॥
वहंत पूर जोरयं । कहर सद रोरयं ॥ कं० ॥ १८५ ॥

सुतान पति गोमयं । उचंत वीर खेनयं ॥
अनेक रंग चंमरी । वहंत जीग धंमरी ॥ छं० ॥ १८६ ॥
वही अनेक साकते । कहंत चंद बाकते ॥

अनेक रथ्य अछरं । वरंत सूर सच्छरं ॥ कं० ॥ १८७ ॥
रजोद कंठ सकलाती । रजंत ओन रकलाती ॥

हृदक रंत साजयं । क्षरंत जेम बाजयं * ॥ कं० ॥ १८८ ॥ छं० ॥ ८२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की बहना, और मंडलीक का मारा जाना ॥

कवित्त ॥ बाज जेम चहुआनं । क्षारि सेना क्षर सुक्षर ॥

कोउ लत केलत । गज ठाह धर सुद्धर ॥

ढेनि अनी दस पेंड । भंङ्ग वाजंती क्षारी ॥

मारि मीर अनभंग । विधर जू सेभर सारी ॥

मंडलीक सूर पिङ्गिय सुभर । जुटे प्रांन सु गज्जनिय ॥

मंडलीक सीस तुहें विलगि । हन्यौ प्रांन विन चंचनिय ॥ कं० ॥ १८९ ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कवित्त ॥ विना सीस मंडलीक । ह्यौ गज्जनीय प्रांन गुर ॥

अवर मीर च्याडीस । जुक्षर ठाह भर सुक्षर ॥

परत सुअन पर संग । बुद रुधिरं नर बुद्धिय ॥

सुहथ पग सव एक । वीर करि किलकि सुउठिय ॥

८२ पाठान्तर-छंद लघुनाराच । नराज छंद । वानं । वानयं ॥ १७० ॥ आउध ॥ १७१ ॥

हवकि । भटकयं । टकयं ॥ १७२ ॥ नरं । वगतं । हुअत ॥ १७३ ॥ फर । पाय । सिंघयो ॥ १७४ ॥

धकधकयं । दंतदंतं । अहकरंत । १७५ ॥ भभकयंत । करफरंत । किलकि ॥ १७६ ॥ सठि चरियं ।

दियंत । वीर । हहकि । धम ॥ १७७ ॥ फेक्रियं । संपूर । सकती । हकती ॥ १७८ ॥ कामयं ।

गज ॥ १७९ ॥ गज । चिरं । फिकरं । किलकिलंत ॥ १८० ॥ नदीयं । सदीयं । धरं गठं । विकठयं ।

सठय ॥ १८१ ॥ महुयो । ससीस । कहुयो ॥ १८२ ॥ किगजंतु । याहयो । किरंजि । श्रय । चाहयो ।

रजंत मीर निम्मय ॥ १८३ ॥ हुभंत शीश । दिगं ॥ १८४ ॥ बियुरं । कंठरं । कसूर ॥ १८५ ॥

गोमयं । वीर रोमयं । जान संमदी ॥ १८६ ॥ रथ । अहर । सहरं ॥ १८७ ॥ सकती । रकती ।

हहक । रंज १ १८८ ॥ * यह तुक ए. सो. की प्रति में नहीं है ।

८३ पाठान्तर-वहुवानं । सुक्षर । केलत केलत । गज । वाजंती ठारी । मारि मार ।

मंडलीक । पिङ्गिय । पीनिय । गजनीय । मंडलीक । शीश तुटे । विन सीस नीय ॥

रत्तरे गात उत्तंग तन । उद्ध रोम भ्जारंत असि ॥

गच्चि दंत दंति धरि पुंक्क चय । उड्डि सुनंचिय वीर हंसि ॥

कं० ॥ १९० ॥ कू० ॥ ८४ ॥

शहाबुद्दीन की सेना का भड़कना और पृथ्वीराज
की सेना का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ भरकि सेन साहाब । उररि भगो चय गय नर ॥

घरिय एक वित्ती । विहर अड्डे अघास चर ॥

दिषि दिष्ट साहाब । राइ चामंड वीर वर ॥

चंद्रसेन पुंडीर । जाम जहैं भर सुभर ॥

कैमास दिष्टि दिष्टौ समर । क्रमे च्यारि गहनं सुवचि ॥

आण सुवीर अड्डे अकसि । रन रस आवध रीठ मचि ॥

कं० ॥ १९१ ॥ कू० ॥ ८५ ॥

घोर युद्ध का वर्णन ॥

कंद विज्जुमाला ॥ मचिय मत्त आवद्ध रीठ । भर हरि दैन सुभर पीठ ॥

चक्कै सूर अगगर सार । धर धर परै तुडिय धार ॥ कं० ॥ १९२ ॥

जंपै उभै दीन जु आंन । जुभिक्तय मत्त मत्तिय पांन ॥

बह बचरु कच कै चाक । बज्जै विषम आवध भाक ॥ कं० ॥ १९३ ॥

परि लर थरै उठै एक । तम्मी उकसि भारै नेक ॥

षट् षट्टी आवध सार । वाचै वीर बारं बार ॥ कं० ॥ १९४ ॥

अन्धो अन्य सहै नाम । आवध ग्रहै अप्पन ताम ॥

हं हं करै दृष्ट संधारि । उठै विरद धारो भारि ॥ कं० ॥ १९५ ॥

अद्वैभुत वीर भैयान । मंचिय कंक विषम कृपात्र ॥

नर वर वरय हंस रंजान । उठिय नेह ग्रेहति जानि ॥ कं० ॥ १९६ ॥

८४ पाठान्तर-मंडलीक । भुक्त ठाहे भर सुभर । बुद्धिय । उठिय । रतर । उत्तंग । उध
उडि । हंसि ॥

८५ पाठान्तर-घरीय । विहर । अडे । आय सुहर भर । अयासु । दिपि । राय चामुंड ।
जाम । जहै । सुभर । गहन । सुमीर । अडे । दिन ॥

तुहिय सेन पल तिष तीर । इन परि जुद्ध जुहिय धीर ॥
 तरै साँई उप्पर अत्य । सेवक उड साँई किति ॥ कं० ॥ १९७ ॥
 चौसठि क्रम लोथि पथार । भर परि धरच लुभिभय चार ॥
 उप्पर भिरै सामंत सूर । मत्तौ जुद्ध दून कहार ॥ छं० ॥ १९८ ॥
 ठेलै एक एकै वीर । गजै दीन जंपै मोर ॥
 चावँड राव जहँ जाभि । माहू मचन गूजर राम ॥ कं० ॥ २९९ ॥
 गोविंद राव विकसिय आल । मानौ कोपियते काल ॥
 आवरि वीर च्यारौ वीर । धारै षग दोकर धीर ॥ कं० ॥ २०० ॥
 हककै वीर जंपै बांनि । जुहे इस केहरि जानि ॥
 चंपै मीर तुहँ भार । नचै कमध अठु उभार ॥ कं० ॥ २०१ ॥
 भगौ परै के अगिवांन । बढी जैत राव चहुआंन ॥
 सतै सहस लुथिय भार । परि रन मीर धीर पथार ॥ कं० ॥ २०२ ॥ छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतीं का शहाबुद्दीन का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ परे मरि पथार । साह हंक्यौ रा * चावँड ॥
 संमुह गोरी चंपि । मनौ गज सौं गज आमंड ॥
 चंद्र सेन पुंडीर । आइ सज्यौ दिसि धामं ॥
 क्रमि सनमुष कैमास । हकि जहव राजामं ॥
 पुंडीर राइ चामंड भर । गहे दून दूनो सुकर ॥
 हँ चन्यौ जांम जहव उभार । भिखि चिहु चंपिय घंड भर ॥
 कं० ॥ २०३ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

८६ पाठान्तर-छंद उधार । मंत । महु । देंन । सुभर । हकै । अगार । परें ॥ १९२ ॥
 जुवांन । घह घह रुक हककै हाक ॥ १९३ ॥ थरें । उठि । तमि । भारें । पट पट्टि । वहि
 ॥ १९४ ॥ सदै । नाम । यहै । अय्यनै । ताम । हहं । द्रष्ट । संभारि । उठें ॥ १९५ ॥ अदभुत्त ।
 तदभुत्त । भैयान । मचि । कंकम । क्रमानं । रंभान । उठिय । जानि ॥ १९६ ॥ तुटिय । तरें ॥
 साँइ । उप्प । ऊपर । भृत्त । साँइ । क्रत्त ॥ १९७ ॥ लुथि । लुभिय । भिरें । सामंत । दुनो ॥ १९८ ॥
 एकै । गजै । चावँड । नाम । गुजरा । राम ॥ १९९ ॥ गोइद राय । गोविंदराय । गोइदराइ ।
 विकसि । मानो । कोपीयते । आवरि । धारे । धारे । षग ॥ २०० ॥ हकै । बांनि । इम । जानि ।
 चंपे । तुट्टे । कमध ॥ २०१ ॥ भगो । परे । अगिवांन । जैतरा । बहुवांन ॥ सतै । लोथीय । लुथिय ॥ २०२ ॥
 ८७ पाठान्तर:-पथार । हस्यौ । * अधिरू पाठ है ॥ गौरी । मनो । क्रमि सनमुष पुंडीर ।
 मचि जट्टव राजामं ॥ राय । राव । गहै । नाम । चंपियं ॥

अमीरों का सुलतान के जीते जगते लौटने
पर बधाई देना और कुशल पूछना ॥

दूहा ॥ और बधाई जंमरा । करी आइ सुरतांन ॥

अन्य सबन कीनी षयर । पुजिय पीर टटांन ॥ कं० ॥ २१० ॥ हू० ॥ ९४ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके हुसेन

षां चित्ररेखा पात्र अधिकारे पातिसाह ग्रहन

नाम नवम प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥



उपसंहारणी टिप्पण ।

यह पर्व वा समय हिन्दुस्थान के इतिहास में हिन्दुओं की बादशाहत के तो नाश होने और मुसलमानी के स्थापित होने के सत्य मूल कारण को ज्ञात करानेवाला है तथा यह वह कारण है कि जिसको सब मुसलमानी तारीखों ने जान बूझकर छिपाया है। इस ही से इस में लिखे वृत्तादि का मुसलमानी तारीखों में मिलना कठिन हो रहा है। चंद्र कवि यह न लिख गया होता तो हमको इस समय वह ही ज्ञात होता कि जो मुसलमानी तारीखों में लिखा मिलता है। यद्यपि चंद्र पृथ्वीराज और हिन्दुओं का पक्षपाती कहा जा सकता है तथापि उसने मुसलमानों की भांति विपक्ष के वृत्तों को विरकुल छिपाया नहीं है किन्तु उनकी अपेक्षा उसने कुछ सविस्तर लिखा है कि जिनमें से अन्य बातों को छोड़कर ऐतिहासिक अंश हम पृथक् कर सकते हैं। जिस हुसैन की कथा का यह समय है वह कौन था? इस का स्पष्ट पता मुसलमानी तारीखवाले नहीं देते हैं, किन्तु यूरोपियन विद्वानों ने उसका पता लगाने में बड़ा परिश्रम किया है। जब कि मुख्य पुरुष का पता लगाने में इतनी कठिनता है तब अन्य योद्धादि के जो नामादि इसमें आये हैं उनका पता लगाना कितना कठिन है। इस विषय में बहुत कुछ लिखने की अपेक्षा हम डाकूर होर्नली साहब की एक ऐसा नोट नीचे प्रकाशित करते हैं कि जिस से इस हुसैन का पता और चंद्र का उसको शाहाबुद्दीन का बाधक बताना सत्य ज्ञात हो जाय। उक्त डाकूर साहब का लिखना यह है

195 Husena Khána (Husain Khán) appears to have been a son of the Mir Husain, who as related in Canto 8, was the primary cause of the invasions of India by Shahab-ud-din Mu Husain or, as he is variously called Sháh Hussain or Husain Khán is there said to have been a cousin (bandhava) of Shahab-ud-din, a distinguished warrior, living at the Sháh's Court at Ghazni. The Sháh had a beautiful mistress, named Chitirekhá, to the story of whom the 10th Canto is devoted. She was fifteen years old and very skilful in music, and was greatly beloved by the Sháh. Husain fell in love with her and she with him. One morning the Sháh sent for him and upbraided him on his conduct. But Husain continued to intrigue with Chitirekhá, and was forced to leave the city. He carried off his family and property and Chitirekhá, and fled to Prithiraj to Nagor Prithiraj, after some hesitation, welcomed him and gave him asylum. Hearing of this, Shahab-ud-din was furious and sent messengers to demand Chitirekhá from Husain, failing in which, they were to demand the expulsion of Husain from Prithiraj. Husain refused to send the woman back, and Prithiraj replied, he could not give up the man who came to him for refuge. Shahab-ud-din receiving this answer, at once prepared to invade India, Prithiraj, on his part also prepared for war. In the battle that ensued, Husain distinguished himself greatly, but lost his life. Chamand Rai succeeded in capturing the Sháh, and thus the battle was decided in favor of Prithiraj. After five days the Sháh was released and allowed to return to Ghazni taking Ghazi, Husain's son, with him, and pledging himself no more to make war upon the Hindus. The pledge, it need hardly be said, was not kept by the Sháh, and the implacable hatred, which these events had created in his mind was never appeased till it was slacked in the blood of Prithiraj and the destruction of his Empire. The capture of the Sháh, here related, is the first of the seven times, he is said to have become the captive of Prithiraj. The next occasion of his capture is referred to in note 187, once more he is made captive as related in the present Canto. Chitirekhá is said to have buried herself with the corpse of Husain. If the Husain Khan mentioned here, is the son of the elder Husain, who was taken to Ghazni by

Shahab-ud-din, he must have made his escape afterwards and returned to Prithiraj. The elder Husain is undoubtedly the same as Nasir-ud-din Husain, who is repeatedly mentioned in the *Tabaqat-i-Nasiri* (Major Raverty's translation, pp 344, 361, 364, 365). He was the older of the two sons of Malik Shihab-ud-din, Muhammad, a younger brother of Sultán Bahú-ud-din Sām, the father of Sultán Shahab-ud-din. The elder Husain, therefore, was as Chand correctly states, a cousin (*bandhava*) of the latter. In the *Tabaqat*, it is true, it is said that Nasir-ud-din Husain usurped the throne of his uncle Ala-ud-din during the latter's temporary captivity at the Court of Sultán Sanjar of Khorasan, and that he was murdered by his uncle's partisans on the latter's return from captivity (p 364). But firstly, this story is contradicted by all other Muhammadan historians, who pass at once from Ala-ud-din to his son (see Major Raverty's foot-note, p 364). Secondly, it is more probable that if there was any usurpation at all, it was made by Nasir-ud-din's father Muhammad, the younger brother of Ala-ud-din. The three brothers Saif-ud-din Súri, Baha-ud-din Sām, and Ala-ud-din Husain, succeeded each other on the throne of Ghor; it is natural, therefore, that during Ala-ud-din's captivity, the fourth brother Shiháb-ud-din Muhammad, should have occupied or attempted to occupy the throne. The writer of the *Tabaqat* must have confused father and son, as he has done also on other occasions (e g, with regard to Ziya-ud-din Muhammad). Thirdly the description of Nasir-ud-din Husain's character "he had a great passion for women and virgins, and had taken a number of the handmaids and slave girls of the Sultán's harem" (*Tabaqat* p 364), agrees with Chand's story about his intrigue with Chitrarekhá and has evidently a confused recollection of it. There can, therefore, be little doubt, that Chand gives substantially the true account of Husain's fortunes. It may be added, that both the *Tabaqat* and other Muhammadan histories give a rather confused relation of an ancestor of this Husain (and of the Ghorí royal family generally) who also bore the name of Husain or Hasan, having fled to India, and having lived some time at Delhi (see *Tabaqat* pp 322, 323, 332). There is perhaps in this a confused recollection of the flight of Husain to Prithiraj, related by Chand."

अभी हमने इस कथा के नायक हुसैन का ही पता अपने पाठकों को बतलाया है किन्तु अन्य जितने योद्धाओं के नाम इस में आये हैं उनका हम पता मुसलमानी तारीखों में लगा रहे हैं और अन्य विद्वानों से भी उनके विषय में निश्चय कर रहे हैं, अतएव उनके विषय में फिर निवेदन करेंगे । अभी तो हमारा इतना ही ज्ञान है कि इस महाकाव्य को इतना शोध कर प्रकाशित करा दें कि विद्वान इतिहास वेत्ता उसे अवलोकन कर सकें, इत्यलम् ॥



अथ आपेटक चूक वर्णनं लिष्यते ॥



(दसवां समय)



एक वर्ष बीत गया, परन्तु शहाबुद्दीन के हृदय में
पृथ्वीराज का बैर सालता रहा ॥

दोहा ॥ बरष एक बीते कलह । रीस रषि सुरतान ॥

उर अंतर अग्नी जलै । चित सल्लै चहुवान ॥ कं० ॥ १ ॥ छ० ॥ १ ॥

एक महीना पांच दिन गज़नी में रह कर फिर हुसैन
का पृथ्वीराज के पास आप जाना ॥

दूहा ॥ मास एक दिन पंच रहि । बद्धि धाइ हुसैन * ॥

पग लगौ चौहान कै । राज प्रसन्निय बैन ॥ कं० ॥ २ ॥ छ० ॥ २ ॥

फिर पृथ्वीराज का आपेटक माड़ना और शहाबु-
द्दीन का चूक करने को आना ॥

दूहा ॥ फिर आपेटक म डे नृप । षटू बन घन तास ॥

दूत साहि साहाबदीं । आइ संपत्ते पास ॥ कं० ॥ ३ ॥ छ० ॥ ३ ॥

१ पाठान्तर-बीतै । सकल । रषि । सुरतान । अंदर । अग्नी । सालै । चहुआन ॥

२ पाठान्तर-बद्धि । बंधि । धाय । घाइ । थास । हुसैन । लगौ । चौहान । बैन ॥

* यहां "हुसैन" से कवि का अभिप्राय हुसैन कथा नामक समय के चित्ररेखा को लानेवाले हुसैन के बेटे ग़ाज़ी हुसैन से है कि जिसको पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को हाथ पकड़ाकर ग़ज़नी भेज दिया था (हुसैन कथा रूपक २३) परन्तु शाह ने ग़ज़नी पहुंचकर उसे भी कैद कर दिया था सो वह जेल में कत्ल करके पीछे फिर १ महीने और ५ दिन वहां रह कर पृथ्वीराज की शरण में आ गया ॥

३ पाठान्तर-षटू । इत्त । दी । आय । संपत्ते ॥

मीतिराव क्षत्रिय का शहाबुद्दी को पृथ्वीराज के आषेट का समाचार देना ॥

कवित्त ॥ नीतिराव पर्चीया । चरित ग्रहं चहुआनं ॥
दिखी को वर भेद । लिषे कागद सुविधानं ॥
वरष उभै षट मास । करै सुविधान पलान्यौ ॥
षटू बन घन राज । वीर आषेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्यंन को । वर वीरं तन पेलइय ॥
दैवान जुद्ध चुहुआन भर । भिरि दुरजन भर ठिलइय ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

आषेट का अच्छा अवसर पा कर शहाबुद्दीन का भेद लेने
को दूत भेजना, दूत का समाचार देना, शाह का
सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर
पृथ्वीराज पर चढाई करो ॥

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ । अरु * सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय । षटवन चहुवान ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ५ ॥
कवित्त ॥ आषेटक बन तक्कि । इत गज्जै सपत्ते ॥
साह जेर साहाब । दिए पुरमान निरत्ते ॥
दसम दय गय मुक्कि । राज षटू बन दिखै ॥
सामंतनहुँ कौ सथ्य । भुक्क गुज्जर दिसि मिलै ॥
निकस्यौ द्रव्य साहाब दिय । वर नागौरं अह धज ॥
इह घात साहि गोरी सुवर । करौ लूक कौ सज्ज रज ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४ ॥ ६ ॥

४ पाठान्तर-ग्रहं । चहुवानं । कागर । कोपि सु । बिहांन । पलान्यो । षटू । जान्यौ ।
सथह । सथां । कौं । कौ । पेलइय । दैवानं । दैवानं । चहुआन । दुरजन । ठिलइय । ठिलइय ॥

† नीतिराव क्षत्रिय नामक मुकविर था कि जो पृथ्वीराज के यहां की खबरें शहाबुद्दीन
को द्रिया करता था । वाह यह कैसा देशहितैषी पुरुष था । । ।

५ पाठान्तर-को * अधिक पाठ है ॥ सुरतान । पृथ्वीराज । षटू । चहुवान ॥ † यह रूपक
सं. १६४० की प्रति में नहीं है ॥

६ पाठान्तर- गज्जै । सपत्ते । दीए । पुरमानं । षटू । मिलै । सथ । भुक्क । गुज्जर । मिलै ।
द्रव्य । दी । नागौर । सज्ज ॥

हाजी खां आदि का लयारी करना ॥

चौपाई ॥ आवेटक घट्टू चहुवानं । कहै पूत से मुष सुविधानं ॥

हाजी पां गष्पर मुकताजी । मंडौ बूक महंमद गाजी ॥

ॐ ॥ ७ ॥ ह० ॥ ७ ॥

शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि इस बात का भेद लो
कि कितनी सेना चौहान के साथ है क्योंकि
बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ॥

कवित्त ॥ सें बुक्कै सुरतान । दूत पच्छिम सुविधानं ॥

आवेटक प्रथिराज । सथ्य कित्तक चहुआनं ॥

तुम राजन निमानं । राज विवेक परष्यौ ॥

तुम * स्वामी भ्रम दृग स्वामि । स्वामि द्रोही तन लष्यौ ॥

जंगली नृपति जंपहु चरित । कल बल अंत सु किज्जियै ॥

तत्तार पांन पुरसान पां ॥ हिंदू भेद सुकिज्जियै ॥ॐ० ८ ॥ ह० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ भेद द्रुग भंजियै । भेद दुज्जन दल भंजै ॥

राजभेद बंधियै । भेद देवन ग्रह रंजै ॥

मंच सोइ जिन भेद । भेद बिन मतौ न होई ॥

भेद बंध बन सोइ । भेद देषै सब कोइ ॥

संयत्तौ भेद चहुआन कौ । मुष उचार जो जंपियै ॥

तत्तारपांन पुरसान पां । बलहन दुज्जन चंपियै ॥ॐ० ९ ॥ ह० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का मत होना कि बिना धोखा दिख

चौहानों को जीतना कठिन है ॥

कवित्त ॥ चहुआन जम वान । गेनं सुक्कते सुकुट्टै ॥

कुटिल दिष्ट जिहिं फिरै । तेज अरियन दल पृष्टै ॥

८ पाठान्तर-बुक्कै । सुरतान । सें बुक्कै साहाव । साह पच्छिम सुरतान ॥ प्रथिराज । सथ्य कित्तक । जेतक । चहुवानं । विवेक । परष्यौ । * अधिक पाठ है ॥ स्वामि । दृग । स्वामि सामि । नह । लष्यौ । तत्तार । पुरसान ॥

९ पाठान्तर-द्रुग । भंजियै । दुज्जन । बंधियै । ग्रह । सोइ । सोय । देषौ । चहुवानं जंपियै । तत्तार । पुरसान । दज्जन । चंपियै ।

प्रबल तेज अस हेज । जुद्ध दैवान देव गति ॥
 एक लघ्य लेपियै । एक लपियै लघ्यन भति
 इह जानि चूक चिंत्यौ नृपति । इहै वत्त सुबिहान कैां ॥
तत्तार पांन निसुरत्त पां । पूछि पांन पुरसान कैां ॥

कं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ पां पुरसान ततार । पांन अरदास समंपिय ॥
 चूक मंडि सुरतान । थान चहुआन सुथपिय ॥
हाजी पां गाजी सु । बंध निज बंधी गघर ॥
 सुबिहान साहाव । साहि सोरं दल पघर ॥
 निज पान पान पुरसान पति । दृश्य साहि बल बधियै ॥
 मिलि मीर मसूरति ततं किय । चूक साहि अरि संधियै ॥

कं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

पृथ्वीराज का बेखटके आनन्द से आषेट खेलना ॥

दूह ॥ रंग रमै राजान बन । नदीं संक मन मांदि ॥
 तरु बेली घन गह बरिय । सुभि जल निरमल क्हांदि ॥

कं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के आषेट का वर्णन ॥

कवित्त ॥ सतह पंच दीपीय । एण फंदैत पंच सौ ॥
 सहस्र खान दस डोरि । ग्रहै पंचान पंच सौ ॥
 पंच अग पंचास । करु चाव हिसि सज्जे ॥
 कुही बाज उत्तंग । पंष आघात सुवज्जे ॥

१० पाठान्तर-चाहुआन । जमवान । सुकर्ते । जह । लप । लेपीये । एक लेपियै । जानि ।
 चिंत्यौं । इहै । विहान । ततार । निसुरत । पुछि । पुरसान । कैां ॥

११ पाठान्तर-पुरसान । सुरतान । थान । चहुआन । संबंध । संबंध । निबंधी । गघर ।
 सुबिहान । बिहान । पघर । पान । पान । पुरसान । बंधीयै । अर । संधीयै ॥

१२ पाठान्तर-राजान । तर । बरीय । निर्मल ॥

षरगोस सिंह पंजर गुहा । धनुष धनंषिय धार घन ॥

प्रथिराज राज मंडै रवनि । आषेटक षटू सु बन ॥

कं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ १३ ॥

आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का षटूवन में छिपकर पहुंचना ॥

कवित्त ॥ षां ततार पुरसांन । षांन हाजी षां गाजी ॥

गष्वर पष्वर साह । मीर महमद षां बाजी ॥

अष्ट सखस असवार । तुंग तिय अगग बनाइय ॥

पेक्षकसी पतिसाह । कूर पर पंचन आइय ॥

सेनाह सज्जि अंदर सिलह । नह पिषै जामें रचह ॥

करि बूक आइ षटू बनह । प्रथीराज चहुआन जहँ ॥

कं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

सबेरे के समय चढ़ाई करने का विचार करना ॥

कवित्त ॥ दस अराक ताजीय । पंच पुरसान कमानं ॥

तक्यौ साहि गज्जनै । चिंति षटू चहुवानं ॥

कल सज्यौ बल चारि । घात नर घात निहानं ॥

लग्यौ चंपि सुरतान । वैर हुस्सेनह षानं ॥

सुविहान आन चहुआन सौं । लै फुरमान समान धरि ॥

सुविहान हिदु पुज्जै नहीं । जमन जौर बल बहुत करि ॥

कं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १५ ॥

१३ पाठान्तर-तहांस । रण । एन । अंच । कर । चावदिसि । सजे । उत्तंग । बजे ।
सीह । प्रथीराज । मंडे । वरन । षटू । स ॥

१४ पाठान्तर-पुरसान । षानं । गष्वर । पष्वर । गाजी । सन्यह । सज्जि । नहिं । पिष्यै । रचह ।
चहुआन । जह ॥

१५ पाठान्तर-अराक । पुरमानं । कमानं । षटू । चहुआनं । निहानं । सुरतानं । हुसेन
सु षानं । विहानं । आन । चहुआनं । सौं । फुरमानं । विहानं । पुज्जै । नही । जवन । जौर ॥

पांच सरदारों को साथ लेकर आषेट को
पृथ्वीराज का निकलना ॥

कवित्त ॥ आषेटक संभरिय । राज भेलान न आइय ॥

हसम हय गय मुक्कि । तक्कि पटू वन धाइय ॥

के हंका के हक्कि । तथ्य पक्किवानह लग्गा ॥

सथ्य पंच सामंत । मूल चहुआन विलगगा ॥

पंमार सलष अलषह बलिय । चाहुआन रघुवंस हिम ॥

हंध्यौ नरिंद चालुक्क सम । सिंघ विंटी वागह जिम ॥

कं० ॥ १६ ॥ ह० ॥ १६ ॥

कवि चन्द का कहना कि हमें शहाबुद्धीन के आने का सन्देह
है और खोज करने पर चारों ओर यवजों को पाना ॥

कवित्त ॥ करि विंटिय चहुआन । पिप्र सब सस्त्र समाहिय ॥

सुब्बिहान फुरमान । बंदि कविचंद सुनाइय ॥

सुबर जोर साहाब । साह से देस सुरंगा ॥

तेन कमान प्रमान । दए दस हथ्य तुरंगा ॥

किन एक किमा किम रषकें । चावदिसि नृप विंटियौ ॥

तन तेन भारि संमुच भए । राज अदब्ब सुमिंटियौ ॥

कं० ॥ १७ ॥ ह० ॥ १७ ॥

शाह की ओर से आक्रमण आरम्भ होना ॥

कवित्त ॥ चंपि लहदिय हथ्य । जमन ठठ्टे चावदिसि ॥

चूक चिंत चहुवान । कन्ह कट्टी सु बंक असि ॥

हाजी धान गषपर नरिंद * । पंति षग घोलि विहथ्यं ॥

तेग भार विभार । सलष घल्ली गल बथ्यं ॥

१६ पाठान्तर-आइय । हसम । तकि । पटू । धाईय । तथ्य । पक्किवानह । लग्गा । सथ्य ।
चहुवान । विलगगा । चाहुवान । चाहुआनि । हंध्यौ । चालुक्क । वींटी ॥

१७ पाठान्तर-विंटिय । चहुआन । सु विहान । फुरमान । विंचि । साह संदेस सुरंगा ।
तेन । कमान । प्रमान । हय । किमाकिम पकरिकें । चावदिसि । वींटियौ । अदब । मिंटियौ ॥

घरि अद्द अद्द बीभच्छ भय । जगिग भयानक वीर सम ॥
दुहुल्लोह कट्टि परि यार ते । चूक चिंति कुय्यौ विभ्रम ॥

छं० ॥ १८ ॥ छ० ॥ १८ ॥

युद्धारम्भ. युद्ध वर्णन ॥

छंद विराज ॥ धरं धार कट्टी । घनं बीज बट्टी ॥ रसं रोस थटी । मुषं मुंक्क अट्टी ॥ छं० ॥ १९ ॥
परे चह पटी । मनौं मह जटी ॥ उनं तेग कट्टी । जनौं वज्र टटी ॥ छं० ॥ २० ॥
जमं दट्टु दट्टी । मनौं नोन अट्टी ॥ उक्कटे उक्कटी । घनं यह घी ॥ छं० ॥ २१ ॥
कुलालं उलट्टी । उतारंत मट्टी ॥ रटे मार मारं । सुरं आसुरारं ॥ छं० ॥ २२ ॥
परं ते पथारं । कुठारं करारं ॥ बुले घाव तारं । किनारं उघारं ॥ छं० ॥ २३ ॥
इसौ जुद्ध आरं । मची कूह कारं ॥ पयो पंच भारं ।

छं० ॥ २४ ॥ छ० ॥ २५ ॥

पांच सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चारों ओर हो
जाना और इन सभी का यवनों के बीच
में घिर कर युद्ध करना ॥

कवित्त ॥ पंचानन भैपंच । स्वामि ओडन थच्च रष्ये ॥
इक्क स्वामि रन अगग । इक्क उभे दस पिष्ये ॥
सार धार प्राहार । बीय निय उप्पर वाचै ॥
मनौं तत्त घरियार । मेघ जल वुठु प्रवाचै ॥
दनु देन जप्प गंध्रब्ब जय । गन हय गय उच्चार हुअ ॥
सुरतान सेन क्षुक्ति मांदि परि । धनि नरिदं सोमेस सुअ ॥

छं० ॥ २५ ॥ छ० ॥ २० ॥

१८ पाठान्तर-हथ । यवन । ठटे । चावदिसि । चिति चहुवांन । पां । गपर । * अधिक
पाठ है ॥ विहथं । विभार । घला । बयं । बीभच्छ । भयानक । दुहुल्लाह । कटि । ते ॥

१९ पाठान्तर-छंद रसावला । धर धारं कटी । बटी । थटी । मुह । अटी ॥ १९ ॥ परं
नटपटी । मह जटी । बठी । तटी ॥ २० ॥ दट दटी । लौन अटी । उहटी । घट घटी ॥ २१ ॥
ऊला । उलटी । मटी । आसुरार ॥ २२ ॥ घाव ॥ २३ ॥ पस्यौ । युद्ध ॥ २४ ॥

२० पाठान्तर-भौं । उडन । रष । एक । रिन । एक उभे । पप । तीय । उपर । तत ।
बुद्धि । जरन । गंध्र । गन । उचार । सुरतान ॥

पृथ्वीराज का कमान सँभाल कर यवन सरदारों को गिराना ॥

कवित्त ॥ चहुआन कमान । पंच लाने सुपंच सर ॥

बघ्पर पघ्पर सौ पलान । असु ढ्यौ मीर धर ॥

दूजै बान तकंत । तक्कि भंज्यौ षां गोरी ॥

तीजै बान तकंत । साच्चि भंजी विय जौरी ॥

कमान बान चवह्य्य भिरि । पिजि किरवान विरान कटि ॥

कटि वीर अंग फरकं पहर । रह्यौ नट कुट वसं चटि ॥

कं० ॥ २६ ॥ ह० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ॥

कवित्त ॥ षां गाजी चहुआन । दिष्ट मरदां दो उठी ॥

दंग लगिग जनु अग । घत्त घारा हर बुठी ॥

दूनों ह्य्य उतंग । तेग कट्टी दुहु वंकी ॥

मनु घन घटा मभार । बीज कुंडली भलंकी ॥

चहुआन तुच्छ ढठुर बहिय । डुरिग मीर विय सिरढ्यौ ॥

जानेकि वज्र वजी सुपति । गिरनि क्केद ह्य्यह धयो ॥

कं० ॥ २७ ॥ ह० ॥ २२ ॥

सुलतानी की ७५५ सेना का कट कर आगे गिरना ॥

अरिख ॥ सुबर सेन संमुष सुरतानं । घेन वच्छ परि जल करि जानं ॥

सत्त पंच परि उप्पर पंचं । तुक्यौ सार धार करि रंचं ॥

कं० ॥ २८ ॥ ह० ॥ २३ ॥

चालुका का घोर युद्ध करके वीरता के साथ मारा जाना ॥

कवित्त ॥ जूह मंत संभूह । कूह आषेटक बज्जिय ॥

वर चालुक्क नरिंगे । चंपि, चावहिस गज्जिय ॥

२१ पाठान्तर कमान । पंचि । सपंच । बघर पपर । पलान । ध्यौ । वान । तकि । वान । कमान । वान । ह्य । किरवान । विरान । भुटि । फरकुप्प रह । नट ॥

२२ पाठान्तर-चहुआन । दिष्टि । दो । उठिय । अगि । घत्त । बुठिय । ह्य । दुहुं बकिय । मनों । भलकिय । चहुआन । तुछ । ठठ । ठरिग । गमीर बीय शिर । सिरठु । ढ्यौ जाने । ह्यह ॥

२३ पाठान्तर-बछ । ज्यन । सत्त । उपर । करि ॥

कंडि थान पक्खिवान । हंकि सैंधव भुक्ति घाइय ॥
 गही सेन सुरतान । नेज बाजी जस घाइय ॥
 विम्भाय धाय तन भंभरिय । तुटि पंजर वर धुक्किधर ॥
 कटि घाइ लष्य पंचौ प्रगट । उडि हंसव संमान सर ॥

कं० ॥ २८ ॥ ह० ॥ २४ ॥

कवित्त ॥ सेलंकी सिर मौर । रेह अनहल पुर रष्यी ॥
 दोऊ दीन पष्यर प्रमान * । कित्ति दुअ पष्यह भष्यी ॥
 धूप दीप साषा * सुगंध । रंभ रानी मिलि गावै ॥
 नाग पती सुर वधू । केलि करि कलस वँदावै ॥
 लग्यौ भरम द्विगपाल धर । जंम भरम जगो सुभर ॥
 कविचंद मरन चालुकु कै । मल्यौ न को रवि चक्रसर ॥

कं० ॥ ३० ॥ ह० ॥ २५ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना,
 पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा हो जाना ॥

कवित्त ॥ सुधर जुइ अवरुइ । जुइ कटि सिइ समानं ॥
 मार मार उचार । तेग कट्टी चहुआनं ॥
 तुटि सिषर उर फुटि । वीर अडो अध भुल्लै ॥
 मानुं तुला की उंछि । वीर वानावलि तुल्लै ॥
 आवेट भगिग एकठु हुअ । सवै सेन प्रथिगाज जुरि ॥
 वाजिद घान गष्यर गहर । वांम कोट उभ्रै उसरि ॥

कं० ॥ ३१ ॥ ह० ॥

२४ पाठान्तर-जूहं मत । चालुकु । दिसि । थान । पक्खिवान । सैंधव
 घाईय । घाइ । भंभरिय । लप । उडि । समान ॥

२५ पाठान्तर-रष्यिय । दोऊ । पषर । * अधिक पाठ है ॥
 * अधिक पाठ है ॥ वंदावै । भरंम । द्विगपाल । चालुकु । रण

२६ पाठान्तर-युद्ध । युध । उचार । चहुआनं
 वानावली । तुलै । एकठ । प्रथीराज । वाजिद । घ-

सुलतान का बढकर लड़ना, दो घड़ी घोर युद्ध होना ॥

कवित्त ॥ रूप्यौ सेन सुरतान । राज चठि नंषि सुरंगं ॥

कै तिमर भग्ग तपभांन । सिंघ चकै कि कुरंगं ॥

तब * रूप्यौ राव सिंघरिय । लाज सुविधान षटक्किय ॥

सस्त्र तेज बल बंधि । सेन बहुआंन छटक्किय ॥

द्वै घरिय टोप उप्पर बह्यौ । सार तिनंगा तारयौ ॥

जाने कि तिंदु दाहन जरै । जैत पंभ पर भाारयो ॥

कं० ॥ ३२ ॥ छ० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ हय मुक्क्यौ सिरदार दुहु । देखि भयौ नृप चूक ॥

घरी एक भारि सार बहु । ज्यौ अगि संजुता उक ॥

कं० ॥ ३३ ॥ छ० ॥ २८ ॥

यवन सरदारों का माराजाना, पृथ्वीराज की विजय ॥

कवित्त ॥ जुद्ध जुरे सिरदार । राउ रंघह बाजी दह ॥

पालि बध्य गल हथ्य । चहु भंजिय रग गूदह ॥

ज्यौ मुष्टिक चानूर । कन्ह भंजिय अप्पारह ॥

उत्तमंग लै हूर । सूर अपकर उप्पारह ॥

बाजीद षांन भोरी धरिय । धाड पंच रंघर नृपति ॥

रण्यै जु सांक्ष मिट्टै कवन । निमष मांदि उतपति षपति ॥

कं० ॥ ३४ ॥ छ० ॥ २९ ॥

हारकर शहाबुद्दीन का गज़नी की ओर लौट जाना ॥

चूक चूक भय असुर सुर । फिरि गज्जन दिसि षांन ॥

चालु गरि जुआरी ज्यौ चलै । कर घटै कर जान ॥

कवित्त ॥ जू

कं० ॥ ३५ ॥ छ० ॥ ३० ॥

वर ६

१-सुरतान । बाजि चठि । भांन । हकै । * अधिक पाठ है । रिघरिय ।

२१ पाठान्तर कन्किय । घरीय । जाने ॥

कंमांन । वान । हय । क्रियवाच्यगति । उक ॥

२२ पाठान्तर-चहुआन । दिव्यहार । रांव । बाजीदह । बय । गर । हय । रंग । अपारह । मनें । भलकिय । चहुआन । तुक । ठठ । कं ॥

२३ पाठान्तर-बह । ज्यंन । सत । उपर । के । घटे । जान ॥

चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जै कार करना ॥

दूषा ॥ जीति राज बहुवांन वन । आषेटक असुरान ॥

जै जै जै कविचंद कवि । चंद सूर बघ्यान ॥

कं० ॥ ३६ ॥ ६० ॥ ४१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराजरासके राजा

षड्बन आषेटक रन सुरतांन चूक करनं नाम

दशम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १० ॥



